

॥ श्रीरामजयम् ॥

॥ श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम् ॥

अयोध्याकाण्डम्

द्वितीयखण्डः ॥



Text in Sanskrit with word for word

Tamil Translation in Prose Order.



R. SUBRAHMANYA VADHYAR & SONS.

BOOK-SELLERS & PUBLISHERS.

KALPATHI—PALGHAT



॥ श्रीरामजयम् ॥
॥ श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम् ॥

अयोध्याकाण्डम्

द्वितीयखण्डः ॥



धर्मालयसंस्करणम् ।

The Dharmalaya Edition.

Text in Sanskrit with word for word
Tamil Translation in Prose Order.

By

The Late Rao Sahib P. S. KRISHNASWAMI IYER,
Dharmalaya, Mylapore.

Published with the aid of
Sri. M. N. RAMASWAMI IYER,
Banker, Palghat.

BY

R. SUBRAHMANYA VADHYAR & SONS.

BOOK-SELLERS & PUBLISHERS,

KALPATHI—PALGHAT

Library Edition.]

1940

[Price Rs. 5—0—0

Printed at
THE SCHOLAR PRESS,
PALGHAT

॥ श्रीः ॥
॥ विषयानुक्रमिका ॥

| सर्गः | विषयः | श्लोकसंख्या | पृष्ठम् |
|-------|--------------------------|-------------|---------|
| 52. | श्रीरामादीनां गङ्गातरणम् | 102 | 1 |
| 53. | श्रीरामलक्ष्मणसंवादः | 35 | 24 |
| 54. | भरद्वाजाश्रमगमनम् | 44 | 32 |
| 55. | यमुनातरणम् | 35 | 42 |
| 56. | चित्रकूटगमनम् | 41 | 51 |

॥ चित्राणि ॥

| | पृष्ठम् |
|------------------------------|---------|
| 1. भरतभरद्वाजसमागमः | 286 |
| 2. श्रीरामभरतसमागमः | 354 |
| 3. श्रीरामभरतसंवादः | 392 |
| 4. पादुकादानम् | 452 |
| 5. पादुकापूजनम् | 470 |
| 6. सीतानसूयासहासनम् | 480 |
| 72. भरतविलापः | 173 |
| 73. कैकेयीगर्हणम् | 184 |
| 74. कैकेयुपालंभः | 192 |
| 75. भरतशपथः | 200 |
| 76. दशरथस्यौर्ध्वदैहिककरणम् | 213 |
| 77. भरतशत्रुघ्नविलापः | 218 |
| 78. शत्रुघ्नेन मन्थरानिग्रहः | 224 |
| 79. मार्गनिर्माणनियोगः | 229 |
| 80. मार्गनिर्माणम् | 233 |
| 81. राजसभागमनम् | 238 |
| 82. वनगमनाय सेनासन्नाहः | 241 |
| 83. भरतप्रस्थानम् | 248 |
| 84. गुह्यभरतसमागमः | 254 |

॥ श्रीः ॥
॥ विषयानुक्रमिका ॥

| सर्गः | विषयः | श्लोकसंख्या | पृष्ठम् |
|-------------------------|----------------------------------|-------------|---------|
| 52. | श्रीरामादीनां गङ्गातरणम् | 102 | 1 |
| 53. | श्रीरामलक्ष्मणसंवादः | 35 | 24 |
| 54. | भरद्वाजाश्रमगमनम् | 44 | 32 |
| 55. | यमुनातरणम् | 35 | 42 |
| 56. | चित्रकूटगमनम् | 41 | 51 |
| 57. | सुमन्त्रस्यायोध्याप्रवेशः | 34 | 60 |
| 58. | श्रीरामसन्देशकथनम् | 37 | 68 |
| 59. | दशरथप्रलापः | 38 | 75 |
| 60. | सुमन्त्रेण कौसल्यासमाश्वासनम् | 24 | 83 |
| 61. | दशरथोपालम्भः | 27 | 89 |
| 62. | दशरथेन कौसल्याप्रसादनम् | 20 | 95 |
| 63. | मुनिकुमारवधकथनम् | 54 | 100 |
| 64. | दशरथस्वर्गतिः | 80 | 111 |
| 65. | अन्तःपुरविलापः | 30 | 128 |
| 66. | राजशरीरस्य तैलद्रोण्यां निक्षेपः | 29 | 134 |
| 67. | अराजकदुर्बस्थाकथनम् | 38 | 140 |
| 68. | भरतानयनाय दूतगमनम् | 22 | 148 |
| 69. | भरतेन दुःस्वप्नदर्शनम् | 22 | 153 |
| 70. | भरतप्रस्थानम् | 30 | 157 |
| 71. | अयोध्याप्रवेशः | 46 | 163 |
| सप्तमेऽहि गीताः श्लोकाः | | | 788 |
| 72. | भरतविलापः | 55 | 173 |
| 73. | कैकेयीगर्हणम् | 39 | 184 |
| 74. | कैकेय्युपालम्भः | 36 | 192 |
| 75. | भरतशपथः | 65 | 200 |
| 76. | दशरथस्यौर्ध्वदैहिककरणम् | 24 | 213 |
| 77. | भरतशत्रुघ्नविलापः | 26 | 218 |
| 78. | शत्रुघ्नेन मन्थरानिग्रहः | 26 | 224 |
| 79. | मार्गनिर्माणनियोगः | 17 | 229 |
| 80. | मार्गनिर्माणम् | 26 | 233 |
| 81. | राजसभागमनम् | 16 | 238 |
| 82. | वनगमनाय सेनासन्नाहः | 32 | 241 |
| 83. | भरतप्रस्थानम् | 26 | 248 |
| 84. | गुह्यभरतसमागमः | 18 | 254 |

| सर्गः | विषयः | श्लोकसंख्या | पृष्ठम् |
|-------------------------|----------------------------------|-------------|---------|
| 85. | भरतगुहसंवादः ... | 22 | 257 |
| 86. | गुहवाक्यम् ... | 25 | 262 |
| 87. | गुहेन श्रीरामवृत्तान्तकथनम् ... | 23 | 268 |
| 88. | भरतप्रतिज्ञा ... | 30 | 273 |
| 89. | गङ्गातरणम् ... | 23 | 279 |
| 90. | भरतभरद्वाजसंवादः | 24 | 284 |
| 91. | भरद्वाजेनातिथ्यकरणम् ... | 84 | 289 |
| 92. | चित्तकूटप्रस्थानम् ... | 40 | 306 |
| 93. | श्रीरामाश्रमविचयः ... | 27 | 313 |
| 94. | रामेण चित्तकूटवर्णनम् ... | 27 | 319 |
| 95. | मन्दाकिनीवर्णना ... | 20 | 325 |
| 96. | लक्ष्मणसंरंभः ... | 31 | 329 |
| 97. | लक्ष्मणपरिसान्त्वनम् ... | 32 | 335 |
| अष्टमेऽहि गीताः श्लोकाः | | | 814 |
| 98. | रामाश्रमान्वेषणम् ... | 18 | 343 |
| 99. | श्रीरामदर्शनम् ... | 42 | 347 |
| 100. | श्रीरामकृतः कुशलप्रश्नः ... | 76 | 355 |
| 101. | दशरथस्वर्गमनकथनम् ... | 9 | 372 |
| 102. | निवापाञ्जलिदानम् ... | 50 | 374 |
| 103. | मातृदर्शनम् ... | 32 | 385 |
| 104. | श्रीरामभरतसंवादः ... | 27 | 392 |
| 105. | पितृनिर्देशपरिपालनकथनम् ... | 46 | 398 |
| 106. | भरतेन राज्यस्वीकारप्रार्थना ... | 36 | 407 |
| 107. | श्रीरामेण राज्यरक्षाप्रबोधना ... | 20 | 415 |
| 108. | जावालिना नास्तिकमतनिरूपणम् ... | 18 | 419 |
| 109. | श्रीरामेण नास्तिकमतनिराकरणम् ... | 40 | 423 |
| 110. | मनुवंशकीर्तनम् ... | 36 | 433 |
| 111. | भरतपरिसान्त्वनम् ... | 32 | 441 |
| 112. | पादुकाप्रदानम् ... | 31 | 448 |
| 113. | भरतप्रतिनिवृत्तिः ... | 25 | 455 |
| 114. | अयोध्याप्रवेशः ... | 32 | 460 |
| 115. | पादुकापट्टाभिवेकः ... | 27 | 465 |
| 116. | मुनिभिः खरादिविप्रकारकथनम् ... | 26 | 471 |
| 117. | अनसूयया पातिव्रत्यकथनम् ... | 30 | 476 |
| 118. | सीतायै आभरणादिदानम् ... | 54 | 482 |
| 119. | श्रीरामस्य दण्डकारण्यप्रवेशः ... | 22 | 494 |
| नवमेऽहि गीताः श्लोकाः | | | 729 |



ॐ

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

श्रीसीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेतश्रीरामचन्द्रस्वामिने नमः ॥

॥ श्री म द्वा ल्मी कि रा मा य ण म् ॥

अयोध्याकाण्डम्

द्वितीयखण्डः ॥

[पुरा कुशलवाभ्यां श्रीरामसन्निधावश्वसेधयज्ञवाटे द्वाविंशति दिनेषु गीते श्रीमद्रामायणे सप्तमेऽङ्के अयोध्याकाण्डे द्विपञ्चाशसर्गमारभ्य एकसप्ततितमसर्गपर्यन्तं (4382—5169 श्लोकाः) गीतम् । तस्मिन् दिने गीताः श्लोकाः 788]

[ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமஸந்நிதியில் அச்வமேதயாகசாலையில் முப்பத்திரண்டு தினங்களில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில் ஏழாவது தினத்தில் அயோத்தியாகாண்டத்தில் 52-ாவது ஸர்க்கம் முதல் 71-ாவது ஸர்க்கம் வரை (4382—5169) கானம் செய்யப்பட்டது.

அன்று கானம் செய்யப்பட்ட சுலோகசங்கியை 788]

द्विपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்திரண்டாவது ஸர்க்கம் ॥ ५२ ॥

श्रीरामादीनां गङ्गातरणम्—ஸ்ரீராமர் முதலியவர்கள் கங்காநதியைத் தாண்டுவது.

प्रभातायां तु शर्वर्यां पृथुवक्षा महायशः । उवाच रामः सौमित्रि लक्ष्मणं शुभलक्षणम् ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------------|-----------|---------------------------------------|
| पृथुवक्षाः | துண்ணியரெனவும், தீரரெனவும் | शुभलक्षणं | நன்மைதரும் தொழி லுற்ற |
| महायशः | மிகப் பிரஸித்திபெற்ற வராகிய | सौमित्रि | சுமித்ரா தேவியின் திருக்குமாரனாகிய |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரைப் |
| शर्वर्यां | இரவு | | பார்த்து, |
| प्रभातायां तु | கழிந்து பொழுதுவி டியும் சமயத்தில் | उवाच | பின்வருமாறு அருளி ச்செய்தார். |

भास्करोदयकालोऽयं गता भगवती निशा । असौ सुकृष्णो विहगः कोकिलस्तात कूजति ॥

| | | | |
|---------------|---------------|----------|--------------------------------------|
| तात | “குழந்தாய்! | असौ | இந்த |
| भास्करोदयकालः | ஸூர்யோதயகாலம் | सुकृष्णः | பரத்துவாஜ |
| अयं | இது. | विहगः | பக்தியும் |
| निशा | இரவு | कोकिलः | கோகிலமும் |
| भगवती | நல்லதாய் | कूजति | அங்கங்கே தனித்த னியாய் கூவுகிறது. |
| गता | கழிந்து. | | |

वर्हिणानां च निर्घोषः श्रूयते नदतां वने । तराम जाह्नवीं सौम्य शीघ्रगां सागरङ्गमाम् ॥
गच्छामः सन्ध्युपासार्थं त्वरयस्व महारथ ॥ ३॥

सौम्य “புண்யாத்மாவே!
महारथ மகாரத!
वने வனத்தில்
नदतां वर्हिणानां நடவும் மயில்களின்
निर्घोषः च க்வனியும்
श्रूयते செட்கப்படுகிறது.
सन्ध्युपासार्थं காலேசந்தியாவந்தனத்
திற்கு

गच्छामः நாம் போவோம்.
सागरङ्गमां சமுத்திரத்தைநோக்கி
शीघ्रगां வேகமாய் ஓடுகிற
நீரையுடைய
जाह्नवी கங்காநதியை
तरामः நாம் தாண்டிச்செல்
வோம்;
त्वरयस्व நீ துரிதப்படுவாயாக.”

विज्ञाय रामस्य वचः सौमित्रिर्षित्रनन्दनः । गुह्यामन्त्र्य सूतं च सोऽतिष्ठद्भ्रातुरग्रतः ॥ ४ ॥

मित्रनन्दनः மித்திரர்களுக்கு இஷ்
सः அந்த [டராகிய
सौमित्रि: லக்ஷ்மணர்
रामस्य ஸ்ரீராமருடைய
वचः திருவுள்ளத்தை
विज्ञाय அறிந்த,

गुहं குகரிடத்திலும்
सूतं च சாரதியிடத்திலும்
आमन्त्र्य சமாசாரத்தைச்
சொல்லிவிட்டு,
भ्रातुः தமையனாரின்
अग्रतः अतिष्ठत् எதிரில் வந்து நின்றார்.

स तु रामस्य वचनं निशम्य प्रतिगृह्य च । स्थपतिस्तूर्णमाहूय सचिवानिदमब्रवीत् ॥ ५ ॥

स्थपतिः அத்தேசமன்னராகும்
सः அவர்
रामस्य ஸ்ரீராமருடைய
वचनं निशम्य ஆக்ஷேபை கேட்டு,
प्रतिगृह्य च சரத்தில்கொண்டு,

तूर्णं தட்சணமே
सचिवान् மந்திரிகளை
आहूय அழைத்து,
तु இவ்விஷயத்தில்
इदं பின்வருமாறு
अब्रवीत् கட்டளைபிட்டார்.

अस्य वाहनसंयुक्तां कर्णग्राहवतीं शुभाम् । सुप्रतारां दृढां तीर्थे शीघ्रं नावमुपाहर ॥ ६ ॥

वाहनसंयुक्तां “தடுப்புமுதலிய உறு
ப்புகளையுடையதும்
कर्णग्राहवती மீகாளை (படகோட்டு
பவனை) பெற்றதும்,
सुप्रतारां சுகமாக தாண்ட
த்தக்கதும்
शुभा இன்பம் தருவதும்

दृढां உறுதியுள்ள துமான
नावं மரக்கலத்தை
अस्य இவருக்கு
तीर्थे துறைமுகத்தில்
शीघ्रं விரைவில்
{ கொண்டுவந்து நிறு
उपाहर { த்தக்கடவீர்கள்.”
(ஏகவசனம் ஆர்ஷம்)

तं निशम्य गुहादेशं गुह्यामात्यगणो महान् । उपोह्य रुचिरां नावं गुहाय प्रत्यवेदयत् ॥ ७ ॥

महान् கீர்த்திபெற்ற
गुह्यामात्यगणः குகரது மந்திரிசமூகம்
तं அந்த
गुहादेशं குகரது ஆக்கிளையை
निशम्य கேட்டு,

रुचिरां नावं அழகிய மரக்கலத்தை
उपोह्य ஐலத்தில் நடத்திக்கொ
ண்டுவந்து நிறுத்தி
गुहाय குகருக்கு
प्रत्यवेदयत् நெரிவித்தது.

ततः स प्राञ्जलिर्भूत्वा गुहो राघवमब्रवीत् । उपस्थितेयं नोर्देव भूयः किं करवाणि ते ॥

ततः அதன்மேல்
 सःगुहः அந்த குகர்
 राघवं ஸ்ரீராமரை நோக்கி,
 प्राञ्जलिः भूत्वा அஞ்சலிஹஸ்தராய்
 अब्रवीत् பின்வருமாறு விண்ண
 देव “தேவரே! ப்பம்செய்தனர்.

इयं இதோ
 नौ: மரக்கலம்
 उपस्थिता சித்தஞ்செய்யப்பட்டு
 ते வந்திருக்கிறது.
 भूयः தேவரீருக்கு
 करवाणि किम् இன்னும்,
 “அடியேன் செய்யவே
 ண்டியது யாது?”

तवामरसुतप्रख्य तर्तुं सागरगां नदीम् । नौरियं पुरुषव्याघ्र तां त्वमारोह सुव्रत ॥ ९ ॥

अमरसुतप्रख्य “தேவகுமாரருக்கு
 तर्तुं ஒப்பானவரே!
 पुरुषव्याघ्र புருஷோத்தமரே!
 सुव्रत தருமானுஷ்டானமு
 दैवयवரே!
 इयं नौ: இந்த மரக்கலம்

तव தேவரீருடையது.
 सागरगां சமுத்திரத்தை
 नदीं तर्तुं நோக்கி ஓடும்,
 त्वं நதியைக்கடக்க
 तां आरोह தேவரீர்
 “அதிலேறியருளலாமே.”

अथोवाच महातेजा रामो गुहमिदं वचः । कृतकार्योऽस्मि भवता शीघ्रमारोप्यतामिति ॥

अथ அதன்மேல்,
 महातेजा: மகாதேஜஸ்வியான
 रामः ஸ்ரீராமர்,
 गुहं குகரைப்பார்த்து,
 इदं वचः பின்வரும் மொழியை
 उवाच அருளிச்செய்தனர்.

भवता “உன்னால்
 कृतकार्यः अस्मि ஆகவேண்டிய உதவிக
 इति னை பெற்றுவிட்டேன்.
 शीघ्रं ஆனபடியால்
 आरोप्यताम् சீக்கிரத்தில்
 “சாமக்கிரகைகள் ஏற்ற
 ப்பட்டட்டும்.”

ततः कलापान्संनह्य खड्गौ बद्ध्वा च धन्विनौ । जग्मतुर्येन तौ गङ्गां सीतया सह राघवौ ॥

ततः அப்பொழுது
 तौ அந்த
 राघवौ ஸ்ரீராமரும், லக்ஷ்
 धन्विनौ மணரும்,
 खड्गौ च கோதண்டபாணி
 बद्ध्वा களாகி
 जग्मतु: வாள்களிரண்டையும்
 तौ கரித்துக்கொண்டு,

कलापान् மூட்டைகளை
 संनह्य கட்டித்தயாராய் எ
 सीतया सह டுத்துக்கொண்டு,
 राघवौ ஸீதாபிராட்டியா
 गङ्गां येन ரோடுகூட
 जग्मतु: கங்காநதியைநோக்கி,
 तौ எழுந்தருளிணர்னர்.

राममेव तु धर्मज्ञमुपगम्य विनीतवत् । किमहं करवाणीति सूतः प्राञ्जलिर्ब्रवीत् ॥ १२ ॥

तु தன்மட்டில்
 विनीतवत् யாதொரு நியமனமும்
 सूतः பெறுதிருந்த
 धर्मज्ञं சாரதி, (ஸம்மந்திரர்),
 रामं தருமஞ்ஞராகிய
 प्राञ्जलिः ஸ்ரீராமரை
 “அஞ்சலிஹஸ்தராகி,

उपगम्य கட்டி,
 इति பின்வருமாறு
 अब्रवीत् விண்ணப்பஞ்செய்
 अहं “அடியேன் [தார்:
 करवाणि இனிசெய்யவேண்டி
 किं एव யாதோ?] [யது

ततोऽब्रवीद्वासरथिः सुमन्त्रं स्पृशन्करेणोत्तम दक्षिणेन ।

सुमन्त्र शीघ्रं पुनरेव याहि राज्ञः सकाशे भव चाप्रमत्तः

॥ १३ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------------|-----------|---|
| दाशरथिः | ஸ்ரீராமர் | शीघ्रं | உடனே |
| सुमन्त्रं | சுமந்திரரை | पुनः | திரும்பி |
| दक्षिणेन करेण | வலது திருக்கரத்தால் | याहि | நீர் போவீராக. |
| स्पृशन् | தடவிக்கொண்டு | राज्ञः | சக்கிரவர்த்தியாருடைய |
| ततः | அதற்கு | सकाशे च | சந்நிதியிலேயே |
| अब्रवीत् | பின்வருமாறு பதிலுரைத்தார்: | अप्रमत्तः | இதுவரையில் இருந்ததற்கு வித்தியாசமில்லாதவண்ணமே |
| उत्तम | “உத்தமரான | भव | இரும்.” |
| सुमन्त्र | சுமந்திரரே! | | |

निवर्तस्वेत्युवाचैनमेतावद्धि कृतं मम । रथं विहाय पद्भ्यां तु गमिष्यामो महावनम् ॥१४॥

| | | | |
|-------------|------------------|-----------|------------------------------|
| मम | “எனக்கு | गमिष्यामः | நாங்கள் நடந்து சஞ்சரிப்போம். |
| एतावत् हि | இவ்வளவே | निवर्तस्व | நீர் திரும்பிப்போய் விடும்.” |
| कृतं | போதும். | इति | இப்படியும் |
| रथं | ரதத்தை | एनं | இவரிடத்தில், |
| विहाय | துறந்துவிட்டு, | उवाच | அருளிச்செய்தனர். |
| महावनं | பெருங்கானகத்தில் | | |
| पद्भ्यां तु | கால்களினாலேயே | | |

आत्मानं त्वभ्यनुज्ञातमवेक्ष्यार्तः स सारथिः । सुमन्त्रः पुरुषव्याघ्रमैक्ष्वाकमिदमब्रवीत् ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|---------------|---------------------|
| सः | அந்த | तु | அதனால் |
| सारथिः | சாரதியான | आर्तः | துயரமடைந்தவராகி |
| सुमन्त्रः | சுமந்திரர், | पुरुषव्याघ्रं | புருஷோத்தமராகிய |
| आत्मानं | தமக்கு | ऐक्ष्वाकं | ஸ்ரீராமரைப்பார்த்து |
| अभ्यनुज्ञातं | விடைகொடுத்துவிட்ட | इदं | பின்வருமாறு |
| अवेक्ष्य | சிந்தைசெய்து, [டதை | अब्रवीत् | சொன்னார். |

नातिक्रान्तमिदं लोके पुरुषेणेह केनचित् । तव सभ्रातृभार्यस्य वासः प्राकृतवद्दने ॥१५॥

| | | | |
|-----------------|--|---------------|--|
| सभ्रातृभार्यस्य | “தம்பியோடும் தருமபத்தினியோடும் கூட | इह | இந்த |
| तव | தேவீருடைய | लोके | உலகில் |
| वने | காட்டில் | केनचित् | ஏதேனுமொரு |
| वासः | குடிசெய்தலென்பது | पुरुषेण | மானிடனால் |
| प्राकृतवत् | { அபூர்வமாய் முதலில் நடைபெறும் காரியமாயிருக்கிறது. | इदं | இது |
| | | अतिक्रान्तं न | { இதுவரையிலனுஷ்டிக் கப்பட்ட காரியமாயில்லை. |

न मन्ये ब्रह्मचर्येऽस्ति स्वधीते वा फलोदयः । मार्द्वार्जवयोर्वापि त्वां चेद्व्यसनमागतम् ॥

| | | | |
|-------------------|----------------------|-------------|---------------------|
| व्यसनं | “விட்டுப்பிரிகிறதென் | ब्रह्मचर्यं | { வைதீககிருத்யங்களை |
| आगतं | அடைந்த [பதை | | ஒதுவதில்தானாகட் |
| त्वां चेत् | தேவரீர் விஷயத்தி | | டும், |
| | லோவென்றால் | स्वधीते वा | வேதபாராயணத்தில் |
| मार्द्वार्जवयोः } | தயாதர்மம் என்பதில் | | தானாகட்டும், |
| अपि वा } | தானாகட்டும், நியாய | फलोदयः | பிரயோஜனம் |
| | பிரவர்த்தனை என்ப | अस्ति न | இல்லையென |
| | தில்தானாகட்டும், | मन्ये | நான் நன்கறிவேன். |

सह राघव वैदेह्या भ्रात्रा चैव वने वसन् । त्वं गतिं प्राप्स्यसे वीर त्रीन्लोकांस्तु जयन्निव ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|-------------|-------------------|
| वीर | “தருமவீரராகிய | लोकान् तु | உலகங்களையும் |
| राघव | ஸ்ரீராம! | जयन् | வெற்றிகொண்டவர், |
| त्वं | தேவரீர் | | (ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணு) |
| वैदेह्या सह | வைதேகியாரோடும், | इव | எவ்வண்ணமோ |
| भ्रात्रा च | தம்பியோடும், | | அவ்வண்ணமே |
| वने | வனத்தில் | गतिं | கதியாய், (யாவரும் |
| वसन् एव | எழுந்தருளியிருக்கின் | | புகலிடமாய்) |
| | றவராய், | प्राप्स्यसे | கொண்டு சேவைதந் |
| वीन् | மூன்று | | தருளப்போகிறீர். |

वयं खलु हता राम यच्चयाऽप्युपवञ्चिताः । कैकेय्या वशमेष्यामः पापाया दुःखभागिनः ॥

| | | | |
|------------|----------------|------------|--------------------|
| राम | “ஸ்ரீராம! | कैकेय्याः | கைகேயி அம்மாளு |
| त्वया | தேவரீரால் | वशं | அதிகாரத்தில் [டைய |
| उपवञ्चिताः | கைவிடப்பட்டவர் | | கஷ்டங்களையே ஸதா |
| | களாகிய | दुःखभागिनः | { அனுபவிக்கின்றவர் |
| वयं अपि | நாங்களோ | | களாய் |
| यत् | அக்காரணத்தால் | हताः | மஹாபாபிகளாய், |
| पापायाः | பாபத்தை கருதிய | एष्यामः | ஆகப்போகின்றோம். |
| | | खलु | இல்லையா? என்ன? ” |

इति ब्रुवन्नात्मसमं सुमन्त्रः सारथिस्तदा । दृष्ट्वा दूरगतं रामं दुःखार्तो रुरुदे चिरम् ॥२०॥

| | | | |
|-----------|----------------------|-----------|--------------------|
| सारथिः | சாரதியான | दृष्ट्वा | கினைத்து, |
| सुमन्त्रः | சுமந்திரர் | तदा | அதனாலும் |
| इति | மேற்கண்டவண்ணம், | | { கூட இருந்த காலத் |
| ब्रुवन् | சொல்லிக்கொண்டு | चिरं | தின் அந்தியாயிருந் |
| आत्मसमं | தனக்குத்தானே ஸம | | தமையாலும் |
| रामं | ஸ்ரீராமரை [மாயுள்ள | दुःखार्तः | மனவேதனையால் பீடி |
| | { வெகுதூரம் எழுந்தரு | | க்கப்பட்டவராகி |
| दूरगतं | ளிவிடப்போகிறார் | रुरुदे | கண்ணீர்பெருக்கி |
| | என்பதை | | அழுதார். |

ततस्तु विगते बाष्पे सूतं स्पृष्टोदकं शुचिम् । रामस्तु मधुरं वाक्यं पुनःपुनरुवाच तम् ॥

| | | | |
|----------|--|-------------|---|
| ततः | அப்பொழுது | स्पृष्टोदकं | { ஜலத்தால் துடைத்து க்கொண்டிருக்கின்ற வராய் |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | तु | இருக்கும் ஸமயத்தில் |
| शुचिं | { கபடுகூதின் லி உள் ளும் புறமும் நற்கு ணமே அமையப்பெ ற்றவராகிய | वाक्यं | பின்வரும் திருவாக்கை |
| तं | அந்த | पुनःपुनः | எவ்வளவு |
| सूतं | சாரதியைப்பார்த்து, | मधुरं | { கேட்டாலும் தெவிட்டு தலுண்டாகாதிருக் கும்வண்ணமாய், |
| बाष्पे | கண்ணீர் | उवाच | திருவாய்மலர்ந்தருளி னார். |
| विगते तु | பெருகியபொழுது | | |

इक्ष्वाकूणां त्वया तुल्यं सुहृदं नोपलक्षये । यथा दशरथो राजा मां न शोचेत्तथा कुरु ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|----------|------------------------------------|
| इक्ष्वाकूणां | “இக்ஷ்வாகுவம்சமன் னர்களுக்கு | दशरथः | தசரத |
| त्वया | உம்மோடு | राजा | சக்கிரவர்த்தியார் |
| तुल्यं | ஸமமாய் சொல்லக் கூடிய | मां | என்னை நினைத்து, |
| सुहृदं | ஆப்தன் ஒருவனை | शोचेत् न | மனம் நொந்தவராய் இருக்கக்கூடாது. |
| उपलक्षये न | நான் அறிந்திலேன். | यथा तथा | அதற்கேற்றவண்ண மாய் |
| | | कुरु | நீர் செய்யவேண்டும். |

शोकोपहतचेतास्तु वृद्धश्च जगतीपतिः । कामभारावसन्नश्च तस्मादेतद्व्रीमि ते ॥ २३ ॥

| | | | |
|-----------------|---|--------------|--------------------|
| वृद्धः | “மூப்புடையவராகிய | शोकोपहतचेताः | வெந்துகிடக்கும் மன |
| जगतीपतिः | சக்கிரவர்த்தியார் | | முடையவராயிருக்கி |
| कामभारावसन्नः च | { ஸர்வமுமாய்க்கொண் டிருந்த மனோரதம்கை கூடப்பெற்றதவராகி | तस्मात् च | ஆகையால்தான் [ரூர். |
| तु | அதனால் | ते | உமக்கு |
| | | एतत् | பின்வருவதை |
| | | ब्रवीमि | நான் சொல்லுகிறேன். |

यद्यदाज्ञापयेत्किञ्चित्स महात्मा महीपतिः । कैकेय्याः प्रियकामार्थे कार्यं तदविकाङ्क्षया ॥

| | | | |
|---------------|--|--------------|--|
| सः | “ அந்த | आज्ञापयेत् | கட்டளையிடுகிறாரோ |
| महात्मा | மஹாத்மாவாகிய | तत् | அது |
| महीपतिः | சக்கிரவர்த்தியார் | यत् | அக்காரணத்தால் |
| यत् किञ्चित् | எந்த ஒரு காரியத்தை | अविकाङ्क्षया | முழுவிருப்பத்துடன் |
| कैकेय्याः | கைகேயி அம்மாவின் | कार्यम् | என்னால் செய்துமுடி க்கப்படவேண்டும். |
| प्रियकामार्थे | { இஷ்டத்தை பூர்த்தி செய்துகொடுக்கவே ணுமென்கிற காரண த்தால் | | |

एतदर्थं हि राज्यानि प्रशासति नराधिपाः । यदेषां सर्वकृत्येषु मनो न प्रतिहन्यते ॥ २५ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|----------------|----------------------|
| नराधिपाः | “அரசர்கள் | प्रतिहन्यते न | தடைபடக்கூடாது |
| एषां | இவர்களுடைய | यत् एतदर्थं हि | என்கிற இந்தப்பயனு |
| सर्वकृत्येषु | ஒவ்வொரு காரியங்க | | க்காகத்தான் |
| | ளிலும், | राज्यानि | ராஜ்யங்களை |
| मनः | நினைத்தது | प्रशासति | பாதுகாக்கின்றார்கள். |

यद्यथा स महाराजो नालीकमधिगच्छति । न च ताम्यति दुःखेन सुमन्त्र कुरु तत्तथा ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-----------|----------------------|
| सुमन्त्र | “சுமந்திரரே! | दुःखेन च | மனவேதனையாலும் |
| यत् | இது இப்படி | ताम्यति न | திருமேனி இளைத்துப் |
| | இருக்கின்றமையால் | | போகக்கூடாது. |
| सः | அந்த | यथा तथा | எப்படியானால் இவ்வா |
| महाराजः | சக்கிரவர்த்தியார் | | றாகுமோ |
| अलीकं | இஷ்டமில்லாததை | तत् | அதை |
| अधिगच्छति न | அனுபவிக்கக்கூடாது. | कुरु | நீர்கவனிக்கவேண்டும். |

अदृष्टदुःखं राजानं वृद्धमार्थं जितेन्द्रियम् । ब्रूयास्त्वमभिवाद्यैव मम हेतोरिदं वचः ॥२७॥
नैवाहमनुशोचामि लक्ष्मणो न च मैथिली । अयोध्यायाश्च्युताश्चेति वने वत्स्यामहेति वा ॥
चतुर्दशसु वर्षेषु निवृत्तेषु पुनःपुनः । लक्ष्मणं मां च सीतां च द्रक्ष्यसि क्षिप्रमागतान् ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------------|---------------------|--|
| अदृष्टदुःखं | “இதுவரை துக்கத் தையறியாதவரும், | न | மனத்தாபம் கொள் ளாதிருக்கிறார்கள். |
| वृद्धं | மூப்பினரும், | चतुर्दशसु | பதினான்கு |
| जितेन्द्रियं | ஐம்புலன்களை வென் றவரும், | वर्षेषु | வருஷங்கள் |
| आर्थ एव | யாவரும் பூஜைசெய் யத்தக்கவருமாகிய | निवृत्तेषु क्षिप्रं | தீர்ந்தவுடன் |
| राजानं | சக்கிரவர்த்தியாரிடம் | पुनःपुनः | மீளவும் |
| अयोध्यायाः | அயோத்தியைவிட்டு | आगतान् | திரும்பிவந்துவிட்ட |
| च्युताः | வந்தோமே | मां च | அடியேனையும், |
| इति च | என்பதிலாவது, | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணனையும், |
| वने | வனத்தில் | सीतां च | சீதையையும் |
| वत्स्यामहे | வாஸஞ்செய்ய வேண்டுமே | द्रक्ष्यसि | { தேவரீர் கண்டு ஆனந் சமடையப்போகின் றீர் என்கிற |
| इति वा | என்பதிலாவது | इदं | இந்த |
| अहं | நான் | वचः | என்மொழியை |
| अनुशोचामि न | மனத்தாபம் கொள்ள வில்லை. | त्वं | நீர் |
| लक्ष्मणः च | லக்ஷ்மணனும் | मम हेतोः | என்பொருட்டு |
| मैथिली एव | மேதிலியார் | अभिवाद्य | தண்டம் சமர்ப்பித்து |
| | | ब्रूयाः | சொல்லும். |

एवमुक्त्वा तु राजानं मातरं च सुमन्त्र मे । अन्याश्च देवीः सहिताः कैकेयीं च पुनःपुनः ॥
आरोग्यं ब्रूहि कौसल्यामथ पादाभिवन्दनम् । सीताया मम चार्यस्य वचनलक्ष्मणस्य च ॥

சுமந்த “சுமந்திரரே!
எவ் து இப்படியாய்,
ராஜான சக்கிரவர்த்தியாரிடம்
புன: புன: பலமுறை
உக்தவா சொல்லிவிட்டு,
அத அதன்மேல்
மே எனது
மாதர் மாதாவாகிய
கௌசல்யா ச கோஸலாதேவியாரிட
கைகேயி தேவியாரிடத்
திலும்,
சஹிதா: அவ்விடமிருக்கும்

அனா: மற்ற
தேவி: ச தாய்மார்களிடத்திலும்
மம என்னுடையவும்,
சிதாபா: ஸீதையினுடையவும்
அர்யச ஆப்தசினைகிதனாகிய
லக்ஷ்மணச ச லக்ஷ்மணனுடையவும்
வचनाத் விண்ணப்பமாய்
பாபாபிவந்தன பாதங்களில்நமஸ்கரிக்க
இரோக்யம் ச ஆரோக்யமாயிருக்கி
நீர் சொல்வீராக.

ब्रूयाश्च हि महाराजं भरतं क्षिप्रमानय । आगतश्चापि भरतः स्थाप्यो नृपमते पदे । ॥३२॥

क्षिप्र “சீக்கிரமாய்
भरतं பரதனை
महाराजं சக்கிரவர்த்தியாரிடம்
आनय நீர் அழைத்துக்கொ
ண்டு வந்து நிறுத்தும்.
भरतः च பரதனும்
आगतः च வந்துசேர்ந்தவனாய்

नृपमते { சக்கிரவர்த்தியாரின்
திருவுள்ளம் எள்ள
ளவும் கோணமலிரு
நிலைமையிலேயே [க்கிற
स्थाप्यः हि ஸதா இருந்துவரவே
ண்டுமென்று
ब्रूया: நீர் நற்புத்தி கூற
வேண்டும்.

भरतं च परिष्वज्य यौवराज्येऽभिषिच्य च । अस्मत्सन्तापजं दुःखं न त्वामभिभविष्यति ॥

भरतं “பரதனை
यौवराज्ये இளவரசில்
अभिषिच्य च பட்டாபிஷேகம்
செய்து,
परिष्वज्य च சம்பர்க்கம்பெற்று
விட்டால்,

त्वां உமக்கு
अस्मत्सन्तापजं எங்களுடைய நினை
வால் விளையும்
दुःखं துக்கம்
अभिभविष्यति न அதிகமாயிராது.

भरतश्चापि वक्तव्यो यथा राजानि वर्तसे । तथा मातृषु वर्तेथाः सर्वास्वेवाविशेषतः ॥ ३४ ॥
यथा च तव कैकेयी सुमित्रा च विशेषतः । तथैव देवी कौसल्या मम माता विशेषतः ॥
तातस्य प्रियकामेन यौवराज्यमवेक्षता । लोकयोरुभयोः शक्यं नित्यदौ सुखमेधितुम् ॥

| | |
|------------|---------------------|
| भरतः च | “பரதனும், |
| राजनि | ‘சக்கிரவர்த்தியாரிட |
| यथा | எவ்வண்ணம் [த்தில் |
| वर्तसे | நீ நடக்கின்றனையோ |
| तथा अपि | அவ்வண்ணமே |
| मातृषु | மாதாக்கள் |
| सर्वासु एव | எல்லோர்களிடத்திலும் |
| अविशेषतः | பகஷ்பாத்தமின்றி |
| वर्तेथाः | ஒரே சீராக |
| | நீ நடந்துகொள்ளக் |
| | கடவை’ என்றும், |
| तव | ‘உனக்கு |
| कैकेयी | கைகேயி தேவியார் |
| यथा | எவ்வண்ணம் |
| विशेषतः च | பத்திமைக்குரியவ |
| तथा च | அவ்வண்ணமே [ளோ |
| मम माता | என் மாதாவாகிய |
| कौसल्या | கௌஸல்யா |
| देवी | தேவியாரும், |

| | |
|-------------|----------------------|
| सुमित्रा एव | சுமித்ராதேவியாரும், |
| विशेषतः | பத்திமைக்குரியவர் |
| | க’ளென்றும், |
| तातस्य | ‘தந்தையின் |
| प्रियकामेन | மனங்கோணுது நடப் |
| | பதாலும், |
| यौवराज्यं | இளவரசில் |
| अवेक्षता | நீதி வழுவாது பாது |
| | காத்துவருவதாலும், |
| उभयोः | இஹபரமென்கிற |
| | இரண்டு |
| लोकयोः | உலகங்களிலும் |
| सुखं | புண்யத்தால் விளையும் |
| | நன்மையை |
| नित्यदा | சாசுவதமாய் |
| एधितुं | நீ பெறுவதற்கு |
| शक्यं | சாத்தியமாகு’ |
| | மென்றும் |
| वक्तव्यः | சொல்லப்பட |
| | வேண்டும். |

निवर्त्यमानो रामेण सुमन्त्रः शोककश्चितः । तत्सर्वं वचनं श्रुत्वा स्नेहात्काकुत्स्थमब्रवीत् ॥

| | |
|--------------|----------------------|
| सुमन्त्रः | சுமந்திரர் |
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் |
| निवर्त्यमानः | { திரும்பிப்போக விடை |
| | { கொடுக்கப்பட்டவ |
| | { ராய் |
| शोककश्चितः | { அஸஹ்யமாயிருக்கும் |
| | { மனவேதனையுற்ற |
| | { வராகி |

| | |
|------------|---------------------|
| तत् | அந்த |
| वचनं | திருவாக்கு |
| सर्वं | அனைத்தையும் |
| श्रुत्वा | கேட்டும், |
| स्नेहात् | பத்திமையினால் |
| काकुत्स्थं | ஸ்ரீராமரைப்பார்க்கு |
| अब्रवीत् | பின்வருமாறு வின் |
| | னப்பம் செய்தார். |

यदहं नोपचारेण ब्रूयां स्नेहादविक्रवः । भक्तिमानिति तत्तावद्वाक्यं त्वं क्षन्तुमर्हसि ॥३८॥

| | |
|---------------|------------------|
| अहं | ‘அடியேன் |
| भक्तिमान् इति | தொண்டன் என்னும் |
| | காரணத்தால் |
| अविक्रवः | துணிவுகொண்டு, |
| यत् | எந்த ஒரு |
| वाक्यं | விண்ணப்பத்தை |
| ब्रूयां | தெரிவிக்கின்றேனோ |
| तत् | அதற்கு |

| | |
|----------------|----------------------|
| उपचारेण न | { உள்ளத்திலிருந்து வ |
| | { ராக முகஸ்துதிவாக் |
| | { யமில்லாமையாலும், |
| स्नेहात् तावत् | பத்திமையால்தான் |
| | இருப்பதாலும், |
| त्वं | தேவரீர் |
| क्षन्तुं | திருச்செவிசாற்றி |
| | யருள |
| अर्हसि | திருவுளம் பற்றி அரு |
| | ள்வீராக. |

कथं हि त्वद्विहीनोऽहं प्रतियास्यामि तां पुरीम् । तव तात वियोगेन पुत्रशोकाकुलामिव ॥

| | | | |
|---------------|--|---------------|-------------------------------|
| तात | “ மஹாபூஜ்யரே ! | तां | அந்த |
| तव | தேவரீருடைய | पुरीं | நகரத்திற்கு |
| वियोगेन | பிரிவால் | त्वद्विहीनः | தேவரீரை விட்டுப்பிரிந்தவனாகிய |
| पुत्रशोकाकुलं | { புத்திரனைப்பறிகொடுத்தது உள்ளம்பதைக்கப்பெற்ற ஓர் ஸ்திரீயை | अहं हि | நான் மாத்திரம் |
| इव | போலிருக்கும் | कथं | எவ்வண்ணம் |
| | | प्रतियास्यामि | திரும்பிப்போவேன் ? |

सरामपि तावन्मै रथं दृष्ट्वा तदा जनः । विना रामं रथं दृष्ट्वा विदीर्येतापि सा पुरी ॥

| | | | |
|----------|------------------------------------|---------------|--------------------------|
| मे | “ எனது | तावत् | இப்பொழுது |
| रथं | ரதத்தை | रथं | ரதத்தை |
| तदा | அப்பொழுது | रामं विना | ஸ்ரீராமர் வீற்றிராததாய் |
| सरामं | ஸ்ரீராமர் வீற்றிருக்கப்பெற்றதாய் | दृष्ट्वा | பார்த்து, |
| जनः | உடல் படைக்கப்பெற்ற உயிர் எல்லாமும் | सा पुरी अपि | அந்த நகரமே |
| दृष्ट्वा | பார்த்துவிட்டு, | विदीर्येत अपि | பிளந்து சிதறுண்டழியாதோ ? |

दैन्यं हि नगरी गच्छेद्दृष्ट्वा शून्यमिमं रथम् । सूतावशेषं स्वं सैन्यं हतवीरमिवाहवे ॥ ४१ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------------|------------|---------------------------|
| नगरी | “ நகர் | आहवे | போரில் |
| इमं | இந்த | हतवीरं | தளகத்தனை பறிகொடுத்துவிட்ட |
| रथं | ரதத்தை | स्वं | அவனது |
| शून्यं | உள்ளே ஒருவருமில்லாததாய் | सैन्यं इव | படையைப்போன்றதாய் |
| सूतावशेषं | சாரதி மாத்திரம் இருக்கப்பெற்றதாய் | दैन्यं | மனத்தளர்ச்சியை |
| दृष्ट्वा | பார்த்து, | गच्छेत् हि | அடையுமே ! |

दूरेपि निवसन्तं त्वां मानसेनाग्रतः स्थितम् । चिन्तयन्त्योऽद्य नूनं त्वां निराहाराः कृताः प्रजाः॥

| | | | |
|-----------|--------------|--------------|-------------------------------|
| प्रजाः | “ ஜனங்கள் | चिन्तयन्त्यः | நினைத்துக்கொண்டிருப்பவர்களாய் |
| दूरे | தூரதேசத்தில் | नूनं | அதனால் |
| निवसन्तं | வசிக்கும் | अद्य | இப்பொழுது |
| त्वां | தேவரீரை | निराहाराः | உணவுகொள்ளாதவர்களாய் |
| मानसेन | சதா நினைவால் | कृताः | செய்யப்பட்டிருப்பார்கள். |
| अग्रतः | முன்னே | | |
| स्थितं | நிற்பவராய் | | |
| त्वां अपि | உம்மையே | | |

दृष्टं तद्धि त्वया राम यादृशं त्वत्प्रवासने । प्रजानां संकुलं वृत्तं त्वच्छोककान्तचेतसाम् ॥

| | | | |
|--------------------------|---|----------|---|
| राम | “ஸ்ரீராம! | तत् | அந்த |
| त्वत्प्रवासने | { தேவரீர் நாட்டின் எல் லையைக்கடந்து எழு ந்தருளினசமயத்தில் | संकुलं | குழப்பமடைந்த |
| त्वच्छोककान्त- चेतसां | { தேவரீருக்காக வருந்தி தளர்ச்சியுற்ற மன முடைய | वृत्तं | மனோபாவமும் |
| प्रजानां | பிரஜைகளின் | यादृशं | எத்தன்மையதென் |
| | | त्वया हि | தேவரீராலேயே [பது, பிரத்யக்ஷத்தில் கண் டருளப்பட்டிருக்கி றது. |
| | | दृष्टम् | |

आर्तनादो हि यः पौरैर्मुक्तस्त्वद्विप्रवासने । सरथं मां निशाम्यैव कुर्युः शतगुणं ततः ॥४४॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------------|---------|---------------------|
| त्वद्विप्रवासने | “தேவரீர் வனவாஸம் புறப்படுகையில் | ततः | அதிலும் |
| पौरैः | பட்டணத்துஜனங்க | शतगुणं | நூறுமடங்கதிகமாக |
| मुक्तः | விடுக்கப்பட்ட [ளால் | सरथं | இரத்தத்திலிருக்கும் |
| आर्तनादः | கூக்குரல் | मां एव | என்னைமாதிரம் |
| यः हि | எதுவோ | निशाम्य | கண்டு |
| | | कुर्युः | கூக்குரலிடுவார்கள். |

अहं किं चापि वक्ष्यामि देवीं तव सुतो मया । नीतोऽसौ मातुलकुलं सन्तापस्यज्यतामिति ॥

असत्यमपि नैवाहं ब्रूयां वचनमीदृशम् । कथमप्रियमेवाहं ब्रूयां सत्यमिदं वचः ॥ ४६ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|-----------|----------------------------|
| देवी | “அம்மாளிடம் | इदं | இப்பொழுது |
| तव | ‘தேவரீருடைய | अप्रियं | கேட்க அஸௌயமாயி ருக்கும் |
| असौ सुतः | இந்த திருக்குமாரன் | सत्यं | உண்மையாகிய |
| मया | என்னால் | वचः एव | மொழியையே |
| मातुलकुलं | மாமன்வீட்டில் | अहं एव | நானே |
| नीतः | விட்டுவிடப்பட்டிருக் | कथं | எப்படி |
| सन्तापः | மனவேதனை [கிறார். | ब्रूयां | தெரிவிக்கமுடியும்? |
| त्यज्यतां इति | ஒழியட்டும்’ என்கிற | अपि | எப்பட்யும் |
| ईदृशं | இந்த | किं च | எதைத்தான் |
| असत्यं वचनं | பொய் வார்த்தையை | अहं | நான் |
| अहं अपि | நானே | वक्ष्यामि | சொல்வேன். ? |
| ब्रूयां न | சொல்லக்கூடாது. | | |

मम तावन्नियोगस्थास्त्वद्वन्धुजनवाहिनः । कथं रथं त्वया हीनं प्रवाहन्ति ह्योत्तमाः ॥

| | | | |
|-------------------------|--|------------|-------------------------------------|
| मम | “எனது | ह्योत्तमाः | சிறந்த குதிரைகள் |
| नियोगस्थाः | { ஓட்டும் சமிக்ஞைகளு க்கு ஈடுபட்டவைக ளாய் | तावत् | இப்பொழுது |
| त्वद्वन्धुजन- वाहिनः | { தேவரீரையும், கூடவே யிருக்கும் பாக்கியம் பெற்றவர்களையும் சம ந்துவந்தவைகளாகிய | त्वया हीनं | தேவரீர் எழுந்தருளி |
| | | रथं | ரதத்தை [யிராத |
| | | कथं | எப்படி |
| | | प्रवाहन्ति | இழுத்துக்கொண்டு மீண்டு செல்லும்? |

तन्न शक्ष्याम्यहं गन्तुमयोध्यां त्वदृतेऽनघ । वनवासानुयानाय मामनुज्ञातुमर्हसि ॥ ४८ ॥

अनघ “माசற்றவரே!
तत् ஆகையால்
त्वदृते தேவரீரை விட்டுப்
अहं அடியேன் [பிரிந்து
अयोध्यां அயோத்திக்கு
गन्तुं திரும்பிச்செல்ல
शक्ष्यामि न முடியாது.

मां அடியேனை
वनवासानुयानाय { வனவாஸத்திலும்கூட
வே வைத்துக்கொள்
வதற்கு
अनुज्ञातुं அனுமதியளிக்க
अर्हसि தேவரீர் திருவுள்ளம்
பற்றியருள்வீராக.

यदि मे याचमानस्य त्यागमेव करिष्यसि । सरथोऽग्निं प्रवेक्ष्यामि त्यक्तमात्र इह त्वया ॥

याचमानस्य “याசிக்கும்
मे அடியேனுக்கு
त्यागं एव திரும்பியனுப்பிவிடு
வதையே
करिष्यसि यदि தேவரீர் திருவுளம்
கொள்ளுகிறீர் என்
इह இங்கு [மூல்

त्वया தேவரீர்
त्यक्तमात्र: விட்டுச்சென்ற தகவு
सरथ: ரதத்துடன் [ணமே
अग्निं அக்கினியில்
प्रवेक्ष्यामि நான் விழுந்து
விடுவேன்.

भविष्यन्ति वने यानि तपोविघ्नकराणि ते । रथेन प्रतिबाधिष्ये तानि सत्त्वानि राघव ॥

राघव “ஸ்ரீராம!
वने வனத்தில்
ते தேவரீரின்
तपोविघ्नकराणि தவத்துக்கிடையூறு
செய்கிறவைகளாய்

सत्त्वानि உயிர்கள்
भविष्यन्ति ஏற்படுகின்றனவோ
तानि அவைகளை
रथेन இரதத்திலிருந்த
வண்ணமே

यानि எந்த

प्रतिबाधिष्ये நான் ஓட்டிவிடுவேன்.

त्वत्कृते न मयाऽवाप्तं रथचर्याकृतं सुखम् । आशंसे त्वत्कृतेनाहं वनवासकृतं सुखम् ॥

त्वत्कृते “தேவரீர் பட்டாபிலே
கத்தில்,
रथचर्याकृतं தேர்ப்பாகனாயிருப்ப
தாலுண்டாகும்
सुखं பாக்கியமானது
मया என்னால்
अवाप्तं न அடையப்படவில்லை.

त्वत्कृतेन தேவரீரின் அனுகூ
ஹத்தால்
वनवासकृतं வனவாஸத்தாலுண்
सुखं பாக்கியத்தை [டாகும்
अहं आशंसे நான் வருந்திப்பிரார்த்
திக்கின்றேன்.

प्रसीदेच्छामि तेऽरण्ये भवितुं प्रत्यनन्तरः । प्रीत्याऽभिहितमिच्छामि भव मे प्रत्यनन्तरः ॥

अरण्ये “அரணியத்தில்
ते தேவரீருடைய
प्रत्यनन्तर: ஸநிதியிலிருக்கின்ற
भवितुं ஆக [வனாக
इच्छामि நான் பிரார்த்திக்கின்
றேன்.
प्रीत्या அடியார்களுக்கு காட்
டும் தண்ணளியால்
मे அடியேனுக்கு

प्रत्यनन्तर: ‘பக்கலிலேயே இருக்
கின்றவனாக
भव நீ ஆகுக’ எனும்
अभिहितं திருவாக்கை
इच्छामि நான் பிரார்த்திக்
கின்றேன்;
प्रसीद கருணைபுரிந்தருள்
வீராக.

भृत्यवत्सल तिष्ठन्तं भर्तृपुत्रगते पथि । भक्तं भृत्यं स्थितं स्थित्यां त्वं न मां हातुमर्हसि ॥

| | | | |
|---------------|--|-----------|--------------------------------|
| भर्तृपुत्रगते | “சக்கிரவர்த்தியாரின் திருக்குமாரராய் திரு வினையாடிக்கொண்டு | स्थितं | அசஞ்சலப் பற்று டையவனும், |
| भृत्यवत्सल | அடிமைப்பட்டவர்க ளுக்கு அருள் புரி பவரே! | पथि | செய்யவேண்டிய காரியத்தில் |
| भक्तं | பத்திமைகொண்ட | तिष्ठन्तं | மனவுறுதிகொண்ட ருப்பவனுமாகிய |
| भृत्यं | தொண்டனும் | मां | அடியேனை |
| स्थित्यां | தருமசிந்தையுற்று த ருமானுஷ்டானத்தில் | त्वं | தேவரீர் |
| | | हातुं | திருப்பியனுப்பிவிட |
| | | अर्हसि न | திருவுளம்பற்றக் கூடாது.” |

एवं बहुविधं दीनं याचमानं पुनःपुनः । रामो भृत्यानुकम्पी तु सुमन्त्रमिदमब्रवीत् ॥५९॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------|------------|--------------------------------|
| भृत्यानुकम्पी | அடியார்களைக் காத்தருளும் | एवं | மேற்கண்டவண்ண வருந்தி [மாய்] |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | याचमानं तु | யாசிக்கும் |
| बहुविधं | பலவகையாக, | सुमन्त्रं | சுமந்திரரைப்பார்த்து |
| पुनः पुनः | மீண்டும் மீண்டும், | इदं | பின்வருமாறு |
| | | अब्रवीत् | அருளிச்செய்தார் : |

जानामि परमां भक्तिं मयि ते भर्तृवत्सल । शृणु चापि यदर्थं त्वां प्रेषयामि पुरीमितः ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-----------|-------------------------|
| भर्तृवत्सल | “ராஜபக்தனே ! | इतः | இங்கிருந்து |
| मयि | என்னிடத்திலுள்ள | पुरीं | நகருக்கு |
| ते | உமது | यदर्थं | எக்காரணத்தைக் கொண்டு |
| परमां | சிறந்த | प्रेषयामि | அனுப்புகிறேனே, அதை |
| भक्तिं | பத்திமையை | शृणु | சொல்லுகிறேன் கேளும். |
| जानामि | நான் நன்கறிவேன். | | |
| अपि च | அப்படியிருந்தும், | | |
| त्वां | உம்மை | | |

नगरं त्वां गतं दृष्ट्वा जननी मे यवीयसी । कैकेयी प्रत्ययं गच्छेदिति रामो वनं गतः ॥

| | | | |
|----------|-----------------------|----------|---------------------------------|
| नगरं | “பட்டணத்திற்கு | कैकेयी | கைகேயி அம்மாள் |
| गतं | திரும்பிவந்து சேர்ந்த | रामः | ‘ராமன் |
| त्वां | உம்மை | वनं | காட்டை |
| दृष्ट्वा | கண்டு, | गतः इति | அடைந்தான்’ என்கிற |
| मे | எனது | प्रत्ययं | உத்தேசம் நிறைவேற ப்பெற்றதாய் |
| यवीयसी | சிறிய | गच्छेत् | எண்ணங்கொள்வாள். |
| जननी | தாயாரான | | |

परितुष्टा तु सा देवी वनवासं गते मयि । राजानं नातिशङ्केत मिथ्यावादीति धार्मिकम् ॥

| | | | |
|--------|-----------|----------------|----------------------|
| मयि | “நான் | परितुष्टा | மகிழ்வுற்றவளாகி |
| वनवासं | வனவாஸத்தை | धार्मिकं | தார்மிகராகிய |
| गते | அடைந்தால் | राजानं | சக்கிரவர்த்தியாரை |
| तु | அப்பொழுது | मिथ्यावादी इति | சொன்னசொல் தவறியவராய் |
| सा | அந்த | अतिशङ्केत न | ஐயங்கொள்ளாள். |
| देवी | தேவியார் | | |

एष मे प्रथमः कामो यदम्बा मे यवीयसी । भरतारक्षितं स्फीतं पुत्रराज्यमवाप्नुयात् ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|-------------|---------------------|
| मे | “எனது | स्फीतं | உள்ளம் பூரித்திருப் |
| यवीयसी अम्बा | சிறிய தாயார் | अवाप्नुयात् | அடைவாள். [பதை |
| भरतारक्षितं | பரதனால் பாதுகாக்கப்படும் | एषः | இது |
| | | मे | என்னுடைய |
| पुत्रराज्यं | திருக்குமாரனுடைய ராஜ்யத்தில் | प्रथमः | ஸ்ர்வமுமாய்க் கொண்ட |
| यत् | அக்காரணத்தால் | कामः | மனோரதம். |

मम प्रियार्थं राज्ञश्च सरथस्त्वं पुरीं व्रज । संदिष्टश्चापि यानर्थीस्तांस्तान्ब्रूयास्तथा तथा ॥

| | | | |
|-------------|---|---------|--------------------|
| मम च | “எனக்காகவும் | अर्थान् | செய்திகள் |
| राज्ञः | சக்கிரவர்த்தியாரின் | यान् च | எவைகளோ |
| प्रियार्थं | தேற்றரவுக்காகவும் | तान् | அவைகளை |
| त्वं | நீர் | तान् | அவரவர்களுக்கு. |
| सरथः | ரதத்துடன்கூடிய வராய் | तथा तथा | சொல்லப்பட்டவண் ணமே |
| पुरीं व्रज | நகரை அடையும். | ब्रूयाः | சொல்லீராக.” |
| सन्दिष्टः) | சக்கிரவர்த்தியார் | | |
| अपि) | ஸந்நிதிக்கு தூது மொழிகொண்டு செல்லும் தூதராக நீர் இருப்பதால் | | |

इत्युक्त्वा वचनं सूतं सान्त्वयित्वा पुनःपुनः । गुहं वचनमक्लीवं रामो हेतुमदब्रवीत् ॥ ६५ ॥

| | | | |
|---------------|--|----------|-----------------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | वचनं | திருவாக்கையும், |
| सूतं | சாரதியை | उक्त्वा | அருளியபின்னர், |
| पुनः पुनः | எவ்வளவோ | अक्लीवं | சடக்கென எதையும் செய்துமுடிக்கவல்ல |
| सान्त्वयित्वा | { நல்வார்த்தை சொல்லி சமாதானப்படுத்தி விட்டு, | गुहं | குகரைப்பார்த்து |
| हेतुमत् | காரணங்களோடு கூடிய | वचनं | பின்வரும் வார்த்தை யை |
| इति | மேற்கண்ட | अब्रवीत् | சொன்னார் |

नेदानीं गुह योग्योऽयं वासो मे सजने वने । अवश्यं ह्यश्रमे वासः कर्तव्यस्तद्वतो विधिः ॥

| | | | |
|----------|---------------------|----------|-------------------|
| गुह | “குகரோ! | वासः | வாசமானது |
| मे | எனக்கு | अवश्यं | அவசியம் |
| सजने | ஜனசம்சர்க்கம் பெற்ற | कर्तव्यः | அனுஷ்டிக்கவேண்டிய |
| वने | காட்டில் | | தாயிருக்கிறது. |
| अयं | இப்பொழுது | इदानीं | இதுவிஷயத்தில் |
| वासः | வாஸமென்பது | विधिः हि | நியமனமும் |
| योग्यः न | ஏற்றதாகாது. | तद्वतः | உப்படியேயிடப்பட்ட |
| आश्रमे | ஆசிரமத்தில் | | டிருக்கிறது. |

सोऽहं गृहीत्वा नियमं तपस्विजनभूषणम् । हितकामः पितुर्भूयः सीताया लक्ष्मणस्य च ॥

जटाः कृत्वा गमिष्यामि न्यग्रोधक्षीरमानय ॥ ६७ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|----------------|---------------------|
| पितुः | “தந்தைக்கும், | तपस्विजन-} | தவசிகள் தலைமயிரை |
| सीतायाः | சீதைக்கும், | भूषणं } | முடைதலின் மாதிரி |
| लक्ष्मणस्य च | லக்ஷ்மணனுக்கும், | गृहीत्वा | பற்றுவைத்து, [யில், |
| भूयः | எப்பவும் | जटाः | தலைமயிரை சடை |
| हितकामः | சரியான வழியில் நடப் | कृत्वा | களாய் |
| | பவனாய் விளங்கும் | | தரித்து பின்னிக் |
| सः | அந்த | गमिष्यामि | கொண்டு |
| अहं | நான் | न्यग्रोधक्षीरं | இருக்கப்போகிறேன்; |
| नियमं | சாஸ்திரவிதியாகிய | आनय | ஆலம்பாலை |
| | | | நீ கொண்டு வருவா |
| | | | யாக.” |

तत्क्षीरं राजपुत्राय गुहः क्षिप्रमुपाहरत् । लक्ष्मणस्यात्मनश्चैव रामस्तेनाकरोज्जटाः ॥ ६८ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|--------------|------------------|
| गुहः | குகர் | रामः एव | ஸ்ரீராமரே |
| तत्क्षीरं | அந்தப் பாலை | आत्मनः | தனக்கும் |
| राजपुत्राय | சக்கிரவர்த்தியாரின் | लक्ष्मणस्य च | லக்ஷ்மணருக்கும் |
| | திருக்குமாரருக்கு | तेन | அதைக்கொண்டு |
| क्षिप्रं | தக்ஷணமே | जटाः | தலைமயிரை சடைச |
| उपाहरत् | கொணர்ந்து ஸமர்ப் | | ளாய் |
| | பித்தனர். | अकरोत् | திரித்தருளினார். |

दीर्घबाहुर्नरव्याघ्रो जटिलत्वमधारयत् ॥ ६९ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------|------------------|
| दीर्घबाहुः | ஆஜா னுபாஹுவாகிய | जटिलत्वं | தலைமயிரை சடை |
| नरव्याघ्रः | புருஷோத்தமராகு | | சடையாய் திரித்து |
| | மவர் | अधारयत् | பின்னிக்கொண்டிரு |
| | | | த்தலை |
| | | | ஏற்றுக்கொண்டார். |

तौ तदा चीरवसनौ जटामण्डलधारिणौ । अशोभेतामृषिसमौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥७०॥

தடா அப்பொழுது
 ஆதரௌ உடன்பிறந்தவர்களும்
 ராமலக்ஷ்மணௌ ஸ்ரீராமரும் லக்ஷ்மண
 ருமாகிய

चीरवसनौ { மரவுரிகளை உடுத்துக்
 கொண்டிருப்பவர்
 களாய்
 जटामण्डलधारिणौ ஜடாமண்டலதாரி
 कृषिसमौ ரிஷிகளையொத்தவர்
 अशोभेताम् திகழ்ந்தனர். [களாய்

ततो वैखानसं मार्गमास्थितः सहलक्ष्मणः । व्रतमादिष्टवान् रामः सहायं गुहमब्रवीत् ॥७१॥

தத: அப்பொழுது
 வ்ரத் சங்கற்பத்தை
 ஆடிஷ்வான் செய்துகொண்டவ
 ராய்
 वैखानसं வானப்ரஸ்தர்களுக்
 குரிய
 मार्गं அனுஷ்டானத்தை

आस्थितः பற்றியவரும்
 सहलक्ष्मणः லக்ஷ்மணருடனிருப்ப
 रामः ஸ்ரீராமர் [வருமான
 सहायं ஆப்தராகிய
 गुहं குகரைப்பார்த்து
 अब्रवीत् பின்வருமாறு அருளி
 ச்செய்தார்.

अप्रमत्तो बले कोशे दुर्गे जनपदे तथा । भवेथा गुह राज्यं हि दुरारक्षतम् मतम् ॥ ७२ ॥

गुह “குகரே!
 बले சதுரங்கபலத்திலும்,
 कोशे பொருளிலும்,
 दुर्गे { நிலவரண், நீரரண்,
 மலையரண், காட்டர
 ண், என்ற நான்கு
 வகை அரணிலும்,
 जनपदे तथा நாட்டிலும்

अप्रमत्तः ஊக்கமுடையவராய்
 भवेथा: நீர் இருப்பீராக.
 राज्यं ராஜ்யபரிபாலனம்
 दुरारक्षतम् சிரமசாத்தியமென்
 पतु
 मतं हि ய'வருக்கும் தெரிந்த
 விஷயமே.”

ततस्तं समनुज्ञाय गुहमिक्ष्वाकुनन्दनः । जगाम तूर्णमव्यग्रः सहभार्यः सलक्ष्मणः ॥ ७३ ॥

अव्यग्रः சாந்தமூர்த்தியும்,
 इक्ष्वाकुनन्दनः இக்ஷ்வாகுகுலபிள்ளை
 तं அந்த [யுமான அவர்,
 गुहं குகருக்கு,
 समनुज्ञाय விடைகொடுத்தருளி,

तूर्णं தக்ஷணமே
 सहभार्यः தருமபத்தினியோடும்
 सलक्ष्मणः லக்ஷ்மணரோடும்,
 ततः அவ்விடத்திலிருந்து
 जगाम எழுந்தருளினார்.

स तु दृष्ट्वा नदीतीरे नावमिक्ष्वाकुनन्दनः । तितीर्षुः शीघ्रगां गङ्गामिदं लक्ष्मणमब्रवीत् ॥

इक्ष्वाकुनन्दनः இக்ஷ்வாகுகுலபிள்ளை
 सः அவர், [யாகிய
 नदीतीरे நதிக்கரையில்
 नावं மரக்கலத்தை
 दृष्ट्वा கண்டு,
 शीघ्रगां ஜலபிரவாஹவேக
 முற்ற

गङ्गां கங்காநதியை
 तितीर्षुः கடந்துசெல்லத்திருவு
 ளம் பற்றியவராகி,
 लक्ष्मणं லக்ஷ்மணரைப்பார்
 तु இதுவிஷயத்தில் [க்து
 इदं பின்வருமாறு
 अब्रवीत् அருள் ச்செய்தார்.

आरोह त्वं नरव्याघ्र स्थितां नावमिमां शनैः । सीतां चारोपयान्वक्षं परिगृह्य मनस्विनीम् ॥

नरव्याघ्र "புருஷோத்தம!
स्थितां சித்தமாய் வந்து
इमां இந்த [நிற்கின்ற
नाव் மரக்கலத்தை
परिगृह्य பிடித்துக்கொண்டு,
मनस्विनीं பிடிவாதமாய் கூடவே
வரும்,

सीतां சீதையை
शनैः மெள்ள, (ஜாக்கிரதை
யாய்)
आरोपय ஏற்றிவை.
अन्वक्षं உடனே
त्वं हि நீயும்
आरोह ஏறிக்கொள்."

स भ्रातुः शासनं श्रुत्वा सर्वप्रतिकूलयन् । आरोप्य मैथिलीं पूर्वमारोहात्मवांस्ततः ॥

अप्रतिकूलयन् திருவாக்குக்கு மறு
வாக்கு நினைபாத
आत्मवान् ஞானவிருத்தராகிய
सः அவர்,
भ्रातुः தமையனாரின்
शासनं ஆக்கினை
सर्वं எல்லாவற்றையும்

श्रुत्वा சிரமேற்கொண்டு,
पूर्वं முதலில்
मैथिलीं மைதிலியாரை
आरोप्य ஏற்றிவைத்துவிட்டு,
ततः உடனே
आरोह தாமும் ஏறிக்கொண்
டார்.

अथारोह तेजस्वी स्वयं लक्ष्मणपूर्वजः । ततो निषादाधिपतिर्गुहो ज्ञातीनचोदयत् ॥७॥

अथ அதன்பிறகு
तेजस्वी திரிலோகபிரஸித்தி
பெற்றவரும்,
लक्ष्मणपूर्वजः லக்ஷ்மணருக்குதமை
யனருமான அவர்
स्वयं தாமே
आरोह ஏறியருளினார்.

ततः உடனே
निषादाधिपतिः வேடவர்களின் மன்ன
குஹ் [ராகிய
ज्ञातीन् சுற்றத்தார்களைப்
பார்த்து
अचोदयत् "சீக்கிரம் ஜாக்கிர
தை" என்றார்.

राघवोऽपि महातेजा नावमारुह्य तां ततः । ब्रह्मवत्क्षत्रवच्चैव जजाप हितमात्मनः ॥ ७८ ॥

महातेजाः अपि மிக்க தேஜஸ்வியு
राघवः ஸ்ரீராமர் [மாகிய
तां அந்த
नाव் மரக்கலத்தில்
आरुह्य எறிக்கொண்டு,
ततः एव அப்போதும்
आत्मनः பரமாத்மாவுக்கு

हितं உள்ளங்குளிரச் செய்
யத்தக்கதை
ब्रह्मवत् பரமபத சித்திக்கு
வேண்டிய யாவையும்,
क्षत्रवत् च பூலோக பெருமைக்கு
வேண்டிய யாவையும்,
जजाप ஜபம் செய்தருளினார்.

आचम्य च यथाशास्त्रं नदीं तां सह सीतया । प्राणमत्प्रीतिसंहृष्टो लक्ष्मणश्चामितप्रभः ॥

अमितप्रभः மஹாதேஜஸ்வியாகிய
लक्ष्मणः च லக்ஷ்மணரும்,
प्रीतिसंहृष्टः च { கௌரவத்தால் அவ
ரையொத்து நடக்
கின்றவராகி,
यथाशास्त्रं சாஸ்திர முறைப்படி

आचम्य ஆசமனம்பண்ணி,
तां அந்த
नदीं நதியை
सीतया सह சீதாபிராட்டிய யாரோடு
प्राणमत् பணிந்தார் [கூட

अनुज्ञाय सुमन्त्रं च सबलं चैव तं गुहम् । आस्थाय नावं रामस्तु चोदयामास नाविकान् ॥

ராம: ஸ்ரீராமர்
 नावं மரக்கலத்தில்
 आस्थाय एव எழுந்தருளிய பின்
 तं அந்த [னரும்,
 सुमन्त्रं च சுமந்திரருக்கும்,
 सबलं பரிவாரங்களுடன்
 கூடிய

गुहं च குஹருக்கும்
 अनुज्ञाय तु { அவரவர்க்குரிய உப
 नाविकान् { சாரவார்த்தைகளைச்
 चोदयामास { சொல்லி விடைகொ
 'ஒட்டுங்கள்' என்றார்.

ततस्तैश्चोदिता सा नौ: कर्णधारसमाहिता । शुभस्फ्यवेगाभिहता गङ्गासलिलमत्यगात् ॥

कर्णधार- } பத்திமைகொண்ட
 समाहिता } நாவிக்களையுடைய
 सा नौ: அந்த மரக்கலம்
 तत: அப்பொழுது
 तै: அவர்களால்
 चोदिता: உற்சாகம் கொண்டு
 தள்ளப்பட்டதாய்,

शुभस्फ्य- } ஏற்ற துடுப்புகளால்
 वेगाभिहता } விரைவாகச் செலுத்
 गङ्गासलिलं கங்கா ஜலத்தை
 अत्यगात् கடந்து சென்றது.

मध्यं तु समनुप्राप्य भागीरथ्यास्त्वनिन्दिता । वैदेही प्राञ्जलिभूत्वा तां नदीमिदमब्रवीत् ॥

अनिन्दिता தோஷரஹிதையாகிய
 वैदेही வைதேஹியார்
 भागीरथ्या: கங்கையின்
 मध्यं நடுவை
 समनुप्राप्य तु அடைந்த சமயத்தில்
 प्राञ्जलि: அஞ்சலிஹஸ்தளாய்

भूत्वा ஆகி,
 तां அந்த
 नदीं तु நதியைப்பார்த்து
 इदं பின்வருமாறு
 अब्रवीत् விண்ணப்பஞ்செய்
 தாள்.

पुत्रो दशरथस्यायं महाराजस्य धीमत: । निदेशं पारयत्वेष गङ्गे त्वदभिरक्षित: ॥ ८३ ॥

गङ्गे “கங்கா தேவியே!
 धीमत: ஞானியாகிய
 दशरथस्य தசரத
 महाराजस्य சக்கிரவர்த்தியாரின்
 पुत्र: திருக்குமாரனாகிய
 अयं இதோ இருக்கும்

एष: இவர்
 त्वदभिरक्षित: உனதருள் பெற்றவ
 निदेशं அக்கரைக்கு
 पारयतु சேஷமமாய்ப்போய்ச்
 சேரவேண்டும்.

चतुर्दश हि वर्षाणि समग्राण्युष्य कानने । भ्रात्रा सह मया चैव पुन: प्रत्यागमिष्यति ॥

चतुर्दश “பதினான்கு
 वर्षाणि வருஷங்கள்
 कानने காட்டில்
 उष्य வசித்து,
 समग्राणि हि குறையின்றி தீர்ந்த
 வைகளாய்,

भ्रात्रा च தம்பியாருடனும்,
 मया सह அடியேனுடனும்
 पुन: एव மீண்டும் திரும்பி
 प्रत्यागमिष्यति இவர் வந்துசேர
 வேண்டும்.

ततस्त्वां देवि सुभगे क्षेमेण पुनरागता । यक्ष्ये प्रमुदिता गङ्गे सर्वकामप्रसाधिनि ॥ ७५ ॥

सर्वकाम- } “எல்லாருடைய மனோ
प्रसाधिनि } ரதங்களையும் அளிக்க
வல்ல
सुभगे சிறந்த பாக்கியம்
गङ्गे கங்கை [பெற்ற
देवि தேவியே!

क्षेमेण கேஷமமாக
पुनरागता திரும்பிவந்த துசேர்ந்த
ततः ஆகில் [வளாக
प्रमुदिता சந்தோஷமடைந்தவ
त्वां உன்னை [ளாய்,
यक्ष्ये நான் பூஜிப்பேன்.

त्वं हि त्रिपथगा देवि ब्रह्मलोकं समीक्षसे । भार्या चोदधिराजस्य लोकेऽस्मिन्संप्रदृश्यसे ॥

देवि “தேவியே!
त्रिपथगा மூவுலகங்களிலு
त्वं தேவரீர், [மோடும்
ब्रह्मलोकं हि பிரம்மலோகத்தையும்
समीक्षसे கடைகூடித்தருளுகின்
றீர்.

अस्मिन् இந்த
लोके च உலகத்திலும்,
उदधिराजस्य சமுத்திரராஜனுடைய
भार्या பார்வையாக
संप्रदृश्यसे மிகக் கொண்டாடப்
படுகின்றீர்.

तत्त्वां देवि नमस्यामि प्रशंसामि च शोभने । प्राप्तराज्ये नरव्याघ्रे शिवेन पुनरागते ॥
गवां शतसहस्रं च वस्त्राण्यन्नं च पेशलम् । ब्राह्मणेभ्यः प्रदास्यामि तव प्रियचिकीर्षया ॥

शोभने “உத்தமியாராகிய
देवि தேவியே!
त्वां தேவரீரை
प्रशंसामि துதிக்கிறேன்.
नमस्यामि நமஸ்கரிக்கிறேன்.
नरव्याघ्रे புருஷோத்தமர்
पुनरागते மீண்டெழுந்தருளி,
शिवेन மங்களமாக
प्राप्तराज्ये பட்டாபிஷேகங்கொள்
त அப்போது [வாராகில்,
तव தேவரீருக்கு

प्रियचिकीर्षया { உள்ளங்குளிரச்செய்
யவேண்டுமெனும்
ஆசையால்
शतसहस्रं நூறுபிரம்
गवां च பசுக்களையும்,
वस्त्राणि च வஸ்திரங்களையும்,
पेशलं மனோக்குமான
अन्नं च அன்னத்தையும்
ब्राह्मणेभ्यः வேதியர்களுக்கு
प्रदास्यामि நான் தானம்
செய்வேன்.

सुराघटसहस्रेण मांसभूतौदनेन च । यक्ष्ये त्वां प्रयता देवि पुरीं पुनरुपागता ॥ ८९ ॥

देवि “தேவியே!
पुरीं நகருக்கு
पुनः மீண்டும்
उपागता வந்துசேர்ந்தவளாய்
प्रयता நியமத்தையுடைய
வளாய்

सुराघटसहस्रेण { ஆயிரம் தீர்த்தம்நிறை
யப்பெற்ற பூர்ணகல
சங்களாலும்,
मांस- } பலவகை பழங்களோ
भूतौदनेन च } டும், பால் தேனோடும்
கலக்கப்பெற்ற பஞ்
சாமிர்த்தத்தாலும்
त्वां உன்னை
यक्ष्ये நான் பூஜிப்பேன்.

यानि त्वत्तीरवासीनि दैवतानि वसन्ति हि । तानि सर्वाणि यक्ष्यामि तीर्थान्यायतनानि च ॥

| | | | |
|---------------------|---|------------|------------------|
| तीर्थानि | “தீர்த்தகட்டங்களும், | वसन्ति | வஸிக்கின்றனவோ |
| आयतनानि च | தேவாலயங்களும் | तानि | அவைகள் |
| यानि | எந்த | सर्वाणि हि | எல்லா வற்றையும் |
| दैवतानि | தேவதைகளும் | यक्ष्यामि | நான் பூஜிப்பேன். |
| त्वत्तीर- वासीनि | உனது தீரங்களில் எழு ந்தருளியவைகளாய், | | |

पुनरेव महाबाहुर्मया भ्रात्रा च सङ्गतः । अयोध्यां वनवासात् प्रविशत्वनयोऽनघे ॥ ९१ ॥

| | | | |
|------------|----------------------|-------------|----------------|
| अनघे | “மாசற்ற தேவியே! | वनवासात् एव | வனவாஸத்தை முடி |
| अनघः | மாசற்ற | | த்துக்கொண்டே |
| महाबाहुः | ஆஜா னபாஹுவாகு | पुनः | மீண்டும் |
| भ्रात्रा च | தம்பியாரோடும் [மீவர் | अयोध्यां | அயோத்தியில் |
| मया तु | என்னோடும் | प्रविशतु | எழுந்தருள |
| सङ्गतः | கூடியவராய், | | வேண்டும்.” |

तथा संभाषमाणा सा सीता गङ्गामनिन्दिता । दक्षिणा दक्षिणं तीरं क्षिप्रमेवाभ्युपागमत् ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|--------------|------------------|
| सा | அந்த | गङ्गां | கங்கைய பார்ந்து |
| अनिन्दिता | தோஷர ஹிதையான | संभाषमाणा एव | பிரார்த்தித்துக் |
| दक्षिणा | பதிவ்ரதாசிரோமணி | | கொண்டே |
| | யான | क्षिप्रं | விரைவில் |
| सीता | சீதாப்பிராட்டியார் | दक्षिणं | தென் |
| तथा | மேற்கண்டவண்ண | तीरं | கரையை |
| | மாய் | अभ्युपागमत् | அடைந்தாள். |

तीरं हि समनुप्राप्य नावं हित्वा नरर्षभः । प्रातिष्ठत सह भ्रात्रा वैदेह्या च परन्तपः ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-------------|---------------------|
| परन्तपः हि | எப்பவும் எதிலும் | नावं | மாக்கலத்தை |
| | ஜயசாலியாகும் | भ्रात्रा च | தம்பியோடும் |
| नरर्षभः | புருஷோத்தமராகும் | वैदेह्या सह | வைகேகியாரோடும் |
| तीरं | கரைக்கு [அவர் | हित्वा | விட்டொழிந்து |
| समनुप्राप्य | வந்துசேர்ந்து, | प्रातिष्ठत | இறங்கி நடக்கலானார். |

अथाब्रवीन्महाबाहुः सुमित्रानन्दवर्धनम् । भव संरक्षणार्थाय सजने विजनेऽपि वा ॥ ९४ ॥

| | | | |
|--------------------|---|---------------|---|
| महाबाहुः | ஆஜா னபாகுவாகும் | सजने | “ஜனசஞ்சாரமுள்ள இ |
| | ஆவர் | | டத்தில்தானாகட்டும், |
| सुमित्रानन्दवर्धनं | { சுமித்திரைக்கு ஆனந் தத்தைப் பெருக்கு மவரைப்பார்த்து | विजने अपि वा | ஜனசஞ்சாரமில்லாத |
| | | संरक्षणार्थाय | இடத்தில்தானாகட்டும் |
| अथ | பின் வருமாறு | | பூடுக்கண் சம்பவியா |
| अब्रवीत् | அருளிச்செய்கனர். | भव | திருக்கும்பொருட்டு நீ எப்பவும் பக்கலிலே யிருந்துவருவாயாக. |

गतं तु गङ्गापरपारमाशु रामं सुमन्त्रः प्रतपन्निरीक्ष्य ।

अध्वप्रकर्षाद्विनिवृत्तदृष्टिर्मुमोच बाष्पं व्यथितस्तपस्वी

॥ १०० ॥

தபஸ்வி மஹாபக்திமாணாகும்
சுமந்த்ரம் சுமந்திரர்
ராமம் ஸ்ரீராமரை [க்கு
கங்கையின் அக்கரை-
கதம் போய்ச்சேர்ந்துவிட்ட
நிரிஷ்ய கண்டு, [வராய்
புதபந் மனம்நெந்து

व्यथितः तु तृपिक्किன்றவராகி
अध्वप्रकर्षात् வெகுதூரம் போய் வி
आशु உடனே [ட்டமையால்
विनिवृत्तदृष्टिः கண்களைத் திருப்பிக்
கொண்டவராகி
बाष्पं கண்ணீரை
मुमोच விடுத்தார்.

स लोकपालप्रतिमप्रभाववांस्तीर्त्वा महात्मा वरदो महानदीम् ।

ततः समृद्धाञ्छुभसस्यमालिनः क्षणेन वत्सान्मुदितानुपागमत्

॥ १०१ ॥

लोकपालप्रतिम- } த்ரிலோகாஸூகருக்கு
प्रभाववान् } சமமாகிய ப்ரபாவ
முடையவரும்,
वरदः யாவருக்கும் நன்
மையையளிப்பவரும்
महात्मा மஹாத்மாவுமாகிய
सः அவர்
ततः அவ்விடத்திலிருந்து
क्षणेन மத்தியில்
महानदीं ஓர் பெரிய நீர்த்தாரை
யையும்

तीर्त्वा கடந்து,
समृद्धान् பலவகைப்பொருள்க
ள் நிறைந்தவைகளும்
शुभसस्य- } மனோகரமாயுள்ள
मालिनः } நிலவளமுடையவை
களும்
मुदितान् { உத்ஸாஹம்கொண்டு
விளங்குகின்றவை
களுமாகிய
वत्सान् வக்ஸதேசங்களை
उपागमत् அடைந்தார்.

तौ तत्र हत्वा चतुरो महामृगान्वराहमृश्यं पृषतं महारुम् ।

आदाय मेध्यं त्वरितं बुभुक्षितौ वासाय काले ययतुर्वनस्पतिम् ॥ १०२ ॥

बुभुक्षितौ பசியுடனிருந்த
तौ அவ்விருவர்களும்,
तत्र அப்படியிருக்கையி
चतुरः நான்கு [லும்
महामृगान् பெரியநிலங்களுளையும்
वराहं செம்மரிக்கடாவொன்
றையும்,
ऋश्यं ரிசியமென்ற ஓர்
माणैयம் மாணையும்
पृषतं ப்ருஷதமென்ற ஓர்
माणैयம், மாணையும்,
महारुं சிறந்த ருரு என்ற ஓர்
माणैयம், மாணையும்,

हत्वा ஒருபொருட்டாயெண்
नातु துறந்துவிட்டு,
त्वरितं வேகமாக
आदाय எடுத்துக்கொண்டு,
काले சாயங்காலத்தில்
वासाय இரவைக்கழிப்பதின்
பொருட்டு,
मेध्यं அகிபரிசுத்தமான
वनस्पतिं ஓர் மரத்தினடியில்,
ययतुः வந்து நின்றுவிட்டார்
கள்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे द्विपञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 4483

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2128

त्रिपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்துமூன்றாவது ஸர்க்கம் || 43 ||

श्रीरामलक्ष्मणसंवादः—ஸ்ரீராமலக்ஷ்மணஸம்வாதம்.

स तं वृक्षं समासाद्य सन्ध्यामन्वास्य पश्चिमाम् । रामो रमयतां श्रेष्ठ इति होवाच लक्ष्मणम् ॥

| | | | |
|----------|---|----------|--------------------|
| रमयतां | { எல்லாருள்ளாங்களை யும் குளிரச்செய்ப்ப வர்களில் | समासाद्य | அடைந்தபின்னர், |
| श्रेष्ठः | தலைமையராகிய | पश्चिमां | சாயங்கால |
| सः | அந்த | सन्ध्यां | சந்தயாவந்தனத்தை |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | अन्वास्य | செய்தருளிவிட்டு, |
| तं | அந்த | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரைப் பார்த் |
| वृक्षं | மரத்தை | इति | பின்வருமாறு [து, |
| | | उवाच ह | அருளிச்செய்தனர். |

अद्येयं प्रथमा रात्रिर्याता जनपदाद्वहिः । या सुमन्त्रेण रहिता तां नोत्कण्ठितुमर्हसि ॥ २ ॥

| | | | |
|------------------|----------------------------------|-------------|---------------------------|
| अद्य | “இப்பொழுது | या | எதுவோ |
| जनपदात् | ஜனஸஞ்சாரமுற்ற இ டத்திலிருந்து | इयं | இது |
| बहिः | வெளியில் | याता | வந்தது. |
| सुमन्त्रेण रहिता | சுமந்திரரின் ி இருக் | तां | அதில் |
| प्रथमा | முதல் [கிறதாகிய | उत्कण्ठितुं | பச்சாத்தாபப்படுவ தற்கு |
| रात्रिः | ராத்திரி | अर्हसि न | நீ ஈடுபடலாகாது. |

जागर्तव्यमतन्द्रिभ्यामद्यप्रभृति रात्रिषु । योगक्षेमो हि सीताया वर्तते लक्ष्मणावयोः ॥ ३ ॥

| | | | |
|-----------|--|---------------|---|
| लक्ष्मण | “லக்ஷ்மணனே ! | हि | ஆனபடியால் |
| सीतायाः | சீதைக்கு | अद्यप्रभृति | இன்றுமுதல் |
| योगक्षेमः | { இடுக்கணைதுவும் சம் பவிக்காதவண்ணம் பாதுகாக்குந்தொழில் | रात्रिषु | இரவுகளில் |
| आवयोः | நம்மிருவர்களுக்கும் | अतन्द्रिभ्यां | சோம்பலின் ி ஜாக்கி ரதையுடனிருப்பதால் |
| वर्तते | ஏற்பட்டுவிட்டது. | जागर्तव्यम् | அபாயமுண்டாகாது தடுக்கவேண்டும். |

रात्रिं कथञ्चिदेवेमां सौमित्रे वर्तयामहे । उपावर्तामहे भूमावास्त्यैः स्वयमार्जितैः ॥ ४ ॥

| | | | |
|-----------|---|-------------|---|
| सौमित्रे | “சுமித்ரையின் புதல் வனே, லக்ஷ்மணா ! | आर्जितैः | { கையில் கொண்டுவரப் பட்டவைகளைக்கொ ண்டே, |
| इमां | இந்த | भूमौ | தரையில் |
| रात्रि एव | இரவைமட்டும், | आस्त्यैः | பரப்பிக்கொண்டு, |
| स्वयं | { யாதொரு பிரயாசை யும் எடுத்துக்கொள் ளாமல் | उपावर्तामहे | இருப்போம். |
| | | कथञ्चित् | கஷ்டப்பட்டே |
| | | वर्तयामहे | நாம் கழித்துவிடு வோம். |

स तु संविश्य मेदिन्यां महार्हशयनोचितः । इमाः सौमित्रये रामो व्याजहार कथाः शुभाः ॥

महार्ह- } நல்ல உயர்ந்த படுக்
शयनोचितः } கையில் படுப்பதில்
பழக்கப்பட்டிருந்த
स: रामः } அந்த ஸ்ரீராமர்
मेदिन्यां } வெறுந்தரையில்
संविश्य } படுத்தபின்னர்,
सौमित्रये } லக்ஷ்மணருக்கு

इमाः } பின்வரும்
शुभाः } தருமசிந்தனையை
நன்குவிளங்கக்காட்
कथाः } விஷயங்களை [டுகின்ற
तु } இப்பொழுது
व्याजहार } விளங்க எடுத்துரைத்
தார்.

ध्रुवमद्य महाराजो दुःखं स्वपिति लक्ष्मण । कृतकामा हि कैकेयी तुष्टा भवितुमर्हति ॥

लक्ष्मण } “லக்ஷ்மணனே!
अद्य } இப்பொழுது
महाराजः } சக்கிரவர்த்தியார்,
ध्रुवं } நிச்சயமாய்
दुःखं } துயரத்தில்
स्वपिति } மூழ்கிக்கிடப்பார்.

कैकेयी हि } கைகேயி அம்மானோ,
कृतकामा } மனோதங்கள் கை
கூடப்பெற்றவளாய்,
तुष्टा } மனத்திருப்திகொண்
भवितुं } இருக்க [டவளாய்
अर्हति } கூடும்.

सा हि देवी महाराजं कैकेयी राज्यकारणात् । अपि न च्यावयेत्प्राणान्दृष्ट्वा भरतमागतम् ॥

सा } “அந்த
कैकेयी देवी } கைகேயிதேவியார்,
भरतं } பரதனை
आगतं } வந்துசேர்ந்தவனாய்
दृष्ट्वा } கண்டு,

राज्यकारणात् } ராஜ்யத்தை அடைந்
துவிட்டமையால்
महाराजं } சக்கிரவர்த்தியாருக்கு
प्राणान् हि } உயிரையாவது
च्यावयेत् अपि न } வாங்காமல் இருப்பா
ளா?

अनाथश्चैव वृद्धश्च मया चैव विनाकृतः । किं करिष्यति कामात्मा कैकेयीवशमागतः ॥

मया च } “என்னாலும்
विनाकृतः च } பிரியப்பெற்றவரும்,
अनाथः } { சுச்சுருஷசெய்யப் பக்
கலிலொருவருமில்
லாதவராகிய
वृद्धः च } கிழவனாகும்,

कामात्मा } மக்களாசைகொண்ட
வரும்,
कैकेयीवशं } { கைகேயியினிடத்தில்
आगतः एव } { தர்மபாசத்தால் சிக்கி
க்கொண்டவருமாகிய
किं एव } என்னதான் [அவர்
करिष्यति } செய்வார்?

इदं व्यसनमालोक्य राज्ञश्च मतिविभ्रमम् । काम एवार्थधर्माभ्यां गरीयानिति मे मतिः ॥

इदं } “இப்பொழுது
राज्ञः } சக்ரவர்த்தியாருடைய
मतिविभ्रमं } புத்தியின் தடுமாற்றத்
தையும்,
व्यसनं च } துயரத்தையும்
आलोक्य } கவனித்து,
अर्थ- } { (புருஷார்த்தங்களில்)
धर्माभ्यां } { தர்மமர்த்தமிவையு
ண்டிருக்கும்

कामः एव } कामமொன்றே (மக்க
ளாசைதான்)
गरीयान् } பரியஸ்ஸாயிருக்
கிறது
इति } என்று
मे } எனக்கு
मतिः } தோன்றுகிறது.

को ह्यविद्वानपि पुमान्प्रमदायाः कृते त्यजेत् । छन्दानुवर्तिनं पुत्रं तातो मामिव लक्ष्मण ॥

| | | | |
|----------------|--|----------------|-----------------|
| लक्ष्मण | “ लक्ष्मण ! | मां | என்னை |
| तातः | பெற்ற தகப்பனாகவும், | इव | போன்ற |
| पुमान् | மானிடனாகவும், | पुत्रं | புதல்வனை |
| अविद्वान् | தர்மமின்னதென்றறி யாதவனுமாகிய | प्रमदायाः कृते | இல்லாளுக்காக |
| कः अपि | எந்த ஒருவன் | | என்றாலும் |
| छन्दानुवर्तिनं | { யாவருடைய மனமும் கோணாத அனுஷ்டா னமுடைய | त्यजेत् | ஒட்டிவிடுவான் ? |

सुखी बत सभार्यश्च भरतः केकयीसुतः । मुदितान्कोसलानेको यो भोक्ष्यत्यधिराजवत् ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------------|--------------|--|
| सभार्यः | “ தர்மபத்னீ ஸமேத னம், | एकः | தனியாய் (உதவியை யிழந்தவனாய்) |
| सुखी च | உத்ஸாஹமாகவே இருந்தவனுமாகிய | अधिराजवत् | சக்கிரவர்த்தியாய் |
| यः | எவனோ அந்த | मुदितान् | உத்ஸாஹத்தூடன் விளங்கும் |
| केकयीसुतः | கைகேயிதேவியாரின் திருக்குமாரனாகிய | कोसलान् | கோஸலதேசங்களை |
| भरतः | பரதன், | भोक्ष्यति बत | { பாதுகாக்கப் போகி றானோ என்னமோ கஷ்டம்! |

स हि राज्यस्य सर्वस्य मुखमेकं भविष्यति । ताते च वयसाऽतीते मयि चारण्यमाश्रिते ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------------|----------|-----------------------------------|
| ताते | “ திருத்தந்தையார் | राज्यस्य | ராஜ்ய பரிபாலனத்தி னுடைய |
| वयसा | காலதசையால் | सर्वस्य | எல்லாவற்றிற்கும் |
| अतीते हि | பரமபதத்தையடைந் துவிடுகிறாரென்றால் | सः | அவன் |
| मयि च | நானும் | एकं | தனியாய் |
| अरण्यं | காட்டில் | मुखं | வஹித்து செய்யவே டியதாயிருப்பதை |
| आश्रिते च | வலித்துக்கொண்டி ருக்கின்றமையால், | भविष्यति | அடையப்போகிறான். |

अर्थधर्मौ परित्यज्य यः काममनुवर्तते । एवमापद्यते क्षिप्रं राजा दशरथो यथा ॥ १३ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------|-----------|--|
| यः | எந்த | कामं | மக்களாசையை |
| दशरथः | தசரத | अनुवर्तते | பெரிதாய்ப் பாராட்டு கின்றாரோ (அவர்) |
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | यथा | அப்படியிருப்பதால் |
| एवं | இப்படியாய் | क्षिप्रं | சீக்கிரத்திலேயே |
| अर्थधर्मौ | தர்மார் த்தமிழ்விண்ண டையும் | आपद्यते | இறந்துவிடுவர். |
| परित्यज्य | சிறந்ததாய்க்கொள் ளாது, | | |

नूनं जात्यन्तरे कस्मिंस्त्रियः पुत्रैर्वियोजिताः । जनन्या मम सौमित्रे तस्मादेतदुपस्थितम् ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|-----------|--|
| சௌமீத்ரே | “ஸௌமித்ரையின் குமார ! | புத்ரை: | புத்திரர்களை |
| கஸ்திந் | ஏதோ ஒரு | வியோஜிதா: | விட்டுப் பிரிக்கப்பட்ட டிருப்பார்கள். |
| ஜாத்யந்தரே | முற்பிறப்பில், | தஸ்தாத் } | அக்காரணத்தால் |
| மம | எனது | நூந் } | தான் |
| ஜனந்யா | தாயாரால் | ஏதத் | இப்போதைய |
| ஸ்திரிய: | மாதர்கள் | உபஸ்திதம் | சம்பவம். |

मया हि चिरपुष्टेन दुःखसंवर्धितेन च । विप्रायुज्यत कौसल्या फलकाले धिगस्तु माम् ॥

| | | | |
|------------------|---|--------------|--|
| கௌஸ்த்யா | கோஸலாதேவியார், | फलकाले | { தொண்டுசெய்யப் பக் கலிலிருக்கவேண்டிய காலத்தில், |
| चिरपुष्टेन | வெகுநேரமாகப் போ ஷிக்கப்பட்டவனும் | विप्रायुज्यत | பிரியப்பட்டனள்; |
| दुःखसंवर्धितेन च | { வெகு பிரயாசைப்ப ட்டு வளர்க்கப்பட்ட வனுமான | मां हि | எனக்குத்தான் |
| मया | என்னால் | धिक् अस्तु | { இந்தப் பாக்யம் கொ டுத்துவைக்கவில்லை என்ன கஷ்டம்! |

मा स्म सीमन्तिनी काचिज्जनयेत्पुत्रमीदृशम् । सौमित्रे योऽहमम्बाया दधि शोकमनन्तकम् ॥

| | | | |
|----------|--------------------------------------|---------------|--------------------------------|
| சௌமீத்ரே | “சுமித்திராதேவியின் திருக்குமார ! | दधि | விளைவித்து வருகின் |
| यः | எந்த அந்த | काचित् | ஒரு [தேன். |
| अहं | நான் | सीमन्तिनी | ஸ்திரீயும் |
| अम्बायाः | திருத்தாயாருக்கு | ईदृशं | இப்படிப்பட்ட (என்னைப்போன்ற) |
| अनन्तकं | முடிவிலா | पुत्रं | மகளை |
| शोकं | துயரத்தை | जनयेत् मा स्म | பெறவேண்டாம். |

मन्ये प्रीतिविशिष्टा सा मत्तो लक्ष्मण शारिका । यस्यास्तच्छ्रूयते वाक्यं शुक पादमरेदश ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------|------------------|---|
| लक्ष्मण | “லக்ஷ்மண ! | यस्याः | எந்த அதற்கு |
| सा | அவளிடமிருக்கிற | तत् | சொல்லிக்கொடுத்த தாகிய |
| शारिका | சாரிகையெனும் பற வையானது, | शुक अरे: पादं दश | “சுக அரேஹே பா தம் தச” என்கிற |
| मत्तः | என்னைவிட | वाक्यं | கூவலானது, |
| प्रीतिविशिष्टा | அதிக உதவிபுரிந்து வருவதாய் | श्रूयते | அவள் காதில் விழுந் துகொண்டிருக்கும். |
| मन्ये | நான் எண்ணுகிறேன். | | |

शोचन्त्या अल्पभाग्याया न किञ्चिदुपकुर्वता । पुत्रेण किमपुत्राया मया कार्यमरिन्दम ॥

अरिन्दम “எதிலும் ஆயசாலியே!
(லக்ஷ்மணா!)

अल्पभाग्याया: பாக்கியத்தில் குறை
பெற்றவளாய்,

अपुत्राया: { ஏகபுத்திரனையும் பக்க
விவிருக்கப்பெற்றதவ
ளாய்,

शोचन्त्या: துன்பக்கடலில் மூழ்கி
க்கிடக்கும் அவளுக்கு

किञ्चित् உள்ளவளும்
उपकुर्वता न சுச்சூனஷசெய்ய பாக்
யம் பெறுதவனாகிய

पुत्रेण புதல்வனான
मया என்னால்
किं कार्यम् என்ன பிரயோஜனம்?

अल्पभाग्या हि मे माता कौसल्या रहिता मया । शेते परमदुःखार्ता पतिता शोकसागरे ॥

मे “எனது
माता அன்னையாகும்
कौसल्या கோஸலாதேவியார்
मया रहिता என்னை விட்டுப் பிரிந்
हि அதனால் [தவளாய்
अल्पभाग्या பாக்கியக்குறை பெற்
றவளாய்

परमदुःखार्ता மிக்க துக்கமனுபவிப்
பவளாய்

शोकसागरे சோகஸாகரத்தில்
पतिता மூழ்கிக்கிடக்கின்ற
வளாய்

शेते இப்பொழுது படுத்து
க்கிடப்பள்.

एको ह्यहमयोध्यां च पृथिवीं चापि लक्ष्मण । तरेयमिषुभिः क्रुद्धो ननु वीर्यमकारणम् ॥

लक्ष्मण “லக்ஷ்மணா!
अहं நான்
क्रुद्धः हि சினங்கொள்வேனாகில்
एकः { ஒருவனே (மற்ற எவ
நெருவனுடைய உத
வியுமில்லாதவனாய்)
इषुभिः பாணங்களால்
अयोध्यां च அயோத்திமாநகரை
यम्,
पृथिवीं च பூமண்டலத்தையும்,

तरेयं { எனக்குச் சொந்தமாக
ஆக்கிக்கொள்ள
முடியும்.
अपि என்றுலும்
वीर्यं ஒருவனுக்குள்ள
சக்தியை

अकारणं { பிரயோஜனமற்றதா
கிய விஷயத்தில் செ
லுத்தக்கூடாது,
ननु இல்லையா என்ன?

अधर्मभयभीतश्च परलोकस्य चानघ । तेन लक्ष्मण नाद्याहमात्मानमभिषेचये ॥ २६ ॥

अनघ “தோஷமற்றவனாகிய
लक्ष्मण லக்ஷ்மணா!
अहं நான்
परलोकस्य பரலோகத்திலுடைய
अधर्म-) அதர்மத்தால் விளை
भयभीतः च) யும் கஷ்டங்களுக்கு
பாத்திரமாகி விடு
வேன் என்கிற

तेन च அந்த ஒரு காரணத்
தாலேயே

अद्य இப்பொழுது
आत्मानं எனக்கு
अभिषेचये न பட்டாபிஷேகம் செ
ய்துகொள்ளவில்லை.”

एतदन्यच्च करुणं विलप्य विजने बहु । अश्रुपूर्णमुखो रामो निशि तूष्णीमुपाविशत् ॥

| | | | |
|----------------|---|------------------|-------------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | अन्यत् | இன்னும் |
| विजने | ஜனங்களை நவருமி ல்லாத இடத்தில் | बहु च | பலவாராயும், |
| निशि | இரவில், | करुणं | மிக்க விசனகரமான வார்த்தையை |
| अश्रुपूर्णमुखः | { கண்ணீர்நிரம்பிய திரு முகமண்டலமுடைய வராய், | विलप्य | வெளிப்படையாய் சொல்லிவிட்டு |
| एतत् | மேற்கண்டவண்ண மாயும் | तूष्णीं उपाविशत् | ஒன்றும் பேசா திருந் தார். |

विलापोपरतं रामं गतार्चिषमिवानलम् । समुद्रमिव निर्वेगमाश्वासयत लक्ष्मणः ॥ २८ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------|----------|--|
| विलापोपरतं | பேசி ஓய்ந்தவராய் | समुद्रं | ஸமுத்திரத்தை |
| गतार्चिषं | ஜ்வாலையற்ற | इव | போன்றவருமாகிய |
| अनलं | அக்கினியை | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| इव | போலிருப்பவரும் | लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் |
| निर्वेगं | நிச்சப்தமாயிருக்கி ன்ற | आश्वासयत | பின்வருமாறு துக்கச மனம்செய்தருளினார். |

ध्रुवमद्य पुरी राम अयोध्याऽऽयुधिनां वर । निष्प्रभा त्वयि निष्क्रान्ते गतचन्द्रेव शर्वरी ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|--------------|----------------------------|
| आयुधिनां | “ஆயுதபாணிகளில் | अयोध्या पुरी | அயோத்திரகர், |
| वर | உத்தமராகிய | गतचन्द्रा | சந்திரனில்லாத |
| राम | ஸ்ரீராம! | शर्वरी इव | இரவுபோல |
| त्वयि | தேவரீர் | ध्रुवं | நிச்சயமாய் |
| निष्क्रान्ते | வெளிப்பட்டபின்னர் | निष्प्रभा | ஒளியிழந்ததாயிருக் கும். |
| अद्य | இப்பொழுது | | |

नैतदौपयिकं राम यदिदं परितप्यसे । विषादयसि सीतां च मां चैव पुरुषर्षभ ॥ ३० ॥

| | | | |
|-----------|---|-------------|-----------------------------|
| पुरुषर्षभ | “புருஷோத்தமராகிய | यत् एतत् | எதுவோ இது |
| राम | ஸ்ரீராம! | औपयिकं न | தேவரீருக்கு ஏற்ற |
| परितप्यसे | தேவரீர் மனந்தளர்ந் து வருந்துகின்றீர். | सीतां च | ஸீதையையும்[தன்று. |
| | | मां च | அடியேனையும் |
| इदं | இப்பொழுது | विषादयसि एव | துன்பமுறச்செய்கின் றீரே. |

न च सीता त्वया हीना न चाहमपि राघव । मुहूर्तमपि जीवावो जलान्मत्स्याविवोद्धृतौ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|-----------|--------------------------|
| राघव | “ஸ்ரீராம! | सीता च | ஸீதாப்பிராட் டியாரும் |
| त्वया हीना | தங்களைவிட்டுப் பிரிந்து | न | இரான். |
| | | अहं अपि न | அடியேனும் இரேன். |

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|-------------------|
| जलात् | நீரிலிருந்து | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| उद्धृतौ | எடுத்துக் கரையில் | सुहृत्तमपि | வண்ணமே |
| | போடப்பட்ட | | ஒரு கூணப்பொழுது |
| मत्स्यौ च | இருமீன்கள் | जीवावः | துதான் |
| | | | பிழைத்திருப்போம். |

न हि तातं न शत्रुघ्नं न सुमित्रां परन्तप । द्रष्टुमिच्छेयमद्याहं स्वर्गं वाऽपि त्वया विना ॥३२॥

| | | | |
|---------|--|------------------|----------------------------|
| परन्तप | “எதிலும் ஜயசாலி யாய் விளங்குபவரே! ஸ்ரீராம! | द्रष्टुं | தரிசிக்க |
| अद्य | இப்பொழுது | इच्छेयं न | நினைவேன். |
| त्वया | தேவரீரை | सुमित्रां | சுமித்ரா தேவியாரைத் |
| विना हि | விட்டுப்பிரிகிறேனென | | தானாகட்டும், |
| | ன்றால், | स्वर्गं | சுவர்க்கத்தைத்தானாகட்டும், |
| अहं | அடியேன் | न | நினைவேன். |
| तातं | திருத்தந்தையாரைத் | शत्रुघ्नं अपि वा | சத்ருக்னனைத்தானாகட்டும் |
| | தானாகட்டும், | न | நினைவேன்.” |

ततस्तत्र सुखासीनौ नातिदूरे निरीक्ष्य ताम् । न्यग्रोधे सुकृतां शय्यां भेजाते धर्मवत्सलौ ॥

| | | | |
|----------------|---|-----------|---------------------|
| तव | அப்பொழுது | ततः | அவ்விடத்திலிருந்து |
| धर्मवत्सलौ | { தர்மத்திலசஞ்சலப்ப ற்றுடையவர்களாகிய அவ்விருவர்களும், | नातिदूरे | பக்கலிலேயே |
| तां | அவளை | न्यग्रोधे | ஓர் ஆலமரத்தினடியில் |
| सुकृतां शय्यां | நன்கு தூயில்கொண்டிருக்கின்றவளாய் | सुखासीनौ | சுகமாயுட்காரந்து |
| निरीक्ष्य | கவனித்து, | | கொண்டவர்களாய் |
| | | भेजाते | காலங்கழித்தார்கள். |

स लक्ष्मणस्योत्तमपुष्कलं वचो निशम्य चैवं वनवासमादरात् ।

समाः समस्ता विदधे परन्तपः प्रपद्य धर्मं सुचिराय राघवः ॥ ३४ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|---------|---------------------|
| सः | அந்த | सुचिराय | காலமெல்லாமும் |
| परन्तपः | ஜயசாலியாகிய | धर्मं | புன்யாத்மாவும் பக்க |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | | லிலிருத்தலை |
| लक्ष्मणस्य | லக்ஷ்மணனுடைய | प्रपद्य | ஆக்குபித்தருளி |
| उत्तमपुष्कलं | சிறந்த பொருள் | | விட்டு, |
| वचः | மொழியை [நிறைந்த | वनवासं | வனவாஸத்தை |
| आदरात् | அன்பால் | समस्ताः | மொத்த |
| एवं | இப்படி | समाः च | வருடங்களையும் |
| निशम्य | திருவுள்ளத்திலேற்று | विदधे | கழிப்பதாய்தீர்மா |
| | க்கொண்டு, | | எங்கொண்டருளினார். |

ततस्तु तस्मिन्विजने वने तदा महाबलौ राघववंशवर्धनौ ।

न तौ भयं संभ्रममभ्युपेयतुर्यथैव सिंहौ गिरिसानुगोचरौ

॥ ३५ ॥

तदा “अप्पொழுது,
तस्मिन् அந்த
विजने ஜனமற்ற
वने காட்டில்
ततः அதனால்
महाबलौ மஹாபலசாலிகளும்
राघववंशवर्धनौ ரகுவம்சத்தை விளங்
கச்செய்பவர்களுமான

तौ तु அவ்விருவர்களும்
गिरिसानुगोचरौ பர்வதகுகையில்
वाஸம்செய்யும்,
सिंहौ சிங்கங்கள்
यथा போல
भयं அச்சத்தையும்
सम्भ्रमं एव மனச்சஞ்சலத்தையும்
अभ्युपेयतुः न அடைந்திலர்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे त्रिपञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 4518:



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2163

चतुष्पञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்துநான்காவது ஸர்க்கம் ॥ ५४ ॥

भरद्वाजाश्रमगमनम्—பரத்வாஜாச்ரமம் போவது.

ते तु तस्मिन्महावृक्ष उषित्वा रजनीं शिवाम् । विमलेऽभ्युदिते सूर्ये तस्मादेशात्प्रतस्थिरे ॥

ते அவர்கள்,
तस्मिन् அந்த
महावृक्षे பெருமரத்தடியில்
रजनीं இரவை
शिवां சுகமே
उषित्वा கழித்துவிட்டு,

विमले மாசற்ற
सूर्ये சூர்யபகவான்
अभ्युदिते तु உதயமாகுகையில்
तस्मात् அந்த
देशात् இடத்திலிருந்து
प्रतस्थिरे புறப்பட்டார்கள்.

यत्र भागीरथी गङ्गा यमुनामभिवर्तते । जमुस्तं देशमुद्दिश्य विगाह्य सुमहद्वनम् ॥ २ ॥

ते भूमिभागान्विविधान्देशांश्चापि मनोरमान् । अदृष्टपूर्वान्पश्यन्तस्तत्र तत्र यशस्विनः ॥

यशस्विनः புகழ்படைக்கப்பெற்ற
ते அவர்கள்
सुमहत् மிக்க அடர்ந்த
वनं காட்டிற்குள்
विगाह्य புகுந்து,
तत्र तत्र அங்கங்கு
अदृष्टपूर्वान् இதற்கு முன் பார்த்
तिरा தவைகளும்,
विविधान् பலவகையானவை
களும்,
मनोरमान् च மனோக்ருங்களாய்
மிருக்கின்ற
भूमिभागान् பூமிகளினமைப்புக
ளையும்,

देशान् अपि வனப்பிரதேசங்களோ
யும்,
पश्यन्तः பார்த்துக்கொண்டே
भागीरथी ‘பாகிரதி’ யெனப்
படும்
गङ्गा கங்காநதியானது
यमुना யமுனாநதியை
अभिवर्तते அடைகிறது
यत्र எங்கோ
तं அந்த
देशं பிரதேசத்தை
उद्दिश्य நோக்கி,
जमुः நடந்தார்கள்.

यथाक्षेमेण गच्छन्स पश्यंश्च विविधान्द्रुमान् । निवृत्तमात्रे दिवसे रामः सौमित्रिमब्रवीत् ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|---------------|---|
| ச: | அந்த | पश्यन् च | பார்த்துக்கொண்டும், |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | दिवसे | உச்சி |
| यथाक्षेमेण | இடையூறென்று மின்றி | निवृत्तमात्रे | காலத்திற்கப்பால் |
| गच्छन् | நடந்துகொண்டே | सौमित्रिं | லக்ஷ்மணரைப் |
| विविधान् | அனேகவித | अब्रवीत् | பார்த்து, பின்வருமாறு அருளி ச்செய்தார். |
| द्रुमान् | மரங்களையும் | | |

प्रयागमभितः पश्य सौमित्रे धूममुन्नतम् । अग्नेर्भगवतः केतुं मन्ये संनिहितो मुनिः ॥ ५ ॥

| | | | |
|----------|-------------------------------------|----------|-------------------------------|
| சௌமित्रே | “சுமித்ராதேவி நந்தன ! | उन्नतं | உயரக்கிளம்பியதாயி ருக்கும் |
| प्रयागं | ‘ப்ரயாகை’யெனும் கேஷத்திரத்திற்கு | केतुं | அடையாளத்தை |
| अभितः | அருகாமையில் | पश्य | கவனி. |
| अग्नेः | அக்னி | मुनिः | ஏதோ ஒரு முனிவர் |
| भगवतः | பகவானது | संनिहितः | ஸமீபத்திலிருக்கிற ரென்று |
| धूमं | புகையை | मन्ये | எண்ணுகிறேன். |

नूनं प्राप्ताः स्म संभेदं गङ्गायमुनयोर्वयम् । तथा हि श्रूयते शब्दो वारिणो वारिघट्टजः ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------------|------------|--|
| वयं | “நாம் | तथा हि | ஏனெனில் |
| गङ्गायमुनयोः | கங்கை, யமுனை இவ் விரு நதிகளுடைய | वारिणः | ஜலத்திலிருந்து |
| संभेदं | சங்கமத்துறைக்கு | वारिघट्टजः | { ஜலங்கொன்றே டொன்று மோதுவ தாலுண்டாகு |
| प्राप्ताः स्म | வந்துசேர்ந்துவிட் டோம் | शब्दः | சத்தமானது |
| नूनं | போலிருக்கிறது. | श्रूयते | கேட்கப்படுகிறது. |

दारुणि परिभिन्नानि वनजैरुपजीविभिः । भरद्वाजाश्रमे चैते दृश्यन्ते विविधा द्रुमाः ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------|-------------|----------------------------|
| भरद्वाजाश्रमे | “பரத்வாஜமுனிவரினா சரமத்தில் | वनजैः | காட்டிலுண்டாகிய வைகளால் |
| एते | இதோ விருக்கின்ற | उपजीविभिः | பிழைக்கும் ஜனங்க ளால் |
| विविधाः | பலவகை | परिभिन्नानि | வெட்டப்பட்ட |
| द्रुमाः | மரங்களுடன் | दारुणि च | அடிக்கட்டைகளும் |
| | | दृश्यन्ते | காணப்படுகின்றன.” |

धन्विनौ तौ सुखं गत्वा लम्बमाने दिवाकरे । गङ्गायमुनयोर्मध्ये प्रापतुर्निलयं मुनेः ॥ ८ ॥

धन्विनौ வில்லாளிகளாகிய
தौ அவ்விருவரும்
सुखं சுகமாக
गत्वा வழிகடந்து,
दिवाकरे சூரியபகவான்
लम्बमाने அஸ்தமனமாகும்
ஸமயத்தில்

गङ्गायमुनयो: கங்கையமுனை இவ்
வீரு நதிகளுடைய
मध्ये சங்கமப்ரதேசத்தில்
मुने: முனிவரது
निलयं ஆசிரமத்திற்கு
प्रापतु: வந்துசேர்ந்தனர்.

रामस्त्वाश्रममासाद्य त्रासयन्मृगपक्षिणः । गत्वा मुहूर्तमध्वानं भरद्वाजमुपागमत् ॥ ९ ॥

राम: ஸ்ரீராமர்
आश्रमं ஆசிரமத்தை
आसाद्य அணுகி
मृगपक्षिणः மான்களையும் பறவை
களையும்
मुहूर्त ஒரு சுஷணப்பொழுது
त्रासयन् பயந்தோடுபவைகளா
ய்ச்செய்துகொண்டு

अध्वानं தூரத்திலேயே
गत्वा எழுந்தருளியிருந்து
கொண்டு,
भरद्वाजं பரத்வாஜமுனிவருக்
तु இப்பொழுது [கு
उपागमत् சமயம் பார்த்து
(காத்து) நின்றனர்.

ततस्त्वाश्रममासाद्य मुनेर्दर्शनकाङ्क्षिणौ । सीतयाऽनुगतौ वीरौ दूरादेवावतस्थतुः ॥ १० ॥

तत: அப்பொழுது
सीतया வீதையால்
अनुगतौ தொடரப்பட்டவர்
களும்,
वीरौ तु தர்மவீரர்களுமாகிய
அவ்விருவரும்
मुने: மஹர்ஷியினது

दर्शनकाङ्क्षिणौ தர்சனத்திலவாவுடை
யவர்களாய்,
आश्रमं ஆசிரமத்தை
आसाद्य அணுகி
दूरात् एव தூரத்திலேயே
अवतस्थतु: (காத்து) நின்றுகொ
ண்டிருந்தனர்கள்.

संप्रविश्य महात्मानमृषिं शिष्यगणैर्वृतम् । संशितव्रतमेकाग्रं तपसा लब्धचक्षुषम् ॥ ११ ॥
हुताग्निहोत्रं दृष्ट्वैव महाभागं कृताञ्जलिः । रामः सौमित्रिणा सार्धं सीतया चाभ्यवादयत् ॥

राम: ஸ்ரீராமர்
सौमित्रिणा லக்ஷ்மணரோடும்,
सीतया च சீதாப்பிராட்டியாரோ
सार्धं கூடவே [டும்,
सम्प्रविश्य ஒரேஸமயத்திலுள்
ளே நுழைந்து,
शिष्यगणै: சிஷ்யஜனங்களால்
वृतं சூழப்பட்டிருந்த
வரும்,

संशितव्रतं { (தானனுஷ்டித்திருந்த
ஒவ்வொரு காயக்லே
ச)தபஸ்சையும் எள்
ளளவு குறைவுமின்
றி முடித்தவரும்,
एकाग्रं { (எப்பொழுதும் பக
வானது) தியானத்
தையே ஸர்வமுமாய்க்
கொண்டவரும்,

तपसा लब्धचक्षुषं
தவப்பெருமையால்
நானக்கண்ணைப்
பெற்றவரும்,
हुताग्निहोत्रं { நித்யாக்னிஹோத்திர
த்தை செய்து முடித்
தவரும்,
महाभागं { பரிசுத்தமூர்த்தியும்,

महामानं एव ऋषिं दृष्ट्वा कृताञ्जलिः अभ्यवादयत्
மஹாத்மாவுமாகிய
ரிஷியை
அணுகி,
அஞ்சலிஹஸ்தராய்,
தண்டம் சமர்ப்பித்த
னார்.

न्यवेदयत चात्मानं तस्मै लक्ष्मणपूर्वजः । पुत्रौ दशरथस्यावां भगवन् रामलक्ष्मणौ ॥ १३ ॥

लक्ष्मणपूर्वजः लक्ष्मणமணனின் தமை
யனார் (ஸ்ரீராமர்)
तस्मै அவருக்கு
आत्मानं தன்னை
न्यवेदयत च { (இன்னாரென்பதைப்)
பின்வருமாறு தெரிவி
த்துக்கொண்டனார்.

भगवन् “பகவானே!
आवां நாங்களிநுவரும்,
दशरथस्य தசரதருடைய
रामलक्ष्मणौ ராமன், லக்ஷ்மணன்
எனப்பெயர் பூண்ட
பிள்ளைகள்.

भार्या ममेयं वैदेही कल्याणी जनकात्मजा । मां चानुयाता विजनं तपोवनमनिन्दिता ॥

इयं “இவள்
मम அடியேனுடைய
भार्या பத்னி.
वैदेही வைதேஹியெனப் பெ
யர்கொண்டவள்.
अनिन्दिता தோஷரஹிதை;

कल्याणी அயோநிஜை;
जनकात्मजा ஜனகராஜனின் பெண்.
विजनं ஜனஸஞ்சாரமற்ற
तपोवनं च தபோவனத்திற்கும்
मां என்னை
अनुयाता தொடர்ந்து வந்திருக்
கின்றாள்.

पित्रा प्रवाज्यमानं मां सौमित्रिरनुजः प्रियः । अयमन्वगमद्भ्राता वनमेव दृढव्रतः ॥ १५ ॥

अयं “இவன்
सौमित्रिः சுமித்ராதேவியா ரின்
अनुजः இளைய [புதல்வன்.
आता ஸகோதரன்.
पिता திருத்தந்தையாரால்
वनं காட்டிற்கு
प्रवाज्यमानं அனுப்பிவிடப்பட்ட

मां एव என்னையே
प्रियः அன்புடையவனும்,
दृढव्रतः { நினைத்ததைச் செய்வ
தில் பிடிவாதமுடை
யவனுமாகிய இவன்
अन्वगमत् தொடர்ந்து வந்திருக்
கின்றான்.

पित्रा नियुक्ता भगवन् प्रवेक्ष्यामस्तपोवनम् । धर्ममेव चरिष्यामस्तत्र मूलफलाशनाः ॥ १६ ॥

भगवन् “பகவானே!
पिता திருத்தந்தையாரால்
नियुक्ता: ஆக்ஞாபிக்கப்பட்ட
வர்களாய்
तपोवनं தபோவனத்திற்கு
प्रवेक्ष्यामः போய்க்கொண்டிருக்
கின்றோம்.

तत्र அவ்விடத்தில்,
मूलफलाशनाः { கிழங்குகளையும் பழங்
களையுமுணவாய்க்
கொண்டவர்களாய்
धर्ममेव பரமாத்மாவை தியா
னிப்பதொன்றிலேயே
चरिष्यामः (நாங்கள்) காலங்கழிக்
கப்போகின்றோம்.”

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राजपुत्रस्य धीमतः । उपानयत धर्मात्मा गामर्घ्यमुदकं ततः ॥ १७ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|-----------|--|
| तस्य | அந்த | धर्मात्मा | புண்பாத்தமாவாகுமவர், |
| धीमतः | ஞானவானாகிய | ततः | உடனே, |
| राजपुत्रस्य | சக்கிரவர்த்தியாரின் | गां | மதுபர்க்கத்தையும், |
| | திருக்குமாரருடைய | उदकं | தீர்த்தத்தோடுகூடிய |
| तत् | அந்த | अर्घ्यं | { (அக்ஷதை, துளசி மு தலியவைகள் சேர்க் கப்பெற்ற) "அர்க்ய" மென்பதையும் |
| वचनं | திருவாக்கிற்கு | उपानयत | சமர்ப்பித்தருளினார். |
| श्रुत्वा | திருச்செவிசாற்றியரு ளிய | | |

नानाविधानन्नरसान्वन्यमूलफलाश्रयान् । तेभ्यो ददौ तप्तपा वासं चैवान्वकल्पयत् ॥

| | | | |
|------------------------|--|-------------|---|
| तप्तपाः | { தவங்களைமுற்றிலும் செய்துமுடித்தவரா கிய அவர் | अन्नरसान् च | அன்னங்களையும், ரஸங்களையும், |
| तेभ्यः | அவர்களுக்கு, | ददौ | ஸமர்ப்பித்தருளினார். |
| नानाविधान् | பலவகை | वासं एव | மூவரும் வீற்றிருக்கக் கூடிய ஓரிடத்தை |
| वन्यमूल- फलाश्रयान् | { காட்டுக்கிழங்குகளை யும், பழங்களையும்கொ ண்டுசெய்யப்பட்ட | अन्वकल्पयत् | சட்டிக்காட்டியருளி னார். |

मृगपक्षिभिरासीनो मुनिभिश्च समन्ततः । राममागतमभ्यर्च्य स्वागतेनाह तं मुनिः ॥ १९ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|------------|--|
| समन्ततः | சுற்றிலும், | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| मृगपक्षिभिः | மாண்களாலும் பற வைகளாலும், | अभ्यर्च्यं | புகழ்ந்துகொண்டாடி |
| मुनिभिः च | மஹரிஷிகளாலும், | तं | அவரை |
| आसीनः | சூழப்பெற்று விளங் கிய | स्वागतेन | { (தான் கொடுக்கும்) விருந்தை ஏற்றுக் கொள்ளவேண்டு மென்று |
| मुनिः | முனிவர், | आह | வேண்டினார். |
| आगतं | அவ்விடத்திலெழுந்த ருளியிருக்கும் | | |

प्रतिगृह्य च तामर्चामुपविष्टं स राघवम् । भरद्वाजोऽब्रवीद्वाक्यं धर्मयुक्तमिदं तदा ॥ २० ॥

| | | | |
|--------------|------------------|------------|------------------------------|
| सः | அந்த | उपविष्टं | வீற்றிருக்கும் |
| भरद्वाजः | பரத்வாஜ முனிவர், | राघवं | ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து |
| तदा | அப்பொழுது | इदं | பின்வரும் |
| तां | அந்த | धर्मयुक्तं | தர்மத்துடன்கூடிய |
| अर्चां | பூஜையை | वाक्यं | திருவாக்கை |
| प्रतिगृह्य च | ஏற்றுக்கொண்டு, | अब्रवीत् | திருவாய்மலர்ந்தரு ளினார். |

चिरस्य खलु काकुत्स्थ पश्यामि त्वामिहागतम् । श्रुतं तव मया चेदं विवासनमकारणम् ॥

| | | | |
|-----------|--|------------|-------------------------------------|
| काकुत्स्थ | “குகுத்ஸ்தகுலத்தி லு தித்தவரே (ஸ்ரீராம !) | तव | தேவரீருடைய |
| त्वां | தேவரீரை | इदं | இவ்விடத்திற்கு |
| चिरस्य | வெகுகாலங்கழித்து | विवासनं | அகற்றப்பட்டிருப்ப தானது |
| इह | இங்கு | अकारणं च | குற்றமுடைமை இல் லாததென |
| आगतं | எழுந்தருளியிருக்கின் றவராய், | मया | என்னால் |
| पश्यामि | கட்புலனாற்பார்க்கும் பாக்கியம் பெற்றேன். | श्रुतं खलु | ஞானத்ருஷ்டியாலறிய ப்பட்ட விஷயமே. |

अवकाशो विविक्तोऽयं महानद्योः समागमे । पुण्यश्च रमणीयश्च वसतिह भवान्सुखम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------|----------|-------------------------------------|
| महानद्योः | “இரு மஹாநதிகளின் | भवान् | தேவரீர், |
| समागमे | சங்கமத்துறையில் | विविक्तः | ஸதா பரமாத்மாவைத் தியானிப்பவராய், |
| अयं | இந்த | इह | இவ்விடத்தில் |
| अवकाशः | இடமானது, | सुखं | திருவுள முவந்து, |
| पुण्यः च | புண்யமானது. | वसतु | எழுந்தருளியிருக்க லாம்.” |
| रमणीयः च | மனோக்ஞமானது. | | |

एवमुक्तस्तु वचनं भरद्वाजेन राघवः । प्रत्युवाच शुभं वाक्यं रामः सर्वहिते रतः ॥ २३ ॥

| | | | |
|-----------|---|------------|---------------------------|
| भरद्वाजेन | பரத்வாஜமுனிவரால் | रतः | ஆசையுள்ளவரும், |
| एवं | மேற்கண்ட | राघवः तु | ரகுலதிலகருமாகிய |
| वचनं | மொழியை | रामः | ஸ்ரீராமர், |
| उक्तः | { சொல்லப்பட்டதற்கு (திருச்செவி சாற்றி யருளியவரும்), | शुभं | பின்வரும் சிறந்த |
| सर्वहिते | எல்லாருக்கும் நன்மை செய்வதில் | वाक्यं | மொழியை |
| | | प्रत्युवाच | பதிலையருளிச்செய்த னர். |

भगवन्नित आसन्नः पौरजानपदो जनः । सुदर्शमिह मां प्रेक्ष्य मन्येऽहमिममाश्रमम् ॥ २४ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------|-----------|---|
| भगवन् | “பகவானே ! | इह | இப்பொழுது |
| इतः | இவ்விடத்திலிருந்து | मां | என்னை |
| आसन्नः | அருகாமையிலிருக் கும் | सुदर्शं | அதிகபிரயாசையின் றி பார்க்கக்கூடியவனாய் |
| पौरजानपदः | நகரநாடுவாசிகளாகிய | प्रेक्ष्य | அறிந்துகொண்டு விடுமென |
| जनः | ஜனம் | अहं | அடியேன் |
| इमं | இந்த | मन्ये | எண்ணுகிறேன். |
| आश्रमं | ஆசிரமத்தில் | | |

आगमिष्यति वैदेहीं मां चापि प्रेक्षको जनः । अनेन कारणेनाहमिह वासं न रोचये ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|---------|--------------------|
| मां च | “ அடியேனையும், | कारणेन | ஒரு காரணத்தைக் |
| वैदेहीं अपि | வைதேகியையும், | | கொண்டு |
| प्रेक्षकः | பார்க்க எண்ணங் | इह | இவ்விடத்தில் |
| | கொண்ட | वासं | வஸித்தலை |
| जनः | ஜனம் | अहं | அடியேன் |
| आगमिष्यति | இங்கு வரக்கூடும். | रोचये न | ஏற்றுக்கொள்ள |
| अनेन | இந்த | | முடியாதிருக்கிறது. |

एकान्ते पश्य भगवन्नाश्रमस्थानमुत्तमम् । रमते यत्र वैदेही सुखार्हा जनकात्मजा ॥ २६ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-------------|----------------------|
| भगवन् | “ பகவானே ! | रमते | நிம்மதியாய்க் காலங்க |
| यत्र | எந்தவிடத்தில் | | ழிப்பளோ (அந்த) |
| जनकात्मजा | ஜனகரின் திருமக | उत्तमं | சிறந்த |
| वैदेही | வீதை [ளாகிய | आश्रमस्थानं | பர்ணசாலைக்கேற்ற |
| एकान्ते | பிறரால் தரிசிக்கப்ப | | இடத்தை |
| | டாதவளாய் | पश्य | தேவரீர் ஆலோசித்த |
| सुखार्हा | { தியானமொன்றையே | | நுளிச்செய்வீராக.” |
| | அனுஷ்டிக்கின்றவ | | |
| | ளாய், | | |

एतच्छ्रुत्वा शुभं वाक्यं भरद्वाजो महामुनिः । राघवस्य ततो वाक्यमर्थग्राहकमब्रवीत् ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|----------|---------------------|
| राघवस्य | ஸ்ரீராமருடைய | वाक्यं | மொழிக்கு |
| एतत् | இந்த | श्रुत्वा | திருச்செவிகாற்றியரு |
| शुभं | சிறந்ததாயிருக்கிற | भरद्वाजः | பரத்வாஜ [ளிய |
| | தும், | महामुनिः | மஹர்ஷி, |
| अर्थग्राहकं | { சரியான காரணத்து | ततः | அதற்கு |
| | டன் சேர்ந்திருக்கிற | वाक्यं | பின்வரும் பதிலை |
| | துமாகிய | अब्रवीत् | அநுளிச்செய்தனர். |

दशक्रोश इतस्तात गिरिर्यस्मिन्निवत्स्यसि । महर्षिसेवितः पुण्यः सर्वतः सुखदर्शनः ॥ २८ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|------------|---------------------|
| तात | “ குழந்தாய் ! | पुण्यः | புண்யமான தும், |
| इतः | இவ்விடத்திலிருந்து | सर्वतः | எங்குபார்த்தா லும் |
| दशक्रोशे | { பத்து க்ரோச தூரத் | सुखदर्शनः | { மனோகரமான காஷி |
| | தில் (இருபதுமை | | களுடன் விளங்குவ |
| | லுக்கப்பால்) | | துமாகிய |
| महर्षिसेवितः | { மஹர்ஷிகளால் வஸிக் | गिरिः | ஓர் மலையிருக்கிறது. |
| | கப்பெற்று விளங்கு | यस्मिन् | (எதுவோ) இதில் |
| | கிறதாயும், | निवत्स्यसि | எழுந்தருளியிருக் |
| | | | கலாம். |

गोलाङ्गलानुचरितो वानरर्क्षनिषेवितः । चित्रकूट इति ख्यातो गन्धमादनसन्निभः ॥२९॥

| | | | | |
|--------------|--------------------|--------------------|---|--------------------|
| चित्रकूटः | “சித்ரகூடம் | வானரர்- | } | சாதாரணக்குரங்குக |
| इति | என்பது | निषेवितः | | ளாலும் கரடிகளாலும் |
| ख्यातः | இதற்குப் பெயர். | | | வலிக்கப்பெற்றது. |
| गोलाङ्गलानु- | } * ‘கோலாங்கூல’மென | गन्धमादन- | } | ‘கந்தமாதன’மெனும் |
| चरितः | | ப்படும் ஓர் வகை கு | | सन्निभः |
| | ரங்குகளால் திரியப் | | | னமாயுள்ளது. |
| | பெற்றது. | | | |

[* கருத்தவுடல்களும், சிவந்த கன்னங்களும், பசுக்களின் வால்களையொத்த வால்களும் உடையன]

[§ மேருபர்வதத்திற்குக் கிழக்கில் ஸதா புஷ்பித்து வாஸனைகொண்டு விளங்கும் மரங்களடர்ந்த ஓர் மலை.]

यावता चित्रकूटस्य नरः शृङ्गाण्यवेक्षते । कल्याणानि समाधत्ते न पापे कुरुते मनः ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|----------------|------------------|
| नरः | “ஓர் மனிதன், | कल्याणानि | பாக்கியங்களை |
| चित्रकूटस्य | சித்திரகூடத்தினது | समाधत्ते | பெறுகின்றான். |
| शृङ्गाणि | சிகரங்களை, | पापे | தர்மமில்லாத்தொழி |
| यावता | } எப்பொழுது தரிசிக் | | லில் |
| अवेक्षते | | கின்றானோ அப்பொ | मनः |
| | முதிவிருந்து | कुरुते न | செலுத்தமாட்டான். |

ऋषयस्तत्र बहवो विहृत्य शरदां शतम् । तपसा दिवमारूढाः कपालशिरसा सह ॥३१॥

| | | | |
|---------|------------------|-----------|----------------------|
| तत्र | “அவ்விடத்தில் | कपालशिरसा | சிவபெருமானோடும், |
| बहवः | அனேக | तपसा सह | அக்னிபகவானோடும் |
| ऋषयः | ரிஷிகள் | दिवं | சுவர்க்கத்தில் |
| शतं | அனேக | आरूढाः | எழுந்தருளியிருக்கின் |
| शरदां | சா த்ருதுக்களில் | | றார்கள். |
| विहृत्य | வாஸம்செய்து | | |

प्रविविक्तमहं मन्ये तं वासं भवतः सुखम् । इह वा वनवासाय वस राम मया सह ॥३२॥

| | | | |
|-------------|--|--------|----------------|
| अहं | “ நான் | सुखं | ஏற்றதாய் |
| तं | அந்த | मन्ये | எண்ணுகிறேன். |
| प्रविविक्तं | { ஜனஸஞ்சாரமுற்ற பிரதேசங்களுக்கு எட் டாக்கையிலிருக்கும் | वा | இல்லையென்றால், |
| | | राम | ஸ்ரீராம! |
| वासं | இடத்தை, | इह | இவ்விடத்திலேயே |
| भवतः | உங்களுடைய | मया सह | என்னோடுகூடவே |
| वनवासाय | வனவாஸத்திற்கு | वस | வஸிக்கலாம்.” |

स रामं सर्वकामैस्तं भरद्वाजः प्रियातिथिम् । सभार्यं सह च भ्रात्रा प्रतिजग्राह धर्मवित् ॥

| | | | |
|-------------|--|---------------|--|
| सः | அந்த | प्रियातिथिं च | அதிதியாய் கிடைக்கப் பெறலரியவருமாகிய |
| धर्मवित् | தர்மவித்தாகிய | तं | அந்த |
| भरद्वाजः | பரத் துவாஜமுனிவர் | रामं | ஸ்ரீராமரை, |
| भ्रात्रा सह | தம்பியோடுகூட வந்தி ருக்கிறவரும், | सर्वकामैः | ஸகலவித உபசாரங்க ளினால் |
| सभार्यं | தர்மபத்தினியுடன் வந்திருக்கிறவரும், | प्रतिजग्राह | கொண்டாடியுபசரித் தார். |

तस्य प्रयागे रामस्य तं महर्षिमुपेयुषः । प्रपन्ना रजनी पुण्या चित्राः कथयतः कथाः ॥

| | | | |
|---------|------------------------------------|----------|-------------------------------------|
| प्रयागे | ப்ரயாகையில் | कथयतः | செய்துகொண்டிருக் |
| महर्षि | மஹர்ஷியை | तस्य | அந்த [கும்] |
| उपेयुषः | கிட்டியவராய், | रामस्य | ஸ்ரீராமருக்கு |
| तं | அவருக்கு | पुण्या | பகல் நல்லதாய் முடி யப்பெற்றதாகிய |
| चित्राः | மனத்திற்கின்பத்தை விளைவிக்கின்ற | रजनी | இரவு |
| कथाः | ஸம்பாஷணைகளை | प्रपन्ना | ஆரம்பித்தது. |

सीतातृतीयः काकुत्स्थः परिश्रान्तः सुखोचितः । भरद्वाजाश्रमे रम्ये तां रात्रिमवसत्सुखम् ॥

| | | | |
|-------------|--|---------------|---------------------------|
| सीतातृतीयः | லீதையையுள்ளிட்ட மூவாரிலொருவரும், | रम्ये | மனோகரமான |
| सुखोचितः | { புண்புகிருத்தியங் களில் ஆஸக்தியுடை யவருமாகிய | भरद्वाजाश्रमे | பரத்வாஜாது ஆசிரமத்தில் |
| काकुत्स्थः | ஸ்ரீராமர், | तां | அந்த |
| परिश्रान्तः | நல்ல விஷயங்களையே தியானிப்பவராய், | रात्रिं | இரவை |
| | | सुखं | புண்புமாய் |
| | | अवसत् | கழித்தார். |

प्रभातायां रजन्यां तु भरद्वाजमुपागमत् । उवाच नरशार्दूलो मुनिं ज्वलिततेजसम् ॥३६॥

| | | | |
|---------------|------------------------|-------------|--------------------------------------|
| रजन्यां | இரவு கழிந்து | उपागमत् | போய் தரிசித்தார். |
| प्रभातायां तु | பொழுதுவிடிந்த வுடன் | ज्वलिततेजसं | ஜ்வலிக்கும் தேஜோ மயமாய் விளங்கும் |
| नरशार्दूलः | புருஷோத்தமர் | मुनिं | ரிஷியைப்பார்த்து |
| भरद्वाजं | பரத்வாஜமுனிவரை | उवाच | பின்வருமாறு மொ ழிந்தார். |

शर्वरीं भगवन्नय सत्यशील तवाश्रमे । उषिताः स्मेह वसतिमनुजानातु नो भवान् ॥३७॥

| | | | |
|---------|------------------|------------|-------------|
| सत्यशील | சத்தியசீலரான | उषिताः स्म | கழித்தோம். |
| भगवन् | பகவானே ! | भवान् | தேவரீர் |
| शर्वरीं | இரவை | नः | எங்களுக்கு |
| इह | இந்த | अद्य | இப்பொழுது |
| तव | தேவரீரது | अनुजानातु | போகவிடைதந்த |
| आश्रमे | ஆசிராமத்தில் | | ருள்வீராக. |
| वसतिं | தங்கியிருந்ததில் | | |

राज्यां तु तस्यां व्युष्टायां भरद्वाजोऽब्रवीदिदम् । मधुमूलफलोपेतं चित्रकूटं व्रजेति ह ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-------------|--------------------|
| भरद्वाजः | பரத்வாஜமகரிஷி, | अब्रवीत् | அருளிச்செய்தனர் : |
| तस्यां | அந்த | मधुमूल- | “தேன், கிழங்குகள், |
| राज्यां | இரவெல்லாம் | फलोपेतं | பழங்கள் இவைக |
| व्युष्टायां तु | சிந்தை செய்ததின் | | ளால் நிறையப்பெற் |
| | பயனாய் | | றுள்ளங்கும் |
| इदं | இந்த | चित्रकूटं ह | சித்திரகூடமலைக்கே, |
| इति | பின்வரும் சொல்லை, | व्रज | எழுந்தருள்வாயாக. |

वासमौपयिकं मन्ये तव राम महाबल ॥ ३९ ॥

| | | | |
|--------|--------------------|-------|------------------|
| महाबल | “மஹா ஸாமர்த்திய | वासं | வாஸஸ்தானம் (அது) |
| राम | மரீராம! [சாலியாகிய | | என்ற |
| तव | தேவரீருக்கு | मन्ये | தீர்மானத்திற்கு |
| औपयिकं | ஏற்ற | | வந்திருக்கிறேன். |

नानामृगगणोपेतः किन्नरोरगसेवितः । मयूरनादाभिरुतो गजराजनिषेवितः ॥ ४० ॥

गम्यतां भवता शैलश्चित्रकूटः स विश्रुतः । पुण्यश्च रमणीयश्च बहुमूलफलायुतः ॥ ४१ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|----------------|--------------------|
| सः | “அந்த | किन्नरोरग- | கின்னரர்களாலும் உ |
| चित्रकूटः | சித்திரகூடமெனும் | सेवितः | ரக்களாலும் ஸேவி |
| शैलः | மலையானது | | க்கப்பெற்றது. |
| विश्रुतः | மஹாப் பிரசித்தி | मयूरनादाभिरुतः | மயில்கள் ஒலிக்கப் |
| | பெற்றது ; | | பெற்றது. |
| पुण्यः च | புண்யத்தையளிக்க | गजराजनिषेवितः | அரசரானைகளால் ஸ |
| | வல்லது ; | | ஞ்சரிக்கப்பெற்றது. |
| रमणीयः च | மனோகரமானது ; | बहुमूल- | பல கிழங்குகளும், ப |
| नानामृग- | நானாவிதமான மிருகங் | फलायुतः | ழங்களும் செழிக்கப் |
| गणोपेतः | களால் ஸஞ்சரிக்கப் | | பெற்றது. |
| | பெற்றது ; | भवता | உன்னால் |
| | | गम्यताम् | அடையப்பட்டும். |

तत्र कुञ्जरयूथानि मृगयूथानि चाभितः । विचरन्ति वनान्तेषु तानि द्रक्ष्यसि राघव ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-------------|---------------------|
| राघव | “ஸ்ரீராம! | मृगयूथानि च | அனேக மான்களும் |
| तत्र | அந்த | विचरन्ति | சஞ்சரிக்கின்றன. |
| वनान्तेषु | வனப்பிரதேசங்களில் | तानि | அவைகளை |
| अभितः | எல்லாவிடங்களிலும் | द्रक्ष्यसि | நீ கண்டு மகிழ்வாய். |
| कुञ्जरयूथानि च | அனேக யானைகளும் | | |

सरित्प्रस्रवणप्रस्थान्दरीकन्दरनिर्झरान् । चरतः सीतया सार्धं नन्दिष्यति मनस्तव ॥४३॥

| | | | |
|----------------|---------------------------|-------------|--|
| सीतया | “வீதாப்பிராட்டியா | दरीकन्दर- } | மலைக்குகைகளிலும், |
| | ரோடு | निर्झरान् } | பள்ளத்தாக்குகளிலும், |
| सार्धं | கூட | चरतः | மலையருவிகளிலும், மலையருவிகளிலும், [அும்] |
| सरिप्रस्रवण- } | நதிகளிலும், சுனைகளிலும், | तव | காலங்கழிக்கும் [அும்] |
| प्रस्थान् } | அும், பர்வத உச்சிகளிலும், | मनः | தேவரீரது மனம் |
| | | नन्दिष्यति | மகிழ்வுறும். |

प्रहृष्टकोयष्टिकोकिलस्वनैर्विनादितं तं वसुधाधरं शिवम् ।

मृगैश्च मत्तैर्बहुभिश्च कुञ्जरैः सुरम्यमासाद्य समावसाश्रमम् ॥ ४४ ॥

| | | |
|------------------------------------|----------|--------------------------|
| प्रहृष्टकोयष्टिक- } “உற்சாகங்கொண்ட | सुरम्यं | { மிக்க அழகுவாய்ந்து |
| कोकिलस्वनैः } ஆட்காட்டிக்குருவி | तं | விளங்குகின்றதுமாகிய |
| | शिवं | அந்த |
| | वसुधाधरं | புண்யசேஷத்திரமாகிய |
| विनादितं | आसाद्य | மலைக்கு |
| बहुभिः | आश्रमं | சென்று, |
| मृगैः च | समावस | பாணசாலையொன்றை |
| मत्तैः | | ஏற்படுத்திக்கொண்டு வனி.” |
| कुञ्जरैः च | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे चतुष्पञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 4562.

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2207.



पञ्चपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தைந்தாவது ஸர்க்கம் ॥ ५५ ॥

यमुनातरणम्—யமுனாநதியைத் தாண்டுவது.

उषित्वा रजनीं तत्र राजपुत्रावरिन्दमौ । महर्षिमभिवाद्याथ जग्मतुस्तं गिरिं प्रति ॥ १ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------|-------------|----------------------|
| अरिन्दमौ | எதிலும் ஜயசாலி | उषित्वा | கழித்துவிட்டு, |
| | களாகும் | अथ | அப்பொழுது |
| राजपुत्रौ | { சக்கிரவர்த்தியாரின் | महर्षिं | மஹர்ஷிக்கு |
| | திருக்குமாரர்களாகி | अभिवाद्य | தண்டம் சமர்ப்பித்து, |
| | ய அவ்விருவரும் | तं | அந்த |
| तत्र | அவ்விடத்தில் | गिरिं प्रति | மலையை நோக்கி . |
| रजनीं | இரவை | जग्मतुः | பிரயாணமாணுர்கள். |

तेषां स्वस्त्ययनं चैव महर्षिः स चकार ह । प्रस्थितान् चैव तान्प्रेक्ष्य पिता पुत्रानिवान्वगात् ॥

| | | | |
|---------------|--|-------------------|------------------------------|
| महर्षिः | மஹர்ஷி | प्रस्थितान् पुत्र | பிரயாணமாய் போய்க் |
| तेषां एव | அவர்களெல்லோருக் கும், | तान् | கொண்டிருக்கும் |
| स्वस्त्ययनं च | { ஸ்வஸ்த்யயனத்தை (இடையூறு சம்பவிக் காது சதா நன்மை யே விளைவிக்கவல்ல வேதமந்திர ஜபத் தை) | सः च | அவருள், |
| चकार | செய்தருளினார். | पिता | ஒரு தந்தை |
| | | पुत्रान् | புதல்வர்களிடத்தில் |
| | | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே |
| | | प्रेक्ष्य ह | பார்த்துக்கொண்டே |
| | | अन्वगात् | கூடப்பின்பற்றி நடந் தார். |

ततः प्रचक्रमे वक्तुं वचनं स महामुनिः । भरद्वाजो महातेजा राघं सत्यपराक्रमम् ॥ ३ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------------|-----------|----------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | रामं | ஸ்ரீராமருக்கு |
| सः | அந்த | वचनं | (தெரிவிக்கவேண்டிய) ஸமாசாரத்தை |
| महातेजाः | மகா தேஜோவானான | वक्तुं | பின்வருமாறு சொல் வதற்கு |
| भरद्वाजः | பரத்வாஜ | प्रचक्रमे | திருவுளம்பற்றியரு ளினார். |
| महामुनिः | மஹர்ஷி | | |
| सत्यपराक्रमं | வீண்போகாதபராக்கி ரமம்படைக்கப்பெற்ற | | |

गङ्गायमुनयोः संधिमासाद्य मनुजर्षभौ । कालिन्दीमनुगच्छेतां नदीं पश्चान्मुखाश्रिताम् ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------------|--------------------|---------------------------------------|
| मनुजर्षभौ | “புருஷோத்தமர்களே ! | पश्चान्मुखाश्रितां | மேற்கிலிருந்து கிழக் குழுகமாயோடும் |
| गङ्गायमुनयोः | கங்கையமுனை இவ்வி ரண்டு நதிகளுடைய | कालिन्दीं | யமுனை |
| सन्धि | சங்கமத்திற்கு | नदीं | நதியை |
| आसाद्य | சென்று, | अनुगच्छेताम् | பற்றிச்செல்வீர்க ளாக. |

अथासाद्य तु कालिन्दीं शीघ्रस्रोतसमापगाम् । तस्यास्तीर्थं प्रचरितं पुराणं प्रेक्ष्य राघवौ ॥

तत्र यूयं पुवं कृत्वा तरतांशुमतीं नदीम् ॥ ६ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|---------------|---------------------|
| राघवौ | “ஸ்ரீராம, லக்ஷ்மண ! | तीर्थं | தூறையை |
| शीघ्रस्रोतसं | பிரவாஹமெடுத்து வேகமாயோடும் | प्रेक्ष्य | கவனித்து, |
| कालिन्दीं | யமுனை | तत्र | அவ்விடத்தில் |
| आपगां तु | நதியையே | अथ | அப்பொழுது |
| आसाद्य | பற்றிச்சென்று, | यूयं | நீங்களெல்லோரும் |
| तस्याः | அதனுடைய | पुवं | ஓர் தெப்பத்தை |
| प्रचरितं | பலநடந்துபழகித்தே | कृत्वा | எற்படுத்திக்கொண்டு, |
| पुराणं | பழைய [யந்த,தகைய | अंशुमतीं नदीं | யமுனை நதியை |
| | | तरत | தாண்டுங்கள். |

| | |
|-----------|-------------------|
| வனதாவீ: | காட்டுக்கஷ்டங்க |
| வिवर्जित: | சேராதது. [ளோடு |
| मया | என்னால் |
| सुबहुश: | பலதடவைகளில் |
| गत: | அசரிக்கப்பட்டது". |

इति पन्थानमावेद्य महर्षिः संन्यवर्तत । अभिवाद्य तथेत्युक्त्वा रामेण विनिवर्तितः ॥ ११ ॥

| | | | |
|---------|-------------------------|-------------|---|
| इति | மேற்கண்டவாறு | तथा इति | “ அங்குனமே செய் கின்றேன் ” என்று |
| पन्थानं | போகும் வழியைப் பற்றி | उक्त्वा | சொல்லி, |
| आवेद्य | சொல்லிய பின்னர், | अभिवाद्य | தண்டம் சமர்ப்பித்து, |
| महर्षिः | மகரிஷி | विनिवर्तितः | { திரும்பிப்போக விடை கொடுக்கப்பெற்றவ ராய் |
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் | संन्यवर्तत | திரும்பினார். |

उपावृत्ते मुनौ तस्मिन् रामो लक्ष्मणमब्रवीत् । कृतपुण्याः स्म सौमित्रे मुनिर्यन्नोऽनुकम्पते॥

| | | | |
|-----------|----------------------------------|----------------|---------------------------------|
| तस्मिन् | அந்த | सौमित्रे | “ லக்ஷ்மண ! |
| मुनौ | முனிவர் | मुनिः | முனிவர் |
| उपावृत्ते | திரும்பிய பின்னர், | नः | நமது விஷயத்தில் |
| रामः | ஸ்ரீராமர், | अनुकम्पते | பரிபூரண அருள் புரி கின்றனர். |
| लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரைப் பார்த்து | यत् | இக்காரணத்தால் |
| अब्रवीत् | பின்வருமாறு அரு ளிச்செய்தனர்; | कृतपुण्याः स्म | நாம் கொடுத்துவைத் தவர்களே.” |

इति तौ पुरुषव्याघ्रौ मन्त्रयित्वा मनस्विनौ । सीतामेवाग्रतः कृत्वा कालिन्दीं जग्मतुर्नदीम् ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------|-----------|----------------|
| मनस्विनौ | ஸாமர் த்தியசாலிகளும் | सीतां | ஸீதையை |
| पुरुषव्याघ्रौ | புருஷோத்தமர்களு மாகிய | अग्रतः | முன்செல்பவளாய் |
| तौ | அவ்விருவர்களும் | कृत्वा | செய்துகொண்டு, |
| इति | இவ்விதமாய் | कालिन्दीं | யமுனை |
| मन्त्रयित्वा एव | பேசிக்கொண்டே, | नदीं | நதியை நோக்கி, |
| | | जग्मतुः | நடந்தார்கள். |

अथासाद्य तु कालिन्दीं शीघ्रस्रोतोवहां नदीम् । चिन्तामापेदिरे सर्वे नदीजलतितीर्षवः ॥

| | | | |
|-----------------|---|-----------|---|
| अथ | அதன்மேல் | नदीजल- | நதியின் ஜலத்தைக்க |
| शीघ्रस्रोतोवहां | { பிரவாஹமெடுத்து வேகமாயோடும் ஜல த்தையுடைய | तितीर्षवः | { டந்து அக்கரை அ டைய உத்தேசங்கொ ண்டவர்களாய் |
| कालिन्दीं | யமுனை | तु | இதுவிஷயத்தில் |
| नदीं | நதியை | चिन्तां | { இனி செய்யவேண்டிய தைப்பற்றிய யோச னையை |
| आसाद्य | அடைந்து, | आपेदिरे | செய்தார்கள். |
| सर्वे | எல்லோரும் | | |

तौ काष्ठसङ्घाटमथो चक्रतुः सुमहाप्लवम् । शुष्कैर्वशैः समाकीर्णमुशीरैश्च समावृतम् ॥१५॥

| | | | |
|-------------|--|-----------|--------------------------|
| अथो | அப்பொழுது | शुष्कैः | காய்ந்த |
| तौ | அவ்விருவர்களும் | वंशैः | மூங்கில்களால் [தாயும் |
| सुमहाप्लवं | அழகிய பெரிய தெப் பமொன்றை, | समाकीर्णं | பரப்பிக்கட்டப்பட்ட- |
| | | उशीरैः | வெட்டிவேர்களால் |
| काष्ठसंघाटं | { காய்ந்து உலர்ந்த கட் டைகளால் செய்யப் பட்டதாகவும் | समावृतं च | நன்குமூடப்பட்ட தாயும் |
| | | चक्रतुः | செய்தனர்கள். |

ततो वेतसशाखाश्च जम्बूशाखाश्च वीर्यवान् । चकार लक्ष्मणश्छित्वा सीतायाः सुखमासनम् ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------|---------|--------------------------|
| ततः | அதன்மேல், | छित्वा | பிளந்துசேர்த்து |
| वीर्यवान् | ஸாமர்த்தியசாலியா | सीतायाः | ஸீதாபிராட்டியாரு க்கு |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர், [கும், | | |
| वेतसशाखाः च | பிரம்புக்கொடிகளையும் | सुखं | ஏற்றதான |
| जम्बूशाखाः च | நாவல்மரக்கிளைகளே யும், | आसनं | ஆஸனத்தை |
| | | चकार | அமைத்தருளினார். |

तत्र श्रियमिवाचिन्त्यां रामो दाशरथिः प्रियाम् । ईषत्संलज्जमानां तामध्यारोपयत प्लवम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------|-------------|--|
| दाशरथिः | தசரதரின் திருக்கு மாரராகிய | प्रियां | { (எள்ளளவும் மனங் கோணுது நடக்கும்) மனைவியும் |
| रामः | ஸ்ரீராமர், | ईषत् | கொஞ்சம் வெட்கப்ப ட்டுக்கொண்டிருப்ப வன்போல் விளங்கும் |
| तत् | அப்பொழுது | संलज्जमानां | அவளை தெப்பத்தில் |
| अचिन्त्यां | மனோவாக்குக்கெட் டாத | तां | அவளை |
| इव | ஸாக்ஷாத் | प्लवं | தெப்பத்தில் |
| श्रियं | மஹாலக்ஷ்மியும் | अध्यारोपयत | ஏற்றிவைத்தனர். |

पार्श्वे च तत्र वैदेह्या वसने भूषणानि च । प्लवे कठिनकाजं च रामश्चक्रे सहायुधैः ॥१८॥

| | | | |
|-----------|---------------|------------|-------------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | आयुधैः सह | ஆயுதங்களோடுகூட |
| तत् | அப்பொழுது | भूषणानि च | ஆடையாபரணங்க ளையும், |
| प्लवे | தெப்பத்தில் | कठिनकाजं च | மணவெட்டியையும், கூடையையும் |
| वैदेह्याः | வைதேஹியாருடைய | चक्रे | வைத்தனர். |
| वसने च | ஆஸனத்திலேயே | | |
| पार्श्वे | பக்கலில் | | |

आरोप्य सीतां प्रथमं संघाटं परिगृह्य तौ । ततः प्रतेरतुर्यत्तौ वीरौ दशरथात्मजौ ॥१९॥

| | | | |
|----------|----------------------|------------|----------------------------------|
| प्रथमं | முதலில், | दशरथात्मजौ | தசரதரின் திருக்கு மாரர்களும், |
| सीतां | சீதாப்பிராட்டியாரை | वीरौ | தருமவீரர்களுமாகிய |
| संघाटं | தெப்பத்தை | तौ | அவ்விருவர்களும் |
| परिगृह्य | பிடித்துக்கொண்டு, | यत्तौ | முயற்சியுடையவர்க ளாய் |
| आरोप्य | எழுந்தருளப்பண்ணி | प्रतेरतुः | நடத்தினார்கள். |
| ततः | அதன்பின்னர் [விட்டு, | | |

कालिन्दीमध्यमायाता सीता त्वेतामवन्दत । स्वस्ति देवि तरामि त्वां पारयेन्मे पतिव्रतम् ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|---------|---------------------|
| कालिन्दीमध्य | யமுனையின் நடுவை | स्वस्ति | { திருவுளமுவந்து பி |
| आयाता | அடைந்திருந்த | त्वां | ரார்த்தனைகளை யரு |
| सीता | சீதாப்பிராட்டியார், | तरामि | ளிச்செய்வாயாக. |
| तु | இச்சமயத்தில் | मे | உன்னை |
| एनां | இதை | पतिः | கடந்து தாண்டுகின் |
| अवन्दत | பின்வருமாறு பிரார்த் | व्रतं | எனது [நேன். |
| देवि | தித்தனள். | पारयेत् | பர்த்தா |
| | “தேவியே! | | பிரதிக்களையை |
| | | | கைகூடப்பெறட்டும். |

यक्ष्ये त्वां गोसहस्रेण सुराघटशतेन च । स्वस्ति प्रत्यागते रामे पुरीमिक्ष्वाकुपालिताम् ॥

| | | | |
|------------------|---------------------|--------------|----------------------|
| रामे | “ஸ்ரீராமர், | गोसहस्रेण | அனேக கோதானம் |
| स्वस्ति | குறையின்றி, | | களாலும் |
| इक्ष्वाकुपालितां | { இக்சுவாகுமன்னர் | सुराघटशतेन च | { அனேக தீர்த்தம்நிறை |
| | களால் பரிபாலிக்கப் | | ந்த பூர்ணகலசங்க |
| | பட்ட | | ளாலும் |
| पुरीं | நகருக்கு | त्वां | உன்னை |
| प्रत्यागते | திரும்பியெழுந்தருளி | यक्ष्ये | பூஜிக்கிறேன்.” |
| | ய பின்னர் | | |

कालिन्दीमथ सीता तु याचमाना कृताञ्जलिः । तीरमेवाभिसंप्राप्ता दक्षिणं वरवर्णिनी ॥

| | | | |
|------------------|--------------------|------------|----------------------|
| वरवर्णिनी | ஸ்தீரத்தினமாகும் | अथ | அப்பொழுதும் |
| सीता | ஸீதாப்பிராட்டியார் | कृताञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தையாய் |
| दक्षिणं | தென் | कालिन्दीं | யமுனையை |
| तीरं | கரையை | | { பிரார்த்தித்துக்கொ |
| अभिसंप्राप्ता तु | கண்முன் கண்டவளா | याचमाना एव | { ண்டிருக்கும்வண்ண |
| | கியும், | | மேயிருந்தனள். |

ततः प्लवेनांशुमतीं शीघ्रगामूर्मिमालिनीम् । तीरजैर्बहुभिर्वृक्षैः संतेर्यमुनां नदीम् ॥ २३ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|----------|--------------------|
| ततः | அப்பொழுது | अंशुमतीं | சூரியபகவானின் புத் |
| शीघ्रगं | வேகமாய் பிரவாஹ | | தரியுமாகிய |
| | மெடுத்து ஓடுகிறதும் | यमुनां | யமுனை |
| तीरजैः | கரையோரங்களிலிரு | नदीं | நதியை |
| बहुभिः | அனேக [க்கும் | प्लवेन | தெப்பத்தைக் |
| वृक्षैः | மரங்களோடு | | கொண்டே |
| ऊर्मिमालिनीं | மோதும் அலைகளை | संतेरुः | தாண்டி னார்கள். |
| | யுடையதும், | | |

| | |
|--------|-------------------------------|
| சிதர் | கூளர்ந்த இடத்தை |
| | யுடையதும் |
| ஹரிதஃ | பச்சிலைகளையுடையதும், |
| ச்யாம் | ‘ச்யாம்’மென்ற பெயரையுடையதுமான |
| ந்யஸோ | ஆலமரத்தை |
| அஸேது: | கண்டனர்கள். |

| | |
|--------------|--|
| ते नमः अस्तु | { உன்னை நான் முடி- தாழ்த்தி நமஸ்கரிக்க கின்றேன். |
| मे | எனது |
| पतिः | கணவனார் |
| व्रतं | பிரதிக்கிணையை |
| पारयेत् | கைகூடப்பெறட்டும். |

| | |
|----------------|----------------------------------|
| इति एव | என்று பிரார்த்தித்துக் கொண்டு |
| सीता | ஸீதாப்பிராட்டியார் |
| अञ्जलिं कृत्वा | கைகூப்பியவண்ணமே |
| वनस्पतिं | விருக்தத்தை |
| पर्यगच्छन् | பிரதக்ஷிணம்செய்த என். |

| | |
|------------|------------------------|
| आयाचन्ती च | பிரார்த்திக்கின்றவளாய் |
| अवलोक्य च | கவனித்துக்கொண்டே, |
| लक्ष्मणं | செஷ்.மணரைப் |
| | பார்த்து |
| अवतीत | பின்வருபாறு அரு |
| | விரிசெய்தனர் |

सीतामादाय गच्छ त्वमग्रतो भरताग्रज । पृष्ठतोऽहं गमिष्यामि सायुधो द्विपदां वर ॥२८॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|-----------|---------------------|
| भरताग्रज | “பா தனைத் தமையனா கவுடைய | अग्रतः | முன் |
| द्विपदां वर | புருஷோத்தம ! | गच्छ | நட ; |
| त्वं | நீ | अहं | நான் |
| सीतां | சீதையை | सायुधः | ஆயுதபாணியாய் |
| आदाय | பின் கொண்டு, | पृष्ठतः | பின் |
| | | गमिष्यामि | நடந்து வருகின்றேன். |

यद्यत्फलं प्रार्थयते पुष्पं वा जनकात्मजा । तत्तत्प्रदद्या वैदेह्या यत्रास्या रमते मनः ॥२९॥

| | | | |
|------------|--------------------|-----------|---------------|
| जनकात्मजा | “ஜனகமஹாராஜரின் | वैदेह्याः | வைதேஹியினுடைய |
| यत् यत् | எந்தெந்த [திருமகள் | मनः | உள்ளம் |
| फलं | பழத்தையோ, | रमते | உவக்குமோ, |
| पुष्पं वा | புஷ்பத்தையோ | तत् तत् | அததை அப்போ |
| प्रार्थयते | கேட்கின்றாளோ | | தைக்கப்போதே |
| यत् | எதில் | प्रदद्याः | கொண்டு வந்து |
| अस्याः | இந்த | | கொடுப்பாயாக.” |

गच्छतोस्तु तयोर्मध्ये बभूव जनकात्मजा । मातङ्गयोर्मध्यगता शुभा नागवधूरिव ॥३०॥

| | | | |
|-----------|----------------------|------------|------------------|
| गच्छतोः | நடந்துகொண்டிருக்கும் | मातङ्गयोः | இரண்டு ஆண்பாளை |
| | கும் | | களின் |
| तयोः | அவ்விருவர்களுக்கும் | मध्यगता | மத்தியில் நடந்து |
| मध्ये | மத்தியில் | | கொண்டிருக்கும் |
| शुभा | பதிவரதா சிரோமணி | नागवधूः इव | பெண்பாளை போல், |
| | யாகும் | तु | இப்பொழுது |
| जनकात्मजा | ஜனகமஹாராஜரின் | बभूव | திகழ்த்தனர். |
| | திருமகள், | | |

एकैकं पादपं गुल्मं लतां वा पुष्पशालिनीम् । अदृष्टपूर्वां पश्यन्ती रामं पप्रच्छ साऽबला ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-----------|-----------------------|
| सा | அந்த | गुल्मं वा | செடியையும். |
| अबला | மடந்தை | पश्यन्ती | புதிதாய்ப் பார்க்கின் |
| अदृष्टपूर्वा | இதுவரையில் | | நவளாய் |
| | கண்டிராத | एकैकं | ஒவ்வொன்றைப் |
| पुष्पशालिनीं | புஷ்பங்கள் நிறைந் | | பற்றியும் |
| लतां | கொடியையும், [நூள்ள | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| पादपं | மரத்தையும், | पप्रच्छ | வினாவினாள். |

रमणीयान्बहुविधान्पादपान्कुसुमोत्कटान् । सीतावचनसंरब्ध आनयामास लक्ष्मणः ॥३१॥

| | | | |
|------------|----------------------|---------------|--------------------|
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | कुसुमोत्कटान् | புஷ்பங்களால் நிரம் |
| सीतावचन-) | சீதாப்பிராட்டியாரின் | | பப்பெற்ற |
| संरब्धः) | மொழியில் உற்சா | पादपान् | மரக்களைகளை |
| | கம்கொண்டவராய் | आनयामास | கொண்டுவந்து |
| बहुविधान् | பலவகை | | சமர்ப்பித்தனர். |
| रमणीयान् | அழகிய | | |

विचित्रवालुकजलां हंससारसनादिताम् । रेमे जनकराजस्य तदा प्रेक्ष्य सुता नदीम् ॥

| | | | |
|-------------------------|---|-----------------------|---|
| तदा | அப்பொழுது | हंससारस- नादितां } | ஹம்ஸங்கள், ஸாரஸங் களென்கிற நீர்ப்பற வைகளால் ஒலிக்கப் பெற்று விளங்குகிற தாயும் |
| जनकराजस्य | ஜனகராஜரது | प्रेक्ष्य | கவனித்து |
| सुता | திருமகள் | रेमे | மனமகிழ்ந்தாள். |
| नदीं | நதியை | | |
| विचित्रवालुक- जलां } | அழகுவாய்க்க மணல் கிட்டுகளையும் ஜலத் தையுமுடையதாயும் | | |

क्रोशमात्रं ततो गत्वा भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ । बहून्मेध्यान्मृगान्हत्वा चैतुर्यमुनावने ॥३४॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|-------------|--------------------------------|
| ततः | அதன்மேல் | हत्वा | துறந்துவிட்டு, |
| भ्रातरौ | ஸகோதரர்களான | यमुनावने | யமுனைக்கரையி லுள்ள வனத்தில் |
| रामलक्ष्मणौ | புரோமரும் லக்ஷ்ம ணரும், | क्रोशमात्रं | இரண்டுமைல் தூரம் வரைக்கும் |
| बहून् | பல | गत्वा | தங்க இடத்தைத் தேடி |
| मेध्यान् | புண்ணிய | चैतुः | நடந்தார்கள். |
| मृगान् | மிருகங்களை | | |

विहृत्य ते बर्हिणपूगनादिते शुभे वने वानरवारणायुते ।

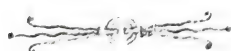
समं नदीवप्रमुपेत्य सम्मतं निवासमाजगमुदीनदर्शनाः

॥ ३५ ॥

| | | | |
|------------------------|--|----------|--|
| अदीनदर्शनाः | சலிடாமனத்தினர்க ளாகிய | विहृत्य | அலைந்து திரிந்து, |
| ते | அவர்கள் | समं | ஸமபூமியாயிருக்கிற தும், |
| बर्हिणपूग- नादिते } | மாடிகளின் கூட்டங்க ளாலொலிக்கப் பெற்றதும், | सम्मतं | மனோக்ருமாயிருக்கி றதும், |
| वानर- वारणायुते } | குரங்குகளாலும் யா னைகளாலும் நிறை யப்பெற்றதும். | नदीवप्रं | நதியின் கரையிலிருக் கும் ஓர் இடத்தை |
| शुभे | மனோக்ருமாயிருக் | उपेत्य | கண்டு, |
| वने | வனத்தில் [கின்ற] | निवासं | இரவை இவ்விடத்திற் கழிப்பதாய் |
| | | आजगमुः | தீர்மானித்தனர்கள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे पञ्चपञ्चाशः सर्गः ॥



பத்யாசா: சரி:—ஐம்பத்தாறுவது ஸர்க்கம் || 12 ||

சிவகூடமனம்—சித்திரகூடமலைக்குப் போவது.

அத ராஜ்யா வ்யதீதாயாமவஸுமனந்தரம் । ப்ரவோயாமாச ஶநேலக்ஷமண ரயுநந்தன: || 1 ||

| | | | |
|-----------|------------------|------------|-------------------|
| ரயுநந்தன: | ஸ்ரீராமர், | அனந்தர் | உடனே ஆகவேண்டி |
| ராஜ்யா | இரவு | | யதைப்பற்றி |
| வ்யதீதாயா | கழிந்தவுடன், | சுனே: | தேனொழுகும்வண்ண |
| அத | அப்பொழுது | | மாய், |
| அவஸும | தியானத்திலிருந்த | ப்ரவோயாமாச | பின்வருமாறு அருளி |
| லக்ஷமண | லக்ஷ்மணரைப் | | ச்செய்தனர் : |
| | பார்த்து, | | |

சௌமித்ரே ஶ்ருணு வந்யானா வ்லு வ்யாஹரதா ஸ்வநம் । சம்ப்ரதிஸ்தாமஹே கால: ப்ரஸ்தானஸ்ய பரந்தப ||

| | | | |
|----------|-------------------|-----------------|-------------------|
| பரந்தப | “ஐயசாலியாகிய | ஸ்வநம் | ஒலியை |
| சௌமித்ரே | சுமித்திராந்தன ! | ஸ்ருணு | கவனி. |
| வ்யாஹரதா | கூவுகின்ற | ப்ரஸ்தானஸ்ய | பிரயாணப்படுவதற்கு |
| வந்யானா | கானக உயிர்களுடைய | கால: | ஏற்ற காலம். |
| வ்லு | மனோகரமாயிருக்கும் | சம்ப்ரதிஸ்தாமஹே | நாம் பிரயாணமாகிச் |
| | | | செல்வோம்.” |

ச சுப: சமயே ப்ராஜா லக்ஷமண: ப்ரதிபோதத: । ஜஹௌ நித்ரா ச தந்த்ரீ ச ப்ரஸக்த் ச பதி ஶ்ரமம் ||

| | | | |
|-----------|--------------------|------------|-----------------------|
| லக்ஷமண: | லக்ஷ்மணர், | ச: | அவர் |
| நித்ரா ச | தூக்கத்தையும் | ப்ராஜா | தமையனரால் |
| தந்த்ரீ ச | தூக்கமயக்கத்தையும் | சுப: | தியானத்திலுள்ளவ |
| பதி | வழியில் | | ராய் |
| ப்ரஸக்த் | ஸாதாரணமாயுண்டா | சமயே | இருக்கும் சந்தர்ப்பத் |
| | கக்கடிய | | தில் |
| ஷ்ரமம் ச | ஆயாஸத்தையும் | ப்ரதிபோதத: | ஆக்குமிக்கப்பட்டார். |
| ஜஹௌ | ஒழித்திருந்தார். | | |

தத உத்யாய தே சர்வே ஶ்பூஷ்டா நத்யா: ஶிவ் ஜலம் । பந்யானஸூஷிணோஹித்வ் சிவகூடஸ்ய த் யயு: ||

| | | | |
|--------|---------------|-----------|----------------------|
| தத: | அப்பொழுது | ஸ்பூஷ்டா | நீராடி, |
| தே | அவர்கள் | ஶூஷிணா | நிஷியால் |
| சர்வே | எல்லோரும் | ஹித்வ் | குறிப்பிடப்பட்ட |
| உத்யாய | எழுந்து, | த். | அந்த |
| நத்யா: | நதியினது | சிவகூடஸ்ய | சித்திரகூடத்திற்கு |
| ஶிவ் | புண்ணிய | பந்யானம் | போகும் வழியை |
| ஜலம் | நீர்த்தத்தில் | யயு: | சென்றார்கள். [நோக்கி |

ततः संप्रस्थितः काले रामः सौमित्रिणा सह । सीतां कमलपत्राक्षीमिदं वचनमब्रवीत् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|---------------|--------------------|
| ततः | அப்பொழுது | कमलपत्राक्षीं | தாமரையிதழ்போன் |
| सौमित्रिणा | ஸக்திமணரோடு | | ற கண்களையுடைய |
| सह | கூட, | सीतां | சீதையைப் பார்த்து, |
| काले | ஏற்ற காலத்தில், | इदं | பின்வரும் |
| संप्रस्थितः | பிரயாணம்புறப்பட்ட | वचनं | சொல்லை |
| रामः | ஸ்ரீராம், | अब्रवीत् | சொன்னார் : |

आदीप्तानिव वैदेहि सर्वतः पुष्पितान्नगान् । सैः पुष्पैः किंशुकान्पश्य मालिनः शिशिरात्यये ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------------|--------------|---|
| वैदेहि | “வைதேஹீ! | स्वैः | அதது |
| शिशिरात्यये | பனிக்காலத்தினிறுதியால் | पुष्पैः | புஷ்பங்களால் |
| सर्वतः | எல்லாப்பக்கத்திலும் | आदीप्तान् इव | கொழுந்துவிட்டெரி யும்வண்ணமாய் |
| किंशुकान् | பலாசு | मालिनः | { அழகுவாய்ந்து விளங் குகின்றவைகளாயி ருப்பதைப் |
| नगान् | மரங்களை | पश्य | பார். |
| पुष्पितान् | நன்கு புஷ்பித்திருக்க ப்பெற்றனவைகளாய் | | |

पश्य भल्लातकान्बिल्वान्नरैरनुपसेवितान् । फलपत्रैरवनतान्नूनं शक्ष्यामि जीवितुम् ॥ ७ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|-----------|----------------------|
| नरैः | “மனிதர்களால் | बिल्वान् | விளாமரங்களையும் |
| अनुपसेवितान् | தொடப்படாததாகிய | पश्य | பார். |
| भल्लातकान् | சேங்கொட்டை மரங்களையும், | नूनं | இனிமேலாக |
| फलपत्रैः | கனிகளாலுமிலை | जीवितुं | இதையே உணவாய்க் கொள்ள |
| अवनतान् | வளைந்து தொங்கும் கிளைகளையுடைய | शक्ष्यामि | நான் சம்மதிப்பேன். |

पश्य द्रोणप्रमाणानि लम्बमानानि लक्ष्मण । मधूनि मधुकारीभिः संभृतानि नगे नगे ॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------------|------------------------------|
| लक्ष्मण | “ லக்ஷ்மண ! | द्रोणप्रमाणानि | இரண்டு மரக்காலள வுள்ளவைகளாய் |
| नगे नगे | மரங்கள் தேறும், | लम्बमानानि | தொங்கிக்கொண்டிரு |
| मधुकारीभिः | தேனீக்களால் | मधूनि | தேனடைகளை [க்கும் |
| संभृतानि | கட்டப்பட்டனவாய் | पश्य | பார். |

एष क्रोशति नत्यूहस्तं शिखी प्रतिकूजति । रमणीये वनोद्देशे पुष्पसंस्तरसङ्कटे ॥ ९ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|------------|------------------|
| रमणीये | “ அழகுவாய்ந்து | नत्यूहः | நச்சுக்குருவி |
| पुष्पसंस्तर-} | மலர்கள் நெருக்கமாய் | क्रोशति | கூவுகிறது. |
| सङ्कटे } | பரப்பப்பட்டிருக்கும் | शिखी | மயில் |
| वनोद्देशे | இந்த வனப்பிரதேசத் | तं | அதற்கு |
| एषः | இதோ [தில் | प्रतिकूजति | மாறுகூவுகின்றது. |

मातङ्गयूथानुसृतं पक्षिसङ्घानुनादितम् । चित्रकूटमिमं पश्य प्रवृद्धशिखरं गिरिम् ॥ १० ॥

| | | | |
|-------------------------|---|--------------------------------|---|
| मातङ्गयूथानुसृतं | “மாணைக் கூட்டங்களால் வலிக்கப்பெற்றதும் | प्रवृद्धशिखरं | கம்பிரமாயுள்ள சிகரங் களையுடையதுமான |
| पक्षिसङ्घानु- नादितं | பறவைக்கூட்டங்க ளால் ஒலிக்கப் பெற்றதும், | इमं चित्रकूटं गिरिं पश्य | இதோவிரங்கும் சித்திரகூட மலையைப் பார். |

समभूमितले रम्ये द्रुमैर्वहुभिरावृते । पुण्ये रंस्यामहे तात चित्रकूटस्य कानने ॥ ११ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------|-----------|--|
| तात | “குழந்தாய்! | रम्ये | மனோக்ஞமாயிருக்கி றதும், |
| चित्रकूटस्य | சித்திரகூடமலையினது | पुण्ये | பரிசுத்தமாயிருக்கி றதும், |
| कानने | வனத்தில் | समभूमितले | { மேடுபள்ளமின்றி ஸ மபூமிமாயிருக்குமோ ரிடத்தில் |
| बहुभिः | பல | रंस्यामहे | நாம் தங்கிவலிப் போம். |
| द्रुमैः | மரங்களால் | | |
| आवृते | குழப்பட்டதாயிருக் கிறது, | | |

ततस्तौ पादचारेण गच्छन्तौ सह सीतया । रम्यमासेदतुः शैलं चित्रकूटं मनोरमम् ॥ १२ ॥

| | | | |
|----------|---------------------------|-----------|------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | मनोरमं | மனங்களைக் கவரும் வண்ணமாய் |
| पादचारेण | கால்நடையாய் | रम्यं | அழகுவாய்ந்து விளங் கும் |
| सीतया सह | சீதாபிராட்டியா ரோடுகூட | चित्रकूटं | சித்திரகூட |
| गच्छन्तौ | நடந்துகொண்டிருக் கும் | शैलं | மலைக்கு |
| तौ | அவ்விருவர்களும், | आसेदतुः | வந்துசேர்ந்தார்கள். |

तं तु पर्वतमासाद्य नानापक्षिगणायुतम् । बहुमूलफलं रम्यं संपन्नसरसोदकम् ॥ १३ ॥

चित्रकूटं हि संपश्यन् रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ॥ १४ ॥

| | | | |
|-----------------------|---|-------------|--|
| रामः | ஸ்ரீராம், | तं | அந்த |
| नानापक्षि- गणायुतं | { பலவகைப் பறவைக் கூட்டங்களால் நிறை யப்பெற்றதும். | चित्रकूटं | சித்திரகூட |
| बहुमूलफलं | பல கிழங்குகளையும் க னிகளையுமுடையதும், | पर्वतं | பர்வதத்தை |
| रम्यं | தேகசெளக்யத்திற் கேற்றதாய் | आसाद्य | அடைந்தி, |
| संपन्न- सरसोदकं तु | { பரிசுத்த ஜலங்களையு டைய ஜலாசயங்களு டன் விளங்குகிறது மான | संपश्यन् हि | அங்குமிங்கும்கவனித் தப்பார்க்கின்றவராகி |
| | | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரைப் பார்த்து, |
| | | अब्रवीत् | பின்வருமாறு அருளி ச்செய்தனர். |

राघवं प्रीतिसंयुक्तमिदं वचनमब्रवीत् । ज्ञातं मया रघुश्रेष्ठ त्वदागमनकारणम् ॥

अत्र वासमृषीणां च सकाशे रोचय प्रभो ॥ १९ ॥

राघवं ஸ்ரீராமரைப்பார்ந்து
பிரீதिसंयुक्तं பத்திமையை நன்கு
 விளங்கக்காட்டுகிற
इदं பின்வரும்
वचनं திருவாக்கை
अब्रवीत् திருவாய்மலர்ந்தருளி
 னார்.
रघुश्रेष्ठ “ரகுசுலதிலகனாய்
 விளங்கும்
प्रभो ஸ்ரீமந்நாராயணமூர்த்
 தியே!

त्वदागमन-) தேவரீரங்கெழுந்தரு
कारणं ளியிருப்பதின் உத்
 தேசமானது
मया என்னால்
ज्ञातं ஞானசக்தியாலறியப்
 பட்டவிஷயம்;
अत्र தீவ்விடத்தில்
ऋषीणां ரிஷி ளினிடைய
सकाशे च அருகாமையிலேயே
वासं வாஸம்செய்தலை,
रोचय தேவரீர் திருவுளம்
 பற்றியருள்வீராக.”

इति तेन समाज्ञप्तः प्रीयमाणो महारथः । तथेति प्रतिजग्राह ऋषिणोक्तं कृताञ्जलिः ॥

इति மேற்கண்டவண்ண
 மாய்,
तेन அவரால்
समाज्ञप्तः ஆக்ஞாபிக்கப்பட்டவ
 ராகிய
महारथः மஹாரதராகுமவர்,
प्रीयमाणः உள்ளம் பூரித்தவராய்

ऋषिणा மகரிஷியால்
उक्तं சொல்லப்பட்டதற்கு,
कृताञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தராய்,
 “அங்ஹமேசெய்கின்
तथा इति { றே”னென்று சொல்
 லிவிட்டு
प्रतिजग्राह ஒப்புக்கொண்டனர்.

ततोऽब्रवीन्महाबाहुर्लक्ष्मणं लक्ष्मणाग्रजः । संनिवेद्य यथान्यायमात्मानमृषये प्रभुः ॥ २१ ॥

प्रभुः பிரபுவும்
लक्ष्मणाग्रजः லக்ஷ்மணரின் தமைய
 னாரும்
महाबाहुः ஆஜா னுபாகுவுமாகும
 வர்,
ऋषये முனிவருக்கு,
आत्मानं அவருக்கு

यथान्यायं மேற்கண்டவாறு
 ஏற்றதாயிருப்பதை
संनिवेद्य அருளிச்செய்தவிட்டு
ततः அதன்பின்னர்
लक्ष्मणं லக்ஷ்மணரைப்பார்
 க்ந்து
अब्रवीत् பின்வருமாறு ஆக்ஞா
 பித்தருளினார்.

लक्ष्मणानय दारुणि दृढानि च वराणि च । कुरुष्वாவसथं सौम्य वासे मेऽभिरतं मनः ॥

सौम्य “சௌமியனே!
लक्ष्मण லக்ஷ்மண!
दृढानि च திருடமாயிருக்கிற
 வைகாணம்
वराणि च வரஸ்திராவிஷித்தாரில்
 ளாதவைகளுமான,
दारुणि மரங்கட்டைகளான

आनय செகரித்துக்கொண்டு
आवसथं பர்ணசாலையை [வா;
कुरुष्व கீகட்டுவாயாக.
वासे இங்கு வஸித்தலில்
मे எனது
मनः மனமானது
अभिरतम् நடுபட்டுவிட்டது.”

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सौमित्रिविविधान्द्रुमान् । आजहार ततश्चके पर्णशालामरिंदमः ॥२३॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------|--------------------|
| अरिन्दमः | ஜிதேந்திரியராகும் | द्रुमान् | மரங்களை, |
| सौमित्रिः | லக்ஷ்மணர், | आजहार | கொண்டுவந் துசேர்த் |
| तस्य | அவரது | | தனார். |
| तत् वचनं | அந்தவாக்கை | ततः | அவ்விடத்தில் |
| श्रुत्वा | சுரமேற்கொண்டு, | पर्णशालां | ஒர் பர்ணசாலையை |
| विविधान् | பலவகை | चके | நிர்மித்தார். |

तां निष्ठितां बद्धकटां दृष्ट्वा रामः सुदर्शनाम् । शुश्रूषमाणमेकाग्रमिदं वचनमब्रवीत् ॥२४॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-------------|---------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | दृष्ट्वा | கவனித்து, |
| तां | அதை | एकाग्रं | அசஞ்சலாபத்திமை |
| | { வைக்கோல், கீற்று, | | பூண்டு |
| बद्धकटां | { இவைகளால் முடை | शुश्रूषमाणं | திருத்தொண்டு புரியு |
| | யப்பட்டதாயும், | | மவரைப்பார்த்து |
| निष्ठितां | உறுதியாயிருக்கிற | इदं | பின்வரும் |
| | தாயும், | वचनं | ஆக்கினையை |
| सुदर्शनां | நல்ல அமைப்பை | अब्रवीत् | அருளிச்செய்தனர் : |
| | யுடையதாயும், | | |

ऐणेयं मांसमाहृत्य शालां यक्ष्यामहे वयम् । कर्तव्यं वास्तुशमनं सौमित्रे चिरजीविभिः ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|-------------|---------------|
| सौमित्रे | “சுமித்திராநந்தன! | कर्तव्यं | அவசியம் செய்ய |
| चिरजीविभिः | வெகுநேரம் வசிப்ப | | வேண்டியது. |
| | வர்களால் | वयं | நாம் |
| | { (புதிதாய்க் கட்டப்பட்ட | शालां | பர்ணசாலைக்கு |
| | ட வீட்டுக்கு கரிஹ | ऐणेयं मांसं | மான்மாம்ஸத்தை |
| | ப்பிரவேசத்திற்கு | आहृत्य | கொண்டுவந்து |
| वास्तुशमनं | { முன் செய்யப்படும் | यक्ष्यामहे | ‘வாஸ்துஹோமம்’ |
| | வைதீகக்கிரியையா | | செய்வோம் |
| | கூடிய) ‘வாஸ்துசாந்தி’ | | |

मृगं हत्वाऽऽनय क्षिप्रं लक्ष्मणेह शुभेक्षण । कर्तव्यः शास्त्रदृष्टो हि विधिर्यमनुस्मर ॥२६॥

| | | | |
|---------------|--------------------|----------|-------------------|
| शुभेक्षण | “வைதிககிருத்யங்க | कर्तव्यः | அனுஷ்டிக்கவேண்டி- |
| | ளில் பற்றுடைய | हि | ஆனபடியால் [யது. |
| लक्ष्मण | லக்ஷ்மண! | क्षिप्रं | இப்பொழுதே |
| धर्मं | சாஸ்திரநியமனத்தை | मृगं | ஒர் மாணை |
| अनुस्मर | நினைத்துப்பார். | हत्वा | கொண்டு, |
| शास्त्रदृष्टः | சாஸ்திரங்களில்கண்ட | इह | இங்கு |
| विधिः | விதியானது | आनय | கொண்டுவா.” |

भ्रातुर्वचनमाज्ञाय लक्ष्मणः परवीरहा । चकार च यथोक्तं स तं रामः पुनरब्रवीत् ॥२७॥

| | | | |
|-----------|--|----------|-------------------------------------|
| परवीरहा | { அதிக வீரம் படைக்க ப்பட்ட எதையும் கொல்லவல்ல | चकार | செய்து முடித்தனர். |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர், | सः | அந்த |
| भ्रातुः | தமையனாரின் | रामः | ஸ்ரீராமர், |
| वचनं | நியமனத்தை | पुनः | மறுபடியும் |
| आज्ञाय | கிரமேற்கொண்டு, | तं | அவரைப் பார்த்து, |
| यथोक्तं च | கட்டளைப்படியே | अब्रवीत् | பின்வருமாறு ஆக்தூ பித்தருளினார்: |

ऐणेयं श्रपयस्वैतच्छालां यक्ष्यामहे वयम् । त्वर सौम्यसुहृतोऽयं ध्रुवश्च दिवसो वयम् ॥

| | | | |
|----------|---|---------------|---|
| एतत् | “இந்த | अयं | இது |
| ऐणेयं | மான்மாம்ஸத்தை | सौम्यसुहृतः च | சுப முகூர்த்தமாகவு மிருக்கிறது. |
| श्रपयस्व | பாகம்செய். | हि | ஆனபடியால் |
| त्वर | சீக்கிரமாகட்டும். | वयं | நாம் |
| अयं | இந்த | शालां | பர்ணசாலைக்கு |
| दिवसः | தினமானது | यक्ष्यामहे | { ‘வாஸ்துஹோம’த் தையிப்பொழுதே செய்வோம்.” |
| ध्रुवः | { (யஜமானனுக்கு) நீண் ட ஆயுளை யளிக்கவ ல்லது. | | |

स लक्ष्मणः कृष्णमृगं हत्वा मेध्यं प्रतापवान् । अथ चिक्षेप सौमित्रिः समिद्धे जातवेदसि ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|-----------|-----------------------------|
| प्रतापवान् | அதிகசாமர்த்தியசாலி யும் | हत्वा | கொன்றுகொண்டு வந்திருந்த, |
| सौमित्रिः | சுமித்ரையின் திருக் குமாரருமான | कृष्णमृगं | கரியமான |
| सः | அந்த | अथ | அப்பொழுது |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | समिद्धे | கொழுந்தவிட்டே நியும் |
| मेध्यं | பலிக்கு ஏற்றதாயிருக் கிற, | जातवेदसि | அக்கினியில் |
| | | चिक्षेप | போட்டார். |

तं तु पकं समाज्ञाय निष्टुं छिन्नशोणितम् । लक्ष्मणः पुरुषव्याघ्रमथ राघवमब्रवीत् ॥२८॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|---------------|-------------------------------------|
| अथ | அதன்மேல் | पकं तु | பக்குவமாயிருப்ப |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | समाज्ञाय | கண்டு, [தாயும் |
| तं | அதை | पुरुषव्याघ्रं | புருஷோத்தமராகிய |
| निष्टुं | நன்கு காய்ச்சப்பட்ட தாயும் | राघवं | ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து |
| छिन्नशोणितं | ரத்தும் வற்றியதாயும், | अब्रवीत् | பின்வருமாறு விண் னப்பம்செய்தார். |

अयं कृष्णः समासाङ्गः शृतः कृष्णमृगो यथा । देवता देवसङ्काश यजस्व कुशलो ह्यसि ॥

देवसङ्काश “தெய்வத்திற்கொப்
பானவரே!

अयं இந்த
कृष्णमृगः கரியமான்
यथा முன்போலவே
कृष्णः சுறுப்புநிறமுடைய
தாய்,

समासाङ्गः அங்கக்குறைவற்ற
தாய்,
शृतः சமைக்கப்பட்டிருக்கி
றது.
कुशलः असि தேவரீரெல்லாமறிந்
हि ஆனபடியால் [தவர.
देवता: தேவதைகளை
यजस्व பூஜிப்பீராக.”

रामः स्नात्वा तु नियतो गुणवाञ्छप्यकोविदः । सङ्ग्रहेणाकरोत्सर्वान्मन्त्रान्सत्रावसानिकान् ॥

गुणवान् { (அதற்கு வேண்டிய)
குணங்களைப் படைக்
கப்பெற்றவரும்,
जप्यकोविदः तु { (தெய்வங்களுக்கு) ஜ
பம்செய்வதில் நிபு
ணருமாகிய
रामः ஸ்ரீராமர்,
स्नात्वा ஸ்நானம்செய்து,

नियतः பரிசுத்தராகி,
सत्रावसानिकान् ‘வாஸ்துசாந்தி’யை
நிறைவேற்றுகின்ற
सर्वान् எல்லா
मन्त्रान् மந்திரங்களையும்
संग्रहेण மிகப் பிரயத்தினத்
தோடு
अकरोत् செய்தருளினார்.

इष्ट्वा देवगणान्सर्वान्विवेशावसथं शुचिः । बभूव च मनोह्लादो रामस्यामिततेजसः ॥३३॥

शुचिः பரிசுத்தராய்
सर्वान् எல்லா
देवगणान् च தேவகணங்களையும்,
इष्ट्वा பூஜித்துவிட்டு,
आवसथं பர்ணசாலைக்குள்
विवेश நுழைந்தார்.

अमिततेजसः மஹா தேஜஸ்வியா
கும்
रामस्य ஸ்ரீராமருக்கு
मनोह्लादः மனச்சந்துஷ்டியான
து
बभूव உண்டாயிற்று.

वैश्वदेवबलिं कृत्वा रौद्रं वैष्णवमेव च । वास्तुसंशमनीयानि सङ्गलानि प्रवर्तयन् ॥ ३४ ॥

जपं च न्यायतः कृत्वा स्नात्वा नद्यां यथाविधि । पापसंशमनं रामश्चकार बलिमुत्तमम् ॥

रामः ஸ்ரீராமர்
वैश्वदेवबलिं வைச்வதேவபலி
யையும்,
रौद्रं च உருத்திரமூர்த்தியின்
பலியையும்,
वैष्णवं एव விஷ்ணுமூர்த்தியின்
பலியையும்,
कृत्वा செய்துமுடித்து,
वास्तुसंशमनीयानि வீட்டிற்குப் பிடைகளி
ல்லாமற்செய்யவல்ல
सङ्गलानि மங்களஜபங்களை

प्रवर्तयन् ஆரம்பித்தவராய்
न्यायतः முறைப்படி
जपं च ஜபத்தையும்
कृत्वा செய்துமுடித்து,
नद्यां நதியில்
यथाविधि சாஸ்திரமுறைப்படி
स्नात्वा ஸ்நானம் செய்து,
पापसंशमनं பீடாபரிஹாரமாகிய
उत्तमं சிறந்த
बलिं பலியை
चकार செய்தருளினார்.

वेदिस्थलविधानानि चैत्यान्यायतनानि च । आश्रमस्यानुरूपानि स्थापयामास राघवः ॥

| | | | |
|-------------------------|---|------------|--------------------|
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | चैत्यानि | புறையறைகளையும், |
| आश्रमस्य | பர்ணசாலைக்கு | आयतनानि च | இளைப்பாறும் |
| अनुरूपानि | எற்றவைகளாய் | | அறைகளையும் |
| वेदिस्थल- विधानानि } | புறையெய்வதற்கேற்ற உயர்ந்த திண்ணைகளையும், | स्थापयामास | நிர்மித்தருளினார். |

वन्यैर्माल्यैः फलैर्मूलैः पक्वैर्मांसैर्यथाविधि । अद्भिर्जपैश्च वेदोक्तैर्दमैश्च ससमित्कुशैः ॥ ३७ ॥
तौ तर्पयित्वा भूतानि राघवौ सह सीतया । तदा विविशतुः शालां सुशुभां शुभलक्षणौ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------|-------------|---|
| तदा | அப்பொழுது, | मांसैः | மாம்ஸங்களாலும், |
| शुभलक्षणौ | திருக்கல்யாண குணங்களையுடைய | अद्भिः | தீர்த்தங்களாலும், |
| राघवौ | ராகுலபுத்திரர் களாகிய | ससमित्कुशैः | { தருப்பைகளால் கட்ட ப்பட்ட ஸமித்துக் களாலும், |
| तौ | அவ்விருவர்களும் | दमैः च | தர்ப்பைகளாலும் |
| सीतया | வீதாபிராட்டி யாரோடு | वेदोक्तैः | வேதோக்தங்களாகிற |
| सह | கூடவே | जपैः च | ஜபங்களாலும் |
| वन्यैः | காட்டிலுண்டாகிய | यथाविधि | முறைப்படி |
| माल्यैः | புஷ்பங்களாலும், | भूतानि | பூதங்களை |
| फलैः | கனிகளாலும், | तर्पयित्वा | திருப்திசெய்தித்து, |
| मूलैः | கிழங்குகளாலும் | सुशुभां | மிக்க அழகுவாய்ந்த விளங்கும் |
| पक्वैः | பக்குவம் செய்யப் பட்ட | शालां | பர்ணசாலைக்குள் |
| | | विविशतुः | புகுந்தார்கள். |

तां वृक्षपर्णच्छदनां मनोज्ञां यथाप्रदेशं सुकृतां निवाताम् ।

वासाय सर्वे विविशुः समेताः सभां यथा देवगणाः सुधर्मा ॥ ३९ ॥

| | | | |
|------------------|---|---------|---|
| सर्वे | எல்லோரும் | निवातां | வேண்டிய அளவு கா ற்றையுடையதுமான |
| समेताः | சேர்ந்து, | तां | அதற்குள் |
| वासाय | வஸிப்பதற்காக | देवगणाः | தேவகணங்கள் |
| वृक्षपर्णच्छदनां | { மரங்களாலும் கீற்று களாலும் மூடப்பட்ட டதும, | सुधर्मा | { (தேய்வசபையாகிய) “ஸுதர்ம” எனப் பெயர் பூண்ட |
| मनोज्ञां | மனோகரமானதும், | सभां | திருமாளிகையில் |
| यथाप्रदेशं | { எதெது எங்கெங்கிரு க்கவேண்டுமோ அங் கங்கு அதுகளைமை க்கப்பெற்றதும், | यथा | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே |
| सुकृतां | நன்கு கட்டப்பட்டிரு க்கிறதும், | विविशुः | குடிபுகுந்தார்கள். |

अनेकनानामृगपक्षिसङ्कुले विचित्रपुष्पस्तवकैर्द्रुमैर्युते ।

वनोत्तमे व्यालमृगानुनादिते तदा विजहः सुसुखं जितेन्द्रियाः ॥ ४० ॥

| | | | |
|----------------------------|--|---------------|----------------------------|
| अनेकनाना- मृगपक्षिसकुले | பல அனேகவித மிரு கங்களும் பறவைக ளும் நிறைந்ததும், | वनोत्तमे | சிறந்த வனத்தில் |
| विचित्रपुष्पस्तवकैः | விசித்திரங்களான பூங் கொத்துக்களையுடைய | तदा | அப்பொழுது |
| द्रुमैः | மரங்களால் | जितेन्द्रियाः | ஜிதேந்திரியராகுமவர் கள் |
| युते | நிறைந்ததும் | सुसुखं | மனக்குறை எள்ளள வுமின்றி |
| व्यालमृगानु- नादिते | கொடுமையுற்ற மிருக ங்கள் சப்திக்கப்பெற் றதுமாகிய | विजहः | வலித்தார்கள். |

सुरम्यमासाद्य तु चित्रकूटं नदीं च तां माल्यवतीं सुतीर्थाम् ।

ननन्द रामो मृगपक्षिजुष्टां जहौ च दुःखं पुरविप्रवासात् ॥ ४१ ॥

| | | | |
|-----------------|---|----------------|---------------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | नदीं तु | நதியையும், |
| सुरम्यं | மிக மனோக்குமாயி ருக்கும் | आसाद्य | கண்டு |
| चित्रकूटं च | சித்ரகூடத்தையும், | ननन्द | திருப்தியடைந்தார். |
| सुतीर्थी | நல்ல ஜலத்தையுடை யதும் | पुरविप्रवासात् | நகரைவிட்டுக் காடுவந் ததால் |
| मृगपक्षिजुष्टां | மிருகங்களாலும் பற வைகளாலும் குழப் பட்டதும் ஆகிய | दुःखं च | மனக்குறையென்ப தையே |
| तां माल्यवतीं | அந்த மால்யவதி | जहौ | (உள்ளத்தில்) அணுக விடவில்லை. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे षट्पञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 4638



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2283

सप्तपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தேழாவது ஸர்க்கம் ॥ ५७ ॥

सुमन्त्रस्यायोध्याप्रवेशः—சுமந்திரர் அயோத்தியில் பிரவேசிப்பது.

कथयित्वा सुदुःखार्तः सुमन्त्रेण चिरं सह । रामे दक्षिणकूलस्थे जगाम स्वगृहं गुहः ॥ १ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------------|---------------|---------------------|
| गुहः | குகர், | सुमन्त्रेण सह | சுமந்தரரோடுகூட |
| रामे | ஸ்ரீராமர் | चिरं | நெடுநேரம் |
| दक्षिणकूलस्थे | தென்கரை சேர்ந்த வளவில், | कथयित्वा | பேசியிருந்துவிட்டு, |
| सुदुःखार्तः | மிக்க துயரமடைந்த வராகி | स्वगृहं | தனதுமனைக்கு |
| | | जगाम | சென்றார். |

भरद्वाजाभिगमनं प्रयागे च सहासनम् । आ गिरेर्गमनं तेषां तत्रस्थैरभिलक्षितम् ॥ २ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-------------|------------------|
| तेषां | அவர்களுடைய | गमनं च | எழுந்தருளியதும், |
| भरद्वाजाभिगमनं | பரத்வாஜமுனிவரின் | तलस्थैः | அங்கு வாஸம்செய் |
| | தரிசனமும், | | பவர்களால் |
| प्रयागे | பிரயாகையில் | अभिलक्षितम् | அறிந்துகொள்ளப் |
| सहासनं | கூடிவவழித்ததும், | | பட்டது. |
| आ गिरेः | சித்திரகூடமலைக்கு | | |

अनुज्ञातः सुमन्त्रोऽथ योजयित्वा हयोत्तमान् । अयोध्यामेव नगरीं प्रययौ गाढदुर्मनाः ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|-----------|-----------------|
| अनुज्ञातः | திரும்பிப்போக விடை | योजयित्वा | ரத்திற் பூட்டி, |
| सुमन्त्रः | சுமந்திரர் [கொண்ட | अथ | அப்பொழுது |
| गाढदुर्मनाः | அஸஹ்யமாகிய துய | अयोध्यां | அயோத்திமா |
| | ரத்தில் மூழ்கியவராய் | नगरीं एव | நகருக்கே |
| हयोत्तमान् | சிறந்த குதிரைகளை | प्रययौ | பிரயாணமானார். |

स वनानि सुगन्धीनि सरितश्च सरांसि च । पश्यन्नतिययौ शीघ्रं ग्रामाणि नगराणि च ॥

| | | | |
|-----------|----------------|----------|-------------------|
| सः | அவர் | ग्रामाणि | கிராமங்களையும், |
| सुगन्धीनि | நறுமணம் வீசும் | नगराणि च | பட்டணங்களையும் |
| वनानि | வனங்களையும், | पश्यन् | பார்த்துக்கொண்டே, |
| सरितः च | ஆறுகளையும், | शीघ्रं | விரைவாக |
| सरांसि च | பொய்கைகளையும், | अतिययौ | கடந்தார். |

ततः सायाहसमये तृतीयेऽहनि सारथिः । अयोध्यां समनुप्राप्य निरानन्दां ददर्श ह ॥५॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-------------|-----------------|
| सारथिः | ஸாரதி (சுமந்திரர்) | अयोध्यां | அயோத்தியை |
| ततः | அவ்விடத்திலிருந்து | समनुप्राप्य | அடைந்து, |
| तृतीये | மூன்றாவது | निरानन्दां | உற்சாகமற்றிருப் |
| अहनि | தினத்தில் | | பதாய் |
| सायाहसमये | சாயுங்காலத்தில் | ददर्श ह | கவனித்தார். |

स शून्यामिव निःशब्दां दृष्ट्वा परमदुर्गताः । सुमन्त्रश्चिन्तयामास शोकवेगसमाहतः ॥ ६ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|--------------|-----------------------|
| सः | அந்த | परमदुर्गताः | மிகக் மனவேதனைப் |
| सुमन्त्रः | சுமந்திரர் | | படுகின்றவராய் |
| शून्यां इव | { ஜனவாஸமென்பதே | शोकवेगसमाहतः | சோகத்தின் கடுமை |
| | இல்லாதிருக்கின்ற | | யால் திகைத்தவராகி |
| | தைப்போன்றதாய், | | பின்வருமாறு (தனக் |
| निःशब्दां | நிச்சப்தமாயிருப்பதை | चिन्तयामास | { குள்ளேயே) சிந்திக்க |
| दृष्ट्वा | கவனித்து, | | லானார். |

अनेकनानामृगपक्षिसङ्कुले विचित्रपुष्पस्तवकैर्द्रुमैर्युते ।

वनोत्तमे व्यालमृगानुनादिते तदा विजहः सुसुखं जितेन्द्रियाः ॥ ४० ॥

| | | | |
|------------------------------|---|---------------|----------------------------|
| अनेकनाना- मृगपक्षिसङ्कुले | } பல அனேகவித மிரு கங்களும் பறவைக ளும் நிறைந்த தும், | वनोत्तमे | சிறந்த வனத்தில் |
| विचित्रपुष्पस्तवकैः | விசித்திரங்களான பூங் கொத்துக்களையுடைய | तदा | அப்பொழுது |
| द्रुमैः | மரங்களால் | जितेन्द्रियाः | ஜிதேந்திரியராகுமவர் கள் |
| युते | நிறைந்த தும் | सुसुखं | மனக்குறை எள்ளள வுமின்றி |
| व्यालमृगानु- नादिते | } கொடுமையுற்ற மிருக ங்கள் சப்திக்கப்பெற் றதுமாகிய | विजहः | வலித்தார்கள். |

सुरम्यमासाद्य तु चित्रकूटं नदीं च तां माल्यवतीं सुतीर्थाम् ।

ननन्द रामो मृगपक्षिजुष्टां जहौ च दुःखं पुरविप्रवासात् ॥ ४१ ॥

| | | | |
|-----------------|---|----------------|---------------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | नदीं तु | நதியையும், |
| सुरम्यं | மிக மனோக்குமாயி ருக்கும் | आसाद्य | கண்டு |
| चित्रकूटं च | சித்ரகூடத்தையும், | ननन्द | திருப்தியடைந்தார். |
| सुतीर्थी | நல்ல ஜலத்தையுடை யதும் | पुरविप्रवासात् | நகரைவிட்டுக் காடுவந் ததால் |
| मृगपक्षिजुष्टां | { மிருகங்களாலும் பற வைகளாலும் குழப் பட்டதும் ஆகிய | दुःखं च | மனக்குறையென்ப தையே |
| तां माल्यवतीं | அந்த மால்யவதி | जहौ | (உள்ளத்தில்) அணுக விடவில்லை. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे षट्पञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 4638



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2283

सप्तपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தேழாவது ஸர்க்கம் ॥ ५७ ॥

सुमन्त्रस्यायोध्याप्रवेशः—சுமந்திரர் அயோத்தியில் பிரவேசிப்பது.

कथयित्वा सुदुःखार्तः सुमन्त्रेण चिरं सह । रामे दक्षिणकूलस्थे जगाम स्वगृहं गुहः ॥ १ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------------|---------------|---------------------|
| गुहः | சுகர், | सुमन्त्रेण सह | சுமந்தரரோடுகூட |
| रामे | ஸ்ரீராமர் | चिरं | நெடுநேரம் |
| दक्षिणकूलस्थे | தென்கரை சேர்ந்த வளவில், | कथयित्वा | பேசியிருந்துவிட்டு, |
| सुदुःखार्तः | மிக்க துயரமடைந்த வராகி | स्वगृहं | தனதுமனைக்கு |
| | | जगाम | சென்றார். |

भरद्वाजाभिगमनं प्रयागे च सहासनम् । आ गिरेर्गमनं तेषां तत्रस्थैरभिलक्षितम् ॥ २ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-------------|------------------|
| तेषां | அவர்களுடைய | गमनं च | எழுந்தருளியதும், |
| भरद्वाजाभिगमनं | பாட்வாஜமுனிவரின் | तत्रस्थैः | அங்கு வாஸம்செய் |
| | தரிசனமும், | | பவர்களால் |
| प्रयागे | பிரயாகையில் | अभिलक्षितम् | அறிந் துகொள்ளப் |
| सहासनं | கூடிவவரித்ததும், | | பட்டது. |
| आ गिरेः | சித்திரகூடமலைக்கு | | |

अनुज्ञातः सुमन्त्रोऽथ योजयित्वा हयोत्तमान् । अयोध्यामेव नगरीं प्रययौ गाढदुर्मनाः ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|-----------|-----------------|
| अनुज्ञातः | திரும்பிப்போக விடை | योजयित्वा | ரதத்திற்கூட்டி, |
| सुमन्त्रः | சுமந்திரர் [கொண்ட | अथ | அப்பொழுது |
| गाढदुर्मनाः | அஸஹ்யமாகிய துய | अयोध्यां | அயோத்திமா |
| | ரத்தில் மூழ்கியவராய் | नगरीं एव | நகருக்கே |
| हयोत्तमान् | சிறந்த குதிரைகளை | प्रययौ | பிரயாணமானார். |

स वनानि सुगन्धीनि सरितश्च सरांसि च । पश्यन्नतिययौ शीघ्रं ग्रामाणि नगराणि च ॥

| | | | |
|-----------|----------------|----------|-------------------|
| सः | அவர் | ग्रामाणि | கிராமங்களையும், |
| सुगन्धीनि | நறுமணம் வீசும் | नगराणि च | பட்டணங்களையும் |
| वनानि | வனங்களையும், | पश्यन् | பார்த்துக்கொண்டே, |
| सरितः च | ஆறுகளையும், | शीघ्रं | விரைவாக |
| सरांसि च | பொய்கைகளையும், | अतिययौ | கடந்தார். |

ततः सायाहसमये तृतीयेऽहनि सारथिः । अयोध्यां समनुप्राप्य निरानन्दां ददर्श ह ॥५॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-------------|-----------------|
| सारथिः | ஸாரதி (சுமந்திரர்) | अयोध्यां | அயோத்தியை |
| ततः | அவ்விடத்திலிருந்து | समनुप्राप्य | அடைந்து, |
| तृतीये | மூன்றாவது | निरानन्दां | உற்சாகமற்றிருப் |
| अहनि | தினத்தில் | | பதாய் |
| सायाहसमये | சாயுங்காலத்தில் | ददर्श ह | கவனித்தார். |

स शून्यामिव निःशब्दां दृष्ट्वा परमदुर्गताः । सुमन्त्रश्चिन्तयामास शोकवेगसमाहतः ॥ ६ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|--------------|-----------------------|
| सः | அந்த | परमदुर्गताः | மிக்க மனவேதனைப் |
| सुमन्त्रः | சுமந்திரர் | | படுகின்றவராய் |
| शून्यां इव | { ஜனவாஸமென்பதே | शोकवेगसमाहतः | சோகத்தின் கடுமை |
| | இல்லாதிருக்கின்ற | | யால் திகைத்தவராகி |
| | தைப்போன்றதாய், | | பின்வருமாறு (தனக் |
| निःशब्दां | நிச்சப்தமாயிருப்பதை | चिन्तयामास | { குள்ளேயே) சிந்திக்க |
| दृष्ट्वा | கவனித்து, | | லானார். |

कच्चिन्न सगजा साश्वा सजना सजनाधिपा । रामसन्तापदुःखेन दग्धा शोकाग्निना पुरी ॥

| | | | |
|----------|---|----------------------|---|
| पुरी | “ பட்டணமானது | रामसन्ताप- दुःखेन | } ஸ்ரீராமர் படும் (காய) க்லேசத்தை நினை த்து துயரப்படுகிற தாகிய |
| सगजा | யானைகளுள் படவும், | | |
| साश्व | குதிரைகளுள் படவும், | | |
| सजना | ஜனங்களுள் படவும், | शोकाग्निना | சோகாக்னியால், |
| सजनाधिपा | சக்கிரவர்த்தியாளுள் ப டவுமாகச் சேர்ந்து, | दग्धा न | எரிந்தழிந்துபோய் விடவில்லை என நான் எண்ணுகிறேன் ” |

इति चिन्तापरः सूतो वाजिभिः शीघ्रपातिभिः । नगरद्वारमासाद्य त्वरितः प्रविवेश ह ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------|-----------|---|
| सूतः | ஸாரதி (சுமந்திரர்) | नगरद्वारं | நகரத்தின் வாயிலை |
| इति | இவ்விதமாய் | आसाद्य ह | அடைந்ததும், |
| चिन्तापरः | மனவேதனைப்படு கின்றவராய், | त्वरितः | அதிவேகமாய்ப் போகின்றவராகி துழைந்தனர். |
| शीघ्रपातिभिः | விரைவாகச் செல்லும் | प्रविवेश | |
| वाजिभिः | குதிரைகளால் | | |

सुमन्त्रमभियान्तं तं शतशोऽथ सहस्रशः । क राम इति पृच्छन्तः सूतमभ्यद्रवन्नराः ॥ ९ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------|------------|---|
| अथ | அப்பொழுது | सूतं | ஸாரதியாகிய |
| नराः | மனிதர்கள் | सुमन्त्रं | சுமந்திரரைப் |
| शतशः | நூற்றுக்கணக்காகவும் | रामः | “ ஸ்ரீராமர் [பார்த்து, எங்கே ? ” என்று |
| सहस्रशः | ஆயிரக்கணக்காகவும், | क इति | கேட்டுக்கொண்டே |
| अभियान्तं | திரும்பிவந்து கொண்டிருக்கும் | पृच्छन्तः | எதிராக ஒடி வந்தார்கள். |
| तं | அந்த | अभ्यद्रवन् | |

तेषां शशंस गङ्गायामहमापृच्छ च राघवम् । अनुज्ञातो निवृत्तोऽस्मि धार्मिकेण महात्मना ॥

| | | | |
|----------|--------------------------------|----------------|--|
| तेषां | அவர்களுக்கு | धार्मिकेण | தார்பிகராகிய |
| शशंस | பின்வருமாறு | महात्मना | மஹாத்மாவால் |
| अहं | “ நான் [அறிவித்தார்; | | |
| गङ्गायां | கங்கையில் | अनुज्ञातः | { (திரும்பிப் போய்விட) नियमनம் பெற்றவ னாய் |
| राघवं | ஸ்ரீராமரை | निवृत्तः अस्मि | திரும்பியுள்ளேன்.” |
| आपृच्छ च | தண்டம் சமர்ப்பித்து விட்டு, | | |

ते तीर्णा इति विज्ञाय वाष्पपूर्णमुखा जनाः । अहो विगिति निश्वस्य हा रामेति च चुक्रुशुः ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------------------|-----------|-------------------|
| ते | அவர்கள் | निश्वस्य | பெருமூச்செறிந்து, |
| तीर्णाः इति | அக்கரையெழுந்தரு ளியிட்டார்களென | अहो | “ஐயோ ! |
| विज्ञाय | அறிந்துகொண்டு, | धिक् | என்ன கஷ்டம் ! ” |
| जनाः | ஜனங்கள் | इति | என்றும் |
| वाष्पपूर्णमुखाः | கண்ணீர் நிறைந்த முகமுடையவர்களாய் | हा राम | “ஹா ! ராமா ! ” |
| | | इति च | என்றும் |
| | | चुक्रुशुः | கதறினார்கள். |

शुश्राव च वचस्तेषां वृन्दं वृन्दं च तिष्ठताम् । हताः स खलु ये नेह पश्याम इति राघवम् ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|-----------|-------------------------------------|
| वृन्दं वृन्दं | திரள் திரளாய் | इह | இப்பொழுது |
| तिष्ठतां | நின்றுகொண்டிருக்கிற | राघवं | ஸ்ரீராமரை |
| तेषां | அவர்களுடைய | पश्यामः न | கட்புலனாய் பார்க்காத வர்களானோமோ, |
| इति | பின்வரும் | च | ஆகையால் |
| वचः च | வார்த்தையை | खलु | நிச்சயமாய் |
| शुश्राव | கேட்டார். | हताः स | நல்வினையொழிந்து |
| ये | “எந்த நாம் | | கேட்டோம். |

दानयज्ञविवाहेषु समाजेषु महत्सु च । न द्रक्ष्यामः पुनर्जातु धार्मिकं राममन्तरा ॥ १३ ॥

| | | | |
|------------------------|---|---------------|--------------------------|
| दानयज्ञ- विवाहेषु } | “தானங்களிலும் யக் ருங்களிலும் விவா ஹங்களிலும் | अन्तरा | சடாகக்கூடிய |
| महत्सु | மஹான்கள் கூடிய | धार्मिकं | தார்மிகனை [மற்றொரு |
| समाजेषु च | சபைகளிலும் | पुनः जातु | இனியொருபொழு தும் |
| रामं | ஸ்ரீராமருக்கு | द्रक्ष्यामः न | நாம் காணப்போவ தில்லை. |

किं समर्थं जनस्यास्य किं प्रियं किं सुखावहम् । इति रामेण नगरं पित्रेव परिपालितम् ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------------|---------|---------------------------|
| रामेण | “ஸ்ரீராமரால் | जनस्य | ஜனஸமுஹத்திற்கு |
| नगरं | நகரானது | समर्थं | சடாகிய பிரயோஜன மாகிறது |
| पित्रा | பெற்ற தந்தையால் | किं | என்னவிருக்கிறது? |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே | प्रियं | மனதிற்குகத்தது |
| परिपालितं | பரிபாலிக்கப்பட்டது. | किं | என்னவிருக்கிறது? |
| इति | என்கிறபடியால் | सुखावहं | திருப்தியளிக்கவல் எது |
| अस्य | இந்த ராமரைப் பிரிந் திருக்கிற | किम् | என்னவிருக்கிறது?” |

वातायनगतानां च स्त्रीणामन्वन्तरापणम् । रामशोकाभितप्तानां शुश्राव परिदेवनम् ॥ १५ ॥

| | | | |
|--------------------------|---|----------------|---|
| वातायन- गतानां } | திருமாளிகைகளின் ஜன்னல்களில் நின்று கொண்டிருந்தவர் களும், | स्त्रीणां | வனிதைபர்களுடைய யவும் |
| रामशोकाभि- तप्तानां } | ஸ்ரீராமருக்காகப்படும் ரோகத்தால் பரிதபி த்துக்கொண்டிருந்த வர்களுமான | अन्वन्तरापणं च | { கடைத்தெருவெல் லாம் நடைபெற்றது மாகிய |
| | | परिदेवनं | புலம்பலை |
| | | शुश्राव | கேட்டார். |

स राजमार्गमध्येन सुमन्त्रः पिहिताननः । यत्र राजा दशरथस्तदेवोपययौ गृहम् ॥ १६ ॥

| | | | |
|----------------|---|---------|--------------------|
| सः | அந்த | दशरथः | தசரத |
| सुमन्त्रः | சுமந்திரர் | राजा | சக்கிரவர்த்தியார் |
| पिहिताननः | { முகமெல்லாம் கண்ணீர் ரால் மூடப்பெற்ற வராய் | यत्र | எவ்விடத்திலோ |
| राजमार्गमध्येन | ராஜவீதிவழியாகவே | तत् | அந்த |
| | | गृहं एव | திருமானிகையை |
| | | उपययौ | சென்றார் [நோக்கியே |

सोऽवतीर्य रथाच्छीघ्रं राजवेश्म प्रविश्य च । कक्ष्याः सप्तातिचक्राप महाजनसमाकुलाः ॥

| | | | |
|----------|---|---------------|---------------------------------------|
| सः | அவர் | महाजनसमाकुलाः | பட்டணத்து ஜனங்க ளால் நிரம்பப்பெற்ற |
| रथात् | தேரினின்றி | सप्त | ஏழு |
| अवतीर्य | இழிந்து, | कक्ष्याः च | கட்டுக்களையும் |
| राजवेश्म | சக்கிரவர்த்தியாரின் திருமானிகைக்குள் | शीघ्रं | விரைவாக |
| प्रविश्य | புகுந்து, | अतिचक्राम | கடந்துசென்றார். |

हम्यैर्विमानैः प्रासादैरवेक्ष्याथ समागतम् । हाहाकारकृता नार्यो रामादर्शनकर्षिताः ॥ १८ ॥

| | | | |
|-----------|---|--------------------------|--|
| नार्यः | ஸ்திரீகள் | समागतं | திரும்பிவந்த அவரை |
| हम्यैः | { அரண்மனையைப் போ ன்ற திருமானிகை யில் நின்றும் | अवेक्ष्य | பார்த்து, |
| विमानैः | ஏழுடுக்குள்ள மாளி கைகளில் நின்றும் | रामादर्शन- कर्षिताः } | ராமரைக்காணுமை யால் துயருற்றவர்க ளாகி |
| प्रासादैः | அரண்மனைகளில் நின்றும் | अथ | அப்பொழுது |
| | | हाहाकारकृताः | 'ஐயோ! ஐயோ' என கூவினார்கள். |

आयतैर्विमलैर्नेत्रैरश्रुवेगपरिप्लुतैः । अन्योन्यमभिवीक्षन्तेऽव्यक्तमार्ततराः स्त्रियः ॥ १९ ॥

| | | | |
|--------------------|--|--------------|---|
| स्त्रियः | ஸ்திரீகள் | विमलैः | { நேத்திரபடலத்தால் மூடப்பட்டவை போன்றனவாய் |
| आर्ततराः | மிகத் துயருற்றவர்க ளாய் | आयतैः | திறந்து பார்க்க முடி யாதவைகளாய் |
| अश्रुवेगपरिप्लुतैः | { கண்ணீரின் அதிசயத் தால் முற்றிலும் கல ங்கிய | अन्योन्यं | ஒருவரையொருவர், |
| नेत्रैः | கண்களால் | अव्यक्तं | அகோசரமாய் |
| | | अभिवीक्षन्ते | பார்த்தார்கள். |

ततो दशरथस्त्रीणां प्रासादेभ्यस्ततस्ततः । रामशोकाभितप्तानां मन्दं शुश्राव जल्पितम् ॥

| | | | |
|--------------------------|--|---------------|--|
| ततः | அப்பொழுது | दशरथस्त्रीणां | தசரதமனைவிகளு |
| ततस्ततः | அந்தந்த | मन्दं | துக்ககரமான [டைய |
| प्रासादेभ्यः | அரண்மனைகளிலி ருந்து | जल्पितं | { பின்வரும் ஒருவரோ டொருவர் பேசும் மொழியை |
| रामशोकाभि- तप्तानां } | ஸ்ரீராமவிஷயமாய் சோகத்தால் தமிழ்க்கும் | शुश्राव | கேட்டார். |

सह रामेण निर्यातो विना राममिहागतः । सूतः किं नाम कौसल्यां शोचन्तीं प्रतिवक्ष्यति ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|---------------|-----------------------------|
| सूतः | சாரதி (சுமந்திரர்) | शोचन्तीं | துக்கித் துக்கொண்டிருக்கும் |
| रामेण सह | ஸ்ரீராமரோடுகூட | कौसल्यां | கோஸலாதேவியாருக்கு, |
| निर्यातः | வெளிக்கொம்பி, | किं नाम | என்னதான் |
| इह | இப்பொழுது | प्रतिवक्ष्यति | பதிலுரைசெய்வார்? |
| रामं विना | ஸ்ரீராமரின்றி | | |
| आगतः | வந்தவர், | | |

यथा च मन्ये दुर्जीवमेवं न सुकरं ध्रुवम् । आच्छिद्य पुत्रे निर्याते कौसल्या यत्र जीवति ॥

| | | | |
|----------|---------------------|----------|---------------------------------|
| कौसल्या | “கோஸலாதேவியார் | जीवति | பிழைத்திருக்கிறாள். |
| यत्र | யாதொருகாரணத் | यथा च | இங்ஙனமிருக்கலால் |
| पुत्रे | திருக்குமாரன் [தால் | दुर्जीवं | பாழுமுயிரானது |
| निर्याते | வெளிப்போன பின் | ध्रुवं | மாற்றவியலாதது. |
| | னரும், | सुकरं न | சுலபமாய் ஒழிக்க வல்லதன்று என்று |
| आच्छिद्य | நினையாது, | मन्ये | நானெண்ணுகிறேன்.” |
| एवं | இப்படியாகியும், | | |

सत्यरूपं तु तद्वाक्यं राजस्त्रीणां निशामयन् । प्रदीप्त इव शोकेन विवेश सहसा गृहम् ॥

| | | | |
|--------------|--|--------------|---|
| राजस्त्रीणां | சக்கிரவர்த்தியாரின் மனைவிகளுடைய | शोकेन | சோகத்தால் |
| सत्यरूपं | { உள்ளங்களிலிருப்பதை நன்குவிளங்கக் காட்டுகிற | प्रदीप्तः इव | { (அக்கினியால்) தவறிக் கப்படுகின்றவர்போலிருந்த அவர் |
| तत् वाक्यं | அம்மொழியை | सहसा | சுஷ்டத்துடன் |
| निशामयन् तु | கேட்டுக்கொண்டே | गृहं | திருமாளிகைக்குள் |
| | | विवेश | துழைந்தார். |

स प्रविश्याष्टमीं कक्ष्यां राजानं दीनमातुरम् । पुत्रशोकपरिचूनमपश्यत्पाण्डुरे गृहे ॥ २४ ॥

| | | | |
|----------|----------------------------|-----------------|--|
| सः | அவர் | आतुरं | மனக்கவலையுற்றவராய், |
| पाण्डुरे | வெண்மை நிறமுற்று விளங்கும் | दीनं | வருத்தப்பட்டிக்கொண்டிருப்பவராய், |
| गृहे | திருமாளிகையில் | पुत्रशोकपरिचूनं | { புத்திரசோகத்தால் வாட்டமடைந்திருப்பவராய், |
| अष्टमीं | எட்டாவது | अपश्यत् | கண்டார். |
| कक्ष्यां | கட்டை | | |
| प्रविश्य | அடைந்து, | | |
| राजानं | சக்கிரவர்த்தியாரை | | |

अभिगम्य तमासीनं नरेन्द्रमभिवाद्य च । सुमन्त्रो रामवचनं यथोक्तं प्रत्यवेदयत् ॥ २५ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|--------------|----------------------|
| सुमन्त्रः | சுமந்திரர், | अभिवाद्य | தண்டம் சமர்ப்பித்து, |
| आसीनं | வீற்றிருந்த | रामवचनं | ஸ்ரீராமருடைய சொல்லை |
| तं | அந்த | यथोक्तं | சொல்லியவண்ணமே |
| नरेन्द्रं | சக்கிரவர்த்தியாரை | प्रत्यवेदयत् | விண்ணப்பம்செய்தார். |
| अभिगम्य च | அணுகி, | | |

स तूष्णीमेव तच्छ्रुत्वा राजा विभ्रान्तचेतनः । मूर्च्छितो न्यपतद्भूमौ रामशोकाभिपीडितः॥

| | | | |
|----------------|-------------------------|----------------------|--|
| सः | அந்த | रामशोकाभि- पीडितः | } ஸ்ரீராமரை நினைத்து சோகத்தினால் முன் னிலுமதிகம் பிடிக்க ப்பட்டவராய், மூர்ச்சையடைந்து பூமியில் வீழ்ந்தனர். |
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | | |
| तत् | அதற்கு | | |
| तूष्णी एव | மௌனமாயிருந்து கொண்டே | मूर्च्छितः | |
| श्रुत्वा | செவ்சாய்த்து, | भूमौ | |
| विभ्रान्तचेतनः | மனந்தளர்ந்தவராகி | न्यपतत् | |

ततोऽन्तःपुरमाविद्धं मूर्च्छिते पृथिवीपतौ । उद्धृत्य बाहू चुक्रोश नृपतौ पतिते क्षितौ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|-----------|--------------------|
| ततः | அப்பொழுது | अन्तःपुरं | அந்தப்புரவாசிகள் |
| पृथिवीपतौ | பூபாலராகிய | बाहू | கைகளை |
| नृपतौ | சக்கிரவர்த்தியார், | उद्धृत्य | தூக்கிக்கொண்டு, |
| मूर्च्छिते | மூர்ச்சையடைந்து | आविद्धं | நெஞ்சு பிளக்குமாறு |
| क्षितौ | பூமியில் | चुक्रोश | கூக்குரலிட்டனர். |
| पतिते | வீழ்ந்தவளவில் | | |

सुमित्रया तु सहिता कौसल्या पतितं पतिम् । उत्थापयामास तदा वचनं चेदमब्रवीत् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------|-------------|----------------------------------|
| कौसल्या | கோஸலாதேவியார், | उत्थापयामास | தூக்கியெடுத்துட்கா ரவைத்தனர். |
| सुमित्रया | சுமித்திராதேவியா | तदा | அப்பொழுது |
| सहिता | கூடியவளாய் [ரோடு] | इदं | பின்வரும் |
| पतितं तु | பூமியில் வீழ்ந்து கிடந்த | वचनं च | வார்த்தையையும் |
| पतिं | கணவனை | अब्रवीत् | சொன்னாள் : |

इमं तस्य महाभाग दूतं दुष्करकारिणः । वनवासादनुप्राप्तं कस्मान्न प्रतिभाषसे ॥ २९ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------|--------------|---------------------|
| महाभाग | “ புண்யாத்மாவே ! | अनुप्राप्तं | இங்கு வந்திருக்கும் |
| दुष्करकारिणः | செய்யவரிய செயலைப் | इमं | இவரை |
| तस्य | அவனுடைய [புரியும், | कस्मात् | ஏன் |
| वनवासात् | வனவாஸத்தினின்றும் | प्रतिभाषसे न | பார்த்துப் பேசாமலி |
| दूतं | செய்திகொண்டுவந்த வராய், | | ருக்கின்றீர் ? |

अद्येममनयं कृत्वा व्यपत्रपसि राघव । उत्तिष्ठ सुकृतं तेऽस्तु शोके न स्यात्सहायता ॥

| | | | |
|--------|--|--------------|--|
| राघव | { “ ராகுலத்தில் பிறந் தவரே ! (தசரதசக் கிரவர்க்கதியாரே !) | व्यपत्रपसि | முகத்தைத்திருப்பிக் கொண்டிருக்கிறீர். |
| अद्य | இப்பொழுது | उत्तिष्ठ | தெளிவுறும். |
| इमं | இதை | ते | தேவரீருக்கு |
| अनयं | தூர்ப்பாக்கியமாய் | सुकृतं अस्तु | நல்லதாகவிருக்கட்ட |
| कृत्वा | எண்ணி, | शोके | கஷ்டத்தில் [ஓம். |
| | | सहायता | உதவிபுரிதலென்பது |
| | | स्यात् न | உண்டாவதரிது. |

देव यस्या भयाद्रापं नानुपृच्छसि सारथिम् । नेह तिष्ठति कैकेयी विस्रब्धं प्रतिभाष्यताम् ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------|----------------|----------------------|
| देव | “நாதரே ! | कैकेयी | (அந்த) கைகேயி |
| यस्या: | எவளிடத்திலிருந்து | इह | இவ்விடத்தில் |
| भयात् | பயத்தால் | तिष्ठति न | இல்லை. |
| सारथिं | சாரதியை | विस्रब्धं | சங்கையின் நி |
| रामं | ராமனைப்பற்றி, | प्रतिभाष्यताम् | விசாரிக்கப்பட்டும் ” |
| अनुपृच्छसि न | விசாரியாமலிருக்கின் றீரோ | | |

सा तथोक्त्वा महाराजं कौसल्या शोकलालसा । धरण्यां निपपाताशु बाष्पविप्लुतभाषिणी ॥

| | | | |
|---------------------------|---|---------|-----------------------|
| सा | அந்த, | कौसल्या | கோஸலாதேவியார், |
| शोकलालसा | { சோகத்தால் பரிதபித் துக்கொண்டிருந்த வளும் | महाराज | சக்கிரவர்த்தியாருக்கு |
| बाष्पविप्लुत- भाषिणी } | { கண்ணீரைப்பெருக விட்டுக்கொண்டுதழு தழுக்க பேசியவளு மாகிய | तथा | இவ்வாறு |
| | | उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு, |
| | | धरण्यां | பூமியில் |
| | | आशु | திடீரென |
| | | निपपात | விழுந்துவிட்டனள்- |

एवं विलपतीं दृष्ट्वा कौसल्यां पतितां भुवि । पतिं चावेक्ष्य ताः सर्वाः सुस्वरं रुरुदुः स्त्रियः ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|----------|--------------------|
| ताः स्त्रियः | அந்த மனைவிமார்கள், | विलपतीं | சொல்லிக்கொண்டு |
| सर्वाः | எல்லோரும் | भुवि | தரையில் |
| पतिं च | கணவரையும் | पतितां | விழுந்துவிட்டவளாய் |
| अवेक्ष्य | பார்த்து | दृष्ट्वा | கவனித்து, |
| कौसल्यां | கோஸலாதேவியாரை | सुस्वरं | ஒலமிட்டுக்கூவி |
| एवं | இப்படியாய் | रुरुदुः | அழுதார்கள். |

ततस्तमन्तःपुरनादमुत्थितं समीक्ष्य वृद्धास्तरुणाश्च मानवाः ।

स्त्रियश्च सर्वा रुरुदुः समन्ततः पुरं तदाऽऽसीत्पुनरेव विह्वलम् ॥ ३४ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------------|----------|-------------------|
| ततः | அப்பொழுது | स्त्रियः | பெண்கள் |
| उत्थितं | கிளம்பிய | सर्वाः च | எல்லோருமாக |
| तं | அந்த | रुरुदुः | அழுதார்கள். |
| अन्तःपुरनादं | அந்தப்புரத்திலேந் பட்ட கூக்குரலை | तदा | அப்பொழுது |
| समीक्ष्य | கவனித்து, | पुरं | நகரமானது |
| वृद्धाः | வயோதிகர்களும் | समन्ततः | முற்றிலும் |
| तरुणाः च | பாலர்களுமான | पुनः एव | முனவிலும்திகமாய், |
| मानवाः | மனிதர்களும், | विह्वलं | தயருற்றகாய் |
| | | आसीत् | ஆயிற்று. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे सप्तपञ्चाशः सर्गः ॥



अष्टपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தேட்டாவது ஸர்க்கம் || ௫௮ ||

श्रीरामसन्देशकथनम्—ஸ்ரீராமரது ஸந்தேசத்தைச் சொல்வது.

प्रत्याश्वस्तो यदा राजा मोहात्प्रत्यागतः पुनः । अथाजुहाव तं सूतं रामवृत्तान्तकारणात् ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------|--------------------------|---|
| ராஜா | சக்கிரவர்த்தியார் | அथ | அப்பொழுது |
| प्रत्याश्वस्तः | உபசரிக்கப்பெற்றவராய், | रामवृत्तान्त- कारणात् | ஸ்ரீராமரது தற்கால சங்கதியை அறிய எண்ணங்கொண்ட தால் |
| मोहात् | மூர்ச்சையினின்றும் | | |
| पुनः | மீண்டும் | तं | அந்த |
| यदा | எப்பொழுது | सूतं | சாரதியை |
| प्रत्यागतः | தெளிந்தெழுந்தன ரோ | आजुहाव | கூப்பிட்டார். |

अथ सूतो महाराजं कृताञ्जलिरुपस्थितः । राममेवानुशोचन्तं दुःखशोकसमन्वितम् ॥२॥
वृद्धं परमसन्तप्तं नवग्रहमिव द्विपम् । विनिश्चसन्तं ध्यायन्तमस्वस्थमिव कुञ्जरम् ॥ ३ ॥

| | | | |
|------------------------|---|--------------|------------------------------------|
| अथ | அப்பொழுது | नवग्रहं | புதிதாய் பிடிக்கப் பட்ட |
| सूतः | ஸரதி (ஸுமந்திரர்) | द्विपं इव | யானை போலவும் |
| रामं एव | ஸ்ரீராமரையே | अस्वस्थं | பிணிகொண்ட |
| ध्यायन्तं | உன்னியுன்னி நினைக்கின்றவராய், | कुञ्जरं इव | யானை போலவும், |
| अनुशोचन्तं | பரிதபிக்கின்றவராய், | विनिश्चसन्तं | பெருமூச்செறிந்து கொண்டிருக்கும் |
| दुःखशोक- समन्वितं } | கஷ்டத்தால் மனம் நொந்துகிடக்கின்ற வராய், | महाराजं | சக்கிரவர்த்தியாரிடம் |
| वृद्धं | வயதுமுதிர்ந்தவராய், | कृताञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராய் |
| परमसन्तप्तं | மிக்க வாட்டமடைந்தவராய், | उपस्थितः | வந்துகாத்துநின்றனர். |

राजा तु रजसा धूतं ध्वस्ताङ्गं समुपस्थितम् । अशुपूर्णमुखं दीनमुवाच परमार्तवत् ॥४॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|---------------|---|
| ராஜா | சக்கிரவர்த்தியார் | अशुपूर्णमुखं | கண்ணீர் நிறைந்த முகமுடையவராய் |
| रजसा | புழுதியால் | समुपस्थितं तु | { எதிரில் வந்து நிற்பவ ருமான அவரைப் பார்த்து, |
| ध्वस्ताङ्गं | படிந்த சரீரமுடைய வராய், | परमार्तवत् | { மனக்கொதிப்பை நன் குவிளங்கச்செய்யும் பின்வரும் சொல்லை சொன்னார். |
| धूतं | தன்னுடையே கருதாதவராய், | उवाच | |
| दीनं | மிக்க துயருற்றவராய் | | |

क नु वत्स्यति धर्मात्मा वृक्षमूलमुपाश्रितः । सोऽत्यन्तसुखितः सूत किमशिष्यति राघवः॥

सूत "சாரதியே!
 धर्मात्मा தர்மா, க்மாவாகுமவன்
 वृक्षमूलं மரத்தினடியை
 उपाश्रितः அடைந்து,
 क नु எங்கு

वत्स्यति வலிக்கிறான் ?
 अत्यन्तसुखितः மிக்க சுகத்திலிருந்த
 सः राघवः அந்த ராமன்
 किं எதை
 अशिष्यति உண்கிறான் ?

दुःखस्यानुचितो दुःखं सुमन्त्र शयनोचितः । भूमिपालात्मजो भूमौ शेते कथमनाथवत् ॥

सुमन्त्र "சுமந்திரரே!
 दुःखस्य துக்கானுபவத்திற்கு
 अनुचितः தகாதவனும்,
 शयनोचितः நல்ல படுக்கைகளுக்கேற்றவனும்,

अनाथवत् அனாதன்போல்
 भूमौ தரையில்
 दुःखं கஷ்டமாய்

भूमिपालात्मजः { சக்கிரவர்த்திக்குப்
 புத்திரனும்ப் பிறந்த
 वनुमान अवन्

कथं எங்ஙனம்
 शेते உறங்குவான் ?

यं यान्तमनुयान्ति स्म पदातिरथकुञ्जराः । स वत्स्यति कथं रामो विजनं वनमाश्रितः ॥

यान्तं "வெளியில்புறப்படும்
 यं எவனை
 पदातिरथकुञ्जराः காலாட்களும், தேர்
 களும், யானைகளும்
 अनुयान्ति स्म பின்பற்றிச்சென்ற
 सः அந்த [னவோ,

रामः ராமன்
 विजनं மனிதசஞ்சாரமற்ற
 वनं காட்டை
 आश्रितः அடைந்தவனாய்,
 कथं எப்படி
 वत्स्यति வலிப்பான் ?

व्यालैर्मृगैराचरितं कृष्णसर्पनिषेवितम् । कथं कुमारौ वैदेह्या सार्धं वनमुपस्थितौ ॥ ८ ॥

व्यालैः "துஷ்ட
 मृगैः மிருகங்களால்
 आचरितं சஞ்சரிக்கப்பெற்ற

वनं வனத்தை
 कुमारौ குழந்தைகளிருவர்
 களும்

कृष्णसर्प- } கொடியவிஷமுள்ள
 निषेवितं } பாம்புகளால்சஞ்சரி
 க்கப்பெற்றதுமாகிய

वैदेह्या सार्धं வைதேஹியோடுகூட
 कथं எவ்விதமாக
 उपस्थितौ அடைந்தார்கள் ?

सुकुमार्या तपस्विन्या सुमन्त्र सह सीतया । राजपुत्रौ कथं पादैरवर्ह्य रथादौ ॥ ९ ॥

सुमन्त्र "ஸுமந்திரனே!
 राजपुत्रौ அரசகுமாரர்களிருவரும்,

सीतया सह வீதையோடுகூட
 रथात् ரதத்தினின்றும்

सुकुमार्या { சுகுமாரமான திருமே
 निषेवितं } னிபடைக்கப்பெற்ற
 வளும்
 तपस्विन्या பரிதபிக்கத்தக்கவளு
 மான,

अवर्ह्य இறங்கி,
 कथं எப்படி
 पादैः காலால் நடந்து
 गतौ சென்றார்கள் ?

सिद्धार्थः खलु सूत त्वं येन दृष्टौ ममात्मजौ । वनान्तं प्रविशन्तौ तावश्विनाविव मन्दरम् ॥

सूत "साराथीये ! सुमन्तिर !
अश्विनौ इव अश्विनी தேவதைகள்
போன்ற

मम எனது,
आत्मजौ குழந்தைகள்
तौ அவ்விருவர்களும்
मन्दरं அடர்ந்த

वनान्तं வனத்தில்
प्रविशन्तौ நுழைகின்றவர்களாய்
दृष्टौ உம்மால் நேரில்
பார்க்கப்பட்டார்கள்.

येन இக்காரணத்தால்
खलु நீரொருவரே
सिद्धार्थः கொடுத்தவைத்தவர்.

किमुवाच वचो रामः किमुवाच च लक्ष्मणः । सुमन्त्र वनमासाद्य किमुवाच च मैथिली ॥

सुमन्त्र "सुमन्तिराने !
वचं வனத்தை
आसाद्य அடைந்து,
रामः ராமன்
किं वचः என்ன வார்த்தையை

उवाच சொல்லியனுப்பினான்?
लक्ष्मणः च லக்ஷ்மணன் தான்
किं उवाच என்ன சொன்னான் ?
मैथिली च வீதைதான்
किं उवाच என்ன சொன்னான் ?

आसितं शयितं भुक्तं सूत रामस्य कीर्तय । जीविष्याम्यहमेतेन ययातिरिव साधुषु ॥

सूत "साराथीये !
रामस्य ராமனுடைய
आसितं வலிக்குமிடத்தைப்
பற்றியும்
शयितं உறங்குமிடத்தைப்
பற்றியும்
भुक्तं காலங்கழிக்கும்வகை
யைப்பற்றியும்

कीर्तय விவரமாய்ச்சொல்லும்;
एतेन இதனால்
अहं நான்
ययातिः யயாதிமன்னர் [தில்
साधुषु புண்யாத்மாக்களிடத்-
इव எவ்வண்ணமோ
अव्वண்ணமே
जीविष्यामि உய்வேன்."

इति सूतो नरेन्द्रेण चोदितः सज्जमानया । उवाच वाचा राजानं स बाष्पपरिरब्धया ॥

इति இவ்வண்ணமாய்
नरेन्द्रेण சக்கிரவர்த்தியாரால்
चोदितः ஆக்ஞாபிக்கப்பட்ட
सः அந்த
सूतः ஸாரதி, (ஸுமந்திரர்)
राजानं சக்கிரவர்த்தியாரைப்
பார்த்து

सज्जमानया { வெளியில் தெரிவிப்ப
தற்கு உள்ளத்தில் சித்
தமாயிருக்கிறதும்
बाष्पपरिरब्धया கண்ணீரால் தடைப்ப
ட்டுவருகிறதமாகிய
वाचा சொற்கொண்டு
उवाच பின்வருமாறு பதிலு
ரைத்தார்.

अब्रवीन्मां महाराज धर्ममेवानुपालयन् । अञ्जलिं राघवः कृत्वा शिरसाऽभिप्रणम्य च ॥

महाराज "சக்கிரவர்த்தியாரே !
राघवः ஸ்ரீராமர்,
धर्म एव தர்மமொன்றையே
अनुपालयन् சர்வமுமாய்க்கொண்
டவராய்

शिरसा முடிதாழ்த்தி
अभिप्रणम्य च நமஸ்கரித்து,
मां என்னைநோக்கி,
अब्रवीत् பின்வருமாறு சொன்

अञ्जलिं कृत्वा தேவரீரை தியானித்
து அஞ்சலிசெய்து,

னார்.

सूत मद्रचनात्तस्य देवस्य विदितात्मनः । शिरसा वन्दनीयस्य वन्द्यौ पादौ पुनः पुनः ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-----------|--------------------|
| सूत | “சாரதியே! | मद्रचनात् | எனது விண்ணப்ப |
| तस्य | அந்த | | மாய், |
| विदितात्मनः | புகழ்படைத்த | पुनः पुनः | மீண்டும் மீண்டும் |
| वन्दनीयस्य | பூஜார்ஹராகிய | शिरसा | தலையால் |
| देवस्य | சக்கிரவர்த்தியாரது | वन्द्यौ | நமஸ்கரிக்கத்தக்கவை |
| पादौ | திருவடிகள் | | கள். |

सर्वमन्तःपुरं वाच्यं सूत मद्रचनाच्चया । आरोग्यमविशेषेण यथार्हमभिवादनम् ॥ १६ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|----------|-------------------|
| सूत | “சாரதியே! | अविशेषेण | வித்தியாசமின்றி |
| मद्रचनात् | எனது விண்ணப்ப | यथाहं | முறைப்படி |
| | மாய், | अभिवादनं | நமஸ்காரத்தையும், |
| अन्तःपुरं | அந்தப்புரத்திலிருக் | आरोग्यं | ஆரோக்யமாயிருப் |
| | கும் | त्वया | உம்மால் [பதையும், |
| सर्वं | எல்லோரிடத்திலும், | वाच्यम् | சொல்லத்தக்கது. |

माता च मम कौसल्या कुशलं चाभिवादनम् । अप्रमादं च वक्तव्या ब्रूयाश्चैनामिदं वचः ॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------|-------------------|
| मम | “எனது | एनां च | இவளிடத்திலமட்டும் |
| माता | தாயாகிய | इदं | பின்வரும் |
| कौसल्या | கோஸலாதேவியார் | वचः च | விண்ணப்பத்தையும் |
| कुशलं च | சேஷமத்தையும் | अप्रमादं | தவறாமல் |
| अभिवादनं च | நமஸ்காரத்தையும் | ब्रूयाः | சொல்வீராக. |
| वक्तव्या | கூறத்தக்கவள். | | |

धर्मनित्या यथाकालमग्न्यगारपरा भव । देवि देवस्य पादौ च देववत्परिपालय ॥ १८ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|------------|------------------|
| देवि | “தாயே! | धर्मनित्या | தம்த்திலுக்கமுடை |
| यथाकालं | விதிக்கப்பட்ட காலங் | भव | இரும். [யவளாய், |
| | களில், | देवस्य | திருத்தந்தையாரு |
| | ஹோமாக்கினிவைக்க | | டைய |
| अग्न्यगारपरा | ப்பட்டிருக்கும் அ | पादौ च | திருவடிகளிரண்டை |
| | றையில் கவனமுள் | देववत् | கடவுளென [யும், |
| | ளவளாய், | परिपालय | ஆராதிப்பீராக. |

अभिमानं च मानं च त्यक्त्वा वर्तस्व मातृषु । अनु राजानमार्यां च कैकेयीमम्ब कारय ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------|-----------------------|
| अम्ब | “தாயே! | वर्तस्व | சகடே காலங்கழித்து |
| मातृषु | மற்ற தாய்மார்கள் | | வருவீராக. |
| | விஷயத்தில் | आर्यां | உத்தமியாகிய |
| मानं च | காய்ச்சலையும், | कैकेयीं च | கைகேயியம்மானையும், |
| अभिमानं च | மித்யா நான்கையும் | राजानं | சக்கிரவர்த்தியாருக்கு |
| त्यक्त्वा | ஒழித்துவிட்டு, | अनु कारय | அனுசரணையாய் நடந் |
| | | | துகொள்ளச்செய்வீ |
| | | | ராக. |

कुमारे भरते वृत्तिर्वर्तितव्या च राजवत् । अर्थज्येष्ठा हि राजानो राजधर्ममनुस्मर ॥२०॥

| | | | |
|----------|---------------|---------------|---------------------|
| कुमारे | “ ‘குமாரனாகிய | वर्तितव्या | கைக்கொள்ளத்தக்க |
| भरते | பரதனிடத்தில் | हि | ஏனேனில் [து. |
| वृत्तिः | நடந்துகொள்ளுத | राजानः | அரசர்கள் |
| | லானது | अर्थज्येष्ठाः | எல்லாவிஷயங்களிலும் |
| | | | பெரியவர் என்கிற |
| राजवत् च | அரசரிடத்தில் | राजधर्म | அரசநீதியை |
| | போலவே | अनुस्मर | நினைத்துக்கொள்ளும். |

भरतः कुशलं वाच्यो वाच्यो मद्बचनेन च । सर्वास्वेव यथान्यायं वृत्तिं वर्तस्व मातृषु ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|------------|----------------|
| भरतः | “ ‘பரதன் | वृत्तिं | நடந்துகொள்வதை |
| कुशलं | சேஷமத்தை | वर्तस्व | அனுஷ்டிப்பாய்’ |
| वाच्यः | கூறத்தக்கவன். | | என்று |
| मातृषु | ‘தாய்மார்கள் | मद्बचनेन च | நான் கூறியதாக |
| सर्वासु | எல்லோரிடத்திலும் | वाच्यः | சொல்லப்படவேண் |
| यथान्यायं एव | (தரும)நியாயப்படியே | | டியவன். |

वक्तव्यश्च महाबाहुरिक्ष्वाकुकुलनन्दनः । पितरं यौवराज्यस्थो राज्यस्थमनुपालय ॥२१॥

| | | | |
|----------------|----------------------|-----------|---------------------|
| इक्ष्वाकुकुल-} | “ ‘இக்ஷ்வாகுவம்சத்தை | राजस्थं | ஸாம்ராஜ்யத்திலி |
| नन्दनः | விளங்கச்செய்பவனும் | | ருக்கும் |
| महाबाहुः | ஆஜானுபாகுவமாகு | पितरं | திருத்தந்தையாருக்கு |
| | மவன் | अनुपालय च | கீழ்ப்படிவாயாக’ |
| | | | என்றும் |
| यौवराज्यस्थः | ‘இளவரசாயிருந்து | वक्तव्यः | சொல்லப்படவேண்டி |
| | கொண்டு | | யவன். |

अतिक्रान्तवया राजा मा स्मैनं त्वमुपारुधः । कुमारराज्ये जीव त्वं तस्यैवाज्ञा प्रवर्तताम् ॥

| | | | |
|----------------|----------------------|-------------|----------------|
| राजा | “ ‘சக்கிரவர்த்தியார் | कुमारराज्ये | யௌவராஜ்யத்தில் |
| अतिक्रान्तवयाः | பிராயம்சென்றவர்; | जीव | காலங்கடத்து. |
| त्वं | நீ | तस्य | அவரது |
| एनं | இவரை | आज्ञा एव | ஆக்கினையே |
| उपारुधः मा स्म | தடைசெய்யாதே. | प्रवर्तताम् | நடைபெறட்டும்.’ |
| त्वं | நீ | | |

अब्रवीच्चापि मां भूयो भृशमश्रूणि वर्तयन् । मातेव मम माता ते द्रष्टव्या पुत्रगर्धिनी ॥२४॥

| | | | |
|-----------|---------------------|--------------|------------------|
| भृशं | “ ‘மிகவும் | मम | ‘எனது |
| अश्रूणि | கண்ணீரை | पुत्रगर्धिनी | புத்திரவாத்தஸல்ய |
| वर्तयन् च | வடித்துக்கொண்டி | | முடைய |
| | ருந்த அவர் | माता | தாய், |
| भूयः अपि | இன்னும்படியும், | ते | உனது |
| मां | என்மூலமாக | माता इव | தாய்போலவே |
| अब्रवीत् | சொல்லியனுப்பியிருக் | द्रष्टव्या | கவனிக்கப்படவேண் |
| | கிறார். | | டியவள்.’ |

इत्येवं मां महाराज ब्रुवन्नेव महायशः । रामो राजीवताम्राक्षो भृशमभूण्यवर्तयत् ॥ २५ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|------------|----------------|
| மகாராஜ: | “சக்கிரவர்த்தியாரே! | இதி ஏவ் | மேற்கண்டவண்ண |
| மகாயசா: | மகா புகழ்படைக்கப் | | மாய் |
| | பெற்றவரும், | ब्रुवन् एव | சொல்லிக்கொண்டே |
| ராஜிவதாமாட்ச: | செந்தாமரைக்கண்ண | अभूणि | கண்ணீரை |
| ராம: | ஸ்ரீராமர், [ருமாகிய | भृशं | அதிகமாக |
| மா: | அடியேனிடம் | अवर्तयत् | பெருக்கினார். |

लक्ष्मणस्तु सुसंकुदो निश्वसन्वाक्यमब्रवीत् । केनायमपराधेन राजपुत्रो विवासितः ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|-----------|------------------------|
| लक्ष्मणः तु | “லக்ஷ்மணரோ, | राजपुत्रः | சக்கிரவர்த்தித் திருக் |
| सुसंकुदः | மிகச்சினந்தவராய், | | குமாரன் |
| निश्वसन् | நெட்டுயிர்ப்புற்றவராய் | केन | எந்த |
| वाक्यं | பின்வரும் சொல்லை | अपराधेन | குற்றத்தால் |
| अब्रवीत् | சொன்னார். | विवासितः | நாட்டிலிருந்து வெளி |
| अयं | ‘இந்த | | யேற்றப்பட்டனர்? |

राज्ञा तु खलु कैकेय्या लघु त्वाश्रित्य शासनम् । कृतं कार्यमकार्यं वा वयं येनाभिपीडिताः॥

| | | | |
|--------------|--------------------|------------|----------------------|
| ராஜா | “சக்ரவர்த்தியாரால் | कार्यं | நியாயமானதாயினும் |
| கைகேய்யா: து | கைகேயியம்மாளுக்கு | | சரி |
| | மட்டும் | अकार्यं वा | நியாயமற்றதாயினும் |
| लघु | இஷ்டமாயிருக்கின்ற | येन | எவ்விதத்திலும் [சரி, |
| शासनं | ராஜசாஸனத்தை | वयं | நாங்கள் |
| आश्रित्य तु | தீர்மானித்து | अभिपीडिताः | துன்புறுத்தப்பட்ட |
| कृतं | அளிக்கப்பட்டது, | | தோம். |
| | | खलु | அல்லவா? |

यदि प्रव्राजितो रामो लोभकारणकारितम् । वरदाननिमित्तं वा सर्वथा दुष्कृतं कृतम् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------------|--------------------|
| ராம: | “ஸ்ரீராமர் | वरदान- | வரதானவிதத்தால் |
| प्रव्राजितः | துறவியாயோட்டிவிட | निमित्तं वा } | தான் விளைத்ததாகவி, |
| | ப்பட்டனர் | | ருக்கட்டும், |
| यदि | என்கிற விஷயத்தில், | कृतं | செய்யப்பட்டது, |
| लोभकारण- | பொருளாசையென்கி | सर्वथा | எல்லா வகையிலும் |
| कारितं } | ற ஒரு காரணத்தால் | दुष्कृतम् | அதீதமே. |
| | தான் விளைத்ததாக | | |
| | விருக்கட்டும், | | |

इदं तावद्यथाकाममीश्वरस्य कृते कृतम् । रामस्य तु परित्यागे न हेतुमुपपक्ष्ये ॥ २६ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|---------------|------------------|
| ईश्वरस्य | “ஸமர்த்தராகிய | न उलक्ष्ये | நானறியேன். |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருக்கு | इदं | இந்த |
| कृते | சம்பவித்திருக்கிற | कृतं | செய்கையானது |
| परित्यागे | விலக்குகளில், | यथाकामं तावत् | மனப்போக்கின்படி |
| हेतुं तु | காரணமொன்றையும் | | மேயன்றி வேறில்லை |

अदृष्टपूर्वव्यसना राजपुत्री यशस्विनी । तेन दुःखेन रुदती नैव मां किञ्चिदब्रवीत् ॥३५॥

| | | | |
|------------------------|---|------------|----------------------------|
| अदृष्टपूर्व- व्यसना | } “இது வரையில் ஒருவித துன்பத்தையுமறியா தவளும், மகராஜரது திருக்கு மாரியென கீர்த்திவாய்ந்தவளும், அந்த | दुःखेन | கஷ்டத்தால் |
| राजपुत्री | | रुदती एव | அழுதுகொண்டிருப்ப வளாய், |
| यशस्विनी | तेन | मां | எண்ணைப்பார்த்து |
| | | किञ्चित् | ஒன்றும் |
| | | अब्रवीत् न | கூறவில்லை. |

उद्दीक्षमाणा भर्तारं मुखेन परिशुष्यता । मुमोच सहसा बाष्पं मां प्रयान्तमुदीक्ष्य सा ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|------------|-----------------|
| सा | “அவள் | प्रयान्तं | செல்பவனாக |
| भर्तारं | கணவரை, | उद्दीक्ष्य | கண்டு, |
| परिशुष्यता | வாட்டமடைந்த | सहसा | தன்னையுமறியாது, |
| मुखेन | முகத்துடன் | बाष्पं | கண்ணீரை |
| उद्दीक्षमाणा | பார்க்கின்றவளாய், | मुमोच | வடித்தாள். |
| मां | எண்ணை | | |

तथैव रामोऽश्रुमुखःकृताञ्जलिः स्थितोऽभवलक्ष्मणबाहुपालितः ।

तथैव सीता रुदती तपस्विनी निरीक्षते राजरथं तथैव माम् ॥ ३७ ॥

| | | | |
|-------------------|--|-----------|-------------------------------|
| लक्ष्मणबाहुपालितः | “லக்ஷ்மணரால் சுச்சூரு வைஷ செய்யப்படும் | तपस्विनी | பரிதரிக்கத்தக்க |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | सीता | சீதாபிராப்டியார் |
| कृताञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராய், | तथैव | அவ்வண்ணமே |
| तथा एव | அங்கிருந்தபடியே | रुदती एव | அழுதுகொண்டே, |
| | | राजरथं | மன்னர் திருத்தேரை யும் |
| अश्रुमुखः | { கண்ணீர் நிறைந்த திருமுகமண்டலமு டையவராய். | मां तथा | என்னையும் |
| स्थितः अभवत् | நின்றுவிட்டார். | निरीक्षते | பார்த்தவண்ணமே யிருந்தனள்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे अष्टपञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 4709



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2354

एकोनषष्टितमः सर्गः—ஐம்பத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம் ॥ ५९ ॥

दशरथप्रलापः—தசரதரது புலம்பல்.

इति ब्रुवन्तं सन्देशं सुमन्त्रं मन्त्रिसत्तमम् । ब्रूयशेषं पुनरिति राजा वचनमब्रवीत् ॥ १ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------|------------|----------------------|
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | सुमन्त्रं | சுமந்திரரைப்பார்த்து |
| इति | மேற்கண்டவண்ண | पुनः | இன்னும் |
| सन्देशं | செய்தியை [மாய் | अशेषं | மற்ற எதையும் விடா |
| ब्रुवन्तं | சொல்லியவரும் | वचनं | செய்தியை [மல் |
| मन्त्रिसत्तमं | மந்திரிகளிலுத்தமரு மான | ब्रूहि इति | சொல்லுமென்று |
| | | अब्रवीत् | கட்டளையிட்டார். |

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सुमन्त्रो बाष्पविक्रबः । कथयामास भूयोऽपि रामसन्देशविस्तरम् ॥

சுமந்த்: சுமந்திரர்
तस्य அவரது
तत् அந்த
वचनं நியமனத்தை,
श्रुत्वा கேட்டு,

बाष्पविक्रबः கண்ணீரால் பேசத்
தடுமாற்றமுற்றவராய்
भूयः अपि மீளவும்
रामसन्देश- } ராமரைப்பற்றிய செ
विस्तरं } யதியனைத்தையும்
कथयामास பின்வருமாறு விண்
ணப்பஞ்செய்தார்.

जटा: कृत्वा महाराज चीरवल्कलधारिणौ

॥ ३ ॥

महाराज “சக்கிரவர்த்தியாரே!
चीरवल्कलधारिणौ மரவுரியாடையணிந்தி
ருந்த அவ்விருவரும்

जटा: சடைகளை
कृ ग தரித்துக்கொண்டனர்.

अग्रतो लक्ष्मणो यातः पालयन् रघुनन्दनम् । अनन्तरं च सीताऽथ राघवो रघुनन्दनम् ॥

तांस्तथा गच्छतो दृष्ट्वा निवृत्तोऽस्म्यवशस्तदा ॥ ४ ॥

रघुनन्दनं “ஸ்ரீராமருக்கு
पालयन् வழிகாட்டி க்கொண்டு
अग्रतः முதலில்
लक्ष्मणः லக்ஷ்மணர்
यातः சென்றார்.
अनन्तरं அவர் பின்
सीता च சீதை சென்றாள்.
अथ இவர்களிருவருக்கும்
பின்னே

राघवः ஸ்ரீராமர் சென்றார்.
तथा அவ்வண்ணம்
गच्छतः எழுந்தருளிச்செல்
லும்
तान् அவர்களை
दृष्ट्वा கண்ணுற்று,
अस्मि நான்
अवशः பரவசனாய்
तदा அப்பொழுது
निवृत्तः திரும்பினேன்.

रघुनन्दनः ரகுபிள்ளையாகிய

मम त्वश्वा निवृत्तस्य न प्रवर्तन्त वर्त्तनि । उष्णमश्रु विमुञ्चन्तो रामे सम्प्रस्थिते वनम् ॥

रामे “ஸ்ரீராமர்
वनं காட்டைநோக்கி
सम्प्रस्थिते சென்ற பின்னர்
निवृत्तस्य திரும்பிய
मम என்னுடைய
वर्त्तनि வழியில்

अश्वाः तु குதிரைகளும்
उष्णं உஷ்ணமாக
अश्रु கண்ணீரை
विमुञ्चन्तः பெருக்குகின்றவைக
ளாய்
प्रवर्तन्त न நடக்கவில்லை.

उभाभ्यां राजपुत्राभ्यामथ कृत्वाऽहमञ्जलिम् । प्रस्थितो रथमास्थाय तदुःखमपि धारयन् ॥

अथ “அப்பொழுது
अहं அடியேன்
राजपुत्राभ्यां சக்கிரவர்த்தித்திருக்
குமாரர்கள்
उभाभ्यां இருவருக்கும்
अञ्जलिं அஞ்சலி
कृत्वा செய்துவிட்டு,

तत् அந்த
दुःखं अपि கஷ்டத்தை ஒரு
வாராய்
धारयन् பொறுத்துக்கொண்டு
रथं ரதத்தில்
आस्थाय ஏறி
प्रस्थितः புறப்பட்டேன்.

गुहेन सार्धं तत्रैव स्थितोऽस्मि दिवसान्वहून् । आशया यदि मां रामः पुनः शब्दापयेदिति ॥

| | | | |
|------------|----------------|-----------------|-----------------|
| ராம: | “ ஸ்ரீராமர் | आशया | ஆசையால் |
| मां | என்னை | तत्र एव | அவ்விடத்திலேயே |
| पुनः | மறுபடியும் | गुहेन सार्धं | குஹரோடுகூட |
| यदि | ஒருகால் | बहून् दिवसान् } | பலதினங்களாகப் |
| शब्दापयेत् | அழைக்கக்கூடும் | इति | பாவித்து |
| | என்ற | स्थितः अस्मि | காத்திருந்தேன். |

विषये ते महाराज रामव्यसनकशिताः । अपि वृक्षाः परिम्लानाः सपुष्पाङ्कुरकोरकाः ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|-----------------|---------------------|
| महाराज | “ சக்கிரவர்த்தியாரே ! | रामव्यसन- } | ராமருடைய பிரிவாற் |
| ते | தேவரீரது | कशिताः } | முதவைகளாய் |
| विषये | நாட்டில் | सपुष्पाङ्कुर- } | புஷ்பங்கள், முளைகள் |
| | | कोरकाः } | மொட்டுக்களுள்பட |
| वृक्षाः अपि | மரங்களும் | परिम्लानाः | வாடிப்போயின. |

उपतप्तोदका नद्यः पल्वलानि सरांसि च । परिशुष्कपलाशानि वनान्युपवनानि च ॥ ९ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-----------------|------------------|
| नद्यः | “ ஆறுகளும், | वनानि | வனங்களும் |
| पल्वलानि | குட்டைகளும், | उपवनानि च | உத்தியானங்களும் |
| सरांसि च | பொய்கைகளும், | परिशुष्कपलाशानि | உலர்ந்த இலையுள்ள |
| उपतप्तोदकाः | வெப்பமடைந்த நீரு | | வைகளாயின. |
| | ள்ளவைகளாயின. | | |

न च सर्पन्ति सत्त्वानि व्याला न प्रचरन्ति च । रामशोकाभिभूतं तन्निष्कूजमभवद्नम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|---------------|---------------------|
| सत्त्वानि च | “ ஜந்துக்களும், | वनं | காடு, |
| सर्पन्ति न | வெளிக்கிளம்பவில்லை. | रामशोकाभिभूतं | ஸ்ரீராமனுக்காக மனம் |
| व्यालाः च | துஷ்டமிருகங்களும் | | நொந்து தவிக்கிறதாய் |
| प्रचरन्ति न | வெளியில் சஞ்சரிக்க | निष्कूजं | நிச்சப்தமாய் |
| तत् | அந்த [வில்லை. | अभवत् | ஆயிற்று. |

लीनपुष्करपत्राश्च नरेन्द्र कलुषोदकाः । संतप्तपद्माः पद्मिन्यो लीनमीनविहङ्गमाः ॥ ११ ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------------|---------------|---------------------|
| नरेन्द्र | “ சக்கிரவர்த்தியாரே ! | सन्तप्तपद्माः | { வாடிய தாமரைப்பூக் |
| पद्मिन्यः | தாமரையோடைகள் | | களையுடையவைகளா |
| लीनपुष्करपत्राः | { நீரில் மூழ்கிய தாம | लीनमीन- } | கவும், |
| | ரையிலேகளையுடைய | विहङ्गमाः च } | மறைந்துவிட்ட மீன் |
| | வைகளாகவும், | | களையும், நீர்ப்பறவை |
| कलुषोदकाः | கலங்கிய நீருள்ளவை | | களையுமுடையவை |
| | களாகவும், | | களாயுமாயின. |

जलजानि च पुष्पाणि माल्यानि स्थलजानि च ।

नाद्य भान्त्यल्पगन्धीनि फलानि च यथापुरम्

॥ १२ ॥

| | | | |
|------------|---------------|-------------|------------------|
| जलजानि | “ நீரி லுள்ள | अल्पगन्धीनि | வாசனையற்றவை |
| पुष्पाणि च | மலர்களும், | फलानि च | கணிகளும் [களாய், |
| स्थलजानि | நிலங்களிலுள்ள | यथापुरं | முன்போல |
| माल्यानि च | மலர்களும், | अद्य | இப்பொழுது |
| | | भान्ति न | விளங்கவில்லை. |

अत्रोद्यानानि शून्यानि प्रलीनविहगानि च । न चाभिरामानारामान् पश्यामि मनुजर्षभ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------------------|--|
| मनुजर्षभ | “ புருஷோத்தமரே ! | प्रलीन- विहगानि च | மறைந் துள்ள பறவை களையுடையனவாய் மிருக்கின்றன. |
| अत्र | இப்பொழுது | आरामान् च अभिरामान् | நந்தனவனங்களையும் மனோகரமாயிருக்கின் றவைகளாய் |
| उद्यानानि | உத்தியானங்கள் | पश्यामि न | நான் பார்க்கவில்லை. |
| शून्यानि | சூன்யங்களாயும் | | |

प्रविशन्तमयोध्यां मां न कश्चिदभिनन्दति । नरा रामपश्यन्तो निश्वसन्ति मुहुर्मुहुः ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|------------|----------------------------|
| अयोध्यां | “ அயோத்திமா நகருள் | नराः | மனிதர்கள் |
| प्रविशन्तं | புகும் | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| मां | என்னை | अपश्यन्तः | காணாதவர்களாய் |
| कश्चित् | ஒருவனும் | मुहुःमुहुः | அடிக்கடி |
| अभिनन्दति न | ஏற்றுக்கொள்ளவில்லை. | निश्वसन्ति | பெருமூச்செறிகிறார் கள். |

देव राजरथं दृष्ट्वा विना राममिहागतम् । दुःखादश्रुमुखः सर्वो राजमार्गगतो जनः ॥ १५ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|-----------|----------------------|
| देव | “ சக்கிரவர்த்தியாரே ! | इह | இவ்விடத்திற்கு |
| सर्वः | ஒவ்வொரு | आगतं | வந்ததாய் |
| राजमार्गगतः | ராஜவீதியிலிருந்த | दृष्ट्वा | கவனித்து, |
| जनः | மனிதனும் | दुःखात् | மனவேதனையால் |
| रामं विना | ராமனில்லாமல் | अश्रुमुखः | கண்ணீர் வடிக்கும் மு |
| राजरथं | மன்னர்திருத்தேரை | | கமுடையவனாயினன். |

हर्म्यैर्विमानैः प्रासादैरवेक्ष्य स्थमागतम् । हाहाकारकृता नार्यो रामादर्शनकश्चिताः ॥ १६ ॥

| | | | |
|-----------|---|------------------------|--|
| नार्यः | “ ஸ்திரீகள், அரண்மனையைப்போ ன்ற திருமாஸிகை களினின்றும் எழுதிக்குள்ள மாஸி கைகளினின்றும், அரண்மனைகளினின் றும் | आगतं | திரும்பிவந்த |
| हर्म्यैः | | रथं | திருத்தேரை |
| विमानैः | | अवेक्ष्य | பார்த்து, |
| प्रासादैः | | रामादर्शन- कश्चिताः | ராமரைக்காணமை யால் துயருற்றவராகி அப்பொழுது ‘ஐயோ, ஐயோ’ வெனக்கூவினார்கள். |
| | | अथ | |
| | | हाहाकारकृताः | |

आयतैर्विमलैर्नैत्रैरश्रुवेगपरिप्लुतैः । अन्योन्यमभिवीक्षन्ते व्यक्तमार्ततराः स्त्रियः ॥ १७ ॥

| | | | |
|--------------------|--|----------------------|--|
| स्त्रियः | “ஸ்திரீகள் | विमलैः | { நேத்திரப்படலத்தால் மூடப்பட்டவைபோ ன்றனவாய், |
| आर्ततराः | மிகத்துயருற்றவர்க ளாகி | आयतैः | திறந்துபார்க்கமுடியா தவைகளாய் |
| अश्रुवेगपरिप्लुतैः | { கண்ணீரின திசயத் தால் முற்றிலும் கல ங்கிய | अन्योन्यं व्यक्तं | ஒருவரையொருவர் கண்கொட்டி து விழி த்தபடியே |
| नैत्रैः | கண்களில் | अभिवीक्षन्ते | பார்த்தார்கள். |

नामित्राणां न मित्राणामुदासीनजनस्य च । अहमार्ततया किञ्चिद्विशेषमुपलक्ष्ये ॥ १८ ॥

| | | | |
|------------|------------------------------|---------------|---------------------------|
| आर्ततया | “மனம்நொந்தவனாயி ருத்தலின் | मित्राणां | மித்திரர்களிடத்தி லும் |
| किञ्चित् | ஏதேனுமொரு | उदासीनजनस्य च | உதாஸீனமனிதருக் |
| विशेषं | வேற்றுமையென்பது | न | இல்லையெனவும் [கும் |
| अमित्राणां | பகைவர்களிடத்தில் | अहं | நான் |
| न | இல்லையெனவும் | उपलक्ष्ये | காண்கிறேன். |

अप्रहृष्टमनुष्या च दीननागतुरङ्गमा । आर्तस्वरपरिम्लाना विनिश्चसितनिस्वना ॥ १९ ॥

निरानन्दा महाराज रामप्रव्राजनातुरा । कौसल्या पुत्रहीनेव अयोध्या प्रतिभाति मे ॥

| | | | |
|-------------------|--|----------------|---|
| महाराज | “சக்கிரவர்த்தியாரே! | दीननागतुरङ्गमा | { மனம்நொந்த யானை களையும், குதிரைகளோ யுமுடையதாய் |
| अयोध्या | அயோத்திமாநகர் | आर्तस्वर- | துக்கத்தொனி |
| पुत्रहीना | புதல்வனைப் பிரிந்த வளாய் | परिम्लाना } | கொண்டு சோந்து கிடக்கின்றதாய் |
| निरानन्दा | ஸதா துயருற்றவளா யிருக்கும் | विनिश्चसित- | பெருமூச்செறியும் ஒ |
| कौसल्या | கோஸலாதேவியார் | निस्वना च } | லியையுடையதாயும் |
| इव | போலவே | मे | எனக்கு |
| रामप्रव्राजनातुरा | ராமரையனுப்பிவிட்ட தால் துயருற்றதாய் | प्रतिभाति | தோற்றுகின்றது.” |
| अप्रहृष्टमनुष्या | உத்ஸாஹமிழந்த ம னிதர்களையுடையதாய் | | |

सूतस्य वचनं श्रुत्वा वाचा परमदीनया । बाष्पोपहतया राजा तं सूतमिदमब्रवीत् ॥ २१ ॥

| | | | |
|-------------|---|----------|---|
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | परमदीनया | { மனவேதனையை நன் ருவினங்கக்காட்டுகி றதுமாகிய |
| सूतस्य | சாரதியினது | वाचा | சொற்கொண்டு |
| वचनं | மொழியை | तं | அந்த |
| श्रुत्वा | கேட்டு, | सूत | சாரதியைப்பார்த்து |
| | { கண்ணீர் ததும்பி வாய் தழுதழுத்து வந்ததும், | इदं | பின்வருமாறு |
| बाष्पोपहतया | | अब्रवीत् | மொழிந்தனர். |

कैकेय्या विनियुक्तेन पापाभिजनभावया । मया न मन्त्रकुशलैर्वृद्धैः सह समर्थितम् ॥२२॥

| | | | |
|--------------------|---|--------------|------------------------------|
| पापाभिजन- भावया | “முன்னோர்களின் திச்செயலையே கைக் கொண்ட | मन्त्रकुशलैः | ஆலோசனைகளில் நிபுணர்களாகிய |
| कैकेय्या | கைகேயியால் | वृद्धैः सह | பெரியோர்களுடன் கூட |
| विनियुक्तेन | கட்டுண்ட | समर्थितं न | ஆலோசனைசெய்யப் படவில்லை. |
| मया | என்னால் | | |

न सुहृद्भिर्न चामात्यैर्मन्त्रयित्वा न नैगमैः । मयाऽयमर्थः सम्मोहात्स्नीहेतोः सहसा कृतः ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------|-----------|-----------------------------|
| मया | “என்னால் | न | இல்லை; |
| अयं | இந்த | नैगमैः च | பட்டணத் துணைங்க |
| अर्थः | காரியமானது | न | இல்லை. [னோடும் |
| सुहृद्भिः | ஸுஹ்ருத்க்க னோடு | स्नीहेतोः | மனைவிக்காக |
| मन्त्रयित्वा न | ஆலோசிக்கப்பட வில்லை; | सम्मोहात् | மனக்கலவரத்தால் |
| अमात्यैः | மந்திரிமார்களோடும் | सहसा | முன்பின்னராய்ந்தநி யாமலே |
| | | कृतः | செய்யப்பட்டது. |

भवितव्यतया नूनमिदं वा व्यसनं महत् । कुलस्यास्य विनाशाय प्राप्तं सूत यदृच्छया ॥

| | | | |
|--------|-----------------|------------|----------------------|
| सूत | “சாரதியே! | विनाशाय वा | அழிவிற்கென்றே |
| इदं | இந்த | भवितव्यतया | விதியால், |
| महत् | பெரும் | यदृच्छया | தற்செயலால் |
| व्यसनं | கஷ்டமானது | नूनं | இப்பொழுது |
| अस्य | இந்த | प्राप्तम् | சம்பவித்திருக்கிறது. |
| कुलस्य | உத்தமகுலத்தினது | | |

सूत यद्यस्ति ते किञ्चिन्मयाऽपि सुकृतं कृतम् । त्वं प्रापयाशु मां रामं प्राणाः सन्त्वरयन्ति माम् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|--------------|----------------------------|
| सूत | “சாரதியே! | मां | என்னை |
| मयाऽपि | என்னாலும் | आशु | உடனே |
| ते | உமக்கு | रामं | ராமனிடம் |
| सुकृतं | நன்மையானது | प्रापय | கொண்டுபோய்ச் சேரும். |
| किञ्चित् | கொஞ்சமேனும் | प्राणाः | அந்தராத்மாவானது |
| कृतं | செய்யப்பட்டதாக | मां | என்னை |
| अस्ति यदि | இருக்குமேயானால் | सन्त्वरयन्ति | துரிதப்படுத்துகின் றது. |
| त्वं | நீர் | | |

यद्यद्यापि ममैवाज्ञा निर्वर्तयतु राघवम् । न शक्यामि विना रामं सुहूर्तमपि जीवितुम् ॥

| | | | |
|----------|---------------|--------------|--------------------|
| अद्य अपि | “இப்பொழுதுகூட | निर्वर्तयतु | திருப்பட்டும். |
| मम | எனது | रामं विना | ஸ்ரீராமனின்றி, |
| आज्ञा एव | கட்டளையே | सुहूर्तं अपि | ஒரு முகூர்த்தமும், |
| यदि | நடக்குமாயில், | जीवितुं | பிழைத்திருக்க |
| राघवं | ஸ்ரீராமனை | शक्यामि न | நான் பொறேன். |

अथवाऽपि महाबाहुर्गतो दूरं भविष्यति । मामेव रथमारोप्य शीघ्रं रामाय दर्शय ॥२७॥

| | | | |
|--------------|-------------------|--------|-----------------|
| अथवा | “இல்லாவியன் | ரய் | ரத்தத்தில் |
| महाबाहुः | ஆஜானுபாகுவாகு | आरोप्य | ஏற்றிக்கொண்டு, |
| दूरं | வெகுதூரம் [மவன் | शीघ्रं | விரைவில் |
| गतः | சென்றுவிட்டவனாக | रामाय | ராமன்முன் |
| भविष्यति अपि | இருப்பானென்றாலும் | दर्शय | கொண்டுபோய் |
| मां एव | என்னையே | | நிறுத்திவிடும். |

वृत्तदंष्ट्रो महेष्वासः कासौ लक्ष्मणपूर्वजः । यदि जीवामि साध्वेनं पश्येयं सीतया सह ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------------|------------|-----------------------|
| वृत्तदंष्ट्रः | “முல்லையரும்புபோன்ற பற்களையுடையவனும், | क | எங்கே ? |
| महेष्वासः | தனி வில்லாளியும் | एनं | இவனை |
| लक्ष्मणपूर्वजः | லக்ஷ்மணனுக்குத் தமையனுமாகிய | सीतया सह | வீதையோடுகூட, |
| कासौ | இவன் | जीवामि यदि | பிழைத்திருப்பேனாகில், |
| | | साधु | கண்குளிர |
| | | पश्येयम् | காண்பேன். |

लोहिताक्षं महाबाहुमामुक्तमणिकुण्डलम् । रामं यदि न पश्यामि गमिष्यामि यमक्षयम् ॥

| | | | |
|------------------|--------------------------------|---------------|-----------------|
| लोहिताक्षं | “சிவந்த கண்களையுடையவனும், | रामं | ராமனை |
| महाबाहुं | ஆஜானுபாஹுவும், | यदि पश्यामि न | நான் காணவில்லை |
| आमुक्तमणिकुण्डलं | ரத்தன்குண்டலங்களை யணிந்தவனுமான | यमक्षयं | யமன் வீட்டிற்கு |
| | | गमिष्यामि | சென்றுவிடுவேன். |

अतो नु किं दुःखतरं योऽहमिदं वाकुनन्दनम् । इमामवस्थामापन्नो नेह पश्यामि राघवम् ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------------|-----------|-------------------|
| इमां | “இப்போர்க்கொத்த நிலையில், | राघवं | ராமனை |
| अवस्थां | அதிதுன்புறம் | इह | இப்பொழுது |
| आपन्नः | அந்த நான் | पश्यामि न | காணவில்லை. |
| यः अहं | இசைவாகுபுத்திரனாகிய | अतः | இதைவிட |
| इक्ष्वाकुनन्दनं | | दुःखतरं | கஷ்டமாயுள்ளது |
| | | किं नु | என்னவிருக்கிறது ? |

हा राम रामानुज हा हा वैदेहि तपस्विनि । न मां जानीत दुःखेन म्रियमाणमनाथवत् ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|-----------|---------------------------|
| हा राम | “ஹா ! ராமா ! | दुःखेन | துக்கத்தால் |
| हा रामानुज | ஹா ! லக்ஷ்மணா ! | अनाथवत् | ஆதரிப்பாரின்றி |
| हा तपस्विनि | ஹா ! பதிவிரகாகிரோ மனையாகிய | म्रियमाणं | மரணதசையிலிருக் கின்றவனாய் |
| वैदेहि | வீதே ! | जानीत न | அறியமாட்டார்கள்.” |
| मां | என்னை | | |

स तेन राजा दुःखेन भृशमर्पितचेतनः । अवगाढः सुदुष्पारं शोकसागरमब्रवीत् ॥ ३२ ॥

ச: அந்த
ராஜா சக்கிரவர்த்தியார்
தென அந்த
து:கென கஷ்டத்தால்
அர்பிதகெதன: வெளியிடப்பட்ட
மனமுடையவராகி

சுதுஷ்பார: கடக்கவரிய
சுசுசாகர: துயரக்கடலில்
அவகாட: மூழ்கியவராய்,
புசு (முன்னிலும்)
அதிகமாய்
அவவீத பின்வருமாறு பேசி
னார்:

रामशोकमहावेगः सीताविरहपारगः । श्वसितोर्मिमहावर्तो बाष्पफेनजलाविलः ॥ ३३ ॥

बाहुविक्षेपमीनौघो विक्रन्दितमहास्वनः । प्रकीर्णकेशशैवालः कैकेयीबडबानलः ॥ ३४ ॥

ममाश्रुवेगप्रभवः कुब्जावाक्यमहाग्रहः । वरवेलो नृशंसाया रामप्रव्राजनायतः ॥ ३५ ॥

यस्मिन्वत निमग्नोऽहं कौसल्ये राघवं विना । दुस्तरो जीवता देवि मयाऽयं शोकसागरः ॥

கௌசல்யே தேவி “மகா உத்தமியாகிய
கௌசல்யே!

சுசுசாகர: துயரக்கடலானது
ராமசுசு- } ராமனை நினைப்பதால்
மகாவேக: } உண்டாகும் சோக
மாகிற் நீரிழுப்புடையது.

சீதாவிரகபாரக: சீதையின் தேவையாகி
ற கரையையுடையது.

சுவசிடதர்மி- } பெருமூச்செறிதலாகி
மகாவர்த: } ற அலைகளின் சுழல்
களையுடையது.

பாஷ்பகென- } கண்ணீராகிற் துரை
கலாவில: } ஜலங்களால் கலங்கி
யது.

பாஹுவிக்ஷேப- } கைகளை அசைப்பதா
மீனௌ: } கிற் மீன்கூட்டங்க
ளையுடையது.

விக்ரந்நிடத- } புலம்பலாகிற் பேரொ
மகாஸ்வந: } லியுடையது.

புரகீர்ணகேசசைவால: விரிந்த கூந்தலாகிற்
பாசிகளையுடையது.

கைகேயீபடபானல: { கைகேயியாகிற் வடவா
க்கினியை (ஊழித்தீ
யை) உடையது.

மம எனது
அசுருவேகபுரபவ: கண்ணீரின் பெருக்கி
ற்கு காரணமானது.
கூஜாவாக்ய- } கூனியின் உபதேசமா
மகாபுரக: } கிற் சுருமீன்களையு
டையது.

நுசாசாயா: கடினசித்தமுடையவ
ளது (கைகேயியினது)

வரவெல: வரமாகிற் இக்கரை
யையுடையது.

ராமபுரவாஜநாயத: { ராமனின் நாடுகடத்த
லாகிற் விஸ்தீரணத்
தையுடையது.

யஸ்மிந் எந்த இதில்

அஹ் நான்

நிமபு: மூழ்கிக்கிடக்கின்
றேனே,

அய் இது

ராகவ் விநா ராமனின் நி

கீவதா உயிராடனிருக்கும்

மயா என்னால்

துஸ்தர: ஸகிக்கமுடியாததாயி
ருக்கிறது.
தத ஐயோ! என்ன கஷ்டம்!

अशोभनं योऽहमिहाद्य राघवं दिदृक्षमाणो न लभे सलक्ष्मणम् ।

इतीव राजा विलपन्महायशाः पपात तूर्गं शयने स मूर्च्छितः ॥ ३७ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|------------|-------------------|
| यः अहं | “ அந்த நான் | विलात् | புலம்பிக்கொண்டே |
| इह | இங்கு | महायशाः | மகாயசஸ்வியாகிற |
| अद्य | இப்பொழுது | सः | அந்த |
| राघवं | ராமனை | राजा | சக்கிரவர்த்தியார் |
| सलक्ष्मणं | லக்ஷ்மணனோடுகூடிய | मूर्च्छितः | மூர்ச்சைபடைந்தவ |
| | வனாய் | तूर्गं | திடீரென்று [ராய் |
| दिदृक्षमाणः | காணவிரும்புகிறவ | शयने | படுக்கையில் |
| | னாய் | अशोभनं इव | களைபிழந்தவண்ண |
| न लभे | அடையவில்லை ” | | மாய் |
| इति | என்று | पपात | விழுந்தார். |

इति विलपति पार्थिवे प्रनष्टे करुणतरं द्विगुणं च रामहेतोः ।

वचनमनुनिशम्य तस्य देवी भयमगमत्पुनरेव राममाता ॥ ३८ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|---------------|---------------------|
| इति | இவ்வண்ணம் | तस्य | அவரது |
| रामहेतोः | ஸ்ரீராமர்நிமித்தமாக | वचनं | வார்த்தையை |
| करुणतरं | மிகப்பரிதாபமாய் | अनुनिशम्य | கூடவிருந்து கேட்டு, |
| विलपति | புலம்புகிற | द्विगुणं पुनः | முன்னிலிருமடக்கதி |
| पार्थिवे | சக்கிரவர்த்தியார் | | கமாய் |
| प्रनष्टे च | மெய்மறந்துகிடக் | भयं एव | கவலைக்கிடமான நில |
| | கையில் | | மையையே |
| राममाता | ராமரது தாயாராகிய | अगमत् | அடைந்தனர். |
| देवी | தேவியார் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे एकोनषष्ठितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 4747.

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2392



षष्ठितमः सर्गः—अनुपभावतु सर्गकम् ॥ ६० ॥

सुमन्त्रेण कौसल्यासमाश्वासनम्—சுமந்தீரர் கோஸல்யையை சமாதானப்படுத்துவது.

ततो भूतोपसृष्टेव वेपमाना पुनः पुनः । धरण्यां गतसत्त्वेव कौसल्या सूतमब्रवीत् ॥ १ ॥

| | | | |
|----------------|--------------------|-----------|-------------------|
| कौसल्या | கோஸலாதேவியார் | पुनः पुनः | முன்னிலுமதிகமாய் |
| ततः | அப்பொழுது | वेपमाना | விழுந்து துடிப்பவ |
| भूतोपसृष्टा इव | பேய்பிடித்தவள்போ | | ளாய், |
| गतसत्त्वा इव | உயிர்போனவள் [லாகி, | सूतं | ஸரதியை நோக்கி |
| | போன்றவளாகி, | अब्रवीत् | (பின்வருமாறு) |
| धरण्यां | பூமியில் | | மொழிந்தாள் : |

नय मां यत्र काकुत्स्थः सीता यत्र च लक्ष्मणः । तान्विना क्षणमप्यत्र जीवितुं नोत्सहे ह्यहम् ॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|---------------------|
| काकुत्स्थः | “ ராமன் | अहं | நான் |
| यत्र | எங்கோ, | तान् विना | ஆவர்களை விட்டு, |
| सीता | வலிதையும் | अत्र | இவ்விடத்தில் |
| लक्ष्मणः च | லக்ஷ்மணனும் | क्षणं अपि | நொடிப்பொழுதும் |
| यत्र | எங்கோ (அங்கு) | जीवितुं हि | உயிர்வைத்துக்கொண்டு |
| मां | என்னை | | டிருப்பதற்கே |
| नय | அழைத்துச்செல்லும். | उत्सहे न | பொறேன். |

निर्वर्तय रथं शीघ्रं दण्डकान्नय मामपि । अथ तान्नानुगच्छामि गमिष्यामि यमक्षयम् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|------------|------------------|
| शीघ्रं | “ சீக்கிரத்தில் | नय | கொண்டுபோய்ச் |
| रथं | ரதத்தை | तान् | ஆவர்களை [சேரும்] |
| निर्वर्तय | திரும்பும். | अनुगच्छामि | பின்தொடருவேன். |
| मां अपि | என்னையும் | न अथ | இல்லையென்றால் |
| दण्डकान् | தண்டகைக்கு | यमक्षयं | யமனது வீட்டிற்கு |
| | | गमिष्यामि | சென்றுவிடுவேன்.” |

बाष्पवेगोपहतया स वाचा सज्जमानया । इदमाश्वासयन्देवीं सूतः प्राञ्जलिब्रवीत् ॥ ४ ॥

| | | | |
|------------|------------------|----------------|----------------------|
| सः | அந்த | बाष्पवेगोपहतया | { கண்ணீர் பெருக்கால் |
| सूतः | சூரதி | | தடைப்பட்டு வந்த |
| प्राञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராகி | | துமாகிய |
| देवीं | தேவியை | वाचा | சொற்கொண்டு, |
| सज्जमानया | முன்னோக்கிவருகிற | आश्वासयन् | தேற்றுகின்றவராய் |
| | தும், | इदं | பின்வரும் பதிலை |
| | | अब्रवीत् | மொழிந்தார் : |

त्यज शोकं च मोहं च संभ्रमं दुःखजं तथा । व्यवधूय च संतापं वने वत्स्यति राघवः ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|----------|-------------------|
| शोकं च | “ மனத்துயரையும் | राघवः च | ராமரும் |
| मोहं च | குழப்பத்தையும் | सन्तापं | துயரத்தை |
| दुःखजं | மனக்கவலையாலுண்டாகிற | व्यवधूय | உதறிவிட்டு, |
| | | वने | காட்டில் |
| संभ्रमं तथा | கலவரத்தையும், | वत्स्यति | வலித்துவருகிறார். |
| त्यज | அகற்றும் | | |

लक्ष्मणश्चापि रामस्य पादौ परिचरन्वने । आराधयति धर्मज्ञः परलोकं जितेन्द्रियः ॥६॥

| | | | |
|--------------|--------------------|----------|------------------|
| धर्मज्ञः | “ தருமமறிந்தவரும் | पादौ अपि | திருவடிகளையே |
| जितेन्द्रियः | ஜிதேந்திரியருமாகிய | परिचरन् | பூஜைசெய்து |
| लक्ष्मणः च | லக்ஷ்மணரும் | | கொண்டு |
| वने | காட்டில் | परलोकं | மறுமைக்கு |
| रामस्य | ஸ்ரீராமரது | आराधयति | பாத்திரமாகிறார். |

विजनेऽपि वने सीता वासं प्राप्य गृहेष्विव । विस्रम्भं लभतेऽभीता रामे संन्यस्तमानसा ॥

| | | | |
|---------------|------------------|-----------|--------------------|
| सीता | “வீதை | गृहेषु इव | { திருமாளிகையிலெவ் |
| विजने | ஜனஸஞ்சாரமற்ற | | வண்ணமோ அவ் |
| वने अपि | காட்டிலும் | | வண்ணமே |
| रामे | ஸ்ரீராமரிடத்தில் | वासं | வாழ்வதை |
| संन्यस्तमानसा | ஒப்படைக்கப்பட்ட | प्राप्य | அடைந்து |
| | மனமுடையவளாய், | विस्रम्भं | மனத்திருப்தியை |
| अभीता | பயமற்றவளாய், | लभते | அடைந்திருக்கிறாள். |

नास्या दैन्यं कृतं किञ्चित्सुसूक्ष्ममपि लक्षये । उचितेव प्रवासानां वैदेही प्रतिभाति मे ॥

| | | | |
|----------------|---------------------|------------|---------------|
| अस्याः | “இவளுக்கு | वैदेही | வைதேஹியார் |
| किञ्चित् | எள்ளளவும் | प्रवासानां | வனவாஸங்களுடைய |
| दैन्यं | வாட்டம் | उचिता इव | அனுபவமுடையவள் |
| कृतं | ஏற்பட்டதாக | | போல |
| सुसूक्ष्मं अपि | கூர்ந்து நோக்கியும் | मे | எனக்கு |
| लक्षये न | நான் காணவில்லை | प्रतिभाति | தோன்றுகிறாள். |

नगरोपवनं गत्वा यथा स्म रमते पुरा । तथैव रमते सीता निर्जनेषु वनेष्वपि ॥ ९ ॥

| | | | |
|----------|---------------------|-----------|----------------------|
| सीता | “சீதாப்பிராட்டியார் | रमते स्म | உள்ளம் பூரித்து விள |
| नगरोपवनं | நகரத்தினுத்தான | | ங்கினளோ, |
| | வனத்தை | तथा एव | அவ்வண்ணமே |
| गत्वा | அடைந்து, | निर्जनेषु | ஜனங்களற்ற |
| पुरा | இதற்குமுன் | वनेषु अपि | காடுகளிலும் |
| यथा | எவ்வண்ணம் | रमते | மனத்திருப்திகொண் |
| | | | டு சஞ்சரிக்கின்றாள். |

बालेव रमते सीताऽबालचन्द्रनिभानना । रामा रामे ह्यधीनात्मा विजनेऽपि वने सती ॥

| | | | |
|------------------------|----------------------|-----------|-----------------------|
| अबालचन्द्र- निभानना | { “பூர்ணசந்திரனையொத் | सती अपि | இருக்கையிலும், |
| रामा | த முகமுடையவளும் | रामे हि | ஸ்ரீராமரிடத்திலேயே |
| | சகலமுமுணர்ந்தவளு | अधीनात्मा | ஆத்மஸம்ப்பணம் |
| | மாகிய | | செய்தவளாய் |
| सीता | சீதாப்பிராட்டியார் | बाला इव | சில குழங்கையென |
| विजने | ஜனங்களற்ற | रमते | அவ்வையற்றிருக்கிறாள். |
| वने | காட்டில் | | |

तद्वत् हृदयं ह्यस्यास्तदर्शिनं च जीवितम् । अयोध्याऽपि भवेदस्या रामहीना तथा वनम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-------------|-----------------------|
| अस्याः | “இவளுடைய | अस्याः | இவளுக்கு [கும் |
| हृदयं | மனம் | रामहीना | ஸ்ரீராமரின் நியிருக்- |
| तद्वत् हि | அவையே சார்ந்தது. | अयोध्या अपि | அயோத்திமாநகரும் |
| जीवितं च | உயிரும் | वनं तथा | காடாகத்தான் |
| तदर्शिनं | அவர்தினம். | भवेत् | இருக்கும். |

पथि पृच्छति वैदेही ग्रामांश्च नगराणि च । गतिं दृष्ट्वा नदीनां च पादपान्विविधानपि ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-------------|-------------------|
| வெஹி | “வைதேஹியார், | கதி | போக்கையும், |
| பதி | மார்க்கத்தில் | விவிதாந் | பலவகையான |
| ग्रामान् च | கிராமங்களையும், | पादपान् अपि | மாங்களையும் |
| नगराणि च | நகரங்களையும், | दृष्ट्वा | கண்டு |
| नदीनां | நதிகளுடைய | पृच्छति | விசாரிக்கின்றாள். |

रामं वा लक्ष्मणं वाऽपि पृष्ट्वा जानाति जानकी । अयोध्याक्रोशमात्रे तु विहारमिव संश्रिता॥

| | | | |
|------------------|--------------------|-----------------|-------------------|
| जानकी | “ஜானகியார் | रामं वा | ஸ்ரீராமரையாவது |
| अयोध्या- | அயோத்திமாநகரின் | लक्ष्मणं अपि वा | லக்ஷ்மணரையாவது |
| क्रोशमात्रे तु } | இரண்டு மைல் தூரத் | पृष्ट्वा | கேட்டு |
| | திற்குள்ளிருக்கும் | जानाति | அறிந்துகொள்ளுகின் |
| विहारं | நந்தவனத்தில் | | றாள்.” |
| संश्रिता इव | இருக்கின்றவள் போல் | | |

इदमेव स्मराम्यस्याः सहसैवोपजल्पितम् । कैकेयीसंश्रितं वाक्यं नेदानीं प्रतिभाति मे ॥
ध्वंसयित्वा तु तद्वाक्यं प्रमादात्पर्युपस्थितम् । ह्लादनं वचनं सूतो देव्या मधुरमब्रवीत् ॥

| | | | |
|----------------|--------------------|--------------|----------------------|
| सूतः | சாரதி | तु | என்பதாலும், |
| कैकेयीसंश्रितं | கைகேயி தேவியாரைப் | प्रमादात् एव | ‘கேட்போருக்கு விருப் |
| | பற்றியதாகிய | | பமற்ற’தென்பதாலும் |
| उपजल्पितं | ஒரு மொழி | ध्वंसयित्वा | தனதுள்ளத்திலேயே |
| सहसा | திடீரென | | அடக்கிக்கொண்டு |
| पर्युपस्थितं | சுந்தையிற்றேன்ற | अस्याः | இந்த |
| इदं वाक्यं | ‘இம்மொழியை | देव्याः | தேவியாருக்கு |
| स्मरामि | நான் நினைக்கிறேன். | ह्लादनं | சந்தோஷிக்கச் செய் |
| मे | எனக்கு | | கிறதும், |
| तत् वाक्यं | அம்மொழி | मधुरं एव | இனிமையாயுமுள்ள |
| इदानीं | இப்பொழுது | वचनं | பின்வரும் வார்த்தை |
| प्रतिभाति न | எற்றதாகாது’ | अब्रवीत् | சொன்னார்: [யை |

अध्वना वातवेगेन संभ्रमेणातपेन च । न हि गच्छति वैदेह्याश्चन्द्रांशुसदृशी प्रभा ॥१६॥

| | | | |
|-----------------|----------------|-------------|---------------------|
| वैदेह्याः | “வைதேகியினுடைய | वातवेगेन | தீவிரமான காற்றாலும் |
| चन्द्रांशुसदृशी | சந்திரகாந்திக் | सम्भ्रमेण | விராக்கியத்தாலும் |
| | கொப்பான | आतपेन च | வெயிலாலும் |
| प्रभा | காந்தியானது | गच्छति न हि | மாறவேயில்லை. |
| अध्वना | வழிநடையாலும் | | |

सदृशं शतपत्रस्य पूर्णचन्द्रोपमप्रभम् । वदनं तद्वदान्याया वैदेह्या न प्रकम्पते ॥ १७ ॥

| | | | | |
|------------|--------------------|---------------------|---|-------------------|
| वदान्यायाः | “இனிமையாய்ப்பேசும் | पूर्णचन्द्रोपमप्रभं | { | பூர்ணசந்திரனுக்கொ |
| वैदेह्याः | வைதேகியாருடைய | | | ப்பானகாந்தியை |
| शतपत्रस्य | தாராரைப்புஷ்பத் | | | யுடையதுமான |
| | திற்கு | तत् | | அந்த |
| सदृशं | சமமானமானதும் | वदनं | | திருமுகமண்டலம் |
| | | प्रकम्पते न | | வாடவில்லை |

अलक्तरसरक्ताभावलक्तरसवर्जितौ । अद्यापि चरणौ तस्याः पद्मकोशसमप्रभौ ॥ १८ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|----------------|-------------------|
| तस्याः | “அவளது | अलक्तरसरक्ताभौ | செம்பஞ்சக்குழம்பா |
| अलक्तरस- } | செம்பஞ்சக் குழம்பு | | ல் சிவந்தவைபோல |
| वर्जितौ } | ஊட்டப்பெறாதவை | पद्मकोश- } | தாமரை இதழ்களுக் |
| | களாகிய | समप्रभौ } | குச்சமானமாகிய கா |
| चरणौ | திருவடிகள் | | ந்தியையுடையனவா |
| अद्य अपि | இப்பொழுதும் | | யிருக்கின்றன. |

नूपुरोद्घुष्टहेलेव खेलं गच्छति भामिनी । इदानीमपि वैदेही तद्रागान्यस्तभूषणा ॥ १९ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|----------------------|-------------------|
| न्यस्तभूषणा | “ஆபரணங்களை அணி | नूपुरोद्घुष्टहेला इव | நூபுரசப்தத்தைப்பற |
| | யாதவளாய் | | க்கணித்தவளாகவே |
| भामिनी | ஸர்வாங்கசந்தரியான | तद्रागात् | அவரிடத்து அன்பி |
| वैदेही | வைதேஹியார் | | னால் |
| इदानीं अपि | இப்பொழுதும் | खेलं | சந்தோஷமாகவே |
| | | गच्छति | நடக்கிறாள். |

गजं वा वीक्ष्य सिंहं वा व्याघ्रं वा वनमाश्रिता । नाहारयति संत्रासं बाहू रामस्य संश्रिता ॥

| | | | |
|-------------|----------------|-----------|-------------------|
| वनं | “வனத்தில் | रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய |
| आश्रिता | இருக்குமவள் | बाहू | புயங்களை |
| गजं वा | யானையைவது | संश्रिता | சரண்புகுந்தவளாய், |
| सिंहं वा | சிங்கத்தையாவது | संत्रासं | பயத்தை |
| व्याघ्रं वा | புலியையாவது | आहारयति न | அடைவதில்லை. |
| वीक्ष्य | கண்டு, | | |

करसम्मितमध्याङ्गी पीनोन्नतपयोधरा । राजंसीव रामस्य पादमालोक्य गच्छति ॥ २१ ॥

| | | | | |
|-------------|-------------------|-----------|---|--------------------|
| करसम्मित- } | “இரு கைகளுக்குள்ள | राजंसी इव | { | ராஜதம்ஸப்பறவை |
| मध्याङ्गी } | டங்கிய உடலையுடை | | | போன்றவளுமாகிய |
| | யவளும் | | | அவள் |
| पीनोन्नत- } | பெருந்துருண்ட ஸ்த | रामस्य | | ஸ்ரீராமரது |
| पयोधरा } | னங்களை யுடையவ | पादं | | பாதத்தை |
| | ளும், | आलोक्य | | சுந்தித்துக்கொண்டு |
| | | गच्छति | | போகிறாள். |

न शोच्यास्ते न चात्मानः शोच्यो नापि जनाधिपः ।
इदं हि चरितं लोके प्रतिष्ठास्यति शाश्वतम्

॥ २२ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|----------------|---------------------|
| ते | “அவர்கள் | शोच्यः न | பரிதபிக்கத்தக்கவ |
| शोच्याः न | பரிதபிக்கத்தக்கவர் | हि | ஏனெனில் [ரல்ல. |
| | களல்ல. | लोके | உலகில் |
| आत्मानः च | நமும் | इदं चरितं | இந்த நிகழ்ச்சியானது |
| न | இல்லை. | शाश्वतं | சாசுவதமாய் |
| जनाधिपः अपि | சக்கிரவர்த்தியாரும் | प्रतिष्ठास्यति | நிலைநிற்கப்போகிறது. |

विधूय शोकं परिहृष्टमानसा महर्षियाते पथि सुव्यवस्थिताः ।

वने रता वन्यफलाशनाः पितुः शुभां प्रतिज्ञां परिपालयन्ति ते

॥ २३ ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------|-------------|-----------------------|
| ते | “அவர்கள் | रताः | உத்ஸாஹமுடையவர் |
| शोकं | மனத்துயரை | | களாய் |
| विधूय | உதறித்தள்ளிவிட்டு, | वन्यफलाशनाः | { காட்டில் கிடைக்கும் |
| परिहृष्टमानसाः | திருப்தியுடனிருக்கும் | | காய்கனிகளை புசிப் |
| | மனமுடையவர்களாய் | | பவர்களாய் |
| महर्षियाते | மகர்ஷிகளனுஷ்டிக் | पितुः | திருத்தந்தையினது |
| | கும் | प्रतिज्ञां | நியமனத்தை |
| पथि | நன்னெறியில் | शुभां | தர்மநெறி வழுவாத |
| सुव्यवस्थिताः | சலியா மனவுறுதியு | | தாய் |
| | டையவர்களாய் | परिपालयन्ति | அனுஷ்டிக்கின்றார் |
| वने | காட்டில் | | கள்.” |

तथाऽपि सूतेन सुयुक्तवादिना निवार्यमाणा सुतशोककश्चिता ।

न चैव देवी विरराम कूजितात्प्रियेति पुत्रेति च राघवेति च

॥ २४ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------|---------------|--------------------|
| देवी | தேவியார் | सुतशोककश्चिता | புத்ரகோகத்தால் |
| तथा | மேற்கண்டவண்ண | | மனம் நொந்தவளாய் |
| | மாய் | प्रिय इति | பெரியவனே! என்றும் |
| सुयुक्तवादिना | மிகப்பெருத்தமாய் | पुत्र इति च | குழந்தாய்! என்றும் |
| | சம்பாஷணைசெய்த | राघव इति च | ராகவா! என்றும் |
| सूतेन | சாரதியால் | कूजितात् च | கதறுவதினின்றும் |
| निवार्यमाणा अपि | தேற்றப்பட்டவளா | न एव विरराम | ஒயவே இல்லை. |
| | கியும் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे षष्ठितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 4771

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2416



एकषष्टितमः सर्गः—அறுபத்தேதாராவது ஸர்க்கம் || ६१ ||

दशरथोपालम्भः—தசரதரை நிந்திப்பது.

वनं गते धर्मपरे रामे रमयतां वरे । कौसल्या रुदती स्वार्ता भर्तारपिदमव्रवीत् ॥ १ ॥

| | | | |
|---------|--|----------|----------------------------------|
| கௌசல்யா | கோஸலாதேவியார் | वनं | காட்டை |
| धर्मपरे | { தர்மமொன்றையே ஸர்வமாய்க்கொண் டவரும் | गते | அடைந்ததில் |
| रमयतां | எல்லோருக்குமினிய வராயிருப்பவர்களில் | स्वार्ता | (அஸஹ்யமாய்) மன வேதனையுற்று, |
| वरे | உத்தமருமாகிய | रुदती | கண்ணிர் பெருக்கி யழுதுகொண்டு, |
| रामे | ஸ்ரீராமர் | भर्ता | சணவரைப்பார்த்து |
| | | इदं | பின்வருமாறு |
| | | अव्रवीत् | மொழிந்தாள் : |

यद्यपि त्रिषु लोकेषु प्रथितं ते महद्यशः । सानुक्रोशो वदान्यश्च प्रियवादी च राघवः ॥
कथं नरवरश्रेष्ठ पुत्रौ तौ सह सीतया । दुःखितौ सुखसंवृद्धौ वने दुःखं सहिष्यतः ॥ ३ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-------------|--------------------------------|
| राघवः | “ரகுகுலபுத்திரரான | सुखसंवृद्धौ | சுகத்திலே வளர்ந்த வர்களாகிய |
| सानुक्रोशः | தயாளு. [தேவரீர் | तौ | அவ்விரு |
| वदान्यः | உதாரர். | पुत्रौ च | திருக்குமாரர்களும், |
| प्रियवादी च | ஹிதத்தையே கூறுப | सीतया सह | சீதையோடுகூட |
| ते | தேவரீரது [வர். | दुःखितौ | மனவேதனையுற்றவர் களாய், |
| महत् यशः | பெரும்புகழானது | वने | காட்டில் |
| त्रिषु | மூன்று | दुःखं | கஷ்டத்தை |
| लोकेषु च | உலகங்களிலும் | कथं | எக்காரணத்தைக் , |
| प्रथितं | பரவியிருக்கிறது. | | கொண்டு |
| यदि अपि | அப்படியிருக்கையில் | सहिष्यतः | அனுபவிக்கவேண்டும்? |
| नरवरश्रेष्ठ | புருஷோத்தமர்களில் | | |
| | தலைமைபெற்றவரே! | | |

सा नूनं तरुणी श्यामा सुकुमारी सुखोचिता । कथमुष्णं च शीतं च मैथिली विसहिष्यति ॥

| | | | |
|----------|--|------------|---------------------------|
| सुकुमारी | { “மெல்லிய திருமேனி படைக்கப்பெற்றவ ளும், | उष्णं | வெம்மையையும், |
| सुखोचिता | மகங்கனையே அனுபவி த்துவந்தவளும், | शीतं च | தண்மையையும், |
| तरुणी | யௌவனத்தையுடைய | श्यामा | திருமேனி கறுத்தவ ளாகி, |
| सा | அந்த [ப்பவளுமாகிய | कथं | எக்காரணத்தைக் கொண்டு |
| मैथिली च | மீனையுடைய | नूनं | இப்போதிலிருந்து |
| | | विसहिष्यति | அனுபவிக்கவேண்டும்? |

भुक्त्वाऽशनं विशालाक्षी सूपदंशान्वितं शुभम् । वन्यं नैवारमाहारं कथं सीतोपभोक्ष्यते ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|-------------|-------------------|
| विशालाक्षी | “அகன்ற கண்களையு | भुक्त्वा | புகித்து, |
| सीता | வலீதை [டைய | वन्यं | காட்டி. இண்டாகும் |
| सूपदंशान्वितं | { நல்ல வாஸனையோடும் | नैवारं | தானாய் வளர்ந்து |
| | உப்புக்காரத்துட | | கிடப்பதை |
| | னும் சேர்ந்த | आहारं | உணவாய் |
| शुभं | நல்ல | कथं | ஏன் |
| अशनं | உணவை | उपभोक्ष्यते | புஜிக்கவேண்டும்? |

गीतवादित्रनिर्घोषं श्रुत्वा शुभमनिन्दिता । कथं क्रव्यादसिंहानां शब्दं श्रोष्यत्यशोभनम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-------------|-----------------------|
| अनिन्दिता | தோஷாஹிதை | क्रव्याद- } | பச்சை மம்ஸத்தை |
| | டாகும் அவள் | सिंहानां } | புஜிக்கும் சிங்கங்களு |
| शुभं | மனோக்ருமாயுள்ள | | டைய |
| गीतवादि- | பாட்டு வாத்தியம் | अशोभनं | பொல்லாத |
| निर्घोषं | { இவைகளின் முழக் | शब्दं | கர்ஜனையை, |
| | கத்தை | कथं | ஏன் |
| श्रुत्वा | கேட்டனுபவித்து | श्रोष्यति | கேட்கவேண்டும்? |
| | விட்டு, | | |

महेन्द्रध्वजसङ्काशः क नु शेते महाभुजः । भुजं परिघसङ्काशमुपधाय महाबलः ॥ ७ ॥

| | | | |
|---------------------|--------------------|---------|-----------------|
| महेन्द्रध्वजसङ्काशः | “மஹேந்திரக்கடவு | भुजं . | கையை |
| | ளுக்குச் சமானமாகிய | उपधाय | தலையணையாய் |
| महाबलः | மஹாபலமுடைய | | வைத்துக்கொண்டு, |
| महाभुजः | மஹாசக்திமானாகும் | क | எங்கெ |
| | அவன், | शेते नु | படுக்கிறானோ? |
| परिघसङ्काशं | இருட்டித்தண்டை | | |
| | ஒத்த | | |

पद्मवर्णं सुकेशान्तं पद्मनिश्वासमुत्तमम् । कदा द्रक्ष्यामि रामस्य वदनं पुष्करेक्ष्णम् ॥ ८ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|---------------|------------------|
| रामस्य | “ஸ்ரீராமனுடைய | पुष्करेक्ष्णं | தாமரைமலர்போன்ற |
| पद्मवर्णं | தாமரைமலரையொத் | | கண்களையுடையதும், |
| | த நிறமுள்ளதும், | उत्तमं | மனோகரமாயுமிருக் |
| सुकेशान्तं | { சாஸ்திரவிதிப்படி | | க்கும் |
| | தலைமயிரை அழகாய் | वदनं | திருமுகமண்டலத்தை |
| | வைத்துக்கொண்டிரு | कदा | எக்காலத்தில |
| | க்கப்பெற்றதும், | द्रक्ष्यामि | நான் காணப் |
| पद्मनिश्वासं | { தாமரைப்பூவின் மண | | போகிறேன்? |
| | த்தையுடைய முச்சுக் | | |
| | காற்றையுடையதும், | | |

वज्रसारमिदं नूनं हृदयं मे न संशयः । अपश्यन्त्या न तं यद्वै फलतीदं सहस्रधा ॥ ९ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-------------|-----------------------|
| த | “அவளை | फलति न | வெடிக்காமலிருக்கிறதோ, |
| अपश्यन्त्या: | காணாதிருக்கும் | नूनं | அக்காரணத்தால் |
| मे | எனது | इदं | இது |
| इदं हृदयं | இந்த மனம் | वज्रसारं वै | வஜ்ராயுத வன்மை |
| यत् | எக்காரணத்தால் | | யுற்றதே. |
| सहस्रधा | ஆயிரம் துண்டுகளாக | संशयः न | இதற்கையமில்லை. |

यच्चया दारुणं कर्म व्यपोह्य मम बान्धवाः । निरस्ताः परिधावन्ति सुखार्हाः कृपणा वने ॥

| | | | |
|----------|-----------------|------------|-----------------------|
| त्वया | “உம்மால் | सुखार्हाः | சுகங்களுக்கே உரிய |
| मम | எனக்கு | | வர்கள் |
| बान्धवाः | ஆப்த உறவினர்களா | कृपणाः | கஷ்டங்களை யனுபவிக் |
| | குமவர்கள், | | கின்றவர்களாய், |
| निरस्ताः | கைவிடப்பட்டவர் | परिधावन्ति | { (நெற்றிருத்தவிடத்தி |
| | களாய், | | லின்றிராது) திரிகின் |
| व्यपोह्य | தூத்தப்பட்டு, | यत् कर्म | முர்கள். |
| वने | காட்டில் | दारुणम् | எதுவோ இந்தச் செ |
| | | | கொடுமானது. [யல் |

यदि पञ्चदशे वर्षे राघवः पुनरेष्यति । जह्याद्राज्यं च कोशं च भरतेनोपभोक्ष्यते ॥ ११ ॥

| | | | |
|---------|-------------------|-------------|--------------------|
| पञ्चदशे | “பதினைந்தாவது | राज्यं | ராஜ்யத்தையும் |
| वर्षे | வருஷத்தில் | कोशं च | செல்வத்தையும் |
| राघवः | ஸ்ரீராமன் | जह्यात् | பெரிதாய் வினையான். |
| पुनः | மறுபடி | भरतेन च | பரதனால் தான் |
| एष्यति | திரும்பிவருகிறான் | उपभोक्ष्यते | அனுபவிக்கப்படப் |
| यदि | என்றாலும் | | போகிறது. |

भोजयन्ति किल श्राद्धे केचित्स्वानेव बान्धवान् । ततः पश्चात्समीक्षन्ते कृतकार्या द्विजर्षभान् ॥

| | | | |
|--------------|------------------|--------------|----------------------|
| केचित् | “சிலர், | कृतकार्याः | உத்தேசம் நிறைவேற்றி |
| श्राद्धे | தானங்கொடுக்கும் | | யவர்களாய், |
| स्वान् | தனது [சமயத்தில் | ततः पश्चात् | அதன்பின்னர் |
| बान्धवान् एव | சுற்றத்தார்களை | द्विजर्षभान् | பிராமணைத்தமர்களை |
| | மட்டும் | किल | மன அசிருப்தி விளை |
| भोजयन्ति | அனுபவிக்கச்செய்க | | வித்தவர்களாய் |
| | முர்கள். | समीक्षन्ते | விசாரிக்கின்றார்கள். |

तत्र ये गुणवन्तश्च विद्वांसश्च द्विजातयः । न पश्चात्तेऽभिमन्यन्ते सुधामपि सुरोपमाः ॥ १३ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|---------------|--------------------|
| ये | “எவர்கள் | ते | அவர்கள், |
| गुणवन्तः | குணவான்களாயும், | तत्र | அப்பொழுது |
| विद्वांसः च | வித்வான்களாயும், | पश्चात् | அதனால், |
| सुरोपमाः च | தேவர்கள் போன்ற | सुधां अपि | குளிரந்த தீர்த்தத் |
| | வர்களுமான | | தையுங்கூட |
| द्विजातयः | அந்தணர்களோ, | अभिमन्यन्ते न | வேண்டார்கள். |

ब्राह्मणेष्वपि तृषु पश्चाद्भोक्तुं द्विजर्षभाः । नाभ्युपैतुमलं प्राज्ञाः शृङ्गच्छेदमिवर्षभाः ॥१४॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------|------------|--|
| तृषु | “திருப்தியடைந்தவர் கள் | इव | எவ்வண்ணமோ |
| ब्राह्मणेषु अपि | பிராமணர்களாயிருப் பினும், | पश्चात् | அவ்வண்ணமே, சமயந்தவறிய காலத் தில் |
| प्राज्ञाः | ஞானவான்களாகிய | भोक्तुं | அனுபவிக்கவும், |
| द्विजर्षभाः | பிராமணேத்தமர்கள், | अभ्युपैतुं | கைநீட்டி வாங்குவதற் கும், |
| ऋषभाः | காளைகள் | अलं न | இணங்கார்கள். |
| शृङ्गच्छेदं | துனி மேயப்பட்ட புல்லை | | |

एवं कनीयसा भ्रात्रा भुक्तं राज्यं विशां पते । भ्राता ज्येष्ठो वरिष्ठश्च किमर्थं नावमंस्यते ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|-------------|---------------------------|
| विशां पते | “சக்கிரவர்த்தியாரே! | भ्राता | தமையனும் |
| कनीयसा भ्रात्रा | இனையதம்பியால், | वरिष्ठः च | உத்தமனுமாகிய அவன் |
| एवं | இவ்வாறு | किमर्थं | எக்காரணம் பற்றி |
| भुक्तं | அனுபவிக்கப்பட்ட | अवमंस्यते न | திரஸ்கரியாதிரு ப்பான்? |
| राज्यं | ராஜ்யத்தை | | |
| ज्येष्ठः | ஜ்யேஷ்ட | | |

न परेणाहतं भक्ष्यं व्याघ्रः खादितुमिच्छति । एवमेव नरव्याघ्रः परलीढं न मंस्यते ॥

| | | | |
|----------|---------------------|------------|------------------------------|
| व्याघ्रः | “புலியானது | एवं एव | இவ்வண்ணமே |
| परेण | மற்றொன்றால் | नरव्याघ्रः | புருஷோத்தமனாகும் அவன், |
| आहतं | உண்ணப்பட்ட | परलीढं | பிறரால் சுவையறியப் பட்டதை |
| भक्ष्यं | உணவை, | मंस्यते न | கண்ணெடுத்துத் பாரான். |
| खादितुं | பற்களால் கடிக்கவும் | | |
| इच्छति न | உடன்படாது. | | |

हविराज्यं पुरोडाशः कुशा यूपाश्च खादिराः । नैतानि यातयामानि कुर्वन्ति पुनरध्वरे ॥

| | | | |
|----------|--|-------------|----------------------------------|
| हविः | “ஹவின், | यूपाः च | பூபஸ்தம்பங்களென்ற |
| आज्यं | நெய், | एतानि | இவைகளை |
| पुरोडाशः | { யாகத்தில் நவேதனத் திற்காக மாநிலை செய்யப்படும் புரோ டாசம், | यातयामानि | ஏற்கனவே உபயோகி க்கப்பட்டனவாய் |
| कुशाः | தருப்பைகள், | पुनः | மீளவும் |
| खादिराः | கருங்காலிமரத்தால் செய்யப்பட்ட | अध्वरे | ஒரு யாகத்தில் |
| | | कुर्वन्ति न | உபயோகிக்க மாட்டார்கள். |

तथा ह्यात्तमिदं राज्यं हृतसारां सुरामिव । नाभिमन्तुपलं रामो नष्टसोममिवाध्वरम् ॥१८॥

| | | | |
|----------|----------------------------------|-----------|--|
| ராம: | “ஸ்ரீராமன் | நஷ்சோம் | { தீண்டலாய்போன ஸே ! மலதையை யுடைய |
| इदं | இந்த | अध्वरं | ஓர் யாகத்தை |
| आत्तं | அனுபவிக்கப்பட்ட | इव | எவ்வண்ணமோ |
| राज्यं | ராஜ்யத்தை [டதான | तथा | அவ்வண்ணமேயும், |
| हृतसारां | பிறரால் கொஞ்சம் குடிக்கப்பட்ட | अभिमन्तुं | கண்ணெடுத்துப் பார்க்க |
| सुरां | தீர்த்தபஞ்சபாத் திரக்தை | अलं हि न | இணங்கவே மாட்டான். |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமேயும் | | |

नैवविधमसत्कारं राघवो मर्षयिष्यति । बलवानिव शार्दूलो बालधेरभिमर्शनम् ॥ १९ ॥

| | | | |
|-----------|------------|---------------|----------------------------|
| राघवः | “ஸ்ரீராமன் | इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| बालधेः | வாலின் | एवविधं | இப்படிப்பட்ட |
| अभिमर्शनं | ஹிம்ஸையை, | असत्कारं | அவமானத்திற்கு |
| बलवान् | பலமுள்ள | मर्षयिष्यति न | இப்பொழுது இணங்கியிரான். |
| शार्दूलः | புலி | | |

नैतस्य सहिता लोका भयं कुर्युर्महामृधे । अधर्मं त्विह धर्मात्मा लोकं धर्मेण योजयेत् ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-----------|------------------------------|
| लोकाः | “உலகங்கள் | धर्मात्मा | தர்மாத்மாவாகுமவன் |
| सहिताः तु | ஒன்றுகூடிவந்தாலும், | इह | இவ்விஷயத்தில் |
| महामृधे | பெரும்போரில் | अधर्मं | தருமக்கீழ்வறியுள்ள |
| एतस्य | இவனுக்கு | लोकं | உலகத்தை |
| भयं | கலக்கத்தை | धर्मेण | தர்மானுசரணியால் |
| कुर्युः न | விளைவிக்கமுடியாது. | योजयेत् | அடக்கியமாய்க் கருது வான். |

नन्वसौ काञ्चनैर्बाणैर्महावीर्यो महाभुजः । युगान्त इव भूतानि सागरानपि निर्दहेत् ॥२१॥

| | | | |
|-----------|------------------------------------|-------------|--------------------------|
| ननु | “இல்லாவிடில் | युगान्ते | பிரளயகாலத்தில் |
| महावीर्यः | அமாணுஷசக்தி படை க்கப்பெற்றவனும் | भूतानि | உயிர்ப்பிராணிகளை யும் |
| महाभुजः | மகா பலசாலியுமான | सागरान् अपि | ஸமுத்திரங்களையும் |
| असौ | இவன் | इव | எவ்வண்ணமோ |
| काञ्चनैः | தேஜோம்யமாய் விளங்கும் | | அவ்வண்ணமே |
| बाणैः | பாணங்களால் | निर्दहेत् | எரிக்கமுடியும். |

स तादृशः सिंहबलो वृषभाक्षो नरर्षभः । स्वयमेव हतः पित्रा जलजेनात्मजो यथा ॥२२॥

| | | | |
|-----------|---|----------|---------------------------|
| तादृशः | “அப்படிப்பட்டவனும் | जलजेन | மீனூல் |
| सिंहबलः | சிங்கத்தையொத்த பலமுடையவனும், | आत्मजः | தன் சிசுவானது |
| | | यथा | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| वृषभाक्षः | { எருதின் கண்களை யொத்த கண்களை யுடையவனும், | पित्रा | தந்தையால் |
| नरर्षभः | புருஷோத்தமனுமான | स्वयं एव | தானாகவே |
| सः | அவன் | हतः | நாசம் செய்யப் பட்டான். |

द्विजातिचरितो धर्मः शास्त्रदृष्टः सनातनः । यदि ते धर्मनिरते त्वया पुत्रे विवासिते ॥२३॥

| | | | |
|---------------|--|---------------|--|
| धर्मनिरते | “தருமநெறி எள்ளள வும் தவறாத | शास्त्रदृष्टः | சாஸ்திரங்களிலனும் திக்கப்பட்டதும், |
| पुत्रे | புதல்வன் | सनातनः | முன்னோர்களாலனுஷ் டிக்கப்பட்டதுமாகிய |
| त्वया | உம்மால் | धर्मः | தருமமென்பது |
| विवासिते | காட்டிற்கு ஒட்டப்பட் டானென்றால் | ते | உமக்கு |
| द्विजातिचरितः | கூத்தரியர்களாலனுஷ் டிக்கப்படுகிறதும், | यदि | இருக்கிறதா? |

गतिरेका पतिर्नार्या द्वितीया गतिरात्मजः । तृतीया ज्ञातयो राजंश्चतुर्थी नेह विद्यते ॥२४॥

| | | | |
|----------|-----------------|-----------|--------------------|
| नार्याः | “ஒரு ஸ்திரீக்கு | तृतीया | மூன்றாவது |
| पतिः | கணவன் | ज्ञातयः | உறவினர்கள். |
| एका | முக்கியமான | राजन् | சக்கிரவர்த்தியாரே! |
| गतिः | கதி. | इह | இவ்வுலகில் |
| द्वितीया | இரண்டாவது | चतुर्थी | நான்காவது |
| गतिः | கதி | विद्यते न | கிடையாது. |
| आत्मजः | புத்திரன். | | |

तत्र त्वं चैव मे नास्ति रामश्च वनमाश्रितः । न वनं गन्तुमिच्छामि सर्वथा हि हता त्वया ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|---------|-------------------|
| रामः च | “ராமனும் | त्वं च | தேவரீரும் |
| वनं | காட்டிற்கு | मे | எனக்கு |
| आश्रितः | போய்விட்டனன். | अस्ति न | இல்லை. |
| वनं | காட்டிற்கு | हि | ஆனபடியால் |
| गन्तुं | செல்ல | त्वया | தேவரீரால் |
| इच्छामि न | நான் உடன்படவில்லை. | सर्वथा | எல்லா விதத்தாலும் |
| तव एव | இப்படியிருக்கையில் | हता | அழிந்தேன். |

हतं त्वया राज्यमिदं सराष्ट्रं हतस्त्वाऽऽत्मा सह मन्त्रिभिश्च ।

हता सपुत्राऽस्मि हताश्च पौराः सुतश्च भार्या च तव ग्रहणौ

॥ २६ ॥

| | | | |
|------------|------------------|-----------|---|
| त्वया | “உம்மால் | सपुत्रा | பிள்ளைபோடுகூட |
| इदं | இந்த | हता | அழிந்தேன். |
| सराष्ट्रं | நாடுகளுள் எரிட்ட | पौरा: च | நகரத்தாரும் |
| राज्यं | ராஜ்யம் | हता: | அழிந்தனர். |
| हतं | கேடடைந்தது. | तव | தேவரது |
| मन्त्रिभिः | மந்திரிமாரோடு | भार्या च | மனையாளும் |
| सह | கூட | सुतः च | திருக்குமாரனும் |
| आत्मा च | நீரும் | प्रहृष्टौ | { மனோரதங்கள் நிறை வேறப்பெற்று விளங் குகிறார்கள்.” |
| तथा | அவ்வண்ணமே | | |
| हतः | அழிந்தீர். | | |
| अस्मि | நான் | | |

इमां गिरं दारुणशब्दसंश्रितां निशम्य राजाऽपि मुमोह दुःखितः ।

ततः स शोकं प्रविवेश पार्थिवः स्वदुष्कृतं चापि पुनस्तदा स्मरन् ॥ २७ ॥

| | | | |
|--------------------|---------------------------|-------------|--------------------|
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | मुमोह | மூர்ச்சையடைந்தார். |
| इमां | இந்த | सः | அந்த |
| दारुणशब्दसंश्रितां | கொடிய சொற்களு டன்கூடிய | पार्थिवः | சக்கிரவர்த்தியார் |
| गिरं | மொழியை | ततः | அப்பொழுது |
| निशम्य | கேட்டு, | स्वदुष्कृतं | தனது தீச்செயலையே |
| दुःखितः अपि | அதி துன்பமடைந்த | पुनः | மீளவும் |
| | வராக இருந்தமையால் | स्मरन् अपि | நினைந்துகொண்டே |
| तदा | அப்பொழுது | शोकं च | சோகத்திலேயே |
| | | प्रविवेश | மூழ்கிவிட்டனர். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे एकषष्टितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 4798

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2443



द्विषष्टितमः सर्गः—अथपत्तिरण्डावतु सर्गः ॥ ६२ ॥

दशरथेन कौसल्याप्रसादनम्—தசரதர் கௌஸல்யையை சமாதானப்படுத்துவது.

एवं तु क्रुद्धया राजा राममात्रा सशोकया । आवितः परुषं वाक्यं चिन्तयामास दुःखितः ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------|------------|----------------------------|
| सशोकया | துயரத்தோடிருந்தவ ளும் | परुषं | கொடிய |
| तु | அதனால் | वाक्यं | வாத்தையை |
| क्रुद्धया | சினம் கொண்டிருந்த வாளுமான் | आवितः | சொல்லப்பட்ட |
| राममात्रा | ஸ்ரீராமரது தாயால் | राजा | சக்கிரவர்த்தியார் |
| एवं | ஒவ்வொருவரும் | दुःखितः | மனவேதனைப் படுகின்றவராய் |
| | | चिन्तयामास | கவையுற்றார். |

चिन्तयित्वा स च नृपो मुपोह व्याकुलेन्द्रियः । अतिदीर्घेण कालेन संज्ञामाप परन्तपः ॥

| | | | |
|------------------|-------------------------------|------------------|--------------------------|
| परन्तपः | பகைவர்களை தவிக்கச்செய்யும் | मुपोह | மெய்மறந்து கிடந்தார். |
| सः च | அவரும் | नृपः | சக்கிரவர்த்தியார் |
| व्याकुलेन्द्रियः | பொறிகலங்கியவராய் | अतिदीर्घेण कालेन | வெகுநேரம் சென்று |
| चिन्तयित्वा | சிந்தித்து, | संज्ञां | பிரக்கூலையை |
| | | आप | அடைந்தார். |

स संज्ञामुपलभ्यैव दीर्घमुष्णं च निश्वसन् । कौसल्यां पार्श्वतो दृष्ट्वा पुनश्चिन्तामुपागमत् ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-----------|--------------|
| सः | அவர் | पार्श्वतः | பக்கலில் |
| दीर्घं | நீண்டும் | कौसल्यां | கௌஸல்யாதேவி |
| उष्णं च | உஷ்ணமுமாக | दृष्ट्वा | கண்டு, [யாரை |
| निश्वसन् | மூச்சவிட்டுக்கொண்டு | पुनः | மறுபடியும் |
| संज्ञां | பிரக்கூலையை | चिन्तां | சிந்தையை |
| उपलभ्य एव | அடைந்ததும், | उपागमत् | அடைந்தார். |

तस्य चिन्तयमानस्य प्रत्यभात्कर्म दुष्कृतम् । यदनेन कृतं पूर्वमज्ञानाच्छब्दवेधिना ॥ ४ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------|---------------|---------------------|
| चिन्तयमानस्य | சிந்தையிலிருந்த | अज्ञानात् | அறியாமையால் |
| तस्य | அவருக்கு | यत् | யாதொன்று |
| अनेन | இவரால் | कृतं | செய்யப்பட்டதோ |
| शब्दवेधिना | ஒலியால் குறியை எப்பவராய் | | அந்த |
| पूर्वं | முன்னொருகால் | दुष्कृतं कर्म | தீச்செயலானது |
| | | प्रत्यभात् | சிந்தையிறோற்றிற்று. |

अमनास्तेन शोकेन रामशोकेन च प्रभुः । द्वाभ्यामपि महाराजः शोकाभ्यामन्वतप्यत ॥

| | | | |
|---------|---------------------------|---------------|------------------------------|
| प्रभुः | சாமர்த்தியசாலி யாகும் | रामशोकेन च | ராமரைப்பற்றிய துயரினாலும் |
| महाराजः | சக்கிரவர்த்தியார் | द्वाभ्यां | இவ்விரண்டு |
| तेनै | தன் சிந்தையிற் ரோற்றிய | शोकाभ्यां अपि | துயர்களாலும் |
| शोकेन | துயரச் செய்தியாலும் | अमनाः | ஸ்தம்பித்தவராய் |
| | | अन्वतप्यत | பரிதவித்தார். |

दह्यमानस्तु शोकाभ्यां कौसल्यामाह भूपतिः । वेपमानोऽञ्जलिं कृत्वा प्रसादार्थमवाञ्जुखः ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------|----------------|---------------------------------|
| शोकाभ्यां | இருவிதத் துயர்க் ளாலும் | अञ्जलिं कृत्वा | கைகுவித்து, |
| | | कौसल्यां | கௌஸலாதேவியா ரைப் பார்த்து |
| दह्यमानः | துன்புறும் | प्रसादार्थं तु | சாந்தப் படுத்துவதன் பொருட்டே |
| भूपतिः | சக்கிரவர்த்தியார் | आह | பின்வருமாறு |
| वेपमानः | மெய் நடுங்கி | | கூறினார்: |
| अवाञ्जुखः | தலைகுனிந்தவராய் | | |

प्रसादये त्वां कौसल्ये रचितोऽयं मयाऽञ्जलिः । वत्सला चाऽनृशंसा च त्वं हि नित्यं परेष्वपि॥

| | | | |
|----------|---------------------------------------|-----------|-----------------------|
| कौसल्ये | “கோஸலையே ! | त्वं हि | நீயோ |
| त्वां | உன்னை | परेषु | அபகாரிகளிடத்தும் |
| प्रसादये | மன்னிப்புக் கேட்டுக் கொள்ளுகிறேன். | अपि | சூட |
| अयं | இந்த | नित्यं | ஏப்பொழுதும் |
| अञ्जलिः | அஞ்சலியானது | वत्सला च | அன்புடையவள். |
| मया | என்னால் | आनृशंसा च | பெருநோக்குடைய வள். |
| रचितः | செய்யப்பட்டது. | | |

भर्ता तु खलु नारीणां गुणवान्निर्गुणोऽपि वा । धर्मं विमृशमानानां प्रत्यक्षं देवि दैवतम् ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|-------------|----------------------|
| देवि | “தேவியே ! | निर्गुणः वा | நற்குணமற்றவனாயினும், |
| धर्मं | தருமத்தை | | |
| विमृशमानानां | உள்ளபடியறியும் | प्रत्यक्षं | கட்புலனாகிய |
| नारीणां | மங்கையர்களுக்கு | दैवतं | தெய்வம் |
| भर्ता तु | சணவனொருவனே, | खलु | இல்லையா என்ன ? |
| गुणवान् अपि | நற்குணமுடையவனாயினும் | | |

सा त्वं धर्मपरा नित्यं दृष्टलोकपरावरा । नर्हसे विप्रियं वक्तुं दुःखिताऽपि सुदुःखितम् ॥

| | | | |
|---------------------|---|-------------|--|
| दृष्टलोक- परावरा | “லோகானுஷ்டானத் தால் விளையும் நன் மை தீமைகளை நன் குணரந்தவனும் | दुःखिता अपि | துன்புற்றவளாயினும் |
| नित्यं | ஸதா | सुदुःखितं | { உன்னிலுமதிகம் துன் புற்றிருக்குமென்னை (நோக்கி) |
| धर्मपरा | தர்மத்திலாஸக்தியு டையவளுமான | विप्रियं | வன்மொழியை |
| सा | அந்த | वक्तुं | பேச |
| त्वं | நீ | अर्हसे न | நிச்சயத்திருக்க லாகாது ” |

तद्वाक्यं करुणं राज्ञः श्रुत्वा दीनस्य भाषितम् । कौसल्या व्यसृजद्वाष्पं प्रणालीव नवोदकम् ॥

| | | | |
|---------|-------------------------------|----------|------------------------|
| कौसल्या | கோஸலாதேவியார் | वाक्यं | மொழியை |
| दीनस्य | கஷ்டப்பட்டுக் கொண் டிருந்த | श्रुत्वा | கேட்டு, |
| राज्ञः | சக்கிரவர்த்தியாரது | प्रणाली | ஜலதாரை |
| तत् | அந்த | नवोदकं | மழைநீலத்தை |
| करुणं | சோகரந்ததும்பியதாய் | इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| भाषितं | சொல்லப்பட்ட | वाष्पं | கண்ணீரை |
| | | व्यसृजत् | வடித்தாள். |

अथ प्रह्लादितो वाक्यैर्देव्या कौसल्यया नृपः । शोकेन च समाक्रान्तो निद्राया वशमेयिवान् ॥

अथ
शोकेन
समाक्रान्तः च
नृपः
कौसल्यया
देव्या

அப்பொழுது
சோகத்தால்
கவரப்பட்டவராயி
ருந்தும்
சக்கிரவர்த்தியார்
கோஸலா
தேவியால்

वाक्यैः
प्रह्लादितः
निद्रायाः
वशं
एयिवान्

இனிய மொழிகளால்
சற்று தேற்றப்பட்ட
வராய்
நித்திரையின்
அதினத்தை
அடைந்தார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
अयोध्याकाण्डे द्विषष्टितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 4818

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2463



त्रिषष्टितमः सर्गः—अमुपத்துமுன்னுவது ஸர்க்கம் ॥ ௨௩ ॥

मुनिकुमारवधकथनम्—முனிசுமாரனைக் கொன்றதைச் சொல்வது.

प्रतिबुद्धो मुहूर्तेन शोकोपहतचेतनः । अथ राजा दशरथः स चिन्तामभ्यपद्यत ॥ १ ॥

अथ
सः
दशरथः
राजा
मुहूर्तेन

அப்பொழுது
அந்த
தசரத
சக்கிரவர்த்தியார்
ஒரு முகூர்த்தகாலத்
தில்

प्रतिबुद्धः
शोकोपहत-
चेतनः
चिन्तां
अभ्यपद्यत

விழித்துக்கொண்ட
வராகி
சோகத்தால் புண்பட்
டுக்கிடக்கும் மனத்
தினராய்
கவலையில்
மூழ்கிக்கிடந்தார்.

रामलक्ष्मणयोश्चैव विवासाद्वासवोपमम् । आविवेशोपसर्गस्तं तमः सूर्यमिवासुरम् ॥ २ ॥

रामलक्ष्मणयोः
विवासात्
उपसर्गः
वासवोपमं
तं च

ராமலக்ஷ்மணர்களு
டைய
பிரிவால்
மனவருத்தமானது
இந்திரனையொத்த
அவரையும்

आसुरं
तमः
सूर्य एव
इव
आविवेश

அசுரானை
ராகு
சூரியபகவானையும்
எவ்வண்ணமோ
அவ்வண்ணமே
பற்றிக்கொண்டது.

सभार्ये हि गते रामे कौसल्यां कोसलेश्वरः । विवक्षुरसितापाङ्गां स्मृत्वा दुष्कृतमात्मनः ॥

कोसलेश्वरः
सभार्ये
रामे
गते हि
आत्मनः
दुष्कृतं

அயோத்திமன்னர்
மனைவியுடன்
ஸ்ரீராமர்
போயிருக்கையில்
தனது
பாபத்தொழிலை

स्मृत्वा
असितापाङ्गां
कौसल्यां
विवक्षुः

நினைத்து,
கருத்த கடைவிழிக
ளையுடைய
கோஸலாதேவியாரு
சொல்ல உத்தே [க்கு
சித்தார்.

स राजा रजनीं षष्ठीं रामे प्रवाजिते वनम् । अर्धरात्रे दशरथः संस्मरन्दुष्कृतं कृतम् ॥४॥

ச: அந்த
 दशरथः தசரத
 राजा சக்கிரவர்த்தியார்
 रामे ஸ்ரீராமர்
 वनं प्रवाजिते காட்டிற்கனுப்பப்பட்ட
 षष्ठीं ஆறாவது [ட பின்னர்

रजनीं இரவில்
 अर्धरात्रे நடுநிசியில்
 कृतं முன்செய்த
 दुष्कृतं தீவினையொன்றை
 संस्मरन् நினைத்துக்கொண்டார்.

स राजा पुत्रशोकार्तः स्मृत्वा दुष्कृतमात्मनः । कौसल्यां पुत्रशोकार्तमिदं वचनमब्रवीत् ॥

पुत्रशोकार्तः புத்திரசோகத்தால்
 துன்புற்ற

पुत्रशोकार्तं புத்திரசோகத்தால்
 துன்புறும்

स: அந்த
 राजा சக்கிரவர்த்தியார்
 आत्मनः தனது
 दुष्कृतं தீச்செயலை
 स्मृत्वा சிந்தையிற்கொண்டு,

कौसल्यां கோஸலாதேவியா
 இரப்பார்த்து
 इदं பின்வரும்
 वचनं சொல்லை
 अब्रवीत् மொழிந்தார் :

यदाचरति कल्याणि शुभं वा यदि वाऽशुभम् । तदेव लभते भद्रे कर्ता कर्मजमात्मनः ॥

भद्रे “உத்தமியென
 कल्याणि புகழ்படைக்கப்
 பெற்றவளே!
 कर्ता ஒரு செயலை புரிபவன்
 शुभं वा நல்வினையையாவது
 अशुभं वा தீவினையையாவது
 यत् இவ்விரண்டில்
 எதையாவது

आचरति यदि செய்வானேயாகில்
 आत्मनः தனது
 कर्मजं வினையின் பயனாய்
 விளையும்
 तत् एव அதையே
 लभते பெறுகின்றான்.

गुह्याघवमर्थानामारम्भे कर्मणां सुखम् । दोषं वा यो न जानाति स बाल इति होच्यते ॥

य: “எவனொருவன்
 कर्मणां காரியங்களுடைய
 आरम्भे ஆரம்பத்தில்
 अर्थानां அவைகளின் பலன்க
 ளுடைய

दोषं वा தீமையையும்,
 जानाति न ஆராய்ந்துணராம
 வீருக்கின்றனோ

गुह्याघवं பெருமை சிறுமையையும்,
 सुखं நன்மையையும்,

स: ह அவன்தான்
 बालः इति சூடனென
 उच्यते அழைக்கப்படுகின்
 றான்.

कश्चिदाम्रवणं छित्वा पलाशांश्च निषिञ्चति । पुष्पं दृष्ट्वा फले गृध्रः स शोचति फलागमे ॥

कश्चित् “ஒருவன்
 पुष्पं புஷ்பத்தை
 दृष्ट्वा முதலில் கண்டு,
 फले பழத்தில்
 गृध्रः விருப்பமுடையவனாய்
 आम्रवणं மாந்தோப்பை

छित्वा வெட்டியெறிந்துவிட்டு
 पलाशान् च பலசமரங்களையே [டு
 निषिञ्चति வளர்க்கின்றனோ
 स: அவன் [யத்தில்
 फलागमे பழம் தோன்றிய சம-
 शोचति அனுதாபிப்பான்.

अविज्ञाय फलं यो हि कर्म त्वेवानुधावति । स शोचेत्फलवेलायां यथा किंशुकसेचकः ॥

यः “எவனொருவன்
फलं பயனை
अविज्ञाय ஆராயாது,
कर्म एव செய்யலையோ
अनुधावति அவசரப்பட்டுசெய்து
सः அவன் [விடுகின்றானோ]

किंशुकसेचकः பலாசத்தை வளர்ப்ப
यथा எவ்வண்ணமோ [வன்
அவ்வண்ணமே
फलवेलायां तु பயனையனுபவிக்கும்
சமயத்தில்தான்
शोचेत् हि தவிக்கிறுனல்லவா ?

सोऽहमात्रवणं छित्वा पलाशान् न्यषेचयम् । रामं फलागमे त्यक्त्वा पश्चाच्छोचामि दुर्मतिः॥

सः “அந்த
दुर्मतिः புத்திகெட்ட
अहं நான்
आम्रवणं மாந்தோப்பை
छित्वा அழித்து.
पलाशान् च பலாசங்களையே
न्यषेचयं வளரச்செய்தேன்.

रामं ராமனை
त्यक्त्वा விட்டு,
पश्चात् பிறகு
फलागमे பயனுண்டாகும்
காலையில்
शोचामि பரிதவிக்கின்றேன்.

लब्धशब्देन कौसल्ये कुमारं धनुष्मता । कुमारः शब्दवेधीति मया पापमिदं कृतम् ॥

कौसल्ये “கோஸலையே,
कुमारः ‘ராஜகுமாரர்
शब्दवेधी { சப்தத்தைக்கொண்
டே இலக்கை வீழ்த்
துபவர்.’
इति என்று
लब्धशब्देन பிரசித்திபெற்றவனும்

कुमारः शब्दवेधीति मया पापमिदं कृतम् ॥

कुमारेण சிறுவனும்
धनुष्मता வில்லாளியுமான
मया என்னால்
इदं பின் கூறப்படும்
पापं தீச்செயல்
कृतम् புரியப்பட்டது.

तदिदं मेऽनुसम्प्राप्तं देवि दुःखं स्वयं कृतम् । सम्मोहादिह बाल्येन यथा स्याद्भक्षितं विषम् ॥

देवि “தேவியே!
सम्मोहात् அறியாமையால்
भक्षितं உட்கொண்ட
विषं விஷமானது
यथा स्यात् எவ்விதமாகுமோ
அவ்விதமே

बाल्येन மௌட்டியத்தால்

स्वयं தானாக
कृतं செய்துகொண்ட
तत् அந்த
दुःखं கஷ்டம்
इह இப்பொழுது
इदं இவ்விதமாய்
मे எனக்கு
अनुसम्प्राप्तम् வினோந்திருக்கிறது.

यथान्यः पुरुषः कश्चित्पलाशैर्मोहितो भवेत् । एवं ममाप्यविज्ञातं शब्दवेध्यमयं फलम् ॥

कश्चित् ஒரு
अन्यः சாதாரண
पुरुषः மானிடன்
पलाशैः பலாச புஷ்பங்களால்
मोहितः எமாற்றமடைந்தவனு
யை
यथा भवेत् எவ்விதமாவானோ

एवं ममाप्यविज्ञातं शब्दवेध्यमयं फलम् ॥

एवं இவ்வண்ணமே
मम अपि எனக்கும்
शब्दवेध्यमयं { சப்தத்தைக்கொண்டு
இலக்கை வீழ்த்துவ
தால் வினையும்
फलं தீங்கு
अविज्ञातम् தெரியாதிருந்தது.

देव्यनूढा त्वमभवो युवराजो भवाम्यहम् । ततः प्रावृडनुप्राप्ता मदकामविवर्धनी ॥ १४ ॥

| | | | |
|---------|--------------|-------------|--------------------|
| देवि | “தேவியே! | ततः | அக்காலத்தில் |
| त्वं | நீ | मदकाम- | ஊக்கத்தையும், கா |
| अनूढा | கண்ணியாய் | विवर्धनी } | மத்தையும் விருத்தி |
| अभवः | இருந்தனை. | | செய்யும் |
| अहं | நான் | प्रावृट् | கார்காலம் |
| युवराजः | இளவரசாய் | अनुप्राप्ता | வந்தது. |
| भवामि | இருக்கிறேன். | | |

उपास्य हि रसान्भौमांस्तप्त्वा च जगदंशुभिः । परेताचरितां भीमां रविराविशते दिशम् ॥

| | | | |
|---------|--------------------|-------------|-----------------------|
| रविः हि | “சூரியபகவானோவெனில் | रसान् | ஜலங்களை |
| अंशुभिः | கிரணங்களால் | उपास्य च | வற்றடித்து, |
| जगत् | உலகை | परेताचरितां | இறந்தவாச்சஞ்சரிக்கும் |
| तप्त्वा | எரித்து, | भीमां | பயங்கரமான |
| भौमान् | தரையிலுள்ள | दिशं | தென் திசையை |
| | | आविशते | அடைகிறது. |

उष्णमन्तर्दधे सद्यः स्निग्धा ददृशिरे घनाः । ततो जहृषिरे सर्वे भेकसारङ्गवर्हिणः ॥ १५ ॥

| | | | |
|-----------|--------------|------------------|------------------------------|
| सद्यः | “உடனே | ततः | அப்பொழுது |
| उष्णं | வெம்மை | भेकसारङ्गवर्हिणः | தவளைகள், சாதகங்கள், மயில்கள் |
| अन्तर्दधे | அடங்கிற்று. | सर्वे | எல்லாம் |
| घनाः | மேகங்கள் | जहृषिरे | களித்தன. |
| स्निग्धाः | நீருள்ளனவாய் | | |
| ददृशिरे | திகழ்ந்தன. | | |

क्लिन्नपक्षोत्तराः स्नाताः कृच्छ्रादिव पतत्रिणः । वृष्टिवातावधूताग्रान्पादपानभिपेदिरे ॥ १७ ॥

| | | | |
|--------------------|-------------------------------|---------------|------------------|
| पतत्रिणः | “பறவைகள் | वृष्टिवाता- | மழைக்காற்றுவசைக் |
| क्लिन्नपक्षोत्तराः | நனைந்தமேலிறக்கைகளை யுடையனவாகி | वधूताग्रान् } | சப்பெட்ட தனிக |
| स्नाताः इव | ஸ்நானம்செய்தவை போன்று | पादपान् | நையுடைய |
| | | कृच्छ्रात् | விருக்தங்களை |
| | | अभिपेदिरे | வெகு கஷ்டப்பட்டு |
| | | | அடைந்தன. |

पतितेनाम्भसा छन्नः पतमानेन चासकृत् । आबभौ मत्तसारङ्गस्तोयराशिरिवाचलः ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------|-------------|-----------------|
| अचलः | “பர்வதம் | छन्नः | முடப்பட்டதாயும் |
| पतितेन | பொழிந்ததாயும் | मत्तसारङ्गः | மதுக்கொண்ட யானை |
| असकृत् | ஒராமல் | | களையுடையதுமாக |
| पतमानेन च | பொழிந்துகொண்டிருக்கிறதாயான | तोयराशिः इव | சமுத்திரமென |
| अम्भसा | நீரால் | आबभौ | விளங்கிற்று. |

पाण्डुरारुणवर्णानि स्रोतांसि विमलान्यपि । सुसुबुर्गिरिधातुभ्यः सभस्मानि भुजङ्गवत् ॥

| | | | |
|---------------------------|---|-----------|--|
| स्रोतांसि विमलानि अपि | “அருவிகள் தெளிவானவைகளா யிருந்தும் | सभस्मानि | { (காட்டுத்தீயின்) சாம் பல் கலக்கப்பெற்ற னவாய் |
| गिरिधातुभ्यः | மலையின் தாதுப் பொருள்களால் | भुजङ्गवत् | பாம்புகள்போல |
| पाण्डुरारुण- वर्णानि } | பசுமையாகவும் சிவப் பாயுமுள்ள நிறமுள் ளவைகளாய் | सुसुबुः | பெருகின. |

तस्मिन्नतिसुखे काले धनुष्मानिषुमात्रथी । व्यायामकृतसङ्कल्पः सरयूमन्वगां नदीम् ॥

| | | | |
|----------------------------|---------------------------------------|----------|-----------------------|
| तस्मिन् अतिसुखे काले | “அந்த உல்லாஸமாயிருந்த காலத்தில் | इषुमान् | பாணத்தையுடையவ னாய் |
| व्यायामकृत- सङ्कल्पः } | தேகப்பயிர்ச்சியில் மனங்கொண்டவனாய் | रथी | ரதமேறியவனாய் |
| धनुष्मान् | வில்லாளியாய் | सरयू | சரயூ |
| | | नदीं | நதியை |
| | | अन्वगाम् | அடைந்தேன். |

निपाने महिषं रात्रौ गजं वाभ्यागतं नदीम् । अन्यं वा श्वापदं कञ्चिज्जिघांसुरजितेन्द्रियः ॥
अथान्यकारे त्वश्रौषं जले कुम्भस्य पूर्यतः । अचक्षुर्विषये घोषं वारणस्येव नर्दतः ॥२२॥

| | | | |
|---------------|---|---------------|-------------------------------|
| अजितेन्द्रियः | “இந்திரியநிக்கிரகம் செய்யாதிருந்த நான் | जिघांसुः | கொல்ல விரும்பியவ |
| रात्रौ | இரவில் | अथ | அப்பொழுது |
| निपाने | பிராணிகள் நீராருந் தும் துறையில் | अचक्षुर्विषये | கண்ணுக்கு மறைவா ன இடத்தில் |
| नदीं अभ्यागतं | நதிக்குவரும் | अन्वकारे | அடர்ந்த இருளில் |
| महिषं | எருமையையோ, | जले | ஜலத்தில் |
| गजं वा | யானையையோ, | पूर्यतः | அமிழ்த்தப்படும் |
| अन्यं | வேறு | कुम्भस्य | குடத்தினது |
| कञ्चित् | ஏதாவதொரு | घोषं | சத்தத்தை |
| श्वापदं वा | கொடிய மிருகத்தை யோ, | नर्दतः | சத்திக்கிற |
| | | वारणस्य इव तु | யானையுடையதென்றே |
| | | अश्रौषम् | அறிந்துகொண்டேன். |

ततोऽहं शरमुद्धृत्य दीप्तमाशीविषोपम् । शब्दं प्रति गजप्रेप्सुरभिलक्ष्य त्वपातयम् ॥ २३ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------------|-------------|-----------------|
| ततः | “உடனே | उद्धृत्य | எடுத்து, |
| अहं | நான் | गजप्रेप्सुः | யானையை அடைய |
| दीप्तं | ஜ்வலிக்கின்றதும் | | விரும்பியவனாய் |
| आशीविषोपम् तु | பாம்பிற்குச்சமமான துமான | शब्दं प्रति | சத்தத்தை நோக்கி |
| | | अभिलक्ष्य | குறிவைத்து |
| शरं | அம்பை | अपातयम् | விடுத்தேன். |

अमुञ्चं निशितं बा गमहमाशीविषोपमम् । तत्र वागुपसि व्यक्ता प्रादुरासीद्वनौकसः ॥२४॥

| | | | |
|------------|-------------|--------------|-----------------|
| अहं | “நான் | वनौकसः | ஒரு வனவாசியினது |
| आशीविषोपमं | பாம்பையொத்த | व्यक्ता | தெளிவான |
| निशितं | சூரிய | वाक् | வார்த்தை |
| बाणं | அம்பை | उपसि | கா தில் |
| अमुञ्चं | விடுத்தேன். | प्रादुरासीत् | விழுந்தது. |
| तत्र | அப்பொழுது | | |

हा हेति पततस्तोये बाणाभिहतमर्मणः ॥ २५ ॥

तस्मिन्निपतिते बाणे वागभूत्तत्र मानुषी । कथमस्मद्विधे शस्त्रं निपतेत्तु तपस्विनि ॥ २६ ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------------|-------------|--------------------------------|
| तस्मिन् | “அந்த | मानुषी वाक् | மனிதர் வார்த்தை |
| बाणे | அம்பு | तत्र | அங்கு |
| निपतिते | விழுந்ததும் | अभूत् | (பின்வருமாறு) உண் டாயிற்று: |
| बाणाभिहतमर्मणः | அம்பாலடியுண்ட மர் மத்தையுடையவனும் | अस्मद्विधे | ‘எம்மையொத்த |
| हा हा इति | ‘ஹா ஹா’ என்று | तपस्विनि तु | தவசியின்பேரிலும் |
| तोये | நீரில் | शस्त्रं | ஆயுதம் |
| पततः | விழுகிறவனுமான ஒ ருவனது | कथं | ஏன் |
| | | निपतेत् | விழவேண்டும்? |

प्रविविक्तां नदीं रात्रावुदाहारोऽहमागतः । इषुणाऽभिहतः केन कस्य वाऽपकृतं मया ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------------|---------|---------------------------|
| प्रविविक्तां | “ஜனசஞ்சாரமற்ற | इषुणा | அம்பால் |
| नदीं | ஆற்றிற்கு | केन | யாரால் |
| रात्रौ | இரவில் | अभिहतः | அடியுண்டேன்? |
| उदाहारः | நீரெடுத்துச் செல்ப வனம் (ஆர்ஷம்) | मया | என்னால் |
| आगतः | இங்குவந்த | कस्य वा | யாருக்குத்தான் |
| अहं | நான் | अपकृतम् | தீங்கிழைக்கப்பட்ட டது? |

ऋषेर्हि न्यस्तदण्डस्य वने वन्येन जीवतः । कथं नु शस्त्रेण वधो मद्विधस्य विधीयते ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------|-----------|------------------------------|
| न्यस्तदण्डस्य | “ஹிம்ஸையை யொ ழித்தவனும் | मद्विधस्य | என்போன்ற |
| वने | வனத்தில் | ऋषेः हि | ரிஷிக்கும் |
| वन्येन | காட்டில் கிடைப்ப தைக்கொண்டு | शस्त्रेण | ஆயுதத்தால் |
| जीवतः | காலங்கடத்துபவனு மான | वधः | கொல்லானது |
| | | कथं नु | என்தான் |
| | | विधीयते | விதிக்கப்பட்டிருக் கிறதோ? |

जटाभारधरस्यैव वल्कलाजिनवाससः । को वधेन ममार्थी स्यात्किं वाऽस्यापकृतं मया ॥

| | | | |
|-------------------------|------------------------------------|-----------|-------------------------------|
| जटाभारधरस्य | “ ‘ஜடைமுடியைப் | अर्थी | பிரயோஜனமுடைய |
| | பூண்டவனும், | स्यात् | ஆவான்? [வகை |
| वल्कलाजिन- } वाससः } | மரவுரியையும் மான் தோலையுமணிந்தவ | अस्य | இவனுக்கு |
| मम | எனது [னுமாகிய | मया | என்னால் |
| वधेन एव | சாவாஸ்தான் | अपकृतं वा | புரியப்பட்ட தீச் செயஸ்தான் |
| कः | எவன் | किम् | என்ன? |

एवं निष्फलमारब्धं केवलानर्थसंहितम् । न किञ्चित्साधु मन्येत यथैव गुरुतल्पगम् ॥३०॥

| | | | |
|--------------------------|---------------------------------------|----------|------------------|
| एवं | “ ‘இவ்வண்ணமாய் | यथा एव | எவ்வண்ணமோ |
| आरब्धं | இக்காரியமானது | | அவ்வண்ணமே |
| निष्फलं | பயனற்றது. | किञ्चित् | சற்றும் |
| केवलानर्थ- } संहितं } | காரணமின்றி தீங்கை யே புரிந்த இவனை, | साधु | ஒழுங்கானதாய் |
| गुरुतल्पगं | குருதல்பகமனம் செய்தவனை | मन्येत न | ஒருவருங்கருதார். |

नेपं तथाऽनुशोचामि जीवितक्षयमात्मनः । मातरं पितरं चोभावनुशोचामि मद्वधे ॥ ३१ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|------------------------|
| मद्वधे | “ ‘எனது மாணத்தில் | अनुशोचामि न | பாராட்டி வருந்த |
| आत्मनः | தனது | मातरं | தாய் [வில்லை. |
| इमं | இந்த | पितरं | தந்தை |
| जीवितक्षयं | உயிர் போவதை | च उभौ | என்ற இருவரைப் பற்றி |
| तथा | அவ்வளவாக | अनुशोचामि | மிக்க வருந்துகிறேன். |

तदेतन्मिथुनं वृद्धं चिरकालभृतं मया । मयि पञ्चत्वमापन्ने कां वृत्तिं वर्तयिष्यति ॥ ३२ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------------|-------------|-------------------------|
| तत् | “ ‘அந்த | मयि | நான் |
| वृद्धं | முதியவர்களும் | पञ्चत्वं | மாணத்தை |
| मया | என்னால் | आपन्ने | அடைந்த பின்னர் |
| चिरकालभृतं | வெகுகாலம்பாதுகாக் கப்பட்டவர்களுமான | कां | எந்த |
| एतत् मिथुनं | என் தாய்தந்தைய ரிருவரும் | वृत्तिं | வாழ்க்கையை |
| | | वर्तयिष्यति | நடத்தப்போகிறார் கள்? |

वृद्धौ च मातापितरावहं चैकेषुणा हतः । केन स निहताः सर्वे सुबालेनाकृतात्मना ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|----------|---------------------------|
| मातापितरौ च | “ ‘தாய்தந்தையர்களும் | सुबालेन | முழு மூடனாகிய |
| वृद्धौ | முதியவர்கள். | केन | எவனால் |
| अहं च | நானும் | सर्वे | நாங்களெல்லோரும் |
| एकेषुणा | ஒரே அம்பினால் | निहताः स | நாசம் செய்யப்பட் டோம்? |
| हतः | வீழ்த்தப்பட்டேன். | | |
| अकृतात्मना | மகா பாபியாகிய | | |

तां गिरं करुणां श्रुत्वा मम धर्मानुकाक्षिणः । कराभ्यां सशरं चापं व्यथितस्यापतद्भुवि ॥

| | | | |
|-----------------|----------------------------|----------|----------------|
| तां | “அந்த | மம | எனது |
| करुणां | இரக்கமான | कराभ्यां | கைகளிலிருந்து |
| गिरं श्रुत्वा | சொல்லைக் கேட்டு, | सशरं | அம்புடன் கூடிய |
| व्यथितस्य | வருந்தியவனும் | चापं | வில் |
| धर्मानुकाक्षिणः | தருமத்தை விரும்புகிறவனுமான | भुवि | பூமியில் |
| | | अपतत् | விழுந்தது. |

तस्याहं करुणं श्रुत्वा बहु लालपतो निशि । संभ्रान्तः शोकवेगेन भृशमासं विचेतनः ॥

| | | | |
|------------|--------------------|-------------|----------------------|
| निशि | “இரவில் | अहं | நான் |
| बहु लालपतः | பலவாராய்ப்புலம்பிய | भृशं | மிகவும் |
| तस्य | அவனது | सम्भ्रान्तः | மனக்குழப்பமுற்றவனும் |
| करुणं | இரக்கமொழியை | | |
| श्रुत्वा | கேட்டு, | विचेतनः | அறிவிழந்தவனும் |
| शोकवेगेन | துயரின் மிகையால் | आसम् | ஆனேன். |

तं देशमहमागम्य दीनसत्त्वः सुदुर्मनाः । अपश्यमिषुणा तीरे सरयवास्तापसं हतम् ॥३६॥
अवकीर्णजटाभारं प्रविद्धकलशोदकम् । पांसुशोणितदिग्धाङ्गं शयानं शल्यपीडितम् ॥३७॥

| | | | |
|------------|-----------------------|-------------------------------|--|
| अहं | “நான் | हतं | வீழ்த்தப்பட்டுருக்கிறவனாகவும் |
| दीनसत्त्वः | தேரியமிழந்தவனும் | अवकीर्णजटाभारं | அவிழ்ந்த ஜடைமுடிபையுடையவனாகவும் |
| सुदुर्मनाः | மிக்க மனம் நொந்தவனும் | प्रविद्धकलशोदकं | கவிழ்ந்த குடத்துக்கையுடையவனாகவும் |
| सरयवाः | சரயூவினது | पांसुशोणित- } दिग्धाङ्गं } | உடம்பெல்லாம் புழுதியும் சத்தமும்படித்தவனாகவும் |
| तीरे | கரையில் | शल्यपीडितं | அம்பாவிடியுண்டு |
| तं | அந்த | शयानं | படுத்துக்கிடப்பவ |
| देशं | இடத்திற்கு | अपश्यम् | கண்டேன். [னாகவும் |
| आगम्य | வந்து, | | |
| तापसं | ஓர் தபசியை | | |
| इषुणा | அம்பால் | | |

स मामुद्दीक्ष्य नैत्राभ्यां त्रस्तमस्वस्थचेतसम् । इत्युवाच वचः क्रूरं दिक्षन्निव तेजसा ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|-------------|-------------------|
| सः | “அவர் | दिक्षन् इव | எரிக்கிறவர்போல |
| वस्तं | உள்ளம் நடுங்கியவனும் | नैत्राभ्यां | இரு கண்களாலும் |
| अस्वस्थचेतसं | மனக்கலக்கமுற்றவனுமான | उद्दीक्ष्य | நிமிர்ந்துகொக்கி, |
| | | क्रूरं | கொடிய |
| मां | என்னை | वचः | வார்க்கதையை |
| तेजसा | ஒளியால் | इति | பின்வருமாறு |
| | | उवाच | மொழிந்தார். |

किं तवापकृतं राजन्वने निवसता मया । जिहृषुर्ममो गुर्वर्थं यदहं ताडितस्त्वया ॥३९॥

| | | | |
|-----------|--------------------|--------|---------------------|
| राजन् | “ அரசனை ! | यत् | இப்படிச் செய்வதற்கு |
| गुर्वर्थं | தாய்தனதையற்காக | वने | வனத்தில் |
| अम्भः | இவ்வைத | निवसता | வசித்துவரும் |
| जिहृषुः | எடுத்துக்கொள்ளவந்த | मया | என்னால் |
| अहं | நான் | तव | உமக்கு |
| त्वया | உமால் | अपकृतं | விளைந்த அபகாரம் |
| ताडितः | தாக்கப்பட்டேன் : | किम् | என்ன ? |

एकेन स्मृतु बाणेन मर्मण्यभिहते मयि । ह्यन्धौ निहन्तौ वृद्धौ माता जनयिता च मे ॥

| | | | |
|--------|-------------------|----------|--------------------|
| मयि | “ என | मे | எனது |
| एकेन | ஒரு | माता | தாய் |
| बाणेन | அம்பினால் | जनयिता च | தந்தையாருமாகிய |
| मर्मणि | உயிர்க்கிழையில் | द्वौ | இருவர்களும் |
| अभिहते | அடிபட்டவளில் | निहन्तौ | கொல்லப்பட்டார்கள். |
| अन्धौ | கண்ணிறந்தவர்களும் | वृद्धौ | ஐயோ! என்ன |
| वृद्धौ | அப்பிணர்களும் | | கஷ்டம்! |

तौ नूनं दुर्बलावन्धौ मत्पतीक्षौ पिपासितौ । चिरमाशाकृतां कष्टां तृष्णां संधारयिष्यतः ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|--------------|--|
| दुर्बलौ | “ முடியாதவர்களும் | आशाकृतां | ஆவசரால் விளைந்த |
| अन्धौ | கண்ணிறந்தவர் | कष्टां | சிக்க முடியாத |
| | களும் | तृष्णां | தாகத்தை |
| पिपासितौ | தாகப்பிப் கொண்ட | नूनं | இனிமேலாக |
| | வர்கள் | चिरं | கடைசியாய் |
| मत्पतीक्षौ | என்னை எதிர்பார்க்க | संधारयिष्यतः | { தக்களுள்ளேயே அடக்கிக்கொள்ளு வார்கள். |
| तौ | செய்வார்களாக அவ்விருவர்களும் | | |

न नूनं तपसो वास्ति फलयोगः श्रुतस्य वा । पिता यन्मां न जानाति शयानं पतितं भुवि ॥

| | | | |
|----------|----------------------|-------------|-----------------|
| मां | “ என்னை | यत् | எதுவோ அதனால் |
| शुवि | தவரவில் | तपसः वा | தவத்திற்காவது |
| पतितं | விழுந்தது | श्रुतस्य वा | ஞானத்திற்காவது |
| शयानं | படுத்துக்கிடக்கின்றவ | फलयोगः | குறிப்பிட்ட ஒரு |
| | ளாய் | | பயனாவது |
| पिता | தந்தையார் | नूनं | உண்மையில் |
| जानीते न | அறியவில்லை. | अस्ति न | இல்லை. |

जानन्नपि च किं कुर्यादशक्तिरपरिक्रमः । भिद्यमानमिवाशक्तस्त्रातुमन्यो नगो नगम् ॥४३॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-------------|-----------------|
| जानन्नपि | “அறிந்தாலும் | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| भिद्यमानं | வெட்டித்தள்ளப் | | வண்ணமே |
| नगं | ஒரு மரத்தை [படும் | अशक्तिः | தள்ளாதவரும் |
| स्त्रातुं | காப்பாற்ற | अपरिक्रमः च | நடக்கமுடியாதவரு |
| अन्यः | பக்கலிலிருக்கும் | | மாகிய அவர் |
| नगः | மரமானது | किं | என்ன |
| अशक्तः | இயலாதது; | कुर्यात् | செய்யமுடியும்? |

पितुस्त्वमेव मे गत्वा शीघ्रमाचक्ष्व राघव । न त्वामनुदहेत्कुदो वनं वह्निरिवैधितः ॥४४॥

| | | | |
|---------|-------------------|------------|-------------------|
| राघव | “ரகுலபுத்திரனே ! | क्रुदः | சினந்தவராய் |
| त्वं एव | கீரே | एधितः | மண்டிய |
| शीघ्रं | உடனே | वह्निः | தீ |
| गत्वा | சென்று, | वनं | மரத்தை |
| मे | எனது | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| पितुः | தந்தைக்கு | त्वां | உம்மை [வண்ணமே |
| आचक्ष्व | விஷயம் தெரிவித்து | अनुदहेत् न | எரிக்காமலிருக்கட் |
| | விடும்; | | டும் |

इयमेकपदी राजन्यतो मे पितुराश्रमः । तं प्रसादय गत्वा त्वं न त्वां संकुपितः शपेत् ॥

| | | | |
|--------|---------------------|----------|-----------------|
| राजन् | “அரசே ! | चं | சீர் |
| मे | எனது | तं | அவரை |
| पितुः | தந்தையாருடைய | गत्वा | அடைந்த. |
| आश्रमः | ஆசிரமமானது | प्रसादय | சமாதானப்படுத்து |
| यतः | எவ்விடத்திலிருக்கிற | | விரக. |
| | தோ அதற்கு | संकुपितः | ஞானகோபம் கொண் |
| इयं | இதோவிலிருக்கும் | | டவராய் |
| एकपदी | ஒக்தையடிப்பாதை | त्वां | உம்மை |
| | தான் வழி. | शपेत् न | சபாதிசூப்பார். |

विशल्यं कुरु मां राजन्मर्म मे निशितः शरः । रुणद्धि मृदु सोत्सेधं तीरमम्बुरयो यथा ॥

| | | | |
|----------|-----------------|---------|------------------|
| राजन् | “அரசனே ! | यथा | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| निशितः | கூரிய | | வாறே |
| शरः | அம்பு | मृदु | கொஞ்சங்கொஞ்சமாய் |
| मे | எனது | रुणद्धि | வதைக்கிறது. |
| मर्मं | உயிர்நிலையை | मां | என்னை |
| अम्बुरयः | நீரின் வேகமானது | विशल्यं | அம்பில்லாதவனாய் |
| सोत्सेधं | பெரிய மேடுடைய | कुरु | செய்யும். |
| तीरं | கரையை | | |

सशल्यः क्षियते प्राणैर्विशल्यो विनशिष्यति । इति मामविशचिन्ता तस्य शल्यापकर्षणे ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|------------|---------------------------|
| तस्य | “ அவனது | विनशिष्यति | மாண்டுவிடுவான், |
| शल्यपकर्षणे | அம்பையெடுத்துவி டும் விஷயத்தில், | इति | (என்செய்வது) என்ப தால் |
| सशल्यः | ‘அம்புடன் கூடியவனாய் | चिन्ता | மனக்கலக்கமானது |
| प्राणैः | உயிரால் | मां | என்னிடத்தில் |
| क्षियते | வருத்தப்படுகின்றான், | अविशत् | குடிபுகுந்தது. |
| विशल्यः | அம்பற்றவனாய் | | |

दुःखितस्य च दीनस्य मम शोकातुरस्य च । लक्ष्यामास हृदये चिन्तां मुनिसुतस्तदा ॥

| | | | |
|------------|-------------------|--------------|-------------------|
| मुनिसुतः च | “ ரிஷிகுமாரனும், | शोकातुरस्य च | வருத்தத்தால் வாடி |
| तदा | அப்பொழுது | मम | எனது [னவனுமான |
| दुःखितस्य | கஷ்டப்படுகிறவனும் | हृदये | உள்ளத்தில் |
| दीनस्य | தையமுற்றவனும் | चिन्तां | ஏற்பட்ட கவலையை |
| | | लक्ष्यामास | கண்டுகொண்டான். |

ताम्यमानः स मां कृच्छ्रादुवाच परमार्तवत् । सीदमानो विवृत्ताङ्गो वेष्टमानो गतः क्षयम्॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|------------|----------------------------|
| सः | “ அவன் | क्षयं गतः | முடிவைச் சமீபித்தவ னாய் |
| ताम्यमानः | பேசச் செயலற் றவனாய் | परमार्तवत् | துயரமிகக் குரலோ டும் |
| सीदमानः | ஸர்வமுமொடுங்கியவ னாய் | कृच्छ्रात् | கஷ்டத்தோடும் |
| विवृत्ताङ्गः | உடலைத் திருப்பிக் கொண்டவனாய் | मां | என்னை நோக்கி |
| वेष्टमानः | புரண்டுகொண்டே | उवाच | பின்வருமாறு மொழிந்தான்: |

संस्तभ्य शोकं धैर्येण स्थिरचित्तो भवानघ । ब्रह्महत्याकृतं पापं हृदयादपनीयताम् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|-----------------|---------------------------|
| अनघ | “ குற்றமற்றவனே ! | भव | இரும். |
| धैर्येण | தேரியத்தால் | ब्रह्महत्याकृतं | பிரம்மஹத்தியா லுண் டான |
| शोकं | சோகத்தை | पापं | பாபமானது |
| संस्तभ्य | அடக்கிக்கொண்டு, | हृदयात् | மனதிலிருந்து |
| स्थिरचित्तः | மனக்கவலையொழிந் தவனாய் | अपनीयताम् | ஒழிக்கப்பட்டதும். |

न द्विजातिरहं राजन्मा भूते मनसो व्यथा । शूद्रायामस्मि वैश्येन जातो जनपदाधिप ॥

| | | | |
|-----------|----------|-----------|----------------------|
| राजन् | “ அரசே ! | मा भूत् | ஏற்படவேண்டாம். |
| अहं | நான் | जनपदाधिप | நாட்டினிறைவனே ! |
| द्विजातिः | பிராமணன் | शूद्रायां | சூத்திரஸ்திரீயினிடம் |
| न | அல்லேன். | वैश्येन | வைச்யனால் |
| ते | உமது | जातः | உண்டானவன் |
| मनसः | மனதிற்கு | अस्मि | நான். |
| व्यथा | வருத்தம் | | |

इतीव वदतः कृच्छ्राद्धाणाभिहतमर्मणः । विधूर्णतो विचेष्टस्य वेपमानस्य भूतले ॥ ५२ ॥
तस्य त्वाताम्यमानस्य तं बाणमहमुद्धरम् । स मामुद्धीक्ष्य संव्रस्तो जहौ प्राणांस्तपोधनः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|---------------|--------------------|
| इतीव | “இவ்வாறு | तस्य | அவனது |
| कृच्छ्रात् | வெகு கஷ்டப்பட்டு | तं | அந்த |
| वदतः | சொல்லிக்கொண் | बाणं | அம்பை |
| | டிருந்தவனும், | अहं | நான் |
| बाणाभिहत- | அர்பிணையுண்ட | उद्धरं | எடுத்தேன். |
| मर्मणः | உயிர்நிலையுடையவ | सः | அந்த |
| भूतले | தரையில் [னும், | तपोधनः | தபோதனன் |
| विधूर्णतः | புரளுபவனும், | संव्रस्तः | உடல் நடுங்கியவனாய் |
| विचेष्टस्य | செயலற்றவனும், | मां | என்னை |
| वेपमानस्य | துடித்துக்கொண்டி | उद्धीक्ष्य तु | பார்த்துக்கொண்டே |
| | ருக்கின்றவனும், | प्राणान् | உயிரை |
| आताम्यमानस्य | சோர்ந்து கிடக்கின்ற | जहौ | விட்டான். |
| | வனுமாகிய | | |

जलाद्रिगात्रं तु विलप्य कृच्छ्रान्मर्मव्रणं सन्ततमुच्छ्वसन्तम् ।

ततः सरय्यां तमहं शयानं समीक्ष्य भद्रे सुभृशं विषण्णः ॥ ५४ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|-------------|-----------------------|
| भद्रे | “உத்தமியே! | विलप्य | புலம்பிக்கொண்டு |
| ततः | அப்பொழுது | सन्ततं | இடைவிடாது |
| अहं | நான் | उच्छ्वसन्तं | பெருமூச்செறிபவனாகவும் |
| तं | அவனை | | |
| जलाद्रिगात्रं | ஜலத்தால் நனைந்த சரீ | सरय्यां | சரயூநதியில் |
| | ரமுடையவனாயும், | शयानं तु | விழுந்துகிடக்கிற |
| मर्मव्रणं | உயிர்நிலையின் விரணத் | समीक्ष्य | கண்டு, [வனாகவும் |
| | தைப்பற்றி | सुभृशं | மிகவும் |
| कृच्छ्रात् | கஷ்டத்துடன் | विषण्णः | தயாமுற்றேன்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे त्रिषष्टितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 4872.

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2517.

चतुःषष्टितमः सर्गः—अनुपத்துநான்காவது ஸர்க்கம் ॥ ६४ ॥

दशरथस्वर्गतिः—தசரதரது மரணம்.

वधमप्रतिरूपं तु महर्षेस्तस्य राघवः । विलपन्नेव धर्मात्मा कौसल्यां पुनरब्रवीत् ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-------------|-------------------|
| धर्मात्मा | தர்மாத்மாவாகும் | वधं | மரணத்தைக்குறித்து |
| राघवः | தசரதர் | विलपन् एव | புலம்பிக்கொண்டே |
| तस्य | அந்த | कौसल्यां तु | கௌஸலைபாரிடத்தில் |
| महर्षेः | மகர்ஷியினது | पुनः | இன்னும்படியாயும் |
| अप्रतिरूपं | ஏற்றதல்லாத | अब्रवीत् | மொழிந்தார். |

तदज्ञानान्महत्पापं कृत्वाऽहं सङ्कुलेन्द्रियः । एकस्त्विचिन्तयं बुद्ध्या कथं नु सुकृतं भवेत् ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------|-----------|-----------------|
| अहं | “நான் | कथं नु | எதைச் செய்தால் |
| अज्ञानात् | அறியாமையால் | सुकृतं | நன்மை |
| तत् | அந்த | भवेत् | விளையுமென்று |
| महत् पापं | பெரும் பாபத்தை | एकः तु | ஒருவனாகவே |
| कृत्वा | செய்துவிட்டு, | बुद्ध्या | தனக்குள்ளேயே |
| सङ्कुलेन्द्रियः | மதிமயங்கியவனாய் | अचिन्तयम् | ஆலோசனைசெய்தேன். |

ततस्तं घटमादाय पूर्णं परमवारिणा । आश्रमं तमहं प्राप्य यथाख्यातपथं गतः ॥ ३ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-------------|------------------|
| ततः | “பிறகு | आदाय | எடுத்துக்கொண்டு, |
| अहं | நான் | यथाख्यातपथं | கூறப்பட்ட வழி தவ |
| परमवारिणा | நல்ல தீர்த்தத்தால் | प्राप्य | சென்று, [ரூமல் |
| पूर्णं | நிரம்பிய | तं | அந்த |
| तं | அந்த | आश्रमं | ஆசிரமத்தை |
| घटं | குடத்தை | गतः | அடைந்தேன். |

तत्राहं दुर्बलावन्धौ वृद्धावपरिणायकौ । अपश्यं तस्य पितरौ लूनपक्षाविव द्विजौ ॥ ४ ॥

तन्निमित्ताभिरாसीनौ कथाभिरपरिक्रमौ । तामाशां मत्कृते हीनावुदासीनावनाथवत् ॥ ५ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|----------------|---------------------|
| तत्र | “அவ்விடத்தில் | वृद्धौ | முதியவர்களாகவும் |
| अहं | நான், | लूनपक्षौ | சிறகு அறுபட்ட |
| मत्कृते | என்றால் | द्विजौ इव | இருபறவைகள்போன் |
| अनाथवत् | தொண்டு புரிபவனை | | றவர்களாய் |
| | இழுந்து | तन्निमित्ताभिः | அவனைப்பற்றிய |
| अपरिणायकौ | நடத்துபவனை | कथाभिः | வார்த்தைகளையே |
| | இழுந்தவர்களும் | | பேசிக்கொண்டு, |
| तां | அதுசம்பந்தமான | उदासीनौ | மற்ற எதிலும் பற்றற் |
| आशां | ஆசையை | | றவர்களாய் |
| हीनौ | இழுந்தவர்களுமாகிய | अपरिक्रमौ | எழுந்து நடக்க முடி- |
| तस्य | அவனது | | யாசவர்களாய் |
| पितरौ | தாய்தந்தையர்களிரு | आसीनौ | உட்கார்ந்துகொண்டி- |
| | வரையும் | | ருப்பவர்களாய் |
| दुर्बलौ | பலஹீனர்களாகவும் | अपश्यम् | கண்டேன். |
| अन्धौ | குருடர்களாகவும் | | |

शोकोपहतचित्तश्च भयसंत्रस्तचेतनः । तच्चाश्रमपदं गत्वा भूयः शोकमहं गतः ॥ ६ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|----------|------------------|
| शोकोपहतचित्तः | “துயரத்தால் பீடிக்க | तत् | அந்த |
| | ப்பட்ட மனமுடை | आश्रमपदं | ஆசிரமத்திற்கு |
| | யவனும், | गत्वा | வந்துசேர்ந்து, |
| भयसंत्रस्त- } | பயத்தால் கலங்கின | भूयः च | முன்னிலுமதிகமாய் |
| चेतनः च } | அறிவையுடையவனு | शोकं | துயரத்தை |
| अहं | நான் [மான | गतः | அடைந்தேன். |

पदशब्दं तु मे श्रुत्वा मुनिर्वाक्यमभाषत । किं चिरायसि मे पुत्र पानीयं क्षिप्रमाश्रय ॥

| | | | |
|----------|------------------|----------|------------------|
| मुनिः | “முனிவர் | மே புத்ர | ‘என் மகனே ! |
| मे | எனது | கிம் | ஏன் |
| पदशब्दं | காலடியோசையை | चिरायसि | தாமதிக்கின்றனே ? |
| श्रुत्वा | கேட்டு, | पानीयं | தீர்த்தத்தை |
| तु | இப்பொழுது | क्षिप्रं | சீக்கிரத்தில் |
| वाक्यं | பின்வரும் சொல்லை | आश्रय | கொண்டுவா. |
| अभाषत | மொழிந்தார் : | | |

यन्निमित्तमिदं तात सलिले क्रीडितं त्वया । उत्कण्ठिता ते मातेयं प्रविश क्षिप्रमाश्रमम् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|------------|-------------------|
| तात | “‘குழந்தாய் ! | माता | தாயாகும் |
| यन्निमित्तं | ஏன் | इयं | இவள் |
| त्वया | உன்னால் | उत्कण्ठिता | எதிர்பார்த்தவண்ண |
| सलिले | ஐலத்தில் | | மேயிருக்கின்றனள். |
| इदं | இப்பொழுது | क्षिप्रं | சீக்கிரமாய் |
| क्रीडितं | விளையாடப்பட்டது ? | आश्रमं | ஆசிரமத்தினுள் |
| ते | உனது | प्रविश | வருவாய். |

यद्वचलीकं कृतं पुत्र मात्रा ते यदि वा मया । न तन्मनसि कर्तव्यं त्वया तात तपस्विना॥

| | | | |
|---------|-----------------|------------|--------------------|
| पुत्र | “‘குழந்தாய் ! | कृतं यदि | செய்யப்பட்டிருக்கு |
| मात्रा | அன்னையாலாவது | तत् | அது [மேயாகில், |
| मया वा | என்னாலாவது | तात | குழந்தாய் ! |
| ते | உனக்கு | तपस्विना | பக்திமானாகிய |
| यत् | ஏதாவது | त्वया | உன்னால் |
| व्यलीकं | மனதிற்கு இசையாத | मनसि | மனதில் |
| | காரியம் | कर्तव्यं न | பாபாட்டத்தக்க |
| | | | சன்று. |

त्वं गतिस्त्वगतीनां च चक्षुस्त्वं हीनचक्षुषाम् ।
समासक्तास्त्वयि प्राणाः किञ्चिन्नो नाभिभाषसे

॥ १० ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|------------|--------------------|
| अगतीनां | “‘கதியற்ற எங்களுக்கு | प्राणाः | உயிரெல்லாம் |
| त्वं तु | நீயே | त्वयि | உன்னை |
| गतिः | கதி. | समासक्ताः | பற்றியிருக்கின்றன. |
| हीनचक्षुषां | கண்ணிழந்த எங்க | नः | எக்கவிடத்தில் |
| | ளுக்கு | किञ्चित् | கொஞ்சமேனும் |
| त्वं च | நீதான் | अभिभाषसे न | நீ பேசாதிருக்கின் |
| चक्षुः | கண். | | றனே. |

मुनिमव्यक्तया वाचा तमहं सज्जमानया । हीनव्यञ्जनया प्रेक्ष्य भीतो भीत इवाब्रुवम् ॥

அஃ “நான்
த் அந்த
முனி முனிவரை
இவ் முற்றிலும்
भीतः भीतः நடுநடுங்கியவனாய்
प्रेक्ष्य பார்த்து,

सज्जमानया சிந்தையில் நிச்சயிக்
கப்படுகிறதும்
हीनव्यञ्जनया மெய்யெழுத்தில்லாத
अव्यक्तया பொருளற்ற [துமான
वाचा தெனியால்
अब्रुवम् வெளியிட்டுக்
கொண்டேன்.

मनसः कर्मचेष्टाभिरभिसंस्तभ्य वाग्बलम् । आचक्षे त्वहं तस्मै पुत्रव्यसनजं भयम् ॥

அஃ “நான்
मनसः மனதினுடைய
कर्मचेष्टाभिः ஊஹிப்பதாலும் நிலை
நிறுத்துவதாலும்
वाग्बलं வாக்கின் திறமையை
अभिसंस्तभ्य திடப்படுத்திக்
கொண்டு,

तस्मै அவரிடத்தில்
पुत्रव्यसनजं புத்திரனது பிரிவா
லுண்டான
भयं ஆபத்தை
तु அப்பொழுது
आचक्षे பின்வருமாறு தெரி
யப்படுத்தினேன்.

क्षत्रियोऽहं दशरथो नाहं पुत्रो महात्मनः । सज्जनावमतं दुःखमिदं प्राप्तं स्वकर्मजम् ॥१३॥

அஃ “நான்
दशरथः தசரதரென்ற
क्षत्रियः கூடித்திரியன்.
अहं நான்
महात्मनः மகா த்மாவாகும் தேவ
पुत्रः மகன் [ரீரது
न அல்லேன்.

इदं இப்பொழுது கூறப்
போகும்
दुःखं விபத்தானது
सज्जनावमतं பெரியோர்களால்
நிந்திக்கப்பட்டதும்
स्वकर्मजं தன் விதியால் விளைந்
ததாகவும்
प्राप्तम् சம்பவித்திருக்கிறது.

भगवंश्चापहस्तोऽहं सरयूतीरमागतः । जिघांसुः श्वापदं कश्चिन्निपाने चागतं गजम् ॥१४॥

भगवन् “பகவானே!
अहं நான்
चापहस्तः கையில் வீற்கொண்ட
कश्चित् ஏதாவதொரு [வனாய்
श्वापदं துஷ்டமிருகத்தையா
निपाने நீர்த்துறையில் [வது

आगतं வந்த
गजं च யானையையாவது
जिघांसुः கொல்ல விரும்பியவ
னாய்
सरयूतीरं ஸரயூதிக்கரைக்கு
आगतः வந்தேன்.

ततः श्रुतो मया शब्दो जले कुम्भस्य पूर्यतः । द्विपोऽयमिति मत्वाऽयं बाणेनाभिहतो मया॥

ततः “அப்பொழுது
जले நீரில்
पूर्यतः அமிழ்த்தப்படும்
कुम्भस्य குடத்தினது
शब्दः ஒசையானது
मया என்னால்
श्रुतः கேட்கப்பட்டது.

अयं இவ்விடத்திலிருப்பது
द्विपः इति யானை என்று
मत्वा கருதி
अयं இது
मया என்னால்
बाणेन அம்பால்
अभिहतः அடிக்கப்பட்டது.

गत्वा नद्यास्ततस्तीरमपश्यमिषुणा हृदि । विनिर्भिन्नं गतप्राणं शयानं भुवि तापसम् ॥

| | | | |
|--------------|------------------|----------|---------------------|
| ततः | “‘பின்னர், | गतप्राणं | உயிர் போகும் நிலையி |
| नद्याः | நதியினது | | விருந்தவனும் |
| तीरं | கரைக்கு | भुवि | தரையில் |
| गत्वा | சென்று, | शयानं | விழுந்துகிடக்கிறவ |
| इषुणा | அம்பினால் | | னுமாகிய |
| हृदि | மார்பில் | तापसं | ஓர் முனியை |
| विनिर्भिन्नं | தைக்கப்பட்டவனும் | अपश्यम् | நான் கண்டேன். |

भगवञ्छब्दमालक्ष्य मया गजजिघांसुना । विसृष्टोऽम्भसि नाराचस्तेन ते निहतः सुतः ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|----------|-------------------|
| भगवन् | “‘பகவானே! | नाराचः | அம்பானது |
| शब्दं | சப்தத்தைக் | विसृष्टः | எய்யப்பட்டது. |
| आलक्ष्य | குறிவைத்து | तेन | அதனால் |
| गजजिघांसुना | யானையைக் கொல்ல | ते | தேவரீரது |
| मया | என்னால் [விரும்பிய | सुतः | புதல்வன் |
| अम्भसि | நீரில் | निहतः | வீழ்த்தப்பட்டான். |

ततस्तस्यैव वचनादुपेत्य परितप्यतः । स मया सहसा बाण उद्धृतो मर्मतस्तदा ॥ १८ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|---------|--------------------|
| ततः | “‘அங்கு | बाणः | அம்பானது |
| उपेत्य एव | அடைந்ததும் | मर्मतः | மர்மஸ்தானத்தி |
| तदा | அப்பொழுது | | னின் தும் |
| परितप्यतः | பரிதவிக்கும் | सहसा | விரைவில் |
| तस्य | அவனது | मया | என்னால் |
| वचनात् | வேண்டுகோளின்படி | उद्धृतः | வெளியிலிழுக்கப்பட் |
| सः | அந்த | | டது. |

स चोद्धृतेन बाणेन तत्रैव स्वर्गमास्थितः । भगवन्तावुभौ शोचन् वृद्धाविति विलप्य च ॥

| | | | |
|----------|--------------------|----------------|-------------------|
| सः च | “‘அவனும் | उभौ च | உங்களுக்குவரையும் |
| बाणेन | அம்பு | वृद्धौ इति | தள்ளாதவர்களென |
| उद्धृतेन | எடுக்கப்பட்டமையால் | विलप्य | புலம்பி, |
| तत्र | அவ்விடத்தில் | शोचन् एव | வருத்திக்கொண்டே |
| भगवन्तौ | பெரியோர்களான | स्वर्ग आस्थितः | பரலோகம்சென்றான். |

अज्ञानाद्भवतः पुत्रः सहसाऽभिहतो मया । शेषमेवं गते यत्स्यात्तत्प्रसीदतु मे मुनिः ॥ २० ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|-----------------|
| मया | “‘என்னால் | शेषं | இனிச் செட்டவேண் |
| भवतः | தேவரீரது | | டியது |
| पुत्रः | புதல்வன் | यत् स्यात् | எதோ |
| अज्ञानात् | அறியாமையால் | तत् | அதை |
| सहसा | முன்பின்றாராயாமல் | मुनिः | பகவான் |
| अभिहतः | வீழ்த்தப்பட்டனன். | मे | அடியேனுக்கு |
| एवं गते | இந்த நிலைமையில் | प्रसीदतु | அருளட்டும். |

स तच्छुत्वा वचः क्रूरं मयोक्तमघशंसिना । नाशकत्तीव्रपायासमकर्तुं भगवानृषिः ॥ २१ ॥

भगवान् “பெரியாரான
सः அந்த
ऋषिः முனிவர்
अघशंसिना தன் பாபத்தைத் தெ
ரிவித்துக்கொண்ட
मया என்னால்
उक्तं கூறப்பட்ட

क्रूरं கொடிய
तत् वचः அம்மொழியை
श्रुत्वा செவியுற்று,
तीव्रं கடுமையான
आयासं மனவேதனையை
अकर्तुं செய்யாமலிருக்க
अशक्तं முடியாதிருந்தனர்.

स बाष्पपूर्णवदनो निश्वसञ्छोककशितः । मामुवाच महातेजाः कृताञ्जलिमुपस्थितम् ॥

महातेजाः “மகாதேஜஸ்வியாகும்
सः அவர்
बाष्पपूर्णवदनः கண்ணீர் நிரம்பிய மு
கமுடையவராய்
शोककशितः துயரத்தால் நலிந்த
வராய்

निश्वसन् பெருமூச்செறிந்து
கொண்டு
कृताञ्जलिं அஞ்சலிஹஸ்தனாய்
उपस्थितं காத்துநின்ற
मां என்னேநோக்கி
उवाच பின்வருமாறுகூறினார்:

यद्येतदशुभं कर्म न स्म मे कथयेः स्वयम् । फलेन्मूर्धा स्म ते राजन्सद्यः शतसहस्रधा ॥

राजन् “அரசே!
एतत् இந்த
अशुभं துர்பாக்கியமான
कर्म செயல்
मे எனக்கு
स्वयं தானாக

कथयेः स यदि न கூறுதிருந்திருப்பாயா
सद्यः அப்பொழுதே [கில்
ते உனது
मूर्धा தலை
शतसहस्रधा அனேகாயிரம் துண்டு
களாய்
फलेत् स வெடித்திருக்கும்.

क्षत्रियेण वधो राजन्वानप्रस्थे विशेषतः । ज्ञानपूर्वं कृतः स्थानाच्छ्यावयेदपि वज्रिणम् ॥

राजन् “அரசே!
वानप्रस्थे வானப்ரஸ்தன் விஷ
ज्ञानपूर्वं மனமறிய [யத்தில்
कृतः செய்யப்பட்ட
वधः வதையானது
वज्रिणं अपि இந்திரனயிருப்பினும்

स्थानात् பதவியிலிருந்து
च्यावयेत् தள்ளிவிடும்.
क्षत्रियेण கூத்திரியனால் செய்ய
ப்பட்டதெனில்
विशेषतः சொல்லவும் வேண்
டுமோ?

सप्तधा तु भवेन्मूर्धा मुनौ तपसि तिष्ठति । ज्ञानाद्विस्मृतः शस्त्रं तादृशे ब्रह्मचारिणि ॥

तादृशे “அப்படியாக
तपसि தவத்தில்
तिष्ठति இருந்து
ब्रह्मचारिणि தருமத்தையே அனு
ஷ்டித்துவரும்
मुनौ முனிவிஷயத்தில்

ज्ञानात् புத்தியூர்வமாய்
शस्त्रं ஆயுதத்தை
विस्मृतः விடுபவனுடைய
मूर्धा தலை
सप्तधा तु ஏழு துண்டுகளாய்
भवेत् ஆகிவிடும்.

अज्ञानाद्धि कृतं यस्मादिदं तेनैव जीवसि । अपि ह्यद्य कुलं न स्याद्राघवाणां कुतो भवान् ॥

तेन “அவ்விதமிருக்கும்
பக்கத்தில்

अद्य हि इप्पொழுதே
राघवाणां ராகுமன்னர்களுடைய
कुलं अपि வம்சமே
स्यात् न அற்றிருக்கும்.
भवान् हि நீர்மட்டும்

नय नौ नृप तं देशमिति मां चाभ्यभाषत ।

नृप “அரசே!
अद्य இப்பொழுது
तं அந்த
पुत्रं புதல்வனை
पश्चिमदर्शनं கடைசிமுறையாக
द्रष्टुं பார்க்க

रुधिरेणावसिक्ताङ्गं प्रकीर्णाजिनवाससम् । शयानं भुवि निःसंज्ञं धर्मराजवशं गतम् ॥२८॥

अथाहमेकस्तं देशं नीत्वा तौ भृशदुःखितौ ।

अथ அதன்பின்னர்
अहं நான்
एकः தனியனாய்
भृशदुःखितौ மிகவும் துக்கப்பட்டு
கொண்டிருக்கும்

तौ அவ்விருவரையும்
तं அந்த
देशं இடத்திற்கு
नीत्वा அழைத்துச்சென்று,
भार्यया सह மனைவியோடுகூட
तं मुनिं அம்முனிவரை
रुधिरेण இரத்தத்தால்

तौ पुत्रमात्मनः स्पृष्ट्वा तमासाद्य तपस्विनौ । निपेततुः शरीरेऽस्य पिता चास्येदमब्रवीत् ॥

तपस्विनौ “வருந்தத்தக்க
तौ அவ்விருவரும்
आत्मनः தங்களுடைய
तं அந்த
पुत्रं புதல்வனை
स्पृष्ट्वा தொட்டு,
आसाद्य அறிந்துகொண்டு,

कुतः எங்குமெழுவீர்?
इदं இது
अज्ञानात् அறியாமையால்
कुलं செய்யப்பட்டது.
यस्मात् एव அக்காரணத்தால்
தான்
जीवसि பிழைத்திருக்கின்றீர்.

अद्य तं द्रष्टुमिच्छावः पुत्रं पश्चिमदर्शनम् ॥

इच्छावः விரும்புகிறோம்.
तं देशं அவ்விடத்திற்கு
नौ எங்களிருவரையும்
नय इति च கொண்டுசேர்'என்றும்
मां என்னிடம்
अभ्यभाषत கூறினார்.

अवसिक्ताङ्गं நனைக்கப்பட்ட உடலை

प्रकीर्णाजिन- } புடையவனும்,
वाससं } தளர்த்துகிடக்கும்
மான்தோல் வஸ்திர
த்தையுடையவனும்,

भुवि தரையில்
निःसंज्ञं நினைவிழந்து
शयानं படுத்துக்கிடப்பவ
धर्मराजवशं யமனதீனத்தை [னும்
गतं அடைந்தவனுமாகிய
पुत्रं புதல்வனை
अहं நான்
अस्पर्शयम् தொடச்செய்தேன்.

अस्य அவன்
शरीरे உடலில்
निपेततुः விழுந்தனர்.
अस्य அவனது
पिता च தந்தை மட்டும்
इदं பின்வருமாறு
अब्रवीत् சொன்னார்;

नाभिवादयसे माऽद्य न च मामभिभाषसे । किं नु शेषेऽद्य भूयौ त्वं वत्स किं कुपितो ह्यसि ॥

| | |
|--------------|-----------------------------|
| வ்ஸ | “குழந்தாய்! |
| அத | இப்பொழுது |
| மா | என்னை |
| அபிவாதயசே ந | நமஸ்கரியாதிருக்கின் றனை. |
| மா | என்னைப்பார்த்து |
| அபிமாஸசே ச ந | பேசாமலிருக்கின் |
| த்வ | நீ [றனை. |

| | |
|------------|--------------------|
| பூமீ | தரையிள் |
| கி | ஏன் |
| செ | படுத்துக்கிடக்கின் |
| சு | ஒருக்கால் [றனை? |
| அடி | இப்பொழுது |
| குபித: | கோபம் கொண்டவ |
| | னாய் |
| கி் ஹி அசி | இருக்கறாயா என்ன? |

नन्वहं ते प्रियः पुत्र मातरं पश्य धार्मिक । किं च नालिङ्गसे पुत्र सुकुमारवचो वद ॥

| | |
|------------|-------------------|
| புல | “குழந்தாய்! |
| அஹ் | நான் |
| தே | உனக்கு |
| பிரிய: நநு | உகந்தவனல்லவா ? |
| தார்பிக | தருமானுஷ்டான |
| புல | குழந்தாய்! [முடைய |
| மாதர் | தாயை |

| | |
|---------------|----------------------|
| கி் | என் |
| அலிங்ஙுசெ ச ந | கட்டி க்ங்கொள்ளா மலி |
| | லிநுக்கின்றணை ? |
| பங்ய | கண்ணை விழித் துப் |
| | பார். |
| சுகுமாரவச: | இன் சொல்லொன்றை |
| வட | சொல்லு. |

कस्य वाऽपररात्रेऽहं श्रोष्यामि हृदयङ्गमम् । अधीयानस्य सततं शास्त्रं वाऽन्यद्विशेषतः ॥

| | |
|---------|------------------|
| சதத் | “எக்காலத்திலும் |
| அபரராந் | பின்னிரவில் (வைக |
| | றையாமத்தில்) |
| சாஸ்த் | சாஸ்திரத்தையாவது |
| அந்யத் | மற்றுமெதையாவது |

| | |
|------------|------------------|
| विशेषतः | பத்திமையுடன் |
| अधीयानस्य | படிக்கும் |
| कस्य | எவனுக்கு |
| अहं | நான் |
| हृदयङ्गमं | இன்பமாய் |
| श्रोष्यामि | செவிசாய்ப்பேன் ? |

को मां सन्ध्यामुपास्यैव स्नात्वा हुतहुताशनः । श्लाघयिष्यत्युपासीनः पुत्रशोकभयार्दितम् ॥

ஜாந்வா
 சந்ந்யா
 உபாஸ்ய
 ஹுதஹுதாஸந: }
 எவ }

“ஸ்நானம்செய்து,
 ஸந்த்யையை
 ஸேவித்து,
 அக்னிகாரியத்தை
 முடித்த உடனே

| | |
|-------------------|--------------------|
| पुत्रशोकभयार्दितं | புத்திரசோகத்தால் |
| मां | எனக்கு [துன்புறம்] |
| उपसीनः | அருகிலிருப்பவனாய் |
| कः | எவன் |
| श्लाघयिष्यति | தொண்டுபுரிவான் ? |

कन्दमूलफलं हत्वा को मां प्रियमिवातिथिम् । भोजयिष्यत्यकर्मण्यमप्रग्रहमनायकम् ॥३५॥

அகர்மண்யம்
அபிரஹ்
அநாயக்
மா
கந்தமூலபலம்

“செயலற்றவனும்,
வெளிச்சமற்றவனும்,
நடத்துபவனற்றவனு
என்னை [மான
காய், கிழங்கு, பழங்
களை

| | |
|------------|-----------------|
| हृत्वा | கொணர்ந்து, |
| प्रियं | மனதிற்குகந்த |
| अतिथिं इव | அதிதிக்கெவ்வண்ண |
| | மோ அவ்வண்ணமே |
| कः | எவன் |
| भोजयिष्यति | உண்பிப்பான் ? |

इमामन्धां च वृद्धां च मातरं ते तपस्विनीम् । कथं वत्स भरिष्यामि कृपणां पुत्रगर्हिनीम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------------|-------------------|
| वत्स | “குழந்தாய்! | पुत्रगर्हिनीं च | புத்திரவாத்ஸல்ய |
| ते | உனது | | முடையவளாய் |
| इमां | இந்த | कृपणां च | பரிதபிப்பவளுமாகிய |
| अन्धां | கண்ணிமுந்தவளும், | मातरं | தாயாரை |
| वृद्धां | மூப்பெய்தியவளும், | कथं | எவ்விதம் |
| तपस्विनीं | உத்தமியும், | भरिष्यामि | போஷிப்பேன்? |

तिष्ठ मां मा गमः पुत्र यमस्य सदनं प्रति । श्वो मया सह गन्तासि जनन्या च समेधितः ॥

| | | | |
|------------|------------------|----------|------------|
| पुत्र | “குழந்தாய்! | तिष्ठ | இரு. |
| यमस्य | யமனது | मया सह | என்னோடுகூட |
| सदनं प्रति | வீட்டைக்குறித்து | जनन्या च | தாயாரோடும் |
| मा गमः | செல்லாதே. | समेधितः | கடினவனாய் |
| मां | என்னிடம் | श्वः | நானைக்கு |
| | | गन्तासि | செல்வாய். |

उभावपि च शोकातर्विनाथौ कृपणौ वने । क्षिप्रमेव गमिष्यावस्त्वया सह यमक्षयम् ॥३८॥

| | | | |
|---------|---------------------------------------|-------------|-------------------|
| शोकातौ | “துயரத்தால் பீடிக்க ப்பட்டவர்களும் | उभौ अपि | நான்களிருவர்களும் |
| वने | காட்டில் | त्वया सह | உன்னோடுகூடவே |
| अनाथौ | போஷகனையிழந்த வர்களும் | यमक्षयं | யமனுகலை |
| कृपणौ च | பரிதாபநிலையிலிருப்ப வர்களுமான | क्षिप्रं एव | இப்பொழுதே |
| | | गमिष्यावः | அடைவோம். |

ततो वैवस्वतं दृष्ट्वा तं प्रवक्ष्यामि भारतीम् । क्षमतां धर्मराजो मे विभृयात्यितरावयम् ॥

| | | | |
|----------|------------------|--------------|-----------------|
| ततः | “ஆனதுபற்றி | विभृयात् | அழைத்துவரட்டும் |
| धर्मराजः | யமன் | भारती | என்கிற சொல்லை |
| मे | எனக்காக | तं | அந்த |
| क्षमतां | அனுமதிக்கட்டும். | वैवस्वतं | யவன் |
| अयं | இவன் | दृष्ट्वा | குறித்து |
| पितरौ | தாய்தந்தையரை | प्रवक्ष्यामि | சொல்லுவேன். |

दातुमर्हति धर्मात्मा लोकपालो महायशः । ईदृशस्य ममाक्षय्यामेकामभयदक्षिणाम् ॥४०॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|--------------|---------------------------------|
| लोकपालः | “லோகபாலரும், | मम | எனக்கு |
| महायशः | மிகப் புகழுடைய வரும், | अभयदक्षिणां | கவ்டகிவர்த்தி செய் யும் வரம் |
| धर्मात्मा | தர்மாத்மாவுமான அவர் | एकाम् | ஒன்றை |
| ईदृशस्य | இவ்விதையிலிருக்கும் | अक्षय्यां | வீணாகாததாய் |
| | | दातुं अर्हति | கொடுக்கக்கூடும். |

अपापोऽसि यदा पुत्र निहतः पापकर्मणा । तेन सत्येन गच्छाशु ये लोकाः शस्त्रयोधिनाम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------------|---------------|------------------|
| புத்ர | “குழந்தாய்! | सत्येन | தத்துவத்தால் |
| पापकर्मणा | தீவினையால் | शस्त्रयोधिनां | போர்வீரர்களுக்கு |
| निहतः यदा | கொலையுண்டவனான வுடன் | लोकाः | உலகங்கள் |
| अपापः | பாபமொழிந்தவனாய் | ये | எவைகளோ அவை |
| असि | ஆகிறாய். | आशु | நேராய் [களுக்கு |
| तेन | அந்த | गच्छ | செல். |

यान्ति शूरा गतिं यां च संग्रामेष्वनिवर्तिनः । हतास्त्वभिमुखाः पुत्र गतिं तां परमां व्रज ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|----------|----------------|
| புத்ர | “குழந்தாய்! | यां | எந்த |
| शूराः | சூரர்கள், | गतिं | கதியை |
| संग्रामेषु | போர்களில் | यान्ति च | அடைகின்றார்களோ |
| अनिवर्तिनः | பின்வாங்காதவர் களாய் | तां तु | அதே |
| अभिमुखाः | எதிர்நோக்கிச்செல்ப வர்களாய் | परमां | உத்தம |
| हताः | கொலையுண்டவர்கள், | गतिं | கதியை |
| | | व्रज | அடையக்கடவாய். |

यां गतिं सगरः शैव्यो दिलीपो जनमेजयः । नहुषो धुन्धुमारश्च प्राप्तास्तां गच्छ पुत्रक ॥

| | | | |
|---------|-------------|--------------|---|
| புத்ரக | “குழந்தாய்! | नहुषः | நகுஷர், |
| यां | எந்த | धुन्धुमारः च | { துந்துமாரன் ஆகிய இவர்கள் (தசரதன து முன்னோர்கள்) |
| गतिं | கதியை | प्राप्ताः | அடைந்தனரோ |
| सगरः | சகரர், | तां | அதை |
| शैव्यः | சைபியர், | गच्छ | அடைவாயாக. |
| दिलीपः | திலீபர், | | |
| जनमेजयः | ஜனமேஜயர், | | |

या गतिः सर्वसाधूनां स्वाध्यायात्तपसश्च या । भूमिदस्याहिताग्नेश्च एकपत्नीव्रतस्य च ॥
गोसहस्रप्रदातणां या या गुरुभृतामपि । देहन्यासकृतां या च तां गतिं गच्छ पुत्रक ॥४५॥

| | | | |
|--------------|---|------------------|-----------------------------------|
| புத்ரக | “குழந்தாய்! | भूमिदस्य | பூதானம் செய்தவனு க்கும் |
| सर्वसाधूनां | எல்லா விதத்திலும் புண்பா த்மாக்களுக்கு | आहिताग्नेः | அக்னிஹோ த்திரம் செய்பவனுக்கும் |
| स्वाध्यायात् | வேதாத்தியயனத் | एकपत्नीव्रतस्य च | ஏகபத்னீவ்ரதம் |
| तपसः च | தவத்தாலும் [தாலும் | या च | பூண்டவனுக்கும் |
| गतिः | கதி | | எதுவோ, |
| या | எதுவோ, | | |

गोसहस्रप्रदातृणां { अனேகம் பசுமாடுக
 னோ தானம் செய்ப
 வர்களுக்கு
 யா { எதுவோ,
 गुरुभृतां { தாய்தந்தையர்கள் ம
 னங்கோணுது தொ
 ண்டுபுரிபவர்களுக்கு
 யா अपि { எதுவோ,
 न हि त्वस्मिन्कुले जातो गच्छत्यकुशलां गतिम्।

देहान्यासकृतां { தேஹத்தினவயவங்க
 னோ தேவர்களுக்கர்ப்
 பணஞ் செய்து த
 வம்புரிபவர்களுக்கு
 யா { எதுவோ,
 तां गतिं च { அக்கதியையும்
 गच्छ { அடையக்கடவாய்.

न हि त्वस्मिन्कुले जातो गच्छत्यकुशलां गतिम्। स तु यास्यति येन त्वं निहतो मम बान्धवः॥

अस्मिन् { “இந்த
 कुले { குலத்தில்
 जातः हि { பிறந்தவனெவனும்
 गतिं { ஒரு பயனை
 अकुशलां { தீச்செயலால் விளைந்த
 गच्छति न { அடைவதில்லை. [தாய்
 मम { எனது

बान्धवः { புதல்வனாகிய
 त्वं { நீ
 येन { எவனால்
 तु { இப்பொழுது
 निहतः { கொல்லப்பட்டாயோ
 सः तु { அவன் இதில்
 यास्यति { அடைவான்.

एवं स कृपणं तत्र पर्यदेवयतासकृत् । स तस्मै कर्तुमुदकं प्रवृत्तः सह भार्यया ॥ ४७ ॥

एवं { “இவ்வண்ணமாய்
 तत्र { அப்பொழுது
 असकृत् { இடைவிடாது
 कृपणं { பரிதாபகரமாக
 पर्यदेवयत { அவர்
 पुलम्पिणः { புலம்பிணர்.

तस्मै { அவனுக்கு
 उदकं { ஈமக்கடனை
 कर्तुं { செய்ய
 भार्यया सह { மனைவியுடன்கூட
 सः { அவர்
 प्रवृत्तः { தொடங்கினர்.

ददौ तिलोदकं तस्मै स पुत्राय यथाविधि

॥ ४८ ॥

सः { “அவர்
 तस्मै पुत्राय { அப்புதல்வனுக்கு

यथाविधि { சாஸ்திரமுறைப்படி
 तिलोदकं { தர்ப்பணத்தை
 ददौ { செய்தார்.

स तु दिव्येन रूपेण मुनिपुत्रः स्वकर्मभिः । स्वर्गमध्यारुहक्षिप्रं शक्रेण सह धर्मवित् ॥

सः { “அந்த
 धर्मवित् { தருமவானாகிய
 मुनिपुत्रः तु { முனிகுமாரன்
 स्वकर्मभिः { தன்னுடைய நல்வினை
 कर्मात् { களால்

दिव्येन रूपेण { தேவசரீரத்துடன்
 शक्रेण सह { இந்திரனோடுகூட
 क्षिप्रं { உடனே
 स्वर्गं { ஸ்வர்க்கத்திற்கு
 अरुहत् { ஏறினான்.

आवभाषे च तौ वृद्धौ सह शक्रेण तापसः । आश्वस्य च मुहूर्तं तौ पितरौ वाक्यमब्रवीत् ॥

तापसः च { “முனிகுமாரனும்
 शक्रेण सह { இந்திரனுடன்கூட
 वृद्धौ { வயதுமுதிர்ந்த
 तौ { அவர்களுக்கு
 आवभाषे { முகமன் கூறினான்.

पितरौ { தாய்தந்தையராகும்
 तौ { அவ்விருவர்களை
 मुहूर्तं { முகூர்த்தகாலம்
 आश्वस्य च { தேற்றியவுடன்
 वाक्यं { பின்வரும் மொழியை
 अब्रवीत् { மொழிந்தான் :

स्थानमस्मि महत्प्राप्तो भवतोः परिचारणात् । भवन्तावपि च क्षिप्रं मम मूलमुपैष्यतः ॥

भवतोः “உங்களுக்குள்ளுக்கும்
परिचारणात् தொண்டுபுரிந்ததால்
महत् स्थानं உத்தமபதவியை
अस्मि நான்
प्राप्तः அடைந்தேன்;

भवन्तौ अपि நீங்களுக்குள்ளும்
मम எனது
मूलं நிலையை
क्षिप्रं च சீக்கிரத்திலேயே
उपैष्यतः அடைவீர்கள்.’

एवमुक्त्वा तु दिव्येन विमानेन वपुष्मता । आरुरोह दिवं क्षिप्रं मुनिपुत्रो जितेन्द्रियः ॥

जितेन्द्रियः “ஜிதேந்திரியனை
मुनिपुत्रः முனிகுமாரன்
एवं இவ்வண்ணம்
उक्त्वा तु சொன்னவுடன்
दिव्येन தெய்வ

वपुष्मता அழகுடன் விளங்கும்
विमानेन விமானத்தோடும்
क्षिप्रं உடனே
दिवं ஸ்வர்க்கத்தை
आरुरोह அடைந்தான்.

स कृत्वा तूदकं तूर्णं तापसः सह भार्यया । मामुवाच महातेजाः कृताञ्जलिमुपस्थितम् ॥

महातेजाः “மகாதேஜஸ்வியாகும்
सः तापसः அம்முனிவர்
भार्यया सह மனைவியுடன் கூட
तूर्णं விரைவில்
उदकं ஈமக்கடனை
कृत्वा तु முடித்தவுடன்

कृताञ्जलिं அஞ்சலிஹஸ்தனாய்
उपस्थितं காத்துநின்றிருந்த
मां என்னை நோக்கி
उवाच பின்வருமாறு மொழி
ந்தார் :

अथैव जहि मां राजन्मरणे नास्ति मे व्यथा । यच्छरेणैकपुत्रं मां त्वमकार्षीरपुत्रकम् ॥

राजन् “அரசே!
अद्य एव இப்பொழுதே
मां என்னை
जहि கொல்லும்.
त्वं நீர்
एकपुत्रं ஒரே புதல்வனை
मां என்னை [உடைய

अपुत्रकं புதல்வனையிழந்தவ
शरेण ஓரம்பினால் [அக
अकार्षीः செய்தீர்.
यत् அக்காரணத்தால்
मे எனது
मरणे மாணத்தில்
व्यथा अस्ति न துயரம் இல்லை.

त्वया तु यदविज्ञानान्निहतो मे सुतः शुचिः । तेन त्वामभिषस्यामि सुदुःखमतिदारुणम् ॥

त्वया “உம்மால்
मे எனது
शुचिः நிரபராதியாகிய
सुतः புதல்வன்
अविज्ञानात् तु அறியாமையாலென்ற
यत् எவ்விதத்திலும் [லும்
निहतः கொல்லப்பட்டவனை,

तेन அக்காரணத்தால்
त्वा உம்மை
सुदुःखं மிகக்கஷ்டமாயும்
अतिदारुणं அதிகக்கொடுமையா
யும்
अभिषस्यामि பின்வருமாறு சபிக்கி
மேன் :

पुत्रव्यसनजं दुःखं यदेतन्मम सांप्रतम् । एवं त्वं पुत्रशोकेन राजन्कालं गमिष्यसि ॥ ५६ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|------------|------------------|
| राजन् | “அரசே! | यत् | அக்காரணத்தால் |
| मम | எனக்கு | एवं | இவ்வண்ணமே |
| सांप्रतं | இப்பொழுது | त्वं | நீ |
| एतत् | இந்த | पुत्रशोकेन | புத்திரசோகத்தால் |
| दुःखं | கஷ்டம் | कालं | யமனை |
| पुत्रव्यसनजं | புதல்வனது பிரிவா | गमिष्यसि | அடைவாயாக. |
| | லுண்டானது. | | |

अज्ञानात्तु हतो यस्मात्क्षत्रियेण त्वया मुनिः । तस्मात्त्वां नाविशत्याशु ब्रह्महत्या नराधिप ॥

| | | | |
|------------|----------------|-----------------|------------------|
| नराधिप | “அரசே! | हतः | கொல்லப்பட்டான். |
| क्षत्रियेण | ஈசத்திரியனாகிய | यस्मात् तस्मात् | அக்காரணத்தால் |
| त्वया | உன்னால் | तु | இவ்விஷயத்தில் |
| मुनिः | தவசி, | त्वां | உன்னை |
| अज्ञानात् | அறியாமையால் | ब्रह्महत्या | பிரும்மஹத்தி தோஷ |
| आशु | ஆலோசனையின்றி | आविशति न | அணுகாது. [மானது |

त्वामप्येतादृशो भावः क्षिप्रमेव गमिष्यति । जीवितान्तकरो घोरो दातारमिव दक्षिणा ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-------------|-------------------------|
| जीवितान्तकरः | “உயிரை மாய்க்கிற | दातारं | கொடுப்பவனை |
| घोरः | கொடிய | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே |
| एतादृशः | இப்படிப்பட்ட | त्वां अपि | உன்னையும் |
| भावः | நிலைமை | क्षिप्रं एव | சீக்கிரத்திலேயே |
| दक्षिणा | தகழிணையின் பலன் | गमिष्यति | அடையும்.’ |

एवं शापं मयि न्यस्य विलप्य करुणं बहु । चितामारोप्य देहं तन्मिथुनं स्वर्गमभ्ययात् ॥

| | | | |
|-------------|---------------|------------|---------------|
| एवं | “இவ்விதமாக | देहं | உடலை |
| मयि | என்பேரில் | चितां | சிகையில |
| शापं न्यस्य | சாபத்தைவைத்து | आरोप्य | ஏற்றி, |
| करुणं | பரிதாபமாய் | तत् मिथुनं | அவ்விருவரும் |
| बहु | பலவாராய் | स्वर्गं | பரலோகத்திற்கு |
| विलप्य | புலம்பி | अभ्ययात् | சென்றனர். |

तदेतच्चिन्तयानेन स्मृतं पापं मया स्वयम् । तदा बाल्यात्कृतं देवि शब्दवेध्यनुकर्षिणा ॥

| | | | |
|------------|------------------|---------------|--------------------|
| देवि | “தேவீ! | शब्दवेध्यनु-} | சத்தத்தைக்கொண்டு |
| एतत् | இச்சம்பவத்தை | कर्षिणा } | இலக்கையடிக்கும் |
| चिन्तयानेन | சிந்திக்கும் | | பாணத்தை பிரயோ |
| मया | என்னால் | | கிப்பவனாக |
| तदा | அக்காலத்தில் | कृतं | செய்யப்பட்ட |
| बाल्यात् | சிறுபிள்ளைத்தனத் | तत् पापं | அந்த தீச்செயல் |
| | தால் | स्वयं | தானாக |
| | | स्मृतम् | நினைவிற்கு வந்தது. |

तस्यायं कर्मणो देवि विपाकः समुपस्थितः । अपथ्यैः सह संयुक्ते व्याधिरन्नरसे यथा ॥

| | | | |
|-------------|----------------|------------|------------------|
| देवि | “கேவி! | संयुक्ते | உண்ணப்பட்ட |
| तस्य कर्मणः | அந்தச் செயலின் | अन्नरसे | உணவின் ஸாரத்தில் |
| विपाकः | பலம் | व्याधिः | வியாதியானது |
| अयं | இதாக, | यथा | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| अपथ्यैः सह | அபத்தியமானவை | | வண்ணமே, |
| | களுடன் | समुपस्थितः | நேர்ந்தது. |

तस्मान्मामागतं भद्रे तस्योदारस्य तद्वचः । इत्युत्त्वा स रुदंस्त्रस्तो भार्यामाह च भूमिपः ॥

| | | | |
|---------|----------------|-------------|--------------------|
| भद्रे | “உத்தமியே! | इति उक्त्वा | என்று கூறி, |
| तस्मात् | ஆகையால் | सः भूमिपः | அவ்வரசர் |
| उदारस्य | ஸத்தியசீலராகிய | रुदन् | அழுதுகொண்டு |
| तस्य | அவரது | वस्तः च | உடல் நடுங்கியவராய் |
| तत् वचः | அச்சாபமொழியான | भार्या | மனைவியைப் பார்த்து |
| मां | என்னை [து | आह | பின்வருமாறும் |
| आगतं | வந்தடைந்தது” | | சொன்னார்: |

यदहं पुत्रशोकेन संत्यक्ष्याम्यद्य जीवितम् । चक्षुर्भ्यां त्वां न पश्यामि कौसल्ये साधु मा स्पृश ॥

| | | | |
|---------------|------------------|--------------|---------------------|
| कौसल्ये | “கோஸலையே! | चक्षुर्भ्यां | இரு கண்களாலும் |
| अहं | நான் | त्वां | உன்னை |
| यत् | எந்த அந்த | पश्यामि न | பார்க்கமுடியவில்லை. |
| पुत्रशोकेन | புத்திரசோகத்தால் | मा | என்னை |
| अद्य | இப்பொழுது | साधु | நன்றாக |
| जीवितं | உயிரை | स्पृश | தடவிக்கொடுப்பா |
| संत्यक्ष्यामि | விடுகிறேன். | | யாக. |

यमक्षयमनुप्राप्ताः प्रेक्ष्यन्ते न हि मानवाः । यदि मां संस्पृशेद्रामः सकृदप्यालपेत वा ॥
धनं वा यौवराज्यं वा जहेयमिति मे मतिः ॥ ६४ ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------|--------------|--------------------|
| यमक्षयं | “யமலோகத்தை | वा | அல்லது |
| अनुप्राप्ताः | அடைந்த | आलपेत | சம்பாஷிப்பான் |
| मानवाः | மானிடர்கள் | यदि | என்றால், |
| प्रेक्ष्यन्ते न | காணப்படுகிறதில்லை | धनं वा | தனத்தையும், |
| हि | ஆகையால், | यौवराज्यं वा | இளவரசுப் பட்டத் |
| रामः | ராமன் | | தையும், |
| मां | என்னிடம் | जहेयं | கொடுத்துவிடுவேன்;” |
| सकृत् अपि | ஒருமுறையேனும் | इति | என்பது |
| संस्पृशेत् वा | தோன்றுவான், | मे | எனது |
| | | मतिः | துணிபு. |

तन्मे न सदृशं देवि यन्मया राघवे कृतं । सदृशं तत् तस्यैव यदनेन कृतं मयि ॥ ६५ ॥

| | | | |
|-------|------------------|---------|----------------|
| देवि | “ தேவி ! | सदृशं न | ஏற்றதன்று. |
| मया | என்னால் | अनेन | இவனால் |
| राघवे | ராமன் விஷயத்தில் | मयि | என் விஷயத்தில் |
| यत् | யாதொன்று | यत् | யாதொன்று |
| कृतं | செய்யப்பட்டதோ | कृतं | செய்யப்பட்டதோ |
| तत् | அது | तत् तु | அது மட்டும் |
| मे | எனக்கு | तस्य एव | அவனுக்கே |
| | | सदृशम् | ஏற்றது. |

दुर्वृत्तमपि कः पुत्रं त्यजेद्भुवि विचक्षणः । कश्च प्रवाज्यमानो वा नामूयेत्पितरं सुतः ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------------|--------------|-------------------|
| भुवि | உலகில் | कश्च | எந்த |
| विचक्षणः | புத்தியுள்ள | सुतः वा | புதல்வன்தான் |
| कः . | எவன் | प्रवाज्यमानः | தூரத்தப்பட்டவனாய் |
| पुत्रं | புதல்வனை | पितरं | தந்தையிடம் |
| दुर्वृत्तं अपि | கெட்ட நடத்தையுடையவனாயிருப்பினும் | असूयेत् न | வெறுப்புறும் |
| त्यजेत् | விலக்குவான் ? | | விருப்பான் ? |

चक्षुषा त्वां न पश्यामि स्मृतिर्मम विलुप्यते । दूता वैवस्वतस्यैते कौसल्ये त्वरयन्ति माम् ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|------------|-------------------|
| कौसल्ये | “ கோஸலையே ! | स्मृतिः | அறிவு |
| त्वां | உன்னை | विलुप्यते | அழிகிறது. |
| चक्षुषा | நேத்திரத்தால் | वैवस्वतस्य | யமனது |
| पश्यामि न | பார்க்கமுடியவில்லை. | एते दूताः | இத்தூதர்கள் |
| मम | எனக்கு | मां | என்னை |
| | | त्वरयन्ति | விரைவிக்கின்றனர். |

अतस्तु किं दुःखतरं यदहं जीवितक्षये । न हि पश्यामि धर्मज्ञं रामं सत्यपराक्रमम् ॥ ६८ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------|---------------|------------------------------------|
| अहं | “ நான் | रामं | ராமனை |
| जीवितक्षये तु | உயிர் போகும் சமயத்திலும் | पश्यामि न यत् | கட்புலனாய்ப் பாராதிருக்கின்றேனென்ற |
| धर्मज्ञं | தருமமறிந்தவனும் | अतः | இதையிட |
| सत्यपराक्रमं | வீண்போகாத பராக் கிரமமுடையவனுமான | दुःखतरं | மேம்பட்ட கஷ்டம் |
| | | किं हि | என்னதானிருக்கிறது? |

तस्यादर्शनजः शोकः सुतस्याप्रतिकर्मणः । उच्छोषयति मे प्राणान्वारि स्तोकमिवातपः ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-----------|---------------|
| अप्रतिकर्मणः | ஒப்புயர்வற்ற செயலை | वारि | நீரை |
| तस्य | அந்த [யுடைய | आतपः | வெயில் |
| सुतस्य | புத்திரனை | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| अदर्शनजः | பாராததால் விளைந்த | मे | எனது [வண்ணமே, |
| शोकः | சோகமானது, | प्राणान् | உயிரை |
| स्तोकं | சொல்லி | उच्छोषयति | உரிஞ்சுகிறது. |

न ते मनुष्या देवास्ते ये चारुशुभकुण्डलम् । सुखं द्रक्ष्यन्ति रामस्य वर्षे पञ्चदशे पुनः ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------|--------------|--------------|
| ये | “எவர்கள் | द्रक्ष्यन्ति | காண்பார்களோ, |
| रामस्य | ராமனது | ते | அவர்கள் |
| चारुशुभकुण्डलं | அழகிய சுபகுண்ட லங்களையுடைய | मनुष्याः | மானிடர்கள் |
| सुखं | முகத்தை | न | அல்லர். |
| पञ्चदशे वर्षे | பதினைந்தா மாண்டில் | ते | அவர்கள் |
| पुनः | மீளவும் | देवाः | தேவர்கள். |

पद्मपत्रेक्षणं सुभ्रु सुदंष्ट्रं चारुनासिकम् । धन्या द्रक्ष्यन्ति रामस्य ताराधिपनिभं सुखम् ॥

| | | | |
|----------------|---|--------------|-------------------------------|
| सुभ्रु | “மனோகரமாய் விளங் குமுத்தமியே! | चारुनासिकं | சுந்தரமான மூக்கையு டையதும் |
| पद्मपत्रेक्षणं | { தாமரை இதழ்போ ன்ற கண்களையுடை யதும் | ताराधिपनिभं | சந்திரனையொத்தது |
| सुदंष्ट्रं | அழகிய பற்களையுடை யதும் | रामस्य | ராமனது [மான |
| | | सुखं | முகத்தை |
| | | धन्याः | கொடுத்துவைத்தவர் |
| | | द्रक्ष्यन्ति | பார்க்கப்போகின்றார் கள். |

सदृशं शारदस्येन्दोः फुलस्य कमलस्य च । सुगन्धि मम नाथस्य धन्या द्रक्ष्यन्ति तन्मुखम् ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------|--------------|-----------------------------|
| शारदस्य | “சரக்காலத்திய | मम | எனது |
| इन्दोः | சந்திரனுக்கும் | नाथस्य | நாதனது |
| फुलस्य | மலர்ந்த | तत् मुखं | அந்தமுகத்தை |
| कमलस्य | தாமரைப்புஷ்பத்திற் கும் | धन्याः | கொடுத்துவைத்தவர் கள் |
| सदृशं | ஸமானமாகியதும் | द्रक्ष्यन्ति | பார்க்கப்போகின்றார் கள். |
| सुगन्धि च | நறுமணம் கமழ்வது மாகிய | | |

निवृत्तवनवासं तमयोध्यां पुनरागतम् । द्रक्ष्यन्ति सुखिनो रामं शुक्रं मार्गगतं यथा ॥७३॥

| | | | |
|---------------|---|--------------|--------------------------|
| सुखिनः | “பாக்கியசாலிகள் | तं रामं | அந்த ராமனை, |
| निवृत्तवनवासं | { முற்றிலும் முடித்த வனவாஸத்தையு டையவனும் | मार्गगतं | ஸ்வஸ்தானத்தை |
| अयोध्यां | அயோத்திக்கு | शुक्रं | சுக்கிரனை [யடைந்த |
| पुनः | மீளவும். | यथा | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே, |
| आगतं | வந்தவனுமான | द्रक्ष्यन्ति | காண்பார்கள். |

कौसल्ये चित्तमोहेन हृदयं सीदतीव मे । वेदये न च संयुक्ताञ्छब्दस्पर्शरसानहम् ॥७४॥

| | | | |
|------------|------------------|-------------------|---|
| कौसल्ये | “கோஸலையே! | अहं | நான் |
| चित्तमोहेन | மனமறியச்செய்த | शब्दस्पर्शरसान् च | சப்தம், ஸ்பரிசம், சுவை இவைகளை |
| मे | எனது [பிழையினால் | संयुक्तान् | { அவைகளின் இந்திரிய ங்களுடன் சேர்ந்த வைகளாக |
| हृदयं | மனம் | वेदये न | உணரவில்லை. |
| इव | முற்றிலும் | | |
| सीदति | ஒடுங்குகிறது. | | |

चित्तनाशाद्विपद्यन्ते सर्वाण्येवेन्द्रियाणि मे । क्षीणस्नेहस्य दीपस्य संसक्ता रश्मयो यथा ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|----------------|----------------|
| मे | “எனது | रश्मयः | கிரணங்கள் |
| इन्द्रियाणि | பஞ்சேந் திரியங்கள் | यथा | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| सर्वाणि | எல்லாமும், | | வண்ணமே, |
| क्षीणस्नेहस्य | எண்ணெயில்லாத | चित्तनाशात् एव | மன அழிவு ஒன்றே |
| दीपस्य | தீபத்தை | | லேயே |
| संस्क्ताः | அடைந்த | विपद्यन्ते | ஒடுங்குகின்றன. |

अयमात्मभवः शोको मामनाथमचेतनम् । संसादयति वेगेन यथा कूलं नदीरयः ॥ ७६ ॥

| | | | |
|---------|-----------------|----------|---------------|
| आत्मभवः | “தானாகவிளைந்த | नदीरयः | நதியின் வேகம் |
| अयं | இந்த | कूलं | கரையை |
| शोकः | சோகமானது | यथा | எவ்வண்ணமோ |
| अनाथं | நாதனற்றவனும் | | அவ்வண்ணமே, |
| अचेतनं | அறிவிழந்தவனுமான | वेगेन | திவீரமாக |
| मां | என்னை, | संसादयति | ஒழிக்கிறது. |

हा राघव महाबाहो हा ममायासनाशन । हा पितृप्रिय मे नाथ हा ममासि गतः सुत ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|--------------|------------------|
| महाबाहो | “நீண்ட புஜங்களை | हा पितृप्रिय | ஆ! தந்தை சொற் |
| | யுடைய | | கடவாதவனே! |
| हा राघव | ஆ! ராம! | मे | எனது |
| मम | எனது | हा नाथ | ஆ! நாதனே! |
| हा आयासनाशन | ஆ! மனக்குறையைத் | मम सुत | என் புதல்வனே! |
| | தீர்ப்பவனே! | गतः असि | பக்கலில்லாத சென் |
| | | | றுவிட்டாய்! |

हा कौसल्ये विनश्यामि हा सुमित्रे तपस्विनि । हा नृशंसे ममामित्रे कैकेयि कुर्यांसनि ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-----------|---------------------|
| हा कौसल्ये | “ஆ! கோஸலையே! | नृशंसे | நவீரக்கமந்தவனாயும், |
| हा तपस्विनि | ஆ! பத்திமை பூண்ட | कुलपांसनि | குலத்தைக் கெடுக்க |
| सुमित्रे | சுமித்திரையே! | | வந்தவளுமாகிய |
| मम | எனக்கு | हा कैकेयि | ஆ! கைகேயி! |
| अमित्रे | வைரியாயும், | विनश्यामि | நான் சாகின்றேன்.” |

इति मातुश्च रामस्य सुमित्रायाश्च सन्निधौ । राजा दशरथः शोचञ्जीवितान्तमुपागमत् ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|------------|-------------------|
| रामस्य | ஸ்ரீராமரது | शोचन् | புலம்பிக்கொண்டே |
| मातुः च | தாயாருடையவும், | दशरथः | தசரத |
| सुमित्रायाः च | சுமித்திரையினுடைய | राजा | சக்கிரவர்த்தியார் |
| सन्निधौ | முன்னிலையில் [யவும். | जीवितान्तं | வாழ்நாளின் முடிவை |
| इति | மேற்கண்டவண்ண | उपागमत् | எய்தினார். |
| | மாய் | | |

तथा तु दीनं कथयन्नराधिपः प्रियस्य पुत्रस्य विवासनातुरः ।

गतेऽर्धरात्रे भृशदुःखपीडितस्तदा जहौ प्राणमुदारदर्शनः ॥ ८० ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|----------------|------------------|
| उदारदर्शनः | சத்தியசீலராகிய | तथा | மேற்கண்டவாறு |
| नराधिपः | சக்கிரவர்த்தியார் | दीनं | இரக்கமாய் |
| प्रियस्य | பெறலறிய | कथयन् तु | புலம்பிக்கொண்டே |
| पुत्रस्य | புதல்வனுடைய | तदा | அப்பொழுது |
| विवासनातुरः | வனவாஸத்தால் துயருற்றவராய் | अर्धरात्रे गते | நடுநிசிக்கப்பால் |
| भृशदुःखपीडितः | மிக்க கஷ்டப்படுபவ ராய் | प्राणं | பிராணனை |
| | | जहौ | விட்டார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे चतुःषष्टितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 4952

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2597



पञ्चषष्टितमः सर्गः—अमुपத்தைந்தாவது ஸர்க்கம் ॥ ६५ ॥

अन्तःपुरविलापः—அந்தப்புர ஸ்திரீகள் அழுவது.

अथ राज्यां व्यतीतायां प्रातरेवापरेऽहनि । वन्दिनः पर्युपातिष्ठंस्तत्पार्थिवनिवेशनम् ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|------------|----------------|------------------|
| अथ | பிறகு | प्रातः | சூரியோதயத்தில் |
| राज्यां | இரவு | वन्दिनः | வந்திகள் |
| व्यतीतायां | கழிந்ததும் | तत् एव | அதே |
| अपरे | அடுத்த | पार्थिवनिवेशनं | அரசமாளிகைக்கு |
| अहनि | நாளில் | पर्युपातिष्ठन् | வந்துசேர்ந்தனர். |

सूताः परमसंस्कारा मागधाश्चोत्तमश्रुताः । गायकाः स्तुतिशीलाश्च निगदन्तः पृथक्पृथक् ॥

| | | | |
|--------------|--|-------------|---------------------|
| परमसंस्काराः | { நாகரிகமான ஆடையா பரணங்களணிந்தவர் களாய் | मागधाः च | மாகதர்களும் |
| सूताः | சூதர்களும் | स्तुतिशीलाः | ஸ்துதிகளில் நிபுணர் |
| उत्तमश्रुताः | நல்ல புகழ்படைத்த | गायकाः च | காயகர்களும்[களாகிய |
| | | पृथक् पृथक् | தனித்தனியே |
| | | निगदन्तः | பாடினார்கள். |

राजानं स्तुवतां तेषामुदात्ताभिहिताशिषाम् । प्रासादाभोगविस्तीर्णः स्तुतिशब्दो व्यवर्धत ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------|---------------|-------------------|
| राजानं | சக்கிரவர்த்தியாரை | तेषां | அவர்களுடைய |
| उदात्ताभि- | உரத்த குரலிலாகி | स्तुतिशब्दः | புகழும் சத்தமானது |
| हिताशिषां } | கூறுபவர்களாய் | प्रासादाभोग-} | மாளிகை முற்றிலும் |
| स्तुवतां | ஸ்தோத்திரம் செய்ப வர்களாகிய | विस्तीर्णः } | பரவியதாய் |
| | | व्यवर्धत | ஒலித்தது. |

ततस्तु स्तुवतां तेषां सूतानां पाणिवादकाः । अपदानान्युदाहृत्य पाणिवादानवादनम् ॥

| | | | |
|----------|----------------|---------------|----------------|
| ततः | அப்பொழுது | सूतानां | வந்திகளுக்கு |
| अपदानानि | புண்ணிய கதைகளை | पाणिवादकाः तु | தாளம் போடுபவர் |
| उदाहृत्य | கூறி, | | களும் |
| स्तुवतां | ஸ்துதிக்கும் | पाणिवादान् | தாளங்களை |
| तेषां | அந்த | अवादनम् | போட்டார்கள். |

तेन शब्देन विहगाः प्रतिबुद्धा विसस्वनुः । शाखास्थाः पञ्जरस्थाश्च ये राजकुलगोचराः ॥

| | | | |
|------------|-------------------|----------------|------------------|
| ये | எந்த | राजकुलगोचराः च | அரண்மனையிலிருந்த |
| विहगाः | பறவைகள் | | னவோ அவைகள் |
| शाखास्थाः | மாக்களைகளிலிருந்த | तेन शब्देन | அந்த ஒலியால் |
| | னவோ, | प्रतिबुद्धाः | கண்விழித்தவைக |
| पञ्जरस्थाः | கூடுகளிலிருந்தன | | ளாய் |
| | வோ, | विसस्वनुः | கூவின. |

व्याहताः पुण्यशब्दाश्च वीणानां चापि निस्वनाः ।

आशीर्गेयं च गाथानां पूरयामास वेश्म तत् ॥ ६ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|-------------|---------------------|
| व्याहताः | கூறப்பட்ட | गाथानां | பாடல்களை |
| पुण्यशब्दाः च | புண்ணிய கீர்த்தனங் | आशीर्गेयं च | ஆசியாகப் பாடுதலும், |
| | களும், | तत् | அந்த |
| वीणानां | வீணைகளுடைய | वेश्म अपि | மாளிகைபெய்தும் |
| निस्वनाः च | தொனிகளும், | पूरयामास | நிரம்பின. |

ततः शुचिसमाचाराः पर्युपस्थानकोविदाः । स्त्रीवर्षवरभूयिष्ठा उपतस्थुर्यथापुरम् ॥ ७ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|-----------------------|---------------------|
| ततः | அப்பொழுது | स्त्रीवर्षवरभूयिष्ठाः | ஸ்த்ரீகளும், அலிக |
| शुचिसमाचाराः | புண்ணியானுஷ்டான | | ளும் |
| | முடைபவர்களும் | यथापुरं | வழக்கம்போல் |
| पर्युपस्थान-} | குற்றேவல்களில் | उपतस्थुः | வந்துசேர்ந்தார்கள். |
| कोविदाः } | நிபுணர்களும் | | |

हरिचन्दनसंपृक्तमुदकं काञ्चनैर्घटैः । आनिन्युः स्नानशिक्षाज्ञा यथाकालं यथाविधि ॥ ८ ॥

| | | | |
|------------------|------------------|------------------|-------------------|
| स्नानशिक्षाज्ञाः | ஸ்நான முறையை நன் | हरिचन्दनसंपृक्तं | செஞ்சந்தனம் கலந்த |
| | குணரந்தவர்கள் | उदकं | ஐலத்தை |
| काञ्चनैः | தங்க | यथाकालं | காலங்கடவாமலும் |
| घटैः | குடங்களில் | यथाविधि | முறை தவறாமலும் |
| | | आनिन्युः | கொணர்ந்தனர். |

मङ्गलालम्भनीयानि प्राशनीयान्युपस्करान् । उपनिन्युस्तथाऽप्यन्याः कुमारीबहुलाः स्त्रियः ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|-----------------------|---|
| तथा | அவ்வண்ணமே | मङ्गलालम्भ- नीयानि | மங்களகரமாய்த் தேய் த் துக்கொள்ளவே ண்டிய சாமான்களை யும் |
| अन्याः | வேறு | प्राशनीयानि | சிற்றுண்டிகளையும் |
| कुमारीबहुलाः | கன்னிகையரை மிகை யாகக்கொண்ட | उपस्करान् अपि | ஒளவுதவகைகளையும் |
| स्त्रियः | வனிதையர்கள் | उपनिन्युः | கொணர்ந்தனர். |

सर्वलक्षणसम्पन्नं सर्वं विधिवदर्चितम् । सर्वं सुगुणलक्ष्मीवत्तद्वभूवाभिहारिकम् ॥ १० ॥

| | | | |
|-------------------|------------------------------------|-----------------|------------------------------|
| आभिहारिकं | கொணர்ந்து வைக்க வேண்டிய | विधिवत् | முறைப்படி |
| तत् सर्वं | அவை யாவும் | अर्चितं | வெகுமானிக்கப்பட்ட டதாயும் |
| सर्वलक्षणसम्पन्नं | எல்லாலக்ஷணங்களும் பொருந்தினவையா | सुगुणलक्ष्मीवत् | நற்குணத்துடனும் அழகுடனும் |
| सर्वं | முற்றிலும் [யும்] | वभूव | விளங்கின. |

तत्तु सूर्योदयं यावत्सर्वं परिसमुत्सुकम् । तस्यावनुपसंप्राप्तं किंस्वित्युपशङ्कितम् ॥ ११ ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------------|---------------|-------------------|
| तत् सर्वं | அவர்களெல்லோரும் | किंस्वित् इति | ‘என்னவென்று’ |
| अनुपसंप्राप्तं | நெருங்காமல் | उपशङ्कितं तु | சங்கித்தவர்களாகவே |
| सूर्योदयं यावत् | சூரியோதயம்வரை | तस्थौ | இருந்தார்கள். |
| परिसमुत्सुकं | மிக்க ஆவலுடையவர் களாய் | | |

अथ याः कोसलेन्द्रस्य शयनं प्रत्यनन्तराः । ताः स्त्रियस्तु समागम्य भर्तारं प्रत्यबोधयन् ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|--------------|-----------------|
| अथ | அப்பொழுது | याः | எவர்களோ |
| कोसलेन्द्रस्य | அயோத்தியாமன் | ताः तु | அவர்களும் |
| शयनं | படுக்கைக்கு [னாது] | समागम्य | வந்து |
| प्रत्यनन्तराः | அருகாமையிலிருந்த | भर्तारं | கணவனாரை |
| स्त्रियः | மனைவிமீர்கள் | प्रत्यबोधयन् | எழுப்பினார்கள். |

तथाऽप्युचितवृत्तास्ता विनयेन नयेन च । न ह्यस्य शयनं स्पृष्ट्वा किञ्चिदप्युपलेभिरे ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------|---------------|-------------------------|
| उचितवृत्ताः | புகழ்பெற்ற அனுஷ டானமுடைய | विनयेन | மரியாதையாகவும் |
| ताः | அவர்கள் | नयेन च | சரியாகவும் |
| तथा अपि | அப்பொழுதும் | स्पृष्ट्वा हि | தட்டிப்பார்த்தும் |
| अस्य | அவரது | किञ्चित् अपि | விஷயமெதையும் |
| शयनं | படுக்கையை | उपलेभिरे न | அறிந்துகொள்ள வில்லை. |

ताः स्त्रियः स्वमशीलज्ञाश्चेष्टासञ्चलनादिषु । ता वेपथुपरीताश्च राज्ञः प्राणेषु शङ्किताः ॥

वेष्टासञ्चலनादिषु { படுத்திருக்கும் மாதிரி
யாலும் அசைவுக
ளாலும்

स्वमशीलज्ञाः தூக்கத்தினுண்மை
ताः ताः அந்த அந்த [யுணர்ந்த
स्त्रियः च மனைவிமார்களுக்கும்

प्रतिस्रोतस्तृणाग्राणां समं ताः सञ्चकम्पिरे

ताः அவர்கள்
प्रतिस्रोत- } வெள்ளத்திற்கெதிரா
स्तृणाग्राणां } கவிருக்கும் புற்களின்
நுணிகளுக்கு

राज्ञः சக்கிரவர்த்தியாரது
प्राणेषु உயிர்விஷயத்தில்
शङ्किताः சந்தேகமுற்றவர்
களாய்
वेपथुपरीताः உள்ளம்நடுங்கினார்கள்.

॥ १५ ॥

समं சமமாய்
सञ्चकम्पिरे உடல் நடுங்கினார்கள்.

अथ संवेपमानानां स्त्रीणां दृष्ट्वा च पार्थिवम् । यत्तदा शङ्कितं पापं तस्य जज्ञे विनिश्चयः ॥

अथ பிறகு
पार्थिवं சக்கிரவர்த்தியாரைக்
दृष्ट्वा च கண்ணுற்றதும்
संवेपमानानां முற்றிலும் நடுக்க
முற்ற

स्त्रीणां மனைவிமார்களுக்கு
यत् எந்த

पापं துர்ப்பாக்கியமானது
तदा முன்னரே
शङ्कितं சந்தேகிக்கப்பட்ட
तस्य அதற்கு [டதோ
विनिश्चयः தீர்மானம்
जज्ञे ஏற்பட்டது.

कौसल्या च सुमित्रा च पुत्रशोकपराजिते । प्रसुप्ते न प्रबुध्यते यथा कालसमन्विते ॥ १७ ॥

कौसल्या च கோஸலாதேவியாரும்
सुमित्रा च சுமித்ராதேவியாரும்

पुत्रशोकपराजिते { புத்ரசோகத்திலும்
முற்றிலும் மூழ்கிய
வராய்

कालसमन्विते மரணமடைந்தவர்
यथा எவ்வண்ணமோ [கள்
அவ்வண்ணமே
प्रसुप्ते தூங்கியவர்கள்
प्रबुध्यते न கண் விழிக்கவில்லை.

निष्प्रभा च विवर्णा च सन्ना शोकेन सन्नता । न व्यराजत कौसल्या तारेव तिमिरावृता ॥

कौसल्या கோஸலாதேவியார்
निष्प्रभा च ஒளியிழந்தவளாயும்
विवर्णा च நிறம் குன்றியவளா
शोकेन துயரால் [யும்
सन्ना படுத்துக்கிடந்தவ
ளாயும்

तिमिरावृता திமிரமேனும்னோயால்
பிடிக்கப்பட்டு
सन्नता குன்றிய
तारा தாரகை
इव போல்
व्यराजत न விளக்கமற்றிருந்தாள்.

कौसल्यानन्तरं राज्ञः सुमित्रा तदनन्तरम् । न स्म विभ्राजते देवी शोकाश्रुलुलितानना ॥

राज्ञः சக்கிரவர்த்தியாருக்கு
अनन्तरं அடுத்தாற்போல்
कौसल्या கோஸலாதேவியார்
तदनन्तरं அவருக்கடுத்தாற்
போலவிருந்த
सुमित्रा சுமித்திரா

देवी தேவி
शोकाश्रु- } சோகக்கண்ணீரால்
लुलितानना } வாடிய முகமுடைய
வளாய்
विभ्राजते न स्म விளங்கவில்லை.

ते च दृष्ट्वा तथा सुप्ते उभौ देव्यौ च तं नृपम् । सुप्तमेवोदृतप्राणमन्तःपुरमतप्यत ॥२०॥

| | | | |
|--------------|----------------------|------------|--------------------------------|
| अन्तःपुरं | அந்தப்புர ஜனம் | उभौ देव्यौ | தேவிமார்களிருவரை |
| तं | அந்த | | யும், |
| नृपं | சக்கிரவர்த்தியாரை | तथा | அங்ஙனம் |
| सुप्तं एव | தூங்கிக்கொண்டே | सुप्ते च | தூங்கிக்கொண்டிருப்பவர்களாகவும் |
| उदृतप्राणं च | உயிரையிழந்தவராகவும், | दृष्ट्वा | கவனித்து |
| ते | அந்த | अतप्यत | உள்ளம் துடித்தது. |

ततः प्रचुक्रुशुर्दीनाः सस्वरं ता वराङ्गनाः । करेणव इवारण्ये स्थानप्रच्युतयूथपाः ॥२१॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-----------------|-------------------|
| ततः | அப்பொழுது | स्थानप्रच्युत-} | இடம்விட்டு வெளிக் |
| दीनाः | மிகத்துயரப்படுகின்ற | यूथपाः } | கிளம்பிய ஆண்பா |
| | வர்களாகிய | | னைகளையுடைய |
| ताः | அந்த | करेणवः | பெண்யானைகள் |
| वराङ्गनाः | உத்தமஸ்த்ரீகள் | इव | போல |
| अरण्ये | காட்டில் | सस्वरं | சூரலிட்டு |
| | | प्रचुक्रुशुः | அழுதனார்கள். |

तासामाक्रन्दशब्देन सहस्रोदृतचेतने । कौसल्या च सुमित्रा च व्यक्तनिद्रे बभूवतुः ॥२२॥

| | | | |
|---------------|------------------|--------------|-------------------------|
| तासां | அவர்களுடைய | उदृतचेतने | பிரக்ஞையையடைந்தவர்களாய் |
| आक्रन्दशब्देन | அழுகைக்குரலால் | व्यक्तनिद्रे | தூக்கம் கலைந்தவர் |
| कौसल्या च | கோஸலாதேவியாரும் | | களாய் |
| सुमित्रा च | சுமித்திராதேவியா | बभूवतुः | ஆனார்கள். |
| सहसा | திடீரென [ரும் | | |

कौसल्या च सुमित्रा च दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा च पार्थिवम् । हा नाथेति परिक्रुश्य पेततुर्धरणीतले ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|------------|----------------|
| कौसल्या च | கோஸலாதேவியாரும் | हा नाथ | ‘ஆ நாதரே’ |
| सुमित्रा च | சுமித்திராதேவியாரும் | इति | என்று |
| पार्थिवं | சக்கிரவர்த்தியாரை | परिक्रुश्य | அலறிக்கொண்டு |
| दृष्ट्वा | பார்த்தும் | धरणीतले | பூமியில் |
| स्पृष्ट्वा च | தொட்டும் | पेततुः | விழுந்தார்கள். |

सा कोसलेन्द्रदुहिता वेष्टमाना महीतले । न बभ्राज रजोध्वस्ता तारेव गगनाच्च्युता ॥

| | | | |
|------------------|-------------------|-----------|-------------------|
| कोसलेन्द्रदुहिता | கோஸலமன்னரின் தி | वेष्टमाना | புரளுபவளாய் |
| सा | அவள் [ருமகளாகிய | गगनात् | ஆகாசத்திலிருந்து |
| महीतले | பூமியில் | च्युता | நழுவிவிழுந்த |
| रजोध्वस्ता | புழுதிபடியப்பெற்ற | तारे इव | நகைத்திரம்போல் |
| | வளாய் | बभ्राज न | ஒளியற்றிருந்தாள். |

नृपे शान्तगुणे जाते कौसल्यां पतितां भुवि । अपश्यंस्ताः स्त्रियः सर्वा इतां नागवधूमिव ॥

ता: அந்த
 स्त्रियः மனைவிமார்கள்
 सर्वा: எல்லோரும்
 नृपे சக்கிரவர்த்தியார்
 शान्तगुणे மாண்ட நிலைமையில்
 जाते இருக்கையில்
 नागवधूं इव பெண்யானையைப்போல

कौसल्यां கோஸலாதேவியாரை
 भुवि தரையில்
 पतितां விழுந் துகிடக்கின்ற வளாய்
 इतां எல்லாவிதத்திலும்
 अपश्यन् நாசமடைந்தவளாய்
 எண்ணினார்கள்.

ततः सर्वा नरेन्द्रस्य कैकेयीप्रमुखाः स्त्रियः । रुदन्यः शोकसन्तप्ता निपेतुर्गतचेतनाः ॥

ततः அதன்மேல்
 नरेन्द्रस्य சக்கிரவர்த்தியாரது
 कैकेयीप्रमुखा: கைகேயியைப்பற்றியி
 स्त्रियः மனைவிமார்கள் [ருந்த
 सर्वा: எல்லோரும்

रुदन्यः அழுதுகொண்டு
 शोकसन्तप्ता: சோகத்தால் பரிதபிக்
 गतचेतना: கின்றவர்களாய்
 निपेतु: மெய்மறந்தவர்களாய்
 वी: வீழ்ந்தனர்.

ताभिः स बलवान्नादः क्रोशन्तीभिरनुदुतः । येन स्फीतीकृतं भूयस्तद्रहं समनादयत् ॥

क्रोशन्तीभिः அழும்
 ताभिः அவர்களால்
 स: அந்த
 बलवान् பெரும்
 नादः சத்தமானது
 अनुदुतः எதிரொலித்தது.

येन அதனால்
 भूय: மிகவும்
 स्फीतीकृतं வியாபிக்கப்பட்டதா
 तत् गृहं அத்திருமாளிகையை
 समनादयत् ஒலிக்கச்செய்தது.

तत्समुत्तस्तसंभ्रान्तं पर्युत्सुकजनाकुलम् । सर्वतस्तुमुलाक्रन्दं परितापार्तबान्धवम् ॥ २८ ॥
 सद्यो निपतितानन्दं दीनं विक्लुबदर्शनम् । बभूव नरदेवस्य सद्य दिष्टान्तमीयुषः ॥ २९ ॥

सद्य: இன்று
 दिष्टान्तं மாணத்தை
 ईयुष: அடைந்த
 नरदेवस्य சக்கிரவர்த்தியாரது
 तत् அந்த
 सद्य திருமாளிகையானது
 सर्वत: எல்லாப்பக்கங்க

एलிலும்
 पर्युत्सुकजनाकुलं { மனவேதனையுற்ற ஜன
 ङ्गलால் நிறையப்
 பெற்றதாயும்,
 सद्य { முற்றிலும் திகிலடை
 न्नु கலக்கமுற்றதா
 यम्,
 समुत्तस्तसंभ्रान्तं {

तुमुलाक्रन्दं பலத்த அழுகையை
 உடையதாயும்,
 परितापार्तबान्धवं { மனவேதனையால் பிடி
 க்கப்பட்ட பந்துக்
 களையுடையதாயும்,
 निपतितानन्दं உற்சாகமொழிந்த
 தாயும்,
 विक्लुबदर्शनं பாழடைந்த தோற்றத்
 தையுடையதாயும்,
 दीनं பரிதபிக்கத்தகுந்த
 தாயும்
 बभूव இருந்தது.

अतीतमाज्ञाय तु पार्थिवर्षभं यशस्विनं सम्परिवार्य पत्नयः ।

भृशं रुदन्यः करुणं सुदुःखिताः प्रगृह्य बाहू व्यलपन्ननाथवत् ॥ ३० ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|------------|----------------------------|
| पत्नयः | மனைவிமார்கள் | बाहू | இரு கைகளையும் |
| यशस्विनं | புகழ்பெற்ற | प्रगृह्य | பிசைந்துகொண்டு |
| पार्थिवर्षभं | சக்கிரவர்த்திகளிலுத் தமரை | सुदुःखिताः | மிக்க துயருற்றவர் களாய் |
| अनाथवत् | நாதனற்றவர்போல் | रुदन्यः | அழுதுகொண்டு |
| अतीतं | காலஞ்சென்றவராக | भृशं | மிகவும் |
| आज्ञाय तु | அறிந்தவுடனே | करुणं | மனமுருகும்வண் |
| सम्परिवार्य | சூழ்ந்துகொண்டு, | व्यलपन् | புலம்பினார்கள். [ணம்] |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे पञ्चषष्ठितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 4982



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2627

षट्षष्ठितमः सर्गः—अमुपத்தिञ्जुनावतु षर्ककम् ॥ ६६ ॥

राजशरीरस्य तैलद्रोण्यां निक्षेपः—अरशरतु उडलै एண்ணैத்தோட்டியில் வைப்பது.

तमग्निमिव संशान्तमम्बुहीनमिवार्णवम् । हतप्रभमिवादित्यं स्वर्गस्थं प्रेक्ष्य भूमिपम् ॥ १ ॥

कौसल्या बाष्पपूर्णाक्षी विविधं शोककर्षिता । उपगृह्य शिरो राज्ञः कैकेयीं प्रत्यभाषत ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------------------------|---------------|--------------------|
| कौसल्या | கோஸலாதேவியார் | अर्णवं | சமுத்திரத்தை |
| विविधं | பலவிதத்திலும் | इव | போலிருப்பவராயும் |
| शोककर्षिता | சோகத்தால் வருந்தி யவளாய் | हतप्रभं | ஒளியிழந்த |
| बाष्पपूर्णाक्षी | கண்ணீர் நிறைந்த கண்களுற்றவளாய் | आदित्यं | சூரியபகவானை |
| तं | அந்த | इव | போலிருப்பவராகவும் |
| भूमिपं | சக்கிரவர்த்தியாரை | स्वर्गस्थं | இறந்தவராய் |
| संशान्तं | அவிந்துபோன | प्रेक्ष्य | கண்ணுற்று, |
| अग्निं | நெருப்பை | राज्ञः | சக்கிரவர்த்தியாரது |
| इव | போன்றவராகவும், | शिरः | தலையை |
| अम्बुहीनं | நீரற்ற | उपगृह्य | பற்றிக்கொண்டு, |
| | | कैकेयीं प्रति | கைகேயியைப்பார்த்து |
| | | अभाषत | பின்வருமாறு |

மொழிந்தாள் :

सकामा भव कैकेयि भुङ्क्ष्व राज्यमकण्टकम् । त्यक्त्वा राजानमेकाग्रा नृशंसे दुष्टचारिणि॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------|-----------|-------------------|
| कैकेयि | “கைகேயி! | राजानं | சக்கிரவர்த்தியாரை |
| सकामा | மனோரதங்கள் கைகூ டப்பெற்றவளாக | त्यक्त्वा | விலக்கிவிட்டு, |
| भव | இனியிருப்பாய். | अकण्टकं | பகையற்ற |
| नृशंसे | இரக்கமற்றவளே! | राज्यं | ராஜ்யத்தை |
| दुष्टचारिणि | கொடுஞ்செயல் புரிப வளே! | एकाग्रा | மனச்சஞ்சலமற்றவ |
| | | भुङ्क्ष्व | அனுபவி. [ளாய்] |

विहाय मां गतो रामो भर्ता च स्वर्गतो मम । विपथे सार्थहीनेव नाहं जीवितुमुत्सहे ॥४॥

| | | | |
|----------|-----------------|------------|-------------------|
| रामः | “रामன் | अहं | நான் |
| मां | என்னை | विपथे | கஷ்டதசையில் |
| विहाय | விட்டு | सार्थहीना | வாழ்க்கைப் பயனையி |
| गतः | சென்றான். | | முந்தவளாய் |
| मम | எனக்கு | जीवितुं इव | உயிர் வாழ உள்ள |
| भर्ता च | கணவனாகும் | उत्सहे न | ஒப்பேன். [வும் |
| स्वर्गतः | இறந்துவிட்டனர். | | |

भर्तारं तं परित्यज्य का स्त्री दैवतमात्मनः । इच्छेज्जीवितुमन्यत्र कैकेय्यास्त्यक्तधर्मणः ॥५॥

| | | | |
|-------------------|--------------------|-----------|--------------------|
| त्यक्तधर्मणः | “தர்மத்தைத் துறந்த | तं | கட்புலனை |
| कैकेय्याः अन्यत्र | கைகேயியைத் | दैवतं | தைவமாகிய |
| | தவிர்த்து | भर्तारं | கணவனை |
| का | எந்த | परित्यज्य | பறிகொடுத்துவிட்டு, |
| स्त्री | மனைவி | जीवितुं | உயிர்வாழ |
| आत्मनः | தனக்கு | इच्छेत् | ஒப்புவாள் ? |

न लुब्धो बुध्यते दोषान्किपाकमिव भक्षयन् । कुब्जानिमित्तं कैकेय्या राघवाणां कुलं हतम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------|----------------|-----------------|
| लुब्धः | “பேராசைகொண்ட | इव | அவ்வண்ணமே |
| किपाकं | கெட்டுப்போன [வன் | कैकेय्या | கைகேயியால் |
| | உணவை | कुब्जानिमित्तं | கூனிகாரணமாய் |
| भक्षयन् | உண்பவனாய் | राघवाणां | ராகவர்களுடைய |
| दोषान् | தோஷங்களை | कुलं | குலமானது |
| बुध्यते न | அறிவதில்லை. | हतम् | அழிக்கப்பட்டது. |

अनियोगे नियुक्तेन राज्ञा रामं विवासितम् । सभार्यं जनकः श्रुत्वा परितप्स्यत्यहं यथा ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-------------|---------------|
| अनियोगे | “ஒழுங்கற்ற காரியத் | श्रुत्वा | கேட்டு, |
| | தில் | जनकः | ஜனகமஹாராஜர், |
| नियुक्तेन | கட்டுப்படுத்தப்பட்ட | अहं | நான் |
| राज्ञा | சக்கிரவர்த்தியாரால் | यथा | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| सभार्यं | மனைவியுடன்கூட | | வண்ணமே, |
| रामं | ராமனை | परितप्स्यति | தவிப்பார். |
| विवासितं | நாடுகடத்தப்பட்டவ | | |
| | னாக | | |

स मामनाथां विधवां नाद्य जानाति धार्मिकः । रामः कमलपत्राक्षो जीवनाशमितो गतः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|----------|-----------------|
| इतः | “இவ்விடத்திலிருந்து | सः | அந்த |
| जीवनाशं | உயிருடனிருக்கும் | रामः | ராமன் |
| | பொழுதே கண்கா | मां | என்னை |
| गतः | ணைதிருத்தலை | अद्य | இப்பொழுது |
| धार्मिकः | அடைந்தவனும் | विधवां | கணவனையிழந்தவளா |
| | தார்மிகனும் | | கவும் |
| कमलपत्राक्षः | { தாமரையிதழையொத் | अनाथां | நாதனற்றவளாகவும் |
| | { த கண்களையுடையவ | जानाति न | அறியான். |
| | னுமான் | | |

विदेहराजस्य सुता तथा सीता तपस्विनी । दुःखस्यानुचिता दुःखं वने पर्युद्विजिष्यति ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|------------------|--------------|
| तथा | “அவ்வண்ணமே | अनुचिता | அனர்கையுமான |
| विदेहराजस्य | விதேஹமன்னரது | सीता | சீதை |
| सुता | புதல்வியும் | वने | காட்டில் |
| तपस्विनी | பதிவிரதாசிரோமணி | दुःखं | கஷ்டத்திற்கு |
| दुःखस्य | துக்கத்திற்கு [யும் | पर्युद्विजिष्यति | நடுங்குவாள். |

नदतां भीमघोषाणां निशासु मृगपक्षिणाम् । निश्म्य नादं संव्रस्ता राघवं संश्रयिष्यति ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|--------------|------------------------|
| निशासु | “இரவுகளில் | नादं | சப்தத்தை |
| भीमघोषाणां | உரத்த சத்தத்துடன் | निश्म्य | கேட்டு, |
| नदतां | கூவும் | संव्रस्ता | மிக நடுக்குற்றவளாய் |
| मृगपक्षिणां | மிருகங்களுடையவும் | राघवं | ராமனை |
| | பகைகளுடையவும் | संश्रयिष्यति | அணைத்துக்கொள் வாள். |

वृद्धश्चैवाल्पपुत्रश्च वैदेहीमनुचिन्तयन् । सोऽपि शोकसमाविष्टो ननु त्यक्ष्यति जीवितम् ॥

| | | | |
|----------------|------------------------|--------------|-------------------|
| वृद्धः च | “முதியவரும் | शोकसमाविष्टः | சோகத்தில் மூழ்கிய |
| अल्पपुत्रः च | புதல்வனற்றவரு மாகிய | | வராய் |
| सः अपि | அவரும் (ஜனகரும்) | जीवितं | உயிரை |
| वैदेहीं | வைதேஹியை | त्यक्ष्यति | இழப்பார். |
| अनुचिन्तयन् एव | உன்னியுன்னி | ननु | இல்லையா என்ன ? |

साऽहमयैव दिष्टान्तं गमिष्यामि पतिव्रता । इदं शरीरमालिङ्ग्य प्रवेक्ष्यामि हुताशनम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------------|---------------|-----------------|
| पतिव्रता | “கணவனின் தர்மத் தையேயனுசரிக்கும் | गमिष्यामि | அடையப்போகிறேன். |
| सा | அந்த | इदं | இந்த |
| अहं | நான் | शरीरं | திருமேனியை |
| अद्य एव | இப்பொழுதே | आलिङ्ग्य | தழுவிக்கொண்டு |
| दिष्टान्तं | மரணத்தை | हुताशनं | அக்னியில் |
| | | प्रवेक्ष्यामि | புகுவேன்.” |

तां ततः संपरिष्वज्य विलपन्तीं तपस्विनीम् । व्यपनिन्युः सुदुःखार्ता कौसल्यां व्यावहारिकाः॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------------|-------------|-------------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | तां | அந்த |
| व्यावहारिकाः | அந்தப்புரவேலையிலி ருப்பவர்கள் | कौसल्यां | கோஸலாதேவியாரை |
| सुदुःखार्ता | மிக்க மனம் நொந்து | संपरिष्वज्य | அணைத்துக்கொண்டு |
| विलपन्तीं | புலம்பிக்கொண்டு | व्यपनिन्युः | வேறொரிடத்திற்க ழைத்துச்சென்றனர். |
| तपस्विनीं | பரிதபிக்கத்தக்க நிலை யிலிருக்கும் | | |

तैलद्रोण्यामथामात्याः संवेश्य जगतीपतिम् । राज्ञः सर्वाण्यथादिष्टाश्चक्रुः कर्माण्यनन्तरम् ॥

अथ अनुந்தரம்
आदिष्टाः राज्ञ्यकारियங்களில்
நியமிக்கப்பட்டிருந்த
अमात्याः மந்திரிமார்கள்
जगतीपतिं சக்கிரவர்த்தியாரை
तैलद्रोण्यां எண்ணத்தொட்டியில்
संवेश्य கிடத்தி,

अथ பிறகு
राज्ञः சக்கிரவர்த்தியாரு
டைய
कर्माणि காரியங்கள்
सर्वाणि எல்லாவற்றையும்
अनन्तरं அடுத்த நிலையில்
चक्रुः செய்தனர்.

न तु सङ्कलनं राज्ञो विना पुत्रेण मन्त्रिणः । सर्वज्ञाः कर्तुमीषुस्ते ततो रक्षन्ति भूमिपम् ॥

सर्वज्ञाः எல்லா முணர்ந்த
ते அந்த
मन्त्रिणः மந்திரிமார்கள்
राज्ञः சக்கிரவர்த்தியாருக்கு
सङ्कलनं ஸம்ஸ்காரத்தை
पुत्रेण विना புத்திரனொருவனு
மில்லாமல்

कर्तुं செய்ய
ईषुः न ஒப்பவில்லை.
ततः तु அதனால்தான்
भूमिपं சக்கிரவர்த்தியாரை
रक्षन्ति கெடாமல் காத்து
வந்தனர்.

तैलद्रोण्यां तु सचिवैः शायितं तं नराधिपम् । हा मृतोऽयमिति ज्ञात्वा स्त्रियस्ताः पर्यवारयन् ॥

ताः அந்த
स्त्रियः மனைவிமார்கள்
तं அந்த
नराधिपं சக்கிரவர்த்தியாரை
सचिवैः மந்திரிமார்களால்
तैलद्रोण्यां எண்ணைத்தொட்டி
யில்

शायितं கிடத்தப்பட்டவராய்
ज्ञात्वा அறிந்து
अयं இவர்
मृतः तु இறந்துவிட்டாரே
हा इति ஐயோ கஷ்டமென்று
पर्यवारयन् சூழ்ந்துகொண்டனர்.

बाहूनुद्धृत्य कृपणा नेत्रप्रस्रवणैर्मुखैः । रुदन्यः शोकसन्तप्ताः कृपणं पर्यदेवयन् ॥ १७ ॥

कृपणाः தீனர்களாய்
बाहून् கைகளை
उद्धृत्य உயர்த்திக்கொண்டு
नेत्रप्रस्रवणैः கண்ணீரைப்பெருக்
கும்

रुदन्यः அழுகின்றவர்களாய்
शोकसन्तप्ताः துயரத்தால் தவிக்கின்றவர்களாய்
कृपणं பரிதபிக்கத்தக்கவண்
ணமாய்

मुखैः முகங்களுடன்

पर्यदेवयन् புலம்பினார்கள்.

हा महाराज रामेण सततं प्रियवादिना । विहीनाः सत्यसन्धेन किमर्थं विजहासि नः ॥

हा “அந்தோ!
महाराज மஹாராஜரே!
सततं எக்காலத்திலும்
प्रियवादिना உள்ளங்குளிரப் பேசு
பவனும்
सत्यसन्धेन சத்தியசந்தனுமான

रामेण ராமனால்
विहीनाः கைவிடப்பட்ட
नः எங்களை
किमर्थं என்ன காரணத்திற்
காக
विजहासि நீர் கைவிடுகிறீர் ?

कैकेय्या दुष्टभावाया राघवेण वियोजिताः । कथं पतिघ्न्या वत्स्यामः समीपे विधवा वयम्॥

राघवेण “रामனோடு
वियोजिताः பிரிவுற்ற
वयं நாங்கள்
दुष्टभावायाः கெட்ட சிந்தையுற்ற
வனும்
पतिघ्न्याः கணவனைக் கொன்றவ
ளுமாகிய

कैकेय्याः கைகேயியின்
समीपे சமீபத்தில்
विधवा: கணவனையிழந்தவர்
களாய்
कथं எவ்வாறு
वत्स्यामः வவ்விப்போம்?

स हि नाथः सदाऽस्माकं तव च प्रभुरात्मवान् । वनं रामो गतः श्रीमान्विहाय नृपतिश्रियम् ॥

सदा “எக்காலத்திலும்
अस्माकं எங்களுக்கும்
तव च தங்களுக்கும்
प्रभु: ஏற்ற
नाथः உதவிபுரிபவனும்
आत्मवान् ஜிதேந்திரியனென

श्रीमान् புகழ்படைக்கப்பெற்ற
स: அந்த [வனுமான
रामः हि ராமனும்
नृपतिश्रियं ராஜா திகாரத்தை
विहाय துறந்து,
वनं காட்டிற்கு
गतः சென்றுவிட்டனன்.

त्वया तेन च वीरेण विना व्यसनमोहिताः । कथं वयं निवत्स्यामः कैकेय्या च विदूषिताः॥

वयं “நாங்கள்
त्वया தேவரீராலும்
वीरेण தர்மவீரனாகிய
तेन च அவனாலும்
विना பிரிக்கப்பட்டு,

व्यसनमोहिता: { வ்யஸனத்தால் கலங்
கிய மனமுடையவர்
களாய்
कैकेय्या च கைகேயியாலும்
विदूषिता: இகழப்பட்டவர்களாக
कथं எவ்வண்ணம்
निवत्स्यामः காலங்கழிப்போம்?

यया तु राजा रामश्च लक्ष्मणश्च महाबलः । सीतया सह संत्यक्ताः सा कमन्यं न हास्यति॥

यया “எவளால்
राजा சக்கிரவர்த்தியாரும்
रामः च ராமனும்
महाबलः மகா சாமர்த்தியசாலி
யான
लक्ष्मणः च லக்ஷ்மணனும்

सीतया सह ஸீதையுடன் கூடவே
संत्यक्ता: திரஸ்கரிக்கப்பட்டார்
सा அவள் [களோ
अन्यं வேறு
कं तु யாரைத்தான்
हास्यति न துறக்கமாட்டாள் ?”

ता बाष्पेण च संवीताः शोकेन विपुलेन च । व्यवेष्टन्त निरानन्दा राघवस्य वरस्त्रियः ॥

ता: அந்த
राघवस्य தசரதருடைய
वरस्त्रियः உத்தமமனைவிகள்
विपुलेन அதிக
बाष्पेण च கண்ணீராலும்

शोकेन च சோகத்தாலும்
संवीता: வியாபிக்கப்பட்டவர்
களாய்
निरानन्दा: உற்சாகமொழிந்தவர்
களாய்
व्यवेष्टन्त துடித்தார்கள்.

निशा नक्षत्रहीनेव स्त्रीव भर्तृविवर्जिता । पुरी नाराजतायोध्या हीना राज्ञा महात्मना ॥

| | |
|-------------|----------------------|
| महात्मना | மகாத்மாவாகிய |
| राज्ञा | சக்கிரவர்த்தியாரால் |
| हीना | பிரிவுற்ற |
| अयोध्या | அயோத்தியா |
| पुरी | நகர் |
| नक्षत्रहीना | நக்சத் திரங்களில்லாத |

| | |
|----------------|------------------|
| निशा | இரவு |
| इव | போலவும் |
| भर्तृविवर्जिता | கணவனையிழந்த |
| स्त्री | மனைவி |
| इव | போலவும் |
| अराजत न | ஒளியற்றிருந்தது. |

वाष्पपर्याकुलजना हाहाभूतकुलाङ्गना । शून्यचत्वरवेश्मान्ता न वभ्राज यथापुरम् ॥२५॥

| | |
|-----------------------|---|
| वाष्पपर्याकुलजना | { கண்ணீர்விட்டுக் கலக் கமுற்ற ஜனங்களையு டையதாய் |
| हाहाभूत- कुलाङ्गना | { ஹா! ஹா! என்று கதறும் ஸ்த்ரீகளே யுடையதாய் |

| | |
|---------------------------|---|
| शून्यचत्वर- वेश्मान्ता | { பாழாய்த்தோன்றிய நாற்சந்திகளையுடை யதாய், |
| यथापुरं | முன்போல் |
| वभ्राज न | விளங்கவில்லை. |

गते तु शोकात्त्रिदिवं नराधिपे महीतलस्थासु नृपाङ्गनासु च ।

निवृत्तचारः सहसा गतो रविः प्रवृत्तचारा रजनी ह्युपस्थिता ॥ २६ ॥

| | |
|---------------|----------------------------------|
| नराधिपे | சக்கிரவர்த்தியார் |
| शोकात् | துயரத்தால் |
| त्रिदिवं | ஸ்வர்க்கத்தை |
| गते तु | அடைந்தவளவில் |
| नृपाङ्गनासु च | ராஜஸ்த்ரீகளும் |
| महीतलस्थासु | பூமியில் விழுந்து கிடக்கையில் |
| रविः | சூரியபகவான் |

| | |
|--------------|-------------------------------------|
| निवृत्तचारः | சஞ்சாரத்தை முடித் துக்கொண்டவனாய் |
| सहसा | விரைவில் |
| गतः | மறைந்தனன். |
| रजनी हि | இரவும் |
| प्रवृत्तचारा | ஸஞ்சாரத்தையாரம் பித்ததாய் |
| उपस्थिता | தோன்றிற்று. |

ऋते तु पुत्रादहनं महीपतेर्न रोचयन्ते सुहृदः समागताः ।

इतीव तस्मिञ्छयने न्यवेशयन्विचिन्त्य राजानमचिन्त्यदर्शनम् ॥ २७ ॥

| | |
|--------------|--------------------------|
| सुहृदः | வேண்டியவர்கள் |
| समागताः | ஒன்றுகூடி |
| पुत्रात् ऋते | புத்திரனொருவனு மின்றி |
| महीपतेः | சக்கிரவர்த்தியாருக்கு |
| दहनं | தஹனத்தை |
| इव | முற்றிலும் |
| रोचयन्ते न | ஒப்பார்கள் |

| | |
|----------------|------------------------------------|
| इति | என்று |
| विचिन्त्य | திர்மானித்து, |
| अचिन्त्यदर्शनं | கருதவும் முடியாத தோற்றத்தையுடைய |
| राजानं | சக்கிரவர்த்தியாரை |
| तस्मिन् | அந்த |
| शयने तु | சயனத்திலேயே |
| न्यवेशयन् | கிடத்த இணங்கினார் கள். |

गतप्रभा द्यौरिव भास्करं विना व्यपेतनक्षत्रगणेव शर्वरी ।

पुरी बभासे रहिता महात्मना न चास्रकण्ठाकुलमार्गचत्वरा

॥ २८ ॥

| | | | |
|------------------|-----------------------------|---------------|---|
| पुरी | நகரமானது | शर्वरी | இரவு |
| महात्मना | மஹாத்மாவினால் (தசரதரால்) | इव | போலவும் |
| रहिता | பிரிவுற்றதாய் | आकुलमार्गचवरा | { அல்லோலப்பட்டிருக் கும் நாற்சந்திகளையு டையதாய் |
| भास्करं विना | சூரியபகவானில்லாது | अस्रकण्ठा च | கண்ணீரால் தத்தளிக் கிறதாயும் |
| गतप्रभा | ஒளியிழந்த | बभासे न | ஒளியற்றிருந்தது. |
| द्यौः इव | ஆகாசம்போலவும், | | |
| व्यपेतनक्षत्रगणा | நக்சத்திரகணங்க ளற்ற | | |

नराश्च नार्यश्च समेत्य संघशो विगर्हमाणा भरतस्य मातरम् ।

तदा नगर्यां नरदेवसंक्षये बभूवुरार्ता न च शर्म लेभिरे

॥ २९ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------------|-------------|------------------|
| तदा | அப்பொழுது | भरतस्य | பரதனது |
| नगर्यां | நகரில் | मातरं च | தாயாரையே |
| नराः | புருஷர்களும் | विगर्हमाणाः | தூற்றிக்கொண்டு |
| नार्यः च | ஸ்த்ரீகளும் | आर्ताः | வருந்தியவர்களாய் |
| सङ्घशः | கூட்டங்கூட்டமாக | बभूवुः | இருந்தார்கள். |
| समेत्य | கூடி, | शर्म च | துக்கசமனத்தையும் |
| नरदेवसंक्षये | சக்கிரவர்த்தியாரின் மாணவிஷயத்தில் | लेभिरे न | அடையவில்லை. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे षट्षष्टितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5011

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2656



सप्तषष्टितमः सर्गः—अहपत्तंतेम्रावतु षर्ककम् ॥ ६७ ॥

अराजकदुरवस्थाकथनम्—अरसन्तिल्लातलालं वीनयुम् केकेथियेसं सोलवतु.

आक्रन्दितनिरानन्दा सास्रकण्ठजनाकुला । अयोध्यायामवतता सा व्यतीयाय शर्वरी ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|------------|--------------------|
| अयोध्यायां | அயோத்தியில் | सास्रकण्ठ- | { கண்ணீரால் கம்மிய |
| सा | அந்த | जनाकुला } | தொண்டையையுடை |
| शर्वरी | இரவு | | ய ஜனங்களாலல்லோ |
| अवतता | நீண்டதாய் | | லகல்லோலப்படுகிற |
| आक्रन्दित- | கதறுவதா லுற்சாகமி | | தாயும் |
| निरानन्दा } | ழந்ததாயும் | व्यतीयाय | கழிந்தது. |

व्यतीतायां तु सर्वर्यामादित्यस्योदये ततः । समेत्य राजकर्तारः सभाभीयुर्द्विजातयः ॥२॥

ततः அப்பொழுது

शर्वर्या இரவு

व्यतीतायां கழிந்ததும்

आदित्यस्य उदये तु சூரியோதயத்திலேயே

मार्कण्डेयोऽथ मौद्गल्यो वामदेवश्च काश्यपः । कात्यायनो गौतमश्च जाबालिश्च महायशाः॥

एते द्विजाः सहामात्यैः पृथग्वाचमुदीरयन् । वसिष्ठमेवाभिमुखाः श्रेष्ठं राजपुरोहितम् ॥४॥

अथ அப்பொழுது

मार्कण्डेयः மார்க்கண்டேயரும்

मौद्गल्यः மௌத்கல்யரும்

वामदेवः வாமதேவரும்

काश्यपः च காச்யபரும்

कात्यायनः காத்யாயனரும்

गौतमः च கௌதமரும்

महायशाः மிகப்புக்கழ்பெற்ற

जाबालिः च ஜாபாலியுமாகிய

एते இந்த

राजकर्तारः ராஜகந்திரிகளும்

द्विजातयः அந்தணர்களும்

समेत्य ஒன்றுகூடி

सभां சபாமண்டபத்தை

ईयुः அடைந்தார்கள்.

द्विजाः அந்தணர்கள்

अमात्यैः सह மந்திரிமார்களோடு

श्रेष्ठं உத்தமரும் [கூடி

राजपुरोहितं ராஜகுருவுமாகிய

वसिष्ठं एव வஸிஷ்டரையே

अभिमुखाः பெருமைப்படுத்து

கின்றவர்களாய்

पृथक् தனித்தனியே

वाचं பின்வரும் சொல்லை

उदीरयन् மொழிந்தார்கள் :

अतीता शर्वरी दुखं या नो वर्षशतोपमा । अस्मिन्पञ्चत्वमापन्ने पुत्रशोकेन पार्थिवे ॥ ५ ॥

अस्मिन् “இந்த

पार्थिवे சக்கிரவர்த்தியார்

पुत्रशोकेन புத்திரசோகத்தால்

पञ्चत्वं மரணத்தை

आपन्ने அடைந்தவளவில்

नः நமக்கு

या அந்த

शर्वरी இரவு

वर्षशतोपमा நூறு வருஷங்களுக்

குச்சமமாய்

दुःखं கஷ்டமாய்

अतीता கழிந்தது.

स्वर्गतश्च महाराजो रामश्चारण्यमाश्रितः । लक्ष्मणश्चापि तेजस्वी रामेणैव गतः सह ॥ ६ ॥

महाराजः च “சக்கிரவர்த்தியாரோ

स्वर्गतः மரணமடைந்தார்.

रामः च ஸ்ரீராமரும்

अरण्यं காட்டை

आश्रितः அடைந்தார்.

रामेण सह एव ஸ்ரீராமரோடுகூடவே

तेजस्वी தேஜஸ்சியாகும்

लक्ष्मणः च अपि லக்ஷ்மணரும்

गतः போய்விட்டார்.

उभौ भरतशत्रुघ्नौ केकयेषु परन्तपौ । पुरे राजगृहे रम्ये मातामहनिवेशने ॥ ७ ॥

परन्तपौ “ஜயசாலிகளாகிய

भरतशत्रुघ्नौ பரதன், சக்ருக்கன

அகிய

उभौ இருவர்களும்

केकयेषु கேகயநாடுகளிலுள்ள

राजगृहे ராஜகிரிஹமென்ற

पुरे நகரில்

रम्ये அழகிய

मातामहनिवेशने மாதாமகரின் திருமாளி

கையிலிருக்கிறார்கள்.

इक्ष्वाकूणामिहाद्यैव कश्चिद्राजा विधीयताम् । अराजकं हि नो राष्ट्रं न विनाशमवाप्नुयात् ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|---------------|-----------------|
| इह | “ இவ்விடத்தில் | नः | நமது |
| अद्य एव | இப்பொழுதே | राष्ट्रं | ராஜ்யமானது |
| इक्ष्वाकूणां | இக்ஷ்வாகுக்களில் | अराजकं | அரசனற்றதாய் |
| कश्चित् राजा | யாராவதொருவர் | विनाशं | அழிவை |
| | மன்னராக | अवाप्नुयात् न | அடையாமலிருக்கட் |
| विधीयतां | நியமிக்கப்பட்டதும். | | டும். |
| हि | ஏனெனில் | | |

नाराजके जनपदे विद्युन्माली महास्वनः । अभिवर्षति पर्जन्यो महीं दिव्येन वारिणा ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-------------|----------------|
| अराजके | “ அரசனில்லாத | पर्जन्यः | மேகம் |
| जनपदे | நாட்டில் | दिव्येन | தேவையுள்ள அளவு |
| विद्युन्माली | மின்னலுடன் கூடிய | वारिणा | நீரால் |
| | தாய் | महीं | பூமியை |
| महास्वनः | காஜிக்கும் | अभिवर्षति न | நனைக்காது. |

नाराजके जनपदे बीजमुष्टिः प्रकीर्यते । नाराजके पितुः पुत्रो भार्या वा वर्तते वशे ॥१०॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-----------|------------------|
| अराजके | “ அரசனற்ற | पितुः | தந்தைக்கு |
| जनपदे | நாட்டில் | वशे | மனங்கோணுது நடப் |
| बीजमुष्टिः | கைப்பிடி விரையும் | | பதில் |
| प्रकीर्यते न | இறைக்கப்படமாட் | पुत्रः | புதல்வன் |
| | டாது. | वर्तते न | பத்திமைகொள்ளான், |
| अराजके | அரசனில்லாததில் | भार्या वा | மனைவியுமப்படியே. |

नाराजके धनं चास्ति नास्ति भार्याऽप्यराजके । इदमत्याहितं चान्यत्कुतः सौख्यमराजके॥

| | | | |
|-------------|--------------------|------------|---------------------|
| अन्यत् | “ இதுவுமின்றி | अराजके | அரசனில்லாததில் |
| इदं | இந்த | भार्या अपि | தருமபத்தினியும் |
| अत्याहितं च | ஆபத்துமிருக்கிறது. | अस्ति न | கிடையாது. |
| अराजके | அரசனில்லாததில் | अराजके | அரசனில்லாததில் |
| धनं च | உரிபவர்க்குரிய | सौख्यं | மனத்திருப்தி |
| | பொருள் | | யென்பது |
| अस्ति न | கிடையாது. | कुतः | எங்குனம்கிடைக்கும்? |

नाराजके जनपदे कारयन्ति सभां नराः । उद्यानानि च रम्याणि हृष्टाः पुण्यगृहाणि च॥

| | | | |
|---------|------------------|---------------|-----------------------|
| अराजके | “ அரசனற்ற | सभां | நியாயசபையையும் |
| जनपदे | நாட்டில் | रम्याणि | அழகிய |
| नराः | மனிதர்கள் | उद्यानानि च | பூந்தோட்டங்களையும் |
| हृष्टाः | மனத்திருப்திகொண் | पुण्यगृहाणि च | சத்திரங்களையும் |
| | டவர்களாய். | कारयन्ति न | நிருமிக்கமாட்டார்கள். |

नाराजके जनपदे यज्ञशीला द्विजातयः । सत्राण्यन्वासते दान्ता ब्राह्मणाः संशितव्रताः ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------------|------------|-------------------------|
| अराजके | அரசனில்லாத | दान्ता: | ஜிதேந்திரியர்களும் |
| जनपदे | நாட்டில் | ब्राह्मणाः | வேதவித்துக்களு மாகிய |
| यज्ञशीला: | யாகத்தில் பற்றுடை யவர்களும் | द्विजातयः | பிராம்மணர்கள் |
| संशितव्रताः | தீவிரவிரதானுஷ்டா னமுடையவர்களும் | सत्राणि | யாகங்களை |
| | | अन्वासते न | செய்யார்கள். |

नाराजके जनपदे महायज्ञेषु यज्वनः । ब्राह्मणा वसुसम्पूर्णा विसृजन्त्याप्तदक्षिणाः ॥१४॥

| | | | |
|------------|---------------------|---------------|---------------------------|
| अराजके | அரசனில்லாத | वसुसम्पूर्णा: | பொன்னிறைந்த |
| जनपदे | நாட்டில் | आप्तदक्षिणा: | வேண்டிய அளவு தகவிலைகளை |
| ब्राह्मणा: | பிராம்மணர்கள் | विसृजन्ति न | கொடுக்கமாட்டார்கள். |
| यज्वनः | யாககர்த்தாக்களுக்கு | | |
| महायज्ञेषु | பெரிய வேள்விகளில் | | |

नाराजके जनपदे प्रभूतनटनर्तकाः । उत्सवाश्च समाजाश्च वर्धन्ते राष्ट्रवर्धनाः ॥ १५ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------------|----------------|--|
| अराजके | அரசனற்ற | उत्सवाः च | உற்சவங்களும் |
| जनपदे | நாட்டில் | राष्ट्रवर्धनाः | ராஜ்யத்திற்குப் பெரு மை விளைவிக்கின்ற |
| प्रभूतनटनर्तकाः | நடர்கள், நடத்தகர்க ளும் நிறைந்த | समाजाः च | சபைகளும் |
| | | वर्धन्ते न | வழங்குகிறதில்லை. |

नाराजके जनपदे सिद्धार्था व्यवहारिणः । कथाभिरनुरज्यन्ते कथाशीलाः कथाप्रियैः ॥

| | | | |
|------------|------------------------------|---------------|-----------------------------------|
| अराजके | “அரசனில்லாத | कथाप्रियैः | கதைகளை இனிமை யாய்ச் சொல்லுபவர் |
| जनपदे | நாட்டில் | कथाभिः | கதைகளால் [களால் |
| व्यवहारिणः | வழக்கமாய் | सिद्धार्थाः | உத்தேசம் கைகூடப் பெற்றவர்களாய் |
| कथाशीलाः | கதைகளில் பற்றுடை யவர்களான | अनुरज्यन्ते न | சந்தோஷிக்கப்பட மாட்டார்கள். |

नाराजके जनपदे चोद्यानानि समागताः । सायाहे क्रीडितुं यान्ति कुमार्यो हेमभूषिताः ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|-----------|--------------------------------|
| अराजके | “அரசனில்லாத | समागताः | ஒன்றுகூடியும் |
| जनपदे | நாட்டில் | उद्यानानि | உத்தியானவனங்களில் |
| कुमार्यः | சிறுமிகள் | क्रीडितुं | விளையாட்டாய்ப் பொ ழுதுபோக்க |
| हेमभूषिताः | ஆபரணங்களணிந்த வர்களாய், | यान्ति न | செல்லார்கள். |
| सायाहे च | ஸாயங்காலத்திலும், | | |

नाराजके जनपदे वाहनैः शीघ्रगामिभिः । नरा निर्यान्त्यरण्यानि नारीभिः सह कामिनः॥

| | | | |
|---------|------------------|--------------|--------------------|
| अराजके | “அரசனில்லாத | शीघ्रगामिभिः | விரைவாகச் செல்லும் |
| जनपदे | நாட்டில் | वाहनैः | வா ஹனங்களிலேறிக் |
| कामिनः | சுற்றின்பப்பிரிய | | கொண்டு |
| नराः | ஜனங்கள் | अरण्यानि | காடுகளுக்கு |
| नारीभिः | ஸ்தரீகளோடு | निर्यान्ति न | செல்லார்கள். |
| सह | கூட | | |

नाराजके जनपदे धनवन्तः सुरक्षिताः । शेरते विवृतद्वाराः कृषिगोरक्षजीविनः ॥ १९ ॥

| | | | |
|---------------------------|---|--------------|-------------------------------------|
| अराजके | “அரசனில்லாத | सुरक्षिताः | பாதுகாப்படைந்த |
| जनपदे | நாட்டில் | | வர்களாய் |
| कृषिगोरक्ष- } जीविनः } | பயிரிடுதல், பசு காத்த விவைகளால் பிழைக் கும் | विवृतद्वाराः | கதவுகளைத் திறந்து வைத்துக்கொண்டு |
| धनवन्तः | தனவான்கள் | शेरते न | துயில்கொள்ளார்கள். |

नाराजके जनपदे बद्धघण्टा विषाणिनः । अटन्ति राजमार्गेषु कुञ्जराः षष्टिहायनाः ॥ •

| | | | |
|-------------|----------------------------|-------------|--------------------|
| अराजके | “அரசனில்லாத | कुञ्जराः | யானைகள் |
| जनपदे | நாட்டில் | बद्धघण्टाः | மணிகள் கட்டப்பட்டு |
| विषाणिनः | தந்தங்களையுடைய னவும் | राजमार्गेषु | ராஜவீதிகளில் |
| षष्टिहायनाः | அறுபது வயதுகொ ண்டனவுமான | अटन्ति न | திரிவதில்லை. |

नाराजके जनपदे शरान् सततमस्यताम् । श्रूयते तलनिर्घोष इवस्त्राणामुपासने ॥ २१ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|------------|--------------------|
| अराजके | “அரசனற்ற | सततं | எப்பொழுதும் |
| जनपदे | நாட்டில் | शरान् | பாணங்களை |
| इवस्त्राणां | அம்பு, பாணமிவைக ளுடைய | अस्यतां | எறிபவர்களுடைய |
| उपासने | பயிற்சியால் | तलनिर्घोषः | டங்காரத்துவணி |
| | | श्रूयते न | கேட்கப்படுவதில்லை. |

नाराजके जनपदे वणिजो दूरगामिनः । गच्छन्ति क्षेममध्वानं बहुपण्यसमाचिताः ॥

| | | | |
|--------------------------|--------------------------------------|------------|-----------------------------|
| अराजके | “அரசனற்ற | अध्वानं | வழியில் |
| जनपदे | நாட்டில் | दूरगामिनः | வெகுதூரம் செல்ப வர்களாய் |
| बहुपण्य- } समाचिताः } | மிகுந்த விற்பனைப் பொருளுடன் கூடிய | क्षेमं | பயமின்றி |
| वणिजः | வியாபாரிகள் | गच्छन्ति न | போகார்கள். |

नाराजके जनपदे चरत्येकचरो वशी । भावयन्नात्मनाऽऽत्मानं यत्र सायंगृहो मुनिः ॥

| | | | | |
|---------|-------------------|---------------|---|---|
| अराजके | அரசனற்ற | यत्र सायंगृहः | { | எங்கு சாயங்காலம் வ ருகிறதோ அதையே அன்று இருப்பிடமா கக்கொண்டவனுமா கிய |
| जनपदे | நாட்டில் | | | |
| वशी | ஜிதேந்திரியனும் | | | |
| एकचरः | தனியாயிருப்பவனும் | | | |
| आत्मना | மனத்தால் | | | |
| आत्मानं | பரமாத்மாவை | मुनिः | | தவசி |
| भावयन् | சிந்திப்பவனும் | चरति न | | இருப்பதில்லை. |

नाराजके जनपदे योगक्षेमं प्रवर्तते । न चाप्यराजके सेना शत्रून्विषहते युधि ॥ २४ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|----------|---------------------|
| अराजके | “அரசனற்ற | अराजके | அரசனில்லாததில் |
| जनपदे | நாட்டில் | सेना च | சேனையும் |
| योगक्षेमं | கவலையற்ற காலசேஷ | युधि अपि | போரினும்கூட |
| | பம் | शत्रून् | சத்துருக்களை |
| प्रवर्तते न | நடைபெறுது. | विषहते न | எதிர்த்து நிற்காது. |

नाराजके जनपदे हृष्टैः परमवाजिभिः । नराः संयान्ति सहसा रथैश्च प्रतिमण्डिताः ॥ २५ ॥

| | | | |
|------------|----------------|---------------|---------------------|
| अराजके | “அரசனற்ற | रथैः | ரதங்களிலேறிக் |
| जनपदे | நாட்டில் | | கொண்டு |
| नराः च | ஜனங்களும் | प्रतिमण्डिताः | பூர்ண அலங்கார |
| हृष्टैः | உற்சாகங்கொண்ட | | முற்றவர்களாய் |
| परमवाजिभिः | உத்தமகுதிரைகளோ | सहसा | புன்னகைபூண்டு |
| | டுகூடிய | संयान्ति न | வெளிக்கிளம்பார்கள். |

नाराजके जनपदे नराः शास्त्रविशारदाः । संवदन्तोऽवतिष्ठन्ते वनेषूपवनेषु च ॥ २६ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------|---------------|-------------------|
| अराजके | “அரசனற்ற | वनेषु | வனங்களிலும் |
| जनपदे | நாட்டில் | उपवनेषु च | உபவனங்களிலும் |
| शास्त्रविशारदाः | சாஸ்திரப்பயிற்சி | संवदन्तः | ஆராய்ச்சிபுரிந்து |
| | பெற்ற | | கொண்டு |
| नराः | மனிதர்கள் | अवतिष्ठन्ते न | இரார்கள். |

नाराजके जनपदे माल्यमोदकदक्षिणाः । देवताभ्यर्चनार्थाय कल्पन्ते नियतैर्जनैः ॥ २७ ॥

| | | | |
|--------|---------------------|--------------------|-----------------------|
| अराजके | “அரசனற்ற | माल्यमोदक- | மாலைகளும், மோதகங் |
| जनपदे | நாட்டில் | दक्षिणाः | களும், கக்கிணைகளும் |
| नियतैः | விரதத்தில் பற்றுடைய | देवताभ्यर्चनार्थाय | சேவபூஜைக்காக |
| जनैः | ஜனங்களால் | कल्पन्ते न | சேகரிக்கப்படுவதில்லை. |

| | | | |
|-------------------|---|--------------|--|
| சம்பிந்நமயாடா: | தருப விதிகளை உல்லங் கனம் செய்பவர்களும் | தெ அபி | அவர்களும் |
| ராஜதண்டினிபிடிதா: | ராஜதண்டனைக்கு பய ந்திருந்தவர்களும் | தின்னசன்சயா: | அச்சமற்றவர்களாய் |
| நாஸ்திகா: | நாஸ்திகர்களும் | பாவாய | { நாஸ்திகக்கொள்கை யை நிலைநிறுத்துவ தற்கு |
| யே ஹி | எவர்களோ | கல்பந்தே | |

यथा दृष्टिः शरीरस्य नित्यमेव प्रवर्तते । तथा नरेन्द्रो राष्ट्रस्य प्रभवः सत्यधर्मयोः ॥३३॥

| | | | |
|------------|------------------|-------------|-----------------------|
| शरीरस्य | “ உடலுக்கு | सत्यधर्मयोः | சத்தியத்திற்கும் தர்ம |
| दृष्टिः | நயனேந்திரியமானது | नरेन्द्रः | அரசன் [சத்திற்கும் |
| यथा | எவ்வண்ணமோ | प्रभवः | காரணபூதனாய் |
| तथा | அவ்வண்ணமே | नित्यं एव | எப்பொழுதும் |
| राष्ट्रस्य | ராஜ்யத்தினுடைய | प्रवर्तते | ஆகின்றன. |

राजा सत्यं च धर्मश्च राजा कुलवतां कुलम् । राजा माता पिता चैव राजा हितकरो नृणाम्॥

| | | | |
|---------|----------------|---------|------------------|
| राजा एव | “ அரசன் தான் | राजा च | அரசன் தான் |
| माता | தாயும் | सत्यं | ஸத்யமும் |
| पिता च | தந்தையும். | धर्मः च | தர்மமும். |
| राजा | அரசன் | राजा | அரசன் |
| नृणां | மனிதர்களுக்கு | कुलवतां | நற்குடிப்பிறந்தோ |
| हितकरः | நன்மைபுரிபவன். | कुलम् | தலைவன். [ருக்கு |

यमो वैश्रवणः शक्रो वरुणश्च महाबलः । विशेष्यन्ते नरेन्द्रेण वृत्तेन महता ततः ॥ ३५ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|-------------|-------------------|
| ततः | “ அங்ஙனமிருத்தலால் | शक्रः | இந்திரனும் |
| नरेन्द्रेण | அரசனால் | महाबलः | மகாபலசாலியாகிய |
| महता | சிறந்த | वरुणः च | வருணனும் |
| वृत्तेन | அனுஷ்டானத்தால் | विशेष्यन्ते | மட்டப்படுத்தப்படு |
| यमः | யமனும் | | கின்றார்கள். |
| वैश्रवणः | குபேரனும் | | |

अहो तम इवेदं स्यान्न प्रज्ञायेत किञ्चन । राजा चेन्न भवेल्लोके विभजन्साध्वसाधुनी ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|--------------|------------|
| लोके | “ உலகில் | इदं | இது |
| राजा | அரசன் | इव | முற்றிலும் |
| साध्वसाधुनी | நன்மைகீமைகளை | तमः | அந்தகாரமாக |
| विभजन् | வகுத்துக்கொண்டு | अहो स्यात् | ஆகும். |
| भवेत् न चेत् | இல்லாவிடில் | किञ्चनः | ஒன்றும் |
| | | प्रज्ञायेत न | விளங்காது. |

जीवत्यपि महाराजे तदैव वचनं वयम् । नातिक्रमामहे सर्वे वेलं प्राप्येव सागरः ॥ ३७ ॥

| | | | |
|-------|---------------|---------------|---------------------|
| सागरः | “ சமுத்திரம் | महाराजे | சக்கிரவர்த்தியார் |
| वेलं | கரையை | जीवति अपि | உயிருடனிருக்கையி |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ் | तव | தேவரது [லும் |
| | வண்ணமே | वचनं एव | நியமனத்தையே |
| वयं | நாங்கள் | प्राप्य | சிரமேற்கொண்டு |
| सर्वे | எல்லோரும் | अतिक्रमामहे न | மீறிநடவாதிருந்தோம். |

स नः समीक्ष्य द्विजवर्यं वृत्तं नृपं विना राज्यमरण्यभूतम् ।

कुमारमिक्ष्वाकुसुतं वदान्यं त्वमेव राजानमिहाभिषिञ्च

॥ ३८ ॥

द्विजवर्यं
सः
त्वं एव
वृत्तं
नृपं विना
अरण्यभूतं
नः
राज्यं

“பிராம்மணைத்தமரே!
அந்த
தேவரீரே!
காவுஞ்சென்ற
சக்கிரவர்த்தியாரின் நி
பாழடைந்த
நமது
ராஜ்யத்தை

समीक्ष्य
वदान्यं
इक्ष्वाकुसुतं
कुमारं
इह
राजानं
अभिषिञ्च

கவனித்து,
பெருந்தன்மையுடைய
இக்ஷ்வாகுகுலத்தவ
ஒருபுதல்வனை [னாகிய
இப்பொழுதே
அரசனாக
பட்டாபிஷேகம் செய்
துவைப்பீராக!”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे सप्तषष्ठितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5049



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2694

अष्टषष्ठितमः सर्गः—अमुपत्तेर्द्विजवर्यं ॥ ६८ ॥

भरतानयनाय दूतगमनम्—परतरायழைத்துவர தூதர்கள் செல்வது.

तेषां तद्वचनं श्रुत्वा वसिष्ठः प्रत्युवाच ह । मित्रामात्यगणान्सर्वान्ब्राह्मणांस्तानिदं वचः ॥

वसिष्ठः
तेषां
तत्
वचनं
श्रुत्वा
मित्रामात्यगणान्

வஸிஷ்டபகவான்
அவர்களுடைய
அந்த
விண்ணப்பத்திற்கு
திருச்செவியாய்த்து,
அன்பர்களும் மந்திரி
மார்களும்

ब्राह्मणान्
तान्
सर्वान् ह

பிராம்மணர்களு
அந்த [மாகிய
எல்லோரையும்
பார்த்து
பின்வரும் மொழியை
திருவாய்மலர்ந்
தருளினார்.

यदसौ मातुलकुले पुरे राजगृहे सुखी । भरतो वसति भ्रात्रा शत्रुघ्नेन समन्वितः ॥ २ ॥

तच्छीघ्रं जवना दूता गच्छन्तु त्वरितं हयैः । आनेतुं भ्रातरौ वीरौ किं समीक्षामहे वयम् ॥

असौ
भरतः
राजगृहे
पुरे
मातुलकुले
भ्रात्रा
शत्रुघ्नेन समन्वितः
सुखी
वसति
यत्
तत्

“இந்த
பரதன்
ராஜக்ரீஹமெலும்
பட்டணத்தில்
அம்மான்வீட்டில்
தம்பியாகிய
சத்ருக்னனுடன்
கவலையற்றவனாய்
வசித்துக்கொண்டிருக்
கின்றான்.
ஆனபடியால்
இப்பொழுதே

जवनाः
दूताः
हयैः

வேகமாய்ச் செல்லும்
தூதர்கள்
குதிரைகளிலேறிக்
கொண்டு
தருமவீரர்களாகும்
இருசகோதரர்களையும்
சீக்கிரமழைத்துவர
உடனேயே
செல்லட்டும் ;
நாம்
ஏன்
யோசிக்கவேண்டும் ? ”

वीरौ
भ्रातरौ
शीघ्रं आनेतुं
त्वरितं
गच्छन्तु
वयं
किं
समीक्षामहे

गच्छन्त्विति ततः सर्वे वसिष्ठं वाक्यमब्रुवन् । तेषां तु वचनं श्रुत्वा वसिष्ठो वाक्यमब्रवीत्॥

| | | | |
|----------|-------------------|-----------------|--------------------|
| ततः | அதன்மேல் | तेषां | அவர்களுடைய |
| सर्वे | எல்லோரும் | वचनं श्रुत्वा | சொல்லைக் கேட்டு, |
| वसिष्ठं | வஸிஷ்டரைப் பார்த் | तु | அதன் பின்னர் |
| गच्छन्तु | ‘செல்லட்டும்’ [து | वसिष्ठः | வஸிஷ்டபகவான் |
| इति | என்கிற | वाक्यं अब्रवीत् | { பின்வரும் கட்டளை |
| वाक्यं | சொல்லை | | யை ஆக்ஞாபித்தரு |
| अब्रुवन् | சொன்னார்கள். | | ளினார். |

एहि सिद्धार्थ विजय जयन्ताशोक नन्दन । श्रूयतामिति कर्तव्यं सर्वानेव ब्रवीमि वः ॥ ५ ॥

| | | | |
|-----------|---------------|-------------|--------------------|
| एहि | “இங்குவா | नन्दन | நந்தன ! |
| सिद्धार्थ | சித்தார்த்த ! | वः | உங்கள் |
| विजय | விஜய ! | सर्वान् एव | எல்லோரிடத்திலும் |
| जयन्त | ஜயந்த ! | इतिकर्तव्यं | செய்யவேண்டியதை |
| अशोक | அசோக ! | ब्रवीमि | நான் சொல்லுகிறேன்; |
| | | श्रूयताम् | கேட்கப்பட்டட்டும். |

पुरं राजगृहं गत्वा शीघ्रं शीघ्रजवैहयैः । त्यक्तशोकैरिदं वाच्यः शासनाद्भरतो मम ॥ ६ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-------------|--------------------|
| शीघ्रं | “சீக்கிரத்திலேயே | त्यक्तशोकैः | சோகத்தைவிட்டு |
| शीघ्रजवैः | வேகமாகச்செல்லும் | मम | எனது |
| हयैः | குதிரைகளிலேறிச் | शासनात् | ஆக்கினையென்று |
| | கொண்டு | भरतः | பரதன் |
| राजगृहं | ராஜக்கிருஹமெனும் | इदं वाच्यः | { பின்வருமாறு உங்க |
| पुरं | நகருக்கு | | ளால் தெரிவிக்கப் |
| गत्वा | சென்று, | | படவேண்டியவன். |

पुरोहितस्त्वां कुशलं प्राह सर्वे च मन्त्रिणः । त्वरमाणश्च निर्याहि कृत्यमात्ययिकं त्वया ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-----------|-------------------|
| पुरोहितः | “புரோஹிதர் | त्वरमाणः | காலதாமதம் செய்யா |
| त्वां | உன்னை | | தவனாய் |
| कुशलं | கேஷமத்தை | निर्याहि | நீ திரும்பிவரவேண் |
| प्राह | விசாரித்தார். | त्वया च | உன்னாலேயே [டும். |
| मन्त्रिणः | மந்திரிகள் | कृत्यं | செய்யப்படவேண்டிய |
| सर्वे च | எல்லோரும் அவ்வண் | | காரியம் |
| | ணமே. | आत्ययिकम् | அவசரமானது’. |

मा चास्मै प्रोषितं रामं मा चास्मै पितरं मृतम् । भवन्तः शंसिषुर्गत्वा राघवाणामिमं क्षयम्॥

| | | | |
|----------|------------------|--------------|--------------------|
| भवन्तः | “நீங்கள் | पितरं मृतं च | பிதா இறந்ததையும் |
| गत्वा | சென்று, | मा शंसिषुः | தெரிவிக்கவேண்டாம். |
| अस्मै | இவருக்கு | अस्मै | இவருக்கு |
| रामं | ஸ்ரீராமர் | राघवाणां | ரகுக்களுடைய |
| प्रोषितं | வனவாஸத்திலிருப்ப | इमं क्षयं च | இந்த குறைவையும் |
| | தையும், | मा | கூறவேண்டாம். |

कौशेयानि च वस्त्राणि भूषणानि वराणि च । क्षिप्रमादाय राज्ञश्च भरतस्य च गच्छत ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|-----------|------------------|
| राज्ञः च | “ அரசருக்கும் | भूषणानि च | ஆபரணங்களையும் |
| भरतस्य च | பரதனுக்கும் | आदाय | எடுத்துக்கொண்டு, |
| कौशेयानि } | “ வெண்பட்டு ஆடை | क्षिप्रं | சீக்கிரமாக |
| वस्त्राणि च } | களையும் | गच्छत | செல்லுங்கள் ”. |
| वराणि | சிறந்த | | |

दत्तपथ्यशना दूता जग्मुः स्वं स्वं निवेशनम् । केकयांस्ते गमिष्यन्तो हयानारुह्य संमतान् ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|-----------|--------------|
| केकयान् | கேகயநாட்டிற்கு | संमतान् | என்ற |
| गमिष्यन्तः | பிரயாணமான | हयान् | குதிரைகளில் |
| ते | அந்த | आरुह्य | ஏறிக்கொண்டு, |
| दूताः | தூதர்கள் | स्वं स्वं | அவரவரது |
| दत्तपथ्यशनाः | வழிச்செலவு பெற்றுக் | निवेशनं | வீட்டிற்கு |
| | கொண்டவர்களாய் | जग्मुः | சென்றார்கள். |

ततः प्रास्थानिकं कृत्वा कार्यशेषमनन्तरम् । वसिष्ठेनाभ्यनुज्ञाता दूताः संत्वरिता ययुः ॥

| | | | |
|---------------|----------------|------------|-------------------|
| वसिष्ठेन | வசிஷ்டரால் | कार्यशेषं | மீதிக் காரியங்களை |
| अभ्यनुज्ञाताः | போக விடைகொண்ட | कृत्वा | செய்துவிட்டு, |
| दूताः | தூதர்கள் | अनन्तरं | உடனே |
| ततः | அங்கிருந்து | संत्वरिताः | காலதாமதம் செய்யா |
| प्रास्थानिकं | பிரயாணத்திற்கு | | தவர்களாய் |
| | வேண்டிய | ययुः | பிரயாணமானார்கள். |

न्यन्तेनापरतालस्य प्रलम्बस्योत्तरं प्रति । निषेवमाणास्ते जग्मुर्नदीं मध्येन मालिनीम् ॥

| | | | |
|--------------|----------------|------------|-------------------|
| ते | அவர்கள் | मध्येन | இடையில் |
| अपरतालस्य | அபரதாலமெனும் | मालिनीं | மாலினி என்ற |
| न्यन्तेन | ஓரமாக [மலைக்கு | नदीं | நதியை |
| प्रलम्बस्य | ப்ரலம்பமெனும் | निषेवमाणाः | அனுசரிக்கின்றவர்க |
| | மலைக்கு | | ளாய் |
| उत्तरं प्रति | வடக்குநோக்கி | जग्मुः | சென்றார்கள். |

ते हस्तिनपुरे गङ्गां तीर्त्वा प्रत्यङ्मुखा ययुः । पाञ्चालदेशमासाद्य मध्येन कुरुजाङ्गलम् ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|--------------------|------------------|
| ते | அவர்கள் | कुरुजाङ्गलं मध्येन | குருஜாங்கலம் வழி |
| हस्तिनपुरे | ஹஸ்தினபட்டணத் | | யாய் |
| गङ्गां | கங்கையை [தில் | पाञ्चालदेशं | பாஞ்சாலநாட்டை |
| तीर्त्वा | தாண்டி, | आसाद्य | அடைந்து |
| प्रत्यङ्मुखाः | மேற்குநோக்கி செல் | ययुः | சென்றார்கள். |
| | லுக்கின்றவர்களாய் | | |

सरांसि च सुफुल्लानि नदीश्च विमलोदकाः । निरीक्षमाणास्ते जग्मुर्दूताः कार्यवशाद्भुतम् ॥

ते அந்த
தூதா: தூதர்கள்
சு஫ுல்லானி நன்கு புஷ்பித்திருக்கிற
சராंसி च பொய்கைகளையும்,
विमलोदका: சுத்த தீர்த்தத்தை யுடைய

नदी: च நதிகளையும்
निरीक्षमाणा: பார்த்துக்கொண்டே
कार्यवशात् காரியத்தின் அவசரத்
தால்
द्भुतं வேகமாக
जग्मु: சென்றார்கள்.

ते प्रसन्नोदकां दिव्यां नानाविहगसेविताम् । उपातिजग्मुर्वेगेन शरदण्डां जनाकुलाम् ॥

ते அவர்கள்
प्रसन्नोदकां தெளிந்த நீரையுடையதும்
नानाविहगसेवितां பலவக பறவைகள்
சேர்ந்ததும்,

जनाकुलं ஜனநெருக்கமுற்ற
दिव्यां சிறந்ததுமான [தும்,
शरदण्डां சரதண்டமெனும்
वेगेन சீக்கிரமாக [நதியை
उपातिजग्मु: தாண்டிச்சென்றார்கள்.

निकूलवृक्षमासाद्य दिव्यं सत्योपयाचनम् । अभिगम्याभिवाद्यं तं कुलिङ्गां प्राविशन्पुरीम् ॥

सत्योपयाचनं { ஸத்யோபயாசன
மென்கிற பெயர்
பூண்டதும்
दिव्यं தெய்வத்தன்மையுள்ளதுமான
निकूलवृक्षं கரையிலிருக்கும்
மரத்தை

आसाद्य கிட்டி,
अभिवाद्यं வணங்கத்தக்க
तं அதற்கு
अभिगम्य வழிபட்டு,
कुलिङ्गां குலிங்கமெனும்
पुरीं நகரத்தை
प्राविशन् அடைந்தார்கள்.

अभिकालं ततः प्राप्य ते बोधिभवनाच्च्युताम् । पितृपैतामहीं पुण्यां तेरुरिक्षुमतीं नदीम् ॥

ततः அவ்விடத்திலிருந்து
ते அவர்கள்
अभिकालं அபிகாலமெனும் கிரா
प्राप्य அடைந்து, [மத்தை
बोधिभवनात् போதிபவனமெனும்
மலையினின்றும்
च्युतां பெருகுகிறதும்

पितृपैतामहीं முன்னோர்களாலனு
பணிக்கப்பட்டதும்
पुण्यां புண்ணியமானதுமாகிய
रिक्षुमतीं இக்ஷுமதியெனும்
नदीं நதியை
तेरु: கடந்தார்கள்.

अवेक्ष्याञ्जलिपानांश्च ब्राह्मणान्वेदपारगान् । ययुर्मध्येन बाह्लीकान्सुदामानं च पर्वतम् ॥

अञ्जलिपानान् { கைகொண்ட நீரை
மாத்திரம் குடிப்ப
வர்களும்
वेदपारगान् च { வேதங்களை முற்றிலு
முணர்ந்தவர்களு
மான
ब्राह्मणान् வேதியர்களை

अवेक्ष्य தரிசித்து,
बाह्लीकान् मध्येन பாஹ்லிகமென்ற தே
சத்தின் வழியாய்
सुदामानं ஸுதாமமென்னும்
पर्वतं च பர்வதத்தையும்
ययु: அடைந்தார்கள்.

विष्णोः पदं प्रेक्षमाणा विपाशां चापि शाल्मलीम् । नदीर्वापीस्तटाकानि पल्वलानि सरांसि च ॥
पश्यन्तो विविधांश्चापि सिंहव्याघ्रमृगद्विपान् । ययुः पथाऽतिमहता शासनं भर्तुरीप्सवः ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|---------------|----------------------|
| विष्णोः | ஸ்ரீமகாவிஷ்ணுவினது | विविधान् | பற்பல |
| पदं | பாதத்ததை | सिंहव्याघ्र- | ஸிம்மம், புலி, மான், |
| प्रेक्षमाणाः | சேவித்துக்கொண்டு | मृगद्विपान् च | யானை இவைகளையும் |
| विपाशां | விபாசையெனும் | पश्यन्तः अपि | கண்ணுற்றுக்கொண் |
| | நதியையும் | अतिमहता | பெரும் [டே |
| शाल्मलीं अपि | இலவமாத்தையும் | पथा | வழியாய் |
| नदीः | நதிகளையும் | भर्तुः | எஜமானனது |
| वापीः | ஓடைகளையும் | शासनं | கட்டளையில் |
| तटाकानि | குளங்களையும் | ईप्सवः | ஊக்கமுடையவர் |
| पल्वलानि च | சிறுகுட்டைகளையும் | | களாய் |
| सरांसि च | பொய்கைகளையும் | ययुः | சென்றார்கள். |

ते श्रान्तवाहना दूता विकृष्टेन सता पथा । गिरिव्रजं पुरवरं शीघ्रमासेदुरञ्जसा ॥ २१ ॥

| | | | |
|---------------|--|-----------|-----------------|
| ते | அந்த | पथा | வழியாய் |
| दूताः | தூதர்கள் | गिरिव्रजं | கிரிவ்ராஜமெனும் |
| श्रान्तवाहनाः | { களைப்படைந்த குதி ரைகளையுடையவர் களாய் | पुरवरं | சிறந்த நகரை |
| विकृष्टेन सता | நீண்டதாயிருக்கிற | अञ्जसा | நேராக |
| | | शीघ्रं | விரைவில் |
| | | आसेदुः | அடைந்தார்கள். |

भर्तुः प्रियार्थं कुलरक्षणार्थं भर्तुश्च वंशस्य परिग्रहार्थम् ।

अहेडमानास्त्वरया स्स दूता रात्र्यां तु ते तत्पुरमेव याताः ॥ २२ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------|--------------|------------------------|
| ते | அந்த | अहेडमानाः | சிரத்தையுடையவர் |
| दूताः | தூதர்கள் | | களாய் |
| भर्तुः | எஜமானருடைய | त्वरया | காலதாமதம் செய்யா |
| प्रियार्थं | நல்லன்பிற்காகவும் | | மல் |
| कुलरक्षणार्थं | குலமுய்வதன்பொரு ட்டும் | रात्र्यां तु | ராத்திரியே |
| भर्तुः | மன்னரது | तत् एव | அதே ராஜக்ருஹ மெனும் |
| वंशस्य | வம்சத்தினுடைய | पुरं | பட்டணத்திற்கு |
| परिग्रहार्थं च | கௌரவத்திற்காகவும் | याताः स्स | வந்துசேர்ந்தார்கள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे अष्टषष्ठितमः सर्गः ॥



एकोनसप्ततितमः सर्गः—அறுபத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம் || ௧௭ ||

भरतेन दुःस्वप्नदर्शनम्—பரதர் கெட்ட கனவு காண்பது.

यामेव रात्रिं ते दूताः प्रविशन्ति स्म तां पुरीम् । भरतेनापि तां रात्रिं स्वप्नो दृष्टोऽयमप्रियः ॥

தே தூதா: அந்த தூதர்கள்
தா் புரி் அந்த நகரத்தை
யா் ராட்ரி எந்த இரவில்
புவிசந்தி ஸ அடைந்தார்களோ
தா் ஁வ அதே
ராட்ரி இரவில்

भरतेन अपि परतरालम्
अयं பின்வரும்
अप्रियः கெட்ட
स्वप्नः கனவு
दृष्टः காணப்பட்டது.

व्युष्टामेव तु तां रात्रिं दृष्ट्वा तं स्वप्नमप्रियम् । पुत्रो राजाधिराजस्य सुभृशं पर्यतप्यत ॥२॥

ராஜாடிராஜஸ்ய சக்கிரவர்த்தியாரின்
புத்ர: புதல்வர்
வ்யுஷா் விடிந்திருக்கும்
தா் ராட்ரி ஁வ அந்த இரவிலேயே
த் அந்த

अप्रियं स्वप्नं கெட்ட கனவை
दृष्ट्वा கண்டு,
तु இவ்விஷயத்தில்
सुभृशं மிக
पर्यतप्यत சோகங்கொண்டார்.

तप्यमानं समाज्ञाय वयस्याः प्रियवादिनः । आयासं विनयिष्यन्तः सभायां चक्रिरे कथाः ॥

புரியவாடின: இனிமையாய் பேசும்
வயஸ்யா: நண்பர்கள்
தப்யமானம் வருந்துகிறவராய்
சமாஜாய கண்டு,
ஆயாஸம் மனக்கவலையை

विनयिष्यन्तः நீக்க விருப்பமுற்ற
வர்களாய்
सभायां சபையில்
कथाः கதைகளை
चक्रिरे கூறினார்கள்.

वाद्यन्ति तथा शान्तिं लोलयन्त्यपरे तथा । नाटकान्यपरे प्राहुर्हास्यानि विविधानि च ॥

ததா அவ்வண்ணமே
சாந்தியை
வாடியந்தி கூறுவிக்கிறார்கள்.
அபரே சிலர்
லோலயந்தி மனதை மாறச்செய்கிறார்கள்.

ததா அவ்வண்ணமே
அபரே சிலர்
நாடகானி நாடகங்களையும்,
விவிதானி பல
ஹஸ்யானி சரிகாசச் சொற்களை
பாஹு: சொன்னார்கள். [யும்]

स तैर्महात्मा भरतः सखिभिः प्रियवादिभिः । गोष्ठीहास्यानि कुर्वन्निर्न प्राहृष्यत राघवः॥

ச: அந்த
ராஃவ: ரகுவம்சத்தவரும்
மஹாத்மா வுமாகிய
பரத: பரதர்
புரியவாடி: இனிமையாய் பேசுபவர்களும்

गोष्ठीहास्यानि பற்பல பரிகாசங்களை
कुर्वन्नि: செய்பவர்களுமாகிய
तै: அந்த
सखिभि: நண்பர்களால்
प्राहृष्यत न மனத்திருப்திகொள்ளவில்லை

तमब्रवीत्प्रियसखो भरतं सखिभिर्वृतम् । सुहृद्भिः पर्युपासीनः किं सखे नानुमोदसे ॥ ६ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|------------|------------------------------------|
| पर्युपासीनः | பக்கலில் வீற்றிருந்த | तं | அந்த |
| प्रियसखः | ஆப்தஸநேகிதனெரு வன் | भरतं | பரதரைப்பார்த்து |
| | | अब्रवीत् | பின்வருமாறு சொன் |
| सुहृद्भिः | நண்பர்களாகிய | सखे | “ நண்பனே ! [நான்: |
| सखिभिः | தோழர்களால் | किं | ஏன் |
| वृतं | சூழப்பட்டிருந்த | अनुमोदसे न | கூட சந்தோஷியாம லிருக்கின்றனே ?” |

एवं ब्रुवाणं संहृष्टं भरतः प्रत्युवाच ह । शृणु त्वं यन्निमित्तं मे दैन्यमेतदुपस्थितम् ॥ ७ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|-------------|-------------------|
| भरतः ह | பரதர் | एतत् | இந்த |
| संहृष्टं | சந்தோஷமாய் | दैन्यं | மனவேதனையானது |
| ब्रुवाणं | பேசுவதைப் பார்த்து | यन्निमित्तं | எதுகாரணமாய் |
| एवं | பின்வருமாறு | उपस्थितं | சம்பவித்திருக்கிற |
| प्रत्युवाच | மொழிந்தார்: | त्वं | நீ [தென்பதை |
| मे | “ எனக்கு | शृणु | கேள். |

स्वप्ने पितरमद्राक्षं मलिनं मुक्तमूर्धजम् । पतन्तमद्रिशिखरात्कलुषे गोमयहृदे ॥ ८ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------|----------------|-----------------------|
| स्वप्ने | “ கனவில் | अद्रिशिखरात् | மலையினுச்சியிலிருந்து |
| पितरं | தந்தையாரை | कलुषे गोमयहृदे | கல்மஷமான கோமயம் |
| मलिनं | அழுக்கடைந்தவராய் | | நிரம்பிய சூட்டையில் |
| मुक्तमूर्धजं | விரித்த தலைமயிரை யுடையவராய் | पतन्तं | விழுகின்றவராய் |
| | | अद्राक्षम् | கண்டேன். |

प्लवमानश्च मे दृष्टः स तस्मिन्गोमयहृदे । पिबन्नञ्जलिना तैलं हसन्निव मुहुर्मुहुः ॥ ९ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|------------|---------------------|
| सः | “ அவர் | तैलं पिबन् | எண்ணெயைக் குடிப் |
| तस्मिन् | அந்த | मुहुःमुहुः | அடிக்கடி [பவராய் |
| गोमयहृदे | கோமயக்குட்டையில் | हसन् च | சிரிக்கின்றவராகவும் |
| प्लवमानः इव | மிதப்பவர்போலவும் | मे | எனக்கு |
| अञ्जलिना | குவித்த கையால் | दृष्टः | காணப்பட்டார். |

ततस्तिलौदनं भुक्त्वा पुनः पुनरधःशिराः । तैलेनाभ्यक्तसर्वाङ्गस्तैलमेवावगाहत ॥ १० ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|------------------|------------------|
| ततः | “ அப்பொழுது | तैलेन | தலைத்தால் |
| तिलौदनं | எள்ளுண்டை | अभ्यक्तसर्वाङ्गः | திருமேனியெல்லாம் |
| भुक्त्वा | புகித்துவிட்டு, | | பூசப்பட்டவருமாக |
| पुनः पुनः | அடிக்கடி | तैलं एव | எண்ணெயிலேயே |
| अधःशिराः | தலைகீழாயிருப்பவரும் | अवगाहत | மூழ்கினார். |

एवमेतन्मया दृष्टमिमां रात्रिं भयावहाम् । अहं रामोऽथ वा राजा लक्ष्मणो वा मरिष्यति ॥

| | | | |
|---------|------------------|-------------|-------------------|
| एवं | “இவ்வண்ணமாய் | राजा | சகரவர்த்தியாராவது |
| मया | என்னால் | रामः | ஸ்ரீராமராவது |
| भयावहां | பயத்தை அளிக்கும் | लक्ष्मणः वा | லக்ஷ்மணனாவது |
| इमां | இந்த | मरिष्यति | மரிப்பார். |
| रात्रिं | இரவில் | अथ वा | இல்லையேல் |
| एतत् | இது | अहम् | நான். |
| दृष्टं | காணப்பட்டது. | | |

नरो यानेन यः स्वप्ने खरयुक्तेन याति हि । अचिरात्तस्य धूमाग्रं चितायां संप्रदृश्यते ॥

| | | | |
|---------------|----------------|--------------|--------------------|
| यः नरः | “எந்த மனிதன் | तस्य | அவனது |
| स्वप्ने | ஸ்வப்னத்தில் | चितायां | சிதையில் |
| खरयुक्तेन | கழுதை பூட்டிய | धूमाग्रं | அதிகப்புகை |
| यानेन याति हि | வாஹனத்திலேறிக் | अचिरात् | வெகு சீக்கிரத்தில் |
| | கொண்டுபோகிறானே | संप्रदृश्यते | காணப்படுகிறது. |

एतन्निमित्तं दीनोऽहं न च वः प्रतिपूजये । शुष्यतीव च मे कण्ठो न स्वस्थमिव मे मनः ॥

| | | | |
|--------------|------------------|--------------|------------------|
| अहं | “நான் | मे | எனது |
| एतन्निमित्तं | இக்காரணத்தால் | कण्ठः च | தொண்டையும் |
| | தான் | शुष्यति इव | உலருகிறதுபோலி |
| दीनः | பரிதாபமடைந்தவ | मे | எனது [ருக்கிறது. |
| वः च | உங்களையும் [னாய் | मनः | மனமும் |
| प्रतिपूजये न | ஆமோதிக்கவில்லை. | स्वस्थं न इव | நிலைகொள்ளாதது |
| | | | போலிருக்கிறது. |

न पश्यामि भयस्थानं भयं चैवोपधारये । भ्रष्टश्च स्वरयोगो मे छाया चोपहता मम ॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------|----------------|
| भयस्थानं | “பயத்திற்கு | स्वरयोगः च | சுரலும் |
| | காரணத்தை | भ्रष्टः | மாறிவிட்டது. |
| पश्यामि न | நான் காண்கிலேன். | मम | எனது |
| भयं च | பயத்தையும் | छाया च | ஒளியும் |
| उपधारये | அடைகிறேன். | एव | முற்றிலும் |
| मे | எனது | उपहता | குன்றிவிட்டது. |

जुगुप्सन्निव चात्मानं न च पश्यामि कारणम् ॥ २१ ॥

| | | | |
|-----------|------------|-----------|-------------|
| आत्मानं च | “தன்னையே | कारणं च | அதன் காரணத் |
| इव | முற்றிலும் | | தையும் |
| जुगुप्सन् | வெறுத்துக் | पश्यामि न | அறிகிலேன். |
| | கொண்டே | | |

इमां हि दुःस्वप्नगतिं निशाम्य तामनेकरूपामवितर्कितां पुरा ।

भयं महत्तद्दृष्टवान्न याति मे विचिन्त्य राजानमचिन्त्यदर्शनम्

॥ २२ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|----------------|-----------------------------|
| अनेकरूपां | “ பலவகையாயிருக் கிறதும் | अचिन्त्यदर्शनं | எண்ணவரிய தோற்ற த்தையுடைய |
| पुरा | இதற்குமுன் | राजानं | சக்கிரவர்த்தியாரை |
| अवितर्कितां | மனதினால் கருதப் படாததுமான | विचिन्त्य | சிந்தித்து, |
| तां | அந்த | मे | எனது |
| इमां | இந்த | हृदयात् | மனத்தினின்றும் |
| दुःस्वप्नगतिं | கெட்ட கனவின் | तत् | அந்த |
| निशाम्य | கவனித்து, [பயனை | महत् | பெரும் |
| हि | அதனால் | भयं | பயமானது |
| | | याति न | அகலவில்லை.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे एकोनसप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5093



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2738

सप्ततितमः सर्गः—எழுபதாவது ஸர்க்கம் ॥ ७० ॥

भरतप्रस्थानम्—பரதர் புறப்பவேது.

भरते ब्रुवति स्वप्नं दूतास्ते क्लान्तवाहनाः । प्रविश्यासह्यपरिधं रम्यं राजगृहं पुरम् ॥ १ ॥

समागम्य तु राज्ञा च राजपुत्रेण चार्चिताः । राज्ञः पादौ गृहीत्वा तु तमूचुर्भरतं वचः ॥

| | | | |
|---------------|---|--------------|-------------------|
| भरते | பரதர் | पुरं | பட்டணத்தில் |
| स्वप्नं | கனவை | प्रविश्य | துழைத்து, |
| ब्रुवति | சொல்லுகையில் | राज्ञा च | அரசராலும், |
| क्लान्तवाहनाः | களைப்புற்ற குதிரைக ளுடன்கூட | राजपुत्रेण च | அரசகுமாரராலும், |
| | | अर्चिताः | கௌரவிக்கப்பட்ட |
| ते दूताः | அந்த தூதர்கள் | राज्ञः | மன்னரது [வர்களாய் |
| असह्यपरिधं | { கடத்தலறிய கோட் டைவாயிலையுடைய தும் | पादौ | திருவடிகளில் |
| रम्यं | அழகியதுமான | गृहीत्वा तु | வணங்கியவுடனே, |
| राजगृहं | ராஜக்ருஹமென்ற | तं भरतं तु | அந்த பரதரை தனி |
| | | समागम्य | கிட்டி, [மையில் |
| | | वचः | பின்வரும் வாக்கை |
| | | उचुः | சொன்னார்கள்: |

पुरोहितस्त्वां कुशलं प्राह सर्वे च मन्त्रिणः । त्वरमाणश्च निर्याहि कृत्यमात्ययिकं त्वया ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|--------------|-------------------|
| पुरोहितः | “ குலகுருவானவர் | त्वरमाणः च | விரைந்தவனாக |
| त्वां | உன்னை | निर्याहि | புறப்படு, |
| कुशलं | கேஷமம் | त्वया कृत्यं | உன்னால் செய்யப்பட |
| प्राह | விசாரிக்கின்றார். | | வேண்டிய காரியம் |
| मन्त्रिणः | மந்திரிமார்கள் | | |
| सर्वे च | எல்லோரும்படியே. | आत्ययिकम् | அவசரமானது |

इमानि च महार्हाणि वस्त्राण्याभरणानि च । प्रतिगृह्य विशालाक्ष मातुलस्य च दापय ॥

| | | | |
|--------------------|---------------------------------|--|--|
| विशालाक्ष | “கொண்டாடத்தக்க அறிவுடையவனே ! | वस्त्राणि च आभरणानि च प्रतिगृह्य मातुलस्य च दापय | வஸ்திரங்களையும் ஆபரணங்களையும் வாங்கிக்கொண்டு, மாமனுக்கு கொடுக்கச்செய். |
| इमानि महार्हाणि | இந்த விலையுயர்ந்த | | |

अत्र विंशतिकोव्यस्तु नृपतेर्मातुलस्य ते । दश कोव्यस्तु सम्पूर्णास्तथैव च नृपात्मज ॥५॥

| | | | |
|-----------------|-----------------------|-------------|----------------------|
| नृपात्मज | “சக்கிரவர்த்திகுமார ! | ते | உனது |
| अत्र | இதில் | मातुलस्य तु | மாமனுக்கும் |
| नृपतेः | அரசருக்கு | दश कोव्यः च | பத்துக் கோடிகளும் |
| विंशतिकोव्यः तु | இருபது கோடிகளும், | सम्पूर्णाः | நிறைந்திருக்கின்றன.” |
| तथा एव | அவ்வண்ணமே | | |

प्रतिगृह्य तु तत्सर्वं स्वनुरक्तः सुहज्जने । दूतानुवाच भरतः कामैः सम्प्रतिपूज्य तान् ॥६॥

| | | | |
|------------|-----------------------|---------------|---------------------|
| भरतः | பரதர் | सम्प्रतिपूज्य | கௌரவித்து, |
| तत् सर्वं | அந்த எல்லாவற்றை | तु | அதன் பின்னர் |
| प्रतिगृह्य | வாங்கிக்கொண்டு [யும்] | तान् | அந்த |
| सुहज्जने | அன்பர்களிடத்தில் | दूतान् | தூதர்களைப் பார்த்து |
| स्वनुरक्तः | அன்புடையவராய் | उवाच | பின்வருமாறு |
| कामैः | வேண்டியவைகளால் | | வினாவினார்: |

कच्चित्सुकुशली राजा पिता दशरथो मम । कच्चिच्चारोगता रामे लक्ष्मणे च महात्मनि ॥७॥

| | | | |
|---------|------------------------|------------|--------------------------|
| मम | “எனது | महात्मनि | மகாத்மாவாகிய |
| पिता | தந்தையாகிய | रामे च | ராமர் விஷயத்திலும் |
| दशरथः | தசரத | लक्ष्मणे च | லக்ஷ்மணர் |
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | | விஷயத்திலும் |
| सुकुशली | சேஷமமாயிருக்கிற ரொன | अरोगता | ஆரோக்கியமிருக் கிறதென |
| कच्चित् | நான் நம்புகிறேன். | कच्चित् | நான் நம்புகிறேன். |

आर्या च धर्मनिरता धर्मज्ञा धर्मदर्शिनी । अरोगा चापि कौसल्या माता रामस्य धीमतः ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------|---------------|---|
| धीमतः | “அறிவாளியாகிய | धर्मदर्शिनी च | { தருமத்தை அனுஷ்டி த்துக்காட்டுபவளு மான |
| रामस्य | ராமரது | कौसल्या | கோஸலாதேவியார் |
| माता च | தாயும் | अरोगा अपि | நோயற்றவராக |
| आर्या | உத்தமியும் | | இருக்கின்றாரா? |
| धर्मज्ञा | தருமமுணர்ந்தவளும் | | |
| धर्मनिरता | தருமத்தில் பற்றுடை யவளும் | | |

कच्चिसुमित्रा धर्मज्ञा जननी लक्ष्मणस्य या । शत्रुघ्नस्य च वीरस्य साऽरोगा चापि मध्यमा ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|--------------|-------------------|
| लक्ष्मणस्य | “லக்ஷ்மணனுடையவும் | या | எவளோ, |
| वीरस्य | தருமவீரனாகிய | सा | அந்த |
| शत्रुघ्नस्य च | சத்ருக்ஷ்ணனுடையவும் | सुमित्रा अपि | ஸுமித் திராதேவி |
| जननी | தாயும் | | யாரும் |
| धर्मज्ञा च | தருமத்தை உள்ளபடி | अरोगा } | நோயற்றவராயிருக்கி |
| | அறிந்தவளும் | कच्चित् } | ன்றாரென நான் நம் |
| मध्यमा | நடுவினுள்ளவளும் | | புகிறேன். |

आत्मकामा सदा चण्डी क्रोधना प्राज्ञमानिनी । अरोगा चापि कैकेयी माता मे किमुवाच ह ॥

| | | | |
|----------|--------------------|-----------------|---------------------|
| मे माता | “எனது தாயும் | प्राज्ञमानिनी च | { தனக்கே சகலமும் தெ |
| आत्मकामा | சுயநலத்தைக் கருதுப | | ரியுமெனக் கருதுபவ |
| सदा | எப்பொழுதும்[வளும் | कैकेयी | ஞமான |
| चण्डी | பிடிவாதமுடையவ | अरोगा अपि | கைகேயிதேவியார் |
| | ளாய் | | நோயற்றவராயிருக் |
| क्रोधना | சண்டை போடுபவ | किं ह उवाच | கின்றனரா? |
| | ளும் | | என்ன சொல்லியனுப் |
| | | | பியிருக்கின்றா?” |

एवमुक्तास्तु ते दूता भरतेन महात्मना । ऊचुः संप्रश्रितं वाक्यमिदं तं भरतं तदा ॥ ११ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|-------------|--------------|
| महात्मना | மகாத்மாவான | संप्रश्रितं | வினயமுடைய |
| भरतेन | பரதரால் | तं | அந்த |
| एवं उक्ताः | இங்ஙனம் வினாவப்ப | भरतं | பரதனுக்கு |
| ते दूताः | அந்த தூதர்கள் [ட்ட | इदं | பின்வரும் |
| तदा | அப்பொழுது | वाक्यं | பதிலை |
| तु | இவ்விஷயத்தில் | ऊचुः | சொன்னார்கள்: |

कुशलास्ते नरव्याघ्र येषां कुशलमिच्छसि । श्रीश्च त्वां वृणुते पद्मा युज्यतां चापि ते रथः ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-----------|-----------------|
| नरव्याघ्र | “புருஷோத்தம! | पद्मा | தாமரையைக்கையிற் |
| येषां | எவர்களுடைய | श्रीः च | லக்ஷ்மி [கொண்ட |
| कुशलं | சேஷமத்தை | त्वां | உன்னை |
| इच्छसि | கேட்கின்றாயோ | वृणुते | கோருகின்றாள். |
| ते | அவர்கள் | ते | உனது |
| कुशलाः | சேஷமமாயிருக்கின் | रथः च अपि | ரதமும் |
| | றார்கள். | युज्यताम् | சேத்தமாகட்டும். |

भरतश्चापि तान्दूतानैवमुक्तोऽभ्यभाषत । आपृच्छेऽहं महाराजं दूताः संत्वरयन्ति माम् ॥ १२ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-------------|------------------|
| एवं उक्तः | இங்ஙனம் சொல்லப் | अहं | “நான் |
| भरतः च | பரதரும் [பட்ட | महाराजं | அரசரிடம் |
| मां | “என்னை | आपृच्छे अपि | விடைபெற்றுகொள் |
| दूताः | தூதர்கள் | | ளுகிறேன்” என்று |
| सन्त्वरयन्ति | விரைவிக் கின்றனர்” | तान् दूतान् | அந்த தூதர்களிடம் |
| | என்று | अभ्यभाषत | கூறினார். |

एवमुक्त्वा तु तान्दूतान् भरतः पार्थिवात्मजः । दूतैः सञ्चोदितो वाक्यं मातामहमुवाच ह ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------------|---------|---------------------|
| पार्थिवात्मजः | சக்கிரவர்த்தியாரின் குமாரரும் | एवं | மேற்கண்டவாறு |
| दूतैः | தூதர்களால் | उक्त्वा | சொல்லி, |
| सञ्चोदितः | தூண்டப்பட்டவரு | तु | அதன்பின்னர் |
| भरतः | பரதர் [மாகிய | मातामहं | மாதாமஹரைப் பார்த்து |
| तान् | அந்த | वाक्यं | பின்வரும்மொழியை |
| दूतान् | தூதர்களுக்கு | उवाच ह | மொழிந்தார்: |

राजन्पितुर्गमिष्यामि सकाशं दूतचोदितः । पुनरप्यहमेष्यामि यदा मे त्वं स्मरिष्यसि ॥

| | | | |
|-----------|------------------------|----------------|--|
| राजन् | “அரசரே! | त्वं | தேவரீர் |
| दूतचोदितः | தூதர்களால் தூண்டப்பட்ட | मे | என்னை |
| अहं | நான் | पुनः अपि | திரும்பவும் |
| पितुः | திருத்தந்தையின் | यदा स्मरिष्यसि | { எப்பொழுது நினைக்கின்றீரோ அப்பொழுது வருவேன்.” |
| सकाशं | ஸன்னிதிக்கு | एष्यामि | |
| गमिष्यामि | போகிறேன்; | | |

भरतेनैवमुक्तस्तु नृपो मातामहस्तदा । तमुवाच शुभं वाक्यं शिरस्याघ्राय राघवम् ॥१६॥

| | | | |
|---------|------------------|--------------|------------------|
| मातामहः | மாதாமஹரான | तं | அந்த |
| नृपः | அரசர் | राघवं | பரதனை |
| भरतेन | பரதரால் | शिरसि आघ्राय | உச்சிமுகர்ந்து, |
| एवं | இங்ஙனம் | तदा | அப்பொழுது |
| उक्तः | சொல்லப்பட்டவராய் | शुभं | அனுகூலமாகிய |
| तु | உடனே | वाक्यं | பின்வரும் சொல்லை |
| | | उवाच | சொன்னார்: |

गच्छ तातानुजाने त्वां कैकेयी सुप्रजास्त्वया । मातरं कुशलं ब्रूयाः पितरं च परन्तप ॥

| | | | |
|---------|-------------------|----------|----------------------------------|
| तात | “குழந்தாய்! | सुप्रजाः | நற்புதல்வனைப் பெற்ற வளாகின்றனள்; |
| त्वां | உனக்கு | परन्तप | ஐயசாலியே! |
| अनुजाने | விடைகொடுக்கிறேன்; | मातरं | தாயிடமும், |
| गच्छ | போய்வா; | पितरं च | தந்தையிடமும் |
| त्वया | உன்னால் | कुशलं | சேஷமத்தை |
| कैकेयी | கைகேயி | ब्रूयाः | சொல்வாயாக. |

पुरोहितं च कुशलं ये चान्ये द्विजसत्तमाः । तौ च तात महेष्वासौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥

| | | | |
|--------------|------------------------|-------------|---------------------|
| तात | “குழந்தாய்! | महेष्वासौ | வில்லாளிகளும் |
| पुरोहितं च | குலகுருவுக்கும், | भ्रातरौ | பிராதாக்களுமான |
| अन्ये | மற்ற | रामलक्ष्मणौ | ராமன் லக்ஷ்மணன் |
| द्विजसत्तमाः | பிராம்மணோத்தமர் | तौ च | இவ்விருவர்களுக்கும் |
| ये च | எவர்களோ அவர்களுக்கும், | कुशलम् | சேஷமத்தைச்சொல் |

உவாயாக.

तस्मै हस्त्युत्तमांश्चित्रान्कम्बलानजिनानि च । अभिसत्कृत्य कैकेयो भरताय धनं ददौ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------|-------------|--------------------|
| கைகேய: | கேகய மன்னர் | அஜினானி ச | { மான்தோல், புலித் |
| तस्मै | அந்த | | தோல் முதலியவை |
| भरताय | பரதனுக்கு | | களையும் |
| हस्त्युत्तमान् | உயர்ந்த யானைகளையும் | अभिसत्कृत्य | சம்மானித்து, |
| चित्रान् | பலவகைப்பட்ட | धनं | பரிசாக |
| कम्बलान् | கம்பளிகளையும், | ददौ | அளித்தார். |

रुक्मणिष्कसहस्रे द्वे षोडशाश्वशतानि च । सत्कृत्य कैकयीपुत्रं कैकयो धनमादिशत् ॥२०॥

| | | | |
|------------------|---------------------|-------------|---------------------|
| கேகய: | கேகய மன்னர் | षोडश | பதினாறு |
| कैकयीपुत्रं | கைகேயி புதல்வனுக்கு | अश्वशतानि च | நூறு குதிரைகளையும், |
| द्वे | இரண்டு | सत्कृत्य | சம்மானித்து, |
| रुक्मणिष्कसहस्रे | ஆயிரம் பொன்னாண | धनं | பரிசாக |
| | யங்களையும், | आदिशत् | ஆக்குறித்தார். |

तथाऽमात्यानभिप्रेतान्विश्वास्यांश्च गुणान्वितान् । ददावश्वपतिः शीघ्रं भरतायानुयायिनः॥

| | | | |
|--------------|-------------------|----------------|--------------------|
| अश्वपतिः | அசுவபதியெனும் | गुणान्वितान् च | நற்குணங்களமையப் |
| | அம்மன்னர் | | பெற்றவர்களுமான |
| तथा | அவ்வண்ணமே | अमात्यान् | மந்திரிகளை |
| अभिप्रेतान् | இஷ்டர்களும், | भरताय | பரதனுக்கு |
| विश्वास्यान् | நம்பிக்கையுள்ளவர் | अनुयायिनः | கூடச் செல்பவர்களாக |
| | களும், | शीघ्रं | அப்பொழுதே |
| | | ददौ | கொடுத்தார். |

ऐरावतानैन्द्रशिरान्नागान्वै प्रियदर्शनान् । खराञ्छीघ्रान्सुसंयुक्तान्मातुलोऽस्मै धनं ददौ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|---------------|--------------------|
| मातुलः | அம்மான் | प्रियदर्शनान् | பார்வைக்கழகானவை |
| अस्मै | இவருக்கு | | களுமான, |
| ऐरावतान् | ஐராவதத்தின் குலத் | नागान् | யானைகளையும் [வாய் |
| | தில் பிறந்தவைகளும் | सुसंयुक्तान् | ரதங்களில் பழகியன- |
| | | शीघ्रान् | வேகமாய்ச் செல்லும் |
| ऐन्द्रशिरान् | { இந்திரசிரமென்ற | खरान् वै | கோவேறுகழுதை |
| | { மலையிலுண்டானவை | धनं | பரிசாக [களையும் |
| | களும் | ददौ | அளித்தார். |

अन्तःपुरेऽतिसंवृद्धान्व्याघवीर्यबलोपमान् । दंष्ट्रायुधान्महाकायाञ्छुनश्चोपायनं ददौ॥२३॥

| | | | |
|----------------|----------------------|-----------|-----------------|
| अन्तःपुरे | அந்தப்புரத்தில் | महाकायान् | உத்தம இயற்கையறி |
| अतिसंवृद्धान् | நன்று வளர்ந்தவையும் | | வையுடையனவுமான |
| व्याघवीर्य- | புலியின் வீரியத்திற் | शुनः च | நாய்களையும் |
| बलोपमान् | கும் பலத்திற்கும் | उपायनं | பரிசாக |
| | சமமானமானவையும் | ददौ | அளித்தார். |
| दंष्ट्रायुधान् | கோரைப்பற்களை ஆயு | | |
| | தமாய் உடையனவும் | | |

स दत्तं केकयेन्द्रेण धनं तन्नाभ्यनन्दत । भरतः केकयीपुत्रो गमनत्वरया तदा ॥ २४ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|--------------|----------------|
| केकयीपुत्रः | கைகேயீ புதல்வனான | केकयेन्द्रेण | கைகயமன்னரால் |
| सः भरतः | அந்த பரதர் | दत्तं | அளிக்கப்பட்ட |
| गमनत्वरया | பிரயாணத்தினவசரத் | तत् | அந்த |
| | தால் | धनं | பரிசை |
| तदा | அந்த சந்தர்ப்பத்தில் | अभ्यनन्दत न | பாராட்டவில்லை. |

बभूव ह्यस्य हृदये चिन्ता सुमहती तदा । त्वरया चापि दूतानां स्वप्नस्यापि च दर्शनात् ॥

| | | | |
|----------------|------------------|-----------|-----------|
| दूतानां अपि | தூதர்களுடைய | अस्य | இவரது |
| त्वरया च | அவசரப்படுத்தலா | हृदये | மனதில் |
| स्वप्नस्य | ஸ்வப்னத்தை [லும் | सुमहती | பெரும் |
| दर्शनात् अपि च | கண்டதா லும் | चिन्ता हि | கவலைதான் |
| तदा | அப்பொழுது | बभूव | இருந்தது. |

स स्ववेश्माभ्यतिक्रम्य नरनागाश्वसंवृतम् । प्रपेदे सुमहच्छ्रीमान्राजमार्गमनुत्तमम् ॥ २६ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-----------------|--|
| श्रीमान् | ஸ்ரீமானான | नरनागाश्वसंवृतं | { மனிதர்களும் யானைகளும் குதிரைகளும் நிரம்பியதும் |
| सः | அவர் | अनुत्तमं | மிகச்சிறந்ததும் |
| स्ववेश्म | தானிருந்த வீட்டை | सुमहत् | விசாலமான துமான |
| अभ्यतिक्रम्य | கடந்து | राजमार्गं | ராஜவீதியை |
| | | प्रपेदे | அடைந்தார். |

अभ्यतीत्य ततोऽपश्यदन्तःपुरमनुत्तमम् । ततस्तद्भरतः श्रीमानाविवेशानिवारितः ॥ २७ ॥

| | | | |
|-----------|--------------|-----------|--------------------|
| ततः | அதன்மேல் | ततः | அவ்விடத்தில் |
| श्रीमान् | ஸ்ரீமானாகும் | अनुत्तमं | உத்தமமான |
| भरतः | பரதர் | अन्तःपुरं | அந்தப்புரத்தை |
| तत् | அதை | अपश्यत् | கண்டார். |
| अभ्यतीत्य | கடந்து, | अनिवारितः | தடைசெய்யப்படாத |
| | | आविवेश | புகுந்தார். [வராய் |

स मातामहमापृच्छ च मातुलं च युधाजितम् । रथमारुह्य भरतः शत्रुघ्नसहितो ययौ ॥ २८ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|---------------|-------------------|
| सः | அந்த | आपृच्छ | விடைபெற்றுக் |
| भरतः | பரதர் | रथं | ரதத்தில் [கொண்டு, |
| मातामहं | மாதாமஹரிடத்திலும் | शत्रुघ्नसहितः | சத்ருக்னரோடுகூட |
| मातुलं | அம்மானாகிய | आरुह्य | ஏறி |
| युधाजितं च | யுதாஜித்தினிடமும் | ययौ | பிரயாணமானார். |

रथान्मण्डलचक्रांश्च योजयित्वा परःशतम् । उष्ट्रगोऽश्वखरैर्भृत्या भरतं यान्तमन्वयुः ॥२९॥

| | | | |
|--------------|-------------------|--------------------|---|
| भृत्याः | சேவகர்கள் | उष्ट्रगोऽश्वखरैः च | { ஒட்டகை, எருதுகள், குதிரைகள், கோவேறுகழுதைகளினை |
| मण्डलचक्रान् | வட்டவடிவமான சக்கி | योजयित्वा | பூட்டி, [களோடு |
| परशतं | நூற்றுக்கணக்கை மி | यान्तं | சென்றுகொண்டிருக்க |
| | ஞ்சினவையுமான | भरतं | பரதரை [கும் |
| रथान् | ரதங்களை | अन्वयुः | பின்பற்றிச்சென்றார்கள். |

बलेन गुप्तो भरतो महात्मा सहायकस्यात्मसमैरमात्यैः ।

आदाय शत्रुघ्नमपेतशत्रुर्गृहाद्ययौ सिद्ध इवेन्द्रलोकात्

॥ ३० ॥

| | | | |
|------------|----------------------|--------------|--------------------|
| बलेन | சேனையால் | अमात्यैः | மந்திரிமார்களோடு |
| गुप्तः | பாதுகாக்கப்பட்டவரும் | सह | கூட |
| अपेतशत्रुः | சத்ருக்களில்லாத | शत्रुघ्नं | சத்ருக்களையும் |
| महात्मा | மஹாத்மாவாகிய | आदाय | அழைத்துக்கொண்டு, |
| भरतः | பரதர் | इन्द्रलोकात् | இந்திரலோகத்தினி |
| आर्यकस्य | மாதாமஹருடைய | सिद्धः इव | சித்தர்போல் [ன்று |
| आत्मसमैः | தனக்குச்சமமான | गृहात् | திருமாளிகையிலிருந் |
| | | ययौ | புறப்பட்டார். [து |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे सप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5123



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2768

एकसप्ततितमः सर्गः—எழுபத்தோராவது ஸர்க்கம் ॥ ७२ ॥

अयोध्याप्रवेशः—அயோத்தியையில் பிரவேசிப்பது.

स प्राङ्मुखो राजगृहादभिनिर्याय वीर्यवान् । ततः सुदामां द्युतिमान्संतीर्याविक्ष्य तां नदीम् ॥
ह्लादिनीं दूरपारां च प्रत्यक्स्रोतस्तरङ्गिणीम् । शतद्रूमतरच्छ्रीमान्नदीमिक्ष्वाकुनन्दनः ॥२॥

| | | | |
|-----------------|---|--------------------------|--------------------------|
| ततः | அதன்மேல் | सुदामां | சுதாமையேனும் |
| द्युतिमान् | தேஜஸ்வியும் | नदीं | நதியை |
| वीर्यवान् | சாமர்த்தியசாலியும் | अदेक्ष्य | பார்த்து, |
| श्रीमान् | ஸ்ரீமானும் | तां | அதை |
| | { இசுத்தவாகுலத்தைப் பெருமைப்படுத்த வந்தவருமான | संतीर्य | கடந்து, |
| इक्ष्वाकुनन्दनः | | दूरपारां | மிக்கஅகலமான |
| | | ह्लादिनीं च | ஹ்லாதினியேனும் நதியையும் |
| सः | அவர் | प्रत्यक्स्रोतस्तरङ्गिणीं | மேற்கோடும் ஓர் நதியையும் |
| प्राङ्मुखः | கிழக்குநோக்கிச்செல்பவராய் | | |
| राजगृहात् | ராஜக்ருஹமெனும் நகரிலிருந்து | शतद्रूं | சதக்ருவெனும் |
| अभिनिर्याय | வெளிக்கிளம்பி, | नदीं | நதியையும் |
| | | अतरत् | கடந்தார். |

राजपुत्रो महारण्यमनभीक्ष्णोपसेवितम् । भद्रो भद्रेण यानेन मारुतः खमिवात्यगात् ॥८॥

| | | | |
|-----------|-----------------------|--------------------|--------------------|
| मारुतः | வாயு | அனभीक्ष्णோபசேவிதம் | எப்படிப்பட்ட சஞ்சா |
| खं | ஆகாசத்தில் | | ரமுமற்ற |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ் | महारण्यं | மகாரண்யத்தை |
| | வண்ணமே | भद्रेण | பிரசஸ்தமாயிருக் |
| भद्रः | புண்யாத்மாவான | यानेन | தேருடன் [கின்ற |
| राजपुत्रः | சக்கிரவர்த்தி குமாரர் | अत्यगात् | கடந்தார். |

भागीरथीं दुष्प्रतरां सोऽशुधाने महानदीम् । उपायाद्राघवस्तूर्णं प्राग्वटे विश्रुते पुरे ॥ ९ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|----------------|
| सः | அந்த | भागीरथीं | கங்கையை |
| राघवः | பரதர் | विश्रुते | பெயர்பெற்ற |
| अशुधाने | அம்சதானம் எனும் | प्राग्वटे | ப்ராக்வடமெனும் |
| | நகரில் | पुरे | நகரில் |
| दुष्प्रतरां | தாண்ட முடியாததும் | तूर्णं | விரைவில் |
| महानदीं | மகாநதியுமாகிய | उपायात् | அடைந்தார். |

स गङ्गां प्राग्वटे तीर्त्वा समायात्कुटिकोष्ठिकाम् । सबलस्तां स तीर्त्वाऽथ समायाद्धर्मवर्धनम् ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|--------------|-------------------|
| सः | அவர் | समायात् | அடைந்தார். |
| सबलः | சேனையுடன்கூட | अथ | அனந்தரம் |
| प्राग्वटे | ப்ராக்வடமெனும் | सः | அவர் |
| गङ्गां | கங்கையை [நகரில் | तां तीर्त्वा | அதைத் தாண்டி |
| तीर्त्वा | தாண்டி, | धर्मवर्धनं | தர்மவர்த்தனமெனும் |
| कुटिकोष्ठिकां | குடிகோஷ்டிகமெனும் | | கிராமத்தை |
| | நதியை | समायात् | வந்தடைந்தார். |

तोरणं दक्षिणार्धेन जम्बूप्रस्थमुपागमत् । वरूथं च ययौ रम्यं ग्रामं दशरथात्मजः ॥११॥

| | | | |
|-------------|------------------|----------------|-------------------|
| दशरथात्मजः | தசரதரின் குமாரர் | जम्बूप्रस्थं | ஜம்பூப்ரஸ்தமெனும் |
| | (பரதர்) | | கிராமத்தை |
| | தோரணமெனும் | उपागमत् | அடைந்தார். |
| | கிராமத்தின் | रम्यं | அழகான |
| क्षिणार्धेन | தென்வழியால் | वरूथं ग्रामं च | வருதமெனும் கிராம |
| | | ययौ | அடைந்தார். [த்தை |

तत्र रम्ये वने वासं कृत्वाऽसौ प्राङ्मुखो ययौ । उद्यानमुज्जिहानायाः प्रियका यत्र पादपाः॥

| | | | |
|------------|--------------------|--------------|----------------|
| असौ | அவர் | उज्जिहानायाः | உஜ்ஜிஹானையென்ற |
| तत्र | அந்த | प्रियकाः | கதம்ப [நகரில் |
| रम्ये | மனோகரமான | पादपाः | விருக்டங்கள் |
| वने | காட்டில் | यत्र | எதிலிருந்தனவோ |
| वासं | (இரவு) தங்கியிருத் | | அந்த |
| कृत्वा | செய்து, [கலை | उद्यानं | உத்தியானவனத்தை |
| प्राङ्मुखः | கிழக்குநோக்கி செல் | ययौ | அடைந்தார். |
| | லுகின்றவராய் | | |

ऐलधाने नदीं तीर्त्वा प्राप्य चापरपर्वटान् । शिलामाकुर्वतीं तीर्त्वा ह्यग्नेयं शल्यकर्तनम् ॥
सत्यसन्धः शुचिः श्रीमान्प्रेक्षमाणः शिलावहाम् । अत्ययात्स महाशैलान्वनं चैत्ररथं प्रति ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|---------------|---------------------|
| सत्यसन्धः | ஸத்யஸந்தரும் | आकुर्वतीं | புரட்டித்தள்ளும் |
| शुचिः | பரிசுத்தமூர்த்தியும் | | தன்மையுள்ள |
| श्रीमान् | ஸ்ரீமானுமாகிய | शिलावहां | சிலாவஹமெனும் |
| सः | அவர் | तीर्त्वा | கடந்து, [நதியை |
| ऐलधाने | ஐலதானமெனும் | आग्नेयं | அக்கினிமூலையிலிருக் |
| | நகரத்தில் | | கும் |
| नदीं | ஓர் நதியை | शल्यकर्तनं हि | சல்யகர்த்தனமெனும் |
| तीर्त्वा | தாண்டி, | | நாட்டையும் |
| अपरपर्वटान् | அபரபர்படமெனும் | प्रेक्षमाणः | பார்த்துக்கொண்டே |
| | நாடுகளை | चैत्ररथं | சைத்ரரதமெனும் |
| प्राप्य च | கடந்து, | वनं प्रति | வனத்தைக்குறித்து |
| शिलां | கல்லை | महाशैलान् | பெரும்மலைகளை |
| | | अत्ययात् | கடந்தார். |

सरस्वतीं च गङ्गां च युग्मेन प्रत्यपद्यत । उत्तरं वीरमत्स्यानां भारुण्डं प्राविशद्वनम् ॥५॥

| | | | |
|-------------|-------------------|---------------|-----------------|
| सरस्वतीं च | ஸரஸ்வதியெனும் | वीरमत्स्यानां | வீரமத்ஸ்யமெனும் |
| | நதியையும் | | நாடுகளுக்கு |
| गङ्गां च | கங்கையெனும் நதியை | उत्तरं | வடக்கில் |
| | யும் | भारुण्डं | பாருண்டமெனும் |
| युग्मेन | ஸங்கமத்தில் | वनं | வனத்தில் |
| प्रत्यपद्यत | வந்துசேர்ந்தார். | प्राविशत् | புகுந்தார். |

वेगिनीं च कुलिङ्गाख्यां ह्लादिनीं पर्वतावृताम् । यमुनां प्राप्य संतीर्णो बलमाश्वासयत्तदा ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|-----------|--------------------|
| वेगिनीं | வேகமாயோடுகிறதும் | यमुनां | யமுனையை |
| ह्लादिनीं च | மனதை மகிழ்விப்பதும் | प्राप्य | அடைந்து, |
| | தும் | संतीर्णः | கடந்தார். |
| पर्वतावृतां | பர்வதங்களால் சூழப் | तदा | அந்தச் சமயத்தில் |
| | பட்டதும் | बलं | சைனியத்தை |
| कुलिङ्गाख्यां | குலிங்கமெனப்பெயர் | आश्वासयत् | இளைப்பாறுவித்தார். |
| | கொண்டதுமாகிய | | |

शीतीकृत्य तु गात्राणि क्लान्तानाश्वास्य वाजिनः ।

तत्र स्नात्वा च पीत्वा च प्रायादादाय चोदकम्

॥ ७ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|------------|-------------------|
| तत्र | அவ்விடத்தில் | स्नात्वा च | ஸ்நானம் செய்து |
| क्लान्तान् | களைப்படைந்திருந்த | पीत्वा च | நீர் பருகி |
| वाजिनः | குதிரைகளை | उदकं | தீர்த்தத்தை |
| आश्वास्य | இளைப்பாற்றி | आदाय च | எடுத்துக்கொண்டும் |
| गात्राणि | உடல்களை | प्रायात् | புறப்பட்டார். |
| शीतीकृत्य तु | குளிர்மையுறச் செய்ததும் | | |

राजपुत्रो महारण्यमनभीक्ष्णोपसेवितम् । भद्रो भद्रेण यानेन मारुतः स्वमिवात्यगात् ॥८॥

| | | | |
|-----------|-----------------------|-------------------|---------------------------|
| मारुतः | வாயு | அனभीक्ष्णोபசேவித் | எப்படிப்பட்ட சஞ்சாரமுமற்ற |
| खं | ஆகாசத்தில் | | |
| हव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே | महारण्यं | மகாரண்யத்தை |
| भद्रः | புண்பாத்தமாவான | भद्रेण | பிரசஸ்தமாயிருக் |
| राजपुत्रः | சக்கிரவர்த்தி குமாரர் | यानेन | தேருடன் [கின்ற |
| | | अत्यगात् | கடந்தார். |

भागीरथीं दुष्प्रतरां सोऽंशुधाने महानदीम् । उपायाद्राघवस्तूर्णं प्राग्वटे विश्रुते पुरे ॥ ९ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|-----------|----------------|
| सः | அந்த | भागीरथीं | கங்கையை |
| राघवः | பரதர் | विश्रुते | பெயர்பெற்ற |
| अंशुधाने | அம்சதானம் எனும் நகரில் | प्राग्वटे | ப்ராக்வடமெனும் |
| दुष्प्रतरां | தாண்ட முடியாததும் | पुरे | நகரில் |
| महानदीं | மகாநதியுமாகிய | तूर्णं | விரைவில் |
| | | उपायात् | அடைந்தார். |

स गङ्गां प्राग्वटे तीर्त्वा समायात्कुटिकोष्ठिकाम् । सबलस्तां स तीर्त्वाऽथ समायाद्धर्मवर्धनम् ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------|--------------|-------------------|
| सः | அவர் | समायात् | அடைந்தார். |
| सबलः | சேனையுடன்கூட | अथ | அனந்தரம் |
| प्राग्वटे | ப்ராக்வடமெனும் | सः | அவர் |
| गङ्गां | கங்கையை [நகரில் | तां तीर्त्वा | அதைத் தாண்டி |
| तीर्त्वा | தாண்டி, | धर्मवर्धनं | தர்மவர்த்தனமெனும் |
| कुटिकोष्ठिकां | குடிகோஷ்டிகமெனும் நதியை | | கிராமத்தை |
| | | समायात् | வந்தடைந்தார். |

तोरणं दक्षिणार्धेन जम्बूपस्थमुपागमत् । वरुथं च ययौ रम्यं ग्रामं दशरथात्मजः ॥११॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|----------------|-----------------------------|
| दशरथात्मजः | தசரதரின் குமாரர் (பரதர்) | जम्बूपस्थं | ஜம்பூப்ரஸ்தமெனும் கிராமத்தை |
| तोरणं | தோரணமெனும் கிராமத்தின் | उपागमत् | அடைந்தார். |
| दक्षिणार्धेन | தென்வழியால் | रम्यं | அழகான |
| | | वरुथं ग्रामं च | வருதமெனும் கிராம |
| | | ययौ | அடைந்தார். [த்தை |

तत्र रम्ये वने वासं कृत्वाऽसौ प्राञ्जुखो ययौ । उद्यानमुज्जिहानायाः प्रियका यत्र पादपाः॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|--------------|----------------|
| असौ | அவர் | उज्जिहानायाः | உஜ்ஜிஹானையென்ற |
| तत्र | அந்த | प्रियकाः | கதம்ப [நகரில் |
| रम्ये | மனோகரமான | पादपाः | விரூக்ஷங்கள் |
| वने | காட்டில் | यत्र | எதிலிருந்தனவோ |
| वासं | (இரவு) தங்கியிருத் | | அந்த |
| कृत्वा | செய்து, [தலை | उद्यानं | உத்தியானவனத்தை |
| प्राङ्मुखः | கிழக்குநோக்கி செல் லுகின்றவராய் | ययौ | அடைந்தார். |

सालांस्तु प्रियकान्प्राप्य शीघ्रान्नास्थाय वाजिनः । अनुज्ञाप्याथ भरतो वाहिनीं त्वरितो ययौ ॥

| | | | |
|-----------|---------------|---------------|-----------------|
| अथ | அப்பொழுது | वाजिनः | குதிரைகளை |
| भरतः | பரதர் | आस्थाय | ரதத்திற்பூட்டி, |
| प्रियकान् | கதம்ப | वाहिनीं | சேனையிடம் |
| सालान् | மரங்களை | अनुज्ञाप्य तु | விடைகொண்டு |
| प्राप्य | கிட்டி, | त्वरितः | அவசரமுற்றவராய் |
| शीघ्रान् | வேகம்செல்லும் | ययौ | சென்றார். |

वासं कृत्वा सर्वतीर्थे तीर्त्वा चोत्तानिकां नदीम् । अन्या नदीश्च विविधाः पार्वतीयैस्तुरङ्गमैः ॥
हस्तिपृष्ठमासाद्य कुटिकामत्यवर्तत । ततार च नरव्याघ्रो लौहित्ये स कपीवतीम् ॥ १५ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|-------------|-----------------------------------|
| सः | அந்த | तुरङ्गमैः | குதிரைகளைக்கொண்டு |
| नरव्याघ्रः | புருஷோத்தமர் | तीर्त्वा | தாண்டி, |
| सर्वतीर्थे | ஸ்ர்வதீர்த்தமெனும் கிராமத்தில் | हस्तिपृष्ठं | ஹஸ்திப்ருஷ்டக மெனும் கிராமத்தை |
| वासं | ஓரிரவு | आसाद्य | அடைந்து |
| कृत्वा | கழித்தலைச் செய்து | कुटिकां | குடிகையெனும்நதியை |
| उत्तानिकां | உத்தானிகையென்ற | अत्यवर्तत | கடந்தார். |
| नदीं च | நதியையும் | लौहित्ये | லௌஹித்யமெனும் நகரில் |
| अन्याः | மற்ற | कपीवतीं च | கபீவதியென்ற நதி யையும் |
| विविधाः | பல | ततार | தாண்டினார். |
| नदीः च | நதிகளையும் | | |
| पार्वतीयैः | மலைப்பிரதேசத்து | | |

एकसाले स्थाणुमतीं विनते गोमतीं नदीम् ॥ १६ ॥

कलिङ्गनगरे चापि प्राप्य सालवनं तथा । भरतः क्षिप्रमागच्छत्सुपरिश्रान्तवाहनः ॥ १७ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|------------------------|--|
| भरतः | பரதர் | सुपरिश्रान्त- वाहनः | மிகவும் களைப்படைந் திருந்த குதிரைகளை யுடைவராய் |
| एकसाले | ஏகஸாலமெனும் கிராமத்தில் | क्षिप्रं तथा | விரைவிலேயே |
| स्थाणुमतीं | ஸ்தாணுமதியெனும் நதியையும் | कलिङ्गनगरे | கலிங்கநகரில் |
| विनते | வினதமெனும் நகரில் | सालवनं अपि | ஆச்சாமரவனத்திற் கும் |
| गोमतीं नदीं च | கோமதியெனும் நதி | आगच्छत् | வந்துசேர்ந்தார். |
| प्राप्य | கடந்து, [யையும் | | |

वनं च समतीत्याशु शर्वर्यामरुणोदये । अयोध्यां मनुना राज्ञा निर्मितां संददर्श ह ॥ १८ ॥

| | | | |
|----------|---------------|-----------|-------------------|
| शर्वर्या | இரவை | राज्ञा | சக்கிரவர்த்தியால் |
| वनं च | வனத்திலேயே | निर्मितां | நிருமாணிக்கப்பட்ட |
| समतीत्य | கழித்து, | अयोध्यां | அயோத்திமாநகரை |
| अरुणोदये | அருணோதயத்தில் | आशु | விரைவில் |
| मनुना | மனு | संददर्श ह | கண்டார். |

तां पुरीं पुरुषव्याघ्रः सप्तरात्रोषितः पथि । अयोध्यामग्रतो दृष्ट्वा रथे सारथिमब्रवीत् ॥

புருஷவ்யாஹ்: புருஷோத்தமர்
பதி வழியில்
சப்தராத்திரோஷித: ஏழு இரவு கழித்த
தா அந்த [வராய்
அயோத்யா புரீ அயோத்திமாநகரை

அஃ: கண்முன்
தூது கண்டு,
ரதே ரதத்தில்
சாரதி ஸாரதியைப் பார்த்து
அவ்வித் மொழிந்தார்:

एषा नातिप्रतीता मे पुण्योद्याना यशस्विनी । अयोध्या दृश्यते दूरात्सारथे पाण्डुमृत्तिका ॥
यज्वभिर्गुणसंपन्नैर्ब्राह्मणैर्वेदपारगैः । भूयिष्ठमृद्धैराकीर्णा राजर्षिवरपालिता ॥ २१ ॥

சாரதே “சாரதியே!
ஏஷா இந்த
புண்யோத்யானா அழகிய உத்தியானவ
னங்களையுடையதும்
யசஸ்வினீ புகழ்படைத்ததும்
பாண்டுமூர்த்திகா வெண்மை மண்ணு
டையதும்
யஜ்வபி: யாகம்செய்யும்
குணசம்பன்னै: நற்குணம் பொருந்திய
வேதவித்துக்களாகிய
பிராஹ்மணै: பிராம்மணர்களாலும்

ஈருடைய: செல்வவார்களாலும்
பூயிஸ்த் அதிகமாய்
அகீர்ணா நிறைந்துள்ளதும்
ராஜர்ஷிவர்பாலிதா ராஜர்ஷியால் பரிபாலி
க்கப்பட்டதுமான
அயோத்யா அயோத்திமாநகர்
தூரத் வெகுதூரத்திலிருந்தே
மே எனக்கு
நாதிப்ரதீதா உற்சாகமற்றிருக்கிற
தாய்
தூஸ்யதே காணப்படுகிறது.

अयोध्यायां पुरा शब्दः श्रूयते तुमुलो महान् । समन्तान्नरनारीणां तमद्य न शृणोम्यहम् ॥

புரா “இதற்குமுன்
அயோத்யாயில்
நரநாரீணா ஆண்பெண்களுடைய
மஹான் பெரிய
துமுல: கலகல
சுப்தமானது

சமந்தா: எல்லா பக்கங்களிலும்
சூயதே கேட்கப்பட்டது;
அத இப்பொழுது
த அதை
அஹ் நான்
சுருணோமி ந கேட்கவில்லை.

उद्यानानि च सायाहे क्रीडित्वोपरतैनरैः । समन्ताद्विप्रधावद्भिः प्रकाशन्ते ममान्यथा ॥
तान्यद्यानुरुदन्तीव परित्यक्तानि कामिभिः ॥ २३ ॥

சாயாஹே “சாயங்காலத்தில்
உத்யானானி உத்யானவனங்களில்
கிரீடீத்வா விளையாடி
அபரதீ: முடிவுற்றவர்களும்
சமந்தாத் எல்லாப்பக்கங்களிலும்
விப்ரதாவதி: பரவியிருப்பவர்களு
டைய
காமிபி: காமிகளான (பார்யா
ஸக்தர்களான)

நரै: மனிதர்களால்
பரித்யக்தானி துறக்கப்பட்டிருக்
கின்றன.
அத இப்பொழுது
தானி அவைகள்
அநுரூதந்தி இவ் அழகின்றவைபோல்
மம எனக்கு
அந்யதா வேறுவிதமாய்
புரகாஸந்தே தோன்றுகின்றன.

प्रवाति न
वीं सखिंलै ?

भेरीमृदङ्गवीणानां कोणसंघटितः पुनः । किमत्र शब्दो विरतः सदाऽदीनगतिः पुरा ॥

| | | | |
|--|---|--|--|
| भेरीमृदङ्ग- वीणानां कोणसंघटितः पुरा सदा | “பேரீ, மிருதங்கம், வீ ணை இவைகளுடைய ஒரு பாகத்திலிருந்து கிளம்புகிறதும், முன் எப்பொழுதும் | அதினகதி: शब्दः अद्य पुनः किं विरतः | கம்பீரமாய் விளங்கிய தொணி [துமான இப்பொழுதோ ஏன் [வெனில் ஒழிவடைந்தது? |
|--|---|--|--|

अनिष्टानि च पापानि पश्यामि विविधानि च । निमित्तान्यमनोज्ञानि तेन सीदति मे मनः॥

| | | | |
|-----------------------------------|---|---|---|
| अनिष्टानि पापानि च विविधानि | “விருப்பமற்றவைக ளும், கெட்டவைகளும், பலவகையானவைக ளும், | अमनोज्ञानि च निमित्तानि पश्यामि तेन मे मनः सीदति | துக்ககரமானவைக சகுனங்களை [ஞமான காண்கிறேன். அதனால் எனது மனது கவலைப்படுகிறது. |
|-----------------------------------|---|---|---|

सर्वथा कुशलं सूत दुर्लभं मम बन्धुषु । तथा ह्यसति संमोहे हृदयं सीदतीव मे ॥ ३१ ॥

| | | | |
|--|--|---|---|
| सूत मम बन्धुषु सर्वथा कुशलं दुर्लभं | “சாரதியே! எனது பந்துக்கள் விஷயத் தில் எல்லாப்படியாலும் கேதமென்பது அரிது. | तथा हि असति सम्मोहे मे हृदयं इव सीदति | ஏனெனில் நிஷ்காரணமான சித்தப்பிரமையில் எனது மனது முற்றிலும் உழலுகின்றது.” |
|--|--|---|---|

विषण्णः श्रान्तहृदयस्त्रस्तः संलुलितेन्द्रियः । भरतः प्रविवेशाशु पुरीमिक्ष्वाकुपालिताम् ॥

| | | | |
|--|---|--|--|
| भरतः विषण्णः श्रान्तहृदयः त्रस्तः संलुलितेन्द्रियः | பரதர் உற்சாகமிழந்தவராய் நொந்தமனத்தினராய் உள்ளம்நடுங்கியவராய் கலக்கமுற்ற ஐம்புலன் களையுடையவராய் | इक्ष्वाकुपालितां पुरीं आशु प्रविवेश | இக்ஷ்வாகுக்களால் காக்கப்பட்ட நகரிலுள் விரைந்து புகுந்தனர். |
|--|---|--|--|

द्वारेण वैजयन्तेन प्राविशच्छ्रान्तवाहनः । द्वास्थैरुत्थाय विजयमुक्तस्तैः सहितो ययौ ॥

| | | | |
|--|---|---|--|
| वैजयन्तेन द्वारेण श्रान्तवाहनः प्राविशत् द्वास्थैः | வைஜயந்தமெனும் வாயிலால் களைத்த வாகனங்க ளையுடைய அவர் நுழைந்தார். வாயிற்காப்பவர்களால் | उत्थाय विजयं उक्तः तैः सहितः ययौ | எழுந்து 'ஜயவீஜயீபவ' என ஆசூறப்பட்டவராய் அவர்களோடு கூடினவராய் சென்றார். |
|--|---|---|--|

स त्वनेकाग्रहृदयो द्वास्थ्यं प्रत्यर्च्य तं जनम् । सूतमश्वपतेः क्लान्तमब्रवीत्तत्र राघवः ॥३४॥

तव अப்பொழுது
 अनेकाग्रहृदयः நிலைகொள்ளா மன
 सः அந்த [முடைய
 राघवः பரதர்
 द्वास्थ्यं வாயில்காக்கும்
 तं அந்த
 जनं ஜனக்கூட்டத்தை

प्रत्यर्च्य ஆமோதித்து
 तु உடனே
 अश्वपतेः அசுவபதியினது
 क्लान्तம் களைத்திருக்கும்
 सूतं சாரதியைப்பார்த்து
 अब्रवीत् பின்வருமாறு மொழி
 नृपतारः

किमहं त्वरयाऽनीतः कारणानि विनाऽनघ । अशुभाशङ्कि हृदयं शीलं च पततीव मे ॥

अनघ “தோஷமற்றவனே !
 कारणानि विना காரணங்களின்றி
 अहं நான்
 किं ஏன்
 त्वरया விரைவில்
 आनीतः அழைக்கப்பட்டேன் ?

हृदयं மனம்
 अशुभाशङ्कि கெட்டதையே எண்
 मे எனது [ஊகிறது.
 शीलं च ஸ்வபாவகுணமும்
 पतति इव அழிகிறதுபோலிருக்
 கிறது.

श्रुता नो यादृशाः पूर्वं नृपतीनां विनाशने । आकारांस्तानहं सर्वानिह पश्यामि सारथे ॥

सारथे “சாரதியே !
 पूर्वं இதற்குமுன்
 नृपतीनां அரசர்களுடைய
 विनाशने அழிவில்
 नः நமக்கு
 यादृशाः எவைகள்
 श्रुताः கேட்கப்பட்டிருக்கின்
 றனவோ

तान् அந்த
 आकारान् அடையாளங்கள்
 सर्वान् எல்லாவற்றையும்
 अहं நான்
 इह இப்பொழுது
 पश्यामि பிரத்தியக்ஷத்தில்
 காண்கிறேன்.

संमार्जनविहीनानि परुषाण्युपलक्षये । असंयतकवाटानि श्रीविहीनानि सर्वशः ॥ ३७ ॥

संमार्जनविहीनानि “பரிசுத்தம் செய்யப்படாதவைகளையும்
 परुषाणि தீயவைகளையும்
 असंयतकवाटानि மூடப்படாத கதவு
 களையும்

श्रीविहीनानि சோபையற்றவைகளை
 सर्वशः எல்லாபக்கங்களிலும்
 उपलक्षये காண்கிறேன்.

बलिकर्मविहीनानि धूपसंमोदनेन च । अनाशितकुटुम्बानि प्रभाहीनजनानि च ॥

अलक्ष्मीकानि पश्यामि कुटुम्बिभवनान्यहम् ॥ ३८ ॥

अहं “நான்
 कुटुम्बिभवनानि குடும்பிகள் வஸிக்
 குடும்பிகளை

बलिकर्मविहीनानि பூஜையற்றவைகளாயும்
 धूपसंमोदनेन च தூபவாசனையற்றவைகளாயும்

अनाशितकुटुम्बानि ॥ உண்ணாத குடும்பிகளை
யுடையவைகளாயும்
प्रभाहीनजनानि ॥ ஒளியிழந்த ஜனங்களை
யுடையவைகளாயும்

अलक्ष्मीकानि च ॥ பாழடைந்தவைகளாக
யும்
पश्यामि ॥ காண்கிறேன்.

अपेतमाल्यशोभानि ह्यसंमृष्टाजिराणि च । देवागाराणि शून्यानि न च भान्ति यथापुरम् ॥

देवागाराणि ॥ “தெய்வாலயங்கள்
अपेतमाल्यशोभानि ॥ மாலைகளின் சோபை
களையிழந்தனவாயும்
असंमृष्टाजिराणि च ॥ விளக்கப்படாத பிரா
காரங்களையுடைய
வைகளாயும்

शून्यानि च ॥ பாழடைந்தவைகளாக
யும்
यथापुरं ॥ முன்போல்
भान्ति न हि ॥ விளங்கவில்லையே.

देवतार्चाः प्रविद्धाश्च यज्ञगोष्ठ्यस्तथाविधाः । माल्यापणेषु राजन्ते नाद्य पण्यानि वै तथा ॥

देवतार्चाः च ॥ “தெய்வபூஜைகளும்
प्रविद्धाः ॥ அழிந்தன.
यज्ञ गोष्ठ्यः ॥ யாககோஷ்டிகளும்
तथाविधाः ॥ அவ்வண்ணமேயிருக்
கின்றன.

माल्यापणेषु ॥ புஷ்பக்கடைகளில்
पण्यानि वै ॥ சரக்குகளெல்லாம்
अद्य ॥ இப்பொழுது
तथा ॥ முன்போல்
राजन्ते न ॥ விளங்கவில்லை.

दृश्यन्ते वणिजोऽप्यत्र न यथापूर्वमद्य वै । ध्यानसंविग्रहदया नष्टव्यापारयन्त्रिताः ॥ ४१ ॥

अत्र ॥ “இங்கு
अद्य ॥ இப்பொழுது
वणिजः अपि ॥ வியாபாரிகளும்
ध्यानसंविग्रह- ॥ கவலையால் நொந்த
हृदयाः ॥ மனத்தினர்களாயும்

नष्टव्यापार- ॥ வேலையில்லாது கஷ்ட
यन्त्रिताः ॥ முற்றவர்களாயும்
यथापूर्वं वै ॥ முன்போல்
दृश्यन्ते न ॥ விளங்கவில்லை.

देवायतनचैत्येषु दीनाः पक्षिमृगाः स्थिताः ॥ ४२ ॥

देवायतनचैत्येषु ॥ “கோவில், யாகசாலை
களிலும்

पक्षिमृगाः ॥ பக்சிகளும் மிருகங்
களும்
दीनाः स्थिताः ॥ உறங்கிக்கிடக்
கின்றன.

मलिनं चाश्रुपूर्णाक्षं दीनं ध्यानपरं कृशम् । सस्त्रीपुंसं च पश्यामि जनमुत्कण्ठितं पुरे ॥

पुरे ॥ “நகரில்
सस्त्रीपुंसं ॥ ஆண்பெண்ணுள்
ளிட்ட
जनं च ॥ ஜனஸமுஹமெல்லா
வற்றையும்
मलिनं च ॥ மாசுபடிந்ததாயும்
अश्रुपूर्णाक्षं ॥ கண்ணீர் நிறைந்த க
ண்களையுடையதாயும்

दीनं ॥ பாதிபிக்கும் நிலமை
யிலிருக்கிறதாயும்
ध्यानपरं ॥ கவலையிலீடுட்டுக்கி
டக்கிறதாயும்
कृशं ॥ துலண்டுகிடக்கிற
தாயும்
उत्कण्ठितं ॥ வருந்திக்கொண்டிருக்
கிறதாயும்
पश्यामि ॥ நான்காண்கின்றேன்.”

इत्येवमुक्त्वा भरतः सूतं तं दीनमानसः । तान्यरिष्टान्ययोध्यायां प्रेक्ष्य राजगृहं ययौ ॥

| | | | |
|------------|------------------|---------|--------------------------------|
| भरतः | பரதர் | तं | அந்த |
| अयोध्यायां | அயோத்தியில் | सूतं | சாரதியிடம் |
| तानि | அந்த | इति एवं | மேற்கண்டவாறு |
| अरिष्टानि | அபசகுனங்களை | उत्तवा | சொல்லிவிட்டு, |
| प्रेक्ष्य | கவனித்து, | राजगृहं | சக்கிரவர்த்தியாரின் |
| दीनमानसः | நொந்தமனத்தினராய் | ययौ | மாளிகைக்கு வந்துசேர்ந்தார். |

तां शून्यशृङ्गाटकवेश्मरथ्यां रजोऽरुणद्वारकपाटयन्त्राम् ।

दृष्ट्वा पुरीमिन्द्रपुरप्रकाशां दुःखेन संपूर्णतरो बभूव

॥ ४५ ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------|-----------------|----------------------|
| इन्द्रपुरप्रकाशां | இந்திரனது நகர்போல் | रजोऽरुणद्वार- | புழுதிபடிந்து சிவந்த |
| तां | அந்த [விளங்கிய | कपाटयन्त्रां | வாயிற்கதவுகளையு |
| पुरीं | நகரை | | டையதாயும் |
| शून्यशृङ्गाटक- | சூன்யமாயிருக்கின்ற | दृष्ट्वा | கவனித்து, |
| वेश्मरथ्यां | சதுக்கங்களையும் வீ | दुःखेन | துயரத்தால் |
| | டுகளையும் வீதிகளை | संपूर्णतरो बभूव | மிகவும் தபிக்கின்றவ |
| | யுமுடையதாயும் | | ராயினர். |

बहूनि पश्यन्मनसोऽप्रियाणि यान्यन्यदा नास्य पुरे बभूवुः ।

अवाक्शिरा दीनमना नहृष्टः पितुर्महात्मा प्रविवेश वेश्म

॥ ४६ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|------------|------------------|
| महात्मा | மகாத்மாவாகுமவர் | बहूनि | அனேகங்களை |
| अन्यदा | இதற்குமுன் ஒரு சம | पश्यन् | கவனித்தவராய் |
| | யத்திலுங்கூட | अवाक्शिराः | தலைகுனிந்தவராய் |
| अस्य | இவரது | दीनमनाः | நொந்தமனத்தினராய் |
| पुरे | நகரில் | नहृष्टः | உற்சாகங்குன்றியவ |
| मनसः | மனதிற்கு | | ராய் |
| अप्रियाणि | அனிஷ்டமாயிருக்கின் | पितुः | தந்தையினது |
| | றவைகள் | वेश्म | மாளிகையில் |
| यानि बभूवुः न | எவைகள் உண்டானதி | प्रविवेश | புகுந்தனர். |
| | ல்லையோ அவைகளின் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे एकसप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5169.

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2814

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे सप्तमेऽहि वर्तमानकथाप्रसङ्गः ॥

இவ்விதம் ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமர் ஸந்ததியில் அச்வமேத யாகசாலையில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில் ஏழாவது தினத்தில் கானம் பண்ணப்பட்ட கதை முடிவுபெற்றது.



[புரா குசலவாஶ்யா ஶ்ரீராமசந்நிதாவஸ்வமேத்யவாடே ட்வாவி்ஸதி டிநேஸு ஶீதே ஶ்ரீமட்ராமாயணே
அஸுமே஽ஹி அயோத்யாகாண்டே ட்விஸஸ்திதமஸர்ஶமாரஶ்ய ஶஸநவதிதமஸர்ஶபர்யந்நத்
(5170—5983 ஶ்லோகா:) ஶீதம்। தஸ்மிந் டிநே ஶீதா: ஶ்லோகா: 814]

ஆத்யிஸில் குசன் லவன் இவர்களால் ஶ்ரீராமஸந்நித்யிஸில் அஸ்வமேத்யாகசாலையிஸில்
முப்பத்திரண்டு தினங்களிஸில் கானம் செய்யப்பட்ட ஶ்ரீமத் ராமாயணத்தில்
எட்டாவது தினத்தில் அயோத்தியாகாண்டத்தில் 72-ாவது ஸர்க்கம் முதல்
97-ாவது ஸர்க்கம் வரை (5170—5983) கானம் செய்யப்பட்டது.
அன்று கானம் செய்யப்பட்ட சுலோகசங்கியை 814]

ட்விஸஸ்திதம: ஶர்ஶ:—எழுபத்திரண்டாம் ஸர்க்கம் || 92 ||

ஶரதவிலாப:—பரத விலாபம்.

அபஸ்யஸ்து ததஸ்தத்ர பிதர் பிதராலயே | ஜகாம ஶரதோ ட்ரஶ் மாதர் மாதராலயே || 1 ||

| | | | |
|-----------|-------------|-------|------------|
| ஶரத: | பரதர் | து | உடனே |
| தத: | அப்பொழுது | மாத: | தாயினது |
| தத்ர | அங்கு | அாலயே | மாளிகையில் |
| பித: | தந்தையினது | மாதர் | தாயை |
| அாலயே | மாளிகையில் | ட்ரஶ் | தரிசிக்க |
| பிதர் | தந்தையாரை | ஜகாம | சென்றார். |
| அபஸ்யஸ்து | காணாதவராய், | | |

அநுபாஸ்து து த் ட்ரஶ்டா கைகேயி ப்ரோஸித் சுதம் | உத்பாத தடா ஹ்ஸா த்யக்தவா ஶௌவ்ரஶாஸநம் ||

| | | | |
|-----------|--------------------|----------|--------------------|
| கைகேயி | கைகேயிதேவியார், | து | அதனால் |
| ப்ரோஸித் | வெளியூரிலிருந்த | ஹ்ஸா | உள்ளம் பூரித்தவ |
| த் | அந்த | ஸௌவ்ர | தங்க [ளாகி |
| சுத் | புதல்வனை | அஸந் | ஆஸனத்தை |
| தடா | அப்பொழுது | த்யக்தவா | விட்டு |
| அநுபாஸ்து | வந்துசேர்ந்துவிட்ட | உத்பாத | எதிர்நோக்கிச்சென்ற |
| ஹ்ஸா | கண்டு, [வனாக | | னள். |

ஸ ப்ரவிஸ்யைவ ட்ரமாத்மா ஶ்வகூஹ் ஶ்ரீவிவர்திதம் | ஶரத: ப்ரேஸ்ய ஜகாஹ ஜநந்யாஸ்ரணௌ ஶுபௌ || 3 ||

| | | | |
|----------------|-----------------|---------|----------------------|
| ட்ரமாத்மா | தர்மாத்மாவாகும் | ப்ரேஸ்ய | கவனித்து, |
| ஸ: | அந்த | ஜநந்யா: | மாதாவினது |
| ஶரத: | பரதர், | ஸுபௌ | பூஜ்யமாகிய |
| ஷ்வகூஹ் | தன் வீட்டினுள் | ஸ்ரணௌ | திருவடிகளில் |
| ப்ரவிஸ்ய எவ | அழைந்ததும் | ஜகாஹ | வீழ்ந்து சேவித்தார். |
| ஷ்ரீவிவர்திதம் | ஒளியற்றதாய் | | |

सा तं मूर्धन्युपाघ्राय परिष्वज्य यशस्विनम् । अङ्गे भरतमारोप्य प्रष्टुं समुपचक्रमे ॥ ४ ॥

| | | | |
|-----------|---------------|------------------|----------------|
| सा | அவள் | அங்கே | மடியில் |
| तं | அந்த | आरोप्य | உட்காரவைத்து, |
| यशस्विनं | யசஸ்வியாகிய | मूर्धनि उपाघ्राय | உச்சிமுகர்ந்து |
| भरतं | பரதனை | प्रष्टुं | விசாரிக்க |
| परिष्वज्य | கட்டியணைத்து, | समुपचक्रमे | ஆரம்பித்தனள். |

अद्य ते कतिचिद्रात्र्यश्च्युतस्यार्यकवेश्मनः । अपि नाध्वश्रमः शीघ्रं रथेनापततस्तव ॥ ५ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------------|-----------|--------------|
| आर्यकवेश्मनः | “மாதாமகரின் மாளி கையினின்றும் | रथेन | தேரிலேறி |
| च्युतस्य | கிளம்பிய | शीघ्रं | விரைவாய் |
| ते | உனக்கு | आपततः | திரும்பிவந்த |
| अद्य | இப்பொழுது | तव | உனக்கு |
| रात्र्यः | நாட்கள் | अध्वश्रमः | வழிச்சிரமம் |
| कतिचित् | எவ்வளவாயின? | अपि न | இல்லையா? |

आर्यकस्ते सुकुशली युधाजिन्मातुलस्तव । प्रवासाच्च सुखं पुत्र सर्वं मे वक्तुमर्हसि ॥ ६ ॥

| | | | |
|----------|----------------------|-----------|-------------------|
| पुत्र | “குழந்தாய்! | च | அங்ஙனம்தானே? |
| ते | உனது | प्रवासात् | வெளிப்போனது |
| आर्यकः | பாட்டனார் | सुखं | சுகம்தானே? [முதல் |
| सुकुशली | சுகமாயிருக்கின்றாரா? | मे | எனக்கு |
| तव | உனது | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| मातुलः | மாதுலராகிய | वक्तुं | சொல்ல |
| युधाजित् | யுதாஜித் | अर्हसि | வேண்டும்.” |

एवं पृष्टस्तु कैकेय्या प्रियं पार्थिवनन्दनः । आचष्ट भरतः सर्वं मात्रे राजीवलोचनः ॥ ७ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|------------|--------------------------------|
| एवं | இவ்விதமாக | राजीवलोचनः | செந்தாமரைக்கண் |
| कैकेय्या | கைகேயீதேவியால் | भरतः | பரதர் [ணருமாகிய |
| प्रियं | ப்ரியமாக | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| पृष्टः | வினாப்பட்டவரும், | मात्रे | தாயாருக்கு |
| पार्थिवनन्दनः | சக்கிரவர்த்தி குமார ரும், | तु | இப்பொழுது |
| | | आचष्ट | பின்வருமாறு தெரிவி த்தனர் : |

अद्य मे सप्तमी रात्रिश्च्युतस्यार्यकवेश्मनः । अम्बायाः कुशली तातो युधाजिन्मातुलश्च मे ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------------|----------|----------------------|
| आर्यकवेश्मनः | “மாதாமகரின் மாளி கையினின்றும் | अम्बायाः | அம்மாளின் |
| च्युतस्य | கிளம்பிய | तातः | தந்தை |
| मे | எனக்கு | कुशली | கேசுமமாயிருக்கிறார். |
| अद्य | இப்பொழுது | मे | எனது |
| रात्रिः | நாள் | मातुलः | அம்மான் |
| सप्तमी | ஏழாவதாகிறது. | युधाजित् | யுதாஜித் |
| | | च | அங்ஙனமேயிருக்கிறார். |

यन्मे धनं च रत्नं च ददौ राजा परंतपः । परिश्रान्तं पथ्यभवत्ततोऽहं पूर्वमागतः ॥ ९ ॥

परन्तपः “பகைவரை தபிக்கச்
 राजा மன்னர் [செய்யும்
 मे எனக்கு
 रत्नं च பொருளையும்
 धनं च பரிசையும்
 ददौ கொடுத்தார்.
 यत् அந்த இது

पथि வழியில்
 परिश्रान्तं கஷ்டமாக
 अभवत् இருந்தது.
 ततः ஆனதுபற்றி
 अहं நான்
 पूर्व முன்னரே
 आगतः வந்துவிட்டேன்.

राजवाक्यहरैर्दूतैस्त्वर्यमाणोऽहमागतः । यदहं प्रष्टुमिच्छामि तदम्बा वक्तुमर्हति ॥ १० ॥

राजवाक्यहरैः { “சக்கிரவர்த்தியாரின்
 कट्टल्लेख्येकं கொ
 णர்ந்த
 दूतैः தூதர்களால்
 त्वर्यमाणः அவசரப்படுத்தப்
 பட்ட

आगतः வந்தேன்.
 अहं நான்
 यत् எனக்கு
 प्रष्टुं इच्छामि கேட்கப்போகிறேனோ,
 तत् அதை
 अम्बा அம்மாள்
 वक्तुं अर्हति சொல்லவேண்டும்.

अहं नान् शून्योऽयं शयनीयस्ते पर्यङ्को हेमभूषितः । न चायमिक्ष्वाकुजनः प्रहृष्टः प्रतिभाति मे ॥

अयं “இந்த
 हेमभूषितः பொன்னுலலங்கரிக்க
 शयनीयः படுக்கும் [ப்பட்ட
 ते உனது
 पर्यङ्कः கட்டில்
 शून्यः குன்யமாயிருக்கிறது.

अयं இப்பொழுது
 इक्ष्वाकुजनः च இக்ஷ்வாகுஜனஸமூக
 மும்
 प्रहृष्टः சந்தோஷமுற்றதாக
 मे எனக்கு
 प्रतिभाति न தோன்றவில்லை.

राजा भवति भूयिष्ठमिहाम्बाया निवेशने । तमहं नाद्य पश्यामि द्रष्टुमिच्छन्निहागतः ॥

राजा “சக்கிரவர்த்தியார்
 भूयिष्ठं பெரும்பாலும்
 इह இந்நேரத்தில்
 अम्बायाः அம்மாளுடைய
 निवेशने மாளிகையில்
 भवति இருக்கிறதாயிற்றே.

तं அவரை
 द्रष्टुं इच्छन् தரிசிக்கவேண்டி
 अहं நான்
 इह आगतः இங்கு வந்தேன்.
 अद्य இப்பொழுது
 पश्यामि न நான் காணவில்லை.

पितुर्गृहीण्ये पादौ च तं ममाख्याहि पृच्छतः । आहोस्विदम्ब ज्येष्ठायाः कौसल्याया निवेशने॥

अम्ब “அம்மா!
 पितुः திருத்தந்தையினது
 पादौ च திருவடிகளிலும்
 गृहीण्ये நான் தண்டம் சமர்ப்
 பிக்கவேண்டும்.
 ज्येष्ठायाः மகாலத்தமிழாக்கிய

कौसल्यायाः கோசலாதேவியாரு
 निवेशने மாளிகையில் [டைய
 आहोस्वि त् இருக்கிறப்போலும்!
 पृच्छतः கேட்கும்
 मम எனக்கு
 तं அவரிருக்குமிடத்தை
 आख्याहि சொல்லீராக.”

| | |
|------------|-------------------|
| प्रियवत् | இஷ்டமான துபோல் |
| प्रजानन्ती | எண்ணியவளாய் |
| अजानन्तं | விஷயம் தெரியாத |
| तं | அவருக்கு |
| प्रत्युवाच | பின்வருமாறு பதில் |
| | உரைத்தாள் : |

| | |
|-------------|---------------------|
| தே பிதா | உனது தந்தையார், |
| சர்வभूतानां | எல்லா உயிர்ப்பிராணி |
| | களுக்கும் |
| गतिः | முடிவு |
| या | எதுவோ, |
| तां गतिं | அந்த முடிவை |
| गतः | அடைந்தாவிட்டனார்.” |

| | |
|-----------|---------------------|
| சஹசா | திடீரென |
| भूमौ | தரையில், |
| पितृशोक- | பித்ருசோகத்தால் |
| बलादितः } | மிகப் பீடிக்கப்பட்ட |
| | வராகி, |
| पपात | வீழ்ந்துவிட்டனர். |

| | |
|---------|---------------------|
| தினா | மனத்தளர்ச்சியைக் |
| | காட்டுகிறதும் |
| கூபா | துக்கரமாயுமிருக்கிற |
| வா | சொல்லை, |
| உதிரயந் | சொல்லிக்கொண்டு, |
| நிபபாத | விழுந்தவாறே இருந் |
| | தனர். |

| | |
|----------------|----------------------------------|
| சோகேன | சோகத்தால் |
| சங்கீத: | மெய்மறந்தவராய் |
| அந்நாகுலிததேன: | கலக்கத்தால் அறிவை பிழந்தவராய் |
| விலாப | புலம்பினார்: |

एतत्सुचिरं भाति पितुर्वे शयनं पुरा । शशिनेवामलं रात्रौ गगनं तोयदात्यये ॥ १९ ॥

| | | | |
|------------|---------------|-----------|---------------------|
| मे | “ எனது | गगनं | ஆகாயம் |
| पितुः | தந்தையினது | शशिना | சந்திரனால் |
| एतत् | இந்த | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| शयनं | படுக்கையானது, | | வண்ணமே |
| तोयदात्यये | சாக்காலத்தில் | सुचिरं | மிக்க மனோக்ருமாக |
| रात्रौ | இரவில் | पुरा भाति | விளங்கிக்கொண்டிருந் |
| अमलं | நிர்மலமான | | தது. |

तदिदं न विभात्यद्य विहीनं तेन धीमता । व्योमेव शशिना हीनमप्लुष्य इव सागरः ॥

| | | | |
|---------|----------------|-----------|---------------------|
| तत् इदं | “ அந்த இது | हीनं | விடப்பட்ட |
| अद्य | இப்பொழுது | व्योम | ஆகாயம் |
| तेन | அந்த | इव | போலவும், |
| धीमता | தீமானாகுமவரால் | अप्लुष्यः | நீரற்ற |
| विहीनं | விடப்பட்டதாய், | सागरः इव | சமுத்திரம் போலவும் |
| शशिना | சந்திரனால் | विभाति न | சோபியாதிருக்கிறது.” |

बाष्पमुत्सृज्य कण्ठेन स्वार्तः परमपीडितः । प्रच्छाद्य वदनं श्रीमद्वस्त्रेण जयतां वरः ॥ २१ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------|------------|-----------------|
| जयतां | ஜயசாலிகளில் | वदनं | முகத்தை |
| वरः | உத்தமராகுமவர் | प्रच्छाद्य | மூடிக்கொண்டு |
| परमपीडितः | மிக மனவேதனைப்படு கின்றவராய் | बाष्पं | கண்ணீரை |
| वस्त्रेण | வஸ்திரத்தால் | उत्सृज्य | வடித்துக்கொண்டு |
| श्रीमत् | அழகிய | कण्ठेन | குரலிட்டு |
| | | स्वार्तः | கதறியழுதார். |

तमार्तं देवसङ्काशं समीक्ष्य पतितं भुवि । निकृत्तमिव सालस्य स्कन्धं परशुना वने ॥ २२ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|------------|--------------------------|
| देवसङ्काशं | தேவர்களுக்கொப் பான | निकृत्तं | வெட்டி வீழ்த்தப் பட்ட |
| तं | அவரை | सालस्य | ஆச்சாமரத்தினது |
| आर्तं | துயருற்றவராய் | स्कन्धं इव | கிளைமையப்போல் |
| वने | காட்டில் | भुवि | தரையில் |
| परशुना | கோடாரியால் | पतितं | வீழ்ந்துகிடப்பவராய் |
| | | समीक्ष्य | கண்டனள். |

मत्तमातङ्गसङ्काशं चन्द्रार्कसदृशं भुवः । उत्थापयित्वा शोकार्तं वचनं चेदमब्रवीत् ॥ २३ ॥

| | | | |
|-------------------|---|--------------|--------------------|
| च | உடனே | भुवः | தரையிலிருந்து |
| मत्तमातङ्गसङ्काशं | மதித்த யானைக்கொப் பானவரும், | उत्थापयित्वा | எழுந்திருக்கச் |
| चन्द्रार्कसदृशं | சந்திரசூரியர்களுக் குச் சமானரும், | इदं | பின்வரும் [செய்து, |
| शोकार्तं | { சோகத்தால் பிடிக்கப் பட்டவருமாகப் அவரை | वचनं | மொழியை |
| | | अब्रवीत् | சொல்லலானாள் : |

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ किं शेषे राजन्नत्र महायशः । त्वद्विधा न हि शोचन्ति सन्तः सदसि संमताः ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------|--------------|-------------------|
| महायशः | “புகழ்பெற்ற | सदसि | ஸதஸ்ஸில் |
| राजन् | அரசே! | सम्मताः | கொண்டாடப்பட்ட |
| उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ | எழுந்திரு! | त्वद्विधा: | உன்போன்ற |
| किं | ஏன் [எழுந்திரு! | सन्तः | ஸத்புருஷர்கள் |
| शेषे | படுத்துக்கிடக்கின் | अत्र | இதில் |
| | றனே? | शोचन्ति न हि | வருந்துவதில்லையே! |

दानयज्ञाधिकारा हि शीलश्रुतितपोनुगा । बुद्धिस्ते बुद्धिसंपन्न प्रभेवार्कस्य मन्दिरे ॥२५॥

| | | | |
|--------------|------------------|----------------|---------------------------------------|
| बुद्धिसंपन्न | “புத்திறைந்தவனே! | ते | உனது |
| अर्कस्य | சூரியபகவானது | बुद्धिः | உத்தேசம் |
| मन्दिरे | மண்டலத்தில் | दानयज्ञाधिकारा | தானங்களிலும் யாகங் களிலும் உரியது. |
| प्रभा | காந்தி | शीलश्रुति- } | சீலத்திலும், ச்ருதியி |
| इव हि | எவ்வண்ணமோ | तपोनुगा } | லும், தவத்திலும் த குதியுள்ளது.” |
| | அவ்வண்ணமேயே | | |

स रुदित्वा चिरं कालं भूमौ विपरिवृत्य च । जननीं प्रत्युवाचेदं शोकैर्बहुभिरावृतः ॥

| | | | |
|-----------|------------|------------|----------------|
| बहुभिः | மிக்க | भूमौ | தரையில் |
| शोकैः | துயரத்தால் | विपरिवृत्य | புரண்டு |
| आवृतः | துன்புற்ற | रुदित्वा च | அழுது |
| सः | அவர் | जननीं | தாயைப்பார்த்து |
| चिरं कालं | வெகுநேரம் | इदं | பின்வருமாறு |
| | | प्रत्युवाच | மொழிந்தார்: |

अभिषेक्ष्यति रामं नु राजा यज्ञं नु यक्ष्यते । इत्यहं कृतसङ्कल्पो हृष्टो यात्रामयासिषम् ॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------------|-----------------|---------------------------|
| अहं | “நான் | यक्ष्यते नु इति | செய்யப்போகிறு ரென்றும் |
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | कृतसङ्कल्पः | எண்ணியவனாயும் |
| रामं | ஸ்ரீராமருக்கு | हृष्टः | மகிழ்வுற்றவனாயும், |
| अभिषेक्ष्यति नु | அபிஷேகம் செய்யப் போகிறாரென்றும் | यात्रां | வரும் வழியை |
| यज्ञं | மகோத்ஸவத்தை | अयासिषम् | கடந்தேன். |

तदिदं ह्यन्यथा भूतं व्यवदीर्णं मनो मम । पितरं यो न पश्यामि नित्यं प्रियहिते रतम् ॥

| | | | |
|---------|------------------------|------------|------------------|
| इदं | “இப்பொழுது | व्यवदीर्णं | முறிந்துபோய்விட் |
| भूतं हि | நடைபெற்றிருக்கிற தோ | यः | அந்த நான் [டது. |
| अःयथा | மாறாபெற்றிருக்கிறது. | नित्यं | எப்பொழுதும் |
| तत् | ஆனபடியால் | प्रियहिते | நன்மைசெய்வதில் |
| मम | எனது | रतं | ஊக்கமுடைய |
| मनः | மனம் | पितरं | தந்தையை |
| | | पश्यामि न | பார்க்கவில்லை. |

अम्ब केनात्यगाद्राजा व्याधिना मय्यनागते । धन्या रामादयः सर्वे यैः पिता संस्कृतः स्वयम्॥

| | | | |
|-----------|--------------------|----------|--------------------------------|
| अम्ब | “ அம்மா ! | யை: | எவர்களால் |
| मयि | நான் | स्वयं | தனிமையில் |
| अनागते | வந்துசேருமுன், | संस्कृतः | ஸம்ஸ்காரம் செய்யப் பட்டனரோ, |
| राजा | சக்கிரவர் த்தியார் | रामादयः | ராமர்முதலிய |
| केन | எந்த | सर्वे | அவர்களெல்லோரும் |
| व्याधिना | வியா தியால் | धन्या: | கொடுத்துவைத்தவர் கள். |
| अत्युगात् | காலம் சென்றார் ? | | |
| पिता | தந்தையார் | | |

न नूनं मां महाराजः प्राप्तं जानाति कीर्तिमान् । उपजिघ्रेत्तु मां मूर्ध्नि तातः सन्नम्य सत्वरम्॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|------------|
| कीर्तिमान् | “புகழ்பெற்ற | तु | இல்லையேல் |
| महाराजः | சக்கிரவர் த்தியார் | तातः | தந்தையார் |
| मां | என்னை | मां | என்னை |
| प्राप्तं | திரும்பிவந்தவனாய் | सन्नम्य | குனிந்து, |
| नूनं | இப்பொழுது | मूर्ध्नि | உச்சியில் |
| जानाति न | அறியார். | सत्वरं | விரைவில் |
| | | उपजिघ्रेत् | முகர்வார். |

क्व स पाणिः सुखस्पर्शस्तातस्याक्लिष्टकर्मणः । येन मां रजसा ध्वस्तमभीक्ष्णं परिमार्जति॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------------|------------------------------|
| रजसा | “புழுதியால் | अक्लिष्टकर्मणः | எதையுமெளிதில் முடிக்கவல்ல |
| ध्वस्तं | மூடப்பட்ட | तातस्य | தந்தையினது |
| मां | என்னை | सुखस्पर्शः | இன்பமான ஸ்பர்சத் தையுடைய |
| अभीक्ष्णं | உடனே | पाणिः | கை |
| येन | எதனால் | क्व | எங்கே! |
| परिमार्जति | துடைத்துவிடுவரோ | | |
| सः | அந்த | | |

यो मे भ्राता पिता बन्धुर्यस्य दासोऽस्मि धीमतः ।

तस्य मां शीघ्रमाख्याहि रामस्याक्लिष्टकर्मणः ॥ ३२ ॥

| | | | |
|--------|-------------|----------------|---------------------------------|
| मे | “ எனக்கு | दासः | கொண்டனோ, |
| भ्राता | தமையனாரும் | तस्य | அந்த |
| पिता | தந்தையாரும் | अक्लिष्टकर्मणः | எதையுமலக்த்யமாய் முடிக்கவல்ல |
| बन्धुः | தாயும் | रामस्य | ஸ்ரீராமருக்கு |
| यः | எவரோ | मां | என்னை |
| यस्य | எந்த | शीघ्रं | விரைவில் |
| धीमतः | அறிவாளிக்கு | आख्याहि | தெரியப்படுத்து. |
| अस्मि | நான் | | |

पिता हि भवति ज्येष्ठो धर्ममार्यस्य जानतः । तस्य पादौ ग्रहीष्यामि स हीदानीं गतिर्मम ॥

| | | | |
|----------|----------------|-------------|--------------------|
| धर्म | “தருமத்தை | पादौ हि | திருவடிகளிலும் |
| जानतः | அறிகிறவனுக்கு | ग्रहीष्यामि | விழுந்துசேவிக்கின் |
| ज्येष्ठः | ஜ்யேஷ்டப்பிரதா | | மேன். |
| पिता | தந்தையாக | मम | எனக்கு |
| भवति | ஆகின்றார். | गतिः | கதி |
| तस्य | அந்த | इदानीं | இப்பொழுது |
| आर्यस्य | பூஜ்யருடைய | सः हि | அவரேயன்றோ! |

धर्मविद्धर्मनित्यश्च महाभागो दृढव्रतः । आर्ये किमब्रवीद्राजा पिता मे सत्यविक्रमः ॥३४॥

| | | | |
|------------|--------------------|--------------|--------------------|
| आर्ये | “அம்மா! | दृढव्रतः | உறுதியானவ்ரத” |
| धर्मवित् | தர்மமறிந்தவரும், | | முடையவரும், |
| धर्मनित्यः | தர்மத்தில் சர்வதமா | सत्यविक्रमः | வீண்போகாத பராக் |
| | ன பற்றுடையவரும், | | கிரமமுடையவரும், |
| महाभागः | புகழ்படைக்கப்பெற்ற | मे | எனது |
| | வரும், | पिता च | தந்தையாருமாகிய |
| | | राजा | சக்கிரவர்த்தியார், |
| | | किं अब्रवीत् | என்ன சொன்னார்? |

पश्चिमं साधु संदेशमिच्छामि श्रोतुमात्मनः । इति पृष्टा यथातत्त्वं कैकेयी वाक्यवब्रवीत् ॥

| | | | |
|---------|------------------|------------|------------------|
| आत्मनः | “எனக்கு | इति | என்று |
| पश्चिमं | கடைசியான | पृष्टा | வினாப்பட்ட |
| संदेशं | நியமனத்தை | कैकेयी | கைகேயிதேவியார் |
| साधु | வயக்தமாக | यथातत्त्वं | உள்ளது உள்ளவாறு |
| श्रोतुं | கேட்க | वाक्यं | பின்வரும் மொழியை |
| इच्छामि | நான் ஆவலுடனிருக் | अब्रवीत् | சொன்னான் : |
| | கின்றேன்” | | |

रामेति राजा विलपन्हा सीते लक्ष्मणेति च । स महात्मा परं लोकं गतो गतिमतां वरः॥

| | | | |
|-------------|---------------------|-------------|--------------------|
| गतिमतां वरः | “புருஷோத்தமரும் | सीते च | ‘சீதே’ என்றும், |
| महात्मा | மகாத்மாவும், | लक्ष्मण इति | ‘லக்ஷ்மண’ என்றும், |
| राजा सः | சக்கிரவர்த்தியுமாகு | विलपन् | புலம்பிக்கொண்டு |
| हा राम | ‘ஹ் ராமா!’ [மவர், | परं लोकं | பரலோகத்தை |
| इति | என்றும், | गतः | அடைந்தனர். |

इमां तु पश्चिमां वाचं व्याजहार पिता तव । कालधर्मपरिक्षिप्तः पाशैरिव महागजः ॥३५॥

| | | | |
|--------------------|-------------------|----------|-------------|
| महागजः | “பெரும் யானை | तव | உனது |
| पाशैः | கயிறுகளால் | पिता | தந்தை |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ் | इमां | பின்வரும் |
| | வண்ணமே | वाचं तु | மொழியையும், |
| कालधर्मपरिक्षिप्तः | காலவசத்தால் கட்டு | पश्चिमां | கடைசியாக |
| | ண்ட | व्याजहार | சொன்னார்: |

सिद्धार्थास्तु नरा राममागतं सीतया सह । लक्ष्मणं च महाबाहुं द्रक्ष्यन्ति पुनरागतम् ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|--------------|----------------------|
| सिद्धार्थाः | “‘கொடுத்தவைத்த | रामं | ராமனையும் |
| नराः तु | மானிடர்கள் தான் | आगतं | திரும்பிவந்துசேர்ந்த |
| सीतया सह | சீதையோடுகூட | महाबाहुं | ஆஜானுபாகுவாகிய |
| पुनः | மீண்டும் | लक्ष्मणं च | லக்ஷ்மணனையும் |
| आगतं | வந்துசேர்ந்த | द्रक्ष्यन्ति | காண்பார்கள்.’” |

तच्छ्रुत्वा विषसादैव द्वितीयाप्रियशंसनात् । विषण्णवदनो भूत्वा भूयः पप्रच्छ मातरम् ॥

| | | | |
|---------------------------|---|------------|---------------------------|
| तत् | அதை | विषण्णवदनः | வாடிய முகத்தினராய் |
| श्रुत्वा एव | கேட்டவுடனேயே | भूत्वा | ஆகி, |
| विषसाद | திகிலடைந்தார். | भूयः | மறுபடியும் |
| द्वितीयाप्रिय- शंसनात् | இரண்டாவது அனிஷ்ட டத்தை தெரிவித்த மையால் | मातरं | தாயிடம் |
| | | पप्रच्छ | பின்வருமாறு கேட் டார்: |

क चेदानीं स धर्मात्मा कौसल्यानन्दवर्धनः । लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा सीतया च समागतः॥

| | | | |
|------------------------|---|--------------|-----------------------------|
| कौसल्यानन्द- वर्धनः | “கோஸலாதேவியின் ஆனந்தத்தை விருத் திசெய்யும், | लक्ष्मणेन सह | லக்ஷ்மணனோடும், |
| | | सीतया च | சீதாப்பிராட்டியா ரோடும், |
| धर्मा मा | தர்மா த்மாவாகும் | समागतः च | சேர்ந்தவராய் |
| सः | அவர் | इदानीं | இப்பொழுது |
| भ्रात्रा | தம்பி | क | எங்கிருக்கிறார்?” |

तथा पृष्टा यथातत्त्वमाख्यातुमुपचक्रमे । माताऽस्य सुमहद्वाक्यं विप्रियं प्रियशङ्कया ॥

| | | | |
|--------|-------------|-------------|-------------------|
| तथा | இங்ஙனம் | विप्रियं | அனிட்மரவ |
| पृष्टा | வினாவப்பட்ட | वाक्यं | செய்தியை |
| अस्य | இவரது | प्रियशङ्कया | இவ்விடமெனக்கருதி |
| माता | தாய், | यथातत्त्वं | உள்ளபடி |
| सुमहत् | மிக்க | आख्यातुं | பின்வருமாறு சொல்ல |
| | | उपचक्रमे | தலைப்பட்டனள்: |

स हि राजसुतः पुत्र चीरवासा महावनम् । दण्डकान्सह वैदेह्या लक्ष्मणानुचरो गतः ॥

| | | | |
|----------|--|------------------|------------------------|
| पुत्र | “குழந்தாய்! | लक्ष्मणानुचरः हि | லக்ஷ்மணன் பின் தொடர |
| राजसुतः | சக்கிரவர்த்தியாரின் திருக்குமாரனாகும் | वैदेह्या सह | வைதேகியோடுகூட |
| सः | அவன் | दण्डकान् | தண்டக |
| चीरवासाः | மரவரியுடுத்தி | महावनं | பெரும் கானகத்திற்கு |
| | | गतः | சென்றான்.” |

| | |
|---------|-------------------|
| மூடா | அசடுமாகிய |
| கீகேயி | கைகேயி |
| ஹ்யா து | உள்ளம் பூரித்தவளா |
| | கவே |
| வசனம் | பின்வரும் மொழியை |
| உவாச | சொன்னாள்; |

न ब्राह्मणधनं किञ्चिद्धृतं रामेण कस्यचित् । कश्चिन्नाह्यो दरिद्रो वा तेनापापो विहिंसितः॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|-------------|--------------------------|
| रामेण | “रामனால் | तेन | அவனால் |
| कस्यचित् | ஒருவனுடையவும் | आह्यः | பணக்காரனோ, |
| ब्राह्मणधनं | நியாயார்ஜிதமான தனம் | दरिद्रः वा | தரித்திரனோ, |
| | | अपापः | நிர்தோஷியாய் |
| किञ्चित् | எள்ளளவும் | कश्चित् | ஒருவனும் |
| हृतं न | அபஹரிக்கப்பட வில்லை. | विहिंसितः न | ஹிம்ஸிக்கப்பட வில்லை. |

न रामः परदारान् स्म चक्षुर्भ्यामपि पश्यति ॥ ४९ ॥

| | | | |
|----------|--------------|------------------|----------------|
| रामः | “ராமன் | चक्षुर्भ्यां अपि | கண்ணெடுத்தும் |
| परदारान् | பிறர்மனைவியை | पश्यति न. स्म | பார்த்ததில்லை. |

मया तु पुत्र श्रुत्वैव रामस्यैवाभिषेचनम् । याचितस्ते पिता राज्यं रामस्य च विवासनम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------|------------|-------------------|
| पुत्र | “குழந்தாய்! | पिता | தந்தையார் |
| रामस्य | ராமனுடைய | राज्यं | ராஜ்யத்தையும் |
| अभिषेचनं | அபிஷேகத்தை | रामस्य | ராமனை |
| श्रुत्वा एव | கேட்டவுடன் | विवासनं एव | நாடுகடத்துவதையும் |
| मया तु | என்னுல்தான் | याचितः | யாசிக்கப்பட்டனர். |
| ते च | உனக்காகத்தான் | | |

स स्ववृत्तिं समास्थाय पिता ते तत्तथाऽकरोत् । रामश्च सहसौमित्रिः प्रोषितः सह सीतया॥

| | | | |
|------------|---|-------------|---------------------------|
| सः | “அந்த | तथा | அப்படியே |
| ते | உனது | अकरोत् | செய்தனர். |
| पिता | தந்தையார், | रामः च | ராமனும் |
| स्ववृत्तिं | தான் ப்ரதிக்கொ செ ய்திருந்த காரணத்தில் | सहसौमित्रिः | லக்சுமணனோடும், |
| समास्थाय | நடுபட்டு, | सीतया सह | வீதையோடும், |
| तत् | அதை | प्रोषितः | வனவாஸம் செய்கின் றான். |

तमपश्यन्प्रियं पुत्रं महीपालो महायशः । पुत्रशोकपरिचूनः पञ्चत्वमुपपेदिवान् ॥ ५२ ॥

| | | | |
|---------|-----------------------------|-----------------|-------------------------------------|
| महायशः | “மகா புகழ்படைக்கப் பெற்ற | अपश्यन् | காணாதவராய், |
| महीपालः | சக்கிரவர்த்தியார், | पुत्रशोकपरिचूनः | புத்திரசோகத்தால் மனம்நொந்தவராய், |
| सं | அந்த | पञ्चत्वं | மரணத்தை |
| प्रियं | இஷ்டனை | उपपेदिवान् | அடைந்தனர். |
| पुत्रं | புதல்வனை | | |

त्वया त्विदानीं धर्मज्ञ राजत्वमवलम्ब्यताम् । त्वत्कृते हि मया सर्वमिदमेवंविधं कृतम् ॥

| | | | |
|-------------|------------------|--------------|----------------|
| धर्मज्ञ | “தர்மமறிந்தவனே ! | त्वत्कृते हि | உனக்காகவே |
| इदानीं तु | இப்பொழுதே | मया | என்னால் |
| त्वया | உன்னால் | इदं सर्वं | இவை எல்லாம் |
| राजत्वं | ராஜ அதிகாரமானது | एवंविधं | இப்படியாக |
| अवलम्ब्यतां | கையாளப்பட்டதும். | कृतम् | செய்யப்பட்டது. |

मा शोकं मा च सन्तापं धैर्यमाश्रय पुत्रक । त्वदधीना हि नगरी राज्यं चैतदनामयम् ॥

| | | | |
|-----------|----------------|-----------|-------------|
| पुत्रक | “குழந்தாய் ! | नगरी | நகரம் |
| शोकं मा | துயரத்தையடை | त्वदधीना | உனக்கதீனம். |
| | யாதே. | एतत् | இந்த |
| सन्तापं च | ஸந்தாபத்தையும் | अनामयं | இடையூறற்ற |
| मा | அடையாதே. | राज्यं हि | ராஜ்யமும் |
| धैर्यं | தையத்தை | च | அங்குனமே. |
| आश्रय | மேற்கொள்ளு. | | |

तत्पुत्र शीघ्रं विधिना विधिज्ञैर्वसिष्ठमुख्यैः सहितो द्विजेन्द्रैः ॥

सङ्काल्य राजानमदीनसत्त्वमात्मानमुर्व्यामभिषेचयस्व

॥ ५५ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-------------|---------------------|
| पुत्र | “குழந்தாய் ! | विधिना | முறைப்படி |
| तत् | ஆகையால் | सङ्काल्य | முன்னோர்களுடன் |
| विधिज्ञैः | விதிகளில் நிபுணர் | | சேர்ப்பித்துவிட்டு, |
| | களும், | अदीनसत्त्वं | தையத்தைப் பிறவி |
| वसिष्ठमुख्यैः | { வலிஷ்டரைத்தலை | | யிலேயே படைத்த |
| | மையாயுடையவர்க | आत्मानं | உன்னை |
| | ளுமான | उर्व्यां | உலகில் |
| द्विजेन्द्रैः | ப்ராம்மணைத்தமர் | शीघ्रं | சீக்கிரத்தில் |
| सहितः | கூடியவனாய் [கனோடு | अभिषेचयस्व | நீ பட்டாபிஷேகம் |
| राजानं | சக்கிரவர்த்தியாரை | | செய்வாயாக.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे द्विसप्ततितमः सर्गः

आदितः श्लोकाः 5224



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2869

त्रिसप्ततितमः सर्गः—எழுபத்துமூன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ ७३ ॥

कैकेयीगर्हणम्—கைகேயியை நீத்திப்பது.

कैकेय्याऽप्येवमुक्तस्तु भरतो राघवानुजः । कर्णौ कराभ्यां प्रच्छाद्य पपात धरणीतले ॥ १ ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|------------|--------------------|
| राघवानुजः | ஸ்ரீராமர் தம்பியாகிய | तु | உடனே |
| भरतः | பரதர் | कर्णौ | காதுகளை |
| कैकेय्या | கைகேயிதேவியால் | कराभ्यां | இருகைகளாலும் |
| एवं | இங்ஙனம் | प्रच्छाद्य | இறுகமுடிக்கொண்டு |
| इकः अपि | கூறப்பட்டபோதிலும் | धरणीतले | பூமியில் |
| | | पपात | விழுந்து விட்டனர். |

हा राम नाथेति तदा विलप्य करुणं बहु । मुहूर्तमिव निस्संज्ञस्संज्ञावानिदमब्रवीत् ॥ २ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|--------|--------------------|
| तदा | அப்பொழுது | नाथ | நாதா ! ” |
| मुहूर्त इव | ஒரு முகூர்த்தகாலம் | इति | என்று |
| | மட்டும் | बहु | மிக |
| निस्संज्ञः | பிரக்ஞையற்றிருந்து | करुणं | பரிதபிக்கும்வண்ணம் |
| संज्ञावान् | பிறக்கையடைந்த | विलप्य | புலம்பி |
| | வராய் | इदं | பின்வருமாறு |

हा राम “ह्रा राम !
इतोऽस्मि राजा निहतो इतो लोकश्च दुर्मते । किमिदं शिक्षितं येन कस्य कार्यं त्वया कृतम् ॥

| | | | |
|---------|------------------------------|----------|---------------------|
| अस्मि | “நான் | इदं किं | இதுஎன்ன ! |
| इतः | கெட்டேன். | येन | யாரால் |
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | शिक्षितं | உபதேசிக்கப்பட்டது ? |
| निहतः | மாண்டார். | | |
| लोकः च | உலகமே | कस्य | யாருடைய |
| इतः | அழிந்தது. | कार्यं | செய்கை |
| दुर्मते | நல்லதுபொல்லாததறி யாதவளே ! | त्वया | உன்னால் |
| | | कृतम् | செய்யப்பட்டது? |

राजानं प्रेतभावस्थं कृत्वा रामं च तापसम् । राज्यमात्रफलं भोक्तुमनुतिष्ठसि दुर्मते ॥४॥

| | | | |
|--------------|---------------------------|---------------|-----------------|
| दुर्मते | “நன்மைதீமையுண ராதவளே ! | तापसं | வனவாஸியாகவும் |
| राजानं | சக்கிரவர்த்தியாரை | कृत्वा | செய்துவிட்டு, |
| प्रेतभावस्थं | பிணமாகவும், | राज्यमात्रफलं | ராஜ்யமாகிய ஒரே |
| रामं च | ஸ்ரீராமரையும் | भोक्तुं | அனுபவிக்க [பயனை |
| | | अनुतिष्ठसि | உடன்பட்டனை. |

रामप्रस्थापिकायाश्च पतिघ्न्याश्च तवोदरे । दश मासा मया नीता हा लोके निन्दितोऽस्म्यहम् ॥

| | | | |
|---------------------|--|----------|----------------|
| रामप्रस्थापिकायाः च | “ஸ்ரீராமரைக் காட்டி ற்கனுப்பியவளும் | नीताः | கழிக்கப்பட்டன. |
| पतिघ्न्याः च | பதியைக்கொன்றவ | हा | அந்தோ ! |
| तव | உனது [ருமான | अहं | நான் |
| उदरे | வயிற்றில் | लोके | உலகில் |
| दश मासाः | பத்து மாதங்கள் | निन्दितः | ப்ரவ்ஹுக |
| मया | என்னால் | अस्मि | ஆகின்றேன். |

कण्ठेऽवसज्य वा पाशं विषं पीत्वाऽथवाऽधमे । त्यज प्राणांश्च दुर्मेधे जलमग्निं प्रविश्य वा ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------|-------------|--------------|
| अधमे | “பத்னிமார்களில் துஷ்டையே ! | विषं | விஷத்தை |
| दुर्मेधे | கெடுமதியுடையாய் ! | पीत्वा | குடித்தோ, |
| कण्ठे | கழுத்தில் | जलं | ஜலத்திலாவது |
| पाशं | கயிற்றை | अग्निं च | அக்னியிலாவது |
| अवसज्य वा | சுருக்கிட்டுக்கொண் | प्रविश्य वा | புகுந்தோ |
| अथवा | அல்லது [டோ | प्राणान् | உயிரை |
| | | त्यज | ஒழி ! |

त्वामद्य निहनिष्यामि नो चेद्दुह्यामि च स्वयम् । राघवस्यानुजो भ्राता भरतो मातृहा इति॥

अनुजः “இனைய
भ्राता சகோதரனாகிய
भरतः பரதன்
मातृहा மாதாவைக் கொன்ற
வன்

इति என்கிறதாக
स्वयं च நானே

राघवस्य ஸ்ரீராமருக்கு
दुह्यामि नो चेत् { திங்கு விளைவிக்கின்
தேனென்பதில்லாத
பகைத்தில்
अद्य இப்பொழுதே
त्वां உன்னை
निहनिष्यामि கொன்றுவிடுவேன்.”

एवं परुषमुक्त्वा तु निर्दहन्निव चक्षुषा । निरीक्षमाणे भरते कैकेयी वाक्यमब्रवीत् ॥ ८ ॥

चक्षुषा கண்ணால்
निर्दहन् इव கொளுத்திவிடுபவர்
போல

एवं மேற்கண்டவாறு
परुषं கொடுமையாய்
उक्त्वा சொல்லிவிட்டு

भरते பரதர்
निरीक्षमाणे तु { இமை கொட்டாது வி
ழித்துப்பார்த்துக்
கொண்டிருக்கையில்
कैकेयी கைகேயி
वाक्यं பின்வரும் சொல்லை
अब्रवीत् சொன்னாள்:

किं मयाऽपकृतं तेऽद्य गर्हसे मां मुहुर्मुहुः । प्रसूय वर्धयित्वा त्वां राज्यस्थं द्रष्टुमुत्सुकाम् ॥

त्वां “உன்னை
प्रसूय பெற்று
वर्धयित्वा வளர்த்து
राज्यस्थं அரசனாக
द्रष्टुं காண
उत्सुकाम् ஆசைப்படும்
मां என்னை

अद्य இப்பொழுது
मुहुः मुहुः ஓயாது
गर्हसे உதறியெறிந்து பேசு
मया என்னால் [கின்றனே.
ते உனக்கு
अपकृतं செய்யப்பட்ட திங்கு
किम् என்ன?

ते पिता स्वर्गतो राजा भ्रातरौ च विवासितौ । बहुना किं प्रलापेन कुरु राज्यं यथासुखम्॥

ते “உனது
पिता தந்தையாகிய
राजा சக்கிரவர்த்தியார்
स्वर्गतः பரலோகமடைந்தார்.
भ्रातरौ च ப்ராதாக்களிருவர்
களும்த

विवासितौ நாடுகடத்தப்பட்டனர்.
बहुना அதிக
प्रलापेन பேச்சால்
किं ஆவதென்ன?
राज्यं ராஜ்யத்தை
यथासुखं செம்மையாய்
कुरु பரிபாலி.”

श्रुत्वा तु पितरं वृत्तं भ्रातरौ च विवासितौ । भरतो दुःखसन्तप्त इदं वचनमब्रवीत् ॥ ११ ॥

भरतः பரதர்
पितरं தந்தையாரை
वृत्तं மாண்டுவிட்டவராக

श्रुत्वा எண்ணி
दुःखसन्तप्तः துக்கத்தால் பரிதபிக்
கின்றவராய்

भ्रातरौ இரு ப்ராதாக்களையும்
विवासितौ च நாடுகடத்தப்பட்டவ
ர்களாகவும்

इदं பின்வரும்
वचनं तु மொழியையும்
अब्रवीत् மொழிந்தார்:

किं नु कार्यं हतस्येह मम राज्येन शोचतः । विहीनस्याथ पित्रा च भ्रात्रा पितृसमेन च॥

| | | | |
|------------|--------------------------|----------------|-------------|
| पित्रा च | “திருத்தந்தையாரா லும் | शोचतः | துன்புறும் |
| पितृसमेन | பிதாவுக்குச் சமமானரா | मम | எனக்கு |
| भ्रात्रा च | தமையனாரா லும் [கிய | इह | இவ்வுலகில் |
| विहीनस्य | விடப்பட்டு | अथ | இனி |
| हतस्य | அழிந்து | राज्येन | ராஜ்யத்தால் |
| | | किं नु कार्यम् | ஆவதென்ன? |

दुःखे मे दुःखमकरोर्वणे क्षारमिवादधाः ॥ १३ ॥

| | | | |
|-------|-------------|-----------|----------------------|
| मे | “எனது | वणे | புண்ணில் |
| दुःखे | துக்கத்தில் | क्षारं इव | புளிக்காரத்தைப் போல் |
| दुःखं | துக்கத்தை | | |
| अकरोः | செய்தனை. | आदधाः | நீ வைத்தாய். |

कुलस्य त्वमभावाय कालरात्रिरिवागता ॥ १४ ॥

| | | | |
|---------------|--|--------|-------------------|
| त्वं | “நீ | कुलस्य | உத்தமகுலத்தினுடைய |
| कालरात्रिः इव | பிரளயகாலத்தில் சம் ஹாரசக்தியைப்போல் | अभावाय | நாசத்திற்காக |
| | | आगता | வந்தனை. |

अङ्गारमुपगृह्य स्म पिता मे नावबुद्धवान् ॥ १५ ॥

| | | | |
|---------|-----------|-------------------|----------------------------------|
| मे | “எனது | उपगृह्य | அணைத்துக்கொண்டு |
| पिता | தந்தையார் | अवबुद्धवान् न स्म | உள்ளதையறியாதிருந் துவிட்டனர். |
| अङ्गारं | அக்னியை | | |

मृत्युमापादितो राजा त्वया मे पापदर्शिनि । सुखं परिहृतं मोहात्कुलेऽस्मिन्कुलपांसिनि ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------|------------|----------------------------|
| पापदर्शिनि | “பாபானுஷ்டான முடையாய்! | कुलपांसिनि | குலத்தை அழிக்கவந் தவளை! |
| त्वया | உன்னால் | मोहात् | அசட்டுத்தனத்தினால் |
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | मे | எனது |
| मृत्युं | யமனிடம் | अस्मिन् | இந்த |
| आपादितः | காட்டிக்கொடுக்கப் பட்டனர். | कुले | உத்தமகுலத்தில் |
| | | सुखं | மகிமை |
| | | परिहृतम् | ஒழிக்கப்பட்டது. |

त्वां प्राप्य हि पिता मेऽद्य सत्यसंधो महायशः । तीव्रदुःखाभिसंतप्तो वृत्तो दशरथो नृपः॥

| | | | |
|-----------|---------------------|---------------|------------------------------|
| अद्य | “இப்பொழுது | त्वां | உன்னை |
| सत्यसन्धः | சத்யசந்தரும் | प्राप्य हि | எற்றுக்கொண்டதினால் |
| महायशः | மிக்கப் புகழ்பெற்றவ | | |
| मे | எனது [கும், | तीव्रदुःखाभि- | கடுமையான துக்கத் |
| पिता | தந்தையாருமாகிய | सन्तप्तः | தால் பரிதாபிக்கின்ற வராய் |
| दशरथः | தசரத | | |
| नृपः | சக்கிரவர்த்தியார் | वृत्तः | மாண்டனர். |

विनाशितो महाराजः पिता मे धर्मवत्सलः । कस्मात्प्रवाजितो रामः कस्मादेव वनं गतः ॥

धर्मवत्सलः “தருமத்தில் ஆசக்தி
யுடையவரும்

मे எனது
पिता தந்தையாருமாகிய
महाराजः சக்கிரவர்த்தியார்
कस्मात् எந்த அதிகாரத்தைக்
கொண்டு

विनाशितः நிர்ப்பந்திக்கப்பட்ட
रामः एव ஸ்ரீராமர்தான் [என் ?
कस्मात् எந்த அதிகாரத்தைக்
கொண்டு
प्रवाजितः தூரத்தப்பட்டவராய்
वनं வனவாசத்தை
गतः அடைந்தார் ?

कौसल्या च सुमित्रा च पुत्रशोकाभिपीडिते । दुष्करं यदि जीवेतां प्राप्य त्वां जननीं मम ॥

कौसल्या च “கோஸலாதேவியாரும்
सुमित्रा च சுமித்ராதேவியாரும்
पुत्रशोकाभि- } புத்ரசோகத்தால் புண்
पीडिते } பட்ட மனத்தர்களாய்
मम जननीं எனது தாயாகிய

त्वां உன்னை
प्राप्य (கண்முன்) கண்டு
जीवेतां यदि பிழைத்திருப்பார்கள்
என்றால்
दुष्करम् அஸாத்யமே.

ननु त्वार्योऽपि धर्मात्मा त्वयि वृत्तिमनुत्तमाम् । वर्तते गुरुवृत्तिज्ञो यथा मातरि वर्तते ॥

धर्मात्मा “தர்மாத்மாவும்,
गुरुवृत्तिज्ञः { பெரியோர்களிடம்
நடந்துகொள்வதில்
நிபுணரும்,
आर्यः अपि சூஜ்யருமாகிய அவர்
मातरि தாயின் விஷயத்தில்
वर्तते எவ்வண்ணம் நடந்து
கொள்ளுகிறாரோ

यथा அவ்வண்ணமே
त्वयि तु உன்னிடத்திலும்
अनुत्तमां ஒப்புயர்வற்ற
वृत्ति நடத்தையை
वर्तते புரிந்துவருகின்றார்.
ननु இல்லையா என்ன ?

यथा ज्येष्ठा हि मे माता कौसल्या दीर्घदर्शिनी । त्वयि धर्म समास्थाय भगिन्यामिव वर्तते ॥

यथा “அவ்வண்ணமே
मे எனது
ज्येष्ठा माता பெரிய தாயும்
दीर्घदर्शिनी பரிபூர்ண ஞானமு
டையவளுமாகிய
कौसल्या கோஸலாதேவியார்,
धर्म தர்மத்தை

समास्थाय மேற்கொண்டு,
त्वयि உன்னிடத்தில்
भगिन्यां சகோதரியிடத்தில்
इव எவ்வண்ணமோ
அவ்வண்ணமே
वर्तते हि நடந்துவருகிறார்
ரன்றோ !

तस्याः पुत्रं कृतात्मानं चीरवल्कलवाससम् । प्रस्थाप्य वनवासाय कथं पापे न शोचसि ॥

पापे “பாபத்தில் துணிந்
துவிட்டவளே !
तस्याः அவளது
कृतात्मानं பரிசுத்த உள்ளம்
படைக்கப்பெற்ற
पुत्रं திருக்குமாரனை

चीरवल्कलवाससं மரவுரி யுடுத்தியவனாய்
वनवासाय வனவாஸத்திற்கு
प्रस्थाप्य தூரத்திவிட்டு
कथं எங்ஙனம்
शोचसि न துயருருமலிருக்
கின்றனே ?

अपापदर्शनं शूरं कृतात्मानं यशस्विनम् । प्रवाज्य चीरवसनं किं नु पश्यसि कारणम् ॥

| | | | |
|------------|---|-----------|----------------------|
| अपापदर्शनं | “ புண்ணியமளிக்கும் ஸேவையுடையவ ராயும், | யசஸ்வினம் | புகழ்பெற்ற அவரை |
| சூர் | எதிலும் ஜெயசாலி யாயும், | சீர்வசனம் | மாவுரியுடுத்தியவராய் |
| கृதாத்மான் | அந்தக்கரணசுத்தி யுள்ள | ப்ரவாஜ்ய | ஒட்டிவிட்டு |
| | | காரணம் | பயன் |
| | | கிம் நு | எதைத்தான் |
| | | பச்யசி | காண்கின்றாய்? |

लुब्धाया वि दितो मन्ये न तेऽहं राघवं प्रति । तथा ह्यनर्थो राज्यार्थं त्वयाऽऽनीतो महानयम् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------------|------------|--------------------|
| लुब्धायाः | “ பேராசையுடைய | तथा हि | ஆகையால்தான் |
| ते | உனக்கு, | त्वया | உன்னால் |
| अहं | நான் | राज्यार्थं | ராஜ்யத்திற்காக |
| राघवं प्रति | ஸ்ரீராமர் விஷயத்தில் | महान् | மகத்தாகிய |
| विदितः न | உள்ளபடி அறியப்பட்ட டவனாக இல்லையென | अयं | இந்த |
| मन्ये | எண்ணுகிறேன். | अनर्थः | அனர்த்தமானது |
| | | आनीतः | விளைவிக்கப்பட்டது. |

अहं हि पुरुषव्याघ्रावपश्यन् रामलक्ष्मणौ । केन शक्तिप्रभावेण राज्यं रक्षितुमुत्सहे ॥ २५ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------|---------------|---------------------|
| पुरुषव्याघ्रौ | “ புருஷோத்தமர் களாகிய | केन | எந்த |
| रामलक्ष्मणौ | ஸ்ரீராமலக்ஷ்மணர் | शक्तिप्रभावेण | சக்தியின் வலிமையால் |
| अपश्यन् | காணாதவனாகிய [களை | राज्यं | ராஜ்யத்தை |
| अहं हि | நானொருவனே | रक्षितुं | காக்க |
| | | उत्सहे | துணிவேன்? |

तं हि नित्यं महाराजो बलवन्तं महाबलः । अपाश्रितोऽभूद्धर्मात्मा मेरुर्मेखनं यथा ॥ २६ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|-----------|------------------|
| महबलः | “ மஹா சக்திமானும், | यथा | எவ்வண்ணமோ |
| धर्मात्मा | தர்மாத்மாவுமாகிய | | அவ்வண்ணமே |
| महाराजः | சக்கிரவர்த்தியாரும் | बलवन्तं | சக்திமானாகிய |
| मेरुः | மேருமலையானது | तं हि | அவரையே |
| मेखनं | மேருமலையிலுள்ள வனத்தை | नित्यं | சாச்சுவதமாய் |
| | | अपाश्रितः | நம்பியிருந்தவராக |
| | | अभूत् | இருந்தனர். |

सोऽहं कथमिमं भारं महाधुर्यसमुद्धृतम् । दम्यो धुरमिवासाद्य वहेयं केन चौजसा ॥

| | | | |
|-------------------|--|--------|-----------------|
| महाधुर्यसमुद्धृतं | “ மிகப் பெரியோர்க ளால் வகிக்கப்பட்ட இந்த | सः | அந்த |
| इमं | கஷ்டமான | अहं | நான் |
| भारं | பொறுப்பை | आसाद्य | எற்று |
| धुरं | எள்ளளவும் | केन | எந்த |
| इव | அனுபவமற்ற | ओजसा | சக்தியைக்கொண்டு |
| दम्यः | | कथं च | எப்படித்தான் |
| | | वहेयम् | நடத்துவேன்? |

अथवा मे भवेच्छक्तियोगैर्बुद्धिबलेन वा । सकासां न करिष्यामि त्वामहं पुत्रगर्दिनीम् ॥

| | | |
|------------|-------------------|--------------------|
| अथवा | “ஒருக்கால் | புத்திரனொருவனுக்கே |
| योगै: | நான்குவகை உபாயங் | நன்மையையுத்தேசி |
| | களாலும், | க்கும் |
| बुद्धिबलेन | அறிவின் பெருமை | உன்னை |
| | யாலும், | மனோரதம் கைகூடப் |
| मे | எனக்கு | பெற்றவளாய் |
| शक्ति: | சக்தி | நான் |
| भवेत् वा | ஏற்படுமென்றாலும், | செய்யமாட்டேன். |
| | | करिष्यामि न |

न मे विकाङ्क्षा जायेत त्यक्तुं त्वां पापनिश्चयाम् ।
यदि रामस्य नावेक्षा त्वयि स्यान्मातृवत्सदा ॥ २९ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|-------------|---------------------|
| रामस्य | “ஸ்ரீராமருக்கு | पापनिश्चयां | தீக்தொழிலில் புகுந் |
| त्वयि | உன்னிடத்தில் | त्वां | உன்னை [துவிட்ட |
| सदा | எப்பொழுதும் | त्यक्तुं | தள்ளிவைக்க |
| मातृवत् | தாயாரிடத்தில்போல் | मे | எனக்கு |
| अवेक्षा | மதிப்பு | विकाङ्क्षा | உபேக்சை |
| स्यात् न यदि | இல்லாதிருக்குமாகில் | जायेत न | ஏற்படாது. |

उत्पन्ना तु कथं बुद्धिस्तवेयं पापदर्शिनि । साधुचारित्रविभ्रष्टे पूर्वेषां नो विगर्हिता ॥ ३० ॥

| | | | |
|----------------------|--------------------|-------------|---------------------|
| साधुचारित्रविभ्रष्टे | “நன்னடக்கையினின் | विगर्हिता | அபகீர்த்தி விளைவிக் |
| | றும் விலகியவளாய் | | கிறதாகிற |
| पापदर्शिनि | பாபத்தில் துணிந்து | इयं बुद्धि: | இந்த புத்தி |
| | விட்டவளே ! | तव | உனக்கு |
| न: | நம் முடைய | कथं तु | எப்படித்தானோ |
| पूर्वेषां | முன்னோர்களுக்கு | उत्पन्ना | உண்டாயிற்று ? |

अस्मिन्कुले हि पूर्वेषां ज्येष्ठो राज्येऽभिषिच्यते । अपरे भ्रातरस्तस्मिन्प्रवर्तन्ते समाहिताः ॥

| | | | |
|-------------|----------------|--------------|--------------------|
| अस्मिन् | “இந்த | अभिषिच्यते | அபிஷேகம் செய்யப் |
| कुले | குலத்தில் | | படுவான். |
| ज्येष्ठः हि | முத்தவன் தான் | अपरे भ्रातरः | தம்பிமார்கள் |
| पूर्वेषां | முன்னோர்களுடைய | तस्मिन् | அவனிடத்தில் |
| राज्ये | ராஜ்யத்தில் | समाहिताः | பத்திமையுடையவர் |
| | | | களாய் |
| | | प्रवर्तन्ते | நடந்துகொள்வார்கள். |

न हि मन्ये नृशंसे त्वं राजधर्ममवेक्षसे । गतिं वा न विजानासि राजवृत्तस्य शाश्वतीम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------|---------------|---------------------|
| नृशंसे | “நவிரக்கமற்றவளே ! | राजवृत्तस्य | ராஜசம்பிரதாயத்தின் |
| त्वं | நீ | शाश्वतीं | நிரந்தரமான |
| राजधर्मं | ராஜநீதியை | गतिं वा | அனுஷ்டானத்தையும் |
| अवेक्षसे न | மதிக்கவில்லை. | विजानासि न हि | மதிக்கவில்லையெனவும் |
| | | मन्ये | எண்ணுகிறேன். |

सततं राजवृत्ते हि ज्येष्ठो राज्येऽभिषिच्यते । राज्ञामेतत्समं तस्यादिश्वाकूणां विशेषतः ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------------|------------|---------------------|
| राजवृत्ते | “ராஜசம்பிரதாயத்தில் | राज्ञां | மன்னர்களுக்கெல்லாம் |
| ज्येष्ठः हि | முத்தவனே | समं | பொதுவானது. |
| सततं | எப்பொழுதும் | तत् | அது |
| राज्ये | ராஜ்யத்தில் | इश्वाकूणां | இசுவாகூனுவம்சத்த |
| अभिषिच्यते | அபிஷேகம் செய்யப் படுகின்றான். | | வர்களுக்கு |
| एतत् | இது | विशेषतः | முக்கியமாய் |
| | | स्यात् | இருக்கும். |

तेषां धर्मैकरक्षाणां कुलचारित्रशोभिनाम् । अद्य चारित्रशौण्डीयं त्वां प्राप्य विनिवर्तितम् ॥

| | | | |
|----------------|--|-----------------|------------------|
| धर्मैकरक्षाणां | “தர்மமொன்றையே பாதுகாப்பாகக்கொ ண்டவர்களும், | तेषां | அவர்களுடைய |
| कुलचारि- | குலத்தின் நல்லொழு | चारित्रशौण्डीयं | ஒழுக்கத்தின் |
| शोभिनां } | க்கத்தால் விளங்கிய வர்களுமான | त्वां | உன்னை [பெருமை |
| | | प्राप्य | அடைந்து, |
| | | अद्य | இப்பொழுது |
| | | विनिवर्तितम् | திரும்பிவிட்டது. |

तवापि सुमहाभागा जनेन्द्राः कूलपूर्वगाः । बुद्धेर्मोहः कथमयं संभूतस्त्वयि गर्हितः ॥३५॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------------|---------|-----------------|
| तव | “உனது | बुद्धेः | அறிவிற்கு |
| कुलपूर्वगाः अपि | முன்னோர்களும் | गर्हितः | அவமதிப்பையுண் |
| सुमहाभागाः | மஹாபுண்ணியாத்மா க்களுமாகிய | अयं | இந்த [டாக்குகிற |
| जनेन्द्राः | மன்னர்கள். | मोहः | அசட்டுத்தனம் |
| त्वयि | உன்னிடத்தில் | कथं | எங்ஙனம் |
| | | संभूतः | உண்டாயிற்று? |

न तु कामं करिष्यामि तवाहं पापनिश्चये । यया व्यसनमारब्धं जीवितान्तकरं मम ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------------|-------------|-------------------|
| पापनिश्चये | “பாபச்செயலிலேயே நிச்சயமுள்ளவனே! | आरब्धं | விளைவிக்கப்பட்டதோ |
| मम | எனக்கு | तव | உனது [அந்த |
| जीवितान्तकरं | உயிரையே மாய்க்கும் | कामं तु | விருப்பத்தை மாத் |
| व्यसनं | துன்பமானது | अहं | நான் [திரம் |
| यया | எவளால் | करिष्यामि न | கிறவேற்றேன். |

एष त्विदानीमेवाहमप्रियार्थं तवानघम् । निवर्तयिष्यामि वनाद्भ्रातरं स्वजनप्रियम् ॥३७॥

| | | | |
|-------------|-----------------|----------------|-----------------|
| एषः | “இந்த | वनात् | காட்டிலிருந்து |
| अहं | நான் | तव | உனக்கு |
| इदानीं एव | இப்பொழுதே | अप्रियार्थं तु | இஷ்டமில்லாத |
| अनघं | தோஷரற்றிருந், | | தாயினும் |
| स्वजनप्रियं | பந்தனைபரியருமான | निवर्तयिष्यामि | திரும்பியழைத்து |
| भ्रातरं | தனையவரை | | வரப்போகிறேன். |

निवर्तयित्वा रामं च तस्याहं दीप्ततेजसः । दासभूतो भविष्यामि सुस्थितेनान्तरात्मना ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------------|-------------|---------------|
| अहं | “ நான் | तस्य | அவருக்கு |
| रामं | ஸ்ரீராமரை | दासभूतः | தொண்டனாய் |
| निवर्तयित्वा च | திருப்பியழைத்து வந்த தும் | सुस्थितेन | உவகைகொண்ட |
| दीप्ततेजसः | மகத்தாகிய ஆத்ம பலம் வாய்ந்த | अन्तरात्मना | உள்ளத்தோடு |
| | | भविष्यामि | ஒழுக்குவேன்.” |

इत्येवमुक्त्वा भरतो महात्मा प्रियेतरेर्वाक्यगणैस्तुदंस्ताम् ।

शोकातुरश्चापि ननाद भूयः सिंहो यथा पर्वतगह्वरस्थः

॥ ३९ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|----------------|--|
| महात्मा | மஹாத்மாவாகிய | तुदन् | மனம்நோகச்செய்து |
| भरतः | பரதர் | भूयः च | முன்னிலுமதிகமாய் |
| इति एवं | மேற்கண்டவண்ண மாய் | शोकातुरः अपि | { சோகத்தால் இனிச் செய்வதறியாதவராயினும் |
| उक्त्वा | சொல்லி, | पर्वतगह्वरस्थः | மலைக்குகையிலிருக் |
| प्रियेतरेः | அன்பற்ற | सिंहः यथा | சிம்மம்போல் [கும் |
| वाक्यगणैः | பல சொற்கொண்டு | ननाद | உறுமினார். |
| तां | அவளை | | |

इत्यर्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे त्रिसप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5263



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2908

चतुःसप्ततितमः सर्गः—எழுபத்துநான்காவது ஸர்க்கம் (௩௪).

कैकेय्युपालम्भः—கைகேயி நிந்தை.

तां तथा गर्हयित्वा तु मातरं भरतस्तदा । रोषेण महताऽऽविष्टः पुनरेवाब्रवीद्वचः ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|---------------|----------|---------------------|
| तदा | அப்பொழுது | महता | அதிக |
| भरतः | பரதர் | रोषेण | ஆவேசத்தால் |
| मातरं | தாயாகும் | आविष्टः | ஆக்ரமிக்கப்பட்டவ |
| तां | அவளை | पुनः एव | மீளவும் [ராய், |
| तथा | மேற்கண்டவாறு | वचः तु | பின்வரும்சொல்லையும் |
| गर्हयित्वा | இகழ்ந்துபேசி, | अब्रवीत् | சொன்னார் : |

राज्याद्भ्रंशस्व कैकेयि नृशंसे दुष्टचारिणि । परित्यक्ता च धर्मेण मा मृतं रुदती भव ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|------------|-----------------|
| नृशंसे | “ ஈகிரக்கமற்ற | परित्यक्ता | பிரிவுற்றவளாய், |
| दुष्टचारिणि | தீயொழுக்கமுடை | मा च | என்னையும் |
| कैकेयि | கைகேயி! [யாய்! | मृतं | செத்தவனாய் |
| राज्यात् | ராஜ்யத்தினின்றும் | रुदती | அழுகிறவளாய், |
| भ्रंशस्व | ஒடிப்போய்விடு. | भव | ஆகக்கடவாய். |
| धर्मेण | தர்மத்தோடு | | |

किंनु तेऽदूषयद्राजा रामो वा भृशधार्मिकः । ययोर्मृत्युर्विवासश्च त्वत्कृते तुल्यमागतौ ॥

भृशधार्मिकः “மகாதர்மிஷ்டராகிய
ராமः ஸ்ரீராமர் தானாகட்டும்
ராஜா வா சக்கிரவர்த்திதானாக
தே உனக்கு [ட்டும்
किंनु என்னதான்
अदूषयत् தீங்குபுரிந்தனர்?

ययोः அவ்விருவர்களுக்கும்
त्वत्कृते உன்னாலே
तुल्यं ஏககாலத்தில்
मृत्युः மரணமும்,
विवासः च வனவாஸமும்
आगतौ நேர்ந்தது.

भूणहत्यामसि प्राप्ता कुलस्यास्य विनाशनात् । कैकेयि नरकं गच्छ मा च भर्तुः सलोकताम् ॥

कैकेयि “கைகேயி!
अस्य இந்த
कुलस्य குலத்திற்கு
विनाशनात् கேடுவினோவித்ததால்
भूणहत्यां கர்ப்பஹத்திபாபத்

प्राप्ता असि அடைந்தவளாகின்ற
नरकं நரகத்தை [னே.
गच्छ அடைய.
भर्तुः கணவனானது
सलोकतां கூடவிருத்தலை
मा च அடையமாட்டாய்.

यच्चया हीदृशं पापं कृतं घोरेण कर्मणा । सर्वलोकप्रियं हित्वा ममाप्यापादितं भयम् ॥

घोरेण “கொடிய
कर्मणा செயலால்
ईदृशं இப்படிப்பட்டதாகிய
पापं பாபம்
त्वया हि உன்னாலேயே
कृतं செய்யப்பட்டது.

यत् என்பதால்
सर्वलोकप्रियं உலகத்தில் எல்லோரு
हित्वा டையவும் அன்பையும்
मम अपि இழந்து,
भयं எனக்கும்
आपादितम् மனவேதனை
உண்டாக்கப்பட்டது.

त्वत्कृते मे पिता वृत्तो रामश्चारण्यमाश्रितः । अयशो जीवलोके च त्वयाऽहं प्रतिपादितः ॥

त्वत्कृते “உன்னால்
मे எனது
पिता தந்தையார்
वृत्तः மாண்டனர்.
रामः च ஸ்ரீராமரும்
अरण्यं காட்டை

आश्रितः அடைந்தனர்.
अहं च நானும்
त्वया உன்னால்
जीवलोके மானிட உலகில்
अयशः புகழையிழந்தவனாய்
प्रतिपादितः செய்யப்பட்டேன்.

मातृरूपे ममामित्रे नृशंसे राज्यकामुके । न तेऽहमभिभाष्योऽस्मि दुर्वृत्ते पतिघातिनि ॥

मम “எனது
मातृरूपे தாயாய் வந்த
अमित्रे சத்ருவே!
नृशंसे கொடியவனே!
राज्यकामुके ராஜ்யத்தில் பேராசை
கொண்ட

पतिघातिनि கணவனைக்கொன்ற
வனே!
अहं நான்
ते உனக்கு
अभिभाष्यः ஏற்றுக்கொள்ளத்

दुर्वृत्ते கெட்ட நடத்தையு
டையவனே!

अस्मि न ஆகேன்.
தக்கவனாக

कौसल्या च सुमित्रा च याश्चान्या मम मातरः ।
दुःखेन महताऽऽविष्टास्त्वां प्राप्य कुलदूषिणीम्

॥ ८ ॥

कुलदूषिणीं “कुलத்தைதக் கெடுத்த
त्वां உன்னை
प्राप्य அடைந்து
मम எனது
मातरः தாய்மார்களாகிற
कौसल्या च கொளஸல்யாதேவியா
ரும்

सुमित्रा च சுமித்ரா தேவியாரும்
अन्या: மற்றவர்கள்
या: च எவர்களோ அவர்
कण्ठम् களும்
महता பெரும்
दुःखेन துக்கத்தால்
आविष्टा: துடிக்கின்றார்கள்.

न त्वमश्वपते: कन्या धर्मराजस्य धीमतः । राक्षसी तत्र जाताऽसि कुलप्रध्वंसिनी पितुः ॥

त्वं “நீ
धर्मराजस्य தருமராஜரும்
धीमतः புத்திமானுமாகிய
अश्वपते: அச்வபதியின்
कन्या न பெண்ணல்ல.

तव அதில்
पितु: தகப்பனருக்கு
कुलप्रध्वंसिनी குலத்தையழிக்கும்
राक्षसी அரக்கியாக
जाता असि நீ பிறந்தனை.

यत्त्वया धार्मिको रामो नित्यं सत्यपराक्रमः । वनं प्रस्थापितो दुःखात्पिता च त्रिदिवं गतः ॥

यत् “ஏனெனில்
त्वया உன்னால்
धार्मिक: தர்மவீட்டரும்
नित्यं எக்காலத்திலும்
सत्यपराक्रम: வீண்போகாத பராக்
राममुदையवरुमान
राम: ஸ்ரீராமர்

वनं காட்டிற்கு
प्रस्थापित: தூரத்திவிடப்பட்ட
दुःखात् சோகத்தால் [னர்.
पिता च தந்தையாரும்
त्रिदिवं ஸ்வர்க்கத்தை
गत: அடைந்தனர்.

यत्प्रधानाऽसि तत्पापं मयि पित्रा विनाकृते । भ्रातृभ्यां च परित्यक्ते सर्वलोकस्य चाप्रिये ॥

यत्प्रधाना “எதில் காரணபுத்தையா
असि நீ ஆகின்றனையோ [ய்
तत् पापं அநக பাপமானது
पित्रा தந்தையோடு
विनाकृते பிரிந்தவனாய்
भ्रातृभ्यां च ஸ்லோதாரரிருவர்
களாலும்

परित्यक्ते கைவிடப்பட்டவனாய்
सर्वलोकस्य எல்லா ஜனங்களுக்கும்
अप्रिये च அனியட்டையுமிருக்
कிற
मयि என்னிடத்தில் நோர்ந்
தது.

कौसल्यां धर्मसंयुक्तां वियुक्तां पापनिश्चये । कृत्वा कं प्राप्स्यसे त्वद्य लोकं निरयगामिनि ॥

पापनिश्चये “பாபத்திற்குத்து
निरयगामिनि நரகத்திற்குச் சென்று
कोण्डिरुन्तवने! கொண்டிருந்தவனே!
धर्मसंयुक्तां தர்மானுவீட்டானமு
டைய
कौसल्यां கோஸலாதேவியாரை

वियुक्तां வியோகமடைந்தவ
कृत्वा செய்துவிட்டு, [ளாக
अद्य இப்பொழுது
तु இதுகாரணமாய்
कं लोकं எந்த உலகத்தை
प्राप्स्यसे அடையப்போகின்
றனை ?

किं नावबुध्यसे क्रूरे नियतं बन्धुसंश्रयम् । ज्येष्ठं पितृसमं रामं कौसल्यायात्मसंभवम् ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|-------------|--------------------|
| क्रूरे | “கொடியவனே ! | पितृसमं | பிதாவுக்குச் சமமான |
| कौसल्यायाः | கோஸலாதேவியாரது | ज्येष्ठं | உத்தமரெனவும் |
| आत्मसम्भवं | திருக்குமாரனாகிற | किं | ஏன் |
| रामं | ஸ்ரீராமரை | नियतं | ஐயமற |
| बन्धुसंश्रयं | பந்துக்களுக்குப்புற லிடமெனவும் | अवबुध्यसे न | நீ அறியவில்லை ? |

अङ्गप्रत्यङ्गजः पुत्रो हृदयाच्चापि जायते । तस्मात्प्रियतमो मातुः प्रियत्वान्न तु बान्धवः ॥

| | | | |
|-----------------|--|----------------|---------------------------------------|
| अङ्गप्रत्यङ्गजः | “பிரதான அங்கங்களி லிருந்தும் உபாங்கங் களிலிருந்தும் உண் டாகிற | तस्मात् | அக்காரணத்தால் |
| पुत्रः | புதல்வன் | मातुः | தாய்க்கு |
| हृदयात् अपि च | இதயத்திலிருந்தும் | प्रियतमः | மிக்க அன்பிற்குப் பாத்திரனாகிறான். |
| जायते | பிறக்கிறான். | प्रियत्वात् तु | அன்பால் மாத்திரம் |
| | | बान्धवः | பந்துவாய் |
| | | न | ஆகான். |

अन्यदा किल धर्मज्ञा सुरभिः सुरसंमता । वहमानौ ददर्शोर्व्यां पुत्रौ विगतचेतसौ ॥ १५ ॥

| | | | |
|------------|--|-----------|---|
| अन्यदा किल | “முன்னொரு காலத் தில் இப்படியொரு கதையுண்டு. | पुत्रौ | தன் புதல்வர்களாகிய இருகாளைக்கன்றுகளை |
| सुरसंमता | தேவதைகளால் பூஜிக் கப்பட்டதும் | विगतचेतसौ | உள்ளம் முறிந்து களை த்திருக்கின்றவை களாய் |
| धर्मज्ञा | தர்மமுணர்ந்த துமா கிய | वहमानौ | பாரம் சமக்கின்றவை |
| सुरभिः | காமதேனு | उर्व्यां | லோகத்தில் [களாக கண்டது. |
| | | ददर्श | |

तावर्धदिवसं श्रान्तौ पुत्रौ दृष्ट्वा महीतले । रुरोद पुत्रशोकेन बाष्पपर्याकुलेक्षणा ॥ १६ ॥

| | | | |
|-----------|------------------------|---------------------|--------------------------------------|
| अर्धदिवसं | “நடுப்பகலில் | दृष्ट्वा | பார்த்து, |
| महीतले | பூமியில் | पुत्रशोकेन | புத்திரகோகத்தால் |
| तौ | அவ்விரு | बाष्पपर्याकुलेक्षणा | கண்ணிரால் கலங்கிய கண்களையுடையதாய் |
| पुत्रौ | காளைக்கன்றுகளையும் | | |
| श्रान्तौ | களைப்படைந்தவை களாய் | रुरोद | அழுதது. |

अधस्ताद्भ्रजतस्तस्याः सुरराज्ञो महात्मनः । बिन्दवः पतिता गात्रे सूक्ष्माः सुरभिगन्धिनः ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|--------------|------------------|
| तस्याः | “அதற்கு | गात्रे | திருமேனியில் |
| अधस्तात् | கீழாக | सुरभिगन्धिनः | நல்ல வாஸனையுடைய |
| भ्रजतः | சென்றுகொண்டிருந்த | सूक्ष्माः | சிறிய |
| महात्मनः | மஹாத்மாவாகிய | बिन्दवः | கண்ணீர்த்துளிகள் |
| सुरराज्ञः | தேவேந்திரனது | पतिताः | விழுந்தன. |

इन्द्रोऽप्यश्रुनिपातं तं स्वगात्रे पुण्यगन्धिनम् । सुरभिं मन्यते दृष्ट्वा भूयसीं तां सुरेश्वरः ॥

சுரேஸ்வர: "தேவர்களாது அரசு
ராகிய

இन्द्र: இந்திரன்
स्वगात्रे தனது உச்சியில்
तं அந்த
अश्रुनिपातं கண்ணீர் வீழ்ச்சியை

पुण्यगन्धिनं
दृष्ट्वा
तां
भूयसीं
सुरभिं अपि
मन्यते

நல்ல வாஸனையுடைய
கவனித்து, [தாய்
அந்த
உக்கிருஷ்டமாகிய
காமதேனுவையே
உள்ளத்தில் சிந்தித்
தார்.

निरीक्षमाणः शक्रस्तां ददर्श सुरभिं स्थिताम् ।
आकाशे विष्टितां दीनां रुदन्तीं भृशदुःखिताम्

शक्र: "இந்திரன்
निरीक्षमाणः நிமிர்ந்து பார்க்கின்
றவராய்

तां அந்த
सुरभिं காமதேனுவை
आकाशे ஆகாசத்தில்

स्थितां
विष्टितां
भृशदुःखितां
दीनां
रुदन्तीं
ददर्श

அசையாமலிருப்ப
நின்றுகொண்டு [தாய்,
மிகக்கஷ்டப்பட்டு
மனம் நொந்து
அழுதுகொண்டிருப்
கண்டார். [பதாய்

तां दृष्ट्वा शोकसन्तप्तां वज्रपाणिर्यशस्विनीम् ।

वज्रपाणः "வஜ்ரபாணியும்,
सुरराजः தேவ அரசுமாகும்
इन्द्र: இந்திரன்
यशस्विनीं புகழ்பெற்ற
तां அதை
शोकसन्तप्तां { சோகத்தால் பரிதபித்
துக்கொண்டிருக்கிற
தாய்

इन्द्रः प्राञ्जलिरुद्विग्नः सुरराजोऽब्रवीद्वचः ॥

दृष्ट्वा கவனித்து,
उद्विग्नः உடல் நடுங்கியவராய்
प्राञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தராய்
वचः பின்வரும் சொல்லை
अब्रवीत् சொன்னார்:

भयं कच्चिन्न चास्मासु कुतश्चिद्विद्यते महत् ।

सर्वहितैषिणि "யாவருக்கும் நன்மை
யைக்கோருபவளே!
अस्मासु நம் விஷயத்தில்
कुतश्चित् எங்கிருந்தும்
महत् भयं பெரும் கஷ்டமானது
विद्यते न உண்டாகிறதில்லை
யென்று

कुतोनिमित्तः शोकस्ते ब्रूहि सर्वहितैषिणि ॥

कच्चित् நான் எண்ணுகின்
च ஆகையால் [நேன்.
ते உனக்கு
शोकः சோகமானது
कुतोनिमित्तः எக்காரணத்தால்
ब्रूहि விளைந்தது?
தெரிவிப்பாயாக.

एवमुक्ता तु सुरभिः सुरराजेन धीमता । प्रत्युवाच ततो धीरा वाक्यं वाक्यविशारदम् ॥

धीमता "ஞானவானாகிய
सुरराजेन தேவேந்திரனால்
ततः அப்பொழுது
एवं மேற்கண்டவாறு
उक्ता வினாவப்பட்ட
धीरा சாந்தமூர்த்தியாகிய

सुरभिः
तु
वाक्यविशारदं
वाक्यं
प्रत्युवाच

காமதேனு
இந்தச் சமயத்தில்
தருமநெறியில் முன்
னேற்றமடைந்த
பின்வரும் சொல்லை
பதிலையுரைத்தனள் :

शान्तं पापं न वः किञ्चित्कुतश्चिदमराधिप । अहं तु मग्नौ शोचामि स्वपुत्रौ विषमे स्थितौ ॥

| | | | |
|-------------|--|--------------|---------------------------------|
| अमराधिप | “தேவாதிபதியே ! | अहं | நான் |
| वः | உங்களுக்கு | विषमे | கஷ்டத்தில் |
| कुतश्चित् | எங்கிருந்தும் | मग्नौ | மூழ்கி |
| किञ्चित् न | எதுவும் இல்லை. | स्थितौ | இருக்கின்றன. |
| शान्तं पापं | { ஏதாயினுமேற்படுமா யினும் தெய்வாதீன மாயொழியக்கடவது ; | स्वपुत्रौ तु | என் இரு குழந்தைக ளைப்பற்றியே |
| | | शोचामि | வருந்துகின்றேன். |

एतौ दृष्ट्वा कृशौ दीनौ सूर्यरश्मिप्रतापितौ । वध्यमानौ बलीवदौ कर्षकेण सुराधिप ॥

| | | | |
|----------|--------------------------------|----------------------------|---|
| सुराधिप | “தேவர்க்கரசே ! | सूर्यरश्मि- प्रतापितौ } | சூரிய கிரணங்களால் |
| एतौ | இந்த | | தஹிக்கப்படுபவை |
| बलीवदौ | காளையாடுகளை | कृशौ | களாகவும், |
| कर्षकेण | உழுபவனால் | दीनौ | இளைத்து |
| वध्यमानौ | துன்புறுத்தப்படுப வைகளாயும் | दृष्ट्वा | கஷ்டதசையிலிருப்ப வைகளாகவும் கவனித்தேன். |

मम कायात्मसूतौ हि दुःखितौ भारपीडितौ । यौ दृष्ट्वा परितप्येऽहं नास्ति पुत्रसमः प्रियः॥

| | | | |
|----------|------------------------------|------------|-------------------------------------|
| पुत्रसमः | “புத்திரனுக்குச் சமமான | प्रसूतौ यौ | பிறந்தவைகளை |
| प्रियः | அன்பிற்குப் பாத்திர மானது | भारपीडितौ | வேலையின் மிகையால் பீடிக்கப்பட்டு |
| अस्ति न | கிடையாது. | दुःखितौ | கஷ்டப்படுகின்றவை |
| हि | ஆகையால்தான் | दृष्ट्वा | கண்டு [களாய் |
| मम | எனது | अहं | நான் |
| कायात् | சரீரத்திலிருந்து | परितप्ये | மிக்க வருந்துகின் றேன். |

यस्याः पुत्रसहस्रैस्तु कृत्स्नं व्याप्तमिदं जगत् । तां दृष्ट्वा रुदतीं शक्रो न सुतान्मन्यते परम्॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|----------|--------------------------------------|
| इदं | “ இந்த | रुदतीं | அழுகின்றவளாய் |
| कृत्स्नं | சகல | दृष्ट्वा | கவனித்த |
| जगत् | உலகமும் | शक्रः | இந்திரன் |
| यस्याः | எவளது | सुतात् | ஒளரஸ புதல்வனைக் காட்டிலும் |
| पुत्रसहस्रैः | அனேக புத்திரர் களால் | परं न | அருமையானதொன் றில்லையென |
| व्याप्तं | வியாபிக்கப்பட்டிருக் கிறதோ | मन्यते | தனக்குள்ளேயே நினை த்துக்கொண்டனர். |
| तां तु | அவளையும் | | |

सदाऽप्रतिमवृत्ताया लोकधारणकाम्यया । श्रीमत्या गुणनित्यायाः स्वभावपरिवेषया ॥
यस्याः पुत्रसहस्राणि साऽपि शोचति कामधुक् । किं पुनर्या विना रामं कौसल्या वर्तयिष्यति ॥

सदा "எப்பொழுதும்
अप्रतिमवृत्ताया: ஒப்புயர்வற்ற அனுஷ்டானமுடையதும்,
श्रीमत्या: புண்ணியமானதும்,
गुणनित्याया: உத்தமகுணங்களிற் பற்றுடையதுமாகிய
यस्या: எதற்கு
लोकधारण- } உலகைத்தாங்கவேண்டு
काम्यया } மென்ற ஆசையாலும்,
स्वभावपरिवेषया { பிறவிக்குணமான
राक्षीக்கும் தன்மை
யாலும்,

पुत्रसहस्राणि ஆயிரக்கணக்கான
सा அந்த[புதல்வர்களோ,
कामधुक् अपि कामதேனுவும்
शोचति துக்கிக்கின்றது.
पुन: இனி
रामं विना रामனைவிட்டுப்பிரிந்த
या எவளோ
कौसल्या அந்த கோஸலாதேவி
किं எங்ஙனம் [யார்
वर्तयिष्यति உயிருடனிருக்கப்
போகிறாள்?

एकपुत्रा च साध्वी च विवत्सेयं त्वया कृता । तस्मात्त्वं सततं दुःखं प्रेत्य चेह च लप्स्यसे॥

एकपुत्रा च "ஒரே புதல்வனைப்
பெற்றவனும்,
साध्वी च புண்ணியச் செயலு
டையவளுமாகிய
इयं இவள்
त्वया உன்னால்
विवत्सा புத்திரனை விட்டுப்
பிரிந்தவளாய்

कृता செய்யப்பட்டாள்.
तस्मात् அக்காரணத்தால்
त्वं நீ
इह च இங்கும்,
प्रेत्य च இறந்தும்
सततं दुःखं சதா கஷ்டத்தை
लप्स्यसे அனுபவிக்கப்போ
கின்றாய்.

अहं ह्यपचितिं भ्रातुः पितुश्च सकलामिमाम् । वर्धनं यशसश्चापि करिष्यामि न संशयः ॥

अहं हि "நானே
पितुः தந்தையாருக்கு
इमां இந்த
अपचितिं பூஜை
सकलां च எல்லாவற்றையும்

भ्रातुः தமையனரின்
यशसः அன்பை
वर्धनं अपि च வளரச்செய்வதையும்
करिष्यामि செய்யப்போகிறேன்.
संशयः न சம்சயம் வேண்டாம்.

आनाययित्वा तनयं कौसल्याया महाद्युतिम् । स्वयमेव प्रवेक्ष्यामि वनं मुनिनिषेवितम् ॥

कौसल्याया: "கோஸலாதேவியாரது
महाद्युतिं தேஜோமயமாய்
விளங்கும்
तनयं திருக்குமாரனை

आनाययित्वा அழைத்துவரச்
स्वयं एव நான்தான் [செய்து,
मुनिनिषेवितं மஹர்ஷிகள் வசிக்கும்
वनं காட்டிற்கு
प्रवेक्ष्यामि புகப்போகிறேன்.

न ह्यहं पापसङ्कल्पे पापे पापं त्वया कृतम् । शक्तो धारयितुं पौरैरश्रुकण्ठैर्निरीक्षितः ॥

पापसङ्कल्पे "பாபச்செயலில்
துணிந்துவிட்ட
पापे பாபமே!

अहं நான்
त्वया हि உன்னாலேயே
कृतं செய்யப்பட்ட
पापं பாபத்தை

| | | | |
|----------|-------------------------------------|------------|-------------------|
| अशुक्लैः | தொண்டையில் | निरीक्षितः | பார்க்கப்பட்டவனாக |
| पौरैः | நீரடைந்த பட்டணத்து ஆனங்க ளால் | धारयितुं | ஸஹிக்க |
| | | शक्तः न | சக்தனாகேன். |

सा त्वमग्निं प्रविश वा स्वयं वा विश दण्डकान् ।

रज्जुं बद्ध्वाऽथवा कण्ठे न हि तेऽन्यत्परायणम्

॥ ३३ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|----------|----------------|
| सा | “இந்த | अथवा | இல்லையேல் |
| त्वं | நீ | स्वयं हि | தானாகவே |
| अग्निं वा | அக்னியிலாவது | दण्डकान् | தண்டகாவனத்தில் |
| प्रविश | விழுந்துவிடு. | विश | புகுந்துவிடு. |
| कण्ठे | கழுத்தில் | ते | உனக்கு |
| रज्जुं | கயிறை | अन्यत् | வேறொரு |
| बद्ध्वा वा | சுருக்கிட்டுக்கொண் டாவது சா. | परायणं | கதி |
| | | न | இல்லை. |

अहमप्यवनिं प्राप्ते रामे सत्यपराक्रमे । कृतकृत्यो भविष्यामि विप्रवासितकल्मषः ॥ ३४ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------|------------------|-------------------------------|
| सत्यपराक्रमे | “வீணாகாத பராக்கரம் முடைய | अहं अपि | நானும் |
| रामे | ஸ்ரீராமர் | विप्रवासितकल्मषः | பாபமொழிந்தவனாய் |
| अवनिं | உலகை | कृतकृत्यः | மனோரதம் கைகூடப் பெற்றவனாய் |
| प्राप्ते | ஏற்றுக்கொண்டபின் | भविष्यामि | ஆவேன்.” |

इति नाग इवारण्ये तोमराङ्कुशचोदितः । पपात भुवि संकुद्धो निःश्वसन्निव पन्नगः ॥

| | | | |
|------------------|---|-----------|--------------------|
| इति अरण्ये | இங்ஙனம் கூறிவிட்டு, காட்டில் | संकुद्धः | மிக்க கோபம் கொண் |
| तोमराङ्कुशचोदितः | { தோமரத்தாலும் அங் குசத்தாலும் ஹிம் ஸையுண்ட யானைபோல் | पन्नगः इव | பாம்புபோல் [டவராய் |
| नागः इव | | निःश्वसन् | சிறிக்கொண்டு, |
| | | भुवि | தரையில் |
| | | पपात | விழுந்துவிட்டனர். |

संरक्तनेत्रः शिथिलाम्बरस्तदा विधूतसर्वाभरणः परन्तपः ।

बभूव भूमौ पतितो नृपात्मजः शचीपतेः केतुरिवोत्सवक्षये

॥ ३६ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|----------------|--|
| भूमौ | தரையில் | शिथिलाम्बरः | கலைந்த வஸ்திரத்தை யுடையவராய் |
| पतितः | விழுந்துகிடந்த | विधूतसर्वाभरणः | { சகல ஆபரணங்களை யும் கழற்றி எறிந்த வராய் |
| परन्तपः | சத்ருக்களை தபிக்கச் செய்யும் | उत्सवक्षये | உத்ஸவத்தின் முடிவில் |
| नृपात्मजः | சக்கிரவர்த்திகுமாரர் | शचीपतेः | இந்திரனது |
| तदा | அப்பொழுது | केतुः इव | தவஜமென |
| संरक्तनेत्रः | சிவந்த கண்களுற்ற வராய் | बभूव | விளங்கினார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे चतुःसप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5299



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 2944

पञ्चसप्ततितमः सर्गः—எழுபத்தைந்தாவது ஸர்க்கம் || ௩௫ ||

भरतशपथः—பரதப் பிரதிக்கை.

दीर्घकालात्समुत्थाय संज्ञां लब्ध्वा च वीर्यवान् । नेत्राभ्यामश्रुपूर्णाभ्यां दीनामुद्दीक्ष्य मातरम् ॥
सोऽमात्यमध्ये भरतो जननीमभ्यकुत्सयत् ॥ १ ॥

| | | | |
|------------------|------------------|--------------|--|
| वीर्यवान् | தையசாலியாகும் | दीनां | மனவேதனைப்பட்டுக் கொண்டிருக்கும் |
| सः | அந்த | | |
| भरतः | பரதர் | मातरं | தாயை, |
| दीर्घकालात् | நெடும்பொழுது | उद्दीक्ष्य | நிமிர்ந்து பார்த்து |
| संज्ञां | பாக்கையை [சென்று | जननीं | தாயைப்பற்றி |
| लब्ध्वा च | அடைந்தவுடன், | अमात्यमध्ये | மந்திரிமார்கள் முன் னிலையில் |
| समुत्थाय | எழுந்து, | | |
| अश्रुपूर्णाभ्यां | கண்ணீர் ததும்பிய | अभ्यकुत्सयत् | பின்வருமாறு நிஷ்டர மாய்ப்பேசினார் : |
| नेत्राभ्यां | இரு கண்களாலும், | | |

राज्यं न कामये जातु मन्त्रये नापि मातरम् । अभिषेकं न जानामि योऽभूद्राज्ञा समीक्षितः ॥

| | | | |
|------------|------------------------------|-----------|-------------------------|
| राज्यं | “ ராஜ்யத்தை | समीक्षितः | உத்தேசிக்கப்பட்டு |
| जातु | ஒருபொழுதும் | अभूत् | இருந்தது |
| कामये न | நான் பொருட்படுத்த வில்லை. | यः | எதுவோ அந்த |
| | | अभिषेकं | அபிஷேகத்தைப் பற்றியே |
| मातरं अपि | தாயிடத்திலும் | | |
| मन्त्रये न | பேசவுமில்லை. | जानामि न | நான் ஒன்றும் |
| राज्ञा | சக்கிரவர்த்தியாரால் | | அறியேன். |

विप्रकृष्टे ह्यहं देशे शत्रुघ्नसहितोऽवसम् ॥ ३ ॥

| | | | |
|-------------|--------|---------------|----------------|
| अहं | “ நான் | देशे | தேசத்தில் |
| | | शत्रुघ्नसहितः | சத்ருக்ன னுடன் |
| विप्रकृष्टे | தூர | अवसं हि | வஸித்தேனன்றோ ? |

वनवासं न जानामि रामस्याहं महात्मनः । विवासनं च सौमित्रेः सीतायाश्च यथाऽभवत् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------|----------|-------------------|
| रामस्य | “ ஸ்ரீராமருக்கும், | अभवत् | ஏற்பட்டிருக்கிறது |
| सौमित्रेः | லக்ஷ்மணனுக்கும், | यथा | என்பதையும், |
| सीतायाः च | வீதாப்பிராட்டியா ருக்கும், | महात्मनः | மஹாத்மாவிற்கு |
| | | वनवासं च | வனவாஸமென்பதை |
| विवासनं | நாடுகடத்தப்பட்டி- ருப்பது | अहं | நான் [யும், |
| | | जानामि न | அறியேன்.” |

तथैव क्रोशतस्तस्य भरतस्य महात्मनः । कौसल्या शब्दमाज्ञाय सुमित्रां चेदमब्रवीत् ॥

तथा एव அவ்வண்ணமே
 क्रोशतः கதறும்
 महात्मनः மஹாத்மாவான
 तस्य அந்த
 भरतस्य பரதருடைய
 शब्दं குரலை

कौसल्या च கோசலாதேவியாரும்
 आज्ञाय கேட்டு,
 सुमित्रां சுமித்திரையைப்
 பார்த்து,
 इदं பின்வருமாறு
 अब्रवीत् மொழிந்தனள்:

आगतः क्रूरकार्यायाः कैकेय्या भरतः सुतः । तमहं द्रष्टुमिच्छामि भरतं दीर्घदर्शिनम् ॥

क्रूरकार्यायाः “கொடிய செயலை
 யுடைய
 कैकेय्याः கைகேயியினது
 सुतः புதல்வனாகிய
 भरतः பரதன்
 आगतः வந்திருக்கிறான்.

अहं நான்
 दीर्घदर्शिनं முன்னாலோசனை
 तं அந்த யுடைய
 भरतं பரதனை
 द्रष्टुं பார்க்க
 इच्छामि வேண்டும்.”

एवमुक्त्वा सुमित्रां सा विवर्णा मलिना कृशा । प्रतस्थे भरतो यत्र वेपमाना विचेतना ॥

सा அவள்
 विवर्णा ஒளிகுன்றியவளாய்,
 मलिना அழுக்கடைந்தவளாய்,
 कृशा தள்ளாதவளாய்,
 वेपमाना உடல் நடுங்கியவளாய்,
 विचेतना அறிவிழந்தவளாய்,
 एवं மேற்கண்டவாறு

सुमित्रां சுமித்திரையினிடத்
 उक्त्वा சொல்லிவிட்டு, [தில்
 भरतः பரதர்
 यत्र எங்கிருந்தனரோ
 அவ்விடத்திற்கு
 प्रतस्थे புறப்பட்டோர்
 போயினள்.

स तु रामानुजश्चापि शत्रुघ्नसहितस्ततः । प्रतस्थे भरतो यत्र कौसल्याया निवेशनम् ॥

तु அதேசமயத்தில்
 रामानुजः ஸ்ரீராமர் தம்பியாகும்
 सः அந்த
 भरतः अपि பரதரும்,
 शत्रुघ्नसहितः च சத்ருக்ளருடன்

ततः அவ்விடத்திலிருந்து
 कौसल्यायाः கோசலாதேவியாரது
 निवेशनं இருக்குமிடம்
 यत्र எதுவோ அதற்கு
 प्रतस्थे புறப்பட்டார்.

ततः शत्रुघ्नभरतौ कौसल्यां प्रेक्ष्य दुःखितौ । पर्यष्वजेतां दुःखार्तां पतितां नष्टचेतनाम् ॥ ९ ॥

ततः அப்பொழுது
 दुःखितौ துக்கப்பட்டு
 रुदन्तौ அழுதுகொண்டிருந்த
 शत्रुघ्नभरतौ சத்ருக்ளரும், பரத
 दुःखात् கஷ்டத்தால் [ரும்
 दुःखार्तां மனவேதனையுற்று
 नष्टचेतनां அறிவிழந்து
 पतितां கீழே விழுந்து

रुदीं அழுதுகொண்டிருக்கும்
 मनस्विनीं நன்மனத்தையுடைய
 आर्यां உத்தமியாகிய
 कौसल्यां கோசலாதேவியாரை
 प्रेक्ष्य வழியில் கண்டு
 सनेत्य கிட்டி
 पर्यष्वजेताम् கட்டியணைத்துக்
 கொண்டார்கள்.

भरतं प्रत्युवाचेदं कौसल्या भृशदुःखिता ॥ १० ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|------------|-----------------|
| भृशदुःखिता | மிக்க மனவேதனைப் பட்டுக்கொண்டிருந்த | भरतं | பா தனை பார்த்து |
| कौसल्या | கோசலாதேவியார் | इदं | பின் வருமாறு |
| | | प्रत्युवाच | எகினாள்: |

इदं ते राज्यकामस्य राज्यं प्राप्तमकण्टकम् । संप्राप्तं बत कैकेय्या शीघ्रं क्रूरेण कर्मणा ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|-------------|-----------------|
| कैकेय्या | “கைகேயியால் | राज्यं | ராஜ்யமானது |
| क्रूरेण | கொடிய | अकण्टकं | இடையூற்றற்றதாய் |
| कर्मणा | தொழிலால் | इदं | இப்பொழுதே |
| राज्यकामस्य | ராஜ்யத்திலாசை | शीघ्रं | சுடுதியிலேயே |
| ते | உனக்கு [கொண்ட | सम्प्राप्तं | கிடைத்தது. |
| प्राप्तं | கொடுக்கப்பட்டதா | बत | என்ன ஆச்சரியம்! |
| | கிய | | |

प्रस्थाप्य चीरवसनं पुत्रं मे वनवासिनम् । कैकेयी कं गुणं तत्र पश्यति क्रूरदर्शिनी ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|------------|----------------|
| क्रूरदर्शिनी | “கொடிய எண்ண | वनवासिनं | வனவாஸியாய் |
| कैकेयी | கைகேயி, [முடைய | प्रस्थाप्य | அனுப்பிவிட்டு, |
| मे | எனது | तत्र | இதில் |
| पुत्रं | திருக்குமாரனை | कं गुणं | என்ன குணத்தை |
| चीरवसनं | மரவுரி உடுத்தவனாய், | पश्यति | காண்கிறாள்? |

क्षिप्रं मामपि कैकेयी प्रस्थापयितुमर्हति । हिरण्यनाभो यत्रास्ते सुतो मे सुमहायशाः ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|---------------|--------------------------|
| कैकेयी | “கைகேயி | सुतः | புதல்வன் |
| मां अपि | என்னையும், | आस्ते | இருக்கிறது |
| मे | எனது | यत्र | எங்கோ அவ்விடத் திற்கு |
| हिरण्यनाभः | பொன்மேனியுடைய | क्षिप्रं | இப்பொழுதே |
| | வனும், | प्रस्थापयितुं | அனுப்பிவிட |
| सुमहायशाः | மிக்க புகழ்பெற்றவனு மான | अर्हति | தீர்மானிக்கவேண்டும். |

अथवा स्वयमेवाहं सुमित्रानुचरा सुखम् । अग्निहोत्रं पुरस्कृत्य प्रस्थास्ये यत्र राघवः ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------|-------------|--------------------|
| अथवा | “ இல்லையேல் | अग्निहोत्रं | நித்யா க்னிஹோத்திர |
| अहं एव | நானே | | அக்னியை |
| सुमित्रानुचरा | சுமித்திரையுடன் | स्वयं | தானாகவே |
| राघवः | ஸ்ரீராமன் | पुरस्कृत्य | எடுத்துக்கொண்டு |
| यत्र | எங்கோ அவ்விடத் திற்கு | सुखं | இஷ்டப்படி |
| | | प्रस्थास्ये | போய்விடுகிறேன். |

कामं वा स्वयमेवाद्य तत्र मां नेतुमर्हसि । यत्रासौ पुरुषव्याघ्रः पुत्रो मे तप्यते तपः ॥

காமம் வா “இதிலும் சிறந்தது
स्वयं एव நீயே [எதெனில்
अद्य இப்பொழுதே
यत्र எவ்விடத்தில்
मे எனது
असौ இந்த
पुरुषव्याघ्रः புருஷோத்தமனாகிய

புரு: புதல்வன்
तपः தவத்தை
तप्यते புரிந்துகொண்டிருக்கிறானே
तत्र அவ்விடத்திற்கு
मां என்னை
नेतु அழைத்துப்போக
अर्हसि நிச்சயிப்பாயாக.

इदं हि तव विस्तीर्णं धनधान्यसमाचितम् । हस्त्यश्वरथसंपूर्णं राज्यं निर्यातितं तथा ॥

हि “எனெனில்
तथा அவளால்
धनधान्यसमाचितं தனதான்யங்களால்
निरम्बपेपेற்றதும்,
हस्त्यश्वरथसंपूर्णं { யானை, குதிரை, ரதங்கள்
இவைகளால் நிறையப்பெற்றதுமாகிய

इदं இந்த
विस्तीर्णं மகத்தாகிய
राज्यं ராஜ்யமானது
तव உனக்கு
निर्यातितम् கொடுக்கப்பட்டது.”

इत्यादि बहुभिर्वाक्यैः क्रूरैः संभर्त्सितोऽनघः । विव्यथे भरतोऽतीव व्रणे तुद्येव सूचिना ॥

व्रणे புண்ணில்
सूचिना ஊசியால்
तुद्य इव குத்தியதுபோல்
इत्यादि மேற்கண்டவண்ணமாய்

वाक्यैः சொற்கொண்டு
संभर्त्सितः மிகவுமிகழந்து பேசப்பட்ட
अनघः பாபரஹிதராகிய
भरतः பரதர்
अतीव மிகவும்
विव्यथे துன்புற்றார்.

पपात चरणौ तस्यास्तदा संभ्रान्तचेतनः । विलप्य बहुधाऽसंज्ञो लब्धसंज्ञस्ततः स्थितः ॥

तदा அப்பொழுது
संभ्रान्तचेतनः புண்பட்டமனத்தராய்
बहुधा பலவாறு
विलप्य புலம்பி
असंज्ञः ப்ரக்ஞையற்றவராகி
तस्याः அவளது

चरणौ திருவடிகளில்
पपात விழுந்தார்.
ततः அதன்மேல்
लब्धसंज्ञः மூர்ச்சை தெளிந்தவராய்
स्थितः எழுந்து நின்றனர்.

एवं विलपमानां तां प्राञ्जलिर्भरतस्तदा । कौसल्यां प्रत्युवाचेदं शोकैर्बहुभिरावृताम् ॥

भरतः பரதர்
प्राञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தராகி
बहुभिः शोकैः பல கஷ்டங்களால்
आवृतां துன்புற்றவளாய்
एवं மேற்கண்டவாறு
विलपमानां பேசிய

तां அந்த
कौसल्यां கோசலாதேவியாரைப் பார்த்து
तदा அப்பொழுது
इदं பின்வருமாறு
प्रत्युवाच பதிலுரைத்தனர்:

आर्ये कस्मादजानन्तं गर्हसे मामकिल्बिषम् । विपुलां च मम प्रीतिं स्थिरां जानासि राघवे॥

| | | | |
|-----------|----------------|-----------|------------------|
| आर्ये | “ ஆர்யே! | राघवे | ஸ்ரீராமரிடத்தில் |
| अजानन्तं | ஒன்றுமறியாத | मम | எனது |
| अकिल्बिषं | நிரபராதியாகிய | विपुलां | அத்தியந்த |
| मां | என்னை | स्थिरां | சஞ்சலமற்ற |
| कस्मात् | ஏன் | प्रीतिं च | பக்திமையையும் |
| गर्हसे | பழிக்கின்றீர்? | जानासि | அறிவீர். |

कृता शास्त्रानुगा बुद्धिर्मा भूतस्य कदाचन । सत्यसन्धः सतां श्रेष्ठो यस्यार्योऽनुमते गतः॥

| | | | |
|-----------|---------------------|--------------|-------------------|
| सत्यसन्धः | “ஸத்தியஸந்தரும், | तस्य | அவனுடைய |
| सतां | புண்யாத்மாக்களில் | बुद्धिः | புத்தி |
| श्रेष्ठः | உத்தமருமாகிய | शास्त्रानुगा | சாஸ்திரானுகுணமாய் |
| आर्यः | பெரியவர், | कृता | செய்யப்பட்டதாய் |
| यस्य | எவனுடைய | कदाचन | ஒருபொழுதும் |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | मा भूत | உண்டாகவேண்டாம். |
| गतः | சென்றனரோ, | | |

प्रेष्यं पापीयसां यातु सूर्यं च प्रति मेहतु । हन्तु पादेन गां सुप्तां यस्यार्योऽनुमते गतः॥

| | | | |
|----------|---------------------|--------------|----------------------|
| यस्य | “எவனது | सूर्यं प्रति | சூரியன் முன்னிலையில் |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | मेहतु | ஜல, மல, விஸர்ஜனம் |
| आर्यः | பெரியவர் | | செய்யபட்டும். |
| गतः | சென்றாரோ, அவன் | सुप्तां | உறங்கும் |
| पापीयसां | பாபிகளுக்குரிய | गां च | பசுவையும் |
| प्रेष्यं | அடிமைத்தனத்தை | पादेन | காலால் |
| यातु | அடையட்டும். | हन्तु | உதைக்கட்டும். |

परिपालयमानस्य राज्ञो भूतानि पुत्रवत् । ततस्तं द्रुह्यतां पापं यस्यार्योऽनुमते गतः॥२३॥

| | | | |
|----------|----------------------|---------------|--------------------------------|
| आर्यः | “பெரியவர் | राज्ञः | ஓர் மன்னன் |
| यस्य | எவனது | परिपालयमानस्य | பரிபாலித்துக்கொண்டிருக்கையில், |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | तं | அவனுக்கு |
| गतः | சென்றாரோ, அவன் | पापं | அநியாயமாய் |
| ततः | அக்காரணத்தால், | | தீங்கு செய்யபட்டும். |
| भूतानि | பிராணிகளை | द्रुह्यताम् | (ஆத்மநேபதம் |
| पुत्रवत् | தன் பிள்ளைகளைப் போல் | | ஆர்ஷம்) |

कारयित्वा महत्कर्म भर्ता भृत्यमनर्थकम् । अधर्मो योऽस्य सोऽस्यास्तु यस्यार्योऽनुमते गतः॥

| | | | |
|--------|---------------------|--------|-----------------|
| यस्य | “எவனது | गतः | சென்றாரோ, |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | भर्ता | ஓர் யஜமானன் |
| आर्यः | பெரியவர் | भृत्यं | கூலியாளிடத்தில் |

| | |
|-----------|------------------------------|
| महत् | கஷ்டமாகிய |
| कर्म | தொழிலை |
| अनर्थकं | கூலிகொடாமலே |
| कारयित्वा | செய்வித்துக்கொள்ளு கிறானே |

| | |
|-----------|--------------|
| अस्य | இவனுக்கு |
| यः अधर्मः | எந்தப்பாபமோ, |
| सः | அது |
| अस्य | இவனுக்கும் |
| अस्तु | ஏற்பட்டும். |

बलिषड्भागमुद्धृत्य नृपस्यारक्षतः प्रजाः । अधर्मो योऽस्य सोऽस्यास्तु यस्यार्योऽनुमते गतः॥

| | |
|------------|---------------------|
| यस्य | “எவனது |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் |
| आर्यः | பெரியவர் |
| गतः | சென்றாரோ |
| अस्य | இவனுக்கு, |
| बलिषड्भागं | ஆறிலொருபாக வரியை |
| उद्धृत्य | வாங்கிக்கொண்டு |

| | |
|---------|-------------|
| प्रजाः | ப்ரஜைகளை |
| अरक्षतः | பாதுகாவாத |
| अस्य | இந்த |
| नृपस्य | மன்னனுக்கு |
| यः | என்ன |
| अधर्मः | பாபமோ, |
| सः | அது |
| अस्तु | ஏற்பட்டும். |

संश्रुत्य च तपस्विभ्यः सत्रे वै यज्ञदक्षिणाम् । तां विप्रलपतां पापं यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | |
|------------|---------------------|
| यस्य | “எவனது |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் |
| आर्यः | பெரியவர் |
| गतः | சென்றாரோ, அவன் |
| सत्रे | யாகத்தில் |
| तपस्विभ्यः | தவசிகளுக்கு |

| | |
|--------------|---------------|
| यज्ञदक्षिणां | யாகதக்திணையை |
| संश्रुत्य | வாக்களித்து |
| च | பிறகு |
| तां वै | அதையே |
| पापं | அநியாயமாய் |
| विप्रलपताम् | மறுக்கட்டும். |

हस्त्यश्वरथसंवाधे युद्धे शस्त्रसमाकुले । मा स्म कार्षीत्सतां धर्मं यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | |
|---------------|--------------------------|
| यस्य | “எவனது |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் |
| आर्यः | பெரியவர் |
| गतः | சென்றாரோ, அவன் |
| हस्त्यश्वरथ-} | யானை, குதிரை, தேர் |
| संवाधे } | இவைகளால் நிறைந் ததும் |

| | |
|---------------|----------------------------|
| शस्त्रसमाकुले | ஆயுதங்கள் நிறைந்த துமான |
| युद्धे | போரில் |
| सतां | வீரர்களுடைய |
| धर्मं | பதவியை |
| मा कार्षीत् | அடையாமலிருக்கட் டும். |

उपदिष्टं सुसूक्ष्मार्थं शास्त्रं यत्नेन धीमता । स नाशयतु दुष्टात्मा यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | |
|------------|---------------------|
| यस्य | “எவனது |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் |
| आर्यः | பெரியவர் |
| गतः | சென்றாரோ, |
| सः | அந்த |
| दुष्टात्मा | பாபி |

| | |
|----------------|------------------|
| धीमता | ஞானியால் |
| यत्नेन | சரத்தையுடன் |
| उपदिष्टं | உபதேசிக்கப்பட்ட |
| सुसूक्ष्मार्थं | துண்ணிய பொருளு |
| शास्त्रं | சாஸ்திரத்தை [டைய |
| नाशयतु | மறக்கட்டும். |

मा च तं व्यूढबाह्वंसं चन्द्रभास्करतेजसम् । द्राक्षीद्राज्यस्थमासीनं यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | | | |
|---------------|---|---------------------|---------------------|
| यस्य | “ எவனது | चन्द्रभास्करतेजसं च | சந்திர சூரிய ப்ரகாச |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | | முடையவருமாகிய |
| आर्यः | பெரியவர் | तं | அவரை |
| गतः | சென்றாரோ, அவன் | राज्यस्थं | ராஜ்யத்தையடைந்து |
| व्यूढबाह्वंसं | { பெருத்த கைகளையும் தோள்களையுமுடையவரும், | आसीनं | வீற்றிருக்கிறவராய் |
| | | मा द्राक्षीत् | பாராதிருக்கட்டும். |

पायसं कृसरं छागं वृथा सोऽश्नातु निर्घृणः । गुरुंश्चाप्यवजानातु यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | | | |
|--------|---------------------|------------|-----------------|
| यस्य | எவனது | छागं च | ஆட்டு மாம்ஸத்தை |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | | யும், |
| आर्यः | பெரியவர் | वृथा | நிமித்தமின்றி |
| गतः | சென்றனாரோ, | निर्घृणः | மானமிழந்தவனாக |
| सः | அவன், | अश्नातु | புசிக்கட்டும். |
| पायसं | பாயஸத்தையும், | गुरुन् अपि | பெரியோர்களையும் |
| कृसरं | திலோதணத்தையும், | अवजानातु | அவமதிக்கட்டும். |

गाश्च स्पृशतु पादेन गुरुन् परिवदेत च । मित्रे द्रुह्येत सोऽत्यन्तं यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | | | |
|--------|---------------------|-----------|--|
| यस्य | “ எவனது | स्पृशतु | உதைக்கட்டும். |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | गुरुन् च | பெரியோர்களையும் |
| आर्यः | பெரியவர் | परिवदेत | தூஷிக்கக்கடவன். |
| गतः | சென்றனாரோ, | मित्रे च | மித்திரன் விஷயத்தில் |
| सः | அவன் | अत्यन्तं | முற்றிலும் |
| गाः | பசுக்களை | द्रुह्येत | { துரோகம் செய்யக் கடவன். (ஆத்மனே பதம் ஆர்ஷம்). |
| पादेन | காலால் | | |

विश्वासात्कथितं किञ्चित्परिवादं मिथः क्वचित् । विवृणोतु स दुष्टात्मा यस्यार्योऽनुमते गतः॥

| | | | |
|------------|---------------------|----------|---------------|
| यस्य | “ எவனது | मिथः | ரகசியமாக |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | किञ्चित् | கொஞ்சம் |
| आर्यः | பெரியவர் | कथितं | சொல்லப்பட்ட |
| गतः | சென்றனாரோ | परिवादं | அபவாதத்தை |
| सः | அந்த | क्वचित् | எங்காவது |
| दुष्टात्मा | துஷ்டாத்மா | विवृणोतु | வெளியிட்டும். |
| विश्वासात् | நம்பிக்கையால் | | |

अकर्ता चाकृतज्ञश्च त्यक्तात्मा निरपत्रपः । लोके भवतु विद्विष्टो यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

यस्य “எவனது
அனுமते விருப்பத்தின்பேரில்
आर्यः பெரியவர்
गतः சென்றனரோ, அவன்
लोके உலகில்
अकृतज्ञः செய்நன்றியற்றவனாய்
त्यक्तात्मा ஆகம்ஹத்தி செய்து
கொண்டவனாய்,

निरपत्रपः நாணமற்றவனாய்,
विद्विष्टः च யாவராலும் வெறுக்க
கப்பட்டவனாய்,
अकर्ता च எத்தொழிலுக்கும்
அனாஹனாய்,
भवतु ஆகட்டும்.

पुत्रदारैश्च भृत्यैश्च स्वगृहे परिवारितः । स एको मृष्टपश्चात् यस्यार्योऽनुमते गतः ॥ ३४॥

यस्य “எவனது
அனுமते விருப்பத்தின்பேரில்
आर्यः பெரியவர்
गतः சென்றனரோ,
सः அவன்,
स्वगृहे தன் வீட்டில்
पुत्रदारैः புதல்வன், மனைவி
இவர்களாலும்,

भृत्यैः च {தன் ஸம்ரக்ஷணையி
லுள்ள மற்றவர்க
ளாலும்,
परिवारितः சூழப்பட்டவனாய்
एकः च தானொருவனே
मृष्टं நல்ல உணவை
अश्नात् புசிக்கட்டும்.

अप्राप्य सदृशान्दाराननपत्यः प्रमीयताम् । अनवाप्य क्रियां धर्म्यां यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

यस्य “எவனது
அனுமते விருப்பத்தின்பேரில்
आर्यः பெரியவர்
गतः சென்றனரோ, அவன்
सदृशान् என்ற
दारान् மனைவியை

अप्राप्य பெறாமல்
अनपत्यः சந்ததியற்றவனாய்
धर्म्यां தருமநெறிவழுவாத
क्रियां கருமத்தை
अनवाप्य அடையப்பெறாது
प्रमीयताम् சாகட்டும்.

माऽऽत्मनः सन्ततिं द्राक्षीत्स्वेषु दारेषु दुःखितः । आयुः समग्रमप्राप्य यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

यस्य “எவனது
அனுமते விருப்பத்தின்பேரில்
आर्यः பெரியவர்
गतः சென்றனரோ, அவன்
आयुः ஆயுளை
समग्रं பூர்ணமாக

अप्राप्य அடையாமல்
दुःखितः துயருற்றவனாய்
स्वेषु दारेषु தன் மனைவியினிடத்
आत्मनः தன் [தில்
सन्ततिं சந்ததியை
मा द्राक्षीत् காணும்போகட்டும்.

राजस्त्रीबालवृद्धानां वधे यत्पापमुच्यते । भृत्यत्यागे च यत्पापं तत्पापं प्रतिपद्यताम् ॥ ३५॥

राजस्त्रीबाल-} “அரசன், ஸ்திரீ, குழந்
वृद्धानां } தை, கிழவர் இவர்
वधे } கொலையில் [களின்
यत् पापं } எந்தப் பாபம்
उच्यते } விதிக்கப்பட்டிருக்கிற
கோ, (அநையும)

भृत्यत्यागे சம்ரக்ஷிக்கவேண்டிய
வர்களைக்கைவிடுவதில்
यत् पापं } எந்தப் பாபமோ
तत् } அந்த
पापं च } பாபத்தையும்,
प्रतिपद्यताम् } அடையட்டும்.

लाक्षया मधुमांसेन लोहेन च विषेण च । सदैव विभृयाद्भृत्यान् यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|----------|-------------------|
| यस्य | “ எவனது | विषेण च | விஷத்தாலும் வரும் |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | लोहेन | நாணயத்தைக் |
| आर्यः | பெரியவர் | | கொண்டு |
| गतः | சென்றனரோ, அவன் | सदा एव | எக்காலத்திலும் |
| लाक्षया | அரக்காலும் | भृत्यान् | போஷிக்கவேண்டிய |
| मधुमांसेन च | கள், மாம்சம் இவை | | வர்களை |
| | களாலும் | विभृयात् | போஷிக்கட்டும். |

संग्रामे समुपोढे तु शत्रुपक्षे भयङ्करे । पलायमानो वध्येत यस्यार्योऽनुमते गतः ॥ ३९ ॥

| | | | |
|---------|---------------------|------------|--------------------|
| यस्य | “ எவனது | शत्रुपक्षे | எதிரிகளையுடைய |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | संग्रामे | போர் |
| आर्यः | பெரியவர் | समुपोढे तु | நெர்ந்திருக்கையில் |
| गतः | சென்றனரோ, அவன் | पलायमानः | பயந்தோடுபவனாக |
| भयङ्करे | குரூரமாகிய | वध्येत | கொல்லப்படக் |
| | | | கடவன். |

कपालपाणिः पृथिवीमटां चीरसंवृतः । भिक्षमाणो यथोन्मत्तो यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | | | |
|---------|---------------------|--------------|----------------------|
| यस्य | “ எவனது | चीरसंवृतः | கந்தையுடுத்தவனாய் |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | कपालपाणिः | கப்பரையேந்தியவ |
| आर्यः | பெரியவர் | | னாய் |
| गतः | சென்றனரோ, அவன் | भिक्षमाणः | பிச்சையெடுப்பவனாய் |
| पृथिवीं | பூமியில் | उन्मत्तः यथा | பேய்பிடித்தவன்போல் |
| | | अटताम् | சுற்றித்திரியட்டும். |

मद्ये प्रसक्तो भवतु स्त्रीष्वक्षेषु च नित्यशः । कामक्रोधाभिभूतश्च यस्यार्योऽनुमतो गतः ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-----------------|-------------------|
| यस्य | “ எவனது | अक्षेषु च | சூதாட்டங்களிலும், |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | नित्यशः | எப்பொழுதும் |
| आर्यः | பெரியவர் | प्रसक्तः | ஆஸக்தியுடையவனாய் |
| गतः | சென்றனரோ, அவன் | कामक्रोधाभिभूतः | காமக்ரோதங்களுக் |
| मद्ये | குடியிலும், | | கீடுபட்டவனாய் |
| स्त्रीषु च | பெண்களிடத்திலும், | भवतु | ஆகட்டும் |

मा स्म धर्मे मनो भूयादधर्मं सुनिषेवताम् । अपात्रवर्णी भवतु यस्यार्योऽनुमते गतः ॥ ४२ ॥

| | | | |
|--------|---------------------|---------------|------------------|
| यस्य | “ எவனது | मा स्म भूयात् | செல்லவேண்டாம். |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | अधर्मं | அதர்மத்தில் |
| आर्यः | பெரியவர் | सुनिषेवतां | சூழுகொள்ளட்டும். |
| गतः | சென்றனரோ, அவ | अपात्रवर्णी | அபாத்நிரத்தில் |
| धर्मे | தர்மத்தில் [னுக்கு | | பொழிபவனாக |
| मनः | மனம் | भवतु | ஆகட்டும். |

संचितान्यस्य वित्तानि विविधानि सहस्रशः । दस्युभिर्विप्रलुप्यन्तां यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | | | |
|---------|---------------------|------------------|-----------------------|
| यस्य | “எவனது | சங்கிதானி | சேர்த்து வைக்கப் பட்ட |
| அனுமதே | விருப்பத்தின்பேரில் | வिवிதானி | பற்பல |
| ஆர்ய: | பெரியவர் | வित्तானி | பொருள்கள் |
| गत: | சென்றனரோ, | दस्युभि: | திருடர்களால் |
| अस्य | இவனது | विप्रलुप्यन्ताम् | அழியட்டும். |
| सहस्रश: | ஆயிரக்கணக்காக | | |

उभे सन्ध्ये शयानस्य यत्पापं परिकल्प्यते । तच्च पापं भवेत्तस्य यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | | | |
|--------|---------------------|-------------|-------------------|
| यस्य | “எவனது | सन्ध्ये | சந்தியிலும் |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | शयानस्य | உறங்குபவனுக்கு |
| आर्य: | பெரியவர் | यत् पापं | எந்தப் பாபம் |
| गत: | சென்றனரோ, | परिकल्प्यते | விதிக்கப்படுகிறதோ |
| तस्य | அவனுக்கு | तत् पापं च | அந்தப் பாபமும் |
| उभे | இரு | भवेत् | ஏற்படக்கூடவது. |

यदग्निदायके पापं यत्पापं गुस्तल्पगे । मित्रद्रोहे च यत्पापं तत्पापं प्रतिपद्यताम् ॥ ४५ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|---------------|--------------------|
| अग्निदायके | “கொள்ளிவைப்பவன் | यत् पापं | எந்தப் பாபமோ |
| | விஷயத்தில் | मित्रद्रोहे | நம்பிக்கை தீராகத் |
| यत् पापं | எந்தப் பாபமோ | यत् पापं | எந்தப் பாபமோ [தில் |
| गुस्तल्पगे | குருபத்தியுடன் புணர்ந்தவன் | तत् पापं च | அந்தப் பாபத்தையும் |
| | விஷயத்தில் | प्रतिपद्यताम् | அடையட்டும். |

देवतानां पितॄणां च मातापित्रोस्तथैव च । मा स कार्षीत्स शुश्रूषां यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | | | |
|----------|---------------------|---------------|--------------------|
| यस्य | “எவனுடைய | पितॄणां च | பிதிருக்களுக்கும் |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | तथा एव | அவ்வண்ணமே |
| आर्य: | பெரியவர் | मातापित्रो: च | தாய்தந்தையருக்கும் |
| गत: | சென்றனரோ, | शुश्रूषां | தொண்டை |
| स: | அவன் | मा स कार्षीत् | செய்யவேண்டாம். |
| देवतानां | தேவதைகளுக்கும் | | |

सतां लोकात्सतां कीर्त्याः संजुष्टात्कर्मणस्तथा । भ्रश्यतु क्षिप्रमद्यैव यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | | | |
|--------|------------------|------------|---------------------|
| यस्य | “எவனது | सतां | புண்டாத்தாக்களு |
| अनुमते | அனுமதியின்பேரில் | कीर्त्याः | புகழினின்றும் [டைய |
| आर्य: | பெரியவர் | तथा | அவ்வண்ணமே |
| गत: | சென்றனரோ, அவன் | संजुष्टात् | நன்கலுஷ்டிக்கப்பட்ட |
| सतां | புணியாத்தாக்களு | कर्मणः | கர்மானினின்றும் |
| | டைய | क्षिप्रं | சீக்கிரத்தில் |
| लोकात् | லோகத்தினின்றும் | अद्य एव | இப்பொழுதே |
| | | भ्रश्यतु | நழுவிட்டும். |

अपास्य मातृशुश्रूषामनर्थे सोऽवतिष्ठताम् । दीर्घबाहुर्माहावक्षा यस्यार्योऽनुमते गतः ॥ ४८ ॥

यस्य "எவனது
 अनुमते அனுமதியின்பேரில்
 दीर्घबाहुः ஆஜானுபாகுவும்,
 महावक्षा: விசாலமார்புடையவ
 ருமாகிய

गतः சென்றனரோ,
 सः அவன்
 मातृशुश्रूषां மாதாவிற்கு சுச்சுரு
 अपास्य செய்யாது [வைஷயை
 अनर्थे அனர்த்தத்தில்
 अवतिष्ठताम् உழலட்டும்.

आर्यः பெரியவர்

बहुपुत्रो दरिद्रश्च ज्वररोगसमन्वितः । स भूयात्सततं केशी यस्यार्योऽनुमते गतः ॥ ४९ ॥

यस्य "எவனது
 अनुमते விருப்பத்தின்பேரில்
 आर्यः பெரியவர்
 गतः சென்றனரோ,
 सः அவன்
 बहुपुत्रः பல புதல்வர்களை
 யுடையவனாய்,

दरिद्रः தரித்திரனாயும்,
 सततं எப்பொழுதும்
 केशी துக்கியாய்
 ज्वररोग- } ஜுரரோகத்தோடு
 समन्वितः च } கூடியவனாகவும்
 भूयात् ஆகட்டும்.

आशामाशंसमानानां दीनानामूर्ध्वचक्षुषाम् । अर्थिनां वितथां कुर्याद्यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

यस्य "எவனது
 अनुमते விருப்பத்தின்பேரில்
 आर्यः பெரியவர்
 गतः சென்றனரோ, அவன்
 आशंसमानानां துதிசெய்பவர்களாய்
 दीनानां கஷ்டதசையிலிருப்ப
 வர்களாய்

ऊर्ध्वचक्षुषां மேல்நோக்கிய கண்க
 னையுடையவர்களாய்
 अर्थिनां யாசிப்பவர்களுக்கு
 आशां வாக்களித்ததை
 वितथां பொய்யாக
 कुर्यात् செய்யக்கடவன்.

मायया रमतां नित्यं परुषः पिशुनोऽशुचिः । राज्ञो भीतस्त्वधर्मात्मा यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

यस्य "எவனது
 अनुमते விருப்பத்தின்பேரில்
 आर्यः பெரியவர்
 गतः சென்றனரோ, அவன்
 परुषः கொடியனாய்
 पिशुनः ராஜத்ரோஹியாய்

राज्ञः மன்னருக்கு
 नित्यं ஸதா
 भीतः பயந்தவனாய்,
 अधर्मात्मा ஒழுங்கற்றவனாய்,
 अशुचिः தூய்மையற்றவனாய்
 मायया तु கபடாகவே
 रमताम् காலம்கழிக்கட்டும்.

ऋतुस्नातां सतीं भार्यामृतुकालानुरोधिनीम् । अतिवर्तेत दुष्टात्मा यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

यस्य "எவனது
 अनुमते விருப்பத்தின்பேரில்
 आर्यः பெரியவர்
 गतः சென்றனரோ, அந்த
 दुष्टात्मा துஷ்டன்

ऋतुस्नातां ருதுஸ்நானம் செய்த
 வளும்,
 अरुतुकालानु- } ருதுகாலதர்மத்தை
 रोधिनीं } யனுஷ்டிக்கும்
 सतीं உத்தமியுமான
 भार्या பத்தினியை
 अतिवर्तेत திரஸ்கரிக்கட்டும்.

धर्मदारान्परित्यज्य परदारान्निषेवताम् । त्यक्तधर्मरतिर्मूढो यस्यार्योऽनुमते गतः ॥ ५३ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------|------------|------------------|
| யச்ய | “ எவனது | மூढ: | மூடன் |
| அனுமதே | விருப்பத்தின்பேரில் | धर्मदारान् | தர்மபத்னியை |
| आर्यः | பெரியவர் | परित्यज्य | திரஸ்கரித்து, |
| गतः | சென்றனரோ, அந்த | परदारान् | பிறர்மனைவியை |
| त्यक्तधर्मरतिः | தர்மத்தில் பற்றற்ற | निषेवताम् | உபயோகிக்கட்டும். |

विप्रलुप्तप्रजातस्य दुष्कृतं ब्राह्मणस्य यत् । तदेव प्रतिपद्येत यस्यार्योऽनुमते गतः ॥ ५४ ॥

| | | | |
|---------------------|---------------------|-------------|--------------|
| யச்ய | “ எவனது | ब्राह्मणस्य | அந்தணனுக்கு |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | यत् | எந்த |
| आर्यः | பெரியவர் | दुष्कृतं | பாபமோ |
| गतः | சென்றனரோ, அவன் | तत् एव | அதையே |
| विप्रलुप्तप्रजातस्य | சந்ததியற்ற | प्रतिपद्येत | அடையக்கடவன். |

पानीयदूषके पापं तथैव विषदायके । यत्तदेकः स लभतां यस्यार्योऽनुमते गतः ॥ ५५ ॥

| | | | |
|------------|--|----------|-----------------|
| யச்ய | “ எவனது | तथा | அவ்வண்ணமே |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | विषदायके | விஷம்கொடுப்பவன் |
| आर्यः | பெரியவர் | | விஷயத்திலும் |
| गतः | சென்றனரோ, | यत् पापं | எந்தப் பாபமோ |
| सः | அவன் | तत् | அதை |
| पानीयदूषके | { குடிக்கும் தண்ணீரை அசுத்தமாக்குபவன் விஷயத்திலும் | एकः एव | ஒருவனாகவே |
| | | लभताम् | சுமக்கட்டும். |

ब्राह्मणाद्योद्यतां पूजां विहन्तु कलुषेन्द्रियः । बालवत्सां च गां दोग्धु यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|-----------|------------------|
| யச்ய | “ எவனது | उद्यतां | சித்தமாக்கப்பட்ட |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | पूजां | பூஜையை |
| आर्यः | பெரியவர் | विहन्तु | கெடுக்கட்டும். |
| गतः | சென்றனரோ, அவன் | बालवत्सां | புதிதாகப்போட்ட |
| कलुषेन्द्रियः | மனம்தடுமாறியவனாய் | | கன்றையுடைய |
| ब्राह्मणाय | ப்ராம்மணனுக்கு | गां च | பசுவையும் |
| | | दोग्धु | கறக்கட்டும். |

तृष्णार्तं सति पानीये विप्रलम्भेन योजयेत् । यत्पापं लभते तत्स्याद्यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------------|-------------|----------------|
| யச்ய | “ எவனது | तृष्णार्तं | தாகசிடாய்கொண்ட |
| अनुमते | விருப்பத்தின்பேரில் | | ஒருவனை |
| आर्यः | பெரியவர் | विप्रलम्भेन | பொய்சொல்லி |
| गतः | சென்றனரோ, | योजयेत् | ஏமாற்றக்கடவன். |
| | அவனுக்கு | यत् पापं | எந்தப் பாபத்தை |
| पानीये सति | { குடிக்கும் தீர்த்தமிரு க்கையில் | लभते | அவன் அடைகிறானே |
| | | तत् | அது |
| | | स्यात् | உண்டாகட்டும். |

भक्त्या विवदमानेषु मार्गमाश्रित्य पश्यतः । तस्य पापेन युज्येत यस्मार्योऽनुमते गतः ॥

यस्य “எவனது
अनुमते விருப்பத்தின்பேரில்
आर्यः பெரியவர்
गतः சென்றனரோ, அவன்
विवदमानेषु { வாதிப் பதிவாதிகள்
விவாதம்செய்துகொ
ண்டிருக்கையில்

मार्गं நியாயத்தை
आश्रित्य கண்டும்
भक्त्या பக்தப்பாதமாக
पश्यतः அனுஷ்டிக்கும்
तस्य ஒருவனுடைய
पापेन பாபத்தோடு
युज्येत சேரக்கடவன்.”

विहीनां पतिपुत्राभ्यां कौसल्यां पार्थिवात्मजः । एवमाश्वासयन्नेव दुःखार्तो निपपात ह ॥

पार्थिवात्मजः சக்கிரவர்த்திகுமார
पतिपुत्राभ्यां கணவரையும், புதல்வ
விहीனாं பிரிவுற்ற
कौसल्यां கோஸலாதேவியாரை,

दुःखार्तः மனம்நொந்தவராய்,
एवं மேற்கண்டவாறு
आश्वासयन् एव தேற்றிக்கொண்டே
निपपात பூமியில் விழுந்தனர்.
ह என்ன கஷ்டம்.

तथा तु शपथैः कष्टैः शपमानमचेतनम् । भरतं शोकसन्तप्तं कौसल्या वाक्यमब्रवीत् ॥६०॥

कौसल्या கோஸலாதேவியா
तु இவ்விஷயத்தில்
कष्टैः அபூர்வமான
शपथैः சபதசொற்கொண்டு
तथा மேற்கண்டவாறு
शपमानं உறுதிமொழிகூறிக்
கொண்டு,

अचेतनं அறிவிழந்தவராய்,
शोकसन्तप्तं சோகத்தால் தபிக்
भरतं பரதரைப்பார்த்து,
वाक्यं பின்வரும்சொல்லை
अब्रवीत् மொழிந்தனள்:

मम दुःखमिदं पुत्र भूयः समुपजायते । शपथैः शपमानो हि प्राणानुपरुणत्सि मे ॥६१॥

पुत्र “குழந்தாய்!
इदं இக்காலத்திய
मम எனது
दुःखं மனவேதனை
भूयः முன்னிலுமதிகமாய்
समुपजायते உண்டாகிறது.

शपथैः சபதசொற்கொண்டு
शपमानः உறுதிகூறும் நீ
मे எனது
प्राणान् हि உயிரையே
उपरुणत्सि வாட்டுகின்றனை.

दिष्ट्या न चलितो धर्मादात्मा ते शुभलक्षण । वत्स सत्यप्रतिज्ञो मे सतां लोकानवाप्स्यसि॥

मे “எனது
शुभलक्षण இயற்கை நற்குணம்
वत्स குழந்தாய்!
ते உனது
आत्मा உள்ளம்
दिष्ट्या தெய்வானுக்கிரஹத்
தால்

धर्मात् தர்மத்தினின்று
चलितः न சலியாதிருக்கிறது.
सत्यप्रतिज्ञः பரதிக்ஞையை வீணா
सतां புண்யா த்மாக்களு
लोकान् லோகங்களை [டைய
अवाप्स्यसि நீ அடையக்கடவை.”

इत्युक्त्वा चाङ्गமானிய भरतं भ्रातृवत्सलम् । परिष्वज्य महाबाहुं रुरोद भृशदुःखिता ॥

| | | | |
|--------------|--|------------|---------------------------------|
| மஹாபாஹு | ஆஜானுபாகுவும், | அஃ! ச | மடிமீதும், |
| भ्रातृवत्सलं | { தமையனரிடம் அசஞ் சலபத்திமை பூண்ட வருமான | आनीय | எடுத்துவைத்துக் கொண்டு |
| भरतं | பரதரிடம் | परिष्वज्य | கட்டியணைத்துக்கொ ண்டு |
| इति | மேற்கண்டவாறு | भृशदुःखिता | மிக்கமனவேதனைப் படுகின்றவளாய் |
| उत्तवा | சொல்லி | रुरोद | கதறியழுதாள். |

एवं विलपमानस्य दुःखार्तस्य महात्मनः । मोहाच्च शोकसंरोधाद्भव लुलितं मनः ॥६४॥

| | | | |
|-------------|----------------------|---------------|-------------------------------|
| दुःखार्तस्य | துயரப்பட்டு | मोहात् | அக்காலத்திய கஷ்டத் தாலும், |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | शोकसंरोधात् च | சோகத்தினத்சயத் தாலும், |
| विलपमानस्य | மொழிந்த | लुलितं | தடுமாற்றமடைந்த |
| महात्मनः | மஹாத்மாவாகுமவ ரது | बभूव | ஆயிற்று. [தாய் |
| मनः | மனமானது | | |

लालप्यमानस्य विचेतनस्य प्रणष्टबुद्धेः पतितस्य भूमौ ।

मुहुर्मुहुर्निश्चसतश्च धर्मं सा तस्य शोकेन जगाम रात्रिः ॥ ६५ ॥

| | | | |
|----------------|---------------|-----------|---------------------------------|
| धर्मं | தருமமாய் | निश्चसतः | பெருமூச்செறிந்து கொண்டிருந்த |
| लालप्यमानस्य | பேசிக்கொண்டு, | तस्य | அவருக்கு |
| विचेतनस्य | மெய்மறந்து, | सा | அந்த |
| प्रणष्टबुद्धेः | அறிவிழந்து | रात्रिः च | இரவும் |
| भूमौ | தரையில் | शोकेन | துயரமாகவே |
| पतितस्य | விழுந்து | जगाम | கழிந்தது. |
| मुहुः मुहुः | அடிக்கடி | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे षट्सप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5364



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3009

षट्सप्ततितमः सर्गः—எழுபத்தாறாவது ஸர்க்கம் ॥ ७६ ॥

दशरथस्यौर्ध्वदैहिककरणम्—தசரதருக்கு சரயக்ரியை செய்வது.

तमेवं शोकसन्तप्तं भरतं कैकयीसुतम् । उवाच वदतां श्रेष्ठो वसिष्ठः श्रेष्ठवाग्दृषिः ॥ १ ॥

| | | | |
|-------------|----------------|-------------|--|
| वदतां | பேசுபவர்களில் | शोकसन्तप्तं | சோகத்தால் பரிதபித் துக்கொண்டிருக்கும் |
| श्रेष्ठः | உத்தமராய் | तं | அந்த |
| श्रेष्ठवाक् | பேசும் வன்மை | कैकयीसुतं | கைகேயிபுதல்வராகிய |
| वसिष्ठः | வஸிஷ்ட [படைத்த | भरतं | பரதரைப்பார்த்து |
| ऋषिः | முனிவர், | उवाच | பின்வருமாறு ஆக்ஞா பித்தருளினார்: |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | | |

अलं शोकेन भद्रं ते राजपुत्र महायशः । प्राप्तकालं नरपतेः कुरु संयानमुत्तमम् ॥ २ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|--------|-------------------|
| महायशः | “ மிக்கப் புகழ்பெற்ற | उत्तमं | உத்தமமாகிய |
| राजपुत्र | சக்கிரவர்த்திகுமாரா ! | संयानं | சரம கைங்கர்யத்தை |
| शोकेन अलं | துயருற்றது போதும். | कुरु | நீ செய். |
| नरपतेः | சக்கிரவர்த்தியாருக்கு | ते | உனக்கு |
| प्राप्तकालं | ஏற்றகாலத்தில் | भद्रम् | கேஷ்டமுண்டாகும்.” |

वसिष्ठस्य वचः श्रुत्वा भरतो धारणां गतः । प्रेतकृत्यानि सर्वाणि कारयामास धर्मवित् ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|---------------|--------------------------|
| धर्मवित् | தருமத்தை நன்கு ணர்ந்த | श्रुत्वा | சுரமேற்கொண்டு |
| भरतः | பரதர் | धारणां गतः | மனோதைர்யம்பெற்ற வராகி |
| वसिष्ठस्य | வஸிஷ்டபகவானு டைய | प्रेतकृत्यानि | சரமகைங்கர்யம் |
| वचः | ஆக்கினையை | सर्वाणि | எல்லாவற்றையும் |
| | | कारयामास | செய்வித்தார். |

उद्धृतं तैलसंकेदात्स तु भूमौ निवेशितम् । आपीतवर्णवदनं प्रसुप्तमिव भूमिपम् ॥ ४ ॥
संवेश्य शयने चाग्रे नानारत्नपरिष्कृते । ततो दशरथं पुत्रो विललाप सुदुःखितः ॥ ५ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------------|-------------------|-------------------------------------|
| ततः | அனந்தரம் | दशरथं | தசரத |
| सः | அந்த | भूमिपं | சக்கிரவர்த்தியாரை |
| पुत्रः | புதல்வர் | अग्रे | சிறந்த |
| तैलसंकेदात् | எண்ணெய்ப்பூச்சிலி ருந்து | नानारत्नपरिष्कृते | பலவகை ரத்னங்களா ல் இழைக்கப்பெற்ற |
| उद्धृतं | துடைக்கப்பட்டு | शयने | படுக்கையில் |
| भूमौ | தரையில் | संवेश्य | கிடத்தி |
| निवेशितं | வைக்கப்பட்டவராய் | तु | அப்பொழுது |
| आपीतवर्णवदनं | சற்று மஞ்சள் நிறமான முகமுடையவராய் | सुदुःखितः च | மிக மனவேதனைப்படு கின்றவராய் |
| प्रसुप्तं इव | தூங்குபவர் போலிரு க்கும் | विललाप | பின்வருமாறு புலம்பி அழுதார் : |

किं ते व्यवसितं राजन्प्रोषिते मय्यनागते । विवास्य रामं धर्मज्ञं लक्ष्मणं च महाबलम् ॥

| | | | |
|----------|---------------------|------------|----------------------|
| राजन् | “ சக்கிரவர்த்தியே ! | महाबलं | மஹாசக்திமானாகிய |
| प्रोषिते | வெளியூரிலிருந்து | लक्ष्मणं च | லக்ஷ்மணரையும் |
| मयि | நான் | विवास्य | நாடுகடத்திவிட்டு, |
| अनागते | வருமுன் | ते | தேவரீரது |
| धर्मज्ञं | அறத்தை அறிந்த | व्यवसितं | திருவுளத்திலிருந்தது |
| रामं | ஸ்ரீராமரையும் | किम् | என்ன ? |

क यास्यसि महाराज हित्वेमं दुःखितं जनम् । हीनं पुरुषसिंहेन रामेणाक्लिष्टकर्मणा ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------------|---------|---------------------|
| महाराज | “சக்கிரவர்த்தியே ! | इमं | இந்த |
| अक्लिष्टकर्मणा | எதையும் கஷ்டமின்றி செய்யவல்லவரும் | जनं | உலகை |
| पुरुषसिंहेन | புருஷோத்தமருமாகிய | हिंवा | விட்டு, |
| रामेण हीनं | ஸ்ரீராமரைப்பிரிந்து | क | எங்கே |
| दुःखितं | துன்புற்றிருக்கிற | यास्यसि | செல்லப்போகின்றீர் ? |

योगक्षेमं तु ते राजन्कोऽस्मिन्कल्पयिता पुरे । त्वयि प्रयाते स्वस्तात रामे च वनमाश्रिते ॥

| | | | |
|---------|--------------------|-----------|---------------------|
| राजन् | “சக்கிரவர்த்தியே ! | ते | தேவரீரது |
| तात | அப்பர் ! | अस्मिन् | இந்த |
| त्वयि | தேவரீர் | पुरे | நகரில் |
| स्वः | ஸ்வர்க்கத்திற்கு | योगक्षेमं | பாதுகாப்பை |
| प्रयाते | எழுந்தருளிவிடவும் | तु | இப்பொழுது |
| रामे च | ஸ்ரீராமரும் | कः | யார் |
| वनं | காட்டை | कल्पयिता | விதிக்கப்போகிறார் ? |
| आश्रिते | அடைந்திருக்கவும் | | |

विधवा पृथिवी राजंस्त्वया हीना न राजते । हीनचन्द्रेव रजनी नगरी प्रतिभाति मे ॥९॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|---------------|
| राजन् | “சக்கிரவர்த்தியே ! | नगरी | நகரும் |
| त्वया हीना | தேவரீரின்றி | हीनचन्द्रा | சந்திரனில்லாத |
| पृथिवी | உலகானது | रजनी इव | இரவுபோலவே |
| विधवा | கைம்பெண்ணை | मे | எனக்கு |
| राजते न | விளங்கவில்லை. | प्रतिभाति | தோன்றுகிறது.” |

एवं विलपमानं तं भरतं दीनमानसम् । अब्रवीद्वचनं भूयो वसिष्ठस्तु महामुनिः ॥ १० ॥

| | | | |
|----------|--------------|----------|------------------|
| वसिष्ठः | வஸிஷ்ட | तं | அந்த |
| महामुनिः | மாமுனிவர் | भरतं | பரதரைப் பார்த்து |
| दीनमानसं | மனம் நொந்து | भूयः | மீளவும், |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | तु | இப்பொழுது |
| विलपमानं | புலம்பும் | वचनं | பின்வரும் சொல்லை |
| | | अब्रवीत् | சொன்னார் : |

प्रेतकार्याणि यान्यस्य कर्तव्यानि विशांपतेः । तान्यव्यग्रं महाबाहो क्रियन्तामविचारितम् ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------|-------------|-------------------|
| महाबाहो | “மஹாபாகுவே ! | यानि | எவைகளோ, |
| अस्य | இந்த | तानि | அவைகள் |
| विशांपतेः | சக்கிரவர்த்தியாருக்கு | अव्यग्रं | அமைதியாய் |
| प्रेतकार्याणि | சரம கைங்கர்யங்கள் | अविचारितं | சிரத்தையாய் |
| कर्तव्यानि | செய்யவேண்டியவை | क्रियन्ताम् | செய்யப்படட்டும்.” |

तथेति भरतो वाक्यं वसिष्ठस्याभिपूज्य तत् । ऋत्विक्पुरोहिताचार्यांस्त्वरयामास सर्वशः ॥

| | | | |
|------------|----------------|--------------------------------|---|
| भरतः | பரதர் | ऋत्विक्- पुरोहिताचार्यान् } | ருத்விக்குகளையும், பு ரோகிதர்களுையும், ஆ |
| वसिष्ठस्य | வஸிஷ்டரது | | சார்யர்களையும் |
| तत् वाक्यं | அந்த நியமனத்தை | सर्वशः | எல்லாப்பக்கங்களி லும் |
| तथा इति | அங்ஙனமேயென்று | त्वरयामास | தூரிகப்படுத்தினார். |
| अभिपूज्य | ஏற்றுக்கொண்டு | | |

ये त्वग्रयो नरेन्द्रस्य ह्यग्न्यागाराद्धिष्कृताः । ऋत्विग्भिर्याजकैश्चैव ते हूयन्ते यथाविधि ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|--------------|----------------------------|
| नरेन्द्रस्य | சக்கிரவர்த்தியாரது | बहिष्कृताः | வெளியேற்றப்பட்ட வைகளாய் |
| अग्नयः | அக்னிகள் | ऋत्विग्भिः च | ருத்விக்குகளாலும், |
| ये तु | எவைகளோ | याजकैः एव | யாஜகர்களாலும் |
| ते | அவைகள் | यथाविधि हि | சாஸ்திரமுறைப்படியே |
| अग्न्यागारात् | அக்னிசாலைகளிலி | हूयन्ते | ஹோமஞ்செய்யப்பட்ட டன. |

ருந்து

शिविकायामथारोप्य राजानं गतचेतसम् । बाष्पकण्ठा विमनसस्तमूहुः परिचारकाः ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-------------|------------------------|
| अथ | அதன்மேல் | बाष्पकण्ठाः | தொண்டையில் நீரடைக்க |
| गतचेतसं | உயிரிழந்த | विमनसः | மனம் நொந்தவர் களாய் |
| राजानं | சக்கிரவர்த்தியாரை | तं | அவரை |
| शिविकायां | சிவிகையில் | ऊहुः | சுமந்துசென்றனர். |
| आरोप्य | ஏற்றி, | | |
| परिचारकाः | ஸேவகர்கள், | | |

हिरण्यं च सुवर्णं च वासांसि विविधानि च । प्रकिरन्तो जना मार्गं नृपतेरग्रतो ययुः ॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------|-----------------------|
| जनाः | ஜனங்கள் | मार्गं | வழியில் |
| हिरण्यं च | பொன் நாளையங்களை | प्रकिरन्तः | இறைத்துக்கொண்டு |
| सुवर्णं च | பொன்னையும் [யும் | नृपतेः | சக்கிரவர்த்தியாருக்கு |
| विविधानि | நாணவிதமான | अग्रतः | முன்பாக |
| वासांसि च | வஸ்திரங்களையும் | ययुः | சென்றனர். |

चन्दनागरुनिर्यासान् सरलं पद्मकं तथा । देवदारुणि चाहृत्य चितां चक्रुस्तथापरे ॥१६॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|-------------|-------------------|
| तथा | அவ்வண்ணமே | पद्मकं तथा | பத்மகமெனும் வாச |
| परे | சிலர் | | னைக்கட்டையையும், |
| चन्दनागरु-} | சந்தனம், அகில், | देवदारुणि च | தேவதாருக்கட்டைக |
| निर्यासान् } | இவைகளின் தூபத் ரவ்யங்களையும் | आहत्य | கொணர்ந்து [ளையும் |
| सरलं | ஸரளமெனும் ஓர் வ | अपरे | வேறு சிலர் |
| | கைக் கட்டையையும் | चितां | சிதையை |
| | | चक्रुः | செய்தனர். |

गन्धानुच्चावचांश्चान्यांस्तत्र दत्त्वाऽथ भूमिपम् । ततः संवेशयामासुश्चितामध्ये तमृत्विजः ॥

अथ अ.தன்பின்னர்
तत्र அதில்
ऋत्विजः ருத்விக்குகள்,
अन्यान् மற்றுமுள்ள
उच्चावचान् பலவகைப்பட்ட
गन्धान् च வாசனைகளையும்

दत्त्वा போட்டு,
ततः அதன்மேல்
तं அந்த
भूमिपं சக்கிரவர்த்தியாரை
चितामध्ये சிதையில்
संवेशयामासुः வளர்த்தினார்கள்.

तथा हुताशनं हुत्वा जेषुस्तस्य तमृत्विजः

तथा அவ்வண்ணமே,
ऋत्विजः ருத்விக்குகள்
तस्य அவரது

॥ १८ ॥

तं அந்த
हुताशनं அக்னியை
हुत्वा ஹோமம்செய்து
जेषुः ஜபித்தார்கள்.

जगुश्च ते यथाशास्त्रं तत्र सामानि सामगाः

ते அந்த
सामगाः ஸாமகர்கள்

॥ १९ ॥

तत्र அப்பொழுது
सामानि च ஸாமங்களையும்
जगुः கானம்செய்தனர்கள்.

यथाशास्त्रं

சாஸ்திரமுறைப்படி

शिविकाभिश्च यानैश्च यथार्हं तस्य योषितः । नगरान्निर्ययुस्तत्र वृद्धैः परिवृतास्तदा ॥२०॥

तदा அப்பொழுது
तस्य அவரது
योषितः மனைவிமார்கள்
वृद्धैः விருத்தர்களால்
परिवृताः சூழப்பட்டவர்களாய்
यथार्हं முறைப்படியே

शिविकाभिः च சிவிகையிலேறிக்
கொண்டும்,
यानैः च வாஹனங்களிலேறிக்
கொண்டும்,
नगरात् நகரின்னிலும்
तत्र அவ்விடத்திற்கு
निर्ययुः வெளிப்புறப்பட்டார்
கள்.

प्रसव्यं चापि तं चक्रुर्ऋत्विजोऽग्निचितं नृपम् । स्त्रियश्च शोकसन्तप्ताः कौसल्याप्रमुखास्तदा ॥

तदा அப்பொழுது
अग्निचितं யாகாதிகள் செய்தி
तं அந்த [ருந்த
नृपं சக்கிரவர்த்தியாருக்கு
ऋत्विजः ருத்விக்குகளும்
कौसल्याप्रमुखाः கோஸலை முதலான

स्त्रियः च மனைவிமார்களும்
शोकसन्तप्ताः சோகத்தால் பரிதபிக்
கின்றவர்களாய்
प्रसव्यं अपि च அனுசூலமாயுள்ளதை
யெல்லாம்
चक्रुः செய்தனர்கள்.

क्रौञ्चीनामिव नारीणां निनादस्तत्र शुश्रुवे । आर्तानां करुणं काले क्रोशन्तीनां सहस्रशः ॥

तत्र काले அந்த சமயத்தில்
आर्तानां துயருற்று
करुणं பரிதாபமாய்
क्रोशन्तीनां கதறியமும்
सहस्रशः அனேக
नारीणां ஸ்திரீகளுடைய

निनादः புலம்பல்
क्रौञ्चीनां பெண் க்ரௌஞ்சப்
பறவைகளுடையது
इव போன்றதாய்
शुश्रुवे கேட்கப்பட்டது.

ततो रुदन्त्यो विवशा विलप्य च पुनः पुनः । यानेभ्यः सरयूतीरमवतेरुर्वराङ्गनाः ॥२३॥

| | | | |
|-----------|----------------|------------|---------------------|
| ततः | அப்பொழுது | विलप्य | கதறி |
| विवशाः | மெய்மறந்து | यानेभ्यः च | வா ஹனங்களிலி |
| रुदन्त्यः | புலம்பியழும் | | ருந்து |
| वराङ्गनाः | உத்தமஸ்த்ரீகள் | सरयूतीरं | சரயூநதிக்கட்டத்தில் |
| पुनः पुनः | மேன்மேலும் | अवतेरुः | இறங்கினார்கள். |

कृत्वोदकं ते भरतेन सार्धं नृपाङ्गना मन्त्रिपुरोहिताश्च ।

पुरं प्रविश्याश्रुपरीतनेत्रा भूमौ दशाहं व्यनयन्त दुःखम् ॥ २४ ॥

| | | | |
|--------------------|-----------------------------------|---------------|-------------------|
| ते | அந்த | उदकं कृत्वा | ஸ்நானத்தை செய்து |
| नृपाङ्गनाः | ராஜஸ்த்ரீகளும், | पुरं प्रविश्य | நகருக்குச் சென்று |
| मन्त्रिपुरोहिताः च | மந்திரிகளும், புரோகி தர்களும் | दशाहं | பத்து தினங்களை |
| भरतेन सार्धं | பரதரோடுகூடவே | दुःखं | ஆசௌசமாய் |
| अश्रुपरीतनेत्राः | கண்ணீர் ததும்பிய கண்ணினர்களாய் | भूमौ | வெறும் தரையில் |
| | | व्यनयन्त | கழித்தனார்கள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे षट्सप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5388

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3033



सप्तसप्ततितमः सर्गः—எழுபத்தேழாவது ஸர்க்கம். ॥ ७७ ॥

भरतशत्रुघ्नविलापः—பரத சத்ருக்ஷ லிலாபம்.

ततो दशाहेऽतिगते कृतशौचो नृपात्मजः । द्वादशेऽहनि संप्राप्ते श्राद्धकर्माण्यकारयत् ॥१॥

| | | | |
|------------|------------------------------------|----------------|-------------------|
| दशाहे | பத்து தினங்கள் | द्वादशे | பன்னிரண்டாவது |
| अतिगते ततः | சென்ற பின்னர் | अहनि | நாள் |
| नृपात्मजः | சக்கிரவர்த்திகுமார ராகுமவர் | संप्राप्ते | நடைபெறுகையில் |
| कृतशौचः | புண்யாஹவாசனம் செய்யப்பெற்றவராய் | श्राद्धकर्माणि | சிராத்தகார்யங்களை |
| | | अकारयत् | நிறைவேற்றினார். |

ब्राह्मणेभ्यो ददौ रत्नं धनमन्नं च पुष्कलम् । वासांसि च महार्हाणि रत्नानि विविधानि च॥

| | | | |
|---------------|-----------------|-----------|----------------------|
| ब्राह्मणेभ्यः | அந்தணர்களுக்கு | वासांसि च | வஸ்திரங்களையும், |
| रत्नं | ரத்தினத்தையும், | विविधानि | பலவகை |
| धनं | பொருளையும், | रत्नानि च | உயர்ந்த வஸ்துக்களை |
| अन्नं च | போஜனத்தையும், | पुष्कलं | வேண்டியமட்டும்[யும், |
| महार्हाणि | சிறந்த | ददौ | தானம்செய்தார். |

बास्तिकं बहु शुक्लं च गाश्चापि शतशस्तदा । दासीर्दासांश्च यानानि वेश्मानि सुमहान्ति च॥
ब्राह्मणेभ्यो ददौ पुत्रो राज्ञस्तस्योर्ध्वदैहिकम् ॥ ३ ॥

| | |
|--------------|---|
| तस्य | அந்த |
| राज्ञः | சக்கிரவர்த்தியாரது |
| पुत्रः | புதல்வராகுமவர் |
| और्ध्वदैहिकं | அபரகைங்கர்யத்தில் |
| दासान् | { பரமாத்மாவையுள்ள படி அறிந்த ஞா னிகளுக்கு |
| दासीः च | யாகபீடங்களையும், |
| सुमहान्ति | பெரிய |
| वेश्मानि च | மணிகளையும், |

| | |
|---------------|-------------------|
| ब्राह्मणेभ्यः | பிராம்மணர்களுக்கு |
| तदा | அப்பொழுது |
| यानानि च | வாஹனங்களையும், |
| शुक्लं | பரிசுத்தமாகிய |
| | வெண்ணையையும், |
| बास्तिकं अपि | வெள்ளாட்டுப்பாலை |
| बहु | அனேக [யும், |
| शतशः | நூற்றுக்கணக்கான |
| गाः च | பசுக்களையும் |
| ददौ | தானம் செய்தனர். |

ततः प्रभातसमये दिवसेऽथ त्रयोदशे । विललाप महाबाहुर्भरतः शोकमूर्च्छितः ॥
शब्दापिहितकण्ठश्च शोधनार्थमुपागतः ॥ ४ ॥

| | |
|------------|------------------|
| ततः | அதன்மேல் |
| त्रयोदशे | பதின்மூன்றாம் |
| दिवसे | நாளில் |
| प्रभातसमये | விடியற்காலத்தில் |
| शोधनार्थं | சஞ்சயனத்திற்காக |
| उपागतः | வந்த |
| महाबाहुः | மஹாபாகுவாகும் |

| | |
|-----------------|-------------------------------------|
| भरतः | பரதர் |
| अथ | அப்பொழுது |
| शब्दापिहितकण्ठः | பேசமுடியாது தொ ண்டை கட்டியவராய், |
| शोकमूर्च्छितः च | சோகத்தால் மெய்மற ந்தவராகவும், |
| विललाप | கதறினார். |

चितामूले पितुर्वाक्यमिदमाह सुदुःखितः ॥ ५ ॥

| | |
|-----------|-----------------------------|
| पितुः | தந்தையினது |
| चितामूले | சிதையினருகில் |
| सुदुःखितः | மிக்க நொந்தமனத்தி னராய், |

| | |
|------------|------------------|
| इदं वाक्यं | பின்வரும் மொழியை |
| आह | சொன்னார் : |

तात यस्मिन्निसृष्टोऽहं त्वया भ्रातरि राघवे । तस्मिन्वनं प्रव्रजिते शून्ये त्यक्तोऽस्म्यहं त्वया॥

| | |
|----------|---------------|
| तात | “அப்பா! |
| अहं | நான் |
| यस्मिन् | எந்த |
| भ्रातरि | தமையனாகும் |
| राघवे | ராகவரிடத்தில் |
| त्वया | தேவரீரால் |
| निसृष्टः | விடப்பட்டேனோ, |
| तस्मिन् | அவர் |

| | |
|---------------|--------------------------------------|
| वनं | காட்டிற்கு |
| प्रव्रजिते | அனுப்பப்பட்டிருக் கையில் (ஆர்ஷம்) |
| शून्ये | ஆதரிப்பாரற்றவிடத் |
| त्वया | தேவரீரால் [தில் |
| अहं | நான் |
| त्यक्तः अस्मि | தள்ளிவிடப்பட்டிருக் கிறேன். |

यस्या गतिरनाथायाः पुत्रः प्रवाजितो वनम् । ताम्बां तात कौसल्यां त्यक्त्वा त्वं क गतो नृप॥

| | | | |
|----------|---------------------|-----------|--------------------|
| तात | “ அப்பா ! | प्रवाजितः | அனுப்பப்பட்டனரோ, |
| नृप | சக்கிரவர்த்தியாரே ! | तां | அந்த |
| अनाथायाः | நாதனில்லாத | अम्बां | உத்தமியாகிய |
| यस्याः | எவளுடைய | कौसल्यां | கோசலாதேவியாரை |
| गतिः | கதியாகும் | त्यक्त्वा | விட்டுவிட்டு |
| पुत्रः | புதல்வர் | त्वं | தேவரீர் |
| वनं | காட்டிற்கு | क गतः | எங்கு சென்றீர் ? ” |

दृष्ट्वा भस्मारुणं तच्च दग्धास्थिस्थानमण्डलम् । पितुः शरीरं निर्वाणं निष्टनन्विषसाद सः ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------------|-------------------|
| सः | அவர் | दग्धास्थिस्थान- | எரிந்த எலும்புகள் |
| पितुः | தந்தையினது | मण्डलं च | பரவியுள்ள குவியலை |
| निर्वाणं | அத்ருச்யமாகிவிட்ட | दृष्ट्वा | கண்டு [யும் |
| शरीरं | சரீரத்தையும் | तत् | அப்பொழுது |
| भस्मारुणं | சிவந்தசாம்பலாக | निष्टनन् | குரலிட்டு, |
| | | विषसाद | துக்கித்தனர். |

स तु दृष्ट्वा रुदनार्तः पपात धरणीतले । उत्थाप्यमानः शक्रस्य यन्त्रध्वज इव च्युतः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|--------------|-------------------|
| आर्तः | மனம் நொந்துகிடந்த | यन्त्रध्वजः | கட்டும் கொடி |
| सः | அவர் | उत्थाप्यमानः | ஏற்றப்படுவதாய் |
| रुदन् | அழுதுகொண்டே | च्युतः इव | கீழே நழுவிதுபோல் |
| दृष्ट्वा तु | கண்டவுடன் | धरणीतले | பூமியில் |
| शक्रस्य | இந்திரனுக்கு | पपात | சாய்ந்துவிட்டனர். |

अभिपेतुस्ततः सर्वे तस्यामात्याः शुचिव्रतम् । अन्तकाले निपतितं ययातिमृषयो यथा ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------------|----------|---------------------|
| ततः | அச்சமயத்தில் | अन्तकाले | முடிவுகாலத்தில் |
| तस्य | அவரது | निपतितं | கீழே விழுந்த |
| अमात्याः | மந்திரிமார்கள் | ययातिं | யயாதிமன்னரிடம் |
| सर्वे | எல்லோரும் | ऋषयः | முனிவர்கள் |
| शुचिव्रतं | { களங்கமற்ற அனுஷ்டானமுடைய அவரிடம் | यथा | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| | | अभिपेतुः | கிட்டினார்கள். |

शत्रुघ्नश्चापि भरतं दृष्ट्वा शोकपरिप्लुतम् । विसंज्ञो न्यपतद्भूमौ भूमिपालमनुस्मरन् ॥ ११ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------|------------|----------------|
| शत्रुघ्नः अपि | சத்ருக்ளரும் | भरतं | பரதரை |
| भूमिपालं | சக்கிரவர்த்தியாரை | दृष्ट्वा च | பார்த்தும் |
| अनुस्मरन् | நினைத்தும் | विसंज्ञः | அறிவிழந்தவராய் |
| शोकपरिप्लुतं | சோகத்தால் பரிதபிக்கும் | भूमौ | தரையில் |
| | | न्यपतत् | விழுந்தனர். |

उन्मत्त इव निश्चेता विलप्य सुदुःखितः । स्मृत्वा पितुर्गुणाङ्गानि तानि तानि तदा तदा॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|-------------|--------------------------------|
| பிது: | தந்தையின து | சுது:சுத: | மிக துயரப்படுகின்ற |
| तदा तदा | அந்தந்த சமயங்களுக் கேற்ற | | வராய் |
| तानि तानि | அந்தந்த | निश्चेता: | மெய்மறந்தவராய் |
| गुणाङ्गानि | குணவிசேஷங்களை | उन्मत्त: इव | பைத்தியம் பிடித்த வர்போன்று |
| स्मृत्वा | சிந்தித்து, | विलप्य | கதறியழுதனர். |

मन्थराप्रभवस्तीव्रः कैकेयीग्राहसङ्कुलः । वरदानमयोऽक्षोभ्योऽमज्जयच्छोकसागरः ॥१३॥

| | | | |
|-------------------|---|-----------|---------------------------------|
| மந்நராபரவ: | மந்தரையினிடத்தினி ன்று உண்டாகியதும் | तीव्रः | அக்கரைகாணாததாய் |
| कैकेयीग्राहसंकुलः | { கைகேயியாகிற முதலை யால் கலங்கப்பெற்ற தும், | अक्षोभ्यः | அகாதமாயிருப்பதான |
| वरदानमयः | வரதானமாகிய பெரு க்குற்றதாய் | शोकसागरः | சோகஸாகரமானது |
| | | अमज्जयत् | எல்லோரையும் முழு கச்செய்தது. |

सुकुमारं च बालं च सततं लालितं त्वया । क तात भरतं हित्वा विलपन्तं गतो भवान् ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------------|----------|---------------------|
| तात | “ அப்பா ! | बालं च | பரிசுத்தமூர்த்தியு |
| त्वया | தேவரீரால் | भरतं | பரதரை [மாகிய |
| सततं | எக்காலத்திலும் | विलपन्तं | புலம்பியழுகின்றவர |
| लालितं | வாத்ஸல்யமாய் வளர் க்கப்பட்டவரும், | हित्वा | கவனியாதுவிட்டு, [ய் |
| सुकुमारं च | கஷ்டத்தைக்கண்டிரா தவரும், | भवान् | தேவரீர் |
| | | क | எங்கு |
| | | गतः | சென்றி? ? |

ननु भोज्येषु पानेषु वस्त्रेष्वभरणेषु च । प्रवारयसि नः सर्वोस्तन्नः कोऽद्य करिष्यति ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-----------|-------------------|
| भोज्येषु | “ உணவுகளிலும், | प्रवारयसि | சூழச்செய்வீர். |
| पानेषु | பானங்களிலும், | तत् | அதை |
| वस्त्रेषु | வஸ்திரங்களிலும், | नः | எங்களுக்கு |
| आभरणेषु च | ஆபரணங்களிலும், | अद्य | இப்பொழுது |
| नः | எங்கள் | कः | யார் |
| सर्वान् ननु | எல்லோரையுமே | करिष्यति | செய்யப்போகிறார் ? |

अवदारणकाले तु पृथिवी नावदीर्यते । विहीना या त्वया राज्ञा धर्मज्ञेन महात्मना ॥१६॥

| | | | |
|--------------|-----------------------|---------------|------------------------------|
| धर्मज्ञेन | “ தருமக்குறும், | या | எதுவோ அந்த |
| महात्मना | மஹாத்மாவும், | पृथिवी | பூமி |
| राज्ञा | சக்கிரவர்த்தியுமாகும் | अवदारणकाले तु | பிளவுறவேண்டிய காலத்திலும் |
| त्वया विहीना | தேவரீரை இழந்தது | अवदीर्यते न | பிளவா திருக்கின்றது. |

पितरि स्वर्गमापन्ने रामे चारण्यमाश्रिते । किं मे जीवितसामर्थ्यं प्रवेक्ष्यामि हुताशनम् ॥

| | | | |
|---------|------------------|----------------|------------------|
| पितरि | “தந்தை | आश्रिते | அடைந்து விடவும், |
| स्वर्गं | ஸ்வர்க்கத்தை | जीवितसामर्थ्यं | உயிர் வாழத்திறமை |
| आपन्ने | அடைந்து விடவும், | मे | எனக்கு |
| रामे च | ஸ்ரீராமரும் | किं | ஏது? |
| अरण्यं | காட்டை | हुताशनं | அக்கனியில் |
| | | प्रवेक्ष्यामि | புகுவேன். |

हीनो भ्रात्रा च पित्रा च शून्यामिक्ष्वाकुपालिताम् ।
अयोध्यां न प्रवेक्ष्यामि प्रवेक्ष्यामि तपोवनम्

॥ १८ ॥

| | | | |
|------------------|---|-----------------|---------------------|
| भ्रात्रा च | “தமையனாலும், | शून्यां | பாழடைந்து கிடக்கும் |
| पित्रा च | தந்தையாலும், | अयोध्यां | அயோத்தியில் |
| हीनः | கைவிடப்பட்டவனாய் | प्रवेक्ष्यामि न | புகமாட்டேன் ; |
| इक्ष्वाकुपालितां | { இக்ஷ்வாகுவம்சத்த வர்களால் ரக்ஷிக்கப் பட்டுவந்த, | तपोवनं | தபோவனத்தில் |
| | | प्रवेक्ष्यामि | புகுவேன் ”. |

तयोर्विलपितं श्रुत्वा व्यसनं चान्ववेक्ष्य तत् । भृशमार्ततरा भूयः सर्व एवानुगामिनः ॥

| | | | |
|------------|------------------|----------------|------------------|
| अनुगामिनः | கூடவந்தவர்கள் | तत् व्यसनं | அந்த கஷ்டத்தை |
| सर्वे | எல்லோரும் | अन्ववेक्ष्य एव | கவனித்தும் |
| तयोः | அவ்விருவர்களுடைய | भूयः | முன்னிலுமதிகமாய் |
| विलपितं | புலம்பலை | भृशं | மிக |
| श्रुत्वा च | கேட்டும், | आर्ततराः | துயரமுற்றார்கள். |

ततो विषण्णौ विश्रान्तौ शत्रुघ्नभरताबुभौ । धरायां संव्यवेष्टेतां भग्नशृङ्गाविवर्षभौ ॥ २० ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-----------------|-------------------|
| ततः | அப்பொழுது | उभौ | இருவரும் |
| विषण्णौ | துக்கித்து | भग्नशृङ्गौ | கொம்பு ஒடிபட்ட |
| विश्रान्तौ | தளர்ச்சியடைந்த | ऋषभौ इव | இரு எருதுகள் போல் |
| शत्रुघ्नभरतौ | சத்ருக்னர், பரதர் | धरायां | பூமியில் |
| | ஆகிய | संव्यवेष्टेताम् | புரண்டார்கள். |

ततः प्रकृतिमान्वैद्यः पितुरेषां पुरोहितः । वसिष्ठो भरतं वाक्यमुत्थाप्य तमुवाच ह ॥ २१ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------------|----------|------------------|
| ततः | அச்சமயத்தில் | वसिष्ठः | வலிவீட்டபகவான் |
| प्रकृतिमान् | பிறவியிலேயே நற்கு ணம் வாய்ந்தவரும் | भरतं | பரதரை |
| वैद्यः | ஸர்வக்ஞரும் | उत्थाप्य | துக்கியெடுத்து, |
| पितुः | தந்தைக்கும் | तं | அவரைப் பார்த்து |
| एषां ह | இவர்களுக்கும் | वाक्यं | பின்வரும் மொழியை |
| पुरोहितः | புரோஹிதருமான | उवाच | மொழிந்தனர் ; |

त्रयोदशोऽयं दिवसः पितुर्वृत्तस्य ते विभो । सावशेषास्थिनिचये किमिह त्वं विलम्बसे ॥

| | | | |
|----------|----------------|------------------|--------------------|
| விமோ | “ தீரனே ! | சாவசேபாஸ்திநிசயே | மீதியுள்ள அஸ்திகளை |
| ते | உனது | | பொறுக்குவதில் |
| वृत्तस्य | இறந்துபோன | इह | இப்பொழுது |
| पितुः | தந்தைக்கு | त्वं | நீ |
| अयं | இது | किं | ஏன் |
| त्रयोदशः | பதின்மூன்றாவது | विलम्बसे | தாமதிக்கின்றனே ? |
| दिवसः | நாள். | | |

त्रीणि द्वन्द्वानि भूतेषु प्रवृत्तान्यविशेषतः । तेषु चापरिहार्येषु नैवं भवितुमर्हसि ॥ २३ ॥

| | | | |
|-------------|--|--------------|-----------------------|
| வீணி | “ மூன்று | प्रवृत्तानि | ஏற்பட்டிருக்கின்றன . |
| द्वन्द्वानि | { இரட்டைகளாகிற, 1. பசிதாகம், 2 சோக மோகம், 3. ஜரைமரணம் என்ற இவைகள் எல்லா ப்ராணிகளிடத்தும் | अपरिहार्येषु | நம்மால் விலக்கமுடியாத |
| भूतेषु | | तेषु च | அவைகள் விஷயத்தில் |
| अविशेषतः | பசுபா தமின்றி | एवं | இங்ஙனம் |
| | | भवितुं | நடந்துகொள்ள |
| | | अर्हसि न | நீ உடன்படலாகாது.” |

सुमन्त्रश्चापि शत्रुघ्नमुत्थाप्याभिप्रसाद्य च । श्रावयामास तत्त्वज्ञः सर्वभूतभवाभवौ ॥ २४ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|---------------|-------------------------|
| तत्त्वज्ञः | தத்வமறிந்த | सर्वभूतभवाभवौ | { எல்லா ப்ராணிகளுக்கும் |
| सुमन्त्रः च | சுமந்திரரும், | अपि | { கும் பிறப்பு, இறப்பு |
| शत्रुघ्नं | சத்ருக்னரை | | ண்டென்பதைப்பற்றியும் |
| उत्थाप्य | தூக்கியெடுத்து, | श्रावयामास | சொன்னார். |
| अभिप्रसाद्य च | சமாதானம் செய்து | | |

उत्थितौ च नरव्याघ्रौ प्रकाशेते यशस्विनौ । वर्षातपपरिक्षिन्नौ पृथगिन्द्रध्वजाविव ॥ २५ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------------|--------------------|----------------------------------|
| यशस्विनौ | புகழ்பெற்றவர்களும் | वर्षातपपरिक्षिन्नौ | மழைக்காலத்திய வெய்யிலில் அடிபட்ட |
| नरव्याघ्रौ च | { புருஷோத்தமர்களுமான அவ்விருவர்களும், | इन्द्रध्वजौ इव | இரு இந்திரத்வஜங்கள் போல் |
| उत्थितौ | எழுந்துநின்றவர் | पृथक् | தனித்தனியே |
| | களாய் | प्रकाशेते | விளங்கினார்கள். |

अश्रूणि परिमृदन्तौ रक्ताक्षौ दीनभाषिणौ । अमात्यास्त्वरयन्ति स्म तनयौ चापराः क्रियाः॥

| | | | |
|------------|--------------------------|---------------|------------------------|
| अमात्याः | மந்திரிமார்கள் | दीनभाषिणौ | மெல்லியகுரலில்பேசும் |
| अश्रूणि | கண்ணீரை | तनयौ | குமாரர்களிருவர் |
| परिमृदन्तौ | துடைத்துக்கொண்டு, | अपराः | அபர [களையும் |
| रक्ताक्षौ | சிவந்த கண்களுற்றவர்களாய் | क्रियाः च | கரியைகளில் |
| | | त्वरयन्ति स्म | தூரிதப்படுத்தினார்கள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे सप्तसप्ततितमः सर्गः ॥

अष्टसप्ततितमः सर्गः—எழுபத்தேட்டாவது ஸர்க்கம். ॥ ७८ ॥

शत्रुघ्नेन मन्थरानिग्रहः—சத்ருக்னார் மந்தரையை தண்டிப்பது.

अथ यात्रां समीहन्तं शत्रुघ्नो लक्ष्मणानुजः । भरतं शोकसन्तप्तमिदं वचनमब्रवीत् ॥ १ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|-------------|----------------------|
| अथ | அதன்பின்னர், | समीहन्तं | கருதுபவராய் |
| लक्ष्मणानुजः | லக்ஷ்மணரது தம்பி யாகும் | शोकसन्तप्तं | சோகத்தால் துடிக்கும் |
| शत्रुघ्नः | சத்ருக்னார், | भरतं | பரதரைப்பார்த்து |
| यात्रां | பரம்பரையாய் வந்த தர்மானுஷ்டானத்தை | इदं वचनं | பின்வரும் மொழியை |
| | | अब्रवीत् | சொன்னார் : |

गतिर्यः सर्वभूतानां दुःखे किं पुनरात्मनः । स रामः सत्त्वसंपन्नः स्त्रिया प्रवाजितो वनम्॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|----------------|---|
| सर्वभूतानां | “ எல்லா ப்ராணிகளுக்கும் | पुनः | கேட்கவும் வேண்டுமோ ? |
| दुःखे | கஷ்டம் சம்பவிக்கையில் | सत्त्वसम्पन्नः | { இயற்கையாய் சகல திருக்கல்யாணகுணங்களை யுடைய |
| यः | எவரொருவர் | रामः | மறீராமர் |
| गतिः | கதியோ, | स्त्रिया | ஒரு ஸ்த்ரீயால் |
| सः | அவர் | वनं | காட்டிற்கு |
| आत्मनः | உமக்கு | प्रवाजितः | ஒட்டிவிடப்பட்டனர். |
| किं | என்றால் | | |

बलवान्वीर्यसम्पन्नो लक्ष्मणो नाम योऽप्यसौ । किं न मोचयते रामं कृत्वाऽपि पितृनिग्रहम्॥

| | | | |
|---------------|--|-------------|--------------------------------------|
| बलवान् | “சாமர்த்தியசாலியாய் | पितृनिग्रहं | பிதாவைக் கண்டிப்பதை |
| वीर्यसम्पन्नः | { எதையும் குறையின்றி முடிக்க வல்லவனுமாகியவன் | कृत्वा अपि | செய்தேனும் |
| यः | எவனோ, | रामं अपि | ராமரையும் |
| असौ | இந்த | किं | ஏன் |
| लक्ष्मणः नाम | லக்ஷ்மணன் தான் | मोचयते न | கஷ்டத்தினின்று நிவர்த்திசெய்யவில்லை? |

पूर्वमेव तु निग्राह्यः समवेक्ष्य नयानयौ । उत्पथं यः समारूढो नार्या राजा वशं गतः ॥

| | | | |
|------------|------------------------|------------|-----------------------------|
| यः | “ எவனேனுமொரு | नयानयौ | நியாயமநியாயமில்விரண்டையும், |
| राजा | மன்னன் | समवेक्ष्य | ஆராய்ந்து |
| नार्याः | பெண்பிள்ளைக்கு | पूर्व एव | காராயம் நடைபெறும் முன்னமேயே |
| वशं गतः | ஆட்பட்டவனாய் | निग्राह्यः | தடுக்கப்படவேண்டியவன். |
| उत्पथं | தூர்மார்க்கத்தை | | |
| समारूढः तु | அனுஷ்டிக்கிறானென்றால், | | |

इति संभाषमाणे तु शत्रुघ्ने लक्ष्मणानुजे । प्राग्द्वारेऽभूत्तदा कुब्जा सर्वाभरणभूषिता ॥ ५ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|---------------------|---|
| लक्ष्मणानुजे | லக்ஷ்மணரின் தம்பி யாகும் | तदा | அதேசமயத்தில் |
| शत्रुघ्ने | சத்ருக்னர் | कुब्जा | கூனி |
| इति | மேற்கண்டவண்ண மாய் | सर्वाभरण- भूषिता | சகலவித ஆபரணங்க ளாலும் அலங்கரிக்க ப்பட்டவளாய், |
| संभाषमाणे तु | சொல்லிக்கொண்டிருக்கையில் | प्राग्द्वारे | முன்வாயிலில் |
| | | अभूत् | இருந்தனள். |

लिप्ता चन्दनसारेण राजवस्त्राणि विभ्रती । विविधं विविधैस्तैस्तैर्भूषणैश्च विभूषिता ॥ ६ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|----------|------------------------------|
| चन्दनसारेण | குழம்புச்சந்தனம் | विविधैः | பலவகை |
| लिप्ता | பூசியவளாய் | भूषणैः | ஆபரணங்களால் |
| राजवस्त्राणि | அரசஉடைகளை | विविधं च | பலவகையாகவும் |
| विभ्रती | உடுத்தவளாய், | विभूषिता | அலங்கரித்துக்கொண்டிருந்தனள். |
| तैः तैः | அந்தந்த | | |

मेखलादामभिश्चितैरन्यैश्च शुभभूषणैः । बभासे बहुभिर्वद्धा रज्जुबद्धेव वानरी ॥ ७ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|------------|----------------------------|
| चितैः | பலவகைப்பட்ட | बद्धा | அலங்கரிக்கப்பெற்ற வளாய் |
| मेखलादामभिः | ஒட்டியாணங்களாலும் | रज्जुबद्धा | சடைப்பின்னலுடனிருக்கும்வள் |
| अन्यैः | வேறு | वानरी इव | பெண்குரங்கென |
| बहुभिः | பல | बभासे | விளங்கினாள். |
| शुभभूषणैः च | உத்தம ஆபரணங்க ளாலும் | | |

तां समीक्ष्य तदा द्वास्थो भृशं पापस्य कारिणीम् ।

गृहीत्वाऽकरुणां कुब्जां शत्रुघ्नाय न्यवेदयत्

॥ ८ ॥

| | | | |
|----------|----------------|-------------|---------------------|
| तदा | அப்பொழுது | तां कुब्जां | அந்தக் கூனியை |
| द्वास्थः | வாயிற்காப்போனோ | समीक्ष्य | கண்முன்கண்டு, |
| पापस्य | பாபத்தை [ருவன் | गृहीत्वा | பிடித்திழுத்துவந்து |
| अकरुणां | இரக்கமற்றவளாய் | शत्रुघ्नाय | சத்ருக்னரிடத்தில் |
| भृशं | அதிகமாக | न्यवेदयत् | பின்வருமாறு |
| कारिणीं | செய்கிறவளான | | தெரிவித்தான்: |

यस्याः कृते वने रामो न्यस्तदेहश्च वः पिता । सेयं पापा नृशंसा च तस्याः कुरु यथामति ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|--------|--------------|
| वने | “காட்டில் | सा | அந்த |
| रामः | ஸ்ரீராமரிருப்பதும், | नृशंसा | கொடிய |
| वः | உங்களது | पापा | பாபி |
| पिता | திருத்தந்தையர் | इयं च | இவள்தான்; |
| न्यस्तदेहः च | உடலை விட்டதும் | तस्याः | அவளுக்கு |
| यस्याः कृते | எவளாலேயோ, | यथामति | அறிவுவருமாறு |
| | | कुरु | செய்வீராக.” |

शत्रुघ्नश्च तदाज्ञाय वचनं भृशदुःखितः । अन्तःपुरचरान्सर्वानित्युवाच धृतव्रतः ॥ १० ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|---------------|-------------------------|
| धृतव्रतः | அசஞ்சலாபத்திமை கொண்ட | अन्तःपुरचरान् | அந்தப்புரவாசிகள் |
| शत्रुघ्नः च | சத்ருக்னரும், | सर्वान् | எல்லோரையும் பார்த்து |
| तत् | அதை | इति | பின்வரும் |
| आज्ञाय | அறிந்துகொண்டு | वचनं | சொல்லை |
| भृशदुःखितः | மிகத் துன்புற்றவராய் | उवाच | சொன்னார்: |

तीव्रमुत्पादितं दुःखं भ्रातृणां मे तथा पितुः । यथा चेयं नृशंसस्य कर्मणः फलमश्नुताम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|---------------|---------------------|
| मे | “எனக்கும் | उत्पादितं यथा | விளைவிக்கப்பட்டதால் |
| भ्रातृणां | பிராதாக்களுக்கும் | इयं | இவள் |
| पितुः च | தந்தையாருக்கும் | नृशंसस्य | பாப |
| तीव्रं | கொடிய | कर्मणः तथा | தொழிலுக்கேற்ற |
| दुःखं | துயரானது | फलं | பயனை |
| | | अश्नुताम् | அனுபவிக்கட்டும்.” |

एवमुक्ता च तेनाशु सखीजनसमावृता । गृहीता बलवत्कुब्जा सा तद्रहमनादयत् ॥ ११ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|----------|-------------------------------|
| तेन | அவரால் | सा | அந்த |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | कुब्जा च | கூனியும் |
| उक्ता | சொல்லப்பட்டு, | तत् | அந்த |
| आशु | வேகமாய் | गृहं | திருமாளிகையில் |
| गृहीता | பிடித்திழுக்கப்பட்ட | बलवत् | உரக்க |
| सखीजनसमावृता | தோழிகளுடனிருந்த | अनादयत् | எதிரொலியுண்டாகக் கூவினாள். |

ततः सुभृशसंतप्तस्याः सर्वः सखीजनः । क्रुद्धमाज्ञाय शत्रुघ्नं विपलायत सर्वशः ॥ १२ ॥

| | | | |
|-----------|--------------|--------------|----------------------------|
| ततः | அச்சமயத்தில் | क्रुद्धं | கோபாவேசம் கொண் |
| तस्याः | அவளது | आज्ञाय | கவனித்து, [டவராய் |
| सखीजनः | தோழிமார்கள் | सुभृशसंतप्तः | மிக்க உடல்நடுக்க முற்று |
| सर्वः | ஒவ்வொருவரும் | सर्वशः | நாலாபக்கங்களிலும் |
| शत्रुघ्नं | சத்ருக்னரை | विपलायत | ஓடத்தலைப்பட்டனர். |

अमन्त्रयत कृत्स्नश्च तस्याः सर्वः सखीजनः । यथाऽयं समुपक्रान्तो निःशेषं नः करिष्यति ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------------|-----------|------------------------|
| तस्याः | அவளது | नः | நம்மை |
| सखीजनः | தோழிமார்கள் | निःशेषं | மிச்சமின்றி |
| सर्वः च | ஒவ்வொருவரும், | करिष्यति | சிகிதிக்கப்போகின்றார்” |
| अयं | “இவர் | यथा | என்று |
| कृत्स्नः | முற்றிலும் | अमन्त्रयत | பேசிக்கொண்டனர். |
| समुपक्रान्तः | சிகிதிக்கத்தீர்மானம் கொண்டவராய் | | |

सानुक्रोशां वदान्यां च धर्मज्ञां च यशस्विनीम् ।
कौसल्यां शरणं याम सा हि नोऽस्तु ध्रुवा गतिः

॥ १५ ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|--------|-------------------|
| सानுக்ரோஷா | “ பச்சாத்தாபமுடையவனும், | शरणं | சரணமாக |
| வதான்யா | உதாரகுணமுடையவனும், | याम | அடைவோமாக. |
| धर्मज्ञा | தர்மமறிந்தவனும் | सा हि | அவளொருவளே |
| यशस्विनी | புகழுடையவளுமாகிய | नः च | நம்மெல்லோருக்கும் |
| कौसल्यां च | கோஸலாதேவியாரையே | ध्रुवा | நம்பக்கூடிய |
| | | गतिः | கதி |
| | | अस्तु | ஆகுவார்.” |

स च रोषेण ताम्राक्षः शत्रुघ्नः शत्रुतापनः । विचर्ष तदा कुब्जां क्रोशन्तीं पृथिवीतले ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|-------------|---------------|
| रोषेण | சினத்தால் | शत्रुघ्नः च | சத்ருக்களும், |
| ताम्राक्षः | சிவந்த கண்களையுடையவராய் | तदा | அப்பொழுது |
| शत्रुतापनः | சத்ருக்களைத் தபிக்கச் செய்யும் | क्रोशन्तीं | அலறும் |
| सः | அந்த | कुब्जां | கூனியை |
| | | पृथिवीतले | பூமியில் |
| | | विचर्ष | இழுத்தார். |

तस्यां ह्याकृष्यमाणायां मन्थरायामितस्ततः । चित्रं बहुविधं भाण्डं पृथिव्यां तद्व्यशीर्यत ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-----------|----------------|
| तस्यां | அந்த | तत् | அந்த |
| मन्थरायां | மந்தரை | भाण्डं हि | ஆபரணமெல்லாமும் |
| आकृष्यमाणायां | இழுக்கப்படுகையில் | पृथिव्यां | தரையில் |
| चित्रं | அழகான | इतस्ततः | இங்குமங்கும் |
| बहुविधं | பலவகைப்பட்ட | व्यशीर्यत | சிதறுண்டது. |

तेन भाण्डेन सङ्कीर्णं श्रीमद्राजनिवेशनम् । अशोभत तदा भूयः शारदं गगनं यथा ॥१८॥

| | | | |
|------------|------------|-----------|-------------------|
| तदा | அப்பொழுது | भूयः | பலவாறும் |
| श्रीमत् | அழகிய | सङ्कीर्णं | நிரம்பப்பெற்றதாய் |
| राजनिवेशनं | ராஜமாளிகை | शारदं | சார்க்காலத்திய |
| तेन | அந்த | गगनं यथा | ஆகாசம்போல் |
| भाण्डेन | ஆபரணத்தால் | अशोभत | சோபித்தது. |

स बली बलवत्क्रोधाद्गृहीत्वा पुरुषर्षभः । कैकेयीमभि निर्भर्त्स्य बभाषे परुषं वचः ॥१९॥

| | | | |
|------------|-----------------|--------------|--------------------------|
| बली | பலவானும் | कैकेयीं अभि | கைகேயிபக்கலிலிருந்த அவளை |
| पुरुषर्षभः | புருஷோத்தமருமான | गृहीत्वा | (தூரமாக) இழுத்து, |
| सः | அவர் | निर्भर्त्स्य | இகழ்ந்துபேசி |
| बलवत् | அளவுகடந்த | परुषं वचः | வன்மொழியையும் |
| क्रोधात् | சினத்தால் | बभाषे | சொன்னார். |

शत्रुघ्नश्च तदाज्ञाय वचनं भृशदुःखितः । अन्तःपुरचरान्सर्वानित्युवाच धृतव्रतः ॥ १० ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------|---------------|------------------|
| धृतव्रतः | அச்சஞ்சலாபத்திமை கொண்ட | अन्तःपुरचरान् | அந்தப்புரவாசிகள் |
| | | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| शत्रुघ्नः च | சத்ருக்னரும், | | பார்,க்து |
| तत् | அதை | इति | பின்வரும் |
| आज्ञाय | அறிந்துகொண்டு | वचनं | சொல்லை |
| भृशदुःखितः | மிகத் துன்புற்றவராய் | उवाच | சொன்னார்: |

तीव्रमुत्पादितं दुःखं भ्रातृणां मे तथा पितुः । यथा चेयं नृशंसस्य कर्मणः फलमश्नुताम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|---------------|---------------------|
| मे | “எனக்கும் | उत्पादितं यथा | விளைவிக்கப்பட்டதால் |
| भ्रातृणां | பிராதாக்களுக்கும் | इयं | இவள் |
| पितुः च | தந்தையாருக்கும் | नृशंसस्य | பாப |
| तीव्रं | கொடிய | कर्मणः तथा | தொழிலுக்கேற்ற |
| दुःखं | துயரானது | फलं | பயனை |
| | | अश्नुताम् | அனுபவிக்கட்டும்.” |

एवमुक्ता च तेनाशु सखीजनसमावृता । गृहीता बलवत्कुब्जा सा तद्ग्रहमनादयत् ॥ १२ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|----------|-------------------------------|
| तेन | அவரால் | सा | அந்த |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | कुब्जा च | கூனியும் |
| उक्ता | சொல்லப்பட்டு, | तत् | அந்த |
| आशु | வேகமாய் | गृहं | திருமாளிகையில் |
| गृहीता | பிடித்திழுக்கப்பட்ட | बलवत् | உரக்க |
| सखीजनसमावृता | தொழில்களுடனிருந்த | अनादयत् | எதிரொலியுண்டாகக் கூவினாள். |

ततः सुभृशसंतप्तस्याः सर्वः सखीजनः । क्रुद्धमाज्ञाय शत्रुघ्नं विपलायत सर्वशः ॥ १३ ॥

| | | | |
|-----------|--------------|--------------|----------------------------|
| ततः | அச்சமயத்தில் | क्रुद्धं | கோபாவேசம் கொண் |
| तस्याः | அவளது | आज्ञाय | கவனித்து, [டவராய் |
| सखीजनः | தொழிலார்கள் | सुभृशसंतप्तः | மிக்க உடல்நடுக்க முற்று |
| सर्वः | ஒவ்வொருவரும் | सर्वशः | நாலாபக்கங்களிலும் |
| शत्रुघ्नं | சத்ருக்னரை | विपलायत | ஓடக்கலைப்பட்டனர். |

अमन्त्रयत कृत्स्नश्च तस्याः सर्वः सखीजनः । यथाऽयं समुपक्रान्तो निःशेषं नः करिष्यति ॥

| | | | |
|--------------|---------------|---------|------------------------|
| तस्याः | அவளது | नः | நம்மை |
| सखीजनः | தொழிலார்கள் | निःशेषं | மிச்சமின்றி |
| सर्वः च | ஒவ்வொருவரும், | | சிகிதிக்கப்போகின்றார்” |
| अयं | “இவர் | | என்று |
| कृत्स्नः | முற்றிலும் | | |
| समुपक्रान्तः | சிகிதிக்கத் | | |

सानुक्रीशां वदान्यां च धर्मज्ञां च यशस्विनीम् ।
कौसल्यां शरणं याम सा हि नोऽस्तु ध्रुवा गतिः

॥ १५ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|--------|-------------------|
| सानுக्रीशां | “ பச்சாத்தாபமுடையவனும், | शरणं | சரணமாக |
| வदान்யாं | உதாரகுணமுடையவனும், | याम | அடைவோமாக. |
| धर्मज्ञां | தர்மமறிந்தவனும் | सा हि | அவளொருவளே |
| यशस्विनीं | புகழுடையவருமாகிய | नः च | நம்மெல்லோருக்கும் |
| कौसल्यां च | கோஸலாதேவியாரையே | ध्रुवा | நம்பக்கூடிய |
| | | गतिः | கதி |
| | | अस्तु | ஆகுவார்.” |

स च रोषेण ताम्राक्षः शत्रुघ्नः शत्रुतापनः । विचकर्ष तदा कुब्जां क्रोशन्तीं पृथिवीतले ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|-------------|---------------|
| रोषेण | சினத்தால் | शत्रुघ्नः च | சத்ருக்களும், |
| ताम्राक्षः | சிவந்த கண்களையுடையவராய் | तदा | அப்பொழுது |
| शत्रुतापनः | சத்ருக்களைத் தடுக்கச் செய்யும் | क्रोशन्तीं | அலறும் |
| सः | அந்த | कुब्जां | கூனியை |
| | | पृथिवीतले | பூமியில் |
| | | विचकर्ष | இழுத்தார். |

तस्यां ह्यாகृष्यमाणायां मन्थरायामितस्ततः । चित्रं बहुविधं भाण्डं पृथिव्यां तद्व्यशीर्यत ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-----------|----------------|
| तस्यां | அந்த | तत् | அந்த |
| मन्थरायां | மந்தரை | भाण्डं हि | ஆபரணமெல்லாமும் |
| आकृष्यमाणायां | இழுக்கப்படுகையில் | पृथिव्यां | தரையில் |
| चित्रं | அழகான | इतस्ततः | இங்குமங்கும் |
| बहुविधं | பலவகைப்பட்ட | व्यशीर्यत | சிதறுண்டது. |

तेन भाण्डेन सङ्कीर्णं श्रीमद्राजनिवेशनम् । अशोभत तदा भूयः शारदं गगनं यथा ॥१८॥

| | | | |
|------------|------------|-----------|-------------------|
| तदा | அப்பொழுது | भूयः | பலவாறும் |
| श्रीमत् | அழகிய | सङ्कीर्णं | நிரம்பப்பெற்றதாய் |
| राजनिवेशनं | ராஜமாளிகை | शारदं | சரக்காலத்திய |
| तेन | அந்த | गगनं यथा | ஆகாசம்போல் |
| भाण्डेन | ஆபரணத்தால் | अशोभत | சோபித்தது. |

स बली बलवत्क्रोधाद्गृहीत्वा पुरुषर्षभः । कैकेयीमभि निर्भर्त्य बभाषे परुषं वचः ॥१९॥

| | | | |
|------------|-----------------|-------------|--------------------------|
| बली | பலவானும் | कैकेयीं अभि | கைகேயிபக்கலிலிருந்த அவளை |
| पुरुषर्षभः | புருஷோத்தமருமான | गृहीत्वा | (தூரமாக) இழுத்து, |
| सः | அவர் | निर्भर्त्य | இகழ்ந்துபேசி |
| बलवत् | அளவுகடந்த | परुषं वचः | வன்மொழியையும் |
| क्रोधात् | சினத்தால் | बभाषे | சொன்னார். |

तैर्वाक्यैः परुषैर्दुःखैः कैकेयी भृशदुःखिता । शत्रुघ्नभयसंत्रस्ता पुत्रं शरणमागता ॥२०॥

கைகேயி கைகேயி
 तैः அந்த
 परुषैः கொடியனவாயிருப்ப
 வைகளும்,
 दुःखैः கர்ணகரோமாயிருப்ப
 வைகளும் கிய
 वाक्यैः சொற்களால்

भृशदुःखिता மிக்க மனம் நொந்த
 வளாய்,
 शत्रुघ्नभयसंत्रस्ता { சத்ருக்னரிடத்தில்
 பயத்தால் உடல்
 நடுங்குகிறவளாய்,
 पुत्रं (சொந்த) புதல்வனை
 शरणं சரணமாக
 आगता அடைந்தனள்.

तं प्रेक्ष्य भरतः क्रुद्धं शत्रुघ्नमिदमब्रवीत् । अवध्याः सर्वभूतानां प्रमदाः क्षम्यतामिति ॥

भरतः பரதர்
 तं அந்த
 शत्रुघ्नं சத்ருக்னரை
 क्रुद्धं சினங்கொண்டவராய்
 प्रेक्ष्य கவனித்து,
 इदं பின்வரும்
 इति இந்தச்சொல்லை

अब्रवीत् சொன்னார் :
 सर्वभूतानां “எல்லா ப்ராணி
 प्रमदाः பெண்கள் [களுள்ளும்
 अवध्याः ஹிம்ஸிக்கத்தகாதவர்
 கள் ;
 क्षम्यताम् மன்னித்துவிடப்பட
 டும்.

हन्त्यामहमिमां पापां कैकेयीं दुष्टचारिणीम् । यदि मां धार्मिको रामो नासूयेन्मातृघातकम् ॥

धार्मिकः “தார்மிகராகிய
 रामः ஸ்ரீராமர்
 मां என்னை
 मातृघातकं மாதாவைக் கொன்ற
 வனென
 असूयेत् न यदि அதிருப்திகொள்ளா
 ரெனில்

दुष्टचारिणीं துஷ்ட ஒழுக்கமு
 पापां பாபியாகிய [டைய
 इमां இதோவிருக்கும்
 कैकेयीं கைகேயியை
 अहं நான்
 हन्त्याम् கொல்வேன்.

इमामपि हतां कुब्जां यदि जानाति राघवः । त्वां च मां चैव धर्मात्मा नाभिभाषिष्यते ध्रुवम् ॥

धर्मात्मा “தர்மாத்மாவாகும்
 राघवः ஸ்ரீராமர்
 इमां कुब्जां अपि இந்த கூனியைத்தா
 னாகட்டும்
 हतां ஹிம்ஸிக்கப்பட்ட
 வளாய்
 जानाति यदि அறிவாராகில்

त्वां च உன்னிடத்திலும்,
 मां च என்னிடத்திலும்,
 ध्रुवं एव (இனி) எக்காலத்தி
 லும்
 अभिभाषिष्यते न முகம்கொடுத்துப்
 பேசார்.”

भरतस्य वचः श्रुत्वा शत्रुघ्नो लक्ष्मणानुजः । न्यवर्तत ततो रोषात्तां मुमोच च मन्यराम् ॥

भरतस्य பரதரது
 वचः திருவாக்கை
 श्रुत्वा சிரமேற்கொண்டு
 लक्ष्मणानुजः லக்ஷ்மணன் தம்பியா
 शत्रुघ्नः சத்ருக்னார் [கிய

ततः உடனே
 रोषात् கோபத்தினின்று
 न्यवर्तत மீண்டார்.
 तां मन्यरां च அந்த மந்தரையையும்
 मुमोच விடுவித்தார் ;

सा पादमूले कैकेय्या मन्थरा निपपात ह । निश्वसन्ती सुदुःखार्ता कृपणं विललाप च ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|---------------|-----------------------|
| मन्थरा ह | மந்தரையும் | निश्वसन्ती | பெருமூச்செறிந்து |
| कैकेय्याः | கைகேயிதேவியாரது | सुदुःखार्ता च | மிக்க மனம்நொந்த வளாய் |
| पादमूले | காலடியில் | कृपणं | பரிதாபமாய் |
| निपपात | விழுந்தனள். | विललाप | கதறியழுதனள். |
| सा | அவள் | | |

शत्रुघ्नविक्षेपविमूढसंज्ञां समीक्ष्य कुब्जां भरतस्य माता ।

शनैः समाश्वासयदार्तरूपां क्रौञ्चीं विलग्नमिव वीक्षमाणाम् ॥ २६ ॥

| | | | |
|------------------------------------|---|--------------|------------------------------------|
| भरतस्य | பரதரது | क्रौञ्चीं इव | க்ரௌஞ்சப்பேடு |
| माता | தாய் | | போல் |
| कुब्जां | கூனியை | वीक्षमाणां | பார்த்துக்கொண்டு |
| शत्रुघ्नविक्षेप- विमूढसंज्ञां } | சத்ருக்னரிடத்தில் ப யத்தால் மெய்மறந்த வளாய் | विलग्नां | தன் காலடியைப்பற்றி யிருப்பவளாய் |
| आर्तरूपां | துயருற்றவளாய் | समीक्ष्य | கவனித்து |
| | | शनैः | மிருதுவாய் |
| | | समाश्वासयत् | தேற்றினாள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे अष्टसप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5440



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3085

एकोनाशीतितमः सर्गः—எழுபத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம் ॥ ௨௭ ॥

मार्गनिर्माणनियोगः—வழி உண்பெண்ணக் கட்டளையீடுவது.

ततः प्रभातसमये दिवसे च चतुर्दशे । समेत्य राजकर्तारो भरतं वाक्यमब्रुवन् ॥ १ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|----------|------------------|
| ततः | அதன்மேல் | समेत्य | வந்துகூடி |
| चतुर्दशे | பதினான்காவது | भरतं | பரதரைப் பார்த்து |
| दिवसे | நாளில் | वाक्यं | பின்வரும் சொல்லை |
| प्रभातसमये च | சூர்யோதயத்திலேயே | अब्रुवन् | சொன்னார்கள் : |
| राजकर्तारः | மந்திரிமார்கள் | | |

गतो दशरथः स्वर्गं यो नो गुरुरो गुरुः । रामं प्रव्राज्य वै ज्येष्ठं लक्ष्मणं च महाबलम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|--------------------|
| ज्येष्ठं | “உத்தமராகிய | गुरुरो | பிதாவிலும் ச்ரேஷ்ட |
| रामं | பூரீராமரையும் | | ராகிய |
| महाबलं | அதிஸாமர்த்தியசாலி | गुरुः | தந்தை |
| | யாகிய | यः | எவரோ அந்த |
| लक्ष्मणं च | லக்ஷ்மணரையும் | दशरथः वै | தசரதசக்கிரவர்த்தி |
| प्रव्राज्य | நாடுகடத்தி | | யாரும் |
| नः | எங்களுக்கு | स्वर्गं गतः | பரலோகமடைந்தனர். |

त्वमद्य भव नो राजा राजपुत्र महायशः । सङ्गत्या नापराधोति राज्यमेतदनायकम् ॥

महायशः “மிக்க புகழ்பெற்ற
 राजपुत्र राजகுமாரரே!
 त्वं நீங்கள்
 अद्य இப்பொழுது
 नः எங்களுக்கு
 राजा அரசராக

भव ஆகுக.
 एतत् இந்த
 राज्यं ராஜ்யமானது
 अनायकं நாதனற்றதாய்
 सङ्गत्या தெய்வக்ருபையால்
 अपराधोति न குற்றம் செய்யாமலிருக்கின்றது.

आभिषेचनिकं सर्वमिदमादाय राघव । प्रतीक्षते त्वां स्वजनः श्रेणयश्च नृपात्मज ॥ ४ ॥

राघव “ரகுவம்சத்திலுதித்த
 नृपात्मज அரசகுமாரரே!
 स्वजनः தங்கள் ஜனமானது
 इदं இப்பொழுது
 आभिषेचनिकं அபிஷேகசாமக்கிரியை

आदाय கொண்டுவந்து
 त्वां உங்களை
 प्रतीक्षते எதிர்பார்த்துக்கொண்டிருக்கிறது.
 श्रेणयः நாட்டார்களுமே
 च அங்ஙனமே இருக்கின்றார்கள்.

सर्वं எல்லாவற்றையும்

राज्यं गृहाण भरत पितृपैतामहं ध्रुवम् । अभिषेचय चात्मानं पाहि चास्मान्नरर्षभ ॥ ५ ॥

नरर्षभ “புருஷோத்தமா!
 भरत பரதரே!
 पितृपैतामहं குலமுறையாய் வந்த
 राज्यं ராஜ்யத்தை
 गृहाण ஏற்றுக்கொள்ளும்.

आत्मानं च தங்களையும்
 अभिषेचय அபிஷேகம்பண்ணிக் கொள்ளும்.
 अस्मान् च எங்களையும்
 ध्रुवं குறையின்றி
 पाहि காத்தருளும்.”

आभिषेचनिकं भाण्डं कृत्वा सर्वं प्रदक्षिणम् । भरतस्तं जनं सर्वं प्रत्युवाच धृतव्रतः ॥ ६ ॥

धृतव्रतः தருமத்திலசஞ்சலாப் பற்றுடைய
 भरतः பரதர்
 आभिषेचनिकं பட்டாபிஷேகத்திற்
 भाण्डं சாமக்ரியை [குரிய
 सर्वं எல்லாவற்றையும்

प्रदक्षिणं कृत्वा வலம்வந்து
 तं जनं அந்த ஜனஸமுஹம்
 सर्वं எல்லோரையும் பார்த்து
 प्रत्युवाच பின்வரும் பதிலையருளிச்செய்தனர்.

ज्येष्ठस्य राजता नित्यमुचिता हि कुलस्य नः । नैवं भवन्तो मां वक्तुमर्हन्ति कुशला जनाः ॥

कुशलाः “எல்லாமறிந்த
 जनाः ஜனங்களாகிற
 भवन्तः நீங்கள்
 मां என்னைப்பார்த்து
 एवं இவ்விதமாய்
 वक्तुं சொல்ல
 अर्हन्ति न கூடாது.

हि ஏனெனில்
 नित्यं பரம்பரையாய்
 ज्येष्ठस्य மூத்தவனுக்கு
 राजता அரசு
 नः कुलस्य நமது குலத்திற்கு
 उचिता விதிக்கப்பட்டிருக்கிறது.

रामः पूर्वो हि नो भ्राता भविष्यति महीपतिः । अहं त्वरण्ये वत्स्यामि वर्षाणि नव पञ्च च ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-----------|-------------------|
| रामः | “ஸ்ரீராமர் | तु | இப்பொழுது |
| पूर्वः | ஜ்யேஷ்ட | अहं च | நான்தான் |
| भ्राता | ப்ராதா. | नव पञ्च | பதினான்கு |
| हि | ஆனபடியால் | वर्षाणि | வருஷங்கள் |
| नः | நமக்கு | अरण्ये | கானகத்தில் |
| महीपतिः | சக்கிரவர்த்தியாய் | वत्स्यामि | காலங்கழிக்கப்போகி |
| भविष्यति | ஆகவேண்டும். | | நேன். |

युज्यतां महती सेना चतुरङ्गमहाबला । आनयिष्याम्यहं ज्येष्ठं भ्रातरं राघवं वनात् ॥

| | | | |
|------------------|--------------------------|---------------|---|
| अहं | “நான் | सेना | சேனையானது |
| ज्येष्ठं भ्रातरं | மூத்த ப்ராதாவாகிய | चतुरङ्गमहाबला | { நான்கு அங்கங்களால் மகாசக்திவாய்ந்த தாயும் |
| राघवं | ஸ்ரீராமரை | महती | பெரிதாயும் |
| वनात् | காட்டினின்றும் | युज्यताम् | சித்தமாகட்டும். |
| आनयिष्यामि | அழைத்துவரப் போகிறேன். | | |

आभिषेचनिकं चैव सर्वमेतदुपस्कृतम् । पुरस्कृत्य गमिष्यामि रामहेतोर्वनं प्रति ॥ १० ॥

| | | | |
|------------|------------------|--------------|------------------|
| एतत् | “இந்த | रामहेतोः | ஸ்ரீராமருக்காக |
| उपस्कृतं | சித்தமாயிருக்கிற | पुरस्कृत्य | எடுத்துக்கொண்டு |
| आभिषेचनिकं | அபிஷேகசாமக்ரியை | वनं प्रति एव | காட்டிற்கே |
| सर्वं च | எல்லாவற்றையும், | गमिष्यामि | செல்லப்போகிறேன். |

तत्रैव तं नरव्याघ्रमभिषिच्य पुरस्कृतम् । आनेष्यामि तु वै रामं हव्यवाहमिवाध्वरात् ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|-----------|--------------------------|
| तत्र एव | அங்கேயே | अध्वरात् | யாகசாலையிலிருந்து |
| रामं | ஸ்ரீராமருக்கு | हव्यवाहं | தீரேதாக்கனியை |
| अभिषिच्य | பட்டாபிஷேகம் செய்து, | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே, |
| नरव्याघ्रं | புருஷோத்தமராகும் | तु वै | இப்பொழுதே |
| तं | அவரை | आनेष्यामि | அழைத்துவரப்போ கிறேன். |
| पुरस्कृतं | முடிசூட்டப்பெற்றவ ராய், | | |

न सकामां करिष्यामि स्वामिमां मातृगन्धिनीम् । वने वत्स्याम्यहं दुर्गे रामो राजा भविष्यति ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|-------------|-------------------------------|
| रामः | “ஸ்ரீராமர் | सकामां | மனோரதம் கைகூடப் பெற்றவளாய் |
| राजा | அரசராக | करिष्यामि न | நான் செய்யமாட் |
| भविष्यति | ஆகப்போகிறார். | अहं | நான் [டேன். |
| स्वां | சொந்த | दुर्गे | அடர்ந்த |
| मातृगन्धिनीं | தாயென்று பெயரை மட்டும் சூண்ட | वने | கானகத்தில் |
| इमां | இவளை | वत्स्यामि | வசிக்கப்போகிறேன். |

क्रियतां शिल्पिभिः पन्थाः समानि विषमाणि च । रक्षिणश्चानुसंयान्तु पथि दुर्गविचारकाः॥

| | | | |
|-----------|--------------------|---------------|----------------------|
| शिल्पिभिः | “ வேலைக்காரர்களால் | च | அங்கனமே செய்யப் |
| पन्थाः | வழியானது | | பட்டும். |
| क्रियतां | சீராக்கப்பட்டும். | दुर्गविचारकाः | காட்டுவழிகள் தெரிந்த |
| विषमाणि | புகழுடியாதவைகள் | रक्षिणः च | காவற்காரர்களும் |
| समानि | நேர்மையுள்ளனவாய் | पथि | வழியில் |
| | | अनुसंयान्तु | கூடவரட்டும்.” |

एवं संभाषमाणं तं रामहेतोर्नृपात्मजम् । प्रत्युवाच जनः सर्वः श्रीमद्वाक्यमनुत्तमम् ॥ १४ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|---------------------|
| जनः | ஜனங்கள் | नृपात्मजं | சக்கிரவர்த்திகுமார |
| सर्वः | எல்லோரும் | | ரைப் பார்த்து, |
| रामहेतोः | ஸ்ரீராமரையுத்தே | अनुत्तमं | ஒப்புயர்வில்லாததும் |
| | சித்து | श्रीमत् | தீரிலோகப்ரசித்தி |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | | பெற்றதுமாகிய |
| संभाषमाणं | திருவாய்மலர்ந்தரு | वाक्यं | பின்வரும் மொழியை |
| तं | அந்த [ளும் | प्रत्युवाच | கூறினார்கள் : |

एवं ते भाषमाणस्य पद्मा श्रीरूपतिष्ठताम् । यस्त्वं ज्येष्ठे नृपसुते पृथिवीं दातुमिच्छसि ॥

| | | | |
|----------|------------------------|-------------|---------------------|
| यः | “ யாதொரு | एवं | இங்ஙனமாக |
| त्वं | தேவரீர் | भाषमाणस्य | திருவாய்மலர்ந்தரு |
| ज्येष्ठे | மூத்த | | ளும் |
| नृपसुते | சக்கிரவர்த்தி திருக்கு | ते | அந்த தேவரீரை |
| | மாரரிடம் | पद्मा | விஷ்ணுவின் மனைவி |
| पृथिवीं | பூமியை | | யாகிய |
| दातुं | ஒப்புவிக்க | श्रीः | மஹாலக்ஷ்மி |
| इच्छसि | தீர்மானித்திருக்கின் | उपतिष्ठताम् | கடாகூழிக்கக்கடவள்.” |
| | றீரோ, | | |

अनुत्तमं तद्वचनं नृपात्मजप्रभाषितं संश्रवणे निशम्य च ।

प्रहर्षजास्तं प्रति बाष्पविन्दवो निषेतुरार्यानननेत्रसंभवाः

॥ १६ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------------|-------------------|
| संश्रवणे | தீர்மானங்கொண்ட | तं प्रति | அவரை நினைந்து |
| | விஷயத்தில் | आर्यानन- } | பெரியோர்கள் முகக் |
| नृपात्मज- } | சக்கிரவர்த்திகுமார | नेत्रसंभवाः } | கண்களிலிருந்துண் |
| प्रभाषितं } | ரால் சொல்லப்பட்ட | | டானவைகளும், |
| अनुत्तमं | சர்வோத்திருஷ். | प्रहर्षजाः च | ஆனந்தத்தா லுண்டா |
| | மான | | னவைகளுமாகிய |
| तत् वचनं | அந்தத் திருவாக்கை | बाष्पविन्दवः | கண்ணீர் த்துளிகள் |
| निशम्य | கேட்டு | निषेतुः | விழுந்தன. |

ऊचुस्ते वचनमिदं निश्म्य हृष्टाः सामात्याः सपरिषदो वियातशोकाः ।
पन्थानं नरवर भक्तिमाञ्जनश्च व्यादिष्टास्तव वचनाच्च शिल्पिवर्गः ॥ १७ ॥

சாமாதா: மந்திரிமார்களுாடு
தே அந்த [கூடிய
சபரிஷத: சபையோர்கள்
பந்தானம் வழியைப்பற்றி
வாதிஷ்ட: நியமனம்பெற்றவர்க
இதம் மேற்கண்ட [ளாய்
வசனம் நியமனத்தையும்
நிசம்ய கேட்டு,
வியாதசோகா: துயரம் நீங்கி [ளாய்
ஹ்ஸ்டா: உள்ளம் பூரித்தவர்க-

ऊचु: பின்வருமாறு
சொன்னார்கள் :
नरवर “புருஷோத்தம!
तव தங்களது
वचनात् கட்டளைப்படி
शिल्पिवर्गः வேலைக்காக
जनः ஜனமானது
भक्तिमान् தயாராயிருக்கிறது.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे एकोनाशीतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5457



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3102

अशीतितमः सर्गः—எண்பதாவது ஸர்க்கம் ॥ ८० ॥

मार्गनिर्माणम्—வழி உண்டுபண்ணுவது.

अथ भूमिप्रदेशज्ञाः सूत्रकर्मविशारदाः । स्वकर्माभिरताः शूराः खनका यन्त्रकास्तथा ॥
कर्मान्तिकाः स्थपत्यः पुरुषा यन्त्रकोविदाः । तथा वर्धकयश्चैव मार्गिणो वृक्षतक्षकाः ॥
कूपकाराः सुधाकारा वंशकर्मकरास्तथा । समर्था ये च द्रष्टारः पुरतस्ते प्रतस्थिरे ॥ ३ ॥

ये எவர்கள்
द्रष्टार: புத்தியாலறிந்து
समर्था: செம்மையாய் முடிக்க
வல்லவர்களோ
ते அப்படிப்பட்ட
पुरुषा: மனிதர்களாகிற
भूमिप्रदेशज्ञा: பூமியினமைப்பைய
றிந்தவர்களும்,
सूत्रकर्मविशारदा: நூல்படித்தளப்பதில்
நிபுணர்களும்,
स्वकर्माभिरता: { அவரவர் தொழிலில்
ஊக்கமுடையவர்
களும்,
शूरा: एव கைதேர்ந்தவர்களும்,
खनका: பூமிவெட்டுபவர்களும்
यन्त्रका: { எப்படிப்பட்ட ஆயுத
ங்களையும் செம்மைப்
படுத்துபவர்களும்,

कूपकारा: கிணறுவெட்டுபவர்
களும்,
कर्मान्तिका: अथ கூலியாட்களும்,
स्थपत्य: तथा தச்சமேஸ்தீர்களும்,
यन्त्रकोविदा: யந்திரங்களோட்டுவ
தில் சமர்த்தர்களும்,
वर्धकय: தச்சவேலைக்காரர்
களும்,
मार्गिण: तथा முன்சென்று வழிகா
ட்டுபவர்களும்,
वृक्षतक्षका: च மரவாளாட்களும்,
सुधाकारा: तथा கொலுத்துக்காரர்
களும்,
वंशकर्मकरा: च முங்கில்வேலை செய்ப
வர்களும்,
पुरतः முன்பேயே
प्रतस्थिरे ப்ரயாணமானார்கள்.

स तु हर्षात्तमुद्देशं जनौघो विपुलः प्रयान् । अशोभत महावेगः समुद्र इव पर्वणि ॥ ४ ॥

| | | | |
|---------|---------------|------------|----------------|
| सः | அந்த | तु | அதனால் |
| विपुलः | பெரிய | हर्षात् | உற்சாகத்தால் |
| जनौघः | ஜனத்திரளானது | पर्वणि | பருவகாலங்களில் |
| तं | அந்த | महावेगः | மிகப்பொங்கும் |
| उद्देशं | இடத்திற்கு | समुद्रः इव | சமுத்திரமென |
| प्रयान् | செல்லுகிறதாய் | अशोभत | திகழ்ந்தது. |

ते स्ववारं समास्थाय वर्त्मकर्मणि कोविदाः । करणैर्विविधोपेतैः पुरस्तात्संप्रतस्थिरे ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|--------------|-------------------|
| वर्त्मकर्मणि | வழியைத்திருத்துதலில் | समास्थाय | பெற்றுக்கொண்டு |
| कोविदाः | வல்லவர்களாகிய | विविधोपेतैः | பலவகை |
| ते | அவர்கள் | करणैः | கருவிகளுடன் |
| स्ववारं | அவரவர் வேலையை | पुरस्तात् | முதலில் |
| | | संप्रतस्थिरे | வெளிப்பட்டார்கள். |

लता वल्लीश्च गुल्मांश्च स्थाणून्श्मन एव च । जनास्ते चक्रिरे मार्गं छिन्दन्तो विविधान्दुमान् ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-----------|------------------|
| ते | அந்த | अश्मनः | கற்களையும், |
| जनाः | ஜனங்கள் | विविधान् | பல |
| लताः | மரக்களைகளையும், | दुमान् एव | விருக்தங்களையும் |
| वल्लीः च | கொடிகளையும், | छिन्दन्तः | வெட்டிக்கொண்டு |
| गुल्मान् च | புதர்களையும், | मार्गं | வழியை |
| स्थाणून् च | மரவோர்களையும், | चक्रिरे | சீர்திருத்தினர். |

अवृक्षेषु च देशेषु केचिद्वृक्षानरोपयन् ॥ ७ ॥

केचित्कुठारैष्टङ्कैश्च दात्रैश्छिन्दन्कचित्कचित् ॥ ८ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|------------|--------------|
| केचित् | சிலர் | छिन्दन् | வெட்டினர். |
| कुठारैः | கோடாலிகளாலும், | वृक्षान् च | மரங்களையும் |
| टङ्कैः | உளிகளாலும், | अवृक्षेषु | மரமில்லாத |
| दात्रैः च | அரிவாள்களாலும், | देशेषु | இடங்களில் |
| कचित् कचित् | ஆங்காங்கு | केचित् | சிலர் |
| | | अरोपयन् | வைத்தார்கள். |

अपरे वीरणस्तम्बान्वलिनो बलवत्तराः ॥ ९ ॥

विधमन्ति स्म दुर्गाणि स्थलानि च ततस्ततः ॥ १० ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|--------------|---------------|
| बलवत्तराः | அதிகபலமுள்ள | दुर्गाणि | புகழுடியாத |
| अपरे | வேறு சிலர் | स्थलानि च | இடங்களையும் |
| वलिनः | வேருன்றிய | ततस्ततः | அங்கங்கு |
| वीरणस्तम्बान् | வீரணமென்ற புல் | विधमन्ति स्म | அழித்தார்கள். |
| | லின் தாள்களையும், | | |

अपरेऽपूरयन्कूपान्पांसुभिः श्वभ्रमायतम् ॥११॥

| | | | |
|---------|-------------------|----------|-------------------|
| अपरे | வேறு சிலர் | कूपान् | மிக்க ஆழமுள்ள பள் |
| आयतं | அகன்ற | पांसुभिः | ளத்தாக்குகளையும், |
| श्वभ्रं | பள்ளத்தாக்கையும், | अपूरयन् | மணல்களால் |
| | | | நிரப்பினார்கள். |

निम्नभागांस्ततः केचित्समाश्चक्रुस्ततस्ततः ॥१२॥

| | | | |
|---------|-----------|-------------|---------------|
| ततः | அப்பொழுது | निम्नभागान् | பள்ளங்களை |
| ततस्ततः | அங்கங்கு | समान् | சமமாக |
| केचित् | சிலர் | चक्रुः | நிரவினார்கள். |

बबन्धुर्वन्धनीयांश्च क्षोद्यान्संचुक्षुदुस्तदा ॥१३॥

| | | | |
|------------|---------------|--------------|--------------------|
| तथा | அவ்வண்ணமே | क्षोद्यान् च | இடிக்கவேண்டியவை |
| बन्धनीयान् | கட்டவேண்டியவை | | களையும் |
| | களை | संचुक्षुदुः | இடித்துத்தள்ளினார் |
| बबन्धुः | கட்டினார்கள். | | கள். |

बिभिदुर्भेदनीयांश्च तांस्तान्देशांस्तथाऽपरे ॥१४॥

| | | | |
|-----------|------------|-------------|------------------|
| तथा | அவ்வண்ணமே | भेदनीयान् च | பெயர்த்துத்தள்ள |
| अपरे | வேறு சிலர் | | வேண்டியவைகளையும் |
| तान् तान् | அந்தந்த | बिभिदुः | பெயர்த்துத்தள்ளி |
| देशान् | இடங்களில் | | னார்கள். |

अचिरेणैव कालेन परिवाहान्बहूदकान् । चक्रुर्बहुविधाकारान्सागरप्रतिमान्वहून् ॥ १५ ॥

| | | | |
|---------------|------------------|-----------------|-----------------|
| सागरप्रतिमान् | சமுத்திரத்தை | अचिरेण कालेन एव | சீக்கிரத்திலேயே |
| बहून् | பல [யொத்த | बहुविधाकारान् | பலவகைப்பட்டவை |
| बहूदकान् | அதிகஜலம் நிறைந்த | | களாய் |
| | இடங்களை | परिवाहान् | கால்வாய்களாய் |
| | | चक्रुः | செய்தார்கள். |

निर्जलेषु च देशेषु खानयामासुरुत्तमान् । उदपानान्वहुविधान्वेदिकापरिमण्डितान् ॥१६॥

| | | | |
|-----------|-----------|--------------|------------------|
| निर्जलेषु | ஜலமில்லாத | वेदिकापरि-) | திண்ணைகளால் அலங் |
| देशेषु | இடங்களில் | मण्डितान्) | கரிக்கப்பட்டனவான |
| | | उत्तमान् | சிறந்த |
| | | उदपानान् च | நடைவாணிகளையும் |
| बहुविधान् | பலவகை | खानयामासुः | வெட்டினார்கள். |

ससुधाकुट्टिमतलः प्रपुष्पितमहीरुहः । मत्तोद्बुष्टद्विजगणः पताकाभिरलंकृतः ॥ १७ ॥
चन्दनोदकसंसिक्तो नानाकुसुमभूषितः । बहुशोभत सेनायाः पन्थाः सुरपथोपमः ॥ १८ ॥

| | | | |
|----------------------|---|------------------|---|
| सेनायाः | சேனையினுடைய | चन्दनोदकसंसिक्तः | பன்னீர் தெளிக்கப்பட் ட்டதாயும் |
| पन्थाः | வழியானது | नानाकुसुम- } | பலவகை பூஷ்பங்க ளால் தெளிக்கப்பட் டதாயும், |
| सुरपथोपमः | தேவமார்க்கம்போன் றதாய் | भूषितः } | பல கொடிகளால் |
| ससुधाकुट्टिमतलः | { சுண்ணாம்படிக்கப்பட்ட ட கிராமவீடுகளையு டையதாயும், | बहु | அலங்கரிக்கப்பட்ட தாயும் |
| प्रपुष्पितमहीरुहः | நன்கு பூத்த விருகூங் களையுடையதாயும், | पताकाभिः | விளங்கிற்று. |
| मत्तोद्बुष्टद्विजगणः | { மதித்து சப்திக்கும் பறவைக்கூட்டங்க ளையுடையதாயும், | अलंकृतः | |
| | | अशोभत | |

आज्ञाप्याथ यथाज्ञप्ति युक्तास्तेऽधिकृता नराः । रमणीयेषु देशेषु बहुस्वादुफलेषु च ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------|------------|------------------------------|
| अथ | அப்பொழுது | देशेषु | பிரதேசங்களில் |
| ते | அந்த | यथाज्ञप्ति | கட்டளைப்படி |
| अधिकृताः नराः | அத்தியகூர்ர்கள், | आज्ञाप्य | உத்திரவு கொடுத்து விட்டு, |
| बहुस्वादुफलेषु | பல சுவைப் பழங்களை யுடைய | युक्ताः | ஊக்கத்துடனிருந்தார் கள். |
| रमणीयेषु च | மனோகரமாயுமிருந் கின்ற | | |

यो निवेशस्त्वभिप्रेतो भरतस्य महात्मनः । भूयस्तं शोभयामासुर्भूषाभिस्त्रिदिवोपमम् ॥ २० ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-------------|-------------------------|
| महात्मनः | மஹாத்மாவாகிய | तं | அதை |
| भरतस्य तु | பரதருக்கென | भूयः | விசேஷமாய் |
| अभिप्रेतः | உத்தேசிக்கப்பட்ட | भूषाभिः | அலங்காரங்களால் |
| निवेशः | தங்குமிடம் | त्रिदिवोपमं | ஸ்வர்க்கம்போன்ற தாய் |
| यः | எதுவோ, | शोभयामासुः | விளங்கச்செய்தனர். |

नक्षत्रेषु प्रशस्तेषु सुहृतेषु च तद्विदः । निवेशान्स्थापयामासुर्भरतस्य महात्मनः ॥ २१ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|--------------|------------------|
| प्रशस्तेषु | சுப | महात्मनः | மஹாத்மாவாகும் |
| नक्षत्रेषु | நாட்களிலும், | भरतस्य | பரதருக்கு |
| सुहृतेषु च | முகூர்த்தங்களிலும், | निवेशान् | தங்குமிடங்களை |
| तद्विदः | இவைகளில் தேர்ச்சி பெற்றவர்கள், | स्थापयामासुः | நிர்மித்தார்கள். |

बहुपांसुचयाश्चापि परिखापरिवारिताः । तत्रेन्द्रनीलप्रतिमाः प्रतोलीवरशोभिताः ॥ २२ ॥
 प्रासादमालासंयुक्ताः सौधप्राकारसंवृताः । पताकाशोभिताः सर्वे सुनिर्मितमहापथाः ॥

नत्र } अप्पொழுது
 सुनिर्मितमहापथाः } நன்கு இயற்றப்பட்ட
 விசாலமான வழிகள்

सर्वे } எல்லாம்
 इन्द्रनील- } இந்திரநீலமெனும்
 प्रतिमाः } மணிகளுக்குச் சமா
 னமாய்,

बहुपांसुचयाः } வேண்டிய அளவு
 மணல்பரவவுடைய
 வைகளாய்

प्रतोलीवर- } ச்ரேஷ்டமான நகரவீ
 शोभिताः } திகளென விளங்கு
 கின்றனவாய்,

प्रासादमाला- } பல ஜனங்கள் நின்று
 संयुक्ताः } பார்க்கக்கூடிய உயர்
 ந்த மேடைகளுடை
 யவைகளாய்,

सौधप्राकार- } சுண்ணாம்படிக்கப்பட்ட
 संवृताः } ட தெருச்சுவர்களை
 யுடையவைகளாய்,

परिखापरि- } மழைநீர்வாய்க்கால்
 वारिताः च } கள் தோண்டப்பெற்
 றவைகளாய்,

पताकाशोभिताः } கொடிகளால் அழகு
 अपि } வாய்ந்து விளங்கின,

विसर्पद्भिरिवाकाशे विटङ्काग्रविमानकैः । समुच्छ्रितैर्निवेशास्ते वभुः शक्रपुरोपमाः ॥ २४ ॥

ते } அந்த
 निवेशाः } தங்குமிடங்கள்
 आकाशे } ஆகாசத்தில்
 विसर्पद्भिः इव } எட்டுபவைபோல்
 समुच्छ्रितैः } உயர்ந்த

विटङ्काग्र- } வீடுகள் னுச்சியிருக்
 विमानकैः } கும் ஸ்தூபிகளால்
 शक्रपुरोपमाः } இந்திரனது திருமாளி
 கைபோன்றனவாய்
 वभुः } விளங்கின.

जाह्नवी तु समासाद्य विविधद्रुमकाननाम् । शीतलामलपानीयां महामीनसमाकुलाम् ॥

सचन्द्रतारागणमण्डितं यथा नभः क्षपायाममलं विराजते ।

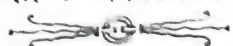
नरेन्द्रमार्गः स तथा व्यराजत क्रमेण रम्यः शुभशिल्पनिर्मितः ॥ २६ ॥

महामीन- } பெருமீன்கள் நிறைய
 समाकुला } ப்பெற்றதும்,
 शीतलामल- } குளிர்ந்த மாசற்ற ஜல
 पानीयां } த்தையுடையதும்,
 विविधद्रुम- } பலவகை மரச்சோலை
 काननां } களையுடையதுமாகிய
 जाह्नवी समासाद्य तु } கங்கை பர்யந்தம்
 क्रमेण } சித்தமாய்
 शुभशिल्प- } வேலைதெரிந்த வேலைக்
 निर्मितः } காரர்களால் செய்யப்
 सः } அந்த [பட்ட

रम्यः } அழகுவாய்ந்த
 नरेन्द्रमार्गः } மன்னர்வழியானது
 क्षपायां } டூவில்
 सचन्द्रतारागण- } சந்திரன், நக்சத்திரக
 मण्डितं } ண்கள் இவைகளோ
 अमलं } நிர்மலமான [கூடி
 नभः } ஆகாயமானது
 विराजते } விளங்குகிறது
 यथा तथा } எவ்வண்ணமோ
 व्यराजत } திகழ்ந்தது.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे अशीतितमः सर्गः ॥



एकाशीतितमः सर्गः—எண்பத்தோராவது ஸர்க்கம் || ௮௧ ||

राजसभागमनम्—மன்னர்சபைக்குப் போவது.

ततो नान्दीमुखीं रात्रिं भरतं सूतमागधाः । तुष्टुवर्वाग्विशेषज्ञाः स्तवैर्मङ्गलसंहितैः ॥ १ ॥

ततः
नान्दीमुखीं
रात्रिं
वाग्विशेषज्ञाः

அப்பொழுது
மங்களகார்யங்களின்
முதல்
இரவில்
வாக்குவிசேஷங்களை
அறிந்த

सूतमागधाः
मङ्गलसंहितैः
स्तवैः
भरतं
तुष्टुवुः

சூதர்களும், மாகதர்
களும்
மங்களவாக்குகளாகிற
ஸ்தோத்திரங்களால்
பாதரை
துதித்தார்கள்.

सुवर्णकोणाभिहतः प्राणदद्यामदुन्दुभिः । दध्मुः शङ्खान्श्च शतशो नादांश्चोच्चावचस्वरान् ॥

यामदुन्दुभिः
सुवर्णकोणाभिहतः
प्राणदत्
शङ्खान् च

வெண்கலப்பறை
சிறந்த கொம்பாலடிக்
கப்பட்டதாய்
முழங்கிற்று.
சங்குகளையும்,

उच्चावचस्वरान्
नादान् च
शतशः
दध्मुः

{ உயர்ந்த தாழ்ந்த ஸ்வ
ரஸ்தானங்களை
யுடைய
ஒலிகளையும்,
நூற்றுக்கணக்காய்
முழக்கினார்கள்.

स तूर्यघोषः सुमहान्दिवमापूरयन्निव । भरतं शोकसन्तप्तं भूयः शोकैररन्ध्रयत् ॥ ३ ॥

दिवं
आपूरयन् इव
सुमहान्
सः
तूर्यघोषः

ஆகாசத்தை
நிறைப்பதுபோன்ற
தாய்
பெரிய
அந்த
வாத்யகோஷமானது

शोकसन्तप्तं
भरतं
भूयः
शोकैः
अरन्ध्रयत्

சோகத்தில் பரிதபித்
துக்கொண்டிருக்கும்
பாதரை
முன்னிலுமதிகமாய்
கஷ்டங்களால்
துளைத்தது.

ततः प्रबुद्धो भरतस्तं घोषं संनिवर्त्य च । नाहं राजेति चाप्युक्त्वा शत्रुघ्नमिदमब्रवीत् ॥४॥

ततः
प्रबुद्धः
भरतः
तं घोषं
राजा
अहं न

அப்பொழுது
சுணிவிழித்துக்கொ
பாதர் [ண்ட
அந்த முழக்கத்தை
'அரசன்
நானன்று'

इति उक्त्वा
संनिवर्त्य च
अपि च
शत्रुघ्नं
इदं
अब्रवीत्

என்று சொல்லி
நிறுத்தி,
அதன்மேல்
சத்ருக்னரைப்பார்த்து
பின்வருமாறு
மொழிந்தனர் :

पश्य शत्रुघ्न कैकेय्या लोकस्यापकृतं महत् । विसृज्य मयि दुःखानि राजा दशरथो गतः ॥

शत्रुघ्न
कैकेय्या
लोकस्य
अपकृतं
महत्
पश्य

“சத்ருக்ன !
கைகேயியால்
உலகிற்கு
விளைவித்த அபகார
மானது
எவ்வளவு பெரிதாயி
பார் ! [ருக்கிறதென

दशरथः
राजा
मयि
दुःखानि
विसृज्य
गतः

தசரத
சக்கிரவர்த்தியார்
என்னிடத்தில்
கஷ்டங்களை
ஒப்பித்துவிட்டு
மாண்டுவிட்டனர்.

तस्यैषा धर्मराजस्य धर्ममूला महात्मनः । परिभ्रमति राजश्रीर्नौरिवाकर्णिका जले ॥ ६ ॥

| | | | |
|------------|---|-------------|----------------|
| तस्य | “ அந்த | राजश्रीः | ராஜலக்ஷ்மி, |
| महात्मनः | மஹாத்மாவாகும் | जले | ஜலத்தில் |
| धर्मराजस्य | தருமராஜருடைய | नौः | ஓடமானது |
| एषा | இந்த | अकर्णिका इव | மீகாமனற்றதுபோல |
| धर्ममूला | { தருமமொன்றையே அஸ்திவாரமாய்க் கொண்டுவிளங்கும் | परिभ्रमति | தடுமாறுகிறது. |

यो हि नः सुमहान्नाथः सोऽपि प्रवाजितो वनम् । अनया धर्ममुत्सृज्य मात्रा मे राघवः स्वयम् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-----------|-----------------|
| नः | “ நமது | अनया | இந்த |
| सुमहान् | உக்கிருஷ்டமாகிய | मात्रा | தாயால், |
| नाथः | நாதர் | स्वयं | தானே |
| यः हि | எவரோ, | धर्मं | தர்மத்தை |
| सः | அந்த | उत्सृज्य | நழுவிவிட்டு, |
| राघवः अपि | ஸ்ரீராமரும் | वजं | காட்டிற்கு |
| मे | எனது | प्रवाजितः | ஓட்டப்பட்டார்.” |

इत्येवं भरतं प्रेक्ष्य विलपन्तमचेतनम् । कृपणं रूढुः सर्वाः सुखरं योषितस्तदा ॥ ८ ॥

| | | | |
|--------|------------|-----------|--------------------|
| तदा | அப்பொழுது | इति एवं | மேற்கண்டவண்ணமா |
| योषितः | ஸ்த்ரீகள் | विलपन्तं | புலம்பியழுவதை, [ய் |
| सर्वाः | எல்லோரும் | प्रेक्ष्य | கவனித்து |
| भरतं | பரதரை, | कृपणं | பரிதாபமாக |
| अचेतनं | மெய்மறந்து | सुखरं | குசலிட்டு |
| | | रूढुः | அழுதார்கள். |

तथा तस्मिन्विलपति वसिष्ठो राजधर्मवित् । सभामिक्ष्वाकुनाथस्य प्रविवेश महायशः ॥ ९ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------|-----------------|---------------------------|
| महायशः | மிக்கப் புகழ்பெற்ற வரும், | तथा | மேற்கண்டவாறு |
| राजधर्मवित् | ராஜதர்மங்களில் நிபுணருமான | विलपति | அழுதுகொண்டிருக் கையில் |
| वसिष्ठः | வஸிஷ்டபகவான் | इक्ष्वाकुनाथस्य | இக்ஷ்வாகுமன்னரது |
| तस्मिन् | அவர் | सभां | சபைக்கு |
| | | प्रविवेश | வந்தார். |

शातकुम्भमयीं रम्यां मणिरत्नसमाकुलाम् । सुधर्माविव धर्मात्मा सगणः प्रत्यपद्यत ॥ १० ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|--------------------------------|--|
| धर्मात्मा | தர்மாத்மாவாகும்வர் | शातकुम्भमयीं | ஸ்வண்ணமயமானதும் |
| सगणः | பரிவாரங்களோடுகூட | मणिरत्न- समाकुलां रम्यां | { செறந்த மணிகளாலி பூக்கப்பட்டதும், அழகுவாய்ந்ததுமா |
| सुधर्मा इव | தெய்வசபையாகிய ‘சுதர்மை’போல் | प्रत्यपद्यत | கிய அதை அடைந்தனர். |

स काञ्चनमयं पीठं परार्ध्यास्तरणावृतम् । अध्यास्ते सर्ववेदज्ञो दूताननुशशास ह ॥११॥

| | | | |
|---------------------|----------------------------------|-----------|-------------------------------------|
| सर्ववेदज्ञः ह | எல்லா வேதங்களிலும் நிபுணராகிய | पीठं | பீடத்தில் |
| सः | அவர் | अध्यास्ते | உட்கார்ந்தனர். |
| परार्ध्यास्तरणावृतं | உயர்ந்த விரிப்பை | दूतान् | தூதர்களைப் பார்த்து |
| काञ्चनमयं | பெரன் [யுடைய] | अनुशशास | பின்வருமாறு ஆக்ஞா பித்தருளினார்: |

ब्राह्मणान्क्षत्रियान्वैश्यान्मात्यान् गणवल्लभान् । क्षिप्रमानयताव्यग्राः कृत्यमात्ययिकं हि नः॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|-----------|------------------------|
| ब्राह्मणान् | “பிராம்மணர்களையும், | क्षिप्रं | விரைவில் |
| क्षत्रियान् | கூத்திரியர்களையும், | आनयत | நீங்களழைத்துவாருங்கள். |
| वैश्यान् | வைசியர்களையும், | हि | எனெனில் |
| अमात्यान् | மந்திரிகளையும், | नः | நமது |
| गणवल्लभान् | அந்த அத்தகைய களையும், | कृत्यं | காரியம் |
| अव्यग्राः | ஊக்கமுடையவர் களாய் | आत्ययिकम् | அவசரமானது. |

सराजपुत्रं शत्रुघ्नं भरतं च यशस्विनम् । युधाजितं सुमन्त्रं च ये च तत्र हिता जनाः ॥

| | | | |
|----------|-------------------------------|-------------|------------------------------------|
| तव | “இவ்விஷயத்தில் | सराजपुत्रं | ராஜபுத்திரரோடிருக்க |
| हिताः | அவச்யம் கூடவிருக்க வேண்டிய | शत्रुघ्नं | சத்ருக்னரையும் [கும்] |
| जनाः | ஜனங்கள் | युधाजितं | யுதாஜித்தென்னும் மந்திரியையும், |
| ये च | எவர்கடோர் அந்த | सुमन्त्रं च | ஸுமந்திரரையும் |
| यशस्विनं | பெரும்புகழ்பெற்ற | च | அவ்வாறேயழைத்து வாருங்கள்.” |
| भरतं | பரதரையும், | | |

ततो हलहलाशब्दो महान्समुदपद्यत । रथैरश्वैर्गजैश्चापि जनानामुपगच्छताम् ॥ १४ ॥

| | | | |
|------------|----------------|------------|-------------------|
| ततः | அப்பொழுது | उपगच्छतां | அங்கு வந்துகொண்டி |
| रथैः | ரதங்களிலும், | जनानां | ஜனங்களுடைய [ருந்த |
| अश्वैः अपि | குதிரைகளிலும், | हलहलाशब्दः | கோலாஹலமானது |
| गजैः च | யானைகளிலும், | महान् | பெரிதாய் |
| | | समुदपद्यत | உண்டாயிற்று. |

ततो भरतमायान्तं शतक्रतुमिवामराः । प्रत्यनन्दन्प्रकृतयो यथा दशरथं तथा ॥ १५ ॥

| | | | |
|----------|------------------------------|--------------|------------------------------|
| ततः | அச்சமயத்தில் | अमराः | தேவர்கள் |
| आयान्तं | வந்துகொண்டிருந்த | शतक्रतुं | இந்திரபகவானிடத் தில் |
| भरतं | பரதரிடத்தில் | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமேயும், |
| प्रकृतयः | ஜனங்கள் | प्रत्यनन्दन् | விச்வசித்தார்கள். |
| दशरथं | தசரதரிடத்தில் | | |
| यथा तथा | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமேயும், | | |

राज्ञस्तु प्रकृतीः सर्वाः समग्राः प्रेक्ष्य धर्मवित् । इदं पुरोहितो वाक्यं भरतं मृदु चाब्रवीत्॥

राज्ञः சக்கிரவர்த்தியாரின்
पुरोहितः புரோகிதரும்,
धर्मवित् च தர்மமறிந்தவருமாகு
மவர்

प्रेक्ष्य நோக்கி
भरतं பரதரைப்பார்த்து
तु இப்பொழுது
इदं பின்வரும்
वाक्यं சொல்லை
मृदु ப்ரீதியுடன்
अब्रवीत् சொன்னார்.

प्रकृतीः ஜனங்கள்
सर्वाः எல்லோரையும்
समग्राः பூர்ணமாய்

तात राजा दशरथः स्वर्गतो धर्ममाचरन् । धनधान्यवतीं स्फीतां प्रदाय पृथिवीं तव ॥५॥

तात “குழந்தாய்!
दशरथः राजा தசரதசக்ரவர்த்தியார்
धर्म தருமத்தை
आचरन् அனுஷ்டிப்பவராய்
धनधान्यवतीं தனதான்யம் நிறைந்
ததும்,

स्फीतां செழிப்புற்றதுமான
पृथिवीं பூமியை
तव உனக்கு
प्रदाय அளித்துவிட்டு
स्वर्गतः ஸ்வர்க்கமடைந்தார்.

रामस्तथा सत्यधृतिः सतां धर्ममनुस्मरन् । नाजहात्पितुरादेशं शशी ज्योत्स्नामिवोदितः ॥

तथा “அவ்வண்ணமே
सत्यधृतिः ஸத்யவானாகும்
रामः ஸ்ரீராமர்
सतां புண்ணியா தமாக்க
धर्म தருமத்தை [ளுடைய
अनुस्मरन् சிரமேற்கொண்டு
पितुः தந்தையினது

आदेशं நியமனத்தை,
उदितः உதித்த
शशी சந்திரன்
ज्योत्स्नां நிலாவை
इव எவ்வண்ணமோ அவ்
வண்ணமே,
अजहात् न புறக்கணிக்கவில்லை.

पित्रा भ्रात्रा च ते दत्तं राज्यं निहतकण्टकम् । तद्भुङ्क्ष्व मुदितामात्यः क्षिप्रमेवाभिषेचय॥

पित्रा “திருத்தந்தையாலும்
भ्रात्रा च தமையனாலும்
निहत कण्टकं பகையற்றதாய்
ते உனக்கு
दत्तं அளிக்கப்பட்ட
तत् राज्यं அந்த ராஜ்யத்தை

भुङ्क्ष्व கைப்பற்று.
मुदितामात्यः சந்தோஷமுற்ற மந்தி
ரிகளையுடையவராய்
क्षिप्र एव விரைவிலேயே
अभिषेचय அபிஷேகம் கொள்வா
யாக.

उदीच्याश्च प्रतीच्याश्च दाक्षिणात्याश्च केवलाः । कोट्याऽपरान्ताः सामुद्रा रत्नान्युपहरन्तु ते॥

उदीच्याः च “வடக்குதேசத்தவர்
களும்,
प्रतीच्याः च மேற்குதேசத்தவர்
களும்,
दाक्षिणात्याः च தெற்குதேசத்தவர்
களும்,
अपरान्ताः மற்ற (கிழக்கு) தேச
த்தவர்களும்,

सामुद्रा: தீவுவாசிகளுமாகிய
केवला: எல்லோரும்
ते உனக்கு
रत्नानि காணிக்கைகளை
कोट्या கோடிக்கணக்காய்
उपहरन्तु செலுத்தட்டும்.”

तच्छ्रुत्वा भरतो वाक्यं शोकेनाभिपरिप्लुतः । जगाम मनसा रामं धर्मज्ञो धर्मकाङ्क्षया ॥९॥

तत् वाक्यं அந்த நியமனத்திற்கு
 श्रुत्वा செவி சாய்த்த
 धर्मज्ञः தர்மமறிந்த
 भरतः பரதர்
 धर्मकाङ्क्षया தர்மத்திலுள்ள பத்தி
 மையால்

शोकेन துயரத்தால்
 अभिपरिप्लुतः அதிகமாய் பிடிக்கப்
 பட்டவராகி,
 रामं ஸ்ரீராமரை
 मनसा உள்ளத்தால்
 जगाम நினைத்தனர்.

स बाष्पकलया वाचा कलहंसस्वरो युवा ।

युवा பால்யதசையிலிருக்
 सः அவர் [கும்
 सभामध्ये சபையில்
 कलहंसस्वरः { அர்த்தமாகாமல் இனி
 மையாயிருக்கும்
 தொனியுடையவராய்

विललाप सभामध्ये जगहं च पुरोहितम् ॥

बाष्पकलया கண்ணீரால் தழுதழு
 वाचा சொற்கொண்டு [த்த
 विललाप புலம்பினார்.
 पुरोहितं च குலகுருவைப்பற்றி
 जगहं மிகக்லேசங்கொண்
 டார்.

चरितब्रह्मचर्यस्य विद्यास्नातस्य धीमतः । धर्मे प्रयतमानस्य को राज्यं मद्विधो हरेत् ॥११॥

चरितब्रह्मचर्यस्य “குருகுலவாஸம்
 செய்தவரும்,
 विद्यास्नातस्य { வேதங்களை பரிபூர்ண
 மாய் அத்யயனம் செ
 ய்துமுடித்தவரும்,
 धीमतः கற்றவைகளை நன்கறி
 ந்தவரும்,

धर्मे தர்மத்தில்
 प्रयतमानस्य விடாமுயற்சிகொண்
 டிருக்குமவருடைய
 राज्यं ராஜ்யத்தை
 मद्विधः என்னைப்போன்ற
 कः எவன்
 हरेत् அபஹரிப்பான் ?

कथं दशरथाज्जातो भवेद्राज्यापहारकः । राज्यं चाहं च रामस्य धर्मं वक्तुमिहार्हसि ॥१२॥

दशरथात् “தசரதரிடமிருந்து
 जातः பிறந்த ஒரு புதல்வன்
 राज्यापहारकः ராஜ்யத்தை அநியாய
 மாயபஹரிப்பவனாக
 कथं भवेत् எப்படி ஆவான் ?
 राज्यं च ராஜ்யமும்

अहं च அடியேனும்
 रामस्य ஸ்ரீராமரது உடைமை.
 इह இவ்விவ்யத்தில்
 धर्मं தர்மமாயிருப்பதை
 वक्तुं நியமிக்க
 अर्हसि தேவரீர் திருவுளமு
 வந்தருள்வீராக.

ज्येष्ठः श्रेष्ठश्च धर्मात्मा दिलीपनहुषोपमः । लब्धुर्महति काकुत्स्थो राज्यं दशरथो यथा ॥

दिलीप- } “எமது முன்னோர்க
 नहुषोपमः } ளாகிய திலீபர், நகு
 ஷர் இவர்களுையோத்
 தவரும்,
 धर्मात्मा தருமாத்மாவும்,
 श्रेष्ठः சர்வோத்த்ருஷ்டரும்,
 ज्येष्ठः च மூத்தவருமாகிய

काकुत्स्थः ஸ்ரீராமர்
 राज्यं ராஜ்யத்தை
 लब्धुं அடைவதற்கு
 दशरथः தசரதசக்கிரவர்த்தி
 यथा எவ்வண்ணமோ [யார்
 அவ்வண்ணமே
 अर्हति உரியவராகின்றார்.

अनार्यजुष्टमस्वर्गं कुर्यां पापमहं यदि । इक्ष्वाकूणामहं लोके भवेयं कुलपांसनः ॥ १४ ॥

अहं "நான்
अनार्यजुष्टं பெரியோர்களாலனுஷ்ட
டிக்கப்பட்டதாகும்,
अस्वर्गं ஸ்வர்க்கத்தைக்கொ
டாததுமாகிய

पापं பாவத்தை
कुर्यां यदि செய்வேனாகில்

यद्धि मात्रा कृतं पापं नाहं तदपि रोचये । इहस्थो वनदुर्गस्थं नमस्यामि कृताञ्जलिः ॥

मात्रा "தாயால்
कृतं செய்யப்பட்ட
पापं பாவம்
यत् तत् எதுவோ அதை
अहं நான்
रोचये न விரும்பவில்லை.

राममेवानुगच्छामि स राजा द्विपदां वरः । त्रयाणामपि लोकानां राघवो राज्यमर्हति ॥

रामं एव "ஸ்ரீராமரையே
अनुगच्छामि தேடிச்செல்வேன்.
द्विपदां மனிதர்களுள்
वरः உத்தமராகிய
राघवः अपि ஸ்ரீராமர்தான்
राजा மன்னர்.

अहं நான்
लोके உலகில்
इक्ष्वाकूणां இக்சுவாகுவம்சத்த
வர்களில்
कुलपांसनः குலத்தைக் கெடுப்பவ
னாக
भवेयम् ஆகுவேன்.

इहस्थः अपि இங்கிருப்பவனாகவே
कृताञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தனாய்
वनदुर्गस्थं हि அடர்ந்த கானகத்தி
லிருக்குமவருக்கே
नमस्यामि முடிதாழ்த்தி நமஸ்க
ரிக்கின்றேன்.

तद्वाक्यं धर्मसंयुक्तं श्रुत्वा सर्वे सभासदः । हर्षान्मुमुचुरश्रूणि रामे निहितचेतसः ॥ १७ ॥

रामे ஸ்ரீராமரிடத்தில்
निहितचेतसः ஸமர்ப்பிக்கப்பட்ட
மனமுடைய

सभासदः சபையோர்கள்
सर्वे எல்லோரும்,
तत् அந்த

यदि त्वार्यं न शक्ष्यामि विनिवर्तयितुं वनात् । वने तत्रैव वत्स्यामि यथाऽऽर्यो लक्ष्मणस्तथा ॥

आर्यं "பெரியவரை
वनात् கானகத்தினின்றும்
विनिवर्तयितुं திரும்பியழைத்துவர
शक्ष्यामि न यदि நான் முடியாமற்போ
ய்விடுவேனாகில்

तत्र அந்த
वने एव காட்டிலேயே

सः அவர்
त्रयाणां மூன்று
लोकानां உலகங்களுடைய
राज्यं பரிபாலனத்திற்கும்
अर्हति திறமையுற்றவர்."

धर्मसंयुक्तं தர்மத்தை நன்கு
விளங்கக்காட்டுகிற
वाक्यं திருவாக்கை
श्रुत्वा கேட்டு,
हर्षात् மகிழ்ச்சியால்
अश्रूणि கண்ணீரை
मुमुचुः பெருக்கினார்கள்.

तु இதுகாரணமாய்,
आर्यः புண்பாத்தமாவாகும்
लक्ष्मणः லக்ஷ்மணன்
यथा तथा எவ்வண்ணமோ அவ்
வண்ணமே,
वत्स्यामि காலங்கழிக்கப்போகி
றேன்.

सर्वोपायं तु वर्तिष्ये विनिवर्तयितुं वनात् । समक्षमार्गमिश्राणां साधूनां गुणवर्तिनाम् ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|---------------|-----------------------|
| गुणवर्तिनां | “ நற்குணம் படைக்க ப்பெற்ற | विनिवर्तयितुं | திரும்பியழைத்துவர |
| साधूनां | புணர்மாக்களாகிற | सर्वोपायं | உபாயமெல்லாவற்றையும் |
| आर्यमिश्राणां | மஹான்களுடைய | तु | இப்பொழுதே |
| समक्षं | முன்னிலையில் | वर्तिष्ये | அனுஷ்டிக்கப்போகிறேன். |
| वनात् | வனத்திலிருந்து | | |

विष्टिकर्मान्तिका: सर्वे मार्गशोधकतक्षका: । प्रस्थापिता मया पूर्वं यात्राऽपि मम रोचते ॥

| | | | |
|--------------------|--------------------|--------------|----------------------------|
| मया | “ என்னால் | सर्वे | எல்லோரும் |
| पूर्वं | இதற்குமுந்தியே | प्रस्थापिता: | அனுப்பப்பட்டார்கள். |
| विष्टिकर्मान्तिका: | கூலிவேலைக்காரர் | मम | எனக்கு |
| | களும், | यात्रा अपि | பூர்வீக அனுஷ்டானமொன்றுதான் |
| मार्गशोधकतक्षका: | காடுவழி தெரிந்தவர் | रोचते | எதற்கும் பெரிதாகிறது.” |
| | களும் வாளாட்களும் | | |

एवमुक्त्वा तु धर्मात्मा भरतो भ्रातृवत्सलः । समीपस्थमुवाचेदं सुमन्त्रं मन्त्रकोविदम् ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------|--------------|-------------------------------------|
| भ्रातृवत्सलः | தமையனாரிடம் வாத்தல்யமுடைய | मन्त्रकोविदं | ராஜாங்கமத்திராலோசனைகளில்சமந்த்ராகிய |
| धर्मात्मा | தர்மாத்தமாவாகும் | समीपस्थं | பக்கலிலிருக்கும் |
| भरतः | பரதர், | सुमन्त्रं | சுமந்திரைப்பார்த்து |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | इदं | பின்வருமாறு |
| तु | இவ்விஷயத்தில் | उवाच | சொன்னார்: |
| उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு, | | |

तूर्णमुत्थाय गच्छ त्वं सुमन्त्र मम शासनात् । यात्रामाज्ञापय क्षिप्रं बलं चैव समानय ॥ २२ ॥

| | | | |
|----------|---------------|-------------|-----------------|
| सुमन्त्र | “ சுமந்திரரே! | मम | எனது |
| त्वं | நீர் | शासनात् | கட்டளையாய் |
| तूर्ण | விரைவில் | आज्ञापय | ஆக்குபடியும். |
| उत्थाय | எழுந்திருந்து | बलं च | சைனியத்தையும் |
| गच्छ | செல்லும். | क्षिप्रं एव | சீக்கிரத்திலேயே |
| यात्रां | புறப்பாட்டை | समानय | அழைத்துவரும்.” |

एवमुक्तः सुमन्त्रस्तु भरतेन महात्मना । प्रदिष्टोऽदिशत्सर्वं यथासंदिष्टमिष्टवत् ॥ २३ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|-------------|-------------------|
| महात्मना | மஹாத்மாவான | इष्टवत् | இஷ்டப்படியே |
| भरतेन | பரதரால் | प्रदिष्टः | ஆக்கினைபெற்றவராய் |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | यथासंदिष्टं | உத்திரவுப்படியே |
| उक्तः | சொல்லப்பட்ட | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| सः सुमन्त्रः | அந்த சுமந்திரர் | अदिशत् | செய்துமுடித்தார். |
| तु | இவ்விஷயத்தில் | | |

ताः प्रहृष्टाः प्रकृतयो बलाध्यक्षा बलस्य च । श्रुत्वा यात्रां समाज्ञप्तां राघवस्य निवर्तने ॥

ताः அந்த
 प्रकृतयः ஜனங்களும்,
 बलाध्यक्षाः சேனைத்தலைவர்களும்,
 राघवस्य ஸ்ரீராமரை
 निवर्तने அழைத்துவரும்
 காரியத்தில்

बलस्य சைனியத்தினுடைய
 यात्रां च புறப்பாட்டை
 समाज्ञप्तां ஆக்ஞாபிக்கப்பட்ட
 தாய்
 श्रुत्वा கேட்டு
 प्रहृष्टाः மிக மகிழ்ந்தார்கள்.

ततो योधाङ्गनाः सर्वा भर्तृन्सर्वान्गृहे गृहे । यात्रागमनमाज्ञाय त्वरयन्ति स्म हर्षिताः ॥

ततः அப்பொழுது
 योधाङ्गनाः யுத்தவீரர்களின்
 மனைவிமார்கள்
 सर्वाः எல்லோரும்
 यात्रागमनं சைனியம் புறப்பட்ட
 டுப்போவதை

आज्ञाय அறிந்து
 हर्षिताः மகிழ்ச்சியடைந்தவர்க
 गृहे गृहे வீடுதோறும் [ளாய்
 भर्तृन् கணவர்கள்
 सर्वान् எல்லோரையும்
 त्वरयन्ति स्म துரிதப்படுத்தினார்கள்.

ते ह्यैगोर्रथैः शीघ्रैः स्यन्दनैश्च महाजवैः । सह योधैर्बलाध्यक्षा बलं सर्वमचोदयन् ॥२६॥

ते அந்த
 बलाध्यक्षाः சேனைத்தலைவர்கள்
 ह्यैः குதிரைகளின்பேரி
 லும்,
 शीघ्रैः சீக்கிரம் செல்லும்
 गोरथैः மாட்டுவண்டிகளிலும்,
 महाजवैः மிக வேகமாய்ச்
 செல்லும்

स्यन्दनैः ரதங்களிலுமேறிக்
 கொண்டு
 सर्व எல்லா
 बलं च சைனியத்தையும்
 योधैः सह படைவீரர்களுடன்
 கூடியதாய்
 अचोदयन् ஏவினார்கள்.

सज्जं तु तद्वलं दृष्ट्वा भरतो गुरुसन्निधौ । रथं मे त्वरयस्वेति सुमन्त्रं पार्श्वतोऽब्रवीत् ॥

भरतः பரதர்
 तत् बलं அந்த சைன்யத்தை
 सज्जं சித்தமாயிருப்பதாய்
 दृष्ट्वा கண்டு
 गुरुसन्निधौ குருவினது முன்னி
 पार्श्वतः பக்கலிலிருந்த [லையில்]

सुमन्त्रं சுமந்திரரைப்பார்த்து
 मे 'எனது
 रथं तु ரதத்தையும்
 त्वरयस्व சீக்கிரப்படுத்தும்'
 इति என்று
 अब्रवीत् ஆக்ஞாபித்தார்.

भरतस्य तु तस्याज्ञां प्रतिगृह्य च हर्षितः । रथं गृहीत्वा प्रययौ युक्तं परमवाजिभिः ॥

तस्य அந்த
 भरतस्य பரதரது
 आज्ञां ஆக்கினையை
 प्रतिगृह्य சிரமேற்கொண்டு
 हर्षितः च உள்ளம் பூரித்தவராய்
 तु உடனே

परमवाजिभिः சிறந்த குதிரைகளால்
 युक्तं பூட்டப்பெற்ற
 रथं திருத்தேரை
 गृहीत्वा கொண்டுவந்து
 प्रययौ சேர்த்தனர்.

स राघवः सत्यधृतिः प्रतापवान्ब्रुवन्सुयुक्तं दृढसत्यविक्रमः ।

गुरुं महारण्यगतं यशस्विनं प्रसादयिष्यन्भरतोऽब्रवीत्तदा

॥ २९ ॥

| | | | |
|----------------|--|---------------|--|
| दृढसत्यविक्रमः | உறுதியான தர்மத் தில் பற்றுடையவரும், | गुरुं | பெரியவரை |
| प्रतापवान् | பிரதாபசாலியும், | प्रसादयिष्यन् | { உள்ளங்குளிரச் செய் யவேண்டுமென்ற நிச்சயங்கொண்டு |
| सत्यधृतिः | சத்தியசந்தரும், | तदा | அப்பொழுது |
| राघवः | ரகுவம்சத்தவரு மாகிய | सुयुक्तं | அதற்கேற்றவண்ண மாய் |
| सः | அந்த | ब्रुवन् | ஆக்குபித்துக் கொண்டு, |
| भरतः | பரதர், | अब्रवीत् | பின்வரும் சொல்லைச் சொன்னார்: |
| महारण्यगतं | மகாரண்யத்திலிருக் கும் | | |
| यशस्विनं | புகழ்பெற்ற | | |

तूर्णं समुत्थाय सुमन्त्र गच्छ बलस्य योगाय बलप्रधानान् ।

आनेतुमिच्छामि हि तं वनस्थं प्रसाद्य रामं जगतो हिताय

॥ ३० ॥

| | | | |
|-------------|--|----------|---------------------------------|
| सुमन्त्र | “சுமந்திரரே! | हि | ஏனெனில் |
| तूर्णं | விரைவில் | जगतः | உலகினது |
| समुत्थाय | எழுந்து | हिताय | நன்மையின்பொருட்டு |
| बलप्रधानान् | சைன்யத்தலைவர்க ளிடம் | वनस्थं | கானகத்திலிருக்கிற |
| बलस्य | சேனைக்கு | तं | அந்த |
| योगाय | { வேண்டியவைகளெல் லாமிருக்கும்பொரு ட்டு | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| गच्छ | செல்லுப். | प्रसाद्य | உள்ளங்குளிரச் |
| | | आनेतुं | அழைத்துவரசெய்து |
| | | इच्छामि | நான் சித்தபாயிருக் கின்றேன். |

स सूतपुत्रो भरतेन सम्यगाज्ञापितः संपरिपूर्णकामः ।

शशास सर्वान्प्रकृतिप्रधानान्बलस्य मुख्यांश्च सुहृज्जनं च

॥ ३१ ॥

| | | | |
|----------------|---|------------------|-------------------|
| भरतेन | பரதரால் | सः | அவர் |
| सम्यक् | குறையின்றி | प्रकृतिप्रधानान् | உத்தமஜனங்களையும், |
| आज्ञापितः | ஆக்குபிக்கப்பட்ட வரும், | बलस्य | சைன்யத்தினுடைய |
| संपरिपूर्णकामः | { மனோரதம் முற்றிலும் நிறைவேறப்பெற்ற வரும் | मुख्यान् | தலைவர்கள் |
| सूतपुत्रः | தேர்ப்பாகரின் புதல் வருமான | सर्वान् च | எல்லோரையும், |
| | | सुहृज्जनं च | நண்பர்களையும், |
| | | शशास | ஆக்குபித்தார். |

ततः समुत्थाय कुले कुले ते राजन्यवैश्या वृषलाश्च विप्राः ।

अयूयुजन्नुष्ट्रवरान् रथांश्च नागान्हयांश्चैव कुलप्रसूतान्

॥ ३२ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------------|-------------|---|
| ते | “அந்த | उष्ट्रवरान् | { ஒட்டகைகளையும், கோவேறுகழுதை களையும், |
| राजन्यवैश्याः | சூத்திரியர்களும், வைசியர்களும், | रथान् च | ரதங்களையும், |
| वृषलाः | குத்திரர்களும், | नागान् च | யானைகளையும், |
| विप्राः च | அந்நகனர்களும், | हयान् एव | குதிரைகளையும், |
| ततः | அப்பொழுது | अयूयुजन् | சித்தப்படுத்தினார்கள். |
| कुले कुले | வீடுதோறும், | | |
| समुत्थाय | எழுந்து, | | |
| कुलप्रसूतान् | நற்பிறவியற்ற | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे द्व्यशीतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5531



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3176

त्र्यशीतितमः सर्गः—எண்பத்துமன்றாவது ஸர்க்கம் ॥ ௮௩ ॥

भरतप्रस्थानम्—பரதர் புறப்படுவது.

ततः समुत्थितः काल्यमास्थाय स्यन्दनोत्तमम् । प्रययौ भरतः शीघ्रं रामदर्शनकाङ्क्षया ॥

| | | | |
|---------------------------|---|---------------|-------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | काल्यं | சபமுகூர்த்தத்தில் |
| भरतः | பரதர் | समुत्थितः | எல்லோருடனும் கிளம்பி |
| रामदर्शन- } कांक्षया } | ஸ்ரீராமரை தரிசிக்க வேண்டுமென்ற அ வாவால் | स्यन्दनोत्तमं | சிறந்த திருத்தேரின் |
| | | आस्थाय | ஏறிக்கொண்டு [மீது |
| शीघ्रं | சீக்கிரத்திலேயே | प्रययौ | பரயாணமானார். |

अग्रतः प्रययुस्तस्य सर्वे मन्त्रिपुरोधसः । अधिरुह्य हयैर्युक्तावथान्सूर्यरथोपमान् ॥ २ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------------|---------------|------------------------------|
| मन्त्रिपुरोधसः | மந்திரிமார்களும் புரோகிதர்களும், | सूर्यरथोपमान् | சூர்யபகவானது ரதத் தையொத்த |
| सर्वे | எல்லோரும், | रथान् | ரதங்களில் |
| हयैः | குதிரைகளால் | अधिरुह्य | ஏறி |
| युक्तान् | பூட்டப்பெற்ற | तस्य | அவருக்கு |
| | | अग्रतः | முன் |
| | | प्रययुः | புறப்பட்டார்கள். |

नवनागसहस्राणि कल्पितानि यथाविधि । अन्वयुर्भरतं यान्तमिक्ष्वाकुकुलनन्दनम् ॥ ३ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------|--------------------|-----------------------------------|
| यथाविधि | முறைப்படி | यान्तं | போய்க்கொண்டிருக் கும் |
| कल्पितानि | வரிசைதவருது செல்லும் | इक्ष्वाकुकुलनन्दनं | இசுவாகுகுலத்தை மகிழ்ச்செய்யும் |
| नवनागसहस्राणि | ஒன்பதாயிரம் யானை கள் | भरतं | பரதரை |
| | | अन्वयुः | பின்பற்றிச்சென்றன. |

षष्ठी रथसहस्राणि धन्विनो विविधायुधाः । अन्वयुर्भरतं यान्तं राजपुत्रं यशस्विनम् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|----------------------|
| षष्ठी: | அறுபது | யான்த் | சென்றுகொண்டிருக்க |
| ரதசஹ்ஸாணி | ஆயிரம் ரதங்களும், | யசஸ்வினம் | புகழ்பெற்ற [கும் |
| வिविधायुधा: | பலவகை ஆயுதங்களை | ராஜபுத் | சக்கிரவர்த்திகுமார |
| | தரித்தவர்களும், | भरतं | பரதரை [ராகிய |
| धन्विनः | வில்லாளிகளும், | अन्वयुः | பின்பற்றிச்சென்றனர். |

शतं सहस्राण्यश्वानां समारूढानि राघवम् । अन्वयुर्भरतं यान्तं सत्यसन्धं जितेन्द्रियम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|--------------|----------------------|
| समारूढानि | ஜனங்களே நியிருந்த | सत्यसन्धं | சத்தியசந்தரும், |
| अश्वानां | குதிரைகளின் | जितेन्द्रियं | ஜிதேந்திரியரும், |
| शतं | நூறு | राघवं | ரகுவம்சத்தவரு |
| सहस्राणि | ஆயிரங்கள், | भरतं | பரதரை [மாகிய |
| यान्तं | போய்க்கொண்டிருக்க | अन्वयुः | பின்பற்றிச்சென்றனர். |

कैकेयी च सुमित्रा च कौसल्या च यशस्विनी । रामानयनसंहृष्टा ययुर्यानेन भास्वता ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|----------------------|
| यशस्विनी | புகழ்பெற்ற | रामानयन-} | ஸ்ரீராமரைத் திருப்பி |
| कौसल्या च | கோஸலாதேவியாரும், | संहृष्टा: } | யழைத்துவருவதி |
| सुमित्रा च | சுமித்திராதேவியா | | லுள்ளம்பூரித்தவர்க |
| | ளும், | | ளாய் |
| कैकेयी च | கைகேயிதேவியாரும், | भास्वता | ஒளிபெற்றுள்ளங்கும் |
| | | यानेन | தேர்மீதேறிக் கொ |
| | | ययुः | சென்றார்கள். [ண்டு |

प्रयाताश्चार्यसङ्घाता रामं द्रष्टुं सलक्ष्मणम् । तस्यैव च कथाश्रित्राः कुर्वाणा हृष्टमानसाः ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-------------|---------------------|
| आर्यसङ्घाताः | பெரியோர்களின் | तस्य | அவரது |
| | கூட்டங்கள் | चित्राः | அபூர்வமாயிருக்கின்ற |
| सलक्ष्मणं | லக்ஷ்மணனுடனிருக்க | कथाः एव | திருக்கல்யாணகுணங் |
| | கும் | | களைப்பற்றியே |
| रामं | ஸ்ரீராமரை | कुर्वाणाः च | பின்வருமாறு பேசிக் |
| द्रष्टुं | தரிசிக்க | | கொண்டு |
| हृष्टमानसाः च | சந்தோஷமடைந்த ம | प्रयाताः | ப்ரயாணம் செய்தார் |
| | னமுடையவர்களாய் | | கள் : |

मेघश्यामं महाबाहुं स्थिरसत्त्वं दृढव्रतम् । कदा द्रक्ष्यामहे रामं जगतः शोकनाशनम् ॥८॥

| | | | |
|--------------|-------------------|--------------|------------------|
| मेघश्यामं | “மேகச்யாமனரும், | शोकनाशनं | சோகங்களைப்போக்கு |
| महाबाहुं | ஆஜானுபாகுவும், | | பவருமாகிய |
| स्थिरसत्त्वं | சலியா மனத்தினராய் | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| दृढव्रतं | அசஞ்சல புண்ய விர | कदा | எப்பொழுது |
| | தானுஷ்டானமுடை | द्रक्ष्यामहे | நாம் கண்டுமகிழ் |
| जगतः | உலகினது [யாரும், | | வோம்? |

दृष्ट एव हि नः शोकमपनेष्यति राघवः । तमः सर्वस्य लोकस्य समुद्यन्निव भास्करः ॥९॥

| | | | |
|-----------|----------------------|-----------|---------------|
| राघवः हि | “ஸ்ரீராமரோவெனில் | सर्वस्य | எல்லா |
| दृष्टः एव | தரிசிக்கப்பெற்ற மாத் | लोकस्य | உலகினுடைய |
| नः | நமது [திரத்தில் | तमः | இருளே |
| शोकं | மனக்குறையை, | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| समुद्यन् | உதிக்கும் | | வண்ணமே, |
| भास्करः | சூர்யபகவான் | अपनेष्यति | போக்குவார்.” |

इत्येवं कथयन्तस्ते संप्रहृष्टाः कथाः शुभाः । परिष्वजानाश्चान्योन्यं ययुर्नागरिकास्तदा ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|-------------|------------------|
| ते | அந்த | शुभाः | புண்ணிய |
| नागरिकाः | நகரவாசிகள் | कथाः | கதைகளே |
| तदा | அப்பொழுது | कथयन्तः च | சொல்லிக்கொண்டே |
| संप्रहृष्टाः | மிக மகிழ்ச்சிக்கொண்ட | अन्योन्यं | ஒருவருக்கொருவர் |
| | வர்களாய், | परिष्वजानाः | இடைவெளியின் றி |
| इति एवं | மேற்கண்டவாறு | | பிடித்துக்கொண்டு |
| | | ययुः | சென்றார்கள். |

ये च तत्रापरे सर्वे संमता ये च नैगमाः । रामं प्रति ययुर्हृष्टाः सर्वाः प्रकृतयस्तथा ॥११॥

| | | | |
|---------|------------------|------------|-----------------------|
| तत्र | அப்பொழுது | अपरे | இதரஜனங்கள் |
| सम्मताः | பிரசித்திபெற்ற | ये च | எவர்களோ அவர்க |
| नैगमाः | வேதங்களை உபன்னி | प्रकृतयः | மந்திரிமார்கள் [ளும், |
| | யாஸம்செய்பவர்கள் | सर्वाः | எல்லோரும், |
| ये च | எவர்களோ, அந்த | हृष्टाः | மகிழ்ந்தவர்களாய் |
| सर्वे | எல்லோரும் | रामं प्रति | ஸ்ரீராமரை நாடி |
| तथा | அவ்வண்ணமே | ययुः | சென்றார்கள். |

मणिकाराश्च ये केचित्कुम्भकाराश्च शोभनाः । सूत्रकर्मकृतश्चैव ये च शस्त्रोपजीविनः ॥

मायूरकाः क्राकचिका रोचका वेधकास्तथा । दन्तकाराः सुधाकारा ये च गन्धोपजीविनः ॥

सुवर्णकाराः प्रख्यातास्तथा कम्बलधावकाः ।

स्तापकोच्छादका वैद्या धूपकाः शौण्डिकास्तथा

॥ १४ ॥

रजकास्तुन्नवायाश्च ग्रामघोषमहत्तराः । शैलूषाश्च सह स्त्रीभिर्ययुः कैवर्तकास्तथा ॥ १५ ॥

| | | | |
|-----------------|--|----------------|------------------|
| मणिकाराः | { ரத்தினங்களுக்கு சாணைபிடித்திழைப் பவர்கள் | कुम्भकाराः च | குயவர்களுள், |
| ये च | எவர்களோ அவர்க | शस्त्रोपजीविनः | யுத்தவீரர்கள் |
| शोभनाः | கைதேர்ந்த [ளும், | ये च | எவர்களோ அவர்க |
| सूत्रकर्मकृतः च | நூல்பிடித்தனப்பவர் | मायूरकाः | மயில்தோகை வ்யாபா |
| | களும், | क्राकचिकाः | வாளாட்களும், |

| | |
|-----------------|---|
| शेचकाः | கண்ணாடி வியாபாரிக ளும், |
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| वेधकाः | பூமிகளை வெட்டுபவர் களும், |
| दन्तकाराः | தந்தவேலை செய்பவர் களும், |
| सुधाकाराः एव | சுண்ணாம்பிடிப்பவர் களும், |
| गन्धोपजीविनः | வாசனை சாமான் விற் றுப்பிழைப்பவர்கள் |
| ये च | எவர்களோ அவர் |
| प्रख्याताः | புகழ்பெற்ற [களும், |
| सुवर्णकाराः | தட்டார்களும், |
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| कम्बलधावकाः | கம்பளங்களை நெய் பவர்களும், |
| स्नापकोच्छादकाः | { எண்ணை தேய்த்து உடம்பு பிடிப்பவர் களும், |

| | |
|---------------------------|--|
| वैद्याः | வைத்தியர்களும், |
| धूपकाः | வாசனையிடுபவர் களும், |
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| शौण्डिकाः | மதுவ்யாபாரிகளும், |
| रजकाः | வண்ணைகளும், |
| तुल्लावायाः | தயிர்க்காரர்களும், |
| ग्रामवोष- } महत्तराः } | கிராமங்களிலும், இ டைச்சேரிகளிலும் இருக்கும் பெரியவர் களும், |
| शैलूषाः च | பட்டக்களும், |
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| कैवर्तकाः | செம்படவர்களும், |
| केचित् | சிலர் |
| स्त्रीभिः सह च | மனைவிமார்களோடு கூடவும் |
| ययुः | சென்றார்கள். |

समाहिता वेदविदो ब्राह्मणा वृत्तसंमताः । गोरथैर्भरतं यान्तमनुजगमुः सहस्रशः ॥ १६ ॥

| | |
|-------------|--|
| समाहिताः | பக்திமான்களும், |
| वेदविदः | வேதவித்துக்களும், |
| वृत्तसंमताः | { நல்லொழுக்கத்தால் கெரைவிக்கப்பட்ட வர்களுமான |
| ब्राह्मणाः | அந்தணர்கள், |
| सहस्रशः | ஆயிரக்கணக்காய், |

| | |
|----------|---------------------------------|
| गोरथैः | மாட்டுவண்டிகளி லேறிக்கொண்டு, |
| यान्तं | போய்க்கொண்டிருக் கும் |
| भरतं | பரதரை |
| अनुजगमुः | பின்தொடர்ந்து சென்றார்கள். |

सुवेषाः शुद्धवसनास्ताम्रमृष्टानुलेपनाः । सर्वे ते विविधैर्यानैः शनैर्भरतमन्वयुः ॥ १७ ॥

| | |
|---------------------|---|
| ते | அந்த |
| सर्वे | எல்லோரும் |
| सुवेषाः | நன்கு அலங்கரித்துக் கொண்டவர்களாய் |
| शुद्धवसनाः | தூயஆடை தரித்தவர் களாய் |
| ताम्रमृष्टानुलेपनाः | சிவந்த குழம்புச்சந்த ணம் பூசியவர்களாய் |

| | |
|---------|----------------------------|
| विविधैः | பற்பல |
| यानैः | வாஹனங்களிலேறிக் கொண்டு, |
| शनैः | வரிசைப்படி |
| भरतं | பரதரை |
| अन्वयुः | தொடர்ந்துசென்றா கள். |

प्रहृष्टमुदिता सेना साऽन्वयात्कैकयीसुतम् । भ्रातुरानयने यान्तं भरतं भ्रातृवत्सलम् ॥

सा अந்த
सेना சேனையானது
प्रहृष्टमुदिता பெருமகிழ்ச்சியால்
பூரித்ததாய்
भ्रातु: தமையனரை
आनयने திரும்பியழைத்துவரு
வதின்நிமித்தம்

भ्रातृवत्सलं தமையனரிடத்தில்பத்
திமைகொண்டவராய்
यान्तं போகும்
कैकयीसुतं கைகேயிகுமாரரான
भरतं பரதரை
अन्वयात् பின்தொடர்ந்து
சென்றது.

ते गत्वा दूरमध्वानं रथयानाश्वकुञ्जरैः । समासेदुस्ततो गङ्गां शृङ्गिवेरपुरं प्रति ॥ १९ ॥

रथयानाश्व- } ரதங்களிலும், வாஹ
कुञ्जरैः } னங்களிலும், குதிரை
களிலும், யானைகளி
லும் ஏறிக்கொண்டு,
ते அவர்கள்
दूरं வெகுதூரம்
अध्वानं गत्वा வழியைக் கடந்து,

ततः அதன்மேல்
गङ्गां கங்காநதியை
शृङ्गिवेरपुरं } சிருங்கிபேரபுரமென்
प्रति } னும் பட்டணத்தரு
காமையில்
समासेदु: வந்துசேர்ந்தார்கள்.

यत्र रामसखो वीरो गुहो ज्ञातिगणैर्वृतः । निवसत्यप्रमादेन देशं तं परिपालयन् ॥ २० ॥

यत्र எதுவோ இதில்
रामसखः ஸ்ரீராமாதுகோழரும்,
वीरः சூரருமாகும்
गुहः குஹர்
तं देशं அந்த தேசத்தை
अप्रमादेन ஜாக்கிரதையாய்

ज्ञातिगणैः க்ஞாதிவர்க்கங்களால்
वृतः தொண்டுசெய்யப்
பெற்றவராய்
परिपालयन् பாதுகாத்துக்
கொண்டு
निवसति வலிக்கிறார்.

उपेत्य तीरं गङ्गायाश्चक्रवाकैरलंकृतम् । व्यवातिष्ठत सा सेना भरतस्यानुयायिनी ॥ २१ ॥

भरतस्य பரதரை
अनुयायिनी பின்தொடர்ந்து வந்த
सा அந்த
सेना சேனை
गङ्गाया: கங்கையினது
चक्रवाकै: சக்கிரவாகப்பறவை
களால்

अलंकृतं அழகுவாய்ந்து
விளங்கும்
तीरं கரையை
उपेत्य அடைந்து
व्यवातिष्ठत நின்றதுவிட்டது.

निरीक्ष्य सुस्थितां सेनां तां च गङ्गां शिवोदकाम् । भरतः सचिवान्सर्वानब्रवीद्वाक्यकोविदः॥

वाक्यकोविदः பேசுவதில் சமர்த்த
भरतः பரதர் [ராகிய
तां அந்த
सेनां சேனையை
सुस्थितां சேர்ந்துநின்றனகொண்
டிருக்கிறதாகவும்,
शिवोदकां புண்ணியதீர்த்தத்தை
யுடைய

गङ्गां च கங்காநதியையும்,
निरीक्ष्य பார்த்து
सचिवान् மந்திரிமார்கள்
सर्वान् எல்லோரையும்
பார்த்து
अब्रवीत् பின்வருமாறு ஆக்ஞா
பித்தார்:

निवेशय मे सैन्यमभिप्रायेण सर्वतः । विश्रान्ताः प्रतरिष्यामः श्व इदानीं महानदीम् ॥

| | | | |
|------------|----------------------|--------------|----------------------|
| मे | “ எனது | निवेशय | தங்கவிடுங்கள். |
| सैन्यं | சேனையை | श्वः | நாளை |
| अभिप्रायेण | செனகர்யப்படி- | विश्रान्ताः | களைப்புத்தீர்ந்தவர்க |
| सर्वतः | எல்லாப்பக்கங்களிலும் | | ளாய் |
| इदानीं | இப்பொழுது | महानदीं | புண்ணியநதியை |
| | | प्रतरिष्यामः | நாம் தாண்டுவோம். |

दातुं च तावदिच्छामि स्वर्गतस्य महीपतेः । और्ध्वदेहनिमित्तार्थमवतीर्योदकं नदीम्॥२४॥

| | | | |
|------------|-----------------------|----------------|------------------|
| तावत् | “ இந்த அவகாசத்தில் | और्ध्वदेह- | பரலோகத்திலிருப்ப |
| नदीं | நதியில் | निमित्तार्थं } | வரின் நன்மைக்காக |
| अवतीर्य | இறங்கி | उदकं च | தர்ப்பணத்தையும் |
| स्वर्गतस्य | ஸ்வர்க்கமடைந்த | दातुं | செய்ய |
| महीपतेः | சக்கிரவர்த்தியாருக்கு | इच्छामि | போகிறேன்.” |

तस्यैवं ब्रुवतोऽमात्यास्तथेत्युक्त्वा समाहिताः । न्यवेशयंस्तांश्छन्देन स्वेन स्वेन पृथक् पृथक्॥

| | | | |
|----------|--------------------------------|-------------|------------------|
| तस्य | அவர் | उक्त्वा | சொல்லி |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | तान् | அவர்கள் |
| ब्रुवतः | ஆக்ஞாபிக்கையில் | स्वेन स्वेन | அதது |
| अमात्याः | மந்திரிமார்கள் | छन्देन | இஷ்டப்படி |
| समाहिताः | ஏற்றுக்கொண்டவர்க | पृथक् पृथक् | வெவ்வேறாய், |
| | ளாய் | न्यवेशयन् | அமர்த்தினார்கள். |
| तथा इति | ‘அங்ஙனமே செய்கி றோம்’ என்று | | |

निवेश्य गङ्गामनु तां महानदीं चमूं विधानैः परिवर्हशोभिनीम् ।

उवास रामस्य तदा महात्मनो विचिन्तयानो भरतो निवर्तनम् ॥ २६ ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------------|-------------|---------------------------|
| भरतः | பரதர், | निवेश्य | அமர்த்தி, |
| परिवर्हशोभिनीं | பரிவாரஜனங்களுடன் | तदा | அதன்மேல் |
| चमूं | சேனையை [விளங்கும் | महात्मनः | மகாத்மாவாகிய |
| तां | அந்த | रामस्य | ராமரின் |
| महानदीं | புண்ணியநதியாகிய | निवर्तनं | திரும்பியழைத்து வருதலை |
| गङ्गां अनु | கங்கைக்கருகில், | विचिन्तयानः | சிந்தித்துக்கொண்டே |
| विधानैः | இடத்திற்கேற்ற உபா யங்களைக்கொண்டு, | उवास | தங்கியிருந்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे त्र्यशीतितमः सर्गः ॥



गुह्यभरतसमागमः—குகனும் பரதனும் ஸந்திப்பது.

| | |
|-------------|---------------------|
| தத: | அப்பொழுது |
| நிபாடராஜ: | வேடர்களின் மன்னர், |
| கடாள் நதி | கங்கைநதியை[(குகர்), |
| அந்வாசிரிதா | அடைந்து |
| நிவிதா | தங்கியிருக்கும் |
| ஃவஜிநி | சேனையை |

दृष्ट्वा एव
 सन्वसितः
 ज्ञातीन्
 अब्रवीत्

பார்த்ததும்,
 ஆலசியம் செய்யாத
 வராய்,
 க்ஞாதிகளைப்பார்த்து
 பின்வருமாறு
 மொழிந்தார்.

இய்
சேனா
மஹதி
சாगराभा

“இதோ ஒரு
சேனையானது
பெரிதாய்
சமுத்திரம் போன்ற
தாய்

| | |
|-------------|-----------------------|
| विचिन्तयन् | கவனித்துப் பார்க்கும் |
| अस्य | இதனுடைய [நான், |
| अन्तं | முடிவை |
| इतः | இவ்விடத்திலிருந்து |
| मनसा अपि | மனதாலும் |
| अवगच्छामि न | காணுகிறாக்கிறேன். |

प्रदृश्यते காணப்படுகிறது.

| | |
|--------------|------------------|
| रथे | “ரதத்தில் |
| सः | அந்த |
| एषः | இந்த |
| महाकायः | பெரிய வடிவமுள்ள |
| कोविदारध्वजः | சீமை அத்தித்வஜமி |
| | நாக்கிறது. |

| | |
|-------------|---------------------|
| यथा हि | அதனால் |
| दुर्बुद्धिः | கெடுமதியுடைய |
| भरतः तु | பரதனும் |
| स्वयं | தானே |
| आगतः खलु | வந்திருக்கிறான்போல் |
| | இருக்கிறது. |

| | |
|----------------|---------------------|
| कैकयीपुत्रः | “கைகேயிபுதல்வனாகும் |
| सः | அந்த |
| भरतः | பரதன் |
| दाशान् | செம்படவர்களாகிய |
| अस्मान् | நம்மை |
| बन्धयिष्यति वा | சிறைப்படுத்தப்போகி |
| | ருளே என்னமோ ! |
| वधिष्यति | கொல்லப்போகிருளே! |
| अथवा | இதில்லையெனில் |
| तस्य | அந்த |
| राज्ञः | சக்கிரவர்த்தியாரது |
| अतिदुर्लभां | கிடைத்தற்கரிய |
| श्रियं | ராஜ்யலக்ஷ்மியை |

| | |
|----------|-------------------------------|
| அத | இப்பொழுதே |
| சம்பந்நா | சாச்வதமாய் |
| இச்சந் | கோரியவனாய் |
| பித்ரா | தந்தையால் |
| ராஜ்யத் | ராஜ்யத்திலிருந்து |
| விவாஸித் | காட்டிற்கு ஓட்டிவிட ப்பட்ட |
| தாஸரயி | தசரதரின் திருக்குமா |
| ராமம் | ஸ்ரீராமரை [ரராகய |
| ஹந் | கொல்வதற்கு |
| சமபிசாஸி | வந்திருக்கிறான் |
| | போனும்! |

भर्ता चैव सखा चैव रामो दाशरथिर्धम । तस्यार्थकायाः सन्नद्धा गङ्गानूपेऽन तिष्ठत ॥

| | | | |
|---------|---|----------------------|---|
| दाशरथि: | “தசரதசக்கிரவர்த்தி யாரின் திருக்குமார் ராகும் | तस्य अर्थकायाः एव | அவருக்கு நன்மையில் பற்றுடை யவர்களாய், |
| राम: | ஸ்ரீராமர், | अन सन्नद्धाः एव | இப்பொழுது போர்புரிய சன்னத் தர்களாய், |
| मम | எனக்கு | | |
| भर्ता च | எஜமானர். | गङ्गानूपे | கங்கைக்கரையில் |
| सखा च | தோழரும். | तिष्ठत | காத்திருங்கள். |

तिष्ठन्तु सर्वदाशश्च गङ्गामन्वाश्रिता नदीम् । बलयुक्ता नदीरक्षा मांसमूलफलाशनाः ॥

| | | | |
|-----------------------|---|--------------|---------------------------------|
| सर्वदाशाः च | “செம்படவர்கள் எல் லோர்களும், சைனியங்களுடன் கடியவர்களாய், மாம்சங்களையும், கிழ ங்குகளையும், பழங்க ளையும் உணவாய்க் கொண்டவர்களாய், | गङ्गां नदीं | கங்கைநதியை |
| बलयुक्ताः | | अन्वाश्रिताः | அடைந்தவர்களாய், |
| मांसमूल- फलाशनाः } | | नदीरक्षाः | நதியை பாதுகாக்கின் றவர்களாய் |
| | | तिष्ठन्तु | ஊக்கத்துடனிருக் கட்டும். |

नावां शतानां पञ्चानां कैवर्तानां शतं शतम् । सन्नद्धानां तथा यूनां तिष्ठत्वित्यभ्यचोदयत् ॥

| | | | |
|-------------|--|------------|-----------------------------------|
| कैवर्तानां | “செம்படவர்களின் | शतानां | நூறின் [எனும், |
| यूनां | பலவான்களுடை யவும், | शतं शतं | நூற்றுக்கணக்காயுள் - |
| सन्नद्धानां | சர்வப்ரகாரத்திலும் சித்தமாயிருக்கின்ற | तिष्ठतु | சித்தமாயிருக்கட்டும்.” |
| नावां | மாக்கலங்களுடை | तथा इति | இப்படிச் சொல்லி விட்டும் |
| पञ्चानां | ஐந்து [யவும், | अभ्यचोदयत् | பின்வருமாறும் வற்பு றுத்தினர்: |

यदा दुष्टस्तु भरतो रामस्येह भविष्यति । नैयं स्वस्तिमती सेना गङ्गामद्य तरिष्यति ॥

| | | | |
|--------------|------------------|------------|-----------------|
| अद्य | “இப்பொழுது | सेना | சேனையானது |
| भरतः | பரதர் | इह | இவ்விடத்தில் |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருக்கு | तु | இப்பொழுது |
| दुष्टः | கெடுதிசெய்பவனாக | स्वस्तिमती | சேஷமமுடையதாய் |
| भविष्यति यदा | போகின்றாநென்றால் | गङ्गां | கங்கையை |
| इयं | இந்த | तरिष्यति न | கடக்கக்கூடாது.” |

इत्युक्तोपायनं गृह्य मत्स्यमांसमधूनि च । अभिचक्राम भरतं निषादाधिपतिर्गुहः ॥१०॥

| | | | |
|--------------|------------------------|-------------------|---------------------------|
| निषादाधिपतिः | வேடரின் மன்னரா கும் | मत्स्यमांसमधूनि च | மதஸ்ய, மாம்ஸ, மதுக்களை |
| गृहः | குஹர் | गृह्य | எடுத்துக்கொண்டு |
| इति | மேற்கண்டவாறு | भरतं | பரதரிடம் |
| उत्तवा | ஆக்டாபித்துவிட்டு, | उपायनं | செல்வதற்கு |
| | | अभिचक्राम | நிச்சயித்தார். |

தமாயாந் து சம்பேத்ய சூதபுத்ர: ப்ரதாபவாந் | ப்ரதாபாச்சக்ஷேஸ்ய விநயஜ்ஞோ விநிதவத் || 11 ||

| | | | |
|------------|----------------------|----------|---------------|
| ப்ரதாபவாந் | பிரதாபசாலியும், | த் | அவரை |
| விநயஜ்: | ராஜ்யநீதியில் நிபுண | சம்பேத்ய | பார்த்து |
| | ரும், | விநிதவத் | வணக்கமாய் |
| சூதபுத்ர: | தேர்ப்பாகரின் புதல்வ | து | இவரைப்பற்றி |
| | நுமாகிய சுமந்திரர், | ப்ரதாப | பரதருக்கு, |
| அத | அப்பொழுது | அச்சக்ஷே | பின்வருமாறு |
| அயாந் | வந்துகொண்டிருக்கும் | | தெரிவித்தனர்: |

ஏஷ ஜாதிசஹ்ஸேந ச்யபதி: பரிவாரித: | குஷலோ ட்ஷ்டகாரண்யே வுஷ்டோ ப்ராதுஸ்த் தை சக்ஷா ||

| | | | |
|------------|-------------------|--------------|----------------|
| ஏஷ: | “இதோவரும் | ட்ஷ்டகாரண்யே | தண்டகாரண்ய |
| வ்ருஷ்ட: | பெரியவர் | | விஷயத்தில் |
| ச்யபதி: | இத்தேசமன்னர். | குஷல: | எல்லாமிந்தவர். |
| ஜாதிசஹ்ஸேந | ஆயிரக்கணக்கான | ச | அன்றியும் |
| | இனத்தாரால் | தே | தேவரீரது |
| பரிவாரித: | சேவிக்கப்பட்டவர். | ப்ராது: | தமயனாரின் |
| | | சக்ஷா | தோழர். |

தஸ்மாத்பश्यतु காकुत्ஸ்த் த்வாந் நிஷாடாதிபி: குஹ: | அசன்ஷயம் விஜானிதே யத்ர தௌ ராமலக்ஷ்மணௌ ||

| | | | |
|-------------|---------------------|-------------|-----------------|
| காकुत्ஸ்த் | “ககுத்தவம்சத்தில் | அசன்ஷயம் | தீர்மானமாய் |
| | பிறந்த பரதரே! | விஜானிதே | அறிவார். |
| ராமலக்ஷ்மணௌ | ஸ்ரீராமலக்ஷ்மணர்க | தஸ்மாத் | ஆகையால் |
| | ளாகிய | நிஷாடாதிபி: | வேடர்மன்னராகும் |
| தௌ | அவ்விருவர்களும் | குஹ: | சுகர் |
| யத்ர | எங்கிருக்கிறார்களோ, | த்வாந் | தேவரீரை |
| | அதை | பश्यतु | காண்ட்டும்.” |

ஏதத்ரு வக்ஷனம் ஶ்ருத்வா சுமன்த்ராஹ்ரத: ஶுபம் | உவாச வக்ஷனம் ஶீக்ஷம் குஹ: பश्यतु மாமிதி ||

| | | | |
|------------------|---------------------|---------|--------------|
| ப்ரத: | பரதர் | இதி | பின்வரும் |
| சுமன்த்ரா | சுமந்திரரிடமிருந்து | வக்ஷனம் | சொல்லை |
| ஏதத் | இந்த | உவாச | சொன்னார்: |
| ஶுபம் | மனோரதத்திற்கு அனு | குஹ: | “சுகர் |
| | கூலமாய் விளங்கிய | மா | என்னை |
| வக்ஷனம் ஶ்ருத்வா | சொல்லைக் கேட்டு, | து | இப்பொழுதே |
| ஶீக்ஷம் | உடனே | பश्यतु | காண்ட்டும்.” |

லக்ஷ்வா ஹ்நுஜாந் சஹ்ஸு ஜாதிபி: பரிவாரித: | அகம்ய ப்ரதம் ப்ரஹ்ம குஹோ வக்ஷனமவ்ரவீத் ||

| | | | |
|----------|-------------------|-----------|------------------|
| குஹ: | சுகர் | பரிவாரித: | சூழப்பட்டவராய் |
| ஹ்நுஜாந் | அனுமதியைப்பெற்று, | ப்ரதம் | பரதரை |
| லக்ஷ்வா | அதனால் | அகம்ய | கிட்டி, |
| ஹி | மிக மகிழ்ச்சிகொண் | ப்ரஹ்ம: | வணக்கமுடையவராய் |
| சஹ்ஸு: | டவராய் | வக்ஷனம் | பின்வரும் சொல்லை |
| ஜாதிபி: | இனத்தவரால் | அவ்ரவீத் | சொன்னார்: |

निष्कुटश्चैव देशोऽयं वञ्चिताश्चापि ते वयम् । निवेदयामस्ते सर्वे स्वके दासकुले वस ॥

| | | | |
|----------|-------------------------|-----------|-----------------------|
| अयं | “இந்த | अपि एव | அப்படியிருக்கையி |
| देशः | நாடானது | | லும், |
| ते | தேவரீரது | स्वके | ‘தேவரீருடையதாகிய |
| निष्कुटः | திருமானிகையின் | दासकुले | தொண்டர்களின் |
| वयं | நாங்கள் [தோட்டம். | | தேசத்தில் |
| सर्वे च | எல்லோருமே | वस च | தங்கியிருக்கவேண்டு’ |
| | (முன்பார்ந்திருக்கும்.) | ते | தேவரீரை [மென்று |
| वञ्चिताः | பாக்கியம்பெறுதவர்கள். | निवेदयामः | கேட்டுக்கொள்ளுகிறோம். |

अस्ति मूलं फलं चैव निषादैः समुपार्जितम् । अर्द्रमांसं च संशुष्कं वन्यं चोच्चावचं महत् ॥

| | | | |
|-------------|------------------|---------------|--------------------|
| निषादैः | “வேடர்களால் | अर्द्रमांसं च | பச்சை மாம்சமும், |
| समुपार्जितं | கொண்டு வரப்பட்ட | उच्चावचं | பலவகைப்பட்ட |
| मूलं च | கிழங்கும், [தாய் | वन्यं च | காட்டில் கிடைக்கக் |
| फलं एव | பழமும், | महत् | ஏராளமாக [கூடியதும் |
| संशुष्कं | காய்ந்ததும், | अरितं | இருக்கிறது. |

आशंसे स्वाशिता सेना वत्स्यतीमां विभावरीम् ।

अर्चितो विविधैः कामैः श्वः ससैन्यो गमिष्यसि ॥ २८ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|----------|--------------------------------|
| सेना | “சேனையானது | अर्चितः | பூஜிக்கப்பெற்றவராய் |
| स्वाशिता | நன்கு புசித்துவிட்டு | ससैन्यः | சைனியத்துடன்கூட |
| इमां विभावरीं | இந்த இரவு | श्वः | நானே |
| वत्स्यति | தங்கியிருக்கட்டும். | गमिष्यसि | தேவரீர் போகலா |
| विविधैः | பலவகை | | மென்று |
| कामैः | தேவையானவைக | आशंसे | அடியேன் பிரார்த்திக்கின்றேன்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे चतुरशीतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5575



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3220

पञ्चाशीतितमः सर्गः—எண்பத்தைந்தாவது ஸர்க்கம் ॥ ८५ ॥

भरतगुहसंवादः—பரதகுகஸம்வாதம்.

एवमुक्तस्तु भरतो निषादाधिपतिं गुहम् । प्रत्युवाच महाप्राज्ञो वाक्यं हेत्वर्थसंहितम् ॥ १ ॥

| | | | |
|--------------|----------------|----------------|-------------------|
| एवं | மேற்கண்டவாறு | गुहं | குகரைப்பார்த்து |
| उक्तः | விண்ணப்பம் | तु | இவ்விஷயத்தில் |
| | செய்யப்பட்ட | हेत्वर्थसंहितं | நல்ல காரணங்களும் |
| महाप्राज्ञः | மஹா ஞானியாகும் | | பொருளுமியைந்த |
| भरतः | பரதர் | वाक्यं | பின்வரும் சொல்லை |
| निषादाधिपतिं | வேடமன்னராகிய | प्रत्युवाच | பதிலையுரைத்தனர் : |

ऊर्जितः खलु ते कामः कृतो मम गुरोः सखे । यो मे त्व गीदृशीं सेनामेकोऽभ्यर्चितुमिच्छसि॥

| | | | |
|----------|--------------|--------------|-------------------|
| மம குரோ: | “எனது ஐயரது | அப்யர்சிதும் | வெகுமானிக்க |
| சக்தே | கோழரே! | இச்சி | விரும்புகின்றீர். |
| ய: | எந்த | தே | உமது |
| தவ் ஁க: | நீரோருவரே | ऊर्जितः | விசேஷமாகிற |
| மே | எனது | कामः | மனோரதமானது |
| ईदृशीं | இப்படிப்பட்ட | कृतः खलु | செய்யப்பட்டதே.” |
| सेनां | சேனையை | | |

इत्युक्त्वा तु महातेजा गुहं वचनमुत्तमम् । अब्रवीद्भरतः श्रीमान्निषादाधिपतिं पुनः ॥ ३ ॥

| | | | |
|----------|--------------------|--------------|---------------------|
| महातेजा: | மகா தேஜஸ்வியும் | उक्त्वा तु | அருளிச்செய்துவிட்டு |
| श्रीमान् | புகழ்பெற்றவருமாகிய | पुनः | மறுபடியும் |
| भरतः | பரதர் | निषादाधिपतिं | வேடமன்னராகும் |
| इति | மேற்கண்ட | गुहं | சூகரைப்பார்த்து |
| उत्तमं | உத்தமமான | अब्रवीत् | பின்வருமாறு |
| वचनं | மொழியை | | வினாவினார் : |

कतरेण गमिष्यामि भरद्वाजाश्रमं गुह । गहनोऽयं भृशं देशो गङ्गानूपो दुरत्ययः ॥ ४ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-----------|---------------------|
| गुह | “சூகரே! | देशः | பிரதேசமானது |
| कतरेण | எந்த வழியால் | भृशं | மிகவும் |
| भरद्वाजाश्रमं | பரத்வாஜரது ஆசிரம | गहनः | புகுதற்கரியதாயிருக் |
| | த்திற்கு | गङ्गानूपः | கங்கைஜலம் [கிறது. |
| गमिष्यामि | நான் போகவேண்டும்? | दुरत्ययः | கடக்கமுடியாததாயி |
| अयं | இந்த | | ருக்கிறது.” |

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राजपुत्रस्य धीमतः । अब्रवीत्प्राञ्जलिर्वाक्यं गुहो गहनगोचरः ॥ ५ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|------------|-----------------|
| गहनगोचरः | வனவாலியாகிய | तत् | அந்த |
| गुहः | சூகர், | वचनं | சொல்லை |
| तस्य | இந்த | श्रुत्वा | கேட்டு, |
| धीमतः | தீமானான | प्राञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராகி |
| राजपुत्रस्य | சக்கிரவர்த்திபுதல்வ | वाक्यं | பின்வரும் பதிலை |
| | னது | अब्रवीत् | சொன்னார் : |

दाशास्त्वाऽनुगमिष्यान्ति धन्विनः सुसमाहिताः । अहं चानुगमिष्यामि राजपुत्र महायशः॥

| | | | |
|------------|-----------------------|---------------|--------------------|
| महायशः | “மிக்க புகழ்பெற்ற | त्वा | தேவரீரை |
| राजपुत्र | சக்கிரவர்த்திகுமாரர்! | अनुगमिष्यन्ति | பின் தொடர்ந்து வரு |
| सुसमाहिताः | நம்பிக்கையுள்ள | | வார்கள். |
| दाशाः | செம்படவர்கள் | अहं च | அடியேனும் |
| धन्विनः | தனுஷ்பாணிகளாய் | अनुगमिष्यामि | கூடவே வருவேன். |

कचिन्न दुष्टो व्रजसि रामस्याक्लिष्टकर्मणः । इयं ते महती सेना शङ्कां जनयतीव मे ॥७॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------|--------|------------------|
| अक्लिष्टकर्मणः | “எதையும்னாயாஸமா ய் செய்யவல்ல | இய் | இந்த |
| ராமஸ்ய | ஸ்ரீராமருக்கு | மஹதி | பெரிய |
| ந் | கேடு நினையாதவராக | சேனா | சேனை |
| दुष्टः | தேவரீரொழுந்தருளியி | मे | எனக்கு |
| व्रजसि | ருக்கின் றீரென்று (நா | इव | கொஞ்சம் |
| कचित् | னண்ணுகிறேன்); | शङ्कां | ஐயத்தை |
| ते | தேவரீரது | जनयति | உண்டாக்குகிறது.” |

तमेवमभिभाषन्तमाकाश इव निर्मलः । भरतः श्लक्ष्णया वाचा गुहं वचनमब्रवीत् ॥ ८ ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|------------|------------------------------------|
| आकाशः | ஆகாசமானது | तं | அந்த |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே | गुहं | குகரைப்பார்த்து, |
| निर्मलः | மாசற்றவராகிய | श्लक्ष्णया | தனது நல்லெண்ணத் தைக்காட்டுகின்ற |
| भरतः | பரதர், | वाचा | சொற்கொண்டு, |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | वचनं | பின்வரும் பதிலை |
| अभिभाषन्तं | பேசும் | अब्रवीत् | மொழிந்தனர் : |

मा भूत्स कालो यत्कष्टं न मां शङ्कितुमर्हसि । राघवः स हि मे भ्राता ज्येष्ठः पितृसमो मतः॥

| | | | |
|----------|-------------------|----------|---------------------|
| मां | “என்னிடத்தில் | हि | ஏனெனில் |
| शङ्कितुं | ஐயமுற | सः राघवः | அந்த ஸ்ரீராமர் |
| अर्हसि न | நீரிடங்கொடலாகாது. | मे | எனக்கு |
| यत् | எதுவோயிது | पितृसमः | பிதாவுக்குச்சமமாகிய |
| कष्टं | அஸஹ்யமானது. | मतः | பூஜ்யராகிய |
| सः | அந்த | ज्येष्ठः | மூத்த |
| कालः | காலமானது | भ्राता | தமையனார். |
| मा भूत् | உண்டாகவேண்டாம். | | |

तं निवर्तयितुं यामि काकुत्स्थं वनवासिनम् । बुद्धिरन्या न ते कार्या गुह सत्यं ब्रवीमि ते॥

| | | | |
|-------------|----------------------------------|----------|------------------|
| गुह | “குகரே! | अन्या | வேறு |
| वनवासिनं | வனத்தில் குடி கொண் டிருக்கும் | बुद्धिः | எண்ணமானது |
| तं | அந்த | ते | உனக்கு |
| काकुत्स्थं | ஸ்ரீராமரை | कार्या न | உண்டாகக்கூடாது. |
| निवर्तयितुं | திருப்பி அழைத்துவா | ते | உனக்கு |
| यामि | போகிறேன். | सत्यं | சத்தியமாக |
| | | ब्रवीमि | சொல்லுகின்றேன்.” |

स तु संहृष्टवदनः श्रुत्वा भरतभाषितम् । पुनरेवाब्रवीद्वाक्यं भरतं प्रति हर्षितः ॥ ११ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-------------|------------------|
| सः | அவர் | संहृष्टवदनः | மலர்ந்த முகத்தின |
| भरतभाषितं | பரதர் சொல்லியதை | | ராய் |
| श्रुत्वा | கேட்டு | भरतं प्रति | பரதரைப் பார்த்து |
| तु | அதனால் | पुनः एव | மீளவும் |
| हर्षितः | மனம்மகிழ்ந்தவராகி | वाक्यं | பின்வரும் சொல்லை |
| | | अब्रवीत् | சொன்னார் : |

धन्यस्त्वं न त्वया तुल्यं पश्यामि जगतीतले । अयत्नादागतं राज्यं यस्त्वं त्यक्तुमिहेच्छसि ॥

| | | | |
|----------|----------------|--------------|-------------------------|
| यः | “எந்த அந்த | इच्छसि | தீர்மானங்கொண்டி- |
| त्वं | தேவரீர் . | जगतीतले | புதலத்தில் [ருக்கிறீர். |
| अयत्नात् | (கேளாது) தானாக | त्वया तुल्यं | தேவரீருக்குச் சமான |
| आगतं | கிடைத்த | | மான மற்றொருவனை |
| राज्यं | ராஜ்யத்தை | पश्यामि न | நான் கண்டிலேன். |
| इह | இவ்வுலகில் | त्वं | தேவரீர் |
| त्यक्तुं | உபேகிப்ப | धन्यः | மகாபுண்ணியா த்மா. |

शाश्वती खलु ते कीर्तिलोकाननुचरिष्यति । यस्त्वं कृच्छ्रागतं रामं प्रत्यानयितुमिच्छसि ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-----------------|--------------------|
| यः | “எந்த | इच्छसि | தீர்மானித்திருக்கி |
| त्वं | தேவரீர் | | றீரோ, அந்த |
| कृच्छ्रागतं | கஷ்டதசையிலிருக் | ते कीर्तिः | உமது புகழ் |
| रामं | ஸ்ரீராமரை [கும் | शाश्वती | நிரந்தரமாய் |
| प्रत्यानयितुं | திருப்பியழைத்துப் | लोकान् | உலகங்களில் |
| | போக | अनुचरिष्यति खलु | நிற்கும்.” |

एवं संभाषमाणस्य गुह्यस्य भरतं तदा । बभौ नष्टप्रभः सूर्यो रजनी चाभ्यवर्तत ॥ १४ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-----------|-----------------|
| एवं | இவ்விதமாய் | सूर्यः | சூரியபகவான் |
| भरतं | பரதரிடம் | नष्टप्रभः | ஒளிகுன்றியவனாய் |
| तदा | அப்பொழுது | बभौ | ஆயினன். |
| गुह्यस्य | சூகர் | रजनी च | இரவும் |
| संभाषमाणस्य | பேசிக்கொண்டிருக் | अभ्यवर्तत | வந்தது. |
| | கையில் | | |

संनिवेश्य स तां सेनां गुहेन परितोषितः । शत्रुघ्नेन सह श्रीमाञ्छयनं समुपागमत् ॥ १५ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|-----------|----------------|
| गुहेन | சூகரால் | तां | அந்த |
| परितोषितः | புகழப்பெற்ற | सेनां | சேனையை |
| श्रीमान् | ஸ்ரீமான | संनिवेश्य | இருக்கவைத்து |
| सः | அவர், | शयनं | படுக்குமிடத்தை |
| शत्रुघ्नेन सह | சத்ருக்னரோடுகூட | समुपागमत् | அடைந்தார். |

रामचिन्तामयः शोको भरतस्य महात्मनः । उपस्थितो ह्यनर्हस्य धर्मप्रेक्षस्य तादृशः ॥ १६ ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------|-------------|------------------|
| धर्मप्रेक्षस्य | தர்மத்தில் சரத்தை கொண்ட | शोकः | துயரானது |
| महात्मनः | மகாத்மாவாகும் | तादृशः | அதற்கு |
| भरतस्य | பரதருக்கு | अनर्हस्य हि | பாத்திரப்படாதவரா |
| रामचिन्तामयः | ராமரைப்பற்றிய சிந்தையாகிற | | யிருக்கையிலும் |
| | | उपस्थितः | நேர்ந்தது. |

अन्तर्दाहेन दहनः संतापयति राघवम् । वनदाहाभिसन्तप्तं गूहोऽग्निरिव पादपम् ॥ १७ ॥

| | | | |
|------------------|--|-------------|---------------------|
| गूहः | { இன்ன இடமிருந்து வந்ததெனத்தெரியா ததாகிய | इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| अग्निः | அக்னியானது | दहनः | மனக்கொதிப்பானது |
| वनदाहाभिसन्तप्तं | காட்டில் சிவந்து உலர்ந்திருக்கும் | अन्तर्दाहेन | உள்ளத்தையெரிப்பதால் |
| पादपं | ஓர் விருகத்தையே | राघवं | பரதரை |
| | | सन्तापयति | வருத்திய. |

प्रसृतः सर्वगात्रैभ्यः स्वेदं शोकाग्निसंभवम् । यथा सूर्याशुसन्तप्तो हिमवान्प्रसृतो हिमम् ॥

| | | | |
|------------------|----------------------------------|----------------|-------------------------------------|
| हिमवान् | இமயமலை | यथा | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| सूर्याशुसन्तप्तः | சூரியகிரணங்களால் வெம்மையுற்றதாய் | शोकाग्निसंभवं | சோகத்தியாலுண்டாவியர்வையை [கும் |
| हिमं | பனியை | स्वेदं | எல்லா அவயவங்களிலிருந்தது. [னின்றும் |
| प्रसृतः | வெளிவிடுகிறது | सर्वगात्रैभ्यः | |
| | | प्रसृतः | |

ध्याननिर्दरशैलेन विनिश्वासितधातुना । दैन्यपादपसङ्घेन शोकायासाधिशृङ्गिणा ॥ १९ ॥

प्रमोहानन्तसत्त्वेन सन्तापौषधिवेणुना । आक्रान्तो दुःखशैलेन मज्जता कैकयीसुतः ॥ २० ॥

| | | | |
|---------------------------|--|----------------------------|--|
| ध्याननिर्दर- } शैलेन | { தியானமாகிற குகை களையுடைய கல்தரையையுடையதும், | प्रमोहानन्त- } सत्त्वेन | { (கரைகாணாது காரியம் கைகூடுமோ கூடாதோ என்ற) கலக்கமாகிற பிராணிகளையுடையதும், |
| विनिश्वासितधातुना | பெருமூச்சாகிற தாது க்களையுடையதும், | सन्तापौषधि- } वेणुना | { சந்தாபமாகிற பசுமரங்களையும் மூங்கில்களையுமுடையதும், |
| दैन्यपादप- } संघेन | { மனத்தளர்ச்சியாகிய மரக்கூட்டங்களையுடையதும், | मज्जता | அமிழ்த்துகிறதுமான |
| शोकायासाधि- } शृङ्गिणा | { சோகத்தாலுண்டாகும் சரீரத்தளர்ச்சியாகிற மேல்கிரங்களையுடையதும், | दुःखशैलेन | மனவேதனையாகிற மலையால் |
| | | कैकयीसुतः | கைகேயியின் புதல்வர் (பரதர்) |
| | | आक्रान्तः | மெய்மறந்துகிடந்தார். |

विनिश्चसन्वै भृशदुर्मनास्ततः प्रमूढसंज्ञः परमापदं गतः ।

शमं न लेभे हृदयज्वरार्दितो नरर्षभो यूथहतो यथर्षभः

॥ २१ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------------------|--------------|-----------------------------------|
| नरर्षभः | புருஷோத்தமர் (பரதர்) | प्रमूढसंज्ञः | அறிவிழுந்து, |
| परमापदं | பெருங்கவட்டத்தை | ततः | அப்பொழுது |
| गतः | அடைந்தவராய் | विनिश्चसन् | பெருமூச்சு விட்டுக் கொண்டு, |
| भृशदुर्मनाः | மிக்க மனக்கலக்க முற்றவராய் | यूथहतः | கட்டத்தினின்று தவ றிவந்துவிட்ட |
| हृदयज्वरार्दितः | மனக்கொதிப்பால் பீடிக்கப்பட்டவராய் | ऋषभः यथा | இப்போல் |
| | | शमं | துக்கசாந்தியை |
| | | लेभे न वै | பெறவில்லை. |

गुहेन सार्धं भरतः समागतो महानुभावः सजनः समाहितः ।

सुदुर्मनास्तं भरतं तदा पुनर्गुहः समाश्वासयदग्रजं प्रति

॥ २२ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|--------------|---------------------|
| महानुभावः | மகானுபாவரும், | गुहः | குகர் |
| समाहितः | மனவுறுதிகொண்ட | सुदुर्मनाः | மிக மனம்நொந்தவ |
| भरतः | பரதர் [வருமாகிய | पुनः | இருக்கையிலும் [ராய் |
| गुहेन सार्धं | குகரோடுகூட | तं | அந்த |
| सजनः | பரிவாரங்களுடன் | भरतं | பரதரை |
| समागतः | வந்துகூடினார். | अग्रजं प्रति | தமையனரைப்பற்றி |
| तदा | அப்பொழுது | समाश्वासयत् | தேற்றினார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे पञ्चाशीतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5597

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3242



षडशीतितमः सर्गः—எண்பத்தாறாவது ஸர்க்கம் ॥ ௨௨ ॥

गुहवाक्यम्—குகர் லக்ஷ்மணரைப்பற்றிச் சொல்லுதல்.

आचक्षेऽथ सद्भावं लक्ष्मणस्य महात्मनः । भरतायाप्रमेयाय गुहो गहनगोचरः ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|--------------|-----------|-------------------------------|
| अथ | அப்பொழுது | सद्भावं | பிறவியுத்தமகுணத் தை |
| गहनगोचरः | வனவாசியாகிய | अप्रमेयाय | எல்லையில்லா உத்தம குணமுடைய |
| गुहः | குகர் | भरताय | பரதருக்கு |
| महात्मनः | மகாத்மாவாகிய | आचक्षे | பின்வருமாறு தெரிவித்தார் : |
| लक्ष्मणस्य | லக்ஷ்மணருடைய | | |

तं जाग्रतं गुणैर्युक्तं वरचापेषुधारिणम् । भ्रातृगुप्तयर्थमत्यन्तमहं लक्ष्मणमब्रवम् ॥ २ ॥

| | | | |
|------------------|---------------------------------|-------------|---------------------------|
| गुणैः | “உத்தமகுணங்களால் | अत्यन्तं | மிக |
| युक्तं | விளங்குபவரும், | जाग्रतं | விழிப்புடனிருந்த |
| भ्रातृगुप्तयर्थं | தமையனரைப் பாது காப்பதற்காக | तं लक्ष्मणं | அந்த லக்ஷ்மணரைப் |
| वरचापेषुधारिणं | வில்லையும் அம்பையும் தரித்து | अहं | நான் [பார்த்து |
| | | अब्रवम् | பின்வருமாறு சொன்னேன் : |

इयं तात सुखा शय्या त्वदर्थमुपकल्पिता । प्रत्याश्वसिहि शेष्यास्यां सुखं राघवनन्दन ॥

| | | | |
|-----------|---|----------------|---------------------------|
| तात | “ஐயா ! | राघवनन्दन | லக்ஷ்மண ! |
| त्वदर्थं | தேவரீருக்காக | अस्यां | இதில் |
| इयं | இதோவிருக்கும் | सुखं | கவலையின்றி |
| सुखा | இனிய | शेष्या | படுத்துக்கொள்ளும். |
| शय्या | படுக்கை | प्रत्याश्वसिहि | சற்று துயில்கொள் ளும். |
| उपकल्पिता | கொண்டு வந்து வைக் கப்பட்டிருக்கிறது. | | |

उचितोऽयं जनः सर्वो दुःखानां त्वं सुखोचितः । धर्मात्मस्तव गुप्तयर्थं जागरिष्यामहे वयम् ॥

| | | | |
|------------|------------------------------|--------------|----------------------------|
| धर्मात्मन् | “புண்ணியா த்மாவே ! | सुखोचितः | சுகமொன்றையே |
| अयं जनः | இந்த ஜனஸமூகத்தி லிருக்கிற | वयं | நாங்கள் [கண்டவர். |
| सर्वः | ஒவ்வொருவனும் | तव | தேவரீரது |
| दुःखानां | தேகபரிச்ரமங்களுக்கு | गुप्तयर्थं | சேஷமத்திற்காகவும் |
| उचितः | பழக்கப்பட்டவன். | जागरिष्यामहे | கண்விழித்திருக்கி றோம். |
| त्वं | தேவரீர் | | |

न हि रामात्मियतरो ममास्ति भुवि कश्चन । मोत्सुकोऽभूर्ब्रवीम्येतदप्यसत्यं तवाग्रतः ॥

| | | | |
|----------|-------------------------------------|-------------|-----------------|
| भुवि | “இவ்வுலகில் | उत्सुकः | கவலையற்றவராய் |
| मम | எனக்கு | मा भूः | இருக்கவேண்டாம். |
| रामात् | ஸ்ரீராமரைவிட | तव | தேவரீரது |
| प्रियतरः | அதிக பக்திக்குப் பாத்திரமாகிறவர் | अग्रतः | முன்னிலையில் |
| कश्चन हि | வேறொருவரும் | एतत् | இதை |
| अस्ति न | இல்லை. | असत्यं | பொய்யாக |
| | | ब्रवीमि अपि | சொல்வேனா ? |

अस्य प्रसादादाशंसे लोकेऽस्मिन्सुमहद्यशः । धर्मावाप्तिं च विपुलामर्थावाप्तिं च केवलाम् ॥

| | | | |
|--------------|---|----------------|-----------------------------|
| अस्मिन् लोके | “இந்த உலகில் | धर्मावाप्तिं च | தர்மத்தை சேகரிப்ப |
| सुमहत् | சர்வோத்திருஷ்ட மாகிய | केवलां | கேவலமான [தையும், |
| | தொண்டர்களுக்குப் புரியும் அனுக்கிரகத் தையும், | अर्थावाप्तिं | ஆஸ்திசேர்ப்பதையும், |
| यशः | விசேஷப்பயனை | अस्य | இவரது |
| विपुलां | அளிக்கத்தக்க | प्रसादात् च | கருணையால்தானென்று |
| | | आशंसे | நானுறுதியாய்ச் சொல்வேன். |

सोऽहं प्रियसखं रामं शयानं सह सीतया । रक्षिष्यामि धनुष्पाणिः सर्वैः स्वैर्ज्ञातिभिः सह॥

| | | | |
|------------|---------------------|-------------|------------------|
| सः | “அந்த | सीतया सह | சீதாப்பிராட்டியா |
| अहं | நான் | | ருடன் |
| धनुष्पाणिः | கையில் விற்பிடித்தவ | शयानं | சயனங்கொண்டி- |
| | னைய | | ருக்கிற |
| स्वैः | எனது | प्रियसखं | உயிர்த்தோழராகிய |
| ज्ञातिभिः | சுற்றத்தார்கள் | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| सर्वैः सह | எல்லோரோடும் கூட | रक्षिष्यामि | பாதுகாப்பேன். |

न हि मेऽविदितं किञ्चिद्वेदस्मिंश्चरतः सदा । चतुरङ्गं ह्यपि बलं प्रसहेम वयं युधि ॥ ८ ॥

| | | | |
|---------|-----------------|-------------|-----------------|
| अस्मिन् | “இந்த | किञ्चित् हि | ஒன்றும் |
| वने | வனத்தில் | न | இல்லை. |
| सदा | எப்பொழுதும் | चतुरङ्गं | நால்வகை |
| चरतः | ஸஞ்சரிக்கும் | बलं अपि | படையையும் |
| मे | அடியேனுக்கு | युधि | போரில் |
| | { தெரியாதவண்ணம் | वयं | நாங்கள் |
| अविदितं | { நடைபெறக்கூடிய | प्रसहेम | திர்க்கவல்லோம். |
| | { சம்பவம் | हि | இது திண்ணம். |

एवमस्माभिरुक्तेन लक्ष्मणेन महात्मना । अनुनीता वयं सर्वे धर्ममेवानुपश्यता ॥ ९ ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|-----------|---------------------|
| एवं | “மேற்கண்டவாறு | महात्मना | மகாத்மாவுமான |
| अस्माभिः | எங்களால் | लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணரால் |
| उक्तेन | வேண்டிக்கொள்ளப் | वयं | நாங்கள் |
| | பட்டவரும் | सर्वे | எல்லோரும் |
| धर्म एव | தர்மமொன்றையே | अनुनीताः | பின்வருமாறு வேண்டி- |
| अनुपश्यता | ஸர்வமுமாய் சிந்தை | | க்கொள்ளப்பட்டோம்: |
| | யில் பற்றியிருக்கும் | | |

कथं दाशरथौ भूमौ शयाने सह सीतया । शक्या निद्रा मया लब्धुं जीवितं वा सुखानि च॥

| | | | |
|----------|---------------------|-----------|---------------------|
| दाशरथौ | “தாசரத்யார் (ஸ்ரீரா | जीवितं च | வயிற்றுப்பிழைப்புத் |
| | மர்), | | தானாகட்டும், |
| सीतया सह | சீதாப்பிராட்டியா | सुखानि वा | தேகசௌக்கியங்கள் |
| | ருடன் | | தானாகட்டும், |
| भूमौ | தரையில் | मया | என்னால் |
| शयाने | படுத்திருக்கையில் | लब्धुं | கிட்டுவதற்கு |
| निद्रा | சோம்பல்தனந்தான | कथं | எவ்வண்ணம் |
| | கட்டும், | शक्या | ஏற்றவைகளாகும் ? |

यो न देवासुरैः सर्वैः शक्यः प्रसहितुं युधि । तं पश्य गुह संविष्टं तृणेषु सह सीतया ॥

| | | | |
|-----------|--------------|----------|------------------------|
| गुह | “‘சுகரே! | तं | அவரை |
| यः | எவர் | सीतया सह | சீதாப்பிராட்டியாரு |
| देवासुरैः | தேவாசுரர்கள் | तृणेषु | புற்களில் [டன் |
| सर्वैः | எல்லோராலும் | संविष्टं | சுகமாயுறங்கிக்கொண் |
| युधि | போரில் | | டிருக்கிறவராய் |
| प्रसहितुं | எதிர்க்க | पश्य | நீ (பிரத்தியக்ஷத்தில்) |
| शक्यः न | முடியாதவரோ | | பார்க்கின்றனை. |

महता तपसा लब्धो विविधैश्च परिश्रमैः । एको दशरथस्येष्टः पुत्रः सदृशलक्षणः ॥ १२ ॥

| | | | |
|------------|----------------------|-------------|---------------------|
| एकः | “‘ஒப்பாருமிக்காரு | दशरथस्य | தசரதசக்கிரவர்த்தி |
| | மில்லாதவரும், | महता | மகத்தாகிய [யாருக்கு |
| सदृशलक्षणः | { அவருக்கேயுரிய திரு | तपसा | தர்மத்தின்பயனாலும், |
| | { க்கல்யாணகுணங் | विविधैः | பற்பல நியமங்களா |
| | { களுடையவரும், | परिश्रमैः च | ஆம் |
| इष्टः | (உலகுக்கு) அபிராமர | पुत्रः | திருக்குமாரராய் |
| | ய் விளங்குகிறவரும், | लब्धः | விளங்குகிறவர் |
| | | यः | எவரோ அவரிவர். |

अस्मिन्प्रव्राजिते राजा न चिरं वर्तयिष्यति । विधवा मेदिनी नूनं क्षिप्रमेव भविष्यति ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-----------|---------------|
| अस्मिन् | “‘இவர் | नूनं | அதனால் |
| प्रव्राजिते | வனமெழுந்தருளி | मेदिनी एव | பூமகனும் |
| | யிருக்கையில் | क्षिप्र | விரைவில் |
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | विधवा | கணவனைப்பறிகொ |
| चिरं | வெகுகாலம் | | டுத்தவளாய் |
| वर्तयिष्यति न | பிழைத்திருக்க | भविष्यति | ஆகப்போகிறாள். |
| | மாட்டார். | | |

विनद्य सुमहानादं श्रमेणोपरताः स्त्रियः । निर्घोषोपरतं तात मन्ये रामनिवेशनम् ॥ १४ ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|--------------|----------------------|
| तात | “‘ஆப்த தோழா! | उपरताः | ஒய்ந்து கிடப்பார்க |
| स्त्रियः | ஸ்த்ரீகள் | | ளெனவும், |
| सुमहानादं | கூவிக் கூக்குரலிட்டு | रामनिवेशनं | ஸ்ரீராமரது திருமாளி |
| विनद्य | அழுதுவிட்டு | | கை |
| श्रमेण | சிரமத்தால் | निर्घोषोपरतं | நிச்சப்தமாய்க் கிடக் |
| | | मन्ये | கிறதெனவும் |
| | | | நான் எண்ணுகிறேன். |

कौसल्या चैव राजा च तथैव जननी मम । नाशंसे यदि जीवेयुः सर्वे ते शर्वरीमिमाम् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------|----------------|---------------------|
| राजा च | “‘சக்கிரவர்த்தியாரும் | यदि एव | என்னவோ |
| कौसल्या च | கோஸலாதேவியாரும், | इमां शर्वरी एव | இன்றிரவுகூட |
| मम | எனது | जीवेयुः न | பிழைத்திருக்கமாட் |
| जननी तथा | மாதாவுமாகிய | | டார்களை |
| ते सर्वे | அவர்கள் எல்லோரும் | आशंसे | நான் பயப்படுகிறேன். |

जीवेदपि हि मे माता शत्रुघ्नस्यान्ववेक्षया । दुःखिता या तु कौसल्या वीरसूर्विनशिष्यति॥

| | | | |
|-------------|-----------------|------------|------------------|
| मे | “ எனது | वीरसूः | வீரப்புதல்வனைப் |
| माता | மாதா | कौसल्या | கோஸலையார் [பெற்ற |
| शत्रुघ्नस्य | சுதுருக்னனுடைய | या तु | எவளோ அவள்மட் |
| अन्ववेक्षया | ஞாபகத்தால் | | டும் |
| जीवेत् अपि | பிழைத்திருக்கிற | दुःखिता हि | துயரமுற்றவளாய் |
| | ளோ என்னமோ ! | विनशिष्यति | மாண்டுவிடுவாள். |

अतिक्रान्तमतिक्रान्तमनवाप्य मनोरथम् । राज्ये राममनिक्षिप्य पिता मे विनशिष्यति ॥

| | | | |
|------------|-------------------|--------------|-----------------|
| मे | “ எனது | मनोरथं | மனோரதத்தை |
| पिता | திருத்தந்தையார் | अनवाप्य | அடையாதபடியால் |
| राज्ये | ராஜ்யத்தில் | विनशिष्यति | இறந்தேவிடுவார். |
| रामं | புரீராமரை | अतिक्रान्तं | நிகழ்ந்தது |
| अनिक्षिप्य | திருவபிஷேகம் செய் | अतिक्रान्तम् | நிகழ்ந்ததே. |
| | துவைக்க முடியாது, | | |

सिद्धार्थाः पितरं वृत्तं तस्मिन्काले ह्युपस्थिते । प्रेतकार्येषु सर्वेषु संस्करिष्यन्ति भूमिपम् ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|----------------|----------------------|
| तस्मिन् | “ அந்த | सिद्धार्थाः | கொடுத்தவைத்தவர் |
| काले | காலம் | | கள்தான் |
| उपस्थिते | வரும்பொழுது | वृत्तं हि | இறந்துவிட்ட |
| प्रेतकार्येषु | சரம கைங்கரியங்கள் | भूमिपं | சக்கிரவர்த்தியாராகிய |
| सर्वेषु | எல்லாவற்றிலும் | पितरं | தந்தையாருக்கு |
| | | संस्करिष्यन्ति | சரமகைங்கரியம் |
| | | | செய்வார்கள். |

रम्यचत्वरसंस्थानां सुविभक्तमहापथाम् । हर्म्यप्रासादसंपन्नां सर्वरत्नविभूषिताम् ॥ १९ ॥

गजाश्वरथसंवाधां तूर्यनादविनादिताम् । सर्वकल्याणसंपूर्णां हृष्टपुष्टजनाकुलाम् ॥ २० ॥

आरामोद्यानसंपन्नां समाजोत्सवशालिनीम् । सुखिता विचरिष्यन्ति राजधानीं पितुर्मम ॥

| | | | |
|------------------|----------------------|-------------------|----------------------|
| मम | “ எனது | सर्वरत्न- } | உத்தமப்பொருள் எல் |
| पितुः | திருத்தந்தையின் | विभूषितां } | லாம் நிரம்பியதும், |
| रम्यचत्वर- } | அழகிய நாற்சந்திகளி | गजाश्वरथ- } | யானைகளும், குதிரை |
| संस्थानां } | னமைப்பினைப்பெற் | संवाधां } | களும், ரதங்களும், |
| | றதும், | | நிறைந்துள்ளதும், |
| सुविभक्त- } | நன்கு பிரிக்கப்பட்ட | तूर्यनादविनादितां | வாத்தியகோஷங்கள் |
| महापथां } | ராஜவீதிகளையுடைய | | முழங்கப்பெற்றதும், |
| | யதும், | सर्वकल्याण- } | மங்களங்களெல்லாவ |
| हर्म्यप्रासाद- } | ஜனங்கள் வசிக்கும் தி | सम्पूर्णां } | ற்றாலும் நிறைந்ததும் |
| संपन्नां } | ருமாளிகைகளாலும் | हृष्टपुष्ट- } | (குறைவு, நோவு, இர |
| | அரண்மனைகளாலும் | जनाकुलं } | ண்டும் அற்று) வாழ் |
| | நிறைந்துள்ளதும், | | வுற்று மனத்திருப்தி |
| | | | கொண்ட ஜனங்களால் |
| | | | வசிக்கப்பெற்றதும், |

आरामोद्यान- }
सम्पन्नां }
समाजोऽस- }
शालिनीं }

தோப்புக்கும், தோட்
டங்களுக்கும் மலிந்துள்
ளதும்,
பலஜனங்கள் கூட்டங்
கூடி நடைபெறும் தி
ருவிழாக்களால் விள
ங்குவதுமாகிய

राजधानीं
सुखिताः
विचरिष्यन्ति

ராஜதானியில்
கிருதகிருத்தியர்கள்
சஞ்சரிக்கப்போகி
றார்கள்

अपि सत्यप्रतिज्ञेन सार्धं कुशलिना वयम् । निवृत्ते समये ह्यस्मिन्सुखिताः प्रविशेमहि ॥

सत्यप्रतिज्ञेन
अस्मिन्
समये
निवृत्ते

“சொன்னபடியே கா
ரியத்தை செய்துமு
டித்துவிட்டமையால்
இந்த
ஒப்பந்தம்
முடிந்த பின்னர்

वयं हि
कुशलिना सार्धं
सुखिताः
प्रविशेमहि अपि

நாங்களும்
மனத்திருப்திகொண்
டவருடன்கூட
தேகசௌகரியமுற்ற
வர்களாய்
திரும்பியும் வந்து
சேருவோமோ?

परिदेवयमानस्य तस्यैवं सुमहात्मनः । तिष्ठतो राजपुत्रस्य शर्वरी साऽत्यवर्तत ॥ २३ ॥

एवं
परिदेवयमानस्य
तिष्ठतः
सुमहात्मनः

“இங்ஙனம்
புலம்பியழுது
காத்துநின்றகொண்
டிருந்த
மகா புண்ணியாத்மா
வாகும்

राजपुत्रस्य
तस्य
सा शर्वरी
अत्यवर्तत

சக்கிரவர்த்திகுமார
ராகும்
அவருக்கு
அந்த இரவு
கழிந்தது.

प्रभाते विमले सूर्ये कारयित्वा जटा उभौ । अस्मिन्भागीरथीतीरे सुखं संतारितौ मया ॥

विमले
सूर्ये
प्रभाते
जटाः
कारयित्वा

“மாசற்ற
சூரியபகவான்
உதிக்கையில்
ஜடைகளே
செய்வித்து

अस्मिन्
भागीरथीतीरे
मया
उभौ
सुखं
सन्तारितौ

இந்த
கங்கையினக்கரையில்
என்னால்
இருவர்களும்
சௌக்கியமாய்
கடத்தப்பட்டனர்.

जटाधरौ तौ द्रुमचीरवाससौ महाबलौ कुञ्जरयूथपोपमौ ।

वरेषुचापासिधरौ परंतपौ व्यपेक्षमाणौ सह सीतया गतौ

॥ २५ ॥

परन्तपौ
“कुञ्जरयूथपोपमौ
महाबलौ
द्रुमचीरवाससौ
वरेषुचापासिधरौ

“சத்துருக்களை த்தபிக்
கச்செய்யும்
அரசயானைகளே நிகர்த்த
மகா சக்திமான்களும்,
மரவுரியுடுத்தவர்களாய்,
{ சிறந்த அம்பு, வில்,
வாள் இவைகளை த
ரித்தவர்களாய்,

व्यपेक्षमाणौ
तौ
जटाधरौ
सीतया सह
गतौ

ஒருவரையொருவர்
பாதுகாக்கும்
அவ்விருவர்களும்,
ஜடை தரித்தவர்
களாகி,
சீதாப்பிராட்டியுடன்
சென்றார்கள்.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे षडशीतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5622



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3267

सप्तशतीतितमः सर्गः—எண்பத்தேழாவது ஸர்க்கம் ॥ ௨௭ ॥

गुहेन श्रीरामवृत्तान्तकथनम्—குகன் ஸ்ரீராமவிருத்தாந்தத்தைச் சொல்லுவது.

गुहस्य वचनं श्रुत्वा भरतो भृशमप्रियम् । ध्यानं जगाम तत्रैव यत्र तच्छ्रुतमप्रियम् ॥ १ ॥

| | | | |
|----------|----------------------------|---------|------------------|
| भरतः | பரதர் | यत्र | எவ்விடத்தில் |
| गुहस्य | சுகரது | अप्रियं | கஷ்ட செய்தியானது |
| भृशं | மிக | श्रुतं | கேட்கப்பட்டதோ |
| अप्रियं | கேட்க அஸஹ்யமா யிருக்கிற | तत्र | அவ்விடத்தில் |
| वचनं | சொல்லை | तत् एव | அப்பொழுதே |
| श्रुत्वा | கேட்டு, | ध्यानं | கவலையில் |
| | | जगाम | மூழ்கிவிட்டார். |

सुकुमारो महासत्त्वः सिंहस्कन्धो महाभुजः । पुण्डरीकविशालाक्षस्तरुणः प्रियदर्शनः ॥ २ ॥

प्रत्याश्वस्य मुहूर्तं तु कालं परमदुर्म्नाः । पपात सहसा तोत्रैर्हृदि विद्ध इव द्विपः ॥ ३ ॥

| | | | |
|-------------------------|--|---------------|-----------------------------------|
| सुकुमारः | சுகுமாரரும் | प्रियदर्शनः | கண்ணிற்கினியவரு மாகுமவர், |
| महासत्त्वः | உத்தம பிறவிக்குண முடையவரும், | मुहूर्तं कालं | சூழ்ணப்பொழுது |
| सिंहस्कन्धः | சிங்கம்போன்ற தோட் களையுடையவரும், | प्रत्याश्वस्य | ஒருவாறு தைரியங் கொண்டு |
| महाभुजः | நீண்ட கைகளையுடை யவரும், | तु | இருக்கையிலும், |
| पुण्डरीक- विशालाक्षः | தாமரைமலர் போன்ற அகன்ற கண்களையு டையவரும், | परमदुर्म्नाः | மிக்க மனவேதனைப் படுகின்றவராய், |
| तरुणः | யௌவன தசையி லிருப்பவரும், | तोत्रैः | அங்குசங்களால் |
| | | हृदि | ஹிருதயத்தில் |
| | | विद्धः | குத்தப்பட்ட |
| | | द्विपः इव | யானைபோல் |
| | | सहसा | திடீரென |
| | | पपात | விழுந்து விட்டனர். |

तदवस्थं तु भरतं शत्रुघ्नोऽनन्तरस्थितः । परिष्वज्य रुरोदोच्चैर्विसंज्ञः शोककर्षितः ॥ ४ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|---------------|-------------------------------|
| अनन्तरस्थितः | பக்கலிலிருந்த | विसंज्ञः | மெய்மறந்தவராகி |
| शत्रुघ्नः | சத்ருக்னர், | शोककर्षितः तु | சோகத்தில் மூழ்கியவ ராயும், |
| तदवस्थं | அந்த தசையிலிருக் | उच्चैः | உரத்த குரலில் |
| भरतं | பரதரை [கும் | रुरोद | அழுதார். |
| परिष्वज्य | கட்டிக்கொண்டு | | |

ततः सर्वाः समापेतुर्मातरो भरतस्य ताः । उपवासकृशा दीना भर्तुर्व्यसनकर्षिताः ॥ ५ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------------|-----------|--------------------|
| भर्तुः | கணவரது | दीनाः | பரிதாபநிலையிலிருக் |
| व्यसनकर्षिताः | வியோகத்தால் துய ருற்றவர்களாய், | भरतस्य | பரதரது [கும் |
| | சரியான போஜனமில் | ताः मातरः | அந்தத்தாய்மார்கள் |
| उपवासकृशाः | லா ததால் மெலிந்த வர்களாய், | सर्वाः | எல்லோரும் |
| | | ततः | அவ்விடத்தில் |
| | | समापेतुः | வந்துற்றனர். |

ताश्च तं पतितं भूमौ रुदन्त्यः पर्यवारयन् । कौसल्या त्वनुसृत्यै न दुर्मनाः परिष्वजे ॥६॥

தா: ச அ வர்களெல்லோரும்
 भूमौ தரையில்
 पतितं விழுந்துகிடக்கும்
 तं அவரைப்பார்த்து
 रुदन्त्यः அழுதுகொண்டு,
 पर्यवारयन् சூழ்ந்துகொண்டார்
 கள்.

दुर्मना: மனவேதனையுற்ற
 कौसल्या तु கோஸலாதேவியார்
 மாத்திரம்
 एनं இவரை
 अनुसृत्य கிட்டி
 परिष्वजे கட்டியணைத்துக்
 கொண்டனர்.

वत्सला स्वं यथा वत्समुपगूह्य तपस्विनी । परिपप्रच्छ भरतं रुदन्ती शोकलालसा ॥ ७ ॥

शोकलालसा சோகத்தில் முழுகி
 रुदन्ती அழுதுகொண்டிருந்த
 वत्सला புத்திராபிமான
 முடைய
 तपस्विनी புண்யா த்மாவாகு
 மவள்

वत्सं குழந்தையை
 यथा எவ்வண்ணமோ அவ்
 வண்ணமே
 भरतं பரதரை
 उपगूह्य வாரியனைத்து
 परिपप्रच्छ பின்வருமாறு வினாவி
 னாள் :

पुत्रं व्याधिर्न ते कश्चिच्छरीरं परिबाधते । अस्य राजकुलस्याद्य त्वदधीनं हि जीवितम् ॥

புல “குழந்தாய்!
 ते शरीरं உனது உடம்பில்
 व्याधि: நோய்
 परिबाधते न வருத்தாதிருக்கிற
 தென்று
 कश्चित् நான் நினைக்கின்றேன்.

अद्य • இப்பொழுது
 अस्य இந்த
 राजकुलस्य அரசகூலத்தினது
 जीवितं हि வாழ்வெல்லாம்
 त्वदधीनम् உன்னையே சார்ந்திருக்
 கிறது.

त्वां दृष्ट्वा पुत्र जीवामि रामे सभ्रातृके गते । वृत्ते दशरथे राज्ञि नाथ एकस्त्वमद्य नः ॥

ராமே “ராமன்
 सभ्रातृके தம்பியுடன்
 गते வெளிப்பட்டிருக்கை
 दशरथे தசரத [யில்,
 राज्ञि சக்கிரவர்த்தியார்
 वृत्ते இறந்துவிட்டிருக்கை
 अद्य இப்பொழுது [யில்,

त्वं एक: நீயொருவன்தான்
 न: எங்களுக்கு
 नाथ: நாதன்.
 पुत्र குழந்தாய்!
 त्वां உன்னை
 दृष्ट्वा கொண்டுதான்
 जीवामि (நான்) பிழைத்திருக்
 கிறேன்.

कश्चिन्न लक्ष्मणे पुत्रं श्रुतं ते किञ्चिदप्रियम् । पुत्रे वाऽप्येकपुत्रायाः सहभायें वनं गते ॥

புல “குழந்தாய்!
 सहभायें மனைவியுடன்
 वनं गते காட்டிலிருக்கும்
 एकपुत्राया: ஒரே புதல்வனைப்
 பெற்றவளது
 पुत्रे अपि புதல்வனைப்பற்றியோ

लक्ष्मणं वा லக்ஷ்மணனைப்பற்றி
 किञ्चित् ஏதேனுமொரு [யோ
 अप्रियं அனிக்டமானது
 ते உனக்கு
 श्रुतं न कश्चित् காதில் விழவில்லை
 யே? ”

स मुहूर्तात्समाश्वस्य रुदन्नेव महायशाः । कौसल्यां परिसान्त्वयेदं गुहं वचनमब्रवीत् ॥

| | | | |
|------------|---------------------|------------|-----------------|
| महायशाः | பெரும்புகழ்பெற்ற | परिसान्त्व | தேற்றி, |
| सः | அவர் | गुहं | சுகரைப்பார்த்து |
| मुहूर्तात् | ஒரு முகூர்த்தத்தில் | इदं | பின்வரும் |
| समाश्वस्य | தேறி, | वचनं | வார்த்தையை |
| कौसल्यां | கோஸலாதேவியாரை | अब्रवीत् | சொன்னார் : |
| रुदन् एव | அழுதுகொண்டே | | |

भ्राता मे कावसद्रात्रिं क सीता क च लक्ष्मणः ।

अस्वपच्छयने कस्मिन्किं भुत्वा गुहं शंस मे

॥ १२ ॥

| | | | |
|------------|------------------|------------|--------------------|
| गुह | “சுகரே! | अस्वपत् | துயில்கொண்டனர்? |
| रात्रिं | அன்றிரவு | सीता | சீதாப்பிராட்டியார் |
| मे भ्राता | எனது தமையனார் | क | எங்கிருந்தான்? |
| किं भुत्वा | எதை உண்டு | लक्ष्मणः च | லக்ஷ்மணன் தான் |
| क अवसत् | எங்கு வசித்தனர்? | क | எங்கிருந்தான்? |
| कस्मिन् | எந்த | मे | எனக்கு |
| शयने | படுக்கையில் | शंस | சொல்லும்.” |

सोऽब्रवीद्भरतं हृष्टो निषादाधिपतिर्गुहः । यद्विधं प्रतिपेदे च रामे प्रियहितेऽतिथौ ॥ १३ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|---------------------|------------------|
| सः | அந்த | रामे | ஸ்ரீராமரிடத்தில் |
| निषादाधिपतिः | வேடமன்னராகும் | हृष्टः | மனமகிழ்ந்து |
| गुहः | சுகர் | यद्विधं प्रतिपेदे च | எப்படி நடந்தாரோ, |
| प्रियहिते | தொண்டர்களிடத்து | भरतं | பரதருக்கு [அதை |
| | அன்பரும், | अब्रवीत् | பின்வருமாறு |
| अतिथौ | அதிதியுமான | | சொன்னார் : |

अन्नमुच्चावचं भक्षाः फलानि विविधानि च । रामायाभ्यवहारार्थं बहु चोपहृतं मया ॥

| | | | |
|---------------|---------------|----------|--------------------|
| मया | “என்னால் | भक्षाः च | சிற்றுண்டிகளும், |
| रामाय | ஸ்ரீராமருக்கு | विविधानि | பல |
| अभ्यवहारार्थं | உணவுக்காக | फलानि च | பழவகைகளும் |
| उच्चावचं | பலவகை | बहु | ஏராளமாய் |
| अन्नं | போஜனமும், | उपहृतम् | கொண்டு வரப்பட்டது. |

तत्सर्वं समनुज्ञासीद्रामः सत्यपराक्रम । न हि तत्प्रत्यगृह्णात्स क्षत्रधर्ममनुस्मरन् ॥ १५ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|------------------|---------------------|
| सत्यपराक्रमः | “வீண்போகாதபராக் | तत् हि | அதெதையும் |
| सः | அந்த [கிரமமுடைய | प्रत्यगृह्णात् न | ஏற்றுக்கொள்ளவில்லை. |
| रामः | ஸ்ரீராமர், | तत् सर्वं | அதெல்லாவற்றையும் |
| क्षत्रधर्मं | கூத்திரியதர்மத்தை | समनुज्ञासीत् | திருப்பிக்கொடுத்து |
| अनुस्मरन् | பாராட்டுபவராய் | | விட்டனர். |

न ह्यस्माभिः प्रतिग्राह्यं सखे देयं तु सर्वदा । इति तेन वयं राजन्ननुनीता महात्मना ॥

| | | | |
|------------------|----------------------|----------|--------------------------|
| सखे | “தோழரே! | इति | என்று, |
| सर्वदा | எப்பொழுதும் | राजन् | அரசே! |
| अस्माभिः | எங்களால் | महात्मना | மகாத்மாவாகும் |
| देयं | கொடுக்கப்படவேண்டும். | तेन | அவரால் |
| प्रतिग्राह्यं तु | வாங்கிக்கொள்ள | वयं हि | நாங்களும் |
| न | கூடாது.’ [தென்பது | अनुनीताः | வேண்டிக்கொள்ளப் பட்டோம். |

लक्ष्मणेन यदानीतं पीत्वा वारि महायशः । औपवास्यं तदाऽकार्षीद्राघवः सह सीतया॥

| | | | |
|-----------|-----------------|--------------------|--------------------|
| महायशः | “புகழ்பெற்ற | वारि | தீர்த்தம் |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | यत् | எதுவோ அதை |
| तदा | அப்பொழுது | पीत्वा | பருகி |
| लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணரால் | सीतया सह | சீதாப்பிராட்டியோடு |
| आनीतं | கொண்டு வரப்பட்ட | | கூட |
| | | औपवास्यं अकार्षीत् | உபவாசமிருந்தார். |

ततस्तु जलशेषेण लक्ष्मणोऽप्यकरोत्तदा । वाग्यतास्ते त्रयः सन्ध्यामुपासत समाहिताः ॥

| | | | |
|----------|------------------------|-------------|-----------------------|
| ततः | “அப்பொழுது | त्रयः अपि | மூவர்களும், |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர், | वाग्यताः | மௌனிகளாய் |
| जलशेषेण | (அருந்தி) மிகுந்த தீர் | समाहिताः तु | பக்தியுடையவர்களாயும், |
| | த்தத்தைக்கொண்டு | | |
| तदा | அப்பொழுது | सन्ध्यां | பரமாத்மத்தியானந்தை |
| अकरोत् | திருப்திகொண்டனர். | | |
| ते | அந்த | उपासत | அனுஷ்டித்தார்கள். |

सौमित्रिस्तु ततः पश्चादकरोत्स्वास्तरं शुभम् । स्वयमानीय बर्हीषि क्षिप्रं राघवकारणात् ॥

| | | | |
|-------------|---------------|-----------|-------------|
| सौमित्रिः | “லக்ஷ்மணர் | स्वयं तु | தானே |
| ततः पश्चात् | அனந்தரம் | शुभं | அழகிய |
| बर्हीषि | தருப்பைகளை | स्वास्तरं | படுக்கையை |
| आनीय | கொண்டுவந்து | क्षिप्रं | விரைவில் |
| राघवकारणात् | ஸ்ரீராமருக்கு | अकरोत् | இயற்றினார். |

तस्मिन्समाविशद्रामः स्वास्तरे सह सीतया । प्रक्षाल्य च तयोः पादौ व्यपाक्रामत्स लक्ष्मणः ॥

| | | | |
|-----------|----------------|--------------|-----------------------------|
| रामः | “ஸ்ரீராமர் | लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் |
| सीतया सह | ஸீதாப்பிராட்டி | तयोः | அவ்விருவர்களுடைய |
| तस्मिन् | அந்த [யோடுகூட | पादौ च | திருவடிகளையும் |
| स्वास्तरे | படுக்கையில் | प्रक्षाल्य | சுத்தமாய்த் துடைத் துவிட்டு |
| समाविशत् | உட்கார்ந்தனர். | | |
| सः | அந்த | व्यपाक्रामत् | வெளிவந்தார். |

एतत्तदिङ्गुदीमूलमिदमेव च तत्तृणम् । यस्मिन्नामश्च सीता च रात्रिं तां शयितावुभौ ॥

| | | | |
|---------|------------------|-------------|--------------------|
| रामः च | “ஸ்ரீராமரும் | शयितौ | படுத்திருந்தார்களோ |
| सीता च | சீதாப்பிராட்டியு | तत् | அந்த |
| | மாகிய | इङ्गुदीमूलं | இங்குணமரத்தினடி- |
| उभौ | இவ்விருவர்களும், | एतत् च | இதுதான். |
| तां | அந்த | तत् | அந்த |
| रात्रिं | இரவில் | तृणं | தருப்பை |
| यस्मिन् | எந்தவிடத்தில் | इदं एव | இதுதான். |

नियम्य पृष्ठे तु तलाङ्गुलिववाञ्छरैः सुपूर्णाविषुधी परन्तपः ।

महद्वनुः सज्यमुपोह्य लक्ष्मणो निशामतिष्ठत्परितोऽस्य केवलम् ॥ २२ ॥

| | | | |
|----------------|---|----------|-----------------|
| परन्तपः | “பகைவரை த்தபிக்கச் | महत् | பெரிய |
| लक्ष्मणः | லக்சுமணர் [செய்யும் | धनुः | வில்லை |
| शरैः | பாணங்களால் | सज्यं | நானேற்றி |
| सुपूर्णा | நிறைந்த | उपोह्य | வைத்துக்கொண்டு |
| इषुधी | அம்புறுத்தூணிகளோ | अस्य | இவருக்கு |
| पृष्ठे | முதுகில் | परितः | பக்கலில் |
| नियम्य | கட்டிக்கொண்டு | निशां | இரவு |
| तलाङ्गुलिववान् | { கைகளுக்கும் விரல்க ளுக்கும் தோற்சட் டைகளை தரித்தவ னாய் | केवलं तु | முழுமையும் |
| | | अतिष्ठत् | காத்துநின்றார். |

ततस्त्वहं चोत्तमचापबाणवृक्स्थितोऽभवं तत्र स यत्र लक्ष्मणः ।

अतन्द्रिभिर्ज्ञातिभिरात्तकार्मुकैर्महेन्द्रकल्यं परिपालयंस्तदा ॥ २३ ॥

| | | | |
|-----------------|---|---------------|---------------------------|
| ततः | “பிறகு | अतन्द्रिभिः | ஜாக்கிரதையுடைய |
| अहं तु | நானும், | | வர்களுமான |
| उत्तमचापबाणवृक् | சிறந்த வில்லையும் பா ணங்களையும் தரித்த | ज्ञातिभिः | ஞாதிகளோடு |
| सः | அந்த | तदा | அப்பொழுது |
| लक्ष्मणः | லக்சுமணர் | महेन्द्रकल्यं | இந்திரனுக்கொப்பான அவரை |
| यत्र | எங்கோ | परिपालयन् | பாதுகாத்துக் கொண்டு |
| तत्र च | அங்கே | स्थितः अभवम् | தங்கிவிட்டேன்.” |
| आत्तकार्मुकैः | நானேற்றிய வில்லை யுடையவர்களும், | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे सप्ताशीतितमः सर्गः ॥



अष्टाशीतितमः सर्गः—எண்பத்தேட்டாவது ஸர்க்கம் || ௨௨ ||

भरतप्रतिज्ञा—பரதரது பிரதிக்கை.

तच्छ्रुत्वा निपुणं सर्वं भरतः सह मन्त्रिभिः । इङ्गदीमूलमागम्य रामशय्यामवेक्ष्य ताम् ॥

अब्रवीज्जननीः सर्वा इह तेन महात्मना । शर्वरी शयिता भूमाविदमस्य विमर्दितम् ॥ २ ॥

भरतः பரதர்
मन्त्रिभिः सह மந்திரிமார்களுடன்

जननी: सर्वाः त्रयम्भङ्गोऽल्लो
रैर्युग्मं पार्थिव

तत् सर्वं
श्रुत्वा

அதெல்லாவற்றையும்
கேட்டு,

अब्रवीत् பின் வருமாறு சொன்
इह “ இந்த [ஊர் :

इङ्गुदीमूलं இங்குணமரத்தடியை
आगम्य கிட்டி,

भूमौ தரையில்
शर्वरी ஓரிருவு

| | |
|-----------|-----------------|
| தா் | அந்த |
| ராமசய்யர் | ராமர் படுக்கையை |

| | |
|----------|-------------|
| तेन | ஆந்த |
| महात्मना | மகாத்மாவால் |

निपुणं சிரத்தையுடன்
 अवैक्ष्य கவனித்துப் பார்த்து

शयिता படுக்கப்பட்டது.
अस्य இவரது

அவெஃய கவனித்துப் பார்த்து

விமரிதம் இஃதம் சுவடு இது.

महाभागकुलीनेन महाभागेन धीमता । जातो दशरथेनोर्व्या न रामः स्वप्नुर्महति ॥ ३ ॥

महाभागकुलीनेन { “மகா பிரசித்திபெற்ற
முன்னோர்களுையுடை
யவரும்;

दशरथेन तस्य तारिनिर्णयः
जातः तेषां

महाभागेन மகாபிரசித்திபெற்ற
 வரும்,

ராம: ஸ்ரீ ராமர்,
உவ்யா தரையில்

धीमता **ஞானவாணுமாகிய**

स्वप्तुं
 अर्हति न

படுக்க
 தக்கவரல்ல.

अजिनोत्तरसंस्तीर्णे वरास्तरणसञ्चये । शयित्वा पुरुषव्याघ्रः कथं शेते महीतले ॥ ४ ॥

प्रासादाग्रविमानेषु वलभीषु च सर्वदा । हैमराजतभौमेषु वरास्तरणशालिषु ॥ ५ ॥

पुष्पसञ्चयचित्रेषु चन्दनागरुगन्धिषु । पाण्डुराभ्रप्रकाशेषु शुकसङ्घस्तेषु च ॥ ६ ॥

प्रासादवरवर्येषु गीतवत्सु सुगन्धिषु । उषित्वा मेरुकल्पेषु कृतकाञ्चनभित्तिषु ॥ ७ ॥

गीतवादित्रनिर्घोषैर्वराभरणनिस्वनैः । मृदङ्गवरशब्दैश्च सततं प्रतिबोधितः ॥ ८ ॥

वन्दिभिर्वन्दितः काले बहुभिः सूतमागधैः । गाथाभिरनुरूपाभिः स्तुतिभिश्च परन्तपः ॥

காலே “சூரியோதயத்தில்

स्तुतिभिः च துதிகளா லும்

वन्दिभिः வந்திகளாலும்,

वन्दितः சூதிக்கப்பட்டவரும்,

बहुभिः अणेन क

परन्तपः வைரிகளே த் தபிக்கச்

सूतमागधैः षष्ठ्युत्तरांशे, माक

செய்பவரும்,

अनुरूपाभिः ஏற்ற [தார்களாலும்,

புருஷ்வாத்தமருமா கு

நாநாநா: பாட்டுகளா லும்

மவர்

| | | | |
|--------------------------------|--|--|--|
| गीतवादि- } निर्घोषैः } | பாட்டு, வாத்தியம் இவைகளின் கோஷ ங்களாலும், | चन्दनाग्र- } गन्धिषु } | சந்தனம், அகில், இ வைகளின் வாசனைக ளையுடையனவாய், |
| वराभरणनिस्वनैः | சிறந்த ஆபரணங்க ளின் ஒலிகளாலும், | पाण्डुराभ्र- } प्रकाशेषु } | வெண்மேகம்போல் பி ரகாசிக்கிறவைகளும், |
| मृदङ्गवरशब्दैः च | மிருதங்கத்தின் இனிய கோஷங்களாலும், | शुकसङ्घस्तेषु च | கிளிக்கூட்டங்களால் ஒலிக்கப்பெற்றனவும், |
| सततं प्रतिबोधितः | எப்பொழுதும் துயிலெழுப்பப்பட்ட வரும், | गीतवत्सु | பாடல்களால் விளங்க ப்பெற்றனவும், |
| प्रासादाग्र- } विमानेषु च } | உயர்ந்த கோபுரங்க ளுற்ற திருமாளிகை களிலும், | सुगन्धिषु | நல்வாசனையுடைய னவும், |
| वलभीषु | மேல் மெத்தை களிலும், | मेरुकल्पेषु कृतकाञ्चन- } भित्तिषु } | மேருமலைபை நிகர்த்த பொன்னாலியற்றப்பட்ட ட சுவர்களையுடைய னவுமான |
| हैमराजत- } भौमेषु } | தங்கத்தினாலும், வெ ள்ளியினாலும் இய ற்றப்பட்ட ஆரண் மனைகளிலும், | प्रासादवरवर्षेषु | பெரிய சிறந்த திருமா ளிகைகளில் |
| वरास्तरणशालिषु | { சிறந்த மேல்விரிப்பு ளால் விளங்குகின்ற னவும், | उषिःवा अजिनोत्तरसंस्तीर्णं | வசித்துவிட்டு, சிறந்த மான்தோல் விரிக்கப்பெற்ற |
| पुष्पसञ्चय- } चितेषु } | { பல புஷ்பக்கோவைக ளால் விளங்குகின்ற னவும், | वरास्तरणसञ्चये सर्वदा शयित्वा कथं महीतले शेते | சிறந்த படுக்கைகளில் எக்காலத்திலும் படுத்துவிட்டு எங்குனம் தரையில் படுக்கின்றார் ? |

अश्रद्धेयमिदं लोके न सत्यं प्रतिभाति मे। मुह्यते खलु मे भावः स्वप्नोऽयमिति मे मतिः॥

| | | | |
|-------------|----------------------|-------------|----------------------|
| लोके | “உலகில் | भावः | மனநிலமையானது |
| इदं | இது | मुह्यते | தடுமாறிக்கிடக்கிறது. |
| अश्रद्धेयं | நம்பக்கூடியதாயில்லை. | अयं | இது |
| मे | எனக்கு | स्वप्नः खलु | ஸ்வப்னமாகத்தானி |
| सत्यं | உண்மையானதாக | इति | என [ருக்கும், |
| प्रतिभाति न | தோற்றவில்லை. | मे | எனது |
| मे | எனது | मतिः | கொள்கை. |

न नूनं दैवतं किञ्चित्कालेन बलवत्तरम्। यत्र दाशरथी रामो भूमावेव शयीत सः॥११॥

| | | | |
|---------|--|------------|--------------------|
| दाशरथिः | { “தசரதசக்கிரவர்த்தி யாரின் திருக்குமார ராகும் | भूमौ | தரையில் |
| सः | அந்த | शयीत नूनं | படுக்கவேண்டுமெனில் |
| रामः एव | ஸ்ரீராமரே | कालेन | விதியைக்காட்டிலும் |
| यत्र | எக்காலத்திலாவது | दैवतं | தெய்வமானது |
| | | किञ्चित् | கொஞ்சமேனும் |
| | | बलवत्तरं न | வலியுள்ளதன்று. |

विदेहराजस्य सुता सीता च प्रियदर्शना । दयिता शयिता भूमौ स्नुषा दशरथस्य च ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|---------------|--|
| विदेहराजस्य | “ விதேகமன் னா து | பிரியர்ஷ்னா ச | { பாவத்தைப்போக்கும் காக்கியுடையவளுமா கிய |
| दयिता | அத்தியந்த பிரிய முள்ள | सीता च | |
| सुता | திருக்குமாரியும், | शयिता | சீதாப்பிராட்டியாரும் |
| दशरथस्य | தசரதசக்கிரவர்த்தி யாரது | भूमौ | தரையில் |

इयं शय्या मम भ्रातुरिदं हि परिवर्तितम् । स्थण्डिले कठिने सर्वं गालैर्विमृदितं तृणम् ॥

| | | | |
|----------|--------------|-------------|-------------------|
| इयं | “ இது | गालैः | அவயவங்களால் |
| मम | எனது | कठिने | கடினமான |
| भ्रातुः | தமையனா து | स्थण्डिले | தரையில் |
| शय्या | படுக்கை. | विमृदितं | அழுக்கப்பட்டு |
| इदं तृणं | இந்த தருப்பை | परिवर्तितम् | படிந்திருக்கிறது. |
| सर्वं हि | எல்லாமும் | | |

मन्ये साभरणा सुप्ता सीताऽस्मिञ्छयने शुभे । तत्र तत्र हि दृश्यन्ते सक्ताः कनकविन्दवः॥

| | | | |
|---------|----------------------|------------|--------------|
| सीता | “ சீதாப்பிராட்டியார் | मन्ये | எண்ணுகிறேன். |
| अस्मिन् | இந்த | हि | ஏனெனில், |
| शुभे | புண்ணிய | तत्र तत्र | அங்கங்கு |
| शयने | படுக்கையில் | कनकविन्दवः | ஆபரணங்களின் |
| साभरणा | ஆபரணங்களோடு | | தடங்கள் |

उत्तरीयमिहासक्तं सुव्यक्तं सीतया तया । तथा ह्येते प्रकाशन्ते सक्ताः कौशेयतन्तवः ॥

| | | | |
|------------------|---------------------|-------------|------------------|
| तया | “ அந்த | एते | இந்த |
| सीतया | சீதாப்பிராட்டியால் | कौशेयतन्तवः | வெண்பட்டு வஸ்திர |
| इह | இவ்விடத்தில் | | இழைகள் |
| उत्तरीयं | மேலாக்கு | तथा | அவ்வண்ணமே |
| सुव्यक्तं आसक्तं | நன்கு பற்றப்பட்டது. | सक्ताः | படிந்தவைகளாய் |
| हि | ஏனெனில் | प्रकाशन्ते | காணப்படுகின்றன. |

मन्ये भर्तुः सुखा शय्या येन बाला तपस्विनी । सुकुमारी सती दुःखं न विजानाति मैथिली॥

| | | | |
|--------|-----------------|------------|--------------------|
| भर्तुः | “ கணவனா து | सुकुमारी | மிருதுவான திருமே |
| शय्या | படுக்கை | | வியுடையவளுமான |
| सुखा | மனத்திருப்தியை | मैथिली | சீதாப்பிராட்டியார் |
| | விளைவிக்கிறதாய் | तपस्विनी | தவக்கோலம்பூண்ட |
| मन्ये | எண்ணுகிறேன். | सती | உத்தமியாய் |
| येन | அக்காரணத்தால் | दुःखं | கஷ்டமாய்க்கொண் |
| बाला | பெளவனதையி | विजानाति न | டாளில்லை. |
| | விருப்பவளும், | | |

हा हतोऽस्मि नृशंसोऽहं यत्सभार्यः कृते मम । ईदृशीं राघवः शय्यामधिशेते ह्यनाथवत् ॥

हा “அந்தோ!
अहं நான்
नृशंसः அற்புனாய்
हतः अस्मि அழிந்தேன்.
यत् ஏனென்றால்
मम कृते हि என்பொருட்டன்றோ
राघवः ஸ்ரீராமர்

सभार्यः தர்மபத்னியுடன்
अनाथवत् அனாதர்போல
ईदृशीं இப்படிப்பட்ட
शय्यां படுக்கையில்
अधिशेते படுத்துக்கொண்டி-
ருக்கிறார்.

सार्वभौमकुले जातः सर्वलोकसुखावहः । सर्वलोकप्रियस्त्यक्त्वा राज्यं सुखमनुत्तमम् ॥
कथमिन्दीवरश्यामो रक्ताक्षः प्रियदर्शनः । सुखभागी न दुःखार्हः शयितो भुवि राघवः ॥

सार्वभौमकुले “சக்கிரவர்த்தியார்
வம்சத்தில்

जातः பிறந்துவரும்
सर्वलोक- } எல்லா உலகத்தார்க்க
सुखावहः } ஒருக்கும் நன்மைவி
ளைவிப்பவரும்,

सर्वलोकप्रियः { எல்லா உலகத்தாருக்
கும் அபிராமராய்
விளங்குபவரும்,
इन्दीवरश्यामः நீலோத்பலச்யாமள

रक्ताक्षः { செவ்வரியோடிய தி
ருக்கண்களையுடை
யவரும்,

प्रियदर्शनः திருமேனியழகு
வாய்ந்தவரும்,

न दुःखार्हः துயரத்தையே
காணாது

सुखभागी சுகத்திலேயே இருந்த
राघवः ஸ்ரீராமர், [வருமாகிய

अनुत्तमं சிறந்த
राज्यं ராஜ்யத்தையும்,

सुखं சுகத்தையும்
त्यक्त्वा விட்டு

कथं எங்ஙனம்
भुवि தரையில்

शयितः படுத்தார்?

धन्यः खलु महाभागो लक्ष्मणः शुभलक्षणः । भ्रातरं विषमे काले यो राममनुवर्तते ॥

विषमे काले “கஷ்டகாலத்தில்
यः எவன்
भ्रातरं தமையனாகும்
रामं ஸ்ரீராமருக்கு
अनुवर्तते { பக்கலிலிருந்து திருத்
தொண்டு செய்கிற
னோ அந்த

लक्ष्मणः खलु லக்ஷ்மணன் தான்
महाभागः புண்யாத்மா.

शुभलक्षणः யாவராலுங்கொண்டா
டப்பட்ட குணசாலி.

धन्यः கொடுத்துவைத்
தவன்.

सिद्धार्था खलु वैदेही पतिं याऽनु गता वनम् । वयं संशयिताः सर्वे हीनास्तेन महात्मना ॥

यां “எவள்
पतिं கணவனை
अनु தொடர்ந்து
वनं காட்டிற்கு
गता சென்றனளோ அந்த
वैदेही खलु சீதாப்பிராட்டியார்.
தான்

सिद्धार्था பாக்கியசாலி.
तेन அந்த
महात्मना மஹாத்மாவினால்
हीना: கைவிடப்பட்ட
वयं நாம்
सर्वे எல்லோரும்
संशयिता: அல்லாடுகின்றோம்.

अकर्णधारा पृथिवी शून्येव प्रतिभाति मे । गते दशरथे स्वर्गं रामे चारण्यमाश्रिते ॥२२॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------|---------------|
| दशरथे | “தசரதசக்கிரவர்த்தி | पृथिवी | உலகமானது |
| स्वर्गं | சுவர்க்கத்தை [யார் | अकर्णधारा | மா லுமியற்றது |
| गते | அடைந்துவிடவும், | इव | போன்றதாய் |
| रामे | ஸ்ரீராமர் | शून्या | திக்கற்றதாய் |
| अरण्यं | காட்டை | मे | எனக்கு |
| आश्रिते च | அடைந்துவிடவும், | प्रतिभाति | தோற்றுகிறது. |

न च प्रार्थयते कश्चिन्मनसाऽपि वसुंधराम् । वनेऽपि वसतस्तस्य बाहुवीर्याभिरक्षिताम् ॥

| | | | |
|----------|-------------------|----------------------|---------------------|
| वने | “காட்டில் | बाहुवीर्याभिरक्षितां | புஜபலத்தால் ரகழிக் |
| वसतः अपि | வவலித்துக்கொண்டி- | वसुंधरां | பூமியை [கப்படும் |
| | ருக்கையிலும், | कश्चित् च | ஒருவனும் |
| | | मनसा अपि | மனத்தாலுங்கூட |
| तस्य | அவரது | प्रार्थयते न | ஆசைப்படுகிறானில்லை. |

शून्यसंवरणारक्षामयन्त्रितहयद्विषाम् । अपावृतपुरद्वारां राजधानीमरक्षिताम् ॥ २४ ॥
अप्रहृष्टबलां न्यूनां विषमस्थामनावृताम् । शत्रवो नाभिमन्यन्ते भक्षान् विषकृतानिव ॥

| | | | |
|-----------------------------|---|---------------|---------------------------------|
| शून्यसंवरणारक्षां | “கோட்டைக்காவலற் | न्यूनां | அழிந்ததாய் |
| | றதும், | अनावृतां | அகழற்றதும், |
| अयन्त्रित- } हयद्विषां } | கட்டப்படாத யானை குதிரைகளையுடைய தும், | विषमस्थां | ஆபத்திலிருப்பது மாகிய |
| अपावृतपुरद्वारां | { திறந்துகிடக்கும் கோ ட்டைவாயிலையுடை யதும், | राजधानीं | ராஜதானியை |
| अरक्षितां | காக்கப்படாததும், | शत्रवः | சத்ருக்கள் |
| अप्रहृष्टबलां | சந்தோஷமற்ற சேனை யையுடையதும், | विषकृतान् | விஷக்கலந்த |
| | | भक्षान् इव | சிற்றுண்டிகளைப் போல |
| | | अभिमन्यन्ते न | ஆசைப்படா திருக் கின்றார்கள். |

अद्यप्रभृति भूमौ तु शयिष्येऽहं तृणेषु वा । फलमूलाशनो नित्यं जटाचीराणि धारयन् ॥

| | | | |
|-------------|---|-----------|----------------------------|
| अद्यप्रभृति | “இதுமுதல் | जटाचीराणि | சடையையும் மரவரி களையும் |
| अहं | நான் | धारयन् | பூண்டவனாய், |
| नित्यं | எப்பொழுதும் | तृणेषु वा | தருப்பைகளிலேயே |
| फलमूलाशनः | பழங்களையும் கிழங்கு களையும் புகிப்பவனாய் | भूमौ तु | தரையிலேயே |
| | | शयिष्ये | படுப்பேன். |

तस्यार्थमुत्तरं कालं निवत्स्यामि सुखं वने । तं प्रतिश्रवमामुच्य नास्य मिथ्या भविष्यति॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-------------|--------------|
| तं | “ அந்த | सुखं | மனத்திருப்தி |
| प्रतिश्रवं | உடன்பாட்டை | | கொண்டு |
| आमुच्य | நான் ஏற்றுக்கொண்டு | निवत्स्यामि | வசிப்பேன். |
| तस्यार्थं | அவருக்காக | अस्य | இதற்கு |
| उत्तरं कालं | வருங்காலத்தை | मिथ्या | மாறுபாடு |
| वने | காட்டில் | भविष्यति न | கிடையாது. |

वसन्तं भ्रातुरर्थाय शत्रुघ्नो माऽनुवत्स्यति । लक्ष्मणेन सह त्वार्यो ह्ययोध्यां पालयिष्यति॥

| | | | |
|----------------|------------------|--------------|-----------------|
| शत्रुघ्नः | “ சத்ருக்கன் | आर्यः तु | பெரியவரோ வெனில் |
| भ्रातुः अर्थाय | தமையனருக்காக | लक्ष्मणेन सह | லக்ஷ்மணனோடுகூட |
| वसन्तं | வசிக்கும் | अयोध्यां हि | அயோத்தியையே |
| मा | என்னை | पालयिष्यति | பரிபாலிப்பார். |
| अनुवत्स्यति | பற்றி வசிப்பான். | | |

अभिषेक्ष्यन्ति काकुत्स्थमयोध्यायां द्विजोत्तमाः । अपि मे देवताः कुर्युरिमं सत्यं मनोरथम्॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-------------|---------------|
| द्विजोत्तमाः | “ அந்தணைத்தமர்கள் | इमं | இந்த |
| अयोध्यायां | அயோத்தியையில் | मनोरथं | மனோரதத்தை |
| काकुत्स्थं | கூராமரை | सत्यं | நிறைவேறியதாக |
| अभिषेक्ष्यन्ति | அபிஷேகம்செய்விப் | देवताः | தேவதைகள் |
| मे | எனது [பார்கள். | अपि कुर्युः | செய்வார்களா ? |

प्रसाद्यमानः शिरसा मया स्वयं बहुप्रकारं यदि न प्रपत्स्यते ।

ततोऽनुवत्स्यामि चिराय राघवं वने वसन्नर्हति मामुपेक्षितुम् ॥ ३० ॥

| | | | |
|-------------------|-----------------------------|--------------|------------------|
| मया | “ என்னால் | वने | காட்டில் |
| शिरसा | முடிதாழ்த்தி, | वसन् | வசித்துக்கொண்டு, |
| स्वयं | ஸ்வேச்சையாய், | राघवं | கூராமரை |
| बहुप्रकारं | பலவகையிலும் | चिराय | எக்காலமும் |
| प्रसाद्यमानः | வேண்டிக்கொள்ளப் படுமவர், | अनुवत्स्यामि | அண்டியிருப்பேன். |
| प्रपत्स्यते न यदि | ஒத்துக்கொள்ளா | मां | என்னை |
| ततः | அதிலிருந்து [விடில், | उपेक्षितुं | மறுக்க |
| | | अर्हति न | மாட்டார்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे अष्टाशीतितमः सर्गः ॥



एकोनवतितमः सर्गः—எண்பத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம் || ௧௨ ||

गङ्गातरणम्—கங்கையைத் தாண்டுவது.

व्युष्य रात्रिं तु तत्रैव गङ्गाकूले स राघवः । भरतः काल्यमुत्थाय शत्रुघ्नमिदमब्रवीत् ॥१॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------|--------------------|
| सः | அந்த | व्युष्य | கழித்து, |
| राघवः | ரகுலம்சத்திலுதித்த | काल्यं तु | அதிகாலையிலேயே |
| भरतः | பரதர் | उत्थाय | எழுந்து |
| गङ्गाकूले | கங்கைக்கரையில் | शत्रुघ्नं | சத்துருக்கரைப்பார் |
| तल एव | அதேயிடத்தில் | इदं | பின்வருமாறு [த்து, |
| रात्रिं | இரவை | अब्रवीत् | சொன்னார் : |

शत्रुघ्नोत्तिष्ठ किं शेषे निषादाधिपतिं गुहम् । शीघ्रमानय भद्रं ते तारयिष्यति वाहिनीम् ॥

| | | | |
|----------|---------------------------|--------------|---------------------|
| शत्रुघ्न | “சத்துருக்க ! | निषादाधिपतिं | வேடர்மன்னனாகும் |
| उत्तिष्ठ | எழுந்திரு. | गुहं | குகரை |
| ते | உனக்கு | शीघ्रं | சீக்கிரமாக |
| भद्रं | நற்பெயர் உண்டாகட் | आनय | அழைத்துவா. |
| किं | ஏன் [டும். | वाहिनीं | சேனையை |
| शेषे | தூங்கிக்கொண்டிருக்கின்றன? | तारयिष्यति | அக்கரை சேர்ப்பார்.” |

जागर्मि नाहं स्वपिमि तथैवार्यं विचिन्तयन् । इत्येवमब्रवीद्भ्रात्रा शत्रुघ्नोऽपि प्रचोदितः ॥

| | | | |
|-----------|------------------|---------------|----------------------|
| आत्मा | தமையனரால் | अहं अपि | “நானும் |
| तथा एव | மேற்கண்டவாறு | स्वपिमि न | தூங்கவில்லை. |
| प्रचोदितः | ஏவப்பட்ட | आर्यं | பெரியவரை |
| शत्रुघ्नः | சத்துருக்கர் | विचिन्तयन् एव | தியானித்துக்கொண்டே |
| इति | பின்வருமாறு | | |
| अब्रवीत् | பதில் சொன்னார் : | जागर्मि | விழித்திருக்கிறேன்.” |

इति संवदतोरेवमन्योन्यं नरसिंहयोः । आगम्य प्राञ्जलिः काले गुहो भरतमब्रवीत् ॥ ४ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|------------|------------------|
| इति एवं | இங்ஙனமாய் | काले | சரியான காலத்தில் |
| अन्योन्यं | ஒருவரோடொருவர் | आगम्य | அவ்விடம் வந்து |
| नरसिंहयोः | புருஷோத்தமர்களா | भरतं | பரதரைப்பார்த்து |
| | குமிருவர்களும், | प्राञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராகி |
| संवदतोः | சம்பாஷித்துக்கொண் | अब्रवीत् | பின்வருமாறு |
| गुहः | குகர் [டிருக்கையில் | | மொழிந்தார் : |

कश्चित्सुखं नदीतीरेऽवात्सीः काकुत्स्थ सर्वरीम् । कश्चित्ते सह सैन्यस्य तव सर्वपनामयम् ॥

| | | | |
|-----------|--------------|------------|--------------------|
| काकुत्स्थ | “பரதரே ! | कश्चित् | நான் எண்ணுகிறேன். |
| नदीतीरे | நதிக்கரையில் | सहसैन्यस्य | சைனியத்துடன் கூட |
| शर्वरीं | இரவை | तव | தேவரீருக்கு |
| अवात्सीः | கழித்தீர். | सर्वं | எல்லாவிதத்திலும் |
| ते | தேவரீர் | अनामयं | குறைவில்லையென |
| सुखं | ஸௌக்கியமென | कश्चित् | நான் எண்ணுகிறேன்.” |

| | |
|----------|------------|
| ராமஸ்ய | ராமருக்கு |
| அனுவச: | ஈடுபட்ட |
| भरतः अपि | பரதரும் |
| इदं | பின்வரும் |
| वाक्यं | சொல்லை |
| अब्रवीत् | சொன்னார் : |

| | |
|-------------|---------------------|
| தாசா: | செம்படவர்கள் |
| வஹீஸி: | பல |
| நௌசி: | மரக்கலங்களைக்கொ |
| து | இப்பொழுதே [ண்டு |
| ந: | எங்களை |
| கஜ்ஜ் | கங்கையை |
| சந்தாரயந்து | தாண்டுவிக்கட்டும்.” |

| | |
|---------------|-------------------|
| प्रतिप्रविश्य | திரும்பிச்சென்று, |
| तं | அந்த |
| ज्ञातिजनं | ஞாதிஜனங்களைப் |
| | பார்த்து |
| अब्रवीत् | பின்வருமாறு ஆக்ஞா |
| | பித்தார் : |

| | |
|-------------|---------------------|
| வாहिनी | சேனையை |
| तारयिष्याम | கடத்துவிப்போம். |
| हि | அதனால் |
| वः | உங்களுக்கு |
| सदा | சாச்வதமாய் |
| भद्रं अस्तु | நற்பேறு விளங்கும்". |

| | |
|-----------|-------------------------------|
| வரிதா: | காலதாமதம் செய்யா தவர்களாய் |
| சமन्त: | எல்லாப்பக்கங்களிலு |
| பञ் சதானி | ஐந்நாறு [மிருந்து |
| நாவா | மரக்கலங்களை |
| சமானியு: | கொண்டுவந்தார்கள். |

अन्याः स्वस्तिकविज्ञेया महाघण्टाधरा वराः । शोभमानाः पताकिन्यो युक्तवाहाः सुसंहताः॥

अन्याः இன்னும் பல
மहाघண்டாधரா: பெரிய மணிகள் கட்ட
ப்பட்டவைகளும்,
வரா: சிறந்த
யுக்தவாஹா: ஏற்ற படகோட்டிகளை
யுடையவைகளும்
பதாकिन्या: கொடியேற்றப்பட்டிரு

शोभमानाः அழகுவாய்ந்து விளங்
குபவைகளும்,
स्वस्तिकविज्ञेया: { 'ஸ்வஸ்திக'மெனப்
பெயர்ப்பூண்டவைக
ளும்
सुसंहता: கொண்டுவந்து
சேர்க்கப்பட்டன.

ततः स्वस्तिकविज्ञेयां पाण्डुकम्बलसंवृताम् । सनन्दिघोषां कल्याणीं गुहो नावमुपाहरत् ॥

गुहः குகர்,
स्वस्तिकविज्ञेयां 'ஸ்வஸ்திக'மெனப்
பெயர்ப்பூண்ட
कल्याणीं அழகிய
नावं மாக்கலத்தை

पाण्डुकम्बलसंवृतां வெண்கம்பளம்
விரிக்கப்பட்டதாய்
सनन्दिघोषां { மேளம் முதலிய வாத்
தியகோஷங்களுடன்
கூடியதாய்
ततः அப்பொழுது
उपाहरत् கொண்டுவந்தார்.

तामारोह भरतः शत्रुघ्नश्च महाबलः ॥ १३ ॥

महाबलः அதிகாரமந்தியசாஸி
भरतः பரதர் [யாகும்
तां அதில்

आरुह ஏறிக்கொண்டார்.
शत्रुघ्नः च சத்துருக்களும் அங்ங
னமே செய்தார்.

कौसल्या च सुमित्रा च याश्चान्या राजयोषितः । पुरोहितश्च तत्पूर्वं गुरवो ब्राह्मणाश्च ये ॥

अनन्तरं राजदारास्तथैव शकटापणाः ॥ १४ ॥

तत् அப்பொழுது
पूर्वं முதலில்
कौसल्या च கோஸலாதேவியாரும்,
सुमित्रा च சுமித்திராதேவியா
अनन्तरं அதன்மேல் [ரும்,
अन्या: மற்றுமுள்ள
राजदारा: சக்கிரவர்த்தியனைவி
மார்களும்,
राजयोषितः ராஜஸ்த்ரீகள்

या: च எவர்களோ அவர்களும்,
पुरोहितः च புரோகிதராகிற வஸி
ஷ்டபகவானும்,
गुरव: பூஜயர்களுக்கிய
ब्राह्मणा: பிராம்மணர்கள்
ये च எவர்களோ அவர்களும்,
शकटापणा: வண்டுவண்டியாய் க
டைப்பொருள்களும்,
तथा एव அங்ஙனமே ஏறின.

आवासमादीपयतां तीर्थं चाप्यवगाहताम् । भाण्डानि चाददानानां घोषस्त्रिदिवस्पृशत् ॥

आवासं தங்கியிருந்தவிடத்தில்
आदीपयतां { அசுத்தகூளங்களை
தீயிட்டுக்கொளுத்தி
யவர்களுடையவும்,
तीर्थं ஜலத்தில்
अवगाहतां च ஸ்நானம்செய்பவர்க
ளுடையவும்,

भाण्डानि சாமான்களை
आददानानां च எடுத்துக்கொண்டு
பேசிறவர்களுடை
घोष: சத்தமானது [யவும்
त्रिदिवे अपि ஆகாயம்வரையில்
अस्पृशत् எட்டிற்று.

पताकिन्यस्तु ता नावः स्वयं दाशैरधिष्ठिताः । वहन्त्यो जनमारुढं तदा संपेतुराशुगाः ॥

दाशैः செம்படவர்களால்
 स्वयं தானே
 अधिष्ठिताः செலுத்தப்பட்டவைகளும்,
 पताकिन्यः த்வஜங்கள் கட்டப் பெற்றவைகளும்,
 आशुगाः तु விரைவில் செல்ல வல்லவைகளுமான

ताः அந்த
 नावः மரக்கலங்கள்,
 अरुढं ஏறிய
 जनं ஜனங்களை
 वहन्त्यः சுமந்துகொண்டு,
 तदा அப்பொழுது
 संपेतुः சென்றன.

नारीणामभिपूर्णास्तु काश्चिकाश्चित्तु वाजिनाम् । काश्चित्तत्र वहन्ति स्म यानयुग्यं महाधनम् ॥

तत्र அதில்
 काश्चित् சில
 नारीणां तु ஸ்திரீகளாலும்
 काश्चित् சில
 वाजिनां तु குதிரைகளாலும்

अभिपूर्णाः நிறைந்தவைகளாயும்,
 काश्चित् சில
 महाधनं மிக்கபொருள்களையும்
 यानयुग्यं ரதம், வாகனமிவைகளின் வகைகளையும்,
 वहन्ति स्म சுமந்துசென்றன.

ताः स्म गत्वा परं तीरमवरोप्य च तं जनम् । निवृत्ताः काण्डचित्राणि क्रियन्ते दाशबन्धुभिः ॥

ताः அவைகள்
 परं तीरं அக்கரையை
 गत्वा அடைந்து,
 तं அந்த
 जनं ஜனங்களை
 अवरोप्य இறக்கி,

निवृत्ताः च திரும்பியவைகளாய்
 दाशबन्धुभिः செம்படவ அன்பர்களால்
 काण्डचित्राणि { துடுப்புகளைப் பலவாறாய்ச்சுழற்றும் வேடிக்கைகளை
 क्रियन्ते स्म செயவிக்கப்பட்டன.

सवैजयन्तास्तु गजा गजारोहैः प्रचोदिताः । तरन्तः स्म प्रकाशन्ते सध्वजा इव पर्वताः ॥

गजाः யானைகள்
 सवैजयन्ताः அம்பாரிகளுடன்கூடியவைகளாய்,
 गजारोहैः யானைப்பார்களால்
 प्रचोदिताः செலுத்தப்பட்டவைகளாய்,

तरन्तः तु நீந்துபவைகளாய்,
 सध्वजाः கொடிகட்டின
 पर्वताः इव மலைகள்போல்
 प्रकाशन्ते स्म விளங்கின.

नावश्चारुहुस्वन्ये प्लवैस्तेरुस्तथा परे । अन्ये कुम्भघटैस्तेरुन्ये तेरुश्च बाहुभिः ॥ २० ॥

अन्ये तु சிலர்
 नावः மரக்கலங்களில்
 आरुहुः ஏறிக்கொண்டார்கள்.
 च परे வேறு சிலர்
 प्लवैः தெப்பங்களிலேறிக்கொண்டு
 तेरुः கடந்தார்கள்.

तथा अन्ये. வேறுசிலர்
 कुम्भघटैः சிறு வாய்களையுடைய பாணைகளிலேறிக்கொ
 तेरुः கடந்தார்கள். [ண்டு
 च अन्ये வேறுசிலர்
 बाहुभिः கைகளால்
 तेरुः நீந்திச்சென்றார்கள்.

सा पुण्या ध्वजिनी गङ्गां दाशैः संतारिता स्वयम् । मैत्रे मुहूर्ते प्रययौ प्रयागवनमुत्तमम् ॥

| | | | |
|----------|--|----------------|--------------------|
| दाशैः | செம்படவர்களால் | गङ्गां | கங்கையை |
| स्वयं | தானே | सन्तारिता | கடத்துவிக்கப்பெற்ற |
| मैत्रे | { 'மைத்ர' மெனும் (சூர் யோதயத்திற்கு மேல் 4 நாழிகை முதல் 6 நாழிகை வரை) | सा | அந்த |
| मुहूर्ते | முகூர்த்தத்தில் | पुण्या ध्वजिनी | நல்ல சேனையானது |
| | | उत्तमं | சிறந்த |
| | | प्रयागवनं | பிரயாகமென்ற வனத் |
| | | प्रययौ | அடைந்தது. [தை |

आश्वासयित्वा च चमूं महात्मा निवेशयित्वा च यथोपजोषम् ।

द्रष्टुं भरद्वाजमृषिप्रवर्यमृत्विगृतः सन्भरतः प्रतस्थे

॥ २२ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|---------------|--|
| महात्मा | மகாத்மாவாகும் | ऋत्विगृतः सन् | { ருத்விக்குகளால் தொ டர்ந்துவரப்பெற்ற வராகி, |
| भरतः | பரதர் | भरद्वाजं | பரத்வாஜரெனும் |
| चमूं | சைனியத்தை | ऋषिप्रवर्यं | முனிவர்பெருமானை |
| आश्वासयित्वा | உற்சாகப்படுத்திவிட்டு | यथोपजोषं च | முன்னமேயே உத்தே சங்கொண்டிருந்தபடி |
| निवेशयित्वा | தங்கியிருக்கச்செய்து விட்டு, | द्रष्टुं | தரிசிக்க |
| च | அதன்பின்னர் | प्रतस्थे | புறப்பட்டனர். |

स ब्राह्मणस्याश्रममभ्युपेत्य महात्मनो देवपुरोहितस्य ।

ददर्श रम्योटजवृक्षण्डं महद्वनं प्रीतिकरं सुरम्यम्

॥ २३ ॥

| | | | |
|---------------|--|-------------------------|---|
| सः | அவர் | आश्रमं | ஆசிரமத்தை |
| ब्राह्मणस्य | தத்வப்பொருளையறிந் தவரும், | अभ्युपेत्य | நோக்கிச்சென்று, |
| देवपुरोहितस्य | { தேவர்களால் முதன் மையாகப்போற்றப் பட்டவரும், | रम्योटज- वृक्षण्डं } | அழகிய ஆசிரமங்களை யும் மரவரிசைகளையு முடையதும், |
| महात्मनः | மகாத்மாவுமாகுவ ரது | सुरम्यं | மிக அழகாயிருக்கிற தும், |
| प्रीतिकरं | மனோக்ருமாயிருக் கின்ற | महत् वनं | விசாலமாயிருக்கிறது வனத்தை [மான |
| | | ददर्श | கண்டார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे एकोनवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5698

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3343



नवतितमः सर्गः—தொண்ணூற்றாவது ஸர்க்கம். || ௨௦ ||

भरतभरद्वाजसंवादः—பரதபரத்வாஜஸம்வாதம்.

भरद्वाजाश्रमं दृष्ट्वा क्रोशादेव नरर्षभः । बलं सर्वमवस्थाप्य जगाम सह मन्त्रिभिः ॥ १ ॥
पद्भ्यामेव हि धर्मज्ञो न्यस्तशस्त्रपरिच्छदः । वसानो वाससी क्षौमे पुरोधाय पुरोहितम् ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------|-------------------------------|--|
| भरद्वाजाश्रमं | பரத்வாஜரது ஆச்ரம | न्यस्तशस्त्र- } परिच्छदः } | சஸ்திரங்கனையும் பிரு துகளையும் விலக்கிய வராய், |
| दृष्ट्वा हि | கண்டதுமே, | क्षौमे वाससी | வெண்பட்டுஉடைகளை |
| सर्वं | எல்லா | वसानः | உடுத்தியவராய் |
| बलं | சைனியத்தையும் | पुरोहितं | புரோஹிதராகும் வவலிஷ்டரை |
| क्रोशात् एव | இரண்டுமையுக்கப் பாலேயே | पुरोधाय | முன்னிட்டுக்கொண்டு |
| अवस्थाप्य | நிறுத்திவிட்டுவந்த | मन्त्रिभिः सह | மந்திரிமார்க்களோடுகூட |
| नरर्षभः | புருஷோத்தமரும், | पद्भ्यां एव | கால்நடையாகவே |
| धर्मज्ञः | தர்மசீலருமாகியஅவர் | जगाम | சென்றார். |

ततः संदर्शने तस्य भरद्वाजस्य राघवः । मन्त्रिणस्तानवस्थाप्य जगामानुपुरोहितम् ॥ ३ ॥

| | | | |
|------------|-----------|-------------|-----------------------|
| ततः | அதன்மேல் | तान् | அந்த |
| तस्य | அந்த | मन्त्रिणः | மந்திரிமார்க்களையும், |
| भरद्वाजस्य | பரத்வாஜரை | अवस्थाप्य | நிறுத்திவிட்டு, |
| सन्दर्शने | கண்டதும் | अनुपुरोहितं | புரோஹிதரைத் தொ |
| राघवः | பரதர் | जगाम | சென்றார். [டர்ந்து |

वसिष्ठमथ दृष्ट्वैव भरद्वाजो महातपाः । संचालासनात्तूर्णं शिष्यानर्घ्यमिति ब्रुवन् ॥ ४ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|---------|-----------------|
| अथ | அப்பொழுது | अर्घ्यं | ‘அர்க்கியம் |
| महातपाः | மகாதபஸ்வியான | तूर्णं | சீக்கிரம்’ |
| भरद्वाजः | பரத்வாஜமுனிவர் | इति | என்று |
| वसिष्ठं | வஸிஷ்டபகவானை | ब्रुवन् | சொல்லிக்கொண்டே |
| दृष्ट्वा एव | கண்டமாத் திரத்தில் | आसनात् | ஆஸனத்திலிருந்து |
| शिष्यान् | சிஷ்யர்களைப்பார்த்து | सञ्चाल | எழுந்தார். |

समागम्य वसिष्ठेन भरतेनाभिवादितः । अबुध्यत महातेजाः सुतं दशरथस्य तम् ॥ ५ ॥

| | | | |
|----------|------------------------|-----------|--------------------|
| महातेजाः | மகாதேஜஸ்வியாகு மவர் | अभिवादितः | நமஸ்கரிக்கப்பட்டவ |
| वसिष्ठेन | வஸிஷ்டரோடு | तं | அவரை [ராய் |
| समागम्य | சேர்ந்ததும், | दशरथस्य | தசரதசக்கிரவரத்தியா |
| भरतेन | பரதரால் | सुतं | புதல்வனென [ரது |
| | | अबुध्यत | அறிந்தார். |

ताभ्यामर्घ्यं च पाद्यं च दत्त्वा पश्चात्फलानि च । आनुपूर्व्याच्च धर्मज्ञः पप्रच्छ कुशलं कुले॥
अयोध्यायां बले कोशे मित्रेष्वपि च मन्त्रिषु । जानन्दशरथं वृत्तं न राजानमुदाहरत् ॥

धर्मज्ञः தருமசீலராகுமவர்
தாभ्यां அவ்விருவர்களுக்கும்
அர்घ्यं च அர்க்கியத்தையும்,
पाद्यं च பாத்தியத்தையும்,
पश्चात् அதன்பின்னர்
फलानि च பழங்களையும்,
दत्त्वा அளித்துவிட்டு
आनुपूर्व्यात् வரிசைக்கிரமமாய்
कुले குடும்பவிஷயத்திலும்,
अयोध्यायां அயோத்தியபின்
बले விஷயத்திலும்,
சைனியவிஷயத் திலும்,

कोशे பொருள்விஷயத்திலும்,
मित्रेषु अपि அன்பர்கள்விஷயத்திலும்,
मन्त्रिषु च மந்திரிமார்கள்விஷயத்
कुशलं சேஷமத்தை [திலும்,
पप्रच्छ வினாவினார்.
दशरथं தசரதர்
वृत्तं இறந்துபோனதை
जानन् அறிந்த, அவர்
राजानं च சக்கிரவர்த்தியாரைப் பற்றி
उदाहरत् न பிரஸ்தாபிக்கவில்லை.

वसिष्ठो भरतश्चैनं पप्रच्छतुरनामयम् । शरीरेऽग्निषु शिष्येषु वृक्षेषु मृगपक्षिषु ॥ ८ ॥

वसिष्ठः வஸிஷ்டபகவானும்,
भरतः च பரதரும்,
एनं இவரை
शरीरे சரீரவிஷயத்திலும்
अग्निषु ஹோமாக்கனிகள்
விஷயத்திலும்,

वृक्षेषु விருக்ஷங்கள் விஷயத்திலும்,
शिष्येषु சீடர்கள்விஷயத்திலும்,
मृगपक्षिषु மிருகபட்சிகள்
अनामयं சேஷமத்தை
पप्रच्छतुः வினாவினார்கள்.

स तथेति प्रतिज्ञाय भरद्वाजो महायशः । भरतं प्रत्युवाचेदं राघवस्तेहवन्धनात् ॥ ९ ॥

सः அந்த
महायशः மிகப்புக்கழ்பெற்ற
भरद्वाजः பரத்வாஜமுனிவர்,
तथा इति 'எல்லாம் சுகமே' யென

प्रतिज्ञाय பதிலளித்து
भरतं प्रति பரதரைப் பார்த்து
राघवस्तेह- } ஸ்ரீராமரிடத்திலுள்ள
बन्धनात् } அன்பினதீசயத்தால்
इदं பின்வரும் சொல்லை
उवाच மொழிந்தார்:

किमिहागमने कार्यं तव राज्यं प्रशासतः । एतदाचक्ष्व मे सर्वं न हि मे शुध्यते मनः ॥

राज्यं "ராஜ்யத்தை
प्रशासतः तव ஆளும் உனக்கு
इह இவ்விடத்திற்கு
आगमने வருவதில்
कार्यं किं உத்தேசம் என்ன?
एतत् सर्वं இது எல்லா வற்றை யும்

मे எனக்கு
आचक्ष्व விளங்கச்சொல்லு.
हि என்னெனில்
मे मनः எனது மனமானது
शुध्यते न தெளிவுபெறாமலிருக்கின்றது.

सुषुवे यममित्रघ्नं कौसल्याऽऽनन्दवर्धनम् । भ्रात्रा सह सभार्यो यश्चिरं प्रव्राजितो वनम् ॥
नियुक्तः स्त्रीनियुक्तेन पित्रा योऽसौ महायशः । वनवासी भवेतीह समाः किल चतुर्दश ॥
कच्चिन्न तस्यापापस्य पापं कर्तुमिहेच्छसि । अकण्टकं भोक्तुमना राज्यं तस्यानुजस्य च ॥

கௌசல்யா “கோஸலாதேவியார்
அமித்வத் சத்ருசம்ஹாரகரும்
ஆனந்தவர்தன் { யாவருக்கும் மகிழ்ச்சி
யை விளைவிப்பவரு
மான
ய் சுஸுவே எவரை பெற்றானோ,
ய: எவர்
அத்ரா சஹ தம்பியோடுகூட
சமார்ய: மனைவியுடன் கூடியவ
ராய்
சிர் வெகுகாலத்திற்கு
வன் காட்டிற்கு
புவாஜித்: அனுப்பப்பட்டாரோ,
ய: எந்த
மஹாயசா: மிகப்புகழ்பெற்ற
அசௌ இவர்
ஸ்த்ரீநியுக்தேந மனைவியால் கட்டுண்ட
பித்ரா தந்தையால்
இஹ ‘இவ்விடத்தில்

चतुर्दश பதினான்கு
समा: வருஷங்கள்
वनवासी भव வனவாசியாய் இரு
इति किल என்று கண்டிப்பாய்
नियुक्तः கட்டளையிடப்பட்டா
ரோ,
ऋपापस्य நிர்த்தோஷியாகிய
तस्य அவருக்கும்,
अनुजस्य च தம்பிக்கும்,
पापं கொடுமையை,
तस्य राज्यं அவரது ராஜ்யத்தை
अकण्टकं இடையூற்றற்றதாய்
भोक्तुमना: அனுபவிக்க எண்ணங்
கொண்டவனாய்,
कर्तुं இயற்ற
इह இப்பொழுது
इच्छसि न நீ நினைக்கவில்லையென
कच्चिन् एண்ணுகிறேன்.”

एवमुक्तो भरद्वाजं भरतः प्रत्युवाच ह । पर्यश्रुनयनो दुःखाद्वाचा संसज्जमानया ॥ १४ ॥

एवं இங்ஙனம்
उक्तः வினாவப்பட்ட
भरतः பரதர்,
पर्यश्रुनयनः கண்ணீரால் கலங்கிய
கண்களுடையவராய்,
दुःखात् மனவேதனையால்
संसज्जमानया வாய் தழுதழுத்து
வெளிவரும்

वाचा சொற்கொண்டு
भरद्वाजं பரத்வாஜமஹர்ஷியை
प्रत्युवाच பின்வருமாறு திருவா
ய்மலர்ந்தருளினார்.
ह காண்!

हतोऽस्मि यदि मामेवं भगवानपि मन्यते । मत्तो न दोषमाशङ्के नैवं मामनुशाधि हि ॥

मत्तः “அடியேனிடத்தில்
दोषं हि பாபம்ருக்கிறதென்
பதற்கும்
आशङ्के न இடங்கொடாதிருக்
கின்றேன்.

मन्यते यदि திருவுளத்தில் கொள்
ருக்கிறதெனில்

भगवान् अपि பகவானும்
एवं மேற்கண்டவாறு
मां அடியேனைப்பற்றி

अस्मि அடியேன்
हतः முற்றிலுமழிந்தேன்.
एवं இப்படியாய்
मां அடியேனை
अनुशाधि न தேவரீர் சிுகழிக்கலா

காது.

भरद्वाज-भरत



सर्व साधन कर सुफल सुहावा । लखन राम सिय दरसन पावा ॥
तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा । सहित पयाग सुभाग हमारा ॥

न चैतदिष्टं माता मे यद्वोचन्मदन्तरे । नाहमेतेन तुष्टश्च न तद्वचनमाददे ॥ १६ ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|-----------|----------------------|
| मे | “அடியேனது | एतत् | இது |
| माता | தாய் [யில் | इष्टं न च | (தர்மத்திற்கு) இசைந் |
| मदन्तरे | நான் இல்லா திருக்கை- | | ததில்லை. |
| यत् अवोचत् | எதைச் சொன்னாளோ | अहं | அடியேன் |
| तद्वचनं | அந்த நியமனத்தை | एतेन च | இதனால் தான் |
| आददे न | நான் அங்கீகரிக்க வில்லை. | तुष्टः | அசஞ்சலமனத்தனாய் |
| | | न | இல்லை. |

अहं तु तं नरव्याघ्रमुपयातः प्रसादकः । प्रतिनेतुमयोध्यां च पादौ तस्याभिवन्दितुम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|--------------|-----------------------|
| अहं | “அடியேன் | तस्य पादौ | அவரது திருவடிகளில் |
| तु | இவ்விஷயத்தில் | अभिवन्दितुं | விழுந்து சேவிக்கவும், |
| तं | இந்த | अयोध्यां | அயோத்தியாபுரிக்கு |
| नरव्याघ्रं | புருஷோத்தமரிடம் | प्रतिनेतुं च | திருப்பியழைத்துப் |
| प्रसादकः | அருளைப் பிரார்த்தித் தின் றவனாகி, | उपयातः | வந்திருக்கிறேன். |

त्वं मामेवं गतं मत्वा प्रसादं कर्तुमर्हसि । शंस मे भगवन्नामः क संप्रति महीपतिः ॥ १८ ॥

| | | | |
|---------|--------------------|----------|------------------------|
| त्वं | “தேவரீர் | अर्हसि | திருவுளம்கொள்ளு |
| मां | அடியேனை | भगवन् | பகவானே! [ஹீராக. |
| एवं | இப்படிப்பட்ட | महीपतिः | சக்கிரவர்த்தியாகிய |
| गतं | மனப்போக்குடைய வனாக | रामः | ஸ்ரீராமர் |
| मत्वा | திருவுளத்தில்பற்றி | सम्प्रति | இப்பொழுது |
| प्रसादं | அருளை | क | எங்கிருக்கிறார்? |
| कर्तुं | அளிக்க | मे | அடியேனுக்கு |
| | | शंस | தேவரீர் அருளிச்செய்க.” |

वसिष्ठादिभिर्ऋत्विग्भिर्याचितो भगवांस्ततः । उवाच तं भरद्वाजः प्रसादाद्भरतं वचः ॥ १९ ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------|-----------|----------------------------|
| ततः | அதேசமயத்தில் | प्रसादात् | அருளின தீசயத்தால் |
| वसिष्ठादिभिः | வஸிஷ்டர் முதலிய | तं | அந்த |
| ऋत्विग्भिः | ரித்விக்குகளால் | भरतं | பரதரைப்பார்த்து, |
| याचितः | வேண்டப்பட்ட | वचः | பின்வரும் திருவாக்கை |
| भरद्वाजः भगवान् | பரத்வாஜபகவான் | उवाच | திருவாய்மலர்ந்தருளி னார் : |

त्वय्येतत्पुरुषव्याघ्र युक्तं राघववंशजे । गुरुवृत्तिर्दमश्चैव साधूनां चानुयायिता ॥ २० ॥

| | | | |
|---------------|---|-----------|------------------------|
| पुरुषव्याघ्र | “புருஷோத்தம! | साधूनां | மகாத்மாக்களாகிய |
| राघववंशजे | ராகுவம்சத்தில் பிறந்த | | முன்னோர்களை |
| त्वयि | உன்னிடத்தில் | अनुयायिता | அனுசரித்து நடத்த லும் |
| गुरुवृत्तिः च | { பெரியோர்களிடம் மனங்கோணுது நடத்த லும், | एतत् एव | இது ஒவ்வொன்றும் |
| दमः च | அதர்மமென்பதற்கே யிடங்கொடாமையும், | युक्तम् | குடி கொண்டிருக் கிறது. |

जाने चैतन्मनःस्थं ते दृढीकरणमस्त्विति । अपृच्छं त्वां तवात्यर्थं कीर्तिं समभिवर्धयन् ॥

| | | | |
|----------|--------------|----------------|---------------------|
| ते | “ உனது | समभिवर्धयन् | எங்கும் பரவச்செய்ய |
| मनस्थं | மனோபாவமாகும் | | வனாய், |
| एतत् | இதை | दृढीकरणं अस्तु | யாவருக்கும் தெரிந்த |
| जाने च | நானறிவேன். | | தாகவுமாகட்டும். |
| तव | உனது | इति | என்கிற காரணத் |
| अत्यर्थं | அத்புதமாகிய | त्वां | உன்னை [தாலும் |
| कीर्तिं | புகழை | अपृच्छम् | இப்படிக்கேட்டேன். |

जाने च रामं धर्मज्ञं ससीतं सहलक्ष्मणम् । असौ वसति ते भ्राता चित्रकूटे महागिरौ ॥

| | | | |
|------------|------------------|-----------|------------------|
| ससीतं | “ ஸீதையோடிருக்கி | ते | உனது |
| | றவரும், | भ्राता | தமையனாகும் |
| सहलक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரோடிருக் | असौ | இவர் |
| | கிறவரும், | चित्रकूटे | சித்திரகூடமெனும் |
| धर्मज्ञं | தர்மஜ்ஞமாகிய | महागिरौ | மகாபர்வதத்தில் |
| रामं च | ஸ்ரீராமரையும், | वसति | வசிக்கின்றார். |
| जाने | உள்ளபடியறிவேன். | | |

श्वस्तु गन्तासि तं देशं वसाद्य सह मन्त्रिभिः । एतं मे कुरु सुप्राज्ञं कामं कामार्थकोविद ॥

| | | | |
|---------------|------------------------|----------|-----------------|
| सुप्राज्ञं | “ மகா ஞானியே! | तं | அந்த |
| कामार्थकोविद | { காமம், அர்த்தம், இவ் | देशं | இடத்திற்கு |
| | விரண்டின் நூட்பத் | श्वः तु | நாளையே |
| | தையறிந்தவனே! | गन्तासि | நீ போவாய். |
| अद्य | இன்று | मे | எனது |
| मन्त्रिभिः सह | மந்திரிமார்களோடு | एतं कामं | இந்த கோரிக்கையை |
| वस | இரவுதங்கியிரு. [கூட | कुरु | நீ செய்வாயாக.” |

ततस्तथेत्येवमुदारदर्शनः प्रतीतरूपो भरतोऽब्रवीद्वचः ।

चकार बुद्धिं च तदा तदाश्रमे निशानिवासाय नराधिपात्मजः ॥ २४ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|--------------|-------------------|
| तदा | அப்பொழுது | निशानिवासाय | இரவுதங்குவதற்கு |
| उदारदर्शनः | { தண்ணளிகுணமின் | बुद्धिं चकार | நிச்சயத்தை செய்த |
| | னதென விளங்கக் | ततः | அதனால் [நர். |
| | காட்டுகிறவரும், | च | உடனே |
| प्रतीतरूपः | புகழ்பெற்ற பிறவிநற் | एवं | ‘திருவுளமெப்படியோ |
| | குணமுடையவரும், | तथा | அவ்வண்ணமே |
| नराधिपात्मजः | சக்கிரவர்த்தியாரின் | | செய்கிறேன்’ |
| भरतः | பரதர், [குமாரருமாகிய | इति वचः | என்ற சொல்லை |
| तदाश्रमे | அவ்வாசரமத்தில் | अब्रवीत् | பதில்சொன்னார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे नवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5722.

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3367.



एकनवतितमः सर्गः—தொண்ணூற்றொன்றாவது ஸர்க்கம். || ௨௧ ||

भरद्वाजेनातिथ्यकरणम्—பரத்வாஜர் அதிதிஸத்காரம் செய்வது.

कृतबुद्धिं निवासाय तत्रैव स मुनिस्तदा । भरतं कैकयीपुत्रमातिथ्येन न्यमन्त्रयत् ॥ १ ॥

| | | | |
|---------|------------------|--------------|--------------------|
| ததா | அதன்மேல் | கூதபுத்தி | ஏற்றுக்கொண்ட |
| ச: | அந்த | கைகையிபுல | கைகையிபுதல்வராகும் |
| முனி: | முனிவர் | भरतं | பரதரை |
| तत्र एव | அவ்விடத்திலேயே | आतिथ्येन | அதிதிமுறைப்படி |
| निवासाय | இரவை கழிப்பதற்கு | न्यमन्त्रयत् | வரித்தனர். |

अब्रवीद्भरतस्त्वेनं नन्विदं भवता कृतम् । पाद्यमर्घ्यं तथाऽऽतिथ्यं वने यदुपपद्यते ॥ २ ॥

| | | | |
|----------|--------------------|----------|------------------|
| भरतः | பரதர் | तथा | அவ்வண்ணமே |
| एनं | இவரைப் பார்த்து | आतिथ्यं | விருந்தோம்பலும் |
| तु | இவ்விஷயத்திலிப்படி | भवता | தேவரீரால் |
| अब्रवीत् | பதில்சொன்னார் : | कृतं | செய்யப்பட்டுவிட் |
| वने | “ காட்டில் | इदं | இப்பொழுது [டது. |
| पाद्यं | பாத்தியமும், | उपपद्यते | செய்யப்படுகிறது |
| अर्घ्यं | அர்க்கியமும் | यत् | எதுவோ அது |
| | | ननु | என்ன ? ” |

अथोवाच भरद्वाजो भरतं प्रहसन्निव । जाने त्वां प्रीतिसंयुक्तं तुष्येस्त्वं येन केनचित् ॥३॥

| | | | |
|----------|-------------------|----------------|------------------|
| अथ | அப்பொழுது | त्वां | “ உன்னை |
| भरद्वाजः | பரத்வாஜமுனிவர் | प्रीतिसंयुक्तं | திருப்தியடைந்தவ |
| इव | சற்று | | கை |
| प्रहसन् | புன்னகைபூண்ட | जाने | நானறிவேன். |
| | வராய், | येन केनचित् | ஏதோ ஒரு அல்பத் |
| भरतं | பரதரைப் பார்த்து | | தாலும் |
| उवाच | பின்வருமாறு பதில் | त्वं | நீ |
| | சொன்னார் : | तुष्ये: | திருப்தியடைவாய். |

सेनायास्तु तवैतस्याः कर्तुमिच्छामि भोजनम् । मम प्रीतिर्यथारूपा त्वमहो मनुजर्षभ ॥४॥

| | | | |
|------------|----------------|---------|------------------------|
| मनुजर्षभ | “ புருஷோத்தம ! | इच्छामि | நிச்சயித்திருக்கிறேன். |
| तव | உனது | मम | எனது |
| एतस्याः | இந்த | प्रीतिः | இஷ்டமானது |
| सेनायाः तु | சேனைக்கு | यथारूपा | எண்ணியிருக்கும் |
| भोजनं | போசனத்தை | | வண்ணமே |
| कर्तुं | செய்யுக்க | त्वं | நீ |
| | | अहं: | செய்யக்கடவை. |

किमर्थं चापि निक्षिप्य दूरे बलमिहागतः । कस्मान्नेहोपयातोऽसि सबलः पुरुषर्षभ ॥५॥

புருஷர்ஷ
கிமர்த்
தூரே
பலம்
நிஷிப்ய
இஹ

“புருஷோத்தம !
ஏன்
வெகுதூரத்தில்
சைனியத்தை
நிறுத்திவிட்டு
இங்கு

आगतः
सबलः च
कस्मात् अपि
इह
उपयातः असि न

வந்தனை ?
சைனியத்தோடு
கூடினவனாகவே
ஏனோ
இங்கு
வரவில்லை ? ”

भरतः प्रत्युवाचेदं प्राञ्जलिस्तं तपोधनम् । ससैन्यो नोपयातोऽस्मि भगवन्भगवद्भयात् ॥

பரதர்
பாஜ்லி:
த்
தபோதனம்
இதம்
புதுவாச

பரதர்
அஞ்சலிஹஸ்தராகி
அந்த
முனிவர் பெருமானைப்
பார்த்து,
பின்வருமாறு
பதில் சொன்னார் :

भगवन्
भगवद्भयात्
ससैन्यः
अस्मि
उपयातः न

“பகவானே !
தேவரீரிடத்திலுள்ள
பத்திமையால்
சைனியத்தோடு
கூடினவனாய்
அடியேன்
வரவில்லை.

राज्ञा हि भगवन्नित्यं राजपुत्रेण वा सदा । यत्नतः परिहर्तव्या विषयेषु तपस्विनः ॥ ७ ॥

பகவந்
ராஜா ஹி
வா
ராஜபுத்ரேண
தபஸ்வின:
நித்யம்

“பகவானே !
அரசனாயிருப்பவனான
அல்லது [லும்,
ராஜகுமாரனாயிருப்ப
வனாலும்,
முனிவர்கள்
வழக்கமாயுள்ள

विषयेषु
यत्नतः
सदा
परिहर्तव्याः

மன்னர்களுக்குரிய
விஷயங்களில்
வெகு ஜாக்கிரதை
யுடன்
எக்காலத்திலும்
விளக்கப்படவேண்டி
யவர்கள்.

वाजिमुख्या मनुष्याश्च मत्ताश्च वरवारणाः । प्रच्छाद्य महतीं भूमिं भगवन्ननुयान्ति माम् ॥

பகவந்
வா.ஜ.முக்ஷ்யா:
மத்தா:
வரவாரணா:
மனுஷ்யா: ச
மஹதீ

“பகவானே !
சிறந்த குதிரைகளும்,
கொழுத்த
சிறந்த யானைகளும்,
மனிதர்களும்,
விசாலமாகிய

भूमिं च
प्रच्छाद्य
मां
अनुयान्ति

நிலத்தை
அடைத்துக்கொண்டு
அடியேனை
பின்தொடர்ந்து வரு
கின்றனர்.

ते वृक्षानुदकं भूमिमाश्रमेषूटजास्तथा । न हिंस्युरिति तेनाहमेक एवागतस्ततः ॥ ९ ॥

தே
ஆசுரமேஷு
வृக்ஷான்
உடகம்
பூமிம்
ததா
உடஜான்

“அவைகள்
ஆசுரமங்களிலிருக்கும்
மரங்களையும்,
ஜலத்தையும்,
செம்மைப்படுத்தப்ப
ட்ட பிரதேசத்தையும்
அவ்வண்ணமே
ஆசுரமங்களையும்,

हिंस्युः न
इति
तेन
अहं
एकः एव
ततः
आगतः

அழித்துவிடலாகாது
என்ற
ஒரு காரணத்தால்
அடியேன்
ஒருவனாகவே
அவ்விடத்திலிருந்து
வந்தேன்.”

आनीयतामितः सेनेत्याज्ञप्तः परमर्षिणा । तथा स चक्रे भरतः सेनायाः समुपागमम् ॥

इतः “இவ்விடத்திற்கு
सेना சேனையானது
आनीयतां கொண்டுவரப்பட்ட
டும்.”

इति என்று
परमर्षिणा முனிவர் பெருமானால்

अग्निशालां प्रविश्याथ पीत्वाऽपः परिमृज्य च । आतिथ्यसत्क्रियाहेतोर्विश्वकर्माणमाह्वयत् ॥

अथ அதன்மேல்
अग्निशालां அக்னிசாலையில்
प्रविश्य புகுந்து
अपः पीत्वा சாஸ்திரோக்தமாய்
ஆசமனம்செய்து,

आज्ञप्तः கட்டளையிடப்பட்ட
सः அந்த
भरतः பரதர்
तथा அங்குநமே
सेनायाः சேனையை
समुपागमं चक्रे வரவழைத்தார்.
परिमृज्य च வாயைத்துடைத்துக்
கொண்டும்
आतिथ्य- } அதிதிபூஜைசெய்ய
सत्क्रियाहेतोः } வேண்டியதால்
विश्वकर्माणं விசுவகர்மாவை
आह्वयत् மந்திரத்தாலழைத்த
னர்

आह्वये विश्वकर्माणमहं त्वष्टारमेव च । आतिथ्यं कर्तुमिच्छामि तत्र मे संविधीयताम् ॥

अहं “நான்
त्वष्टारं தேவசில்பியாகும்
विश्वकर्माणं एव விசுவகர்மாவை
आह्वये அழைக்கிறேன்.
आतिथ्यं च அதிதிபூஜையை
कर्तुं செய்ய

इच्छामि நினைத்திருக்கிறேன்.
तत्र இந்த காரியத்தில்
मे எனக்கு
संविधीयताम् ஏற்பாடுகளைத்தும்
செய்யப்பட்டடும்.

आह्वये लोकपालांस्त्रीन्देवाञ्छक्रमुखांस्तथा । आतिथ्यं कर्तुमिच्छामि तत्र मे संविधीयताम् ॥

तथा “அங்குநமே
शक्रमुखान् இந்திரனைத்தலைமை
யாய் பாராட்டும்
लोकपालान् லோகரக்ஷகர்களாகிய
वीन् மூன்று (அக்னி-வாயு-
வருணன்)
देवान् தேவர்களை
आह्वये நானழைக்கின்றேன்.

आतिथ्यं அதிதிபூஜையை
कर्तुं செய்ய
इच्छामि நினைத்திருக்கிறேன்.
तत्र இந்தக்காரியத்தில்
मे எனக்கு
संविधीयताम् ஏற்பாடுகளைத்தும்
செய்யப்பட்டடும்.

प्राक्स्नोतसश्च या नद्यः प्रत्यक्स्नोतस एव च । पृथिव्यामन्तरिक्षे च सहायान्वद्य सर्वशः ॥

प्राक्स्नोतसः च “கிழக்குநோக்கியோடு
கிறவைகளும்,
प्रत्यक्स्नोतसः च மேற்குநோக்கியோடு
கிறவைகளும்,
पृथिव्यां பூமியிலும்
अन्तरिक्षे च ஆகாயத்திலுமிருக்
கிற

नद्यः நதிகள்
याः एव எவைகளோ அவை
கனெல்லாமும்
सर्वशः எல்லாப் பக்கங்களி
லிருந்தும்,
अद्य இப்பொழுது
सह आयान्तु ஒன்றுகூடி வரட்டும்.

अन्याः स्रवन्तु मैरेयं सुरामन्याः सुनिष्ठिताः । अपराश्वोदकं शीतमिक्षुकाण्डरसोपमम् ॥

| | | | |
|--------|--------------------|------------------|-------------------------|
| अन्याः | “ சிலவைகள் | सुनिष्ठिताः | நல்ல அமைப்புடைய |
| मैरेयं | ‘மைரேயம்’ என்னும் | अपराः | மற்றவைகள் |
| | மதுவையும், | शीतं | குளிர்ந்த |
| अन्याः | சிலவைகள் | इक्षुकाण्डरसोपमं | கரும்புச்சாற்றைநிகர்த்த |
| सुरां | ‘சுரை’ என்னும் மது | उदकं च | தீர்த்தத்தையும் |
| | வையும், | स्रवन्तु | பெருக்கட்டும். |

आह्वये देवगन्धर्वान्विश्वावसुहहाहुहून् । तथैवाप्सरसो देवीर्गन्धर्वीश्चापि सर्वशः ॥ १६ ॥

| | | | |
|-----------------------------|---|-------------|-----------------------|
| देवगन्धर्वान् | “ தேவகந்தர்வர்களா | गन्धर्वीः च | கந்தர்வஜா தியிற்பிறந் |
| | கும் | | தவர்களுமான |
| विश्वावसु- } हहाहुहून् } | விச்வாவஸு, ஹஹா ஹஹுவென்ப வர்களையும், | देवीः | தேவிமார்களை |
| तथा एव | அங்ஙனமே | सर्वशः अपि | எல்லாப்பக்கங்களி |
| अप्सरसः | அப்ஸரஸுகளும், | | லிருந்தும் |
| | | आह्वये | அழைக்கிறேன். |

घृताचीमथ विश्वार्ची मिश्रकेशीमलम्बुसाम् । नागदन्तां च हेमां च हिमामद्रिकृतस्थलाम् ॥

शक्रं याश्चोपतिष्ठन्ति ब्रह्माणं याश्च भामिनीः । सर्वास्तुम्बुरुणा सार्धमाह्वये सपरिच्छदाः ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-------------------|-------------------|
| अथ | “ அப்பொழுது | मिश्रकेशी | மிசர்கேசியையும், |
| याः | எவர்கள் | अलम्बुसां | அலம்புஸையையும், |
| शक्रं च | இந்திரனையும், | नागदन्तां च | நாகதந்தையையும், |
| याः | எவர்கள் | अद्रिकृतस्थलां | மலையில் வசிக்கும் |
| ब्रह्माणं | பிரம்மதேவரையும், | हेमां | ஹேமையையும், |
| उपतिष्ठन्ति | சேவித்துக்கொண்டிரு | हिमां च | ஹிமையையும், |
| | க்கின்றார்களோ | तुम्बुरुणा सार्धं | தம்புருவோடுகூட |
| भामिनीः | அந்தஉத்தமஸ்தீர்கள் | | அவரவர்கள் பரிவா |
| सर्वाः च | எல்லோரையும், | सपरिच्छदाः | ரங்களுடன் கூடிய |
| घृताची | கிருதாசியையும், | | வர்களாய் |
| विश्वार्ची | விச்வாசியையும், | आह्वये | நானழைக்கிறேன். |

वनं कुरुषु यदिव्यं वासोभूषणपत्रवत् । दिव्यनारीफलं शश्वत्तकौवैरमिहैतु च ॥ १७ ॥

| | | | |
|--------------------------|--------------------|--------------|-------------------|
| कुरुषु | “ உத்தரகுருதேசத்தி | दिव्यनारीफलं | { தேவமாதர்களைப் |
| | லிருக்கும், | | பழங்களாய்க்கொண் |
| दिव्यं | தெய்வத்தன்மை | | டதும், |
| | வாய்ந்ததும், | कौवैरं | குபேரனுடையதுமா |
| वासोभूषण- } पत्रवत् } | ஆடைகளையும், ஆபர | यत् वनं | எந்த வனமோ, [கியது |
| | ணங்களையும் இலை | तत् च | அதுவே |
| | ளாகக்கொண்டதும், | इह | இங்கு |
| शश्वत् | எக்காலத்திலும், | एतु | வரட்டும். |

इह मे भगवान्सोषो विचित्राणि च माल्यानि पादप्रच्युतानि च । सुरादीनि च पेयानि मांसानि विविधानि च ॥
विचित्राणि च माल्यानि पादप्रच्युतानि च । सुरादीनि च पेयानि मांसानि विविधानि च ॥

| | | | |
|----------|--------------------|-----------------|-------------------|
| சோம: | “சந்திர | பாட்ப்ரத்யுதானி | மரங்களினின்றும் |
| भगवान् | பகவான் | | டாகிய |
| विविधं | பலவகைப்பட்ட | विचित्राणि | பலவகை |
| उत्तमं | சிறந்த | माल्यानि च | புஷ்பங்களையும், |
| अन्नं | சித்திரான்னங்களை | सुरादीनि च | சுரையேனும் மதுமுத |
| | யும், | विविधानि | பலவகை [விய |
| भक्ष्यं | சிற்றுண்டிகளையும், | पेयानि च | பானங்களையும், |
| भोज्यं च | அன்னத்தையும், | मांसानि च | மாம்ஸங்களையும், |
| चोष्यं च | பாயஸம்முதலியவை | इह | இவ்விடத்தில் |
| | களையும், | मे | எனக்கு |
| लेह्यं च | தேன்முதலியவை | बहु | ஏராளமாய் |
| | களையும், | विविक्तम् | அளிக்கட்டும்.” |

एवं समाधिना युक्तस्तेजसाऽप्रतिमेन च । शीक्षास्वरसमायुक्तं तपसा चाब्रवीन्मुनिः॥२२॥

| | | | |
|-----------|---|--------------------------------|---|
| समाधिना | { ஸ்தா பரமாத்மத்தி யானமாகிற யோகத் தாலும், | युक्तः | விளங்கிக்கொண்டி |
| तपसा | தவமகிமையாலும், | मुनिः | முனிவர் [ருக்கும் |
| अप्रतिमेन | நிகரற்ற | एवं | மேற்கண்டவாறு |
| तेजसा च | தேஜஸ்ஸாலும் | शीक्षास्वर- } समायुक्तं च } | சிக்ஷையென்கிற வே தாங்கத்திற்கூறியுள் ள ஸ்வரத்தோடும் |
| | | अब्रवीत् | பிரார்த்தித்தனர். |

मनसा ध्यायतस्तस्य प्राङ्मुखस्य कृताञ्जलः । आजगमुस्तानि सर्वाणि दैवतानि पृथक् पृथक् ॥

| | | | |
|--------------|------------------|--------------|---------------------|
| तस्य | அவர் | ध्यायतः | தியானம் செய்து |
| प्राङ्मुखस्य | கிழக்குநோக்கி | | கொண்டிருக்கையில், |
| कृताञ्जलः | அஞ்சலிஹஸ்தராகி | तानि दैवतानि | அந்த தேவதைகள் |
| | இருந்துகொண்டு | सर्वाणि | எல்லாமும், |
| मनसा | சிந்தைமுற்றிலும் | पृथक् पृथक् | ஒவ்வொருவராய் |
| | செலுத்தி | आजगमुः | வந்துசேர்ந்தார்கள். |

मलयं दर्दुरं चैव ततः स्वेदनुदोऽनिलः । उपस्पृश्य ववौ युक्तस्सुप्रियात्मा सुखः शिवः ॥

| | | | |
|------------|------------------|--------------|---|
| ततः | அப்பொழுது | सुप्रियात्मा | மிக்க பிரியகரமாயிரு |
| स्वेदनुदः | வியர்வையைப்போக் | | க்கிறதாய், |
| | கும் | सुखः | { அதிகம் குறைவு இல் லாமல் வேண்டிய அ ளவு இருப்பதாய், |
| अनिलः | காற்று | शिवः | தேகசௌக்கியம் |
| मलयं च | “மலய” மெனும் பர் | | விளைவிக்கின்றதாய் |
| | வதத்தையும், | युक्तः | ஏற்றதாய், |
| दर्दुरं एव | “தர்தூர” மெனும் | ववौ | வீசிற்று. |
| | பர்வதத்தையும், | | |
| उपस्पृश्य | ஸ்பரிசித்து | | |

ततोऽभ्यवर्तन्त घना दिव्याः कुसुमवृष्टयः । देवदुन्दुभिनिर्घोषो दिक्षु सर्वासु शुश्रुवे ॥

| | | | |
|--------------|-------------|---------------------|------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | देवदुन्दुभिनिर्घोषः | தேவதுந்துபியின் சத்தமானது |
| दिव्याः | தேவ | | |
| कुसुमवृष्टयः | பூமாரிகள் | सर्वासु | எல்லா |
| घनाः | நெருக்கமாய் | दिक्षु | திசைகளிலும் |
| अभ्यवर्तन्त | பொழிந்தன. | शुश्रुवे | கேட்கப்பட்டது. |

प्रवुशोत्तमा वाता ननुतुश्चाप्सरोगणाः । प्रजगुर्देवगन्धर्वा वीणाः प्रमुमुचुः स्वरान्॥२६॥

| | | | |
|------------|--|--------------|------------------|
| वाताः च | நாற்பக்கங்களிலிருந் தும் வரும் காற்று | ननुतुः | ஆடின. |
| प्रवुः | வீசிற்று. | देवगन्धर्वाः | தேவகந்தர்வர்கள் |
| उत्तमाः | உத்தம | प्रजगुः | பாடினார்கள். |
| अप्सरोगणाः | அப்ஸரகணங்கள் | वीणाः च | வீணைகளும் |
| | | स्वरान् | நல்ல ஸ்வரங்களில் |
| | | प्रमुमुचुः | ஒலித்தன. |

स शब्दो द्यां च भूमिं च प्राणिनां श्रवणानि च । विवेशोच्चारितः श्लक्ष्णः समो लयगुणान्वितः॥

| | | | |
|---------------------|--|-----------|---------------|
| उच्चारितः | உயர்ந்த த்வணியிலிரு ப்பதும், | सः | அந்த |
| श्लक्ष्णः | மனோகரமாயிருப் பதும், | शब्दः | ஒலி |
| समः | ஸர்வபிரகாரத்திலும் ஏற்றதாயிருப்பதும், | द्यां च | ஆகாயத்திலும், |
| लयगुणान्वितः } च | பாட்டில் 'லய'மெனும் குணத்தோடு விளங் கியதுமான | भूमिं च | பூமியிலும் |
| | | प्राणिनां | பிராணிகளின் |
| | | श्रवणानि | காதுகளில் |
| | | विवेश | புகுந்தது. |

तस्मिन्नुपरते शब्दे दिव्ये श्रोत्रसुखे नृणाम् । ददर्श भारतं सैन्यं विधानं विश्वकर्मणः ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------|-------------|------------------|
| नृणां | மனிதர்களுடைய | उपरते | அடங்கினவளவில் |
| श्रोत्रसुखे | காதுகளுக்கினியதும், | भारतं | பாதரது |
| दिव्ये | தெய்வத்தன்மைவாய் ந்ததுமான | सैन्यं | சேனையானது |
| | | विश्वकर्मणः | விசுவகர்மாவின்து |
| तस्मिन् | அந்த | विधानं | ஸிருஷ்டியை |
| शब्दे | தொனி | ददर्श | கண்டது. |

बभूव हि समा भूमिः समन्तात्पञ्चयोजना । शाल्वैर्बहुभिश्छन्ना नीलवैडूर्यसंनिभैः ॥२९॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|-------------------|-------------------------------------|
| भूमिः | பிரதேசமானது | नीलवैडूर्यसंनिभैः | நீலமணிகளையும் வை நீர்யமணிகளையும் |
| समन्तात् | எல்லாப்பக்கங்களி லும் | बहुभिः | பல [ஒத்த |
| पञ्चयोजना | ஐந்துயோஜனைதூரம் | शाल्वैः | இளம்புற்களால் |
| समा | ஸமமாகவும் | छन्ना हि | மறைக்கப்பட்டதாக |
| | | बभूव | விளங்கிற்று. [வும் |

तस्मिन्बिल्वाः कपित्थाश्च पनसा बीजपूरकाः । आमलक्यो बभूवुश्च चूताश्च फलभूषणाः॥

तस्मिन् அவ்விடத்தில்
 बिल्वाः வில்வமரங்களும்,
 कपित्थाः விளாமரங்களும்
 पनसाः பலாமரங்களும்
 बीजपूरकाः மாதளை, கொய்யா
 மரங்களும்

आमलक्यः च நெல்லிமரங்களும்
 चूताः च மாமரங்களும்,
 फलभूषणाः च பழங்கள் நிறம்பின
 வாய்
 बभूवुः விளங்கின.

उत्तरेभ्यः कुरुभ्यश्च वनं दिव्योपभोगवत् । आजगाम नदी दिव्या कूलजैर्वहुभिर्वृता ॥

उत्तरेभ्यः வட
 कुरुभ्यः குருதேசத்திலிருந்து
 दिव्योपभोगवत् தேவபோகத்தையு
 டைய
 वनं வனமானது

आजगाम வந்தது.
 दिव्या नदी च தெய்வநதியும்
 बहुभिः பல
 कूलजैः சிறந்த விருக்டங்களு
 वृता விளங்கிற்று. [டன்

चतुःशालानि शुभ्राणि शालाश्च गजवाजिनाम् । हर्म्यप्रासादसंवाधास्तोरणानि शुभानि च॥

शुभ्राणि அழகுற்ற
 चतुःशालानि { விசாலமான முற்றங்
 களுடைய நாற்புற
 வீடுகளும்,
 गजवाजिनां யானைகளுக்கும்,
 குதிரைகளுக்கும்

शालाः च லாயங்களும்,
 हर्म्यप्रासाद- } பல பெரிய திருமாளி
 संवाधाः } கைகளும், அரண்
 மனைகளும்,
 तोरणानि च தோரணவாயில்களும்
 शुभानि அழகாய் விளங்கின.

सितमेघनिभं चापि राजवेश्म सुतोरणम् । शुक्मालयकृताकारं दिव्यगन्धसमुक्षितम्॥३३॥

चतुरश्रमसंवाधं शयनासनयानवत् । दिव्यैः सर्वरसैर्युक्तं दिव्यभोजनवस्त्रवत् ॥ ३४ ॥

उपकल्पितसर्वान्नं धौतनिर्मलभाजनम् ॥ ३५ ॥

सुतोरणं அழகுறவாய்ந்த தோர
 ணவாயிலையுடைய
 राजवेश्म அரண்மனையானது
 सितमेघनिभं வெண்மேகத்தை
 நிகர்த்ததாய்,
 शुक्मालय- } வெண்பூவ்பங்களால்
 कृताकारं } அலங்கரிக்கப்பெற்ற
 தாய்,
 दिव्यगन्ध- } திவ்யவாஸனைகள் தெ
 समुक्षितं } ளிக்கப்பெற்றதாய்,
 असंवाधं விசாலமானதாய்
 चतुरश्रं சமகோணமுள்ளதாய்
 शयनासन- } படுக்கைகள், ஆசனங்
 यानवत् } கள், சிவிகைகளிவை
 களையுடையதாய்

दिव्यभोजन- } திவ்யமான உணவுக
 वस्त्रवत् } ளையும், ஆடைகளையு
 முடையதாய்,
 उपकल्पित- } தயார்க்கெய்துவைக்கப்
 सर्वान्नं } பட்ட பலசித்திரான்
 னங்களையுமுடைய
 தாய்,
 धौतनिर्मल- } சுத்தமான வெள்ளிப்
 भाजनं च } பாத்திரங்களையுடை
 யதாய்,
 दिव्यैः திவ்யமான
 सर्वरसैः अपि எல்லாவித செளகரிய
 ங்களோடும்
 युक्तम् விளங்கிற்று.

क्लृप्तसर्वासनं श्रीमत्स्वास्तीर्णशयनोत्तमम् । प्रविवेश महाबाहुरनुज्ञातो महर्षिणा ॥
वैश्व तद्रत्नसंपूर्णं भरतः कैकयीसुतः ॥ ३६ ॥

| | | | |
|-------------------------------|--|--------------|----------------------------|
| महाबाहुः | மகாபாகுவாயும், | रत्नसंपूर्णं | ரத்தினங்களால் நிறைந்ததும், |
| कैकयीसुतः | கைகேயியின் புதல்வருமாகிய | श्रीमत् | திவ்யமாயிருக்கிற துமான |
| भरतः | பரதர், | तत् | அந்த |
| क्लृप्तसर्वासनं | { சித்தமாயிருக்கும் சகல ஆசனங்களையுடையதும், | वैश्व | திருமாவிகைக்குள் |
| स्वास्तीर्ण- } शयनोत्तमं } | { நல்ல மேல்விரிப்புடைய சிறந்த படுக்கைகளையுடையதும், | महर्षिणा | முனிவர் பெருமானால் |
| | | अनुज्ञातः | ஆஞ்ஞாபிக்கப்பட்ட வராய் |
| | | प्रविवेश | புகுந்தார். |

अनुजमुश्च तं सर्वे मन्त्रिणः सपुरोहिताः । बभूवुश्च मुदा युक्तास्तं दृष्ट्वा वैश्वसंविधिम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|--------------------------|
| मन्त्रिणः | மந்திரிமார்கள் | वैश्वसंविधि | திருமாவிகையின து அமைப்பை |
| सर्वे च | எல்லோரும் | दृष्ट्वा च | பார்த்ததும், |
| सपुरोहिताः | புரோஹிதர்களுடன் | मुदा | சந்தோஷத்தால் |
| तं | அவரை | युक्ताः | பூரித்தவர்களாய் |
| अनुजमुः | தொடர்ந்துசென்றார் | बभूवुः | விளங்கினார்கள். |
| तं | அந்த [கள், | | |

तत्र राजासनं दिव्यं व्यजनं छत्रमेव च । भरतो मन्त्रिभिः सार्धमभ्यवर्तत राजवत् ॥ ३८ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|-------------------|
| भरतः | பரதர் | छत्रं एव | குடையையும், |
| तद्य | அவ்விடத்தில் | मन्त्रिभिः | மந்திரிமார்களோடு |
| दिव्यं | திவ்யமான | सार्धं | கூட |
| राजासनं च | சிங்காசனத்தையும், | राजवत् | மன்னரிடத்தில்போல் |
| व्यजनं | சாமரத்தையும், | अभ्यवर्तत | சேவித்தார். |

आसनं पूजयामास रामायाभिप्रणम्य च । वालव्यजनमादाय न्यपीदत्सचिवासने ॥ ३९ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------|--|
| रामाय च | ராமரை நினைத்து, | पूजयामास | கௌரவித்தார். |
| अभिप्रणम्य | நமஸ்கரித்து, | सचिवासने | { மந்திரிமார்களுக்கென் றிடப்பட்டிருந்த ஆசனங்களிலொன் றில் |
| वालव्यजनं | சாமரத்தை | | |
| आदाय | எடுத்துக்கொண்டு | न्यपीदत् | உட்கார்ந்தார். |
| आसनं | சிங்காசனத்தை | | |

आनुपूर्व्यान्निषेदुश्च सर्वे मन्त्रिपुरोहिताः । ततः सेनापतिः पश्चात्प्रशास्ता च निषेदतुः ॥

| | | | |
|------------------|-----------------------------|-------------|-----------------|
| मन्त्रिपुरोहिताः | மந்திரிமார்கள் புரோகிதர்கள் | ततः | அதன்பின் பு |
| सर्वे च | எல்லோரும் | सेनापतिः | சேனாபதியும், |
| आनुपूर्व्यात् | முறைப்படி | पश्चात् | அதன்மேல் |
| निषेदुः | உட்கார்ந்தனர். | प्रशास्ता च | ஸர்வாதிகாரியும் |
| | | निषेदतुः | உட்கார்ந்தனர். |

ततस्तत्र मुहूर्तेन नद्यः पायसकर्ममाः । उपातिष्ठन्त भरतं भरद्वाजस्य शासनात् ॥ ४१ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|-------------|------------------|
| ततः | அப்பொழுது | शासनात् | ஆக்கௌயினால் |
| तत्र | அவ்விடத்தில் | पायसकर्ममाः | குழம்புப் பாயஸமு |
| मुहूर्तेन | ஒரு கூணப்பொழு தில் | नद्यः | நதிகள் [டைய |
| भरद्वाजस्य | பரத்வாஜமுனிவரது | भरतं | பரதரிடத்தில் |
| | | उपातिष्ठन्त | காத்துநின்றன. |

तासामुभयतः कूलं पाण्डुमृत्तिकलेपनाः । रम्याश्चावसथा दिव्या ब्रह्मणस्तु प्रसादजाः ॥

| | | | |
|---------------------|-----------------|-----------|----------------------------|
| तासां | அவைகளின் | आवसथाः तु | மாஸிகைகளும் |
| उभयतः कूलं | இரு கரைகளிலும் | ब्रह्मणः | அந்தனரது, (பரத்வா ஜரது) |
| पाण्डुमृत्तिकलेपनाः | வெண் சன்னக்காரை | प्रसादजाः | பெருமையாலுண்டா யின. |
| रम्याः | அழகிய [இழைத்த | | |
| दिव्याः च | திவ்யமான | | |

तेनैव च मुहूर्तेन दिव्याभरणभूषिताः । आगुर्विंशतिसाहस्रा ब्रह्मणा प्रहिताः स्त्रियः ॥

| | | | |
|----------------|-----------------|------------|-------------------------------------|
| तेन एव | அதே | स्त्रियः च | ஸ்திரீகளும் |
| मुहूर्तेन | முகூர்த்தத்தில் | दिव्याभरण- | திவ்யமான ஆபரணங் |
| ब्रह्मणा | பிரம்மதேவரால் | भूषिताः | களால் அலங்கரிக்கப் பெற்றவர்களாய் |
| प्रहिताः | அனுப்பப்பட்ட | आगुः | வந்துசேர்ந்தனர். |
| विंशतिसाहस्राः | இருபதினாயிரம் | | |

सुवर्णमणिमुक्तेन प्रवालेन च भूषिताः । आगुर्विंशतिसाहस्राः कुबेरप्रहिताः स्त्रियः ॥४४॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------|------------|-------------------|
| कुबेरप्रहिताः | குபேரனனுப்பப் | प्रवालेन च | பவழங்களாலும் |
| विंशतिसाहस्राः | இருபதினாயிரம் [பட்ட | भूषिताः | அலங்கரிக்கப்பெற்ற |
| स्त्रियः | ஸ்திரீகள் | | வர்களாய் |
| सुवर्णमणि-} | தங்கத்தினாலும், ரத்தி | आगुः | வந்துசேர்ந்தனர். |
| मुक्तेन } | னங்களாலும், முத் துக்களாலும் | | |

याभिर्गृहीतः पुरुषः सोन्माद इव लक्ष्यते । आगुर्विंशतिसाहस्रा नन्दनादप्सरोगणाः ॥

| | | | |
|----------|------------------------------|----------------|--|
| याभिः | எந்த ஸ்திரீகளால் | लक्ष्यते | காணப்படுவானோ, அந்த |
| गृहीतः | கண்ணால் பார்க்கப் பட்ட | अप्सरोगणाः | அப்ஸரகணங்கள் |
| पुरुषः | மனிதன் | विंशतिसाहस्राः | இருபதினாயிரவர் |
| इव | முற்றிலும் | नन्दनात् | “நந்தன” மெனும் தே வோத்தியானத்திலி ருந்து |
| सोन्मादः | நித்தப்பிரமை கொண்ட டலனாய் | आगुः | வந்துசேர்ந்தனர். |

शिशुपामलकीजम्बो याश्चान्याः कानने लताः ।

मल्लिका मालती जातिर्याश्चान्याः कानने लताः ॥

प्रमदाविग्रहं कृत्वा भरद्वाजाश्रमेऽवदन्

॥ ५१ ॥

सुराः सुरापाः पिबत पायसं च बुभुक्षिताः । मांसानि च सुमेध्यानि भक्ष्यन्तां यावदिच्छथ ॥

शिशुपामलकी- } சிம்சுபை, நெல்லி, நா
जम्बः } வல் இவைகளும்,
कानने } காட்டில்
अन्याः } மற்றுமுள்ள
लताः } கொடிகள்
याः च } எவைகளோ அவைகளும்,

कानने } காட்டில்
अन्याः } இதல்லாத
लताः } கொடிகள்
याः च } எவைகளோ, அந்த
मालती } மாலதியும்,
मल्लिका } மல்லிகையும்,
जातिः } ஜாதியும்,
प्रमदाविग्रहं } பெண்ணுருவை
कृत्वा } எடுத்துக்கொண்டு

भरद्वाजाश्रमे } பரத்வாஜாசுர அஸ்சிர
अवदन् } மத்தில்
पिबन् } பின்வருமாறு பேசி
आकांक्षः } னர்கள் :

सुरापाः } “‘ஸ-ரை’யெனும் ம
यावत् इच्छथ } துவைவேண்டியவர்
कलौ ! } களே !

एवम् इच्छथ } எவ்வளவு வேண்டுகி
ह्रीर्कलौ अववववव } றீர்கலோ அவ்வளவு

सुराः } மதுவையும்,
पायसं च } பாயஸத்தையும்,
पिबत } பருகுங்கள்.

बुभुक्षिताः } பசியுடையவர்களே !
सुमेध्यानि } நன்கு பக்குவமாக்கப்
मांसानि च } மாம்சங்கள் [பட்ட
भक्ष्यन्ताम् } உண்ணப்படட்டும்”.

उच्छाद्य स्नापयन्ति स्म नदीतीरेषु वल्लुषु । अप्येकमेकं पुरुषं प्रमदाः सप्त चाष्ट च ॥

एकमेकं } ஒவ்வொரு
पुरुषं अपि } புருஷனையும்
सप्त च } ஏழு
अष्ट च } எட்டு
प्रमदाः } ஸ்த்ரீகள்

वल्लुषु } அழகிய
नदीतीरेषु } நதிக்கரைகளில்
उच्छाद्य } அங்கமர்த்தனஞ்செய்து
स्नापयन्ति स्म } ஸ்நானம் செய்வித்தனர்.

संवाहन्त्यः समापेतुर्नार्यो रुचिरलोचनाः । परिमृज्य तथाऽन्योऽन्यं पाययन्ति वराङ्गनाः ॥

रुचिरलोचनाः } அழகிய கண்களையு
नार्यः } உத்தமிகளுமாகிய
वराङ्गनाः } ஸ்த்ரீரத்தினங்கள்,
अन्योऽन्यं तथा } நான் முன்னே நான்
முன்னேயென்று

संवाहन्त्यः } அங்கமர்த்தனம் செய்
பவர்களாய்

समापेतुः } ஒடிவந்தார்கள்.

परिमृज्य } துடைத்துவிட்டு

पाययन्ति } குடிக்கச்செய்தனர்.

हयान्गजान्खरानुष्टांस्तथैव सुरभेः सुतान् । अभोजयन्वाहनपास्तेषां भोज्यं यथाविधि ॥

| | | | |
|---------|----------------|-------------------|-----------------|
| वाहनपाः | வாகனரகூதர்கள் | उष्टान् | ஓட்டகங்களையும், |
| हयान् | குதிரைகளையும் | सुरभेः सुतान् तथा | விருஷபங்களையும் |
| गजान् | யானைகளையும் | तेषां एव | அவற்றிற்கு |
| खरान् | கோவேறுகழுதைகளை | यथाविधि | முறைப்படி |
| | யும், | भोज्यं | உணவை |
| | | अभोजयन् | அளித்தனர். |

इक्षुंश्च मधु लाजांश्च भोजयन्ति स्म वाहनान् । इक्ष्वाकुवरयोधानां चोदयन्तो महाबलाः ॥

| | | | |
|---------------------------|--|--------------|--|
| महाबलाः | தெய்வீகசாமர்த்தியம் படைத்தவர்கள், | इक्षून् | கரும்புகளையும், |
| इक्ष्वाकुवर- योधानां } | இகூத்வாகுசிரேஷ்ட னது படர்களுடைய | मधुलाजान् च | வெல்லம் கலந்த தவிடு |
| वाहनान् च | { வாகனங்களை இழுகும் குதிரை, எருது முதலியவைகளில் லாவற்றையும், | चोदयन्तः | முதலியவைகளையும், தூண்டியுற்சாகப்படு த்துகின்றவர்களாய், |
| | | भोजयन्ति स्म | உண்பித்தனர். |

नाश्वबन्धोऽश्वमाजानान्न गजं कुञ्जरग्रहः । मत्तप्रमत्तमुदिता चमूः सा तत्र संबभौ ॥५७॥

| | | | |
|-------------|-----------------|--------------------------|--|
| अश्वबन्धः | குதிரைக்காரன் | तत्र | அப்பொழுது |
| अश्वं | குதிரையைப்பற்றி | सा चमूः | அந்த சேனையானது |
| आजानात् न | கவலைப்படவில்லை. | मत्तप्रमत्त- मुदिता } | சந்தோஷத்தினத்சய த்தால் மெய்மறந்த தாக |
| कुञ्जरग्रहः | யானைப்பாகன் | संबभौ | விளங்கிற்று. |
| गजं | யானையைப்பற்றி | | |
| न | கவலைப்படவில்லை. | | |

तर्पिताः सर्वकामैस्ते रक्तचन्दनरूपिताः । अप्सरोगणसंयुक्ताः सैन्या वाचमुदैरयन् ॥५८॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------------|--------------------------|---|
| ते | அந்த | रक्तचन्दनरूपिताः | சிவந்த சந்தனம் பூசப் பெற்றவர்களாய் |
| सैन्याः | சேனையாட்கள் | अप्सरोगण- संयुक्ताः } | அப்ஸரகணங்களால் சேவிக்கப்பட்டவர் களாய் |
| सर्वकामैः | சர்வவித மனோரதங்க ளாலும், | वाचं | பின்வரும் சொல்லை |
| तर्पिताः | திருப்திசெய்விக்கப் பட்டவர்களாய், | उदैरयन् | ஒருவரோடொருவர் பேசிக்கொண்டனர் : |

नैवायोध्यां गमिष्यामो न गमिष्याम दण्डकान् । कुशलं भरतस्यास्तु रामस्यास्तु तथा सुखम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------|--------|----------------|
| अयोध्यां | “அயோத்தியிலும் | कुशलं | சேஷமம் |
| गमिष्यामः न | நாம் அடையப்போவ தில்லை. | अस्तु | உண்டாகட்டும். |
| दण्डकान् एव | தண்டகையையும் | तथा | அங்ஙனமே |
| गमिष्यामः न | நாடடையப்போவ | रामस्य | ராமருக்கு |
| भरतस्य | பரதருக்கு [தில்லை. | सुखं | சேஷமம் |
| | | अस्तु | உண்டாகட்டும்.” |

इति पादातयोधाश्च हस्त्यश्वारोहबन्धकाः । अनाथास्तं विधिं लब्ध्वा वाचमेतामुदैरयन् ॥

| | | | | |
|----------------|--------------------|---------|---|--|
| पादातयोधा: | காலாட்படைகளும் | अनाथा: | } | 'ஆளுவாரடக்குவா ரில்லாமலிருக்கின் றார்கள்' என்ற |
| हस्त्यश्वारोह- | சுதிரைக்காரர்களும் | इति | | |
| बन्धकाः च | } யானைப்பாக்களும், | एतां | } | இந்த வார்த்தையை சொன்னார்கள். |
| तं | | அந்த | | |
| विधिं | சம்பவத்தை | वाचं | | |
| लब्ध्वा | கவனித்து, | उदैरयन् | | |

संप्रहृष्टा विनेदुस्ते नरास्तत्र सहस्रशः । भरतस्यानुयातारः स्वर्गोऽयमिति चाब्रुवन् ॥६१॥

| | | | |
|-----------|---------------|--------------|-------------------------------|
| भरतस्य | பரதரது | संप्रहृष्टा: | மிக்கக்களிப்புற்றவர் களாய் |
| अनुयातारः | பரிஜனங்களாகிய | विनेदुः | கோஷித்தார்கள். |
| सहस्रशः | ஆயிரக்கணக்கான | स्वर्गः च | 'ஸ்வர்க்கமே |
| ते | அந்த | अयं | இது' |
| नराः | மனிதர்கள் | इति | என்று |
| तत्र | அப்பொழுது | अब्रुवन् | சொன்னார்கள். |

नृत्यन्ति स्म हसन्ति स्म गायन्ति स्म च सैनिकाः ।

समन्तात्परिधावन्ति माल्योपेताः सहस्रशः

॥ ६२ ॥

| | | | |
|---------------|----------------|-------------|------------------------|
| सहस्रशः | ஆயிரக்கணக்கான | माल्योपेताः | மாலையணிந்தவர் களாய் |
| सैनिकाः | சேனாவீரர்கள் | समन्तात् च | எல்லாப்பக்கங்களிலும் |
| नृत्यन्ति स्म | ஆடினார்கள்; | परिधावन्ति | ஒடிக்குதித்தார்கள். |
| गायन्ति स्म | பாடினார்கள்; | | |
| हसन्ति स्म | சிரித்தார்கள். | | |

ततो भुक्तवतां तेषां तदन्नममृतोपमम् । दिव्यानुर्द्वेक्ष्य भक्ष्यांस्तानभवद्भक्षणे मतिः ॥६३॥

| | | | |
|-----------|----------------|--------------|-----------------|
| अमृतोपमं | அமுதுக்கொப்பான | भक्ष्यान् | சிறுந்துண்டுகளை |
| तत् अन्नं | அந்த போசணத்தை | उद्द्वेक्ष्य | கண்டு |
| भुक्तवतां | உண்ட | ततः | இன்னும் |
| तेषां | அவர்களுக்கு | भक्षणे | உண்ணுவதில் |
| तान् | அந்த | मतिः | ஆசை |
| दिव्यान् | திவ்ய | अभवत् | உண்டாயிற்று. |

प्रेष्याश्चेत्यश्च वध्वश्च बलस्थाश्चापि सर्वशः । बभूवुस्ते भृशं दृष्ट्वा सर्वे चाहतवाससः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|------------|--------------------------|
| प्रेष्याः | சேவகர்களும் | अहतवाससः | புதிய ஆடையுடுத்திய |
| चेत्यः च | வேலைக்காரிகளும் | भृशं | மிகவும் [வர்களாய் |
| वध्वः च | தாதிகளும் | सर्वशः | சர்வபிரகாரத்திலும் |
| बलस्थाः अपि | சேனையினிருப்பவர் | दृष्ट्वा च | உற்சாகங்கொண்டவர் களாக |
| ते सर्वे च | அவர்கள் எல்லோரும் | बभूवुः | விளங்கினார்கள். |

कुञ्जराश्च खरोष्ट्राश्च गोऽश्वाश्च मृगपक्षिणः । बभूवुः सुभृतास्तत्र नान्यो ह्यन्यमकल्पयत् ॥

| | |
|--------------|-------------------------------|
| तत्र | அவ்விடத்தில் |
| कुञ्जराः च | யானைகளும், |
| खरोष्ट्राः च | கோவேறுகழுதைகளும் ஒட்டகைகளும், |
| गोऽश्वाः च | பசுக்களும், குதிரைகளும், |
| मृगपक्षिणः | மிருகங்களும், பக்திகளும், |

| | |
|------------|-----------------------|
| सुभृताः | யதேஷ்டமாய் உண்டவைகளாக |
| बभूवुः | ஆயின. |
| अन्यः हि | சாதாரணமனிதன் கூட |
| अन्यं | எதையும் |
| अकल्पयत् न | வேண்டினுனில்லை. |

नाशुकवासास्तत्रासीत्क्षुधितो मलिनोऽपि वा । रजसा ध्वस्तकेशो वा नरः कश्चिददृश्यत् ॥

| | |
|-----------|------------------------------|
| तत्र | அவ்விடத்தில் |
| कश्चित् | ஒரு |
| नरः वा | மனிதனாவது |
| अशुकवासाः | அழுக்குவஸ்திரமுடந்தவனாகவாவது |
| क्षुधितः | பசித்தவனாகவாவது |

| | |
|--------------|------------------------------|
| मलिनः अपि वा | அழுக்குற்ற தேகமுடையவனாகவாவது |
| अदृश्यत् न | காணப்படவில்லை. |
| रजसा | புஷ்பங்களின் தாதுகளால் |
| ध्वस्तकेशः | மூடப்பட்ட தலைமயிரையுடையவனாய் |
| आसीत् | இருந்தான். |

आजैश्चापि च वाराहैर्निष्ठानवरसंचयैः । फलनिर्व्यूहसंसिद्धैः सूपैर्गन्धरसान्वितैः ॥ ६७ ॥
पुष्पध्वजवतीः पूर्णाः शुक्रस्यान्नस्य चाभितः । ददृशुर्विस्मितास्तत्र नरा लौहीः सहस्रशः॥

| | |
|-----------------------------|---|
| नराः | மனிதர்கள் |
| तत्र | அவ்விடத்தில் |
| अभितः | எல்லாப்பக்கங்களிலும், |
| आजैः च | ஆட்டுமாம்சங்களாலும், |
| वाराहैः च | பன்றிமாம்சங்களாலும், |
| निष्ठानवरसञ्चयैः | சிறந்த வாசனைத்திரவ்யங்கள் கலந்த |
| फलनिर्व्यूह- } संसिद्धैः | பழங்களின் பாகுகளில் சித்தம் செய்யப்பட்டவைகளும், |
| गन्धरसान्वितैः | { நாவிற்கு ருசிகரமாய் செய்யப்பட்டவைகளுமான |

| | |
|---------------|--------------------------------|
| सूपैः | குழம்பு, ரஸம் முதலியவைகளாலும், |
| शुक्रस्य | வெளுத்த |
| अन्नस्य च | அன்னத்தாலும் |
| पूर्णाः | நிறைந்த, |
| सहस्रशः | ஆயிரக்கணக்கான |
| पुष्पध्वजवतीः | பூவேலைகளிழைக்கப்பெற்ற |
| लौहीः अपि | ஸ்வாந்ணமயமான பாத்திரங்களை |
| विस्मिताः | ஆச்சர்யம்கொண்டவர்களாய் |
| ददृशुः | கண்டார்கள். |

बभूवुर्वनपार्श्वेषु कूपाः पायसकर्दमाः । ताश्च कामदुघा गावो द्रुमाश्चासन्मधुसूतः ॥ ६९ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------------|------------|----------------------------|
| वनपार्श्वेषु | வனப்பிரதேசங்களி லிருந்த | ताः गावः च | அங்கிருந்த பசுக்க ளும், |
| कूपाः | கிணறுகள், | कामदुघाः | காமதேனுக்களாயின. |
| पायसकर्दमाः | குழம்புப்பாயஸங்களை யுடையனவாய் | द्रुमाः च | விருகூதங்களும் |
| बभूवुः | விளங்கின. | मधुसूतः | தேனைப்பெருக்குப ஆயின. |
| | | आसन् | [னவாய்] |

वाप्यो मैरेयपूर्णाश्च मृष्टमांसचयैर्वृताः । प्रतप्तपिठरैश्चापि मार्गमायूरकौकुटैः ॥ ७० ॥

| | | | |
|--------------------------|---|----------------------|--|
| वाप्यः | வாவிகள் | प्रतप्तपिठरैः | மதுக்களால் நன்கு கடைந்து |
| मैरेयपूर्णाः च | { 'மைரேய'மெனும் ம துவால் நிறைந்த வைகளாகவும், | मृष्टमांसचयैः अपि | { நன்கு பக்குவமாக்கப் பட்ட மாமிசக்குவி யல்களாலும், |
| मार्गमायूर- कौकुटैः च | { மான், மயில், கோழி இவைகளின் மாமி சங்களாலும், | वृताः | நிறைந்தவைகளாயின. |

पात्रीणां च सहस्राणि स्थालीनां नियुतानि च । न्यर्बुदानि च पात्राणि शतकुम्भमयानि च ॥

स्थाल्यः कुम्भ्यः करम्भ्यश्च दधिपूर्णाः सुसंस्कृताः ।

यौवनस्थस्य गौरस्य कपित्थस्य सुगन्धिनः ॥ ७१ ॥

हृदाः पूर्णा रसालस्य दध्नः श्वेतस्य चापरे । बभूवुः पयसश्चान्ये शर्करायाश्च सञ्चयाः ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------|------------|---|
| पात्रीणां | சமையல்பாத்திரங்களு டைய | सुगन्धिनः | வாசனையுற்றதும் |
| सहस्राणि च | ஆயிரங்களும் | यौवनस्थस्य | புளியாததும், |
| स्थालीनां | வ்யஞ்ஜனபாத்திரங்க ளுடைய | गौरस्य | பரிசுத்தமானதும் |
| नियुतानि च | பத்துலக்ஷங்களும் | रसालस्य | { சர்க்கரையும் வாசனை த்திரவ்யமும் கலக்க ப்பெற்றதும் |
| न्यर्बुदानि | பத்துகோடி | श्वेतस्य | வெண்மையுற்றது மான |
| शतकुम्भमयानि च | பொன் | दध्नः च | தயிராலும் |
| पात्राणि च | தாலங்களும் | अपरे | மற்றும் சில |
| दधिपूर्णाः | தயிர் நிறைந்த | पयसः च | பாலாலும் |
| सुसंस्कृताः | அழகுவாய்ந்த | पूर्णाः | நிறைந்தவைகளாயும் |
| स्थाल्यः | பாத்திரங்களாலும் | शर्करायाः | சர்க்கரையினது |
| करम्भ्यः | தத்தியோதனமுள்ள | सञ्चयाः च | குவியல்களும் |
| कुम्भ्यः च | பாத்திரங்களும், | बभूवुः | இருந்தன. |
| अन्ये हृदाः | சில மடுக்கள் | | |
| कपित्थस्य | விளம்பு | | |

कल्कांश्चूर्णकषायांश्च स्नानानि विविधानि च । ददृशुर्भाजनस्थानि तीर्थेषु सरितां नराः॥

| | | | |
|----------------|---------------------|------------|--------------------------------|
| नराः | மனிதர்கள் | भाजनस्थानि | பாத்திரங்களில் |
| सरितां | நதிகளுடைய | | நிரம்பிய |
| तीर्थेषु | துறைகளில் | विविधानि | பலவகை |
| कल्कान् | நெல்வித்தைதலங்களை | स्नानानि च | ஸ்நானத்திற்கு வேண்டியவைகளையும் |
| चूर्णकषायान् च | வாசனைப்பொடிகளை | ददृशुः | கண்டார்கள். |
| | யும், கஷாயங்களையும் | | |

शुक्लानंशुमतश्चापि दन्तधावनसंचयान् । शुक्लान्श्चन्दनकल्कांश्च समुद्रेष्ववतिष्ठतः ॥ ७५ ॥
 दर्पणान्परिमृष्टान्श्च वाससां चापि संचयान् । पादुकोपानहां चैव युग्मान्यत्र सहस्रशः ॥
 आञ्जनीः कङ्कतान्कूर्वाञ्छत्राणि च धनूंषि च । मर्मत्राणानि चित्राणि शयनान्यासनानि च॥
 प्रतिपानहृदान्पूर्णान्स्वरोष्ट्रगजवाजिनाम् । अवगाह्यसुतीर्थान्श्च हृदान्सोत्पलपुष्करान् ॥ ७८ ॥
 आकाशवर्णप्रतिमान्स्वच्छतोयान्सुखप्लवान् । नीलवैडूर्यवर्णान्श्च मृदून्यवससश्चयान् ॥ ७९ ॥
 निर्वापार्थान्पशूनां ते ददृशुस्तत्र सर्वशः ॥ ८० ॥

| | | | |
|------------------|----------------------------|--------------------------|--|
| तत्र | அவ்விடத்தில் | छत्राणि च | குடைகளையும், |
| ते | அவர்கள் | धनूंषि च | விற்களையும், |
| सर्वशः | எங்கும், | चित्राणि | பலவகை |
| शुक्लान् | வெளுத்த, | मर्मत्राणानि | கவசங்களையும், |
| अंशुमतः | கூர்மையான | शयनानि | படுக்கைகளையும், |
| दन्तधावनसञ्चयान् | பற்குச்சிகளின் கட்டு | आसनानि च | ஆசனங்களையும், |
| अपि | களையும், | स्वरोष्ट्रगज- वाजिनां | கோவேறுகழுதை, ஓட்டகை, யானை, குதிரை இவைகளுக்கு |
| समुद्रेषु | ஸம்புடங்களில் | पूर्णान् | ஏராளமான |
| अवतिष्ठतः | இருக்கும் | प्रतिपानहृदान् | நீரோடைகளையும், |
| शुक्लान् | வெளுத்த | अवगाह्यसुतीर्थान् | இறங்கக்கூடிய துறைகளெல்லாதாய் |
| चन्दनकल्कान् च | சந்தனத்தித்தைதலங்களையும், | सोत्पलपुष्करान् | { நீலோத்பலம், தாமரை இவைகளால் நிரம்பப்பெற்றனவும், |
| परिमृष्टान् | நன்கு துடைத்து வைக்கப்பட்ட | आकाशवर्ण- प्रतिमान् | { ஆகாயவண்ணத்தை யொத்தவைகளும், |
| दर्पणान् च | கண்ணாடிகளையும், | सुखप्लवान् | { நன்கு அமிழ்ந்து ஸ்நானம்செய்யக் கூடியவைகளும், |
| वाससां | ஆடைகளின் | स्वच्छतोयान् | சுத்த தீர்த்தமுள்ளவைகளுமான |
| सञ्चयान् अपि | போர்களையும், | हृदान् च | குளங்களையும், |
| अत्र एव | இவ்விடத்திலேயே | | |
| पादुकोपानहां च | பாதுகை, செருப்பு | | |
| सहस्रशः | பல [இவைகளுடைய | | |
| युग्मानि च | ஜதைகளையும், | | |
| आञ्जनीः | கண்மைகளையும், | | |
| कङ्कतान् | சீப்புகளையும், | | |
| कूर्वाञ् च | மயிற்கற்றைகளையும், | | |
| | (தூசுநீக்கும்கருவிகளை) | | |

पशूनां பிராணிகளுக்கு
निर्वापार्थान् மேயக்கூடிய
नीलवैडूर्यवर्णान् நீலத்தையும், வைடூர்ய
த்தையும் ஒத்த

सृदून् மிருதுவான
यवससञ्चयान् च புற்களின் சமூகங்
களையும்,
वदृशुः கண்டார்கள்.

व्यस्यन्त मनुष्यास्ते स्वप्नकल्पं तदद्भुतम् । दृष्ट्वाऽऽतिथ्यं कृतं तादृग्भरतस्य महर्षिणा ॥

ते அந்த
मनुष्याः மனிதர்கள்
भरतस्य பரதருக்கு
महर्षिणा முனிவர் பெருமானால்
कृतं செய்யப்பட்ட
तत् அந்த
अद्भुतं அத்தபுதமான

आतिथ्यं விருந்தை
तादृक् அப்படியாய்
स्वप्नकल्पं ஸ்வப்னஸ்ருஷ்டி யாய்
दृष्ट्वा எண்ணி,
व्यस्यन्त பிரமைகொண்டார்
கள்.

इत्येषां रममाणानां देवानामिव नन्दने । भरद्वाजाश्रमे रम्ये सा रात्रिव्यत्यवर्तत ॥ ८२ ॥

रम्ये அழகுவாய்ந்த
भरद्वाजाश्रमे பரத்வாஜாச்ரமத்தில்,
नन्दने நந்தனவனத்தில்
देवानां தேவர்கள்
इव எவ்வண்ணமோ, அவ்
வண்ணமே,

एषां இவர்கள்
इति இவ்வாறாக
रममाणानां உத்ஸாகமாயிருக்கை
யில்
सा रात्रिः இந்த இரவு
व्यत्यवर्तत கழிந்தது (ஆர்ஷம்).

प्रतिजमुश्च ता नद्यो गन्धर्वाश्च यथागतम् । भरद्वाजमनुज्ञाप्य ताश्च सर्वा वराङ्गनाः ॥ ८३ ॥

ताः அந்த
नद्यः च நதிகளும்,
गन्धर्वाः च கந்தருவர்களும்,
ताः அந்த
वराङ्गनाः தெய்வப்பெண்கள்

सर्वाः च எல்லோரும்,
भरद्वाजं பரத்வாஜமுனிவரிடம்
अनुज्ञाप्य விடைபெற்று
यथागतं வந்தவாறே
प्रतिजमुः திரும்பிச்சென்றனர்.

तथैव मत्ता मदिरोत्कटा नरास्तथैव दिव्यागरुचन्दनोक्षिताः ।

तथैव दिव्या विविधाः स्रगुत्तमाः पृथक्प्रकीर्णा मनुजैः प्रमर्दिताः ॥ ८४ ॥

नराः மனிதர்கள்
तथा एव முற்றிலும்
मत्ताः திருப்திகொண்டவர்
तथा एव இன்னும் [களாய்,
मदिरोत्कटाः மதுமயக்கம்கொண்ட
तथा एव அப்படியே [வர்களாய்
दिव्यागरु- } திவ்ய அகிற் சந்தனப்
चन्दनोक्षिताः } பூச்சுடையவர்களா
கவுமிருந்தார்கள்.

मनुजैः மனிதர்களால்
पृथक् அவரவர்களால்
प्रकीर्णा எறியப்பட்ட
दिव्याः திவ்ய
विविधाः பல
स्रगुत्तमाः சிறந்த மாலைகள்
प्रमर्दिताः கசங்கிக்கிடந்தன.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे एकनवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5806

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3451

தினவதितம: சர்ட்:—தோண்ணுற்றிரண்டாவது ஸர்க்கம். || ௨௨ ||

சிவகூடபுஸ்தானம்—சித்திரகூடமலைக்குப் புறப்படுவது.

ततस्तां रजनीं व्युष्य भरतः सपरिच्छदः । कृतातिथ्यो भरद्वाजं कामादभिजगाम ह ॥१॥

| | | | |
|------------|-----------------|-----------|-------------------|
| भरतः | பரதர் | व्युष्य | கழித்து |
| कृतातिथ्यः | அதிதிபூஜைபெற்றவ | सपरिच्छदः | பரிவாரத்துடன் |
| | ராய் | कामात् ह | ஸ்வேச்சையாகவே |
| तां | அந்த | भरद्वाजं | பரத்வாஜரிடம் |
| रजनीं | இரவை | अभिजगाम | பத்தியுடன் நடந்து |
| ततः | அவ்விடத்தில் | | சென்றார். |

तमृषिः पुरुषव्याघ्रं प्रेक्ष्य प्राञ्जलिमागतम् । हुताग्निहोत्रो भरतं भरद्वाजोऽभ्यभाषत ॥२॥

| | | | |
|----------------|------------------|------------|--------------------|
| हुताग्निहोत्रः | அக்னிஹோத்திரம் | भरतं | பரதரை |
| | செய்துமுடித்த | प्राञ्जलिं | அஞ்சலிஹஸ்தராய், |
| भरद्वाजः | பரத்வாஜ | आगतं | எதிரிலிருப்பவராய், |
| ऋषिः | முனிவர் | प्रेक्ष्य | கவனித்து |
| तं | அந்த | अभ्यभाषत | பின்வருமாறு முகமன் |
| पुरुषव्याघ्रं | புருஷோத்தமராகும் | | கூறினார் : |

कच्चिदत्र सुखा रात्रिस्तवास्मद्विषये गता । समयस्ते जनः कच्चिदातिथ्ये शंस मेऽनघ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|---------|-------------------|
| अनघ | “புண்ணியாத்மாவே! | ते जनः | உனது பரிவாரம் |
| अत्र | இந்த | आतिथ्ये | விருந்தில் |
| अस्मद्विषये | எமதாச்ரமத்தில் | समयः | பூர்ணதிருப்திகொண் |
| गता रात्रिः | கழிந்த இரவு | | டதென |
| तव सुखा | உனக்கு சுகமென | कच्चित् | எண்ணுகிறேன். |
| कच्चित् | எண்ணுகிறேன். | मे शंस | எனக்குச் சொல்லு.” |

तमुवाचाञ्जलिं कृत्वा भरतोऽभिप्रणम्य च । आश्रमादुपनिष्क्रान्तमृषिमुत्तमतेजसम् ॥४॥

| | | | |
|----------------|----------------------|----------------|------------------|
| भरतः | பரதர் | अभिप्रणम्य च | சேவித்து |
| आश्रमात् | ஆச்ரமத்தினின்று | अञ्जलिं कृत्वा | அஞ்சலிஹஸ்தராகி |
| उपनिष्क्रान्तं | கிட்டி வெளிவந்தவரும் | तं | அவரைப்பார்த்து |
| उत्तमतेजसं | மகாதேஜோவானு | उवाच | பின்வருமாறு மொழி |
| ऋषिं | முனிவரை [மாகும் | | ந்தனர் : |

सुखोषितोऽस्मि भगवन्समग्रबलवाहनः । तर्पितः सर्वकामैश्च सामात्यो बलवत्त्वया ॥ ५ ॥

| | | | |
|----------|--------------------|-----------|---------------------|
| भगवन् | “பகவானே! | समग्रबल- | எல்லா சைனியத்துட |
| अस्मि | அடியேன் | वाहनः | னும் வாகனத்துட |
| सुखोषितः | சுகமே காலங்கடத் | | னும் கூடினவனாய் |
| त्वया | தேவரீரால் [தினேன். | सर्वकामैः | ஸகல மனோதங் |
| बलवत् | யதேஷ்டமாய் | | களாலும் |
| सामात्यः | மந்திரிமார்களோடு | तर्पितः च | திருப்திசெய்விக்கப் |
| | கூடியவனாய் | | பட்டேன். |

அபேதஹ்மஸந்தாபா: சுபிஷா: சுபுதிஸ்ருயா: | அபி ப்ரேஸ்யானுபாடாய சர்த் சஸுஸுஹிபிதா: ||

| | | | |
|------------------------|--|-----------------|-------------------------------------|
| ப்ரேஸ்யாந் அபி | “ பணிவிடை செய்ப வர்களுயும் | சுபிஷா: | யதேஷ்டமாய் புசித் தவர்களாய் |
| உபாடாய | உள்ளிட்ட | சுபுதிஸ்ருயா: | மிகவும் உபசரிக்கப்பெ ற்றவர்களாய் |
| சர்த் | எல்லோரும், | சுஸுஹிபிதா: சஸு | சுகமே காலங்கடத்தி னார்கள். |
| அபேதஹ்ம- ஸந்தாபா: } | சிரமமும், உடம்புவலி யுமொழிந்தவர்களாய் | | |

ஆமந்ருயே த்வா் பஹவந்காமம் த்வமூபிஸத்தம | சமீபம் ப்ரஸ்திதம் ப்ராதுமீதேனேஷஸு சக்ஷுபா || 9 ||

| | | | |
|------------|---------------------------|----------|----------------------------|
| பஹவந் | “ பகவானே ! | த்வா் | தேவரீரிடம் |
| ஐபிஸத்தம | முனிவர்பெருமானே ! | ஆமந்ருயே | பிரார்த்திக்கின்றேன். |
| ப்ராது: | தமையனது | த்வம் | தேவரீர் |
| சமீபம் | சந்நிதிக்கு | மீதேன | குளிர்ந்த |
| ப்ரஸ்திதம் | புறப்பட்ட அடியே னுக்கு | சக்ஷுபா | கண்ணால் |
| காமம் | அனுக்கிரஹத்தை | இஷஸு | கடாக்ஷித்தருளவேண் டும். |

ஆஸ்ரமம் தஸ்ய ஧்ரமஜ் ஧ார்மிகஸ்ய மஹாத்மந: | ஆசக்ஷு கதமோ மார்ட்: கியானிதி ச சஸ் மெ ||

| | | | |
|------------|---|----------|-----------------------------|
| ஧்ரமஜ் | “ தார்மிகரே ! | கியாந் ச | எவ்வளவு தூரமென் பதையும், |
| ஧ார்மிகஸ்ய | தார்மிகரும் | மார்ட்: | போகும் வழி |
| மஹாத்மந: | மகாத்மாவுமாகிய | கதம: இதி | எதுவென்பதையும், |
| தஸ்ய | அவரது | மெ | அடியேனுக்கு |
| ஆஸ்ரமம் | ஆச்ரமத்தைப்பற்றி | சஸ் | கொல்லீராக.” |
| ஆசக்ஷு | { தேவரீர் விவரமாய்ச் சொல்லியருளவேண் டும். | | |

இதி பூஸ்து பரதம் ப்ராதுர்தர்ஸனலாலஸம் | ப்ரதுவாச மஹாதேஜா பரதாஜோ மஹாதபா: || 10 ||

| | | | |
|----------|------------------|-----------------|---|
| மஹாதேஜா: | மகா தேஜஸ்வியும், | ப்ராதுர்தர்ஸன-} | தமையனரை தரிசிப்ப |
| மஹாதபா: | மகா தபஸ்வியுமான | லாலஸம் } | தொன்றையே சிந் தையில் சதா சர்வ முமாய்க்கொண்ட |
| பரதாஜ: | பரத்வாஜமுனிவர் | பரதம் | பரதரைப்பார்த்து |
| இதி | மேற்கண்டவாறு | து | இவ்விஷயத்திலிப்படி |
| பூஸ்து: | வினாவப்பட்டவராய் | ப்ரதுவாச | மொழிந்தனர்: |

பரதார்ததூதீயேபு யோஜனேஷ்வஜனே வநே | சித்ரகூடகிரிஸ்த்ர ரஸ்யநிர்டரகானந: || 11 ||

| | | | |
|----------------|-----------------|---------------|--|
| பரத | “ பரத ! | ரஸ்யநிர்டர- } | அழகிய குகைகளை |
| அர்ததூதீயேபு } | சுமார் இருபதுமை | கானந: } | யும், சோலைகளையு முடைய |
| யோஜனேபு தல } | லுக்கப்பால் | சித்ரகூடகிரி: | சித்திரகூடமென்ற பர்வதமிருக்கின்றது. |
| அஜனே | அதமர்கள் வசியாத | | |
| வநே | வனத்தில் | | |

उत्तरं पार्श्वमासाद्य तस्य मन्दाकिनी नदी । पुष्पितद्रुमसंछन्ना रम्यपुष्पितकानना ॥ ११ ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|----------------|--------------------|
| तस्य | “ அதன் | रम्यपुष्पित- } | அழகிய பூக்களையு |
| उत्तरं | வட | கானா } | டைய சோலைகளையு |
| पार्श्व आसाद्य | பக்கத்தைப்பற்றி | | டைய துமாகிய |
| पुष्पितद्रुम- } | புஷ்பித்த மரங்களால் | मन्दाकिनी | ‘மந்தா கினி’யெனும் |
| संछन्ना } | மறைக்கப்பட்டதும், | नदी | நதியிருக்கிறது. |

अनन्तरं तत्सरितश्चित्रकूटश्च पर्वतः । तयोः पर्णकुटी तात तत्र तौ वसतो ध्रुवम् ॥ १२ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|------------|--------------------|
| तत्सरितः | “ அந்த நதியின் | पर्णकुटी च | பர்ணசாலையுமிருக்கி |
| अनन्तरं | பக்கலில் | तात | குழந்தாய்! [றது. |
| चित्रकूटः | ‘சித்திரகூட’மெனும் | तौ | அவ்விருவர்களும் |
| पर्वतः | பர்வதமும், | तत्र | அதில் |
| तयोः | அவ்விருவர்களுடைய | ध्रुवं | ஸ்திரமாய் |
| | | वसतः | வசிக்கிறார்கள். |

दक्षिणेनैव मार्गेण सव्यदक्षिणमेव च । गजवाजिरथाकीर्णां वाहिनीं वाहिनीपते ॥ १३ ॥

वाहयस्व महाभाग ततो द्रक्ष्यसि राघवम् ॥ १४ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|------------------|-------------------|
| वाहिनीपते | “ சேனைகளுக்குத் | दक्षिणेन | தெற்கு |
| | தலைவ! | मार्गेण एव | வழியே சென்று |
| महाभाग | மகா பாக்யசாலியே! | सव्यदक्षिणं एव च | தென்மேற்கு நோக்கி |
| गजवाजि- } | யானைகள், குதிரை | वाहयस्व | நடத்து. |
| रथाकीर्णां } | கள், ரதங்கள் நிறை | ततः | அப்பொழுது |
| | ந்துள்ள | राघवं | ஸ்ரீராமரை |
| वाहिनीं | சேனையை | द्रक्ष्यसि | நீ காண்பாய்.” |

प्रयाणमिति च श्रुत्वा राजराजस्य योषितः । हित्वा यानानि यानार्हा ब्राह्मणं पर्यवारयन्॥

| | | | |
|-------------|--------------------|------------|-----------------|
| राजराजस्य | சக்கிரவர்த்தியாரது | यानानि | வா ஹனங்களை |
| यानार्हाः | வா ஹனங்களிலிருந்த | हित्वा | விட்டிழிந்து |
| योषितः | மனைவிமார்கள் | ब्राह्मणं | முனிவர்பெருமானை |
| प्रयाणं इति | புறப்பாடு என்பதை | पर्यवारयन् | சூழ்ந்துக்கொண் |
| श्रुत्वा च | கேட்டதுமே | | டார்கள். |

वेपमाना कृशा दीना सह देव्या सुमित्रया । कौसल्या तस्य जग्राह कराभ्यां चरणौ मुनेः॥

| | | | |
|-----------|---------------------|----------|--------------------|
| कृशा | மெலிந்து [கும் | मुनेः | முனிவரது |
| दीना | பரிதாபநிலையிலிருக்- | चरणौ | இரு திருவடிகளையும் |
| कौसल्या | கோஸலாதேவியார் | कराभ्यां | கைகளால் |
| सुमित्रया | ஸுமித்திரா | वेपमाना | நடுக்கமுற்றவளாய் |
| देव्या सह | தேவியாரோடுகூட | जग्राह | தொட்டுத்தொழுத |
| तस्य | அந்த | | னன். |

असमृद्धेन कामेन सर्वलोकस्य गर्हिता । कैकेयी तस्य जग्राह चरणौ सव्यपत्रपा ॥१७॥

| | | | |
|------------|-----------------|------------|---------------------|
| असमृद्धेन | கைகூடப்பெருத | सव्यपत्रपा | துணிவுற்ற மனத்தி |
| कामेन | மனோரதத்தால் | तस्य | அவரது [னளாய் |
| सर्वलोकस्य | உலகிலெவனுக்கும் | चरणौ | திருவடிகளில் |
| गर्हिता | இழிவான | जग्राह | விழுந்துசேவித்தனள். |
| कैकेयी | கைகேயி | | |

तं प्रदक्षिणमागम्य भगवन्तं महामुनिम् । अदूराद्धरतस्यैव तस्यो दीनमनास्तदा ॥ १८ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|------------------|-----------|
| तदा | அப்பொழுது | तं | அவரை |
| दीनमनाः | ஏக்கம் பிடித்த மன | प्रदक्षिणं आगम्य | வலம்வந்து |
| | முடைய அவள், | भरतस्य | பரதருடைய |
| भगवन्तं | பூஜ்யரும் | अदूरात् एव | அருகிலேயே |
| महामुनिं | முனிவர்பெருமானு | तस्यो | நின்றனள். |
| | மாகும் | | |

ततः पप्रच्छ भरतं भरद्वाजो दृढव्रतः । विशेषं ज्ञातुमिच्छामि मातृणां तव राघव ॥ १९ ॥

| | | | |
|----------|--------------------|---------|-------------------|
| ततः | அச்சமயத்தில் | राघव | “பரத! |
| दृढव्रतः | உறுதியான தர்மானு | तव | உனது |
| | ஷ்டானமுடைய | मातृणां | தாய்மார்களுள் [தை |
| भरद्वाजः | பரத்வாஜமுனிவர் | विशेषं | ‘யார் இன்னொரென்ப- |
| भरतं | பரதரைப்பார்த்து | ज्ञातुं | கொரிந்துகொள்ள |
| पप्रच्छ | பின்வருமாறு வினாவி | इच्छामि | வேண்டுகிறேன்.” |
| | னார்: | | |

एवमुक्तस्तु भरतो भरद्वाजेन धार्मिकः । उवाच प्राञ्जलिभूत्वा वाक्यं वचनकोविदः॥२०॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-------------------|-----------------|
| भरद्वाजेन | பரத்வாஜமுனிவரால் | धार्मिकः तु | தார்மிகருமாகிய |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | भरतः | பரதர் |
| उक्तः | வினாவப்பட்டவரும், | प्राञ्जलिः भूत्वा | அஞ்சலிஹஸ்தராகி |
| | வசனங்களின் துட்ப | वाक्यं | பின்வரும் பதிகை |
| वचनकोविदः | { ங்களை அறிவதில் | उवाच | மொழிந்தார்: |
| | நிபுணரும், | | |

यामिमां भगवन्दीनां शोकानशनकश्चिताम् । पितुर्हि महिषीं देवीं देवतामिव पश्यसि ॥
एषा तं पुरुषव्याघ्रं सिंहविक्रान्तगामिनम् । कौसल्या सुषुवे रामं धातारमदितिर्यथा॥२२॥

| | | | |
|--------------|---------------------|---------------------|----------------------|
| भगवन् | “பகவானே! | पश्यसि | தேவரீ! திருவுளத்தில் |
| इमां | இதோவிருக்கும் | | பற்றுகிறீரோ, |
| देवतां इव | தேவதைபோன்ற | एषा हि | அவள்தான் |
| | வளரும், | सिंहविक्रान्तगामिनं | செங்கம்போன்ற நடை |
| पितुः | திருத்தந்தையினது | | யுடையவரும் |
| महिषीं देवीं | பட்டமகிஷியுமாகிய | पुरुषव्याघ्रं | புருஷோத்தமருமாகிய |
| यां | எவளை | तं रामं | அந்த ஸ்ரீராமரை, |
| शोकानशन-) | சோகத்தால் உணவின் | अदितिः | அதிதிக்கவியார் |
| कश्चितां) | றி இளைத்திருப்பவ | धातारं यथा | உபேந்திரரை எப்படி |
| | ளாய், | | யோ அப்படியே, |
| दीनां | பரிதாபநிலையிலிருப்ப | सुषुवे | பெற்றாள். |
| | வளாய், | कौसल्या | கௌஸலை என்பது |
| | | | பெயர். |

अस्या वामभुजं श्लिष्टा यैषा तिष्ठति दुर्मनाः । कर्णिकारस्य शाखेव शीर्णपुष्पा वनान्तरे ॥
एतस्यास्तु सुतौ देव्याः कुमारौ देववर्णिनौ । उभौ लक्ष्मणशत्रुघ्नौ वीरौ सत्यपराक्रमौ ॥

अस्याः “ இவளது
वामभुजं இடதுகையை
श्लिष्टा பற்றியிருக்கிறவளாய்
एषा இதோவிருக்கிற
या எவள்
दुर्मनाः மனம் நொந்தவளாய்
वनान्तरे காட்டில்
शीर्णपुष्पा உதிர்ந்த புஷ்பங்களை
யுடைய
कर्णिकारस्य கர்ணிகாரவிருகைத்
शाखा इव கிளைபோல் [தினது
तिष्ठति நிற்கிறாளோ,

एतस्याः இந்த
देव्याः தேவியாருக்கு
देववर्णिनौ தேவஒளிகொண்ட
வர்களும்,
वीरौ (தரும)வீரர்களும்,
सत्यपराक्रमौ வீண்போகா பராக்கிர
மமுடையவர்களு
மான
लक्ष्मणशत्रुघ्नौ லக்ஷ்மணன், சத்ருக்
னனாகிய
उभौ तु இருவர்களும்
कुमारौ திருக்குமாரர்களாய்
सुतौ பிறந்தனர்கள்.

यस्याः कृते नरव्याघ्रौ जीवनाशमितो गतौ । राजा पुत्रविहीनश्च स्वर्गं दशरथो गतः ॥
क्रोधनामकृतप्रज्ञां हृष्टां सुभगमानिनीम् । ऐश्वर्यकामां कैकेयीमनार्यामार्यरूपिणीम् ॥२६॥
ममैतां मातरं विद्धि नृशंसां पापनिश्चयाम् । यतोमूलं हि पश्यामि व्यसनं महदात्मनः ॥

यस्याः “ எவளது
कृते காரணமாக
नरव्याघ्रौ புருஷோத்தமரிருவர்
इतः இவ்விடத்தில் [களும்
जीवनाशं உயிர்வாழ்வு நிஷ்பர
யோஜனமாயிருத்தலை
गतौ அடைந்திருக்கின்றார்
दशरथः தசரத [களோ,
राजा சக்கரவர்த்தியார்
पुत्रविहीनः च புதல்வனை விட்டுப்பி
ரிந்தவரானதால்
स्वर्गं பரலோகத்திற்கு
சென்றனரோ,
एतां இவளை
मम அடியேனது
मातरं தாயாகிய
कैकेयी கைகேயிதேவியாரை
னவும்,
क्रोधनां கோபிஷ்டை எனவும்,
अकृतप्रज्ञां திருத்தமடையாத அ
றிவுடையவளெனவும்

हृष्टां கர்விஷ்டையெனவும்,
सुभगमानिनीं { தன்னைக் கட்டழகி
எனக் கருதுகிறவ
ளெனவும்,
ऐश्वर्यकामां { ராஜ்யா திகாரமொன்
றையே சர்வமுமாய்க்
கொண்டவளெனவும்
आर्यरूपिणीं { பெருந்தன்மையுள்ள
வள் போன்றவள்
(ஆனால்)
अनार्यां { பெருந்தன்மை அற்ற
வளெனவும்,
नृशंसां { ஈவிரக்கமின்றி
पापनिश्चयां { பாபத்தில் துணிந்து
விட்டவளெனவும்,
विद्धि அறிவீராக.
यतोमूलं இவளால்தான்
आत्मनः அடியேனுக்கு
महत् பெரும்
व्यसनं हि ஆபத்தென
पश्यामि எண்ணுகிறேன்.”

इत्युक्त्वा नरशार्दूलो बाष्पाद्दया गिरा । स निश्वास ताम्राक्षः क्रुद्धो नाग इवासकृत् ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|---------------------|
| ச: | அந்த | बाष्पाद्दया | கண்ணீரால் தழுதழு |
| नरशार्दूलः | புருஷோத்தமர் | गिरा | சொற்கொண்டு [த்த |
| क्रुद्धः | சினங்கொண்டவராய் | उक्त्वा | பதில்கூறிவிட்டு |
| ताम्राक्षः | சிவந்த கண்களுற்றவ | नागः इव | சர்ப்பம்போல் |
| | ராய் | असकृत् | விட்டு விட்டு |
| इति | மேற்கண்டவாறு | निश्वास | பெருமூச்செறிந்தார். |

भरद्वाजो महर्षिस्तं ब्रुवन्तं भरतं तदा । प्रत्युवाच महाबुद्धिरिदं वचनमर्थवत् ॥ २९ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|----------------------------|
| महाबुद्धिः | மகா புத்திமானாகிய | तं | அந்த |
| भरद्वाजः | பரத்வாஜ | भरतं | பரதரைப் பார்த்து |
| महर्षिः | முனிவர் பெருமான் | अर्थवत् | நல்ல பயனளிக்கப் போகிறதை |
| तदा | இச்சமயத்தில் | प्रत्युवाच | பின்வருமாறு |
| इदं वचनं | இந்தச் சொல்லை | | மொழிந்தார் : |
| ब्रुवन्तं | சொல்லிய | | |

न दोषेणावगन्तव्या कैकेयी भरत त्वया । रामप्रवाजनं ह्येतत्सुखोदकं भविष्यति ॥ ३० ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-------------|------------------------------------|
| भरत | “பரத! | एतत् | இந்த |
| कैकेयी | கைகேயீதேவியார் | रामप्रवाजनं | ஸ்ரீராமரைக் காட்டிற் கனுப்பியது |
| त्वया | உன்னால் | सुखोदकं | பெரும் நன்மையை விளைவிக்கிறதாக |
| दोषेण | கெட்ட கருத்துடன் | भविष्यति | ஆகப்போகிறது. |
| अवगन्तव्या न | அறியத்தக்கவளில்லை. | | |
| हि | ஏனெனில் | | |

देवानां दानवानां च ऋषीणां भावितात्मनाम् । हितमेव भविष्यद्दि रामप्रवाजनादिह ॥

| | | | |
|------------------|---|--------------|--------------------------|
| रामप्रवाजनात् हि | “ஸ்ரீராமரைக் காட்டிற் கனுப்பியதால்தான் | भावितात्मनां | ஆம்மஸாசூத்காரம் பெற்ற |
| इह | இவ்வுலகில் | ऋषीणां च | ரிஷிகளுக்கும் |
| देवानां | தேவர்களுக்கும், | हितं एव | நன்மையாகவே |
| दानवानां | அசுரர்களுக்கும், | भविष्यत् | ஆகப்போகிறது.” |

अभिवाद्य तु संसिद्धः कृत्वा चैनं प्रदक्षिणम् । आमन्त्र्य भरतः सैन्यं युज्यतामित्यचोदयत् ॥

| | | | |
|---------------------|-----------------------------|-----------|------------------------|
| संसिद्धः | மகா புண்ணியர்த்மா வாகும் | आमन्त्र्य | விடைபெற்றுக் கொண்டு |
| भरतः | பரதர் | सैन्यं | ‘சேனை |
| एनं | இவரை | युज्यतां | ஒன்று சேர்க்கப்பட்ட |
| प्रदक्षिणं कृत्वा च | வலம்வந்து | इति | என்று [டும்’ |
| अभिवाद्य तु | நமஸ்கரித்து | अचोदयत् | ஏவினார். |

ततो वाजिरथान्युक्तान् दिव्यान्हेमपरिष्कृतान् । अध्यारोहत्प्रयाणार्थी बहून्बहुविधो जनः॥

ततः अப்பொழுது
प्रयाणार्थी பிரயாணமாகவே
बहुविधः பல [ண்டிய
जनः ஜனங்களும்,
हेमपरिष्कृतान् பொன்னுலலங்கரிக்கப்
பட்டவைகளும்,

दिव्यान् அழகுள்ளவைகளும்,
बहून् பல
युक्तान् வேலைப்பாடுள்ளவை
களிடான
वाजिरथान् குதிரைகள் பூட்டிய
ரதங்களில்
अध्यारोहत् ஏறிக்கொண்டனர்.

गजकन्या गजाश्चैव हेमकक्ष्याः पताकिनः । जीमूता इव घर्मान्ते सघोषाः संप्रतस्थिरे ॥

गजाः யானைகளும்,
गजकन्याः च பெண்யானைக்குட்டி
களும்,
हेमकक्ष्याः பொன்கச்சைகளையு
டையவைகளாய்,

पताकिनः த்வஜத்தையுடைய
வைகளாய்,
घर्मान्ते एव கார்காலத்தில்
जीमूताः इव மேகங்கள்போல்
सघोषाः சப்திக்கின்றவைக
संप्रतस्थिरे புறப்பட்டன. [ளாய்

विविधान्यपि यानानि महान्ति च लघूनि च । प्रययुः सुमहार्हाणि पादैरेव पदातयः ॥

महान्ति च பெரியவைகளும்,
लघूनि च சிறியவைகளும்,
विविधानि பலவகைப்பட்டவை
களும்,
सुमहार्हाणि अपि மிக விலையுயர்ந்தவை
களிடான

यानानि வாகனங்களிலேறிக்
கொண்டும்,
पदातयः பதாதிகள்
पादैः एव நடையாகவுமீ,
प्रययुः சென்றனர்.

अथ यानप्रवेकैस्तु कौसल्याप्रमुखाः स्त्रियः । रामदर्शनकाक्षिण्यः प्रययुर्मुदितास्तदा ॥

रामदर्शनकाक्षिण्यः ஸ்ரீராமரைக்காண
விரும்பிய
कौसल्याप्रमुखाः கோஸலாதேவியாரை
த்தலைமையாகவுடைய
स्त्रियः மனைவிமார்கள்

मुदिताः சந்தோஷமுடையவர்
களாய்
यानप्रवेकैः तु மிகச் சிறந்த வாகனங்
களிலேறிக்கொண்டு
अथ பின்னர்
तदा அப்பொழுது
प्रययुः சென்றார்கள்.

स चार्कतरुणाभासां नियुक्तां शिविकां शुभाम् । आस्थाय प्रययौ श्रीमान्भरतः सपरिच्छदः॥

सः அந்த
श्रीमान् ஸ்ரீமானான
भरतः பரதர்,
नियुक्तां தனத்தனது
अर्कतरुणाभासां உதிக்கும் சூரியனது
ஒளியுடையதாய்

शुभा அழகான
शिविकां சிவிகையில்
आस्थाय அமர்ந்து
सपरिच्छदः च பரிவாரங்களுடன்
கூட
प्रययौ சென்றார்.

सा प्रयाता महासेना गजवाजिरथाकुला । दक्षिणां दिशमावृत्य महामेघ इवोत्थितः॥३८॥

| | | | |
|---------------|--|---------------|--------------------|
| गजवाजिरथाकुला | { याணைகள், குதிரைகள், ரதங்கள் இவைகளால் நிறைந்த | महामेघः इव | பெருமேகம்போல, |
| सा | அந்த | दक्षिणां दिशं | தென் திசையை |
| महासेना | பெருஞ்சேனையானது | आवृत्य | வெகுதூரமாக்கிரமித் |
| उत्थितः | ஆகாயத்திலெழும்பிய | | துக்கொண்டு |
| | | प्रयाता | சென்றது. |

वनानि तु व्यतिक्रम्य जुष्टानि मृगपक्षिभिः । गङ्गायाः परवेलायां गिरिष्वपि नदीषु च ॥

सा संप्रहृष्टद्विजवाजियोधा वित्रासयन्ती मृगपक्षिसङ्घान् ।

महद्वनं तत्प्रतिगाहमाना रराज सेना भरतस्य तत्र ॥ ४० ॥

| | | | |
|--------------------------------|---|-----------------|---|
| भरतस्य | பரதருடைய | मृगपक्षिभिः | மிருகங்களாலும் பற |
| संप्रहृष्टद्विज- वाजियोधा } | மிகவுற்சாகம்கொண் ட யாணைகளையும், கு திரைகளையும், போர் வீரர்களையுமுடைய | जुष्टानि | அடர்ந்த [வைகளாலும் |
| सा | அந்த | वनानि तु | வனங்களிலும். |
| सेना | ஸேனையானது | व्यतिक्रम्य | காலதாமதம் செய்யா |
| तव | அப்பொழுது | तत् | அந்த [து கடந்து |
| गङ्गायाः | கங்காநதியினது | महत् वनं | பெரும்வனத்தில் |
| परवेलायां | அக்கரையில் | मृगपक्षिसङ्घान् | { மிருகங்கள், பక్షிகள் இவைகளின் கூட்டங் களை |
| गिरिषु अपि | மலைகளிலும், | वित्वासयन्ती | பயமுறுத்திக் |
| नदीषु च | நதிகளிலும், | प्रतिगाहमाना | புகுத்தாய் [கொண்டு |
| | | रराज | முதலிற்சென்றது. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे द्विनवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5846

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3491



त्रिनवतितमः सर्गः—தொண்ணூற்றுமூன்றாவது ஸர்க்கம் ॥ २३ ॥

श्रीरामाश्रमविचयः—ஸ்ரீராமரது ஆசிரமத்தைத் தேவேது.

तया महत्या यायिन्या ध्वजिन्या वनवासिनः । अदिता यूथपा मत्ताः सयूथाः संप्रदुद्रुवुः॥

| | | | |
|----------|-------------------|----------------|-------------------------|
| वनवासिनः | வனத்திலிருந்த | ध्वजिन्या | சேனையால் |
| मत्ताः | கொழுத்த | अदिताः | பயமுறுத்தப்பட்ட |
| यूथपाः | யாணைகள் | | வைகளாய் |
| यायिन्या | சென்றுகொண்டிருந்த | सयूथाः | தங்கள் கூட்டங்க ளோடு |
| महत्या | பெரிய | संप्रदुद्रुवुः | இங்கு மங்குமோடின. |
| तया | அந்த | | |

ऋक्षाः पृषतसङ्घाश्च सरवश्च समन्ततः । दृश्यन्ते वनराजीषु गिरिष्वपि नदीषु च ॥ २ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|--------------|--------------------|
| वनराजीषु | காட்டிற் போகும் வழி | ऋक्षाः | காடிகளும், |
| नदीषु च | நதிகளிலும் [களில் | पृषतसङ्घाः च | புள்ளிமான் கூட்டங் |
| गिरिषु अपि | மலைகளிலும் | | களும், |
| समन्ततः | எல்லாப் பக்கங்களிலும் | सरवः च | கலைமான்களும், |
| | | दृश्यन्ते | காணப்படுகின்றன. |

स संप्रतस्थे धर्मात्मा प्रीतो दशरथात्मजः । वृतो महत्या यायिन्या सेनया चतुरङ्गया ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|-------------------|
| दशरथात्मजः | தசரதசக்கிரவர்த்தி | यायिन्या | சென்றுகொண்டிருக்க |
| | யாரின் குமாரரும், | महत्या | பெரிய [கும் |
| प्रीतः | நண்பரும், | चतुरङ्गया | சதுரங்க |
| धर्मात्मा | தர்மாத்மாவும் | सेनया | சேனையால் |
| सः | அவர் | वृतः | குழப்பட்டவராய் |
| | | संप्रतस्थे | பிரயாணம்செய்தார். |

सागरौघनिभा सेना भरतस्य महात्मनः । महीं संछादयामास प्रावृषि घामिवाम्बुदः ॥

| | | | |
|------------|----------------|------------|------------|
| महात्मनः | மகாத்மாவாகிய | अम्बुदः | மேகமானது |
| भरतस्य | பரதருடைய | घां | ஆகாசத்தை |
| सागरौघनिभा | சமுத்திரம்போல் | इव | எவ்வண்ணமோ, |
| | விசாலமான | | அவ்வண்ணமே |
| सेना | ஸேனையானது | महीं | பூதலத்தை |
| प्रावृषि | கார்காலத்தில் | संछादयामास | மறைத்தது. |

तुरङ्गौघैरवतता वारणैश्च महाजवैः । अनालक्ष्या चिरं कालं तस्मिन्काले बभूव भूः ॥५॥

| | | | |
|------------|------------------|------------|--------------------|
| तस्मिन् | அந்த | अवतता | நிரம்பிய |
| काले | சமயத்தில் | भूः | பூமியானது |
| महाजवैः | வெகு வேகமுள்ள | चिरं कालं | நெடுநேரம் |
| तुरङ्गौघैः | குதிரைக்கூட்டங்க | अनालक्ष्या | கண்ணுக்கு புலப்படா |
| | ளா லும், | | ததாய் |
| वारणैः च | யானைகளா லும் | बभूव | இருந்தது. |

स यात्वा दूरमध्वानं सुपरिश्रान्तवाहनः । उवाच भरतः श्रीमान्वसिष्ठं मन्त्रिणां वरम् ॥

| | | | |
|-------------------|-----------------|----------------|----------------|
| सः | அந்த | यात्वा | கடந்து |
| श्रीमान् | ஸ்ரீமானான | मन्त्रिणां वरं | ஆலோசனை சொல்பவ |
| भरतः | பரதர் | | ருள் உத்தமரான |
| सुपरिश्रान्तवाहनः | மிக சிரமத்துடன் | वसिष्ठं | வலிவீடபகவானைப் |
| | சேனையை நடத்தி | | பார்த்து |
| | வந்தவராய் | उवाच | பின்வருமாறு |
| दूरं अध्वानं | வெகுதூரம் | | மொழிந்தார் : |

तादृशं लक्ष्यते रूपं यथा चैव श्रुतं मया । व्यक्तं प्राप्ताः स्म तं देशं भरद्वाजो यमब्रवीत् ॥

| | | | |
|----------|----------------|---------------|-----------------|
| तादृशं | “அந்த | यथा श्रुतं एव | தெரிந்துகொள்ளப் |
| रूपं | சின்னம் | | பட்டபடியே |
| लक्ष्यते | காணப்படுகிறது. | तं | அந்த |
| भरद्वाजः | பரத்வாஜமுனிவர் | देशं च | இடத்திற்கே |
| यं | எதை | व्यक्तं | நிச்சயமாய் |
| अब्रवीत् | சொன்னாரோ, | प्राप्ताः स्म | வந்துசேர்ந்து |
| मया | என்னால் | | விட்டோம். |

अयं गिरिशिखरकूट इयं मन्दाकिनी नदी । एतत्प्रकाशते दूरान्नीलमेघनिभं वनम् ॥ ८ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|------------|------------------|
| अयं | “இந்த | नीलमेघनिभं | கார்டேகத்தையொத்த |
| गिरिः | மலைதான் | एतत् | இந்த |
| चिखरकूटः | சித்திரகூடமென்பது. | वनं | வனமானது |
| इयं | இந்த | दूरात् | இதோ |
| नदी | நதிதான் | प्रकाशते | கண்ணுக்கு புலப் |
| मन्दाकिनी | மந்தாகினியென்பது. | | படுகிறது. |

गिरेः सानूनि रम्याणि चित्तकूटस्य संप्रति । वारणैरवमृद्यन्ते मामकैः पर्वतोपमैः ॥ ९ ॥

| | | | |
|-------------|------------|-------------|------------------|
| सम्प्रति | “இப்பொழுது | पर्वतोपमैः | மலைகளையொத்த |
| चित्तकूटस्य | சித்திரகூட | मामकैः | எனது |
| गिरेः | மலையினது | वारणैः | யானைகளால் |
| रम्याणि | அழகிய | अवमृद्यन्ते | ஆக்கிரமிக்கப்படு |
| सानूनि | தாழ்வரைகள் | | கின்றன. |

मुञ्चन्ति कुसुमान्येते नगाः पर्वतसानुषु । नीला इवातपापाये तोयं तोयधरा घनाः ॥ १० ॥

| | | | |
|----------|---------------|-------------|-------------------|
| एते | “அந்த | तोयं इव | ஜலத்தை எவ்வண்ண |
| नगाः | மரங்கள் | | மேடா எவ்வண்ணமே |
| आतपापाये | கார்காலத்தில் | पर्वतसानुषु | மலைத்தாழ்வரைகளில் |
| नीलाः | கருத்த | कुसुमानि | புஷ்பங்களை |
| तोयधराः | நீர்கொண்ட | मुञ्चन्ति | சொர்கின்றன. |
| घनाः | மேகங்கள் | | |

किन्नराचरितोद्देशं पश्य शत्रुघ्न पर्वतम् । हयैः समन्तादाकीर्णं मकरैरिव सागरम् ॥ ११ ॥

| | | | |
|----------|---|--------------------|------------------------|
| शत्रुघ्न | “சத்ருக்ன ! | हयैः | குதிரைகளால் |
| पर्वतं | பர்வதத்தை | आकीर्णं | நிரம்பியிருக்கிறதாயும் |
| समन्तात् | நான்குபக்கங்களிலும் | किन्नराचरितोद्देशं | கின்னரர்கள் சஞ்சரிக் |
| सागरं | சமுத்திரம் | | கும் இடமாகவும் |
| मकरैः इव | { சுருமீன்களால் எவ் வண்ணமோ ஆவ் வண்ணமே | पश्य | கவனி. |

एते मृगगणा भान्ति शीघ्रवेगाः प्रचोदिताः ।

एते “இதோ விருக்கும்
मृगगणाः மான்கூட்டங்கள்
शरदि சரத்காலத்தில்
अम्बरे ஆகாயத்தில்
वायुप्रविद्धाः வாயுவால் தாக்கப்
பட்ட

मेघजालाः மேகராசிகள்

कुर्वन्ति कुसुमापीडाञ्छिरःसु सुरभीनमी । मेघप्रकाशैः फलकैर्दाक्षिणात्या यथा नराः ॥

अमी “இந்த
नराः மனிதர்கள்
मेघप्रकाशैः மேகத்தை நிகர்த்த
फलकैः கேடகங்களோடு
दाक्षिणात्याः नराः தென்னாட்டவர்கள்
यथा போல

वायुप्रविद्धाः शरदि मेघजाला इवाम्बरे ॥

इव எவ்வண்ணமோ
அவ்வண்ணமே
प्रचोदिताः கலக்கப்பட்டவைக
ளாய்
शीघ्रवेगाः அதிவேகமாய் ஓடுகின்
றவைகளாய்
भान्ति தோன்றுகின்றன.

शिरस्सु தலைகளில்
सुरभीन् நல்ல வாசனையுள்ள
कुसुमापीडान् புஷ்பசிரோபூஷணங்
களை
कुर्वन्ति செய்துகொள்ளுகி
றார்கள்.

निष्कूजमिव भूत्वेदं वनं घोरप्रदर्शनम् । अयोध्येव जनाकीर्णा संप्रति प्रतिभाति मे ॥१४॥

निष्कूजं “நிச்சுப்தமாய்
इव முற்றிலும்
घोरप्रदर्शनं பயங்கரமாய்
भूत्वा இருந்த
इदं இந்த
वनं காடானது

संप्रति இப்பொழுது
जनाकीर्णा ஜனங்கள் நிறைந்த
अयोध्या इव அயோத்திமாநகர்
போல்
मे எனக்கு
प्रतिभाति தோற்றுகின்றது.

खुरैरुदीरितो रेणुर्दिवं प्रच्छाद्य तिष्ठति । तं वहत्यनिलः शीघ्रं कुर्वन्निव मम प्रियम् ॥१५॥

खुरैः “குளம்புகளால்
उदीरितः கிளப்பப்பட்ட
रेणुः தூளி
दिवं ஆகாயத்தை
प्रच्छाद्य அளாவி
तिष्ठति நிற்கின்றது.

तं அதை
अनिलः காற்று
मम எனக்கு
प्रियं இதத்தை
कुर्वन् इव செய்கிறதுபோல
शीघ्रं சீக்கிரத்திலேயே
वहति போக்குகிறது.

स्यन्दनांस्तुरगोपेतान्सूतमुख्यैरधिष्ठितान् । एतान्संपततः शीघ्रं पश्य शत्रुघ्न कानने ॥१६॥

शत्रुघ्न “சத்ருக்ன!
कानने காட்டிலும்
एतान् இந்த
स्यन्दनान् ரதங்களை
तुरगोपेतान् குதிரைகள் பூட்டப்
பெற்றனவாய்,

सूतमुख्यैः சிறந்த சாரதிகளால்
अधिष्ठितान् செலுத்தப்பட்டன
வாய்,
शीघ्रं விரைந்து
सम्पततः செல்லுகின்றனவாய்
पश्य கவனி.

एतान्वित्रासितान्पश्य बर्हिणः प्रियदर्शनान् । एनमाविशतः शैलमधिवासं पतत्रिणाम् ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|---------|------------------|
| एतान् | “ இந்த | अधिवासं | வாஸஸ்தானமாகிய |
| प्रियदर्शनान् | அழகான | एनं | இந்த |
| बर्हिणः | மயில்களை, | शैलं | பர்வதத்தினுள் |
| वित्रासितान् | பயமுறுத்தப்பட்டு, | आविशतः | புகுகின்றவைகளாய் |
| पतत्रिणां | பகடிகளுக்கு | पश्य | கவனி. |

अतिमात्रमयं देशो मनोज्ञः प्रतिभाति मे । तापसानां निवासोऽयं व्यक्तं स्वर्गपथो यथा ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|-----------|------------------|
| अयं | “ இந்த | मे | எனக்கு |
| देशः | பிரதேசமானது | प्रतिभाति | தோற்றுகிறது. |
| स्वर्गपथः यथा | ஸ்வர்க்கம்போலவே | अयं | இது |
| अतिमात्रं | மிகவும் | तापसानां | தபஸிகளுக்கு |
| मनोज्ञः | மனதைக்கவருகிற | व्यक्तं | ஏற்ற |
| | தாய் | निवासः | இடமாயிருக்கிறது. |

मृगा मृगीभिः सहिता बहवः पृषता वने । मनोज्ञरूपा दृश्यन्ते कुसुमैरिव चित्रिताः ॥१९॥

| | | | |
|--------------|------------------|-------------|------------------------|
| वने | “ காட்டில் | चित्रिताः | அலங்கரிக்கப்பட்ட |
| पृषताः मृगाः | புள்ளிமாண்கள் | | வைகள் |
| बहवः | அனேகம் | इव | போல |
| मृगीभिः | பெண்மாண்களோடு | मनोज्ञरूपाः | அழகிய உருவமுடையவைகளாய் |
| सहिताः | கூடினவைகளாகவும், | दृश्यन्ते | காணப்படுகின்றன. |
| कुसुमैः | பூக்களால் | | |

साधु सैन्याः प्रतिष्ठन्तां विचिन्वन्तु च काननम् । यथा तौ पुरुषव्याघ्रौ दृश्येते रामलक्ष्मणौ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|----------------|--------------------|
| साधुसैन्याः | “ தேர்ந்த வீரர்கள் | पुरुषव्याघ्रौ | புருஷோத்தமர்களாகிற |
| काननं | காட்டில் | | |
| प्रतिष्ठन्तां | முந்திச்செல்லட்டும். | रामलक्ष्मणौ | ராமலக்ஷ்மணர்கள் |
| तौ | அந்த | दृश्येते यथा च | புலனாகும்வரை |
| | | विचिन्वन्तु | தேடட்டும்.” |

भरतस्य वचः श्रुत्वा पुरुषाः शस्त्रपाणयः । विविशुस्तद्वनं शूरा धूमं च ददृशुस्ततः ॥२१॥

| | | | |
|-------------|-------------------|---------|----------------|
| शूराः | சூரர்களும், | तत् | அந்த |
| शस्त्रपाणयः | ஆயுதபாணிகளுமா | वनं | காட்டிற்குள் |
| पुरुषाः | மேலதிகாரிகள் [கிய | विविशुः | புகுந்தார்கள். |
| भरतस्य | பரதருடைய | ततः | அவ்விடத்தில் |
| वचः | நியமனத்தை | धूमं च | புகையை |
| श्रुत्वा | சிரமேற்கொண்டு | ददृशुः | கண்டனர். |

ते समालोक्य धूमाग्रमूचुर्भरतमागताः । नामनुष्ये भवत्यग्निर्यत्कमत्रैव राघवौ ॥ २२ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|----------|--------------------|
| ते | அவர்கள் | अमनुष्ये | “மனிதரில்லாத |
| धूमाग्रं | புகைச்சிகையை | अग्निः | நெருப்பு [இடத்தில் |
| समालोक्य | கவனித்து, | भवति न | இராது. |
| भरतं | பரதரிடம் | अत एव | இவ்விடத்தில்தான் |
| आगताः | திரும்பிவந்து | व्यक्तं | நிச்சயமாக |
| ऊचुः | பின்வருமாறு | राघवौ | ராகவர்களிருக்க |
| | தெரிவித்தார்கள் : | | வேண்டும். |

अथ नात्र नरव्याघ्रौ राजपुत्रौ परन्तपौ । अन्ये रामोपमाः सन्ति व्यक्तमत्र तपस्विनः ॥

| | | | |
|------------|--|----------|------------------|
| परन्तपौ | “சத்துருக்களைத் தபி க்கச்செய்யும் | न अथ | இல்லாதபகைத்தில், |
| नरव्याघ्रौ | புருஷோத்தமர்களா கும் | अत | இவ்விடத்தில் |
| राजपुत्रौ | { சக்கிரவர்த்தியாரின் திருக்குமாரர்கள் இருவர்களும் | अन्ये | வேறு யாரோ |
| अत | இவ்விடத்தில் | रामोपमाः | ஸ்ரீராமரையொத்த |
| | | तपस्विनः | தபசிகள் |
| | | व्यक्तं | நிச்சயமாய் |
| | | सन्ति | இருக்கவேண்டும்”, |

तच्छ्रुत्वा भरतस्तेषां वचनं साधुसम्मतम् । सैन्यानुवाच सर्वोस्तानमित्रबलमर्दनः ॥ २४ ॥

| | | | |
|----------------|------------------------------|----------|----------------|
| अमित्रबलमर्दनः | பகைவர் பலத்தை ஒ ழிக்கும் | श्रुत्वा | கேட்டு, |
| भरतः | பரதர், | तान् | அந்த |
| तेषां | அவர்களுடைய | सैन्यान् | சேனைகள் |
| तत् | அந்த | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| साधुसम्मतं | ஏற்றகாரணங்களுட னிருக்கும் | | பார்த்து |
| वचनं | வார்த்தையை | उवाच | பின்வருமாறு |
| | | | ஆக்ஞாபித்தார்: |

यत्ता भवन्तस्तिष्ठन्तु नेतो गन्तव्यमग्रतः । अहमेव गमिष्यामि सुमन्त्रो धृतिरेव च ॥ २५ ॥

| | | | |
|------------|----------------|-----------|-----------------------------|
| भवन्तः | “நீங்கள் | गमिष्यामि | முந்திச்செல்லுகின் றேன். |
| इतः अग्रतः | இதற்குமேல் | सुमन्त्रः | சுமந்திரரும் |
| गन्तव्यं न | செல்லக்கூடாது. | धृतिः च | தருதி என்னும் |
| यत्ताः | தயாராக | | மந்திரியும் |
| तिष्ठन्तु | காத்திருங்கள். | एव | அப்படியே கூட |
| अहं एव | நான்மட்டும் | | வரட்டும்.” |

एवमुक्तास्ततः सर्वे तत्र तस्थुः समन्ततः । भरतो यत्र धूमाग्रं तत्र दृष्टिं समादधात् ॥ २६ ॥

தத: அப்பொழுது
எவ் மேற்கண்டவாறு
உக்தா: நியமனம்பெற்ற
சर्वे எல்லோரும்
तत्र அவ்விடத்தில்
समन्तत: நாற்புறமும்
तस्थु: காத்தாநின்றனர்.

भरत: பரதர்
धूमाग्रं புகைச்சிகை
यत्र எவ்விடத்திலோ
तत्र அவ்விடத்தையே
दृष्टिं समादधात् ஊக்கமாய் கவனித்
தார்.

व्यवस्थिता या भरतेन सा चमूर्निरीक्षमाणाऽपि च धूममग्रतः ।

बभूव हृष्टा नचिरेण जानती प्रियस्य रामस्य समागमं तदा ॥ २७ ॥

या எந்த
चमू: சைனியமானது
भरतेन பரதரால்
व्यवस्थिता கட்டளையிடப்பட்ட
सा அது [தோ
अग्रत: எதிரில்
धूमं புகையை
निरीक्षमाणा கவனித்ததாய்

प्रियस्य இஷ்டராகிய
रामस्य ஸ்ரீராமரது
समागमं தரிசனம்
नचिरेण अपि சிக்கிரத்திலேயென்று
जानती அறிந்து
तदा அப்பொழுது
हृष्टा च மனக்களிப்புற்றதாய்
बभूव இருந்தது.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे त्रिनवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5873



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3518

चतुर्नवतितमः सर्गः—தொண்ணூற்றுநான்காவது ஸர்க்கம். ॥ २४ ॥

रामेण चित्रकूटवर्णनम्—ஸ்ரீராமர் சித்திரகூடத்தை வர்ணிப்பது.

दीर्घकालोषितस्तस्मिन्गिरौ गिरिवनप्रियः । वैदेह्याः प्रियमाकाङ्क्षन्स्वं च चित्तं विलोभयन् ॥

अथ दाशरथिश्चित्तं चित्रकूटमदर्शयत् । भार्याममरसंकाशः शचीमिव पुरन्दरः ॥ २ ॥

अथ அப்பொழுது
तस्मिन् அந்த
गिरौ பர்வதத்தில்
दीर्घकालोषित: வெகுநாள் வனித்த
வரும்,

गिरिवनप्रिय: { பர்வதத்திலும் வனத்
திலும் மனத்திருப்தி
கொண்டவரும்,

अमरसङ्काशः தேவருக்கொப்பான
வருமான

दाशरथि: { தசரதசக்கிரவர்த்தி
யாரின் திருக்குமார
ராகுமவர்,

वैदेह्या: சீதாப்பிராட்டியாரு
டைய

प्रियं இஷ்டத்தை
आकांक्षन् உத்தேசித்தவராயும்,
स्वं தனது
चित्तं च திருவுள்ளத்தையும்
विलोभयन् சற்று லிளையாட்டில்

செலுத்துகின்றவராகி
அழகிய

चित्रकूटं சித்ரகூடபர்வதத்தை
पुरन्दरः இந்திரன் [ப்பற்றி,

शचीं சசீதேவிக்கு
इव எவ்வண்ணமோ அவ்வ

भार्या மனைவிக்கு [ண்ணமே
अदर्शयत् பின் வருமாறு வர்ணி

த்தனர் :

न राज्याद्भ्रंशनं भद्रे न सुहृद्भिर्विनाभवः । मनो मे बाधते दृष्ट्वा रमणीयमिमं गिरिम् ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-----------|---------------|
| भद्रे | “ பாக்கியசாலியே ! | इमं गिरिं | இந்த மலையை |
| राज्यात् | ராஜ்யத்திலிருந்து | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| अंशनं | வெளிவந்தது | बाधते न | வருத்தவில்லை. |
| मे | எனது | सुहृद्भिः | அன்பர்களோடு |
| मनः | மனத்தை | विनाभवः | பிரிவும் |
| रमणीयं | அழகிய | न | வருத்தவில்லை. |

पश्येममचलं भद्रे नानाद्विजगणायुतम् । शिखरैः खमिवोद्विद्धैर्धातुमद्भिर्विभूषितम् ॥ ४ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|---------------|-------------------|
| भद्रे | “ கண்ணாட்டியே ! | उद्विद्धैः इव | பிளந்துசெல்வன |
| इमं | இந்த | | போன்ற |
| अचलं | பர்வதத்தை | धातुमद्भिः | தாதுப்பொருள் நிறை |
| नानाद्विज- } | பலவகைப்பறவைக் | शिखरैः | சிகரங்களால் [ந்த |
| गणायुतं } | கூட்டங்களால் நிரம் | विभूषितं | அழகாயிருப்பதாக |
| खं | பியிருப்பதாயும் | पश्य | கவனி. [வும் |
| | ஆகாயத்தை | | |

केचिद्रजतसङ्काशाः केचित्क्षतजसन्निभाः । पीतमाञ्जिष्ठवर्णाश्च केचिन्मणिवरप्रभाः ॥ ५ ॥

पुष्पार्ककेतकाभाश्च केचिज्ज्योतीरसप्रभाः । विराजन्तेऽचलेन्द्रस्य देशा धातुविभूषिताः ॥

| | | | |
|-----------------|--|----------------------------|--|
| अचलेन्द्रस्य | “ மலையினது | केचित् | சில |
| केचित् | சில | मणिवरप्रभाः | இந்திரநீலத்தையொத் |
| देशाः | பிரதேசங்கள் | | தவைகளாயும், |
| धातुविभूषिताः | { தாதுப்பொருள்க ளால் அழகுற்றவை களாய் | पुष्पार्क- केतकाभाः च } | { புஷ்பராகத்தையும், பளிங்கையும், தாழும் பூவையும் ஒத்திருப் பவைகளாகவும், |
| रजतसङ्काशाः | வெள்ளியையொத்த | केचित् | சில |
| केचित् | சில [வைகளாயும், | ज्योतीरसप्रभाः | { நகூத்திரங்களையும், பாதரசத்தையும் ஒத்தவைகளாயும் |
| क्षतजसन्निभाः | ரத்தம்போன்றவைகளாயும், | विराजन्ते | விளங்குகின்றன. |
| पीतमाञ्जिष्ठ- } | மஞ்சள் கலந்த சிவப் | | |
| वर्णाः च } | புவர்ணமுடையவை களாகவும், | | |

नानामृगगणद्वीपितरक्षृक्षगणैर्वृतः । अदुष्टैर्भात्ययं शैलो बहुपक्षिसमाकुलः ॥ ७ ॥

| | | | |
|-----------------------|--|-----------------|--------------------|
| अयं | “ இந்த | वृतः | சஞ்சரிக்கப்பெற்றதா |
| शैलः | பர்வதமானது | | யும், |
| अदुष्टैः | இம்சையையொழித்த | बहुपक्षिसमाकुलः | பல பறவைகள் நிறை |
| नानामृगगण- } | பல மான்கூட்டங்க | | ந்ததாயும், |
| द्वीपितरक्षृक्षगणैः } | ளாலும், புலி, சிவிங் கி, கரடி இவைகளின் கூட்டங்களாலும், | भाति | விளங்குகிறது. |

आम्रजम्बवसनैर्लोत्रैः प्रियालैः पनसैर्धवैः । अङ्गोलैर्भव्यतिनिशैर्विल्वतिन्दुकवेषुभिः ॥८॥
 काश्मर्यरिष्टवर्णैर्मधूकैस्तिटकैस्तथा । बदर्यामलकैर्नीपैर्वेत्रधन्वनबीजकैः ॥ ९ ॥
 पुष्पवद्भिः फलोपेतैश्छायावद्भिर्मनोरमैः । एवमादिभिराकीर्णः श्रियं पुण्यत्ययं गिरिः ॥

| | | | |
|-----------------------|--|------------------------------|--|
| अयं | “ இந்த | भव्यतिनिशैः | பவ்யம், திணிசமெனும் |
| गिरिः | மலையானது | | மரங்களாலும், |
| पुष्पवद्भिः | மலர்ந்தவைகளும், | विल्वतिन्दुक- } वेषुभिः } | பில்வம், திந்துகம், மூங்கில் இவைகளாலும், |
| फलोपेतैः | பழங்கள் நிறைந்தவைகளும், | | |
| छायावद्भिः | நிழலைத்தருகிறவைகளும், | काश्मर्यरिष्टवर्णैः | { காச்மரி, அரிஷ்டம், வருணமெனும் மரங்களாலும், |
| मनोरमैः | மனோக்ருமானவையுமான | मधूकैः | இலுப்பைமரங்களாலும், |
| आम्रजम्ब- } सनैः } | மா, நாவல், வேங்கை மரங்களாலும், | तिलकैः | திலகமரங்களாலும், |
| | | तथा | அவ்வண்ணமே |
| लोत्रैः | { (வெள்ளை சிவப்பு பூக்களையுடைய) ‘லோத்ரமெ’னும் மரங்களாலும், | बदर्यामलकैः | இலந்தை, நெல்லி மரங்களாலும், |
| प्रियालैः | ப்ரியாளமெனும் மரங்களாலும், | नीपैः | கடம்பமரங்களாலும், |
| पनसैः | பலாமரங்களாலும், | वेत्रधन्वन- } बीजकैः } | பிரம்பு, தன்வனம், எலுமிச்சை இவைகளாலும், |
| धवैः | ‘தவ’மெனும் மரங்களாலும், | एवमादिभिः | இவைபோன்ற இன்னும் அனேகங்களாலும், |
| अङ्गोलैः | அழிஞ்சல்மரங்களாலும், | आकीर्णः | நிறைந்ததாய் |
| | | श्रियं | அழகை |
| | | पुण्यति | வளர்க்கின்றது. |

शैलप्रस्थेषु रम्येषु पश्येमान् कामहर्षणान् । किन्नरान्द्वन्द्वशो भद्रे रममाणान्मनस्विनः ॥

| | | | |
|-------------|--|--------------|--|
| भद्रे | “ புண்ணியசீலையே ! | रम्येषु | அழகிய |
| कामहर्षणान् | { விரும்பப்பட்டவர்களால் நேசிக்கப்பட்டவர்களும், | शैलप्रस्थेषु | மலைத்தாழ்வரைகளில் |
| मनस्विनः | புண்ணியாத்மாக்களும், | रममाणान् | { விளையாட்டில் பொழுதைக் கழித்துக் கொண்டிருக்கும் |
| द्वन्द्वशः | இரண்டாய் | इमान् | இதோவிருக்கும் |
| | | किन्नरान् | கின்னரர்களை |
| | | पश्य | பார். |

शाखावसक्तान्वङ्गांश्च प्रवराण्यम्बराणि च । पश्य विद्याधरस्त्रीणां क्रीडोद्देशान्मनोरमान् ॥

| | | | |
|-------------------|---|---|--|
| मनोरमान् | “ அழகிய | शाखावसक्तान् | கிளைகளில் தொங்க |
| क्रीडोद्देशान् | விளையாடுமிடங்களில் | | விடப்பட்ட |
| विद्याधरस्त्रीणां | { வித்யாதாரர்களுடைய வும், அவர்கள் மனை விகளுடையவும், | खङ्गान् च प्रवराणि अम्बराणि च पश्य | கத்திகளையும், சிறந்த ஆடைகளையும் பார். |

जलप्रपातैरुद्भेदैर्निष्पन्दैश्च कचित्कचित् । स्रवद्भिर्भात्ययं शैलः स्रवन्मद इव द्विपः ॥१३॥

| | | | |
|-------------|-----------------|--------------|--------------------|
| अयं | “ இந்த | उद्भेदैः | சுனைகளாலும் |
| शैलः | மலையானது | निष्पन्दैः च | மலைபூற்றுக்களாலும் |
| कचित् कचित् | அங்கங்கே | स्रवन्मदः | மதத்தைப்பெருக்கும் |
| स्रवद्भिः | பெருகியோடிவரும் | द्विपः इव | யானையென |
| जलप्रपातैः | அருவிகளாலும் | भाति | விளங்குகிறது. |

गुहासमीरणो गन्धान्नानापुष्पभवान्वहन् । घ्राणतर्पणमभ्येत्य कं नरं न प्रहर्षयेत् ॥ १४ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------|---------------|-------------------|
| गुहासमीरणः | “ குகைக்காற்றானது | घ्राणतर्पणं | கிராணைந்திரியத்தை |
| नानापुष्पभवान् | பலவகை புஷ்பங்களி லுள்ள | अभ्येत्य | அடைந்து, |
| गन्धान् | வாசனைகளை | कं | எந்த |
| वहन् | வகிக்கிறதாய் | नरं | மனிதனை த்தான் |
| | | प्रहर्षयेत् न | மகிழ்விக்காது ? |

यदीह शरदोऽनेकास्त्वया सार्धमनिन्दिते । लक्ष्मणेन च वत्स्यामि न मां शोकः प्रधक्ष्यति॥

| | | | |
|-----------|---------------|---------------|----------------|
| अनिन्दिते | “ மாசற்றவனே ! | लक्ष्मणेन च | லக்ஷ்மணனோடும், |
| इह | இவ்விடத்தில் | सार्धं | கூட |
| अनेकाः | பல | वत्स्यामि यदि | வசிப்பேனாகில் |
| शरदः | வருஷங்கள் | मां | என்னை |
| त्वया | உன்னோடும் | शोकः | மனச்சஞ்சலமானது |
| | | प्रधक्ष्यति न | வருத்தாது. |

बहुपुष्पफले रम्ये नानाद्विजगणायुते । विचित्रशिखरे ह्यस्मिन्नतवानसि भामिनि ॥१६॥

| | | | |
|---------------------------|--|--------------|--|
| भामिनि | “ ஸுந்தரி ! | विचित्रशिखरे | விசித்திரமான சிகரங் களையுடையதாய் |
| बहुपुष्पफले | பல புஷ்பங்களும் பழ ங்களும். நிறைந்ததும் | रम्ये | ரமணியமானதுமான |
| नानाद्विज- } गणायुते } | பலவகைப்பறவைக்கூ ட்டங்களால் நிறைந் ததும்; | अस्मिन् | இதில் |
| | | रतवान् हि | { சர்வபிரகாரத்திலும் மனத்திருப்திகொண் டவனாய் |
| | | अस्मि | இருக்கிறேன். |

अनेन वनवासेन मया प्राप्तं फलद्वयम् । पितृशानृणता धर्मं भरतस्य प्रियं तथा ॥ १७ ॥

| | | | |
|---------|---------------------|-----------|---------------------|
| अनेन | “ இந்த | तथा | அவ்வண்ணமே |
| वनवासेन | வன வாஸ த்தால் | भरतस्य | பரதனுக்கு |
| मया | என்னால் | प्रियं च | ஹிதத்தைச்செய்வதுமான |
| धर्मं | தர்மவிஷயத்தில் | | |
| पितुः | திருத்தந்தையாருக்கு | फलद्वयं | இரண்டுபயனும் |
| अनृणता | கடன்ற தன்மையும், | प्राप्तम् | அடையப்பட்டது. |

वैदेहि रमसे कच्चिच्चित्रकूटे मया सह । पश्यन्ती विविधान्भावान्मनोवाक्कायसंयतान् ॥ १८ ॥

| | | | |
|-------------------|----------------------------|----------|-----------------------|
| वैदेहि | “ வைதேகி ! | विविधान् | பலவகை |
| चित्रकूटे | சித்ரகூடத்தில் | भावान् | அமைப்புகளை |
| मया सह | என்னோடுகூடவே | पश्यन्ती | கவனிக்கின்றவளாய் |
| | மனம், வாக்கு, காயம் | रमसे | மனமகிழ்ந்திருக்கின் |
| मनोवाक्कायसंयतान् | இவைகளை களிப்புறச் செய்யும் | | றையென்று நம்புகிறேன். |

इदमेवामृतं प्राहू राज्ञि राजर्षयः परे । वनवासं भवार्थाय प्रेत्य मे प्रपितामहाः ॥ १९ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|-----------|------------------------|
| राज्ञि | “ பட்டமகிஷியே ! | भवार्थाय | ச்ரேயஸின் பொருட்டு |
| मे | எனது | | |
| प्रपितामहाः | முன்னோர்களும், | इदं | இந்த |
| परे | மற்றுமுள்ள | वनवासं एव | வனவாசத்தைத்தான் |
| राजर्षयः | ராஜரிஷிகளும், | अमृतं | மோகூதாதனமாக |
| प्रेत्य | தேகவியோகமான பின்னரும், | प्राहुः | சொல்லியிருக்கின் றனர். |

शिलाः शैलस्य शोभन्ते विशालाः शतशोऽभितः । बहुला बहुलैर्वर्णैर्नीलपीतसितारुणैः ॥

| | | | |
|--------|----------------------|----------------------------|--------------------------------------|
| शैलस्य | “ மலையினது | नीलपीत- } கருமை, பொன்மை, | |
| शिलाः | கற்கள் | सितारुणैः } வெண்மை, செம்மை | |
| शतशः | நூற்றுக்கணக்காகவும், | बहुलाः | நிறங்களாலும், பலவகைப்பட்டவைகளாய், |
| बहुलैः | பல | विशालाः | சிறந்தவைகளாய் |
| वर्णैः | வண்ணங்களாலும், | अभितः | நான்கு பக்கங்களிலும் |
| | | शोभन्ते | விளங்குகின்றன. |

निशि भान्त्यचलेन्द्रस्य हुताशनशिखा इव । ओषध्यः स्वप्रभालक्ष्या भ्राजमानाः सहस्रशः ॥

| | | | |
|------------------|---------------------------------|-------------|-----------------------|
| अचलेन्द्रस्य | “ மலையினுடைய | हुताशनशिखाः | அக்னிசிகைகள் |
| ओषध्यः | ஒஷதிகள் | इव | போல |
| सहस्रशः | ஆயிரக்கணக்காகவும், | निशि | இரவில் |
| स्वप्रभालक्ष्याः | தன்னொளியால் காணத்தக்கவைகளாகவும் | भ्राजमानाः | பிரகாசிக்கின்றவைகளாய் |
| | | भान्ति | விளங்குகின்றன. |

केचित्क्षयनिभा देशाः केचिदुद्यानसन्निभाः । केचिदेकशिला भान्ति पर्वतस्यास्य भामिनि ॥

| | | | |
|-----------|------------------------|----------------|------------------|
| भामिनि | “ கட்டழகியே ! | केचित् | சில |
| अस्य | இந்த | उद्यानसन्निभाः | உத்தியானவனங்களை |
| पर्वतस्य | பர்வதத்தினுடைய | | யொத்தவைகளாகவும் |
| केचित् | சில | केचित् | சில |
| देशाः | பிரதேசங்கள் | एकशिलाः | ஒரே பாறைகளாகவும் |
| क्षयनिभाः | வீடுகளையொத்தவைகளாயும், | भान्ति | விளங்குகின்றன. |

भित्त्वेव वसुधां भाति चित्रकूटः समुत्थितः । चित्रकूटस्य कूटोऽसौ दृश्यते सर्वतः शुभः ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-------------|------------------|
| चित्रकूटः | “ சித்திரகூடபர்வதம் | चित्रकूटस्य | சித்திரகூடத்தினு |
| वसुधां | பூமியை | असौ | இந்த [டைய |
| भित्त्वा | பிளந்து, | कूटः | மேடானது |
| समुत्थितः | மேலெழுந்தது | सर्वतः | எல்லாப்பக்கங்களி |
| इव | போன்றதாய் | शुभः | அழகியதாய் [லும் |
| भाति | விளங்குகின்றது. | दृश्यते | காணப்படுகிறது. |

कुष्ठपुन्नागस्थगरभूर्जपत्रोत्तरच्छदान् । कामिनां स्वास्तरान्पश्य कुशेशयदलायुतान् ॥ २४ ॥

| | | | |
|---|--|----------------------|---|
| कुष्ठपुन्नागस्थगर- भूर्जपत्रोत्तरच्छदान् | கீழாரெல்லி, புன்னை, ஸ்தகரபுஷ்பம், பூர்ஜ மரம்பட்டை இவை களால் மூடப்பட்ட வைகளாயும், | कुशेशय- दलायुतान् | தாமரையிதழ்களோடு கடியவைகளாயும், |
| कामिनां | | स्वास्तरान् | பார்யாஸக்தர்களுக்கு ஏற்றதாய் விளங்கும் |
| पश्य | | | பார். [விரிப்புக்களை |

मृदिताश्चापविद्धाश्च दृश्यन्ते कमलस्रजः । कामिभिर्वनिते पश्य फलानि विविधानि च ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-----------|-------------------------|
| वनिते | “ மனையாளே ! | विविधानि | பல |
| कामिभिः | பார்யாஸக்தர்களால் | फलानि च | பழங்களின் விதைக ளும் |
| मृदिताः | கசக்கி | दृश्यन्ते | காணப்படுகின்றன. |
| अपविद्धाः | எறியப்பட்ட | पश्य च | கவனித்துப் பார். |
| कमलस्रजः च | தாமரைமாலைகளும், | | |

वस्योक्तसारां नलिनीमतीत्यैवोत्तरान्कुरुन् । पर्वतश्चित्रकूटोऽसौ बहुमूलफलोदकः ॥ २६ ॥

| | | | |
|------------------|--------------------------|--------------|---|
| असौ | “ இந்த | कुरुन् | குருதேசத்தையும், |
| चित्रकूटः पर्वतः | சித்திரகூட பர்வதம் | अतीत्य एव | அதிகரித்தே |
| वस्योक्तसारां | குபேரபட்டினத் தையும், | बहुमूलफलोदकः | பல கிழங்கு, பழம், தீர்த்தம் இவைகளை உடையதாய் விளங் குகிறது. |
| नलिनी | இந்திரனது பட்டிண | | |
| उत्तरान् | வடக்கு [த்தையும், | | |

इमं तु कालं वनिते विजहिवांस्त्वया च सीते सह लक्ष्मणेन च ।
रतिं प्रपत्स्ये कुलधर्मवर्धिनीं सतां पथि स्वैर्नियमैः परैः स्थितः ॥ २७ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-----------------|--------------------------------|
| वनिते | “ மனையாட்டியே ! | காலம் | நிஷ்காரிஷிக்கப்பட்ட காலத்தை |
| सीते | வீதே ! | त्वया च | உன்னோடும் |
| परैः | உக்கிருஷ்டமான | लक्ष्मणेन च | லக்ஷ்மணனோடும் |
| स्वैः | சொந்த | सह | சுட |
| नियमैः | நியமங்களோடும், | विजहिवान् | வசுத்துக்கொண்டு |
| सतां | பெரியோர்களுடைய | कुलधर्मवर्धिनीं | குலதர்மத்தை வளரச் |
| पथि | அனுஷ்டானத்தில் | रतिं | பக்தியை [செய்யும் |
| स्थितः तु | பற்றுடைய நான் | प्रपत्स्ये | அடைவேன்.” |
| इमं | இந்த | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे चतुर्नवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5900

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3545



पञ्चनवतितमः सर्गः—தொண்ணூற்றைந்தாவது ஸர்க்கம் ॥ २७ ॥

मन्दाकिनीवर्णना—ராமர் மந்தாகினியை வர்ணித்தல்.

अथ शैलाद्विनिष्क्रम्य मैथिलीं कोसलेश्वरः । अदर्शयच्छुभजलां रम्यां मन्दाकिनीं नदीम् ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------|------------|----------------------|
| अथ | பிறகு | शुभजलां | சுத்தஜலத்தையுடையதும் |
| कोसलेश्वरः | கோஸலமன்னராகு மவர், | रम्यां | ரமணியமுமான |
| शैलात् | பருவத்ததை விட்டு | मन्दाकिनीं | மந்தாகினி |
| विनिष्क्रम्य | புறப்பட்டு | नदीं | நதியை |
| मैथिलीं | மைதிலியாருக்கு | अदर्शयत् | சுட்டிக்காட்டினார். |

अब्रवीच्च वरारोहां चारुचन्द्रनिभाननाम् । विदेहराजस्य सुतां रामो राजीवलोचनः ॥२॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|-------------|------------------------------|
| राजीवलोचनः | செந்தாமரைக்கண்ண ராகிய | वरारोहां | ஸ்திரத்தினமும் |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | विदेहराजस्य | விதேஹமன்னரது |
| चारुचन्द्र- } | அழகிய சந்திரனை | सुतां च | திருமகளுமான அவளிடம் |
| निभाननां } | யொத்த திருமுக முடையவளும், | अब्रवीत् | பின்வருமாறு வர் ணித்தார். |

विचित्रपुलिनां रम्यां हंससारससेविताम् । कुसुमैरुपसम्पन्नां पश्य मन्दाकिनीं नदीम् ॥३॥
नानाविधैस्तीररुहैर्वृतां पुष्पफलद्रुमैः । राजन्तीं राजराजस्य नलिनीमिव सर्वतः ॥ ४ ॥

विचित्रपुलिनां “விசிக்ரமான மணற்
குன்றுகளையுடையதும்
ரமணீயமானதும்,
ஹம்ஸம், ஸாரஸம்
இவைகளால் விளங்
கப்பெற்றதும்,
குசுமै: புஷ்பங்களால்
उपसम्पन्नां நிறைந்துள்ளதும்,
तीररुहै: கரைகளிலிருக்கும்
नानाविधै: பலவகை

मृगयूथनिपीतानि कलुषाम्भांसि साम्प्रतम् ।

रमणीयानि “ரமணீயமாய்
कलुषांभांसि ஒளியற்ற கருத்த
நீரையுடைய
तीर्थानि தன்னூற்றுக்கள்
साम्प्रतं இப்பொழுது

जटाजिनधराः काले वल्कलोत्तरवाससः ।

प्रिये “காதலியே!
जटाजिनधरा: { ஜடை, மான்தோல் இ
வைகளை தரித்தவர்
களுமும்,
वल्कलोत्तर- } சிறந்த மரவுரியடுத்த
वाससः तु } வர்களுமான

आदित्यमुपतिष्ठन्ते नियमादूर्ध्ववाहवः । एते परे विशालाक्षि मुनयः संशितव्रताः ॥ ७ ॥

विशालाक्षि “விசாலாக்ஷி!
एते இந்த
परे இதர
मुनयः முனிவர்கள்
संशितव्रता: பூர்வாங்கங்களை
முடித்தவர்களாய்

मारुतोद्धूतशिखरैः प्रवृत्त इव पर्वतः । पादपैः पत्रपुष्पाणि सृजद्भिरभितो नदीम् ॥ ८ ॥

पर्वतः “பர்வதமானது
नदीं நதியை
अभितः நான்குபுறத்திலும்
முடையதாய்
पत्रपुष्पाणि இலைகளையும், புஷ்பங்
களையும்,

पुष्पफलद्रुमैः { புஷ்பங்களையும், பழங்
களையுமுடைய மரங்
களால்
वृतां சூழப்பட்டதும்,
राजराजस्य குபேரனது
नलिनीं इव தாமரையோடையோல்
सर्वतः எல்லாவிடத்திலும்
राजन्तीं விளங்கிக்கொண்டிரு
मन्दाकिनीं மந்தாகினி [ருக்கிற
नदीं पश्य நதியைப் பார்.

तीर्थानि रमणीयानि रतिं सञ्जनयन्ति मे ॥

मृगयूथ- } மான்கூட்டங்களால்
निपीतानि } வற்றடிக்கப்பட்டன
मे எனக்கு [வாய்
रतिं உற்சாகத்தை
सञ्जनयन्ति உண்டாக்குகின்றன.

ऋषयस्त्ववगाहन्ते नदीं मन्दाकिनीं प्रिये ॥

ऋषयः முனிவர்கள்
काले உசிதகாலத்தில்
मन्दाकिनीं மந்தாகினி
नदीं நதியில்
अवगाहन्ते ஸ்நானம்செய்கின்
றார்கள்.

नियमात् பக்தியால்
ऊर्ध्ववाहवः கைகளை உயரத்தூக்
கிக்கொண்டு
आदित्यं சூரியபகவானை
उपतिष्ठन्ते உபாசிக்கின்றனர்.

सृजद्भिः உதிர்க்கிற
मारुतोद्धूतशिखरैः காற்றாலசைவுண்ட
உச்சிகளையுடைய
पादपैः விருக்ஷங்களால்
प्रवृत्तः इव நர்த்தனம்செய்வது
போலிருக்கிறது.

कचिन्मणिनिकाशोदां कचित्पुलिनशालिनीम् ।
कचित्सिद्धजनाकीर्णां पश्य मन्दाकिनीं नदीम्

॥ ९ ॥

कचित् “சிலவிடங்களில்
मणिनिकाशोदां { இந்திரநீலமணியை
யொத்த ஜலமுடை
யதாயும்,
कचित् சிலவிடங்களில்
पुलिनशालिनीं மணல்துட்டுகளுடன்
விளங்குவதாயும்,
कचित् சிலவிடங்களில்
निर्धूतान्वायुना पश्य विततान्पुष्पसञ्चयान्

सिद्धजनाकीर्णां

मन्दाकिनीं

नदीं

पश्य

॥ १० ॥

वायुना “காற்றால்
निर्धूतान् உதிர்க்கப்பட்டு

विततान्

पुष्पसञ्चयान्

पश्य

பரவிய

புஷ்பக்குவியல்களை

பார்.

पोषुयमानानपरान्पश्य त्वं जलमध्यगान्

॥ ११ ॥

जलमध्यगान् “நீர்நடுவிலிருக்கும்
पोषुयमानान् மிதந்துகொண்டிருக்
கும்

अपरान्

त्वं

पश्य

மற்றவைகளையும்

நீ

பார்.

तांश्चातिवल्गुवचसो रथाङ्गाह्वयना द्विजाः । अतिरोहन्ति कल्याणि निकूजन्तः शुभा गिरः ॥

कल्याणि “கல்யாணி!
रथाङ्गाह्वयना: சக்கிரவாகப்
द्विजा: பறவைகள்,
अतिवल्गुवचसः மிக்க இனிய த்வனி
கொண்டு

शुभा:

गिरः

निकूजन्तः

तान् च

अतिरोहन्ति

அழகிய

சப்தங்களை

கூவிக்கொண்டு

அவைகளில்,

வீற்றிருக்கின்றன.

दर्शनं चित्रकूटस्य मन्दाकिन्याश्च शोभने । अधिकं पुरवासाच्च मन्ये तव च दर्शनात् ॥

शोभने “புண்ணியவதியே!
चित्रकूटस्य च சித்திரகூடத்திலு
டையவும்,
मन्दाकिन्या: च மந்தாகினி நதியினு
டையவும்

तव

दर्शनात् च

पुरवासात्

अधिकं

मन्ये

உனது

சன்னிதானத்தால்

தான்

நகரவாசத்தைக்காட்

சிறந்ததென [அலும்

பாராட்டுகிறேன்.

दर्शनं अनुभवमानान्,

विधूतकलुषैः सिद्धैस्तपोदमशमान्वितैः । नित्यं विक्षोभितजलां विगाहस्य मया सह ॥

तपोदम- } “தவம், ஐம்பொறியடக்
शमान्वितैः } கல், மனச்சாந்தி
இவைகளுடன் கூடி.
யவர்களாய்,
विधूतकलुषैः தோஷரஹித

सिद्धैः

नित्यं

विक्षोभितजलां

मया सह

विगाहस्य

புண்ணியா தமாக்க

பிரதிதினமும் [ளால்

ஸ்நானம்செய்யப்ப

டும் ஜலத்தில்

என்னோடுகூட

ஸ்நானம்செய்.

सखीवच्च विगाहस्य सीते मन्दाकिनीं नदीम् । कमलान्यवमज्जन्ती पुष्कराणि च भामिनि ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|------------|---------------------|
| भामिनि | “உத்தரிபே! | अवमज्जन्ती | நீரில்முங்கச்செய்து |
| सीते | வரீதே! | | கொண்டு |
| कमलानि | செந்தாமரைகளையும், | सखीवत् च | தோழிபோலவே |
| पुष्कराणि च | வெண்தாமரைகளையும், | मन्दाकिनीं | மந்தாகினி |
| | | नदीं | நதிக்கு |
| | | विगाहस्य | கூடவருவாயாக. |

त्वं पौरजनवद्व्यालानयोध्यामिव पर्वतम् । मन्यस्य वनिते नित्यं सरयूवदिमां नदीम् ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-------------|-----------------|
| वनिते | “பிராணநாயகி! | अयोध्यां इव | அயோத்தியெனவும், |
| त्वं | நீ, | इमां | இந்த |
| व्यालान् | விலங்குகளை | नदीं | நதியை |
| पौरजनवत् | பட்டினத்துஜனங்கள் | सरयूवत् | சரயூநதியாகவும் |
| | போலவும், | नित्यं | சதா |
| पर्वतं | பர்வதத்தை | मन्यस्य | கொண்டாடுவாயாக. |

लक्ष्मणश्चैव धर्मात्मा मन्निदेशे व्यवस्थितः । त्वं चानुकूला वैदेहि प्रीतिं जनयथो मम ॥

| | | | |
|------------|------------------|------------|----------------------|
| वैदेहि | “வைதேகி! | मम | எனக்கு |
| मन्निदेशे | என்கொண்டாயில் | अनुकूला एव | மனங்கொண்து |
| व्यवस्थितः | எள்ளளவும் கொண்டு | | நடக்கும் |
| | து நடக்கும் | त्वं च | நீயும் |
| धर्मात्मा | தர்மாத்மாவான | प्रीतिं | மனத்திருப்தியை |
| लक्ष्मणः च | லக்ஷ்மணனும், | जनयथः | விளைவிக்கின்றீர்கள். |

उपस्पृशंस्त्रिषवणं मधुमूलफलाशनः । नायोध्यायै न राज्याय स्पृहयामि त्वया सह ॥

| | | | |
|-----------------------|-----------------------------------|-------------|-----------------|
| त्वया सह | “உன்னோடுகூட | अयोध्यायै | அயோத்தியயின் |
| त्रिषवणं | மூன்று சந்தியைகளிலும், | | பொருட்டு |
| उपस्पृशन् | ஸ்நானம் செய்து | स्पृहयामि न | விரும்பேன். |
| | கொண்டு | राज्याय | ராஜ்ய ஆளுகையின் |
| मधुमूल- } फलाशनः } | தேன், கிழங்கு, பழமிவைகளையுணவாய்க் | | பொருட்டும் |
| | கொண்ட நான், | न | விரும்பேன். |

इमां हि रम्यां मृगयूथशालिनीं निपीततोयां गजसिंहवानरैः ।

सुपुष्पितैः पुष्पधरैरलङ्कृतां न सोऽस्ति यः स्यादगतक्लमः सुखी ॥ १९ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|----------|---------------------|
| मृगयूथशालिनीं | மாண்கூட்டங்கள் | रम्यां | ரமணீயமாயிருக்கும் |
| | நிறைந்துள்ளதும், | इमां | இந்தநதியில் |
| गजसिंहवानरैः | யானை, சிங்கம், | सुखी | சுகமின்னதென |
| | குரங்கு இவைகளால் | यः | எவன் [அறிந்த |
| निपीततोयां | குடிக்கப்படும் ஜலத் | अगतक्लमः | களைப்புத்தீராதவனும் |
| | தையுடையதும், | स्यात् | ஆகுவானே |
| सुपुष्पितैः | நன்கு பூத்த | सः हि | அப்படிப்பட்டவனே |
| पुष्पधरैः | மரங்களால் | अस्ति न | இல்லை. |
| अलङ्कृतां | அழகுவாய்ந்து | | |

इतीव रामो बहु सङ्गतं वचः प्रियासहायः सरितं प्रति ब्रुवन् ।

चचार रम्यं नयनाञ्जनप्रभं स चितकूटं रघुवंशवर्धनः

॥ २० ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|---------------|------------------|
| रघुवंशवर्धनः | ரகுசுலத்தை வளரச் செய்யும் | बहु | விரிவாயுமுள்ள |
| सः | அந்த | वचः | சொல்லை |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | ब्रुवन् | சொல்லிக்கொண்டு |
| इति | மேற்கண்டவாறு | नयनाञ्जनप्रभं | கண்மைபோல |
| सरितं प्रति | நதியைப்பற்றி | रम्यं | அழகிய |
| सङ्गतं इव | பொருந் தும்படியும் | चितकूटं | சித்ரகூடத்தில் |
| | | प्रियासहायः | தர்மபத்தினியுடன் |
| | | चचार | சஞ்சரித்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे पञ्चनवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5920.

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3565.



पणवतितमः सर्गः—தொண்ணூற்றொருவது ஸர்க்கம். ॥ २६ ॥

लक्ष्मणसंरम्भः—லக்ஷ்மணரது கலவரம்.

तां तथा दर्शयित्वा तु मैथिलीं गिरिनिम्नगाम् । निषसाद् गिरिप्रस्थे सीतां मांसेन छन्दयन्॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------|---------------|-----------------------------|
| मैथिलीं | மிதிலைமன்னர் திரும களாகிய | दर्शयित्वा तु | காண்பித்துவிட்டு |
| सीतां | சீதைக்கு | गिरिप्रस्थे | மலைத்தாழ்வரையில் |
| तां | அந்த | मांसेन | பழங்கறின் சதை கொண்டு |
| गिरिनिम्नगां | மலையைச் சுற்றியோ டும் நதியை | छन्दयन् | உற்சாகப்படுத்திக் கொண்டு |
| तथा | மேற்கண்டவாறு | निषसाद् | தங்கியிருத்தார். |

इदं मेध्यमिदं स्वादु निष्टमिदमग्निना । एवमास्ते स धर्मात्मा सीतया सह राघवः ॥२॥

| | | | |
|-----------|-----------------------|----------|----------------------|
| सः | அந்த | स्वादु | ரமணியமாயிருக்கிற' |
| धर्मात्मा | தர்மா த்மாவாகும் | इदं | 'இது [தெனவும் |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | मेध्यं | பரிசுத்தமாயிருக்கிற' |
| इदं | 'இது, இவ்விடம் | | தெனவும் |
| अग्निना | யாகாக்னியால் | एवं | இப்படியெல்லாம் |
| निष्टं | எரிக்கப்பட்டிருக்கிற' | | சொல்லிக்கொண்டு |
| | தெனவும், | सीतया सह | சீதாபிராட்டியோடு |
| इदं | 'இது | आरो | உட்கார்ந்தனர். [கூட |

गजयूथानि वाऽरण्ये महिषा वा महावने । विव्रासिता मृगाः सिंहैः सहसा प्रद्रुता दिशः ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-------------|----------------------|
| महावने | “புண்யவாஸஸ்தலமா | मृगाः वा | மா ன்களும் |
| अरण्ये | காட்டில் [கிய | विव्रासिताः | வெருண்டவைகளாய் |
| सिंहैः वा | சிங்கங்களோடுகூடவே | सहसा | திக்பிரமைகொண்டு |
| गजयूथानि | யானைக்கூட்டங்களும், | दिशः | எல்லாப்பக்கங்களிலும் |
| महिषाः | எருமைகளும், | प्रद्रुताः | ஓடுகின்றன. |

राजा वा राजमात्रो वा मृगयामटते वने । अन्यद्वा श्वापदं किञ्चित्सौमित्ते ज्ञातुमर्हसि ॥

| | | | |
|--------------|----------------|----------------|---------------------|
| सौमित्ते | “லக்ஷ்மண ! | मृगयां अटते वा | வேட்டையாடவந்தி |
| राजा | அரசனோ, | | ருக்கிரனோ, |
| राजमात्रः वा | ராஜகுமாரனோ, | अन्यत् | வேறு |
| वने | வனத்தில் | किञ्चित् वा | ஏதாவதாவென, |
| श्वापदं | துஷ்டமிருகத்தை | ज्ञातुं अर्हसि | நீ கண்டறியவேண்டும். |

सुदुश्चरो गिरिश्रायं पक्षिणामपि लक्ष्मण । सर्वमेतद्यथातत्त्वमचिराज्ज्ञातुमर्हसि ॥ १० ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|----------------|------------------|
| लक्ष्मण | “லக்ஷ்மண ! | एतत् | இது |
| अयं | அந்த | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| गिरिः | பர்வதமானது | यथातत्त्वं | உள்ளபடிக்கு |
| पक्षिणां अपि | அம்புகளுக்குக்கூட | अचिरात् | காலதாமதமின்றி |
| सुदुश्चरः च | இடைவெளியில்லாத | ज्ञातुं अर्हसि | நீ கண்டறிவாயாக.” |
| | தே. | | |

स लक्ष्मणः संत्वरितः सालमारुह्य पुष्पितम् । प्रेक्षमाणो दिशः सर्वाः पूर्वा दिशमुदैक्षत ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-------------|-----------------|
| सः | அந்த | सर्वाः | எல்லா |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | दिशः | திசைகளையும் |
| संत्वरितः | விரைந்து | प्रेक्षमाणः | பார்ப்பவராய் |
| पुष्पितं | பூத்திருந்த | पूर्वा दिशं | கிழக்குத்திக்கை |
| सालं | ஆச்சாமரமொன்றில் | उदैक्षत | பார்த்தார். |
| आरुह्य | ஏறி | | |

उदङ्मुखः प्रेक्षमाणो ददर्श महतीं चमूम् । गजाश्वरथसंवाधां यानैर्युक्तां पदातिभिः ॥ ११ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-------------|-------------------|
| उदङ्मुखः | தலையை நிமிர்க்கி | गजाश्वरथ- } | யானைகள், குதிரை |
| प्रेक्षमाणः | பார்க்குமவர் | संवाधां } | கள், ரதங்கள் இவை |
| यानैः | வாகனங்களாலும், | | கள் நிறைந்துள்ளது |
| पदातिभिः | காலாட்களாலும், | महतीं | பெரும் [மாகிய |
| युक्तां | நிறைந்துள்ளதும், | चमूम् | சேனையை |
| | | ददर्श | பார்த்தார். |

तामश्वगजसंपूर्णां रथध्वजविभूषिताम् । शशंस सेनां रामाय वचनं चेदमब्रवीत् ॥ १३ ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------------------|----------|---------------|
| तां | அதை | सेनां | சேனையை |
| अश्वगजसंपूर्णां | அச்வங்களும், யானைகளும் நிறைந்ததும், | रामाय | ஸ்ரீராமருக்கு |
| रथध्वज- } | ரதம், கொடி இவைக | शशंस | தெரிவித்தார். |
| विभूषितां } | ளால் விளங்குகிறது | इदं | பின்வரும் |
| | मान | वचनं च | சொல்லையும் |
| | | अब्रवीत् | சொன்னார் : |

अग्निं संशमयत्वार्यः सीता च भजतां गुहाम् । सज्यं कुरुष्व चापं च शरांश्च कवचं तथा ॥

| | | | |
|---------|-----------------------|---------|-----------------------|
| आर्यः | “தேவரீர் | सज्यं च | நானேற்றப்பட்டதாகவும், |
| अग्निं | அக்னியை | शरान् च | சரங்களையும், |
| संशमयतु | அணைக்கட்டும். | तथा | அவ்வண்ணமே |
| सीता च | சீதாப்பிராட்டியாரும், | कवचं | கவசத்தையும் |
| गुहां | மறைவான இடத்தை | कुरुष्व | தயார்செய்துகொள்ளும்.” |
| भजतां | அடையட்டும். | | |
| चापं | வில்லை | | |

तं रामः पुरुषव्याघ्रो लक्ष्मणं प्रत्युवाच ह । अङ्गावेक्षस्व सौमित्रे कस्येमां मन्यसे चमूम् ॥

| | | | |
|---------------|------------------|------------|-------------------|
| पुरुषव्याघ्रः | புருஷோத்தமராகும் | इमां | இந்த |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | चमूं | சேனையை |
| तं | அந்த | कस्य ह | யாருடையதாய் |
| लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரைப் | मन्यसे | நீ எண்ணுகின்றனை ? |
| | பார்த்து | अवेक्षस्व | முற்றும் கவனி” |
| सौमित्रे | “லக்ஷ்மண ! | | என்று |
| अङ्ग | சரியப்பா. | प्रत्युवाच | பதில்சொன்னார். |

एवमुक्तस्तु रामेण लक्ष्मणो वाक्यमब्रवीत् । दिधक्षन्निव तां सेनां रुषितः पावको यथा ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-------------|------------------|
| एवं | மேற்கண்டவாறு | तां | அந்த |
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் | सेनां तु | சேனையை |
| उक्तः | அக்ருபிக்கப்பட்ட | दिधक्षन् इव | எரிப்பவர்போல |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | रुषितः | சினமுற்று |
| पावकः यथा | அக்னிபோல் | वाक्यं | பின்வரும் சொல்லை |
| | | अब्रवीत् | சொன்னார் : |

सम्पन्नं राज्यमिच्छंस्तु व्यक्तं प्राप्याभिषेचनम् । आवां हन्तुं समभ्येति कैकेय्या भरतः सुतः॥

| | | | |
|-----------|----------------|----------|----------------|
| कैकेय्याः | “கைகேயியினது | सम्पन्नं | சாச்வதமாய் |
| सुतः | குமாரனாகும் | इच्छन् | விரும்பி, |
| भरतः | பரதன் | आवां तु | நம்மிருவரையும் |
| अभिषेचनं | பட்டாபிஷேகத்தை | हन्तुं | கொல்வதற்கு |
| प्राप्य | அடைந்து | समभ्येति | வருகிறான். |
| राज्यं | ராஜ்யத்தை | व्यक्तम् | சந்தேகமில்லை. |

एष वै सुमहाञ्छ्रीमान्विटपी संप्रकाशते । विराजत्युद्गतस्कन्धः कोविदारध्वजो रथे ॥१८॥

| | | | |
|----------|-------------------|--------------|-------------------|
| एषः | “இதோ | संप्रकाशते | விளங்குகிறது. |
| सुमहान् | பெரிய | रथे | ரதத்தில் |
| श्रीमान् | அழகிய | उद्गतस्कन्धः | உயரத்தூக்கப்பட்ட |
| विटपी वै | அத்திமரக்கொடியும் | कोविदारध्वजः | மலையகத்திதுவஜமும் |
| | | विराजति | விளங்குகிறது. |

भजन्त्येते यथाकाममश्वानाख्य शीघ्रगान् । एते भ्राजन्ति संहृष्टा गजानाख्य सादिनः ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------|---------------------|
| एते | “இவர்கள் | एते | இந்த |
| शीघ्रगान् | வேகம் செல்லும் | सादिनः | யானைப்பாக்கள் |
| अश्वान् | குதிரைகளில் | गजान् | யானைகளில் |
| आख्य | ஏறிக்கொண்டு | आख्य | ஏறிக்கொண்டு |
| यथाकामं | இஷ்டப்படி எல்லாம் | संहृष्टाः | முகமலர்ச்சிக்கொண்டு |
| भजन्ति | வருகிறார்கள். | भ्राजन्ति | விளங்குகின்றார்கள். |

गृहीतधनुषौ चावां गिरिं वीर श्रयावहे । अथवेहैव तिष्ठावः संनद्धाद्युद्यतायुधौ ॥२०॥

| | | | |
|------------|----------------|------------|----------------|
| वीर | “சூரரே! | अथवा | அல்லது |
| आवां च | நாமிருவரும் | उद्यतायुधौ | ஆயுதபாணிகளாய் |
| गृहीतधनुषौ | தனுஷ்பாணிகளாய் | सन्नद्धौ | சன்னத்தர்களாய் |
| गिरिं | பர்வதத்தை | इह एव | இவ்விடத்திலேயே |
| श्रयावहे | அடைவோம். | तिष्ठावः | இருப்போம். |

अपि नौ वशमागच्छेत्कोविदारध्वजो रणे

| | | |
|--------------|----------------------|--------|
| रणे | “போரில் | ॥ २१ ॥ |
| कोविदारध्वजः | மலையகத்திக்கொடியானது | |

॥ २१ ॥

| | |
|--------------|------------------|
| नौ | நமது |
| वशं | வசத்தில் |
| आगच्छेत् अपि | வந்துவிடுமல்லவா? |

अपि द्रक्ष्यामि भरतं यत्कृते व्यसनं महत् । त्वया राघव संप्राप्तं सीतया च मया तथा ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------------|------------------|
| राघव | “ஸ்ரீராம! | महत् | பெரும் |
| यत्कृते | எவன்முலம் | व्यसनं | கட்டமானது |
| त्वया च | தேவரீராலும், | संप्राप्तं | அனுபவிக்கப்படுகி |
| सीतया तथा | சீதாப்பிராட்டியாரா | भरतं | பரதனை [நதோ அந்த |
| मया | என்னாலும், [ஐயர், | अरि द्रक्ष्यामि | என் பார்ப்பேனா? |

यन्निमित्तं भवान्राज्याच्च्युतो राघव शाश्वतात् । संप्राप्तोऽयमरिर्वीर भरतो वध्य एव मे ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|------------|--------------------|
| वीर | “சூர! | अयं | இந்த |
| राघव | ஸ்ரீராம! | अरिः | சத்தருவாகும் |
| भवान् | தேவரீர் | भरतः | பரதன் |
| यन्निमित्तं | யார்நிமித்தமாய் | संप्राप्तः | எதிர்த்துவந்தவனாய் |
| शाश्वतात् | பாம்பரையாகவந்த | मे | என்னால் |
| राज्यात् | ராஜ்யத்தினின்று | वध्यः एव | கொல்லத்தகுந்தவனே. |
| च्युतः | வெளிக்கிளம்பினீரோ | | |

भरतस्य वधे दोषं नाहं पश्यामि राघव । पूर्वापकारिणां त्यागे न ह्यधर्मो विधीयते ॥२४॥

| | | | |
|-----------|------------|----------------|--------------------|
| राघव | “ஸ்ரீராம! | हि | ஏனெனில், |
| भरतस्य | பரதனை | पूर्वापकारिणां | முதலிலபகாரம் |
| वधे | கொல்வதில் | | செய்தவர்களை |
| दोषं | பாபத்தை | त्यागे | பரிகரிப்பதில் |
| अहं | நான் | अधर्मः | அதர்மமானது |
| पश्यामि न | காணவில்லை. | विधीयते न | விதிக்கப்படவில்லை. |

पूर्वापकारी भरतस्त्यक्तधर्मश्च राघव । एतस्मिन्निहते कृत्स्नामनुशाधि वसुन्धराम् ॥ २५ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|-----------|------------------|
| राघव | “ஸ்ரீராம! | एतस्मिन् | இவன் |
| भरतः च | பரதனை | निहते | கொல்லப்பட்டதும், |
| पूर्वापकारी | முதலிலபகாரம் | वसुन्धरां | பூமி |
| | பண்ணினவன்; | कृत्स्नां | எல்லாவற்றையும் |
| त्यक्तधर्मः | தருமத்தையொழித்தவன். | अनुशाधि | ஆளுவீராக. |

अद्य पुत्रं हतं संख्ये कैकेयी राज्यकामुका । मया पश्येत्सुदुःखार्ता हस्तिभग्नमिव द्रुमम् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-------------|-----------------|
| राज्यकामुका | “ராஜ்யத்தை சர்வ | पुत्रं | புதல்வனை |
| | முமாய்க்கொண்ட | मया | என்னால் |
| कैकेयी | கைகேயிதேவியார், | हतं | கொல்லப்பட்டவனாக |
| हस्तिभग्नं | யானையால் முறிக்கப் | सुदुःखार्ता | மிகமனவேதனைப்படு |
| | பட்ட | | கின்றவளாய் |
| द्रुमं इव | மரம்போல | अद्य | இப்பொழுது |
| संख्ये: | போரில் | पश्येत् | காண்பாள். |

कैकेयीं च वधिष्यामि सानुबन्धां सबान्धवाम् । कलुषेणाद्य महता मेदिनी परिमुच्यताम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------|--------------|---------------|
| कैकेयीं च | “கைகேயிதேவியாரை | अद्य | இப்பொழுது |
| | யே | मेदिनी | பூமியானது |
| सानुबन्धां | பரிவாரங்களுடனும், | महता | பெரும் |
| सबान्धवां | இனத்தாரோடும், | कलुषेण | பாபத்தினின்று |
| वधिष्यामि | கொல்லப்போகிறேன். | परिमुच्यताम् | விடுபட்டும். |

अद्यैमं संयतं क्रोधमसत्कारं च मानद । मोक्षयामि शत्रुसैन्येषु कक्षेष्विव हुताशनम् ॥२८॥

| | | | |
|------------|-------------------|---------------|------------------|
| मानद | “கௌரவம் பாராட்டு | हुताशनं | தீயை |
| | பவரே! | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| संयतं | உள்ளடக்கி வைத்தி | | வண்ணமே, |
| | ருந்த | शत्रुसैन्येषु | சத்ருசனியங்களில் |
| इमं | இந்த | अद्य | இப்பொழுது |
| क्रोधं | கோபத்தையும் | मोक्षयामि | பிரயோகிக்கப்போகி |
| असत्कारं च | அவமானத்தையும், | | மேன். |
| कक्षेषु | காய்ந்த சரகுகளில் | | |

अद्यैतच्चित्रकूटस्य काननं निशितैः शरैः । भिन्दन्च्छत्रशरीराणि करिष्ये शोणितोक्षितम् ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|--------------|-----------------------------------|
| निशितैः | “கூராண | एतत् | இந்த |
| शरैः | பாணங்களால் | काननं | காட்டை |
| शत्रुशरीराणि | சத்துருக்களின் சரீர ங்களை | शोणितोक्षितं | ரத்தத்தால் தெளிக்க ப்பட்டதாய், |
| भिन्दन् | வெட்டித்தள்ளி | अद्य | இப்பொழுது |
| चित्रकूटस्य | சித்திரகூடத்தினது | करिष्ये | செய்வேன். |

शरैर्निभिन्नहृदयान्कुञ्जरांस्तुरगांस्तथा । श्वापदाः परिकर्षन्तु नरांश्च निहतान्मया ॥ ३० ॥

| | | | |
|---------|-------------------------|----------------|-----------------|
| मया | “என்னால் | निभिन्नहृदयान् | மார்பு பிளந்த |
| शरैः | பாணங்களால் | कुञ्जरान् | யானைகளையும் |
| निहतान् | கொன்றுவிழுத்தப் பட்ட | तुरगान् तथा | குதிரைகளையும் |
| नरान् च | மனிதர்களையும் | श्वापदाः | துஷ்டமிருகங்கள் |
| | | परिकर्षन्तु | இழுக்கட்டும். |

शराणां धनुषश्चाहमनृणोऽस्मि महामृधे । ससैन्यं भरतं हत्वा भविष्यामि न संशयः॥३१॥

| | | | |
|---------|---------------|-----------|-----------------|
| अहं | “நான் | भरतं | பரதனை |
| शराणां | சரங்களுக்கும் | ससैन्यं | சேனையோடு |
| धनुषः | வில்லுக்கும் | हत्वा च | கொன்றபிறகும் |
| अनृणः | கடன்றவனாய் | भविष्यामि | இருப்பேன். |
| अस्मि | இருக்கிறேன். | संशयः न | இதற்கையமில்லை.” |
| महामृधे | பெரும்போரில் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे षण्णवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5951

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3596



सतनवतितमः सर्गः—தொண்ணூற்றேழாவது ஸர்க்கம். ॥ ௨௭ ॥

लक्ष्मणपरिसान्त्वनम्—லக்ஷ்மணரைச் சமாதானம் செய்வது.

सुसंरब्धं तु सौमित्रिं लक्ष्मणं क्रोधमूर्च्छितम् । रामस्तु परिसान्त्वयाथ वचनं चेदमब्रवीत् ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------------------|----------------|------------------------------|
| अथ | அப்பொழுது | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரை |
| रामः | ராமர் | परिसान्त्वय तु | சமாதானப்படுத்தி |
| सुसंरब्धं | மிகக் கவரமுற்று | तु | இவ்விஷயத்தில் |
| क्रोधमूर्च्छितं | கோபத்தால் மெய்மற ந்திருந்த | इदं | பின்வரும் |
| सौमित्रिं | சுமிக்திராதேவியின் புகல்வரான | वचनं च | திருவாக்கையும் |
| | | अब्रवीत् | திருவாய்மலர்ந்தருளி னார்: |

किमत्र धनुषा कार्यमसिना वा सचर्मणा । महेष्वासे महाप्राज्ञे भरते स्वयमागते ॥ २ ॥

அத்ர “இப்பொழுது
மஹேஸ்வாசே பெரும்வில்லாளியும்,
மஹாபிராஜே மகாபுத்திமானுமாகிய
பரதன் பரதன்
சுயம் தானே
அகதே இப்படியாய் வருகின்
றானென்றால்

धनुषा வில்லினுல்தானாகட்
டும்,
सचर्मणा கேடகத்தோடுகூடிய
असिना वा கத்தியினுல்தானாகட்
டும்,
कार्यं செய்யக்கூடிய காரியம்
किम् என்ன?

पितुः सत्यं प्रतिश्रुत्य हत्वा भरतमागतम् । किं करिष्यामि राज्येन सापवादेन लक्ष्मण ॥

लक्ष्मण “லக்ஷ்மண!
पितुः திருத்தந்தைக்கு
सत्यं ஒப்பந்தத்தை
प्रतिश्रुत्य வாக்களித்துவிட்டு
(நான்)

भरतं பரதனே
हत्वा கொன்று
सापवादेन அபவாதத்துடன்
राज्येन ராஜ்யத்தால் [வந்த
किं என்னதை
करिष्यामि செய்யப்போகிறேன்?

यद्वयं बान्धवानां वा मित्राणां वा क्षये भवेत् । नाहं तत्प्रतिगृहीयां भक्षान्विषकृतानिव ॥

बान्धवानां वा “பந்துக்களுடைய
வாவது,
मित्राणां वा மித்திரர்களுடைய
வாவது,
क्षये கொலைநிமித்தமாய்
यत् எந்தவொரு
द्वयं செல்வம்
भवेत् வாய்க்கிறதோ

तत् அதை
अहं நான்
विषकृतान् விஷங்கலந்த
भक्षान् சிற்றுண்டிகளை
इव எவ்வண்ணமோ அவ்
வண்ணமே
प्रतिगृहीयां न கண்ணெடுத்துத்
பாரேன்.

धर्ममर्थं च कामं च पृथिवीं चापि लक्ष्मण । इच्छामि भवतामर्थं एतत्प्रतिशृणोमि ते ॥५॥

लक्ष्मण “லக்ஷ்மண!
धर्मं च தர்மத்தையும்
अर्थं च அர்த்தத்தையும்
कामं च காமத்தையும்,
पृथिवीं अपि பூமியையும்,

भवतां अर्थं உங்கள்நிமித்தமாய்த்
தான்
इच्छामि வேண்டுகிறேன்.
एतत् இதை
ते உனக்கு
प्रतिशृणोमि வாக்களிக்கிறேன்.

भ्रातृणां संग्रहार्थं च सुखार्थं चापि लक्ष्मण । राज्यमप्यहमिच्छामि सत्येनायुधमालभे ॥

लक्ष्मण “லக்ஷ்மண!
भ्रातृणां தம்பிரமர்களுக்கு
संग्रहार्थं च இஷ்டத்திற்காகவும்
सुखार्थं अपि இதத்திற்காகவும்
தான்

राज्यं अपि ராஜ்யத்தையே
इच्छामि ஒப்புக்கொள்ளுகி
றேன்
सत्येन சத்தியமாக
आयुधं ஆயுதத்தின்பேரில்
आलभे ஆணையிடுகின்றேன்.

नेयं मम मही सौम्य दुर्लभा सागराम्बरा । न हीच्छेयमधर्मेण शक्रत्वमपि लक्ष्मण ॥ ७ ॥

| | | | |
|------------|--------------|-------------|--------------------|
| சௌம்ய | “அப்பா | துர்லபா ந | அடையமுடியாதென் |
| லக்ஷ்மண | லக்ஷ்மண ! | அபி | ஆயினும் [பதில்லை. |
| சாगराम्बरा | கடலாடையடுத்த | அதர்மத்தால் | |
| इयं | இந்த | शक्रं हि | இந்திரப்பதவியையும் |
| मही | உலகெல்லாமுமே | | கூட |
| मम | எனக்கு | इच्छेयं न | நான் பெரிதாய்க் |
| | | | கொள்ளேன். |

यद्विना भरतं त्वां च शत्रुघ्नं चापि मानद । भवेन्मम सुखं किञ्चिद्भस्स तत्कुरुतां शिखी ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|---------------|------------------|
| मानद | “பகைவர்களுையடக் | सुखं | சுகமானது |
| | குபவனே ! | यत् | யாதொன்று |
| भरतं | பரதனையும், | किञ्चित् | எள்ளளவேனும் |
| त्वां च | உன்னையும், | भवेत् | இருக்குமோ |
| शत्रुघ्नं अपि | சத்ருக்னனையும் | तत् | அதை |
| विना | விட்டு | शिखी | அக்கினியானது |
| मम च | எனக்குமாதிரம் | भस्स कुरुताम् | சாமபலாக்கட்டும். |

मन्येऽहमागतोऽयोध्यां भरतो भ्रातृवत्सलः । मम प्राणात्प्रियतरः कुलधर्ममनुस्सरन् ॥ ९ ॥

श्रुत्वा प्रव्राजितं मां हि जटावल्लधारिणम् । जानकया सहितं वीर त्वया च पुरुषोत्तम ॥
स्नेहेनाक्रान्तहृदयः शोकेनाकुलितेन्द्रियः । द्रष्टुमभ्यागतो ह्येष भरतो नान्यथाऽऽगतः ॥

| | | | |
|---------------|--|-----------------|-----------------------------|
| वीर | “வீரனே ! | त्वया च | உன்னோடும் |
| पुरुषोत्तम | புருஷோத்தம ! | सहितं | கூட |
| अहं | நான் | मां | என்னை |
| मन्ये | பின்வருமாறு எண் | प्रव्राजितं | நாடுகடத்தப்பட்டவ |
| भरतः | ‘பரதன் [ணுகிறேன்: | श्रुत्वा | அறித்து [அக |
| भ्रातृवत्सलः | { உடன்பிறந்தவர்களிடம் வாத்தஸல்யமுடையவன். | कुलधर्मं हि | குலதர்மத்தையே |
| मम | எனக்கு | अनुस्सरन् | பெரியதாய்ப்பாராட்டுகிறவனாய் |
| प्राणात् | உயிரைவிட | स्नेहेन | வாத்தஸல்யத்தால் |
| प्रियतरः | மேம்பட்டவன். | आक्रान्तहृदयः | தொந்த மனத்தனாய் |
| अयोध्यां | அயோத்திக்கு | शोकेन | மனவேதனையால் |
| आगतः | திரும்பிவந்த | आकुलितेन्द्रियः | ஐம்பொறிகலங்கி |
| भरतः | பரதன் | द्रष्टुं | நெரில் பார்க்க |
| जटावल्लधारिणं | சடையும், மரவுரியும் | अभ्यागतः | வந்திருக்கிறான். |
| | பூண்டு | एषः हि | இவன் |
| जानकया | ஜானகியோடும், | अन्यथा | வேறுவகையாக |
| | | आगतः न | வரவில்லை. |

अम्बां च कैकयीं रुष्य भरतश्चाप्रियं वदन् । प्रसाद्य पितरं श्रीमान्राज्यं मे दातुमागतः ॥

| | | | |
|----------|--------------------|------------|--------------------|
| श्रीमान् | “ புண்யாத்மாவாகும் | पितरं | திருத்தந்தையாரை |
| भरतः | பரதன், | मे | எனக்கு |
| अम्बां | தாயாகும் | राज्यं | ராஜ்யத்தை |
| कैकयीं | கைகேயிதேவியாரை | दातुं | அளிக்க |
| रुष्य | கோபித்து | प्रसाद्य च | திருவுளம்பற்றுமாறு |
| अप्रियं | கடுமொழியை | | செய்தும் |
| वदन् च | கூறியும் | आगतः | வந்திருக்கிறான். |

प्राप्तकालं यदेषोऽस्मान्भरतो द्रष्टुमिच्छति ॥ १३ ॥

| | | | |
|----------|--------|--------------|--------------|
| एषः | “ இந்த | इच्छति | வேண்டுகிறான் |
| भरतः | பரதன் | यत् | என்பது எதுவோ |
| अस्मान् | நம்மை | | அது |
| द्रष्टुं | காண | प्राप्तकालम् | தகுந்ததே. |

अस्मासु मनसाऽप्येष नाहितं किञ्चिदाचरेत् ॥ १४ ॥

| | | | |
|---------|----------------|----------|-----------------|
| एषः | “ இவன் | किञ्चित् | எள்ளளவும் |
| अस्मासु | நம் விஷயத்தில் | मनसा अपि | மனத்தினாலும்கூட |
| अहितं | தீங்கை | आचरेत् न | கருதான். |

विप्रियं कृतपूर्वं ते भरतेन कदा नु किम् । ईदृशं वा भयं तेऽद्य भरतं योऽत्र शङ्कसे ॥ १५ ॥

| | | | |
|-----------|------------------------|--------|--------------------|
| भरतेन | “ பரதனால் | अत्र | இது விஷயத்தில் |
| ते | உனக்கு | अद्य | இப்பொழுது |
| विप्रियं | அனிஷ்டம் | भरतं | பரதனை |
| कदा | எப்பொழுதாவது | यः | எந்த நீ |
| किं नु | என்னதான் | शङ्कसे | சந்தேகிக்கின்றனையோ |
| कृतपूर्वं | செய்யப்பட்டிருக்கிறது? | ते | அந்த உனக்கு |
| | | ईदृशं | இப்படிப்பட்ட |
| | | भयं वा | கலவரமேன்? |

न हि ते निष्ठुरं वाच्यो भरतो नाप्रियं वचः । अहं ह्यप्रियमुक्तः स्यां भरतस्याप्रिये कृते ॥

| | | | |
|----------|-----------------|---------|-----------------|
| भरतः | “ பரதன் | अप्रियं | அனிஷ்டமான |
| ते | உன்னால் | वचः हि | வார்த்தையைக்கூட |
| निष्ठुरं | நிஷ்டூரச்சொல்லை | न हि | சொல்லத்தக்கவனல் |
| वाच्यः न | சொல்லத்தக்கவனல் | | லன். |

| | | | |
|--------------|---------------------------|---------|-----------------|
| भरतस्य | பரதனை | अहं | நான் |
| अप्रिये कृते | மனம் நோகச்செய்வ தாயின் | अप्रियं | அனியிடத்தை |
| | | उक्तः | சொல்லப்பட்டவனாக |
| | | स्याम् | ஆவேன். |

कथं नु पुत्राः पितरं हन्युः कस्यांचिदापदि । भ्राता वा भ्रातरं हन्यात्सौमित्रे प्राणमात्मनः॥

| | | | |
|------------|-------------|------------|------------------------|
| सौमित्रे | “ லக்ஷ்மண ! | हन्युः | கொல்வார்கள் ? |
| कस्यांचित् | ஏதோவொரு | आत्मनः | தனக்கு |
| आपदि | கஷ்டத்தில் | प्राणं | உயிரான |
| पुत्राः | புதல்வர்கள் | भ्रातरं | பிராதாவை (சகோ தரனை) |
| पितरं | தகப்பனை | भ्राता | பிராதா (சகோதரன்) |
| कथं नु | எப்படி | हन्यात् वा | எப்படிக்கொல்வான் ? |

यदि राज्यस्य हेतोस्त्वमिमां वाचं प्रभाषसे । वक्ष्यामि भरतं दृष्ट्वा राज्यमस्मै प्रदीयताम्॥

| | | | |
|--------------|------------------|-----------|-----------------------------|
| त्वं | “ நீ | भरतं | பரதனை |
| राज्यस्य | ராஜ்யத்தின் | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| हेतोः | பொருட்டு | राज्यं | ‘ராஜ்யமானது |
| इमां | இந்த | अस्मै | இவனுக்கு |
| वाचं | சொல்லை | प्रदीयतां | கொடுக்கப்பட்டதும்’ என்று |
| प्रभाषसे यदि | கூறுகின்றாயாகில் | वक्ष्यामि | சொல்லுகிறேன். |

उच्यमानो हि भरतो मया लक्ष्मण तत्त्वतः । राज्यमस्मै प्रयच्छेति वाढमित्येव वक्ष्यति ॥

| | | | |
|---------|-------------|-------------|------------------|
| लक्ष्मण | “ லக்ஷ்மண ! | उच्यमानः | சொல்லப்படுகிற |
| राज्यं | ‘ராஜ்யத்தை | भरतः | பரதன், |
| अस्मै | இவனுக்கு | तत्त्वतः हि | உள்ளமுவந்து |
| प्रयच्छ | கொடு’ | वाढं | ‘திருவுளப்படியே’ |
| इति | என்று | इति एव | என்றுதான் |
| मया | என்னால் | वक्ष्यति | சொல்லுவான்.” |

तथोक्तो धर्मशीलेन भ्रात्रा तस्य हिते रतः । लक्ष्मणः प्रविवेशेव स्वानि गात्राणि लज्जया॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------|-----------------|----------------------------|
| धर्मशीलेन | தர்மசீலரான | रतः | ஊக்கமுடையவரு மாகிய |
| भ्रात्रा | தமையனரால் | लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் |
| तथा | மேற்கண்டவாறு | लज्जया | வெட்கத்தால் |
| उक्तः | சொல்லப்பட்டவரும், | स्वानि गात्राणि | தனதவயவங்களினுள் ளையே |
| तस्य | அவரது | प्रविवेश इव | புகுந்தவர்போலு மாயினர். |
| हिते | திருவுளம் கோணுது நடப்பதில் | | |

एतौ तौ संप्रकाशेते गोत्रवन्तौ मनोरमौ । वायुवेगसमौ वीरौ जवनौ तुरगोत्तमौ ॥ २५ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-------------|--------------------|
| एतौ | “இதோ | जवनौ | வேகம் செல்லுபவை |
| वीरौ | சலியாநெஞ்சு படை | | களும் |
| | த்தவைகளும், | मनोरमौ | அழகானவைகளு |
| गोत्रवन्तौ | நல்லஜாதியிற் பிறந்த | | மான |
| | வைகளும், | तौ | அவ்விரண்டு |
| वायुवेगसमौ | வாயுவையொத்த . வே | तुरगोत्तमौ | சிறந்த குதிரைகளும் |
| | கழுடையவைகளாய் | संप्रकाशेते | தெரிகின்றன. |

स एष सुमहाकायः कम्पते बाहिनीमुखे । नागः शत्रुजयो नाम वृद्धस्तातस्य धीमतः ॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------|-------------------|
| धीमतः | “தீமானாகிய | नाम | என்ற |
| तातस्य | அப்பாவினது | सः | அந்த |
| सुमहाकायः | பெரு உடலுடையதும் | नागः | யானை |
| वृद्धः | நெடுங்காலங்கண்ட | बाहिनीमुखे | சைன்யத்தின் முன் |
| | தும், | एषः | இதோ [எனினியில் |
| शत्रुजयः | ‘சத்ருஞ்ஜயன்’ | कम्पते | அசைந்து வருகிறது. |

न तु पश्यामि तच्छत्रं पाण्डुरं लोकसत्कृतम् । पितुर्दिव्यं महाबाहो संशयो भवतीह मे ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-----------|-----------------|
| महाबाहो | “மகாபாகுவே! | पाण्डुरं | வெண் |
| पितुः | தந்தையினது | छत्रं तु | குடையைமட்டும் |
| दिव्यं | திவ்யமானதும், | पश्यामि न | காண்கின்றிலேன், |
| लोकसत्कृतं | லோகத்தாரால்கொண் | इह | இவ்விடத்தில் |
| | டாடப்பட்டதுமான | मे | எனக்கு |
| तत् | அந்த | संशयः | கலவரம் |
| | | भवति | ஏற்படுகிறது.” |

इतीव रामो धर्मात्मा सौमित्रिं तमुवाच ह । वृक्षाग्रादवरोह त्वं कुरु लक्ष्मण मद्वचः ॥ २८ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|--------------|--------------------|
| धर्मात्मा | தர்மா த்மாவாகும் | लक्ष्मण | “லக்ஷ்மண! |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | त्वं | நீ |
| तं | அந்த | मद्वचः | நான் சொல்வதை |
| सौमित्रिं | லக்ஷ்மணரிடம் | कुरु | செய். |
| इव ह | இப்படி எல்லாமும், | वृक्षाग्रात् | மரவுச்சியிலிருந்து |
| इति | பின்வருமாறும் | अवरोह | இறங்கு”. |
| उवाच | சொன்னார் : | | |

अवतीर्य तु सालाग्रात्तस्मात्स समितिंजयः । लक्ष्मणः प्राञ्जलिर्भूत्वा तस्यौ रामस्य पार्श्वतः ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------------|-----------------|
| समितिंजयः | ஜயசாலியாகும் | तु | உடனே |
| सः | அந்த | अवतीर्य | இறங்கி, |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர், | रामस्य | ஸ்ரீராமரது |
| तस्मात् | அந்த | पार्श्वतः | பக்கலில் |
| सालाग्रात् | ஆச்சாமரவுச்சியிலி | प्राञ्जलिः भूत्वा | அஞ்சலி ஹஸ்தராகி |
| | ருந்து | तस्यौ | நின்றவிட்டனர். |

भरतेनापि संदिष्टा संमदो न भवेदिति । समन्तात्तस्य शैलस्य सेना वासमकल्पयत् ॥

| | | | |
|----------|------------------|---------------|-----------------|
| संमदः | சந்தடி | सेना अपि | சேனையும், |
| भवेत् न | ஏற்படலாகாது | तस्य | அந்த |
| इति | என்று | शैलस्य | மலையினுடைய |
| भरतेन | பரதரால் | समन्तात् | நாற்புறத்திலும் |
| संदिष्टा | ஆக்ஞாபிக்கப்பட்ட | वासं अकल्पयत् | தங்கிவிட்டது. |

अध्यर्धमिक्ष्वाकुचमूर्योजनं पर्वतस्य सा । पार्श्वे न्यविशदावृत्य गजवाजिरथाकुला ॥ ३१ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|----------|-----------------|
| गजवाजि- } | யானை, குதிரை, ரதம் | पार्श्वे | பக்கலில் |
| रथाकुला } | இவைகள் நிரம்பிய | अध्यर्धं | ஒன்றரை |
| सा | அந்த | योजनं | யோஜனை தூரம் |
| इक्ष्वाकुचमूः | இக்ஷ்வாகுசேனை | आवृत्य | ஆகரமித்துக்கொ |
| पर्वतस्य | மலையினது | न्यविशत् | இருந்தது. [ண்டு |

सा चित्रकूटे भरतेन सेना धर्मं पुरस्कृत्य विधूय दर्पम् ।

प्रसादनार्थं रघुनन्दनस्य विराजते नीतिमता प्रणीता ॥ ३२ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------|------------|---------------------|
| नीतिमता | நீதிமானான | विधूय | ஒழித்து, |
| भरतेन | பரதரால் | धर्मं | தருமத்தை |
| प्रणीता | ஆக்ஞாபிக்கப்பட்ட டதும், | पुरस्कृत्य | மேற்கொண்ட |
| रघुनन्दनस्य | ரஹீராமரது | सा | அந்த |
| प्रसादनार्थं | அனுக்கிரஹத் திற்காக | सेना | சேனை |
| दर्पं | செருக்கை | चित्रकूटे | சித்திரகூடத்தில் |
| | | विराजते | களிப்புற்றிருந்தது. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे सप्तनवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 5983

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3628

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे अष्टमेऽह्नि वर्तमानकथाप्रसङ्गः ॥

இவ்விதம் ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமர் ஸந்நிதியில் அச்வமேத யாகசாலையில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில் எட்டாவது தினத்தில் கானம் பண்ணப்பட்ட கதை முடிவுபெற்றது.



[புரா குசலவாஸ்யா ஸ்ரீராமஸந்நிதாவஸ்யமேத்யஜ்ஜவாடே த்வாவிஸததி திநேஸு கீதே ஸ்ரீமத்ராமாயணே
நவமே஽ஹி அயோத்யாகாண்டே அஸ்தநவதததமஸர்மாரஸ்ய யாவத்காண்டஸமாஸி
(5984—6712 ஸ்லோகா:) கீதம் । தஸஸிந் திநே
கீதா: ஸ்லோகாஸ்ச 729]

ஆதிரியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமஸந்நிதிரியில் அச்வமேதயாகசாலையில்
முப்பத்திரண்டு தினங்களில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில்
ஒன்பதாவது தினத்தில் அயோத்தியாகாண்டத்தில் 98-வதுஸர்க்கம் முதல்
காண்டம் முடிய (5984—6712) கானம் செய்யப்பட்டது.
அன்று கானம் செய்யப்பட்ட சுலோகசங்கியை 729]

அஸ்தநவதததம: ஸர்ம:—தொண்ணூற்றியெட்டாவது ஸர்க்கம். || ௨௮ ||

ராமாஸ்தமாவேஷணம்—ஸ்ரீராமாஸ்தமத்தை தேதேல்.

நிவேஸ்ய ஸேநா து விஸு: பஹ்யா பாடவதா வர: । அஸிஸந்நு த காகுதஸ்தமியேஷ கुरुவர்தகம்॥

| | | | |
|------------|-------------------------|-------------|------------------------|
| விஸு: | தன்னடக்கமுள்ள வரும், | கुरुவர்தகம் | பித்ருவாதஸல்ய முடைய |
| பாடவதா வர: | புருஷோத்தமருமாகிய | காகுதஸ்தம் | ஸ்ரீராமரிடம், |
| ஸ: | அவர் | பஹ்யா | கால்நடையாய் |
| ஸேநா | சேனையை | அஸிஸந்நு | நடந்துசெல்ல |
| நிவேஸ்ய து | நிறுத்திவிட்டு, | இயேஷ | தீர்மானித்தார். |

நிவிஸ்தமாஸ்தே ஸேந்யே து யதோதேஸ விநிதவத் । ஸரதோ ஸ்ராதரம் வாக்யம் ஸதுஸ்தமிதமஸ்ரவீத் || ௨ ||

| | | | |
|------------------|------------------|----------|---------------------|
| ஸேந்யே | ஸேனியம் | ஸ்ராதரம் | தம்பியாகும் |
| யதோதேஸ | காட்டியவிடத்தில் | ஸதுஸ்தம் | சத்ருக்னரைப் |
| விநிதவத் | மரியாதையோடும் | இதம் | பின்வரும் [பார்த்து |
| நிவிஸ்தமாஸ்தே து | இருந்தவளவில் | வாக்யம் | சொல்லை |
| ஸரத: | பரதர் | அஸ்ரவீத் | சொன்னார்: |

ஸிஸ்தம் வநமிதம் ஸௌம்ய நரஸஹ்யை: ஸமந்நத: । லுஸ்யைஸ்த ஸஹிதேரேஸிஸ்தவஸ்தேஸிதமஹிஸி || ௩ ||

| | | | |
|----------|---------------|------------------|-------------------|
| ஸௌம்ய | “ஸௌமியனே ! | லுஸ்யை: வ | வேடுவர்களோடும், |
| தவ் | நீ | ஸமந்நத: | எல்லாப் பக்கங்களி |
| ஸிஸ்தம் | இந்த | இதம் | இந்த [ஹம் |
| ஸஹிதே: | வந்திருக்கும் | வநம் | வனத்தில் |
| நரஸஹ்யை: | மனிதர்களோடும் | ஸிஸ்தம் | விசுவாஸில் |
| | | அஸ்தேஸிதம் அஹிஸி | தேடவேண்டும். |

गुहो ज्ञातिसहस्रेण शरचापासिपाणिना । समन्वेषतु काकुत्स्थावस्मिन्परिवृतः स्वयम् ॥

| | | | |
|-----------------------|---|------------|-----------------|
| गुहः | “ குகர் | परिवृतः | சூழப்பட்டவராய் |
| शरचापासि- पाणिना } | அம்பு, வில், கத்தி இவைகளை கையில் தரித்த | स्वयं | தானே |
| ज्ञातिसहस्रेण | ஞாதிசகஸின் பலரா லும் | अस्मिन् | இவ்விடத்தில் |
| | | काकुत्स्थौ | கூகூதஸ்தமணர்களை |
| | | समन्वेषतु | தேடட்டும். |

अमात्यैः सह पौरैश्च गुरुभिश्च द्विजातिभिः । सह सर्वं चरिष्यामि पद्भ्यां परिवृतः स्वयम् ॥

| | | | |
|------------------|--------------------------------|-----------|---------------------------------------|
| अमात्यैः सह | “ மந்திரிமார்களோடு கூடவும், | परिवृतः | சூழப்பட்டவனாய், |
| पौरैः च | பட்டணத்தார் களோடும், | सर्वं | எங்கும் |
| गुरुभिः | பெரியோர்களாகிய | पद्भ्यां | கால்நடையாய் |
| द्विजातिभिः च सह | அந்தணர்களோடும் | स्वयं | நானும் |
| | | चरिष्यामि | ஜாக்கிரதையாய் பார்க்க கப்போகிறேன். |

यावन्न रामं द्रक्ष्यामि लक्ष्मणं वा महाबलम् । वैदेहीं वा महाभागां न मे शान्तिर्भविष्यति ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|---------------------|-----------------|
| रामं | “ ஸ்ரீராமரையாவது | द्रक्ष्यामि न यावत् | காணாதவரையில் |
| महाबलं | மகாசக்திமானாகிய | मे | எனக்கு |
| लक्ष्मणं वा | லக்ஷ்மணனையாவது | शान्तिः | மனநிம்மதியானது |
| महाभागां | புண்ணியாத்மாவாகிய | भविष्यति न | உண்டாகமாட்டாது. |
| वैदेहीं वा | வைதேகியாரை யாவது | | |

यावन्न चन्द्रसंकाशं द्रक्ष्यामि शुभमाननम् । भ्रातुः पद्मपलाशाक्षं न मे शान्तिर्भविष्यति ॥

| | | | |
|---------------|---|---------------------|------------------|
| भ्रातुः | “ தமையனாரது | आननं | திருமுகமண்டலத்தை |
| चन्द्रसंकाशं | சந்திரனையொத்ததும் | द्रक्ष्यामि न यावत् | காணாதவரையில் |
| पद्मपलाशाक्षं | { தாமரையிதழ்போன்ற கண்களையுடையது மாகிய | मे | எனக்கு |
| शुभं | அழகிய | शान्तिः | மனநிம்மதியானது |
| | | भविष्यति न | உண்டாகமாட்டாது. |

यावन्न राज्ये राज्याहः पितृपैतामहे स्थितः । अभिषेकजलक्लिन्नो न मे शान्तिर्भविष्यति ॥

| | | | |
|-------------------------|---|----------------|----------------------------------|
| राज्याहः | “ ராஜ்யத்திற்குரிய அவர் | राज्ये | ராஜ்யத்தில் |
| अभिषेक- जलक्लिन्नः } | அபிஷேகஜலத்தால் ஸ்னானம் செய்யப் பெற்றவராய் | स्थितः न यावत् | ஸ்தாபிக்கப்பட்டவ ராகிறவரையில் |
| पितृपैतामहे | தலைமுறையாகவந்த | मे | எனக்கு |
| | | शान्तिः | மனநிம்மதியானது |
| | | भविष्यति न | உண்டாகமாட்டாது. |

यावन्न चरणौ भ्रातुः पार्थिवव्यञ्जनान्वितौ । शिरसा धारयिष्यामि न मे शान्तिर्भविष्यति॥

| | | | |
|------------------------------|----------------------------|-------------|-------------------------|
| भ्रातुः | “தமையனாது | धारयिष्यामि | } நான் தரிக்காத வரையில் |
| पार्थिव- व्यञ्जनान्वितौ } | ராஜவக்ஷணங்களுடன் விளங்கும் | न यावत् | |
| चरणौ | திருவடிகளை | मे | எனக்கு |
| शिरसा | தலையால் | शान्तिः | மனநிம்மதியானது |
| | | भविष्यति न | உண்டாகமாட்டாது. |

सिद्धार्थः खलु सौमित्रिर्यश्चन्द्रविमलोपमम् । मुखं पश्यति रामस्य राजीवाक्षं महाद्युति ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------|---------------|-------------------|
| यः | “எவன் | मुखं | திருமுகமண்டலத் |
| रामस्य | ஸ்ரீராமரது | | தை |
| चन्द्रविमलोपमं | மாசுற்ற சந்திரனை ஒத்ததும், | पश्यति | தரிசித்துக்கொண்டி |
| राजीवाक्षं | தாமரைக்கண்களை உடையதும், | | ருக்கின்றானே அந்த |
| महाद्युति | தேஜோமயமாய் விளங்குவதுமான | सौमित्रिः खलु | லக்ஷ்மணனொருவனே |
| | | सिद्धार्थः | கொடுத்துவைத்தவன். |

कृतकृत्या महाभागा वैदेही जनकात्मजा । भर्तारं सागरान्तायाः पृथिव्या याऽनुगच्छति ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------------|-----------|---------------------|
| या | “எவள் | महाभागा | மகாபாக்கியசாலியும், |
| सागरान्तायाः | சமுத்திரம்வரையிலு | जनकात्मजा | ஜனகமகாராஜரின் |
| पृथिव्याः | பூமிக்கு [முள்ள | | திருமகளுமாகிய |
| भर्तारं | ரசூகரை | वैदेही | வைதேஹியார் |
| अनुगच्छति | பின்பற்றிச் செல்லு கின்றாளோ அந்த | कृतकृत्या | கொடுத்துவைத் தவள். |

सुभगश्चित्रकूटोऽसौ गिरिराजोपमो गिरिः । यस्मिन्वसति काकुत्स्थः कुबेर इव नन्दने ॥

| | | | |
|------------|----------------------|-------------|-------------------------|
| कुबेरः | “குபேரன் | असौ | இந்த |
| नन्दने | நந்தனவனத்தில் | चित्रकूटः | சித்ரகூட |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே | गिरिः | பர்வதம், |
| | | गिरिराजोपमः | ஹிமவத்பர்வதம் போன்றதாய் |
| यस्मिन् | எதில் | सुभगः | பாக்கியம்பெற்றதாகி றது. |
| काकुत्स्थः | ஸ்ரீராமர் | | |
| वसति | வசிக்கின்றாரோ, | | |

कृतकार्यमिदं दुर्गं वनं व्यालनिषेवितम् । यदध्यास्ते महातेजा रामः शस्त्रभृतां वरः॥१३॥

| | | | |
|-----------------|----------------------|---------------|---------------------------------|
| महातेजाः | “மகாதேஜஸ்வியும் | व्यालनिषेवितं | கொடிய மிருகங்கள் வசிக்கப்பெற்று |
| शस्त्रभृतां वरः | வில்லாளிகளுள் உத் | दुर्गं | புகழுடியாத |
| रामः | ஸ்ரீராமர் [தமருமாகிய | वनं | வனமானது |
| यत् | எதில் | कृतकार्यम् | கொடுத்துவைத்த தாகிறது.” |
| अध्यास्ते | வசிக்கின்றாரோ, | | |
| इदं | இந்த | | |

एवमुक्त्वा महाबाहुर्भरतः पुरुषर्षभः । पद्भ्यामेव महातेजाः प्रविवेश महद्वनम् ॥ १४ ॥

महातेजाः मகாதேஜஸ்வியும்,

महाबाहुः ஆஜானுபாகுவும்

पुरुषर्षभः புருஷோத்தமருமா

கிய

भरतः பரதர்

एवं மேற்கண்டவாறு

उत्त्वा சொல்லி

पद्भ्यां एव கால்நடையாகவே

महत् वनं பெருங்கானகத்தில்

प्रविवेश புருந்தார்.

स तानि द्रुमजालानि जातानि गिरिसानुषु । पुष्पिताग्राणि मध्येन जगाम वदतां वरः ॥

वदतां உறுதியாய்ச்சொல்ப

வர்களுள்

वरः सः உத்தமராகிய அவர்

गिरिसानुषु மலைத்தாழ்வரைகளில்

जातानि இருக்கிறவைகளும்

पुष्पिताग्राणि

{ பூக்கள் நிறைந்த உச்சிகளையுடையவைகளும்மாகிய

तानि அந்த

द्रुमजालानि मध्येन மரவரிசைகளினிடை

जगाम நடந்துசென்றார். [யில்

स गिरेश्चित्रकूटस्य सालमासाद्य पुष्पितम् । रामाश्रमगतस्याग्नेर्ददर्श ध्वजमुच्छ्रितम् ॥ १६ ॥

सः அவர்

चित्रकूटस्य गिरेः சித்ரகூடமலையினது

पुष्पितं பூத்திருந்த

सालं ஓர் ஆச்சாமரத்தின்

மீது

रामाश्रमगतस्य

ஸ்ரீராமரது ஆசிரமத்திலிருக்கும்

अग्नेः அக்னியினது

उच्छ्रितं உயரக்கிளம்பிய

ध्वजं புகையை

ददर्श கண்டார்.

आसाद्य ஏறி

तं दृष्ट्वा भरतः श्रीमान्मुमोद सह बान्धवैः । अत्र राम इति ज्ञात्वा गतः पारमिवाम्भसः ॥

श्रीमान् ஸ்ரீமானாகும்

भरतः பரதர்

तं दृष्ट्वा அதைக் கண்டு

अत्र இவ்விடத்தில்

रामः इति ராமரிருக்கிறாரென்று

ज्ञात्वा ஊகித்து

अम्भसः சமுத்திரத்தினது

पारं அக்கரையை

गतः इव அடைந்தவர்போன்றவராகி

बान्धवैः सह இனத்தார்களோடு

मुमोद மகிழ்ந்தனர். [கூட

स चित्रकूटे तु गिरौ निशम्य रामाश्रमं पुण्यजनोपपन्नम् ।

गुहेन सार्धं त्वरितो जगाम पुनर्निवेश्यैव चमूं महात्मा ॥ १८ ॥

महात्मा மகாத்மாவாகும்

सः அவர்

चित्रकूटे गिरौ சித்ரகூடபர்வதத்தில்

पुण्यजनोपपन्नं புண்ணியர்த்மாக்கள்

வசிக்கும்

रामाश्रमं ராமரது ஆசிரமம்

निशम्य तु (இதுதானெனக்)

கேட்டறிந்துகொண்டு

चमूं சைனியத்தை

पुनः एव மீளவும்

निवेश्य ஒரேயிடத்திலிருக்கச்

गुहेन सार्धं குகரோடுகூட[செய்து

त्वरितः जगाम வேகமாய் நடந்தார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे अष्टनवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 6001



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3646

एकोनशततमः सर्गः—தொண்ணூற்றொன்பதாவது ஸர்க்கம். || ௯௯ ||

श्रीरामदर्शनम्—ஸ்ரீராமரை காண்பது.

निविष्टायां तु सेनायामुत्सुको भरतस्ततः । जगाम भ्रातरं द्रष्टुं शत्रुघ्नमनुदर्शयन् ॥ १ ॥

| | | | |
|----------------|------------------|------------|--|
| सेनायां | சேனா | ततः | அப்பொழுது |
| निविष्टायां तु | அமர்ந்ததும் | शत्रुघ्नं | சத்ருக்னருக்கு |
| भरतः | பரதர் | अनुदर्शयन् | (தற்கால) அடையாளங்களைச் சொல்லிக் கொண்டு |
| आतरं | தமையனாரை | जगाम | நடந்தார். |
| द्रष्टुं | தரிசிக்க | | |
| उत्सुकः | ஆவலதிகரித்தவராய் | | |

ऋषिं वसिष्ठं संदिश्य मातृमे शीघ्रमानय । इति त्वरितमग्रे स जगाम गुरुवत्सलः ॥ २ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------|----------|--------------------------------|
| गुरुवत्सलः | தமையனாரிடம் வாத் ஸல்யமுடைய | आनय | அழைத்துவாரும்' |
| सः | அவர் | इति | என்கிற |
| वसिष्ठं ऋषिं | வவலிஷ்டமுனிவ | सन्दिश्य | செய்தியை சொல்லிய னுப்பிவிட்டு, |
| मे | 'எனது [ருக்கு | अग्रे | முதலில் |
| मातृः | தாய்மார்களை | त्वरितं | விரைந்து |
| शीघ्रं | விரைவில் | जगाम | சென்றார். |

सुमन्त्रस्त्वपि शत्रुघ्नमदूरादन्वपद्यत । रामदर्शनजस्तर्षो भरतस्येव तस्य च ॥ ३ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------|--------|------------------|
| सुमन्त्रः अपि | சுமந்திரரும் | तर्षः | ஆவல் |
| शत्रुघ्नं | சத்ருக்னரை | भरतस्य | பரதருக்கு |
| अदूरात् तु | பக்கலிலேயே | इव | எவ்வளவோ அவ் வளவு |
| अन्वपद्यत | தொடர்ந்து சென்றார். | तस्य च | அவருக்கும். |
| रामदर्शनजः | ஸ்ரீராமரை பார்ப்பதி லுள்ள | | |

गच्छन्नेवाथ भरतस्तापसालयसंस्थिताम् । भ्रातुः पर्णकुटीं श्रीमानुदजं च ददर्श ह ॥ ४ ॥

| | | | |
|-----------|--------------|-------------|--------------------------|
| अथ | அனந்தரம் | उदजं च | குடிசையையும் |
| श्रीमान् | ஸ்ரீமானாகும் | तापसालय-} | தபசிகள் உசிக்குமிட |
| भरतः | பரதர் | संस्थितां } | மாய்நன்கு அமைக் கப்பெற்ற |
| गच्छन् एव | சென்றுகொண்டே | पर्णकुटीं ह | பர்ணசாலையையும், |
| भ्रातुः | தமையனாரை | ददर्श | பார்த்தார். |

शालायास्त्वग्रतस्तस्या ददर्श भरतस्तदा । काष्ठानि चावभग्नानि पुष्पाण्यपचितानि च ॥

| | | | |
|-----------|---------------|------------|----------------------|
| तदा | அப்பொழுது | अवभग्नानि | வெட்டப்பட்ட |
| भरतः | பரதர், | काष्ठानि च | விறகுகளையும், |
| तस्याः | அந்த | अपचितानि | பறித்துவைத்திருக் |
| शालायाः | சாலையின் | पुष्पाणि च | புஷ்பங்களையும் [கும் |
| अग्रतः तु | முன்புறத்தில் | ददर्श | பார்த்தார். |

लक्ष्मणस्य च रामस्य ददर्शश्रमर्षीयुषः । कृतं वृक्षेष्वभिज्ञानं कुशचीरैः कचित्कचित् ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-----------|---|
| आश्रमं | ஆசிராமத்தை | कुशचीरैः | { தருப்பைக்கயிறுகளை யிறுக்கிக்கட்டுவதால் உண்டாகும் பள்ளத் தடங்களால் |
| ईयुषः | அடைந்திருந்த | कृतं | ஏற்பட்ட |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருடையவும், | अभिज्ञानं | அடையாளத்தையும் |
| लक्ष्मणस्य च | லக்ஷ்மணருடையவும், | ददर्श | கண்டார். |
| कचित् कचित् | அங்கங்கே | | |
| वृक्षेषु | மரங்களில் | | |

ददर्श च वने तस्मिन्महतः सञ्चयान्कृतान् । मृगाणां महिषाणां च करीषैः शीतकारणात् ॥

| | | | |
|-------------|------------------|------------|-------------------|
| तस्मिन् वने | அந்தக் காட்டில், | शीतकारणात् | குளிர்காய்வதற்காக |
| मृगाणां | மாண்களுடையவும் | कृतान् | செய்யப்பட்ட |
| महिषाणां च | எருமைகளுடையவும் | महतः | பெரிய |
| करीषैः | உலர்ந்த வரட்டி | सञ्चयान् च | குவியல்களையும் |
| | களால் | ददर्श | கண்டார். |

गच्छन्नेव महाबाहुर्द्युतिमान्भरतस्तदा । शत्रुघ्नं चाब्रवीद्धृष्टानमात्यांश्च सर्वशः ॥ ८ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------------|-------------------------|
| महाबाहुः | மகாபாகுவும் | शत्रुघ्नं च | சத்ருக்னரையும் |
| द्युतिमान् | தேஜோவானுமாகும் | तान् अमात्यान् | அந்த மந்திரிமார்கள் |
| भरतः | பரதர் | सर्वशः च | எல்லோரையும் |
| गच्छन् एव | சென்றகொண்டே | | பார்த்து |
| तदा | அப்பொழுது | अब्रवीत् | பின்வருமாறு சொன் னார் : |
| हृष्टः | மனமகிழ்ந்தவராய் | | |

मन्ये प्राप्ताः स्म तं देशं भरद्वाजो यमब्रवीत् । नातिदूरे हि मन्येऽहं नदीं मन्दाकिनीमितः ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|------------|--------------------|
| भरद्वाजः | “ பரத்துவாஜமுனிவர் | मन्दाकिनीं | மந்தாகினி |
| यं अब्रवीत् | எதை குறிப்பிட்டன | नदीं | நதியை |
| तं देशं हि | அவ்விடத்திற்கே[ரோ | इतः | இவ்விடத்திலிருந்து |
| प्राप्ताः स्म | வந்துவிட்டோமென | नातिदूरे | சமீபத்திலிருப்பதாக |
| मन्ये | நினைக்கிறேன். | अहं मन्ये | நான் எண்ணுகிறேன். |

उच्चैर्बद्धानि चीराणि लक्ष्मणेन भवेदयम् । अभिज्ञानकृतः पन्था विकाले गन्तुमिच्छता ॥

| | | | |
|---------|--|---------------|-------------------------------|
| चीराणि | { “ மரங்களிலிருக்கும் கயிறுகட்டிய பள்ளத் தடங்கள் | गन्तुं इच्छता | போகவெண்ணிய |
| उच्चैः | ஆழமாய் | लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணனால் |
| बद्धानि | பதிந்திருக்கின்றன. | अयं पन्थाः | அந்த வழி |
| विकाले | இருட்டுவேளைகளில் | अभिज्ञानकृतः | அடையாளத்துடன் செய்யப்பட்டதாய் |
| | | भवेत् | இருக்கலாம். |

इदं चोदात्तदन्तानां कुञ्जराणां तरसिनाम् । शैलपार्श्वे परिक्रान्तपन्योन्यमभिगर्जताम् ॥

| | | | |
|----------------|---|-------------|------------------|
| उदात्तदन्तानां | “ நீண்ட தந்தங்களை யுடையனவும், கொழுத்தவைகளு மான ஒன்றைப்பார்த்து மற்றொன்று | अभिगर्जतां | கர்ஜிக்கும் |
| तरसिनां | | कुञ्जराणां | யானைகளுடைய |
| अन्योन्यं | | परिक्रान्तं | நடக்குமிடம் |
| | | शैलपार्श्वे | மலைத்தாழ்வரையில் |
| | | इदं च | இதோவிருக்கிறது. |

यमेवाधातुमिच्छन्ति तापसाः सततं वने । तस्यासौ दृश्यते धूमः सङ्कुलः कृष्णवर्त्मनः ॥

| | | | |
|--------|----------------|---------------|-------------------|
| वने | “வனத்தில் | इच्छन्ति | நினைக்கின்றார்களோ |
| तापसाः | தவஸிகள் | तस्य | அந்த |
| सततं | எக்காலத்திலும் | कृष्णवर्त्मनः | அக்கினியினுடைய |
| यं एव | எதொன்றையே | धूमः | புகை |
| आधातुं | அணையாது பாது | सङ्कुलः | ஏராளமாய் |
| | காக்க | असौ | இதோ |
| | | दृश्यते | காணப்படுகிறது. |

अत्राहं पुरुषव्याघ्रं गुरुसत्कारकारिणम् । आर्यं द्रक्ष्यामि संहृष्टो महर्षिपिव राघवम् ॥१३॥

| | | | |
|------------------|-----------------------------------|-------------|-----------------|
| अत्र | “ இவ்விடத்தில் | राघवं | ஸ்ரீராமரை, |
| अहं | நான் | महर्षिं | மகர்ஷியை |
| गुरुसत्कारकारिणं | திருத்தந்தையைக் கௌரவிப்பவரும், | इव | எவ்வண்ணமோ |
| पुरुषव्याघ्रं | புருஷோத்தமரும், | संहृष्टः | ஆசைதீர்த்தவனாய் |
| आर्यं | பூஜ்யருமாகிய | द्रक्ष्यामि | தரிசிப்பேன்.” |

अथ गत्वा मुहूर्ते तु चित्रकूटं स राघवः । मन्दाकिनीमनुप्राप्तस्तं जनं चेदमब्रवीत् ॥१४॥

| | | | |
|------------|--------------------|-------------|------------------------------|
| अथ | அப்பொழுது | अनुप्राप्तः | கண்டவராய் |
| सः राघवः | அந்த பரதர் | तं | அந்த |
| मन्दाकिनीं | மந்தாகிணிக்கரையில் | जनं | கூடவந்த ஜனத்தைப் பார்த்து |
| मुहूर्तं | ஒரு முகூர்த்தகாலம் | इदं च | பின்வருமாறும் |
| गत्वा तु | நடந்த பின்னர் | अब्रवीत् | சொன்னார் : |
| चित्रकूटं | சித்திரகூடத்தை | | |

जगत्यां पुरुषव्याघ्रं आस्ते वीरासने रतः । जनेन्द्रो निर्जनं प्राप्य धिक्छे जन्म सजीवितम् ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------------|---------|------------------|
| जगत्यां | “ உலகில் | रतः | உற்சாகமுடையவராய் |
| पुरुषव्याघ्रं | புருஷோத்தமரும், | आस्ते | இருக்கிறார். |
| जनेन्द्रः | ஜனேஸ்வரருமாகிய அவர் | मे | எனது |
| निर्जनं | மனிதரற்ற காட்டை | जन्म | பிறப்பை |
| प्राप्य | அடைந்து, | सजीवितं | உயிருடன் |
| वीरासने | தபஸிகள் லுஷ்டிக்கும் வீராசனத்தில் | धिक् | கொளுத்தவேண்டும். |

मत्कृते व्यसनं प्राप्तो लोकनाथो महाद्युतिः । सर्वान्कामान्परित्यज्य वने वसति राघवः ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|-----------|--------------|
| लोकनाथः | “லோகநாதரும், | प्राप्तः | அடைந்தவராய் |
| महाद्युतिः | மகா தேஜோவானு மாகிய | सर्वान् | ஸர்வவித |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | कामान् | போகங்களையும் |
| मत्कृते | என்பொருட்டு | परित्यज्य | துறந்து |
| व्यसनं | கஷ்டத்தை | वने | வனத்தில் |
| | | वसति | வஸிக்கிறார். |

इति लोकसमाकुष्ठः पादेष्वद्य प्रसादयन् । रामस्य निपतिष्यामि सीतायाश्च पुनः पुनः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|-------------|--------------------------------|
| लोकसमाकुष्ठः | “உலகத்தால் பழிக் கப்பட்டேன்” | रामस्य | ஸ்ரீராமருடையவும் |
| इति | என்று கூறி, | सीतायाः च | சீதாப்பிராட்டியாரு டையவும், |
| प्रसादयन् | உள்ளங்குளிரச்செய்ப | पादेषु | திருவடிகளில் |
| अद्य | இப்பொழுது [வனம், | निपतिष्यामि | விழுந்து சேஷிப் பேன்.” |
| पुनः पुनः | மீண்டும் மீண்டும், | | |

एवं स विलपंस्तस्मिन्वने दशरथात्मजः । ददर्श महतीं पुण्यां पर्णशालां मनोरमाम् ॥१८॥
 सालतालाश्वकर्णानां पर्णैर्बहुभिरावृताम् । विशालां मृदुभिः स्तीर्णां कुशैर्वेदिमिवाध्वरे ॥
 शक्रायुधनिकाशैश्च कार्मुकैर्भारसाधनैः । रुक्मपृष्ठैर्महासारैः शोभितां शत्रुबाधकैः ॥ २० ॥
 अर्करश्मिप्रतीकाशैर्घोरैस्तूणीगतैः शरैः । शोभितां दीप्तवदनैः सपैर्भोगवतीमिव ॥ २१ ॥

महारजतवासोभ्यामसिभ्यां च विराजिताम् ।

रुक्मबिन्दुविचित्राभ्यां चर्मभ्यां चापि शोभिताम् ॥ २२ ॥

गोधाङ्गुलित्रैरासक्तैश्चित्तैः काञ्चनभूषितैः । अरिसङ्घैरनाधृष्यां मृगैः सिंहगुहामिव ॥ २३ ॥

| | | | |
|-------------------------|------------------------------------|-----------------|---|
| एवं | மேற்கண்டவாறு | अध्वरे | யாகசாலையில் |
| तस्मिन् | அந்த | वेदिं | வேதியை |
| वने | காட்டில் | इव | போலிருக்கிறதும், |
| विलपन् | வருந்திய | मृदुभिः | மெதுவான |
| दशरथात्मजः | தசரதகுமாரராகும் | कुशैः | தருப்பைகளால் |
| सः | அவர் | स्तीर्णां | விரிக்கப்பெற்றதும், |
| सालताला- श्वकर्णानां | ஆச்சா, பனை, அசுவ கர்ணமிவைகளுடைய | शक्रायुधनिकाशैः | இந்திரதனுசை யொத்த |
| बहुभिः | பல | भारसाधनैः | பெருங்காரியங்களேழு டிக்கவல்லவைகளும், |
| पर्णैः | இலைகளால் | रुक्मपृष्ठैः | பொன்னால் மூடப்பட்ட டவைகளும், |
| आवृतां | வேயப்பட்டதும், | | |
| विशालां | பெரியதும், | | |

| | | | |
|------------------------|--|---------------------------------|--|
| महासौरैः | வெகு உறுதியான வைகளும், | रुक्मविन्दु- विचित्राभ्यां } | பொன்னிழைக்கப் பட்டு அழகுற்று விளங்கும் |
| शलुवाधकैः | சத்ருக்களையொழிக் கும் | चर्मभ्यां अपि च आसक्तैः | கேடயங்களாலும் அதிகமாயுள்ள தங்கத்தாலலங்கரிக்க ப்பட்டு |
| कार्मुकैः च शोभितां | வில்களாலும் விளங்குகிறதும், | काञ्चनभूषितैः | அழகாய் விளங்கும் விரல்சட்டைகளால் விளங்குகிறதும் |
| अर्करश्मिप्रतीकाशैः | சூரியகிரணங்களை யொத்த | चिलैः गोधाङ्गुलिलैः | மான்களால், சிம்மமிருக்கும் குகையை |
| घोरैः | பயங்கரமான | शोभितां | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே |
| तूणीगतैः | அம்புறத்தூணியிலி ருக்கும் | मृगैः सिंहगुहां | பகைவர்கூட்டங்களால் கிட்டமுடியாததும், மனோக்ருமாயிருக்கிற மகத்தாகிய [தும், பாக்கியம் பெற்று விளங்குவதுமான |
| शरैः | பாணங்களால் | इव | பர்ணசாலையை கண்டார். |
| दीसवदनैः | கோபமுகமுடைய | अरिसंवैः अनाष्टभ्यां | |
| सपैः | பாம்புகளால் | मनोरमां महतीं | |
| भोगवतीं इव | { போகவதிகரத்தில் எ வ்வண்ணமே அவ்வ ண்ணமே | पुण्यां च | |
| शोभितां | விளங்குகிறதும், | पर्णशालां ददर्श | |
| महारजतवासोभ्यां | தங்க உறையில் வைக் கப்பட்ட | | |
| असिभ्यां | இருகத்திகளால் | | |
| विराजितां | சோபிக்கிறதும், | | |

प्रागुदक्प्रवणां वेदिं विशालां दीप्तपावकाम् । ददर्श भरतस्तत्र पुण्यां रामनिवेशने ॥२४॥

| | | | |
|------------------|------------------------------|---------|--------------------------|
| भरतः | பரதர், | विशालां | விசாலமாயுள்ளதும், |
| तत्र | அந்த | पुण्यां | அழகாய் விளங்கு வதுமான |
| रामनिवेशने | ராமர் குடிசையில், | वेदिं | வேதியையும் |
| प्रागुदक्प्रवणां | வடகிழக்கிலிருக்கிற தும், | ददर्श | கண்டார். |
| दीप्तपावकां | எரியுமக்கினியையு டையதும், | | |

निरीक्ष्य स मुहूर्ते तु ददर्श भरतो गुरुम् । उटजे राममार्सानं जटामण्डलधारिणम् ॥२५॥

| | | | |
|-----------|--------------------|----------------|------------------|
| सः | அந்த | उटजे | பர்ணசாலையில் |
| भरतः | பரதர் | जटामण्डलधारिणं | சடாமண்டலதாரியாய் |
| मुहूर्तं | ஒரு முகூர்த்தகாலம் | आसीनं | வீற்றிருக்கும் |
| निरीक्ष्य | உற்றநோக்கி | गुरुं | தமையனாகும் |
| तु | பின்பு | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| | | ददर्श | கண்டார். |

तं तु कृष्णाजिनधरं चीरवल्कलवाससम् । ददर्श राममासीनमभितः पावकोपमम् ॥ २६ ॥
 सिंहस्कन्धं महाबाहुं पुण्डरीकनिभेक्षणम् । पृथिव्याः सागरान्ताया भर्तारं धर्मचारिणम् ॥
 उपविष्टं महाबाहुं ब्रह्माणमिव शाश्वतम् । स्थण्डिले दर्भसंस्तीर्णे सीतया लक्ष्मणेन च ॥

| | | | |
|-------------------|---|----------------|-----------------------------------|
| कृष्णाजिनधरं | “ மான்தோல் தரித்த வரும், | महाबाहुं | மகாபாகுவமாகிய |
| चीरवल्कलवाससं | மரவரி உடுத்தவரும், | ब्रह्माणं इव | பிரம்மதேவரைப் போல் |
| सिंहस्कन्धं | { சிங்கத்தின் பிடரி போன்ற பிடரியுடை யவரும், | शाश्वतं च | சாசுவதருமாகிய |
| महाबाहुं | மகாபாகுவும், | तं | அந்த |
| पुण्डरीकनिभेक्षणं | தாமரைக்கண்ணரும், | रामं | ஸ்ரீராமரை, |
| सागरान्तायाः | சமுத்திரங்களை யெல் லையாகவுடைய | दर्भसंस्तीर्णे | தருப்பை பரப்பப் பூமியில் [பட்ட |
| पृथिव्याः | பூமிக்கு | आसीनं | வீற்றிருப்பவராகவும், |
| भर्तारं | ரகூதரும், | सीतया | சீதாபிராட்டியாலும், |
| धर्मचारिणं | தருமசீலரும், | लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணனாலும், |
| पावकोपमं | அக்னிக்கொப்பான வரும், | अभितः | பக்கலில் |
| | | उपविष्टं तु | காத்துசேவிக்கப்பட் டவராகவும் |
| | | ददर्श | கண்டார். |

तं दृष्ट्वा भरतः श्रीमान्दुःखशोकपरिप्लुतः । अभ्यधावत धर्मात्मा भरतः कैकयीसुतः ॥ २७ ॥

| | | | |
|-------------------------|---|-----------|-----------------------------------|
| श्रीमान् | ஸ்ரீமானாகும் | कैकयीसुतः | கைகேயியின் புதல்வ ராகும் |
| भरतः | பரதர் | धर्मात्मा | தர்மாத்மாவான |
| तं | அவரை | भरतः | பரதர் |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | अभ्यधावत | அவ்விடத்திற்கு விரைந்தோடினார். |
| दुःखशोक- परिप्लुतः } | கஷ்டத்தாலும் துயர த்தாலும் மெய்மறந் தார். | | |

दृष्ट्वैव विललापातो वाष्पसन्दिग्धया गिरा । अशक्रुवन्धारयितुं धैर्याद्वचनमब्रवीत् ॥ ३० ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|-----------------|------------------------|
| आतः | மனவேதனையுற்ற அவர், | अशक्रुवन् | முடியா திருந்தனர். |
| दृष्ट्वा एव | கண்முன் கண்டதுமே | धैर्यात् | சற்றுத்தேறி |
| विललाप | கண்ணீர்பெருக்கினார். | वाष्पसन्दिग्धया | கண்ணீரால் தழுதழுத்த |
| धारयितुं | துக்கத்தையடக்கிக் கொள்ள | गिरा | சொற்கொண்டு |
| | | वचनं | பின்வரும் சொல்லை |
| | | अब्रवीत् | சொன்னார். |

यः संसदि प्रकृतिभिर्भवेद्युक्त उपासितुम् । वन्यैर्मृगैरुपासीनः सोऽयमास्ते ममाग्रजः॥३१॥

| | | | |
|------------|--------------|--------------|---------------------|
| மம | “எனக்கு | भवेत् | இருப்பாரோ, |
| அग्रஜ: | தமையனாகிய | सः | அந்த |
| यः | எவர் | अयं | இவர் |
| संसदि | சபையில் | वन्यैः मृगैः | காட்டுமிருகங்களால் |
| प्रकृतिभिः | பிரதானிகளால் | उपासीनः | சேவிக்கப்பட்டவராய் |
| उपासितुं | சேவிக்க | आस्ते | வீற்றிருக்கின்றார். |
| युक्तः | தகுந்தவராக | | |

वासोभिर्वहुसाहसैर्यो महात्मा सदोचितः । मृगाजिने सोऽयमिह प्रवस्ते धर्ममाचरन् ॥

| | | | |
|------------|-----------------|------------|------------------|
| यः महात्मा | “எந்த மஹாத்மா, | इह | இப்பொழுது |
| सदा | எக்காலத்திலும் | धर्म आचरन् | தருமத்தை அனுஷ்டி |
| बहुसाहसैः | அனேகமாயிரம் | | க்கின்றவராய் |
| वासोभिः | ஆடைகளால் | मृगाजिने | மான்தோலையும், |
| उचितः | கொண்டாடப்பட்ட | | புலித்தோலையும் |
| सः अयं | அந்த இவர் [னரோ, | प्रवस्ते | உடுக்கார். |

अधारयद्यो विविधाश्चित्राः सुमनसस्सदा । सोऽयं जटाभारमिमं वहते राघवः कथम् ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-------------|--------------------|
| यः राघवः | “எந்த ஸ்ரீராமர் | अधारयत् | அணிந்தாரோ, |
| सदा | எக்காலத்திலும் | सः अयं | அந்த இவர் |
| विविधाः | பல | इमं जटाभारं | இந்த ஜடாபாரத்தை |
| चित्राः | அழகிய | कथं वहते | எவ்வாறு வகிக்கார்? |
| सुमनसः | வாசனைப்புஷ்பங்களை | | |

यस्य यज्ञैर्यथोद्दिष्टैर्युक्तो धर्मस्य सञ्चयः । शरीरक्लेशसंभूतं स धर्मं परिमार्गते ॥ ३४ ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-----------------|-----------------|
| यस्य | “எவருக்கு, | युक्तः | ஏற்றதானதோ, |
| यथोद्दिष्टैः | சாஸ்திரமுறைப்படி | सः | அவர் |
| | செய்யப்பட்ட | धर्मं | தருமத்தை |
| यज्ञैः | யாகங்களால் | शरीरक्लेशसंभूतं | காயக்கலேசத்தாலு |
| धर्मस्य | தர்மத்தை | | ண்டாவதாய், |
| सञ्चयः | சேகரிப்பதானது | परिमार्गते | தேடுகார். |

चन्दनेन महार्हेण यस्याङ्गमुपसेवितम् । मलेन तस्याङ्गमिदं कथमार्यस्य सेव्यते ॥ ३५ ॥

| | | | |
|----------|---------------|---------|-----------------|
| यस्य | “எவரது | आर्यस्य | பூஜயின் |
| अङ्गं | திருமேனியானது | अङ्गं | திருமேனியானது |
| महार्हेण | உயர்ந்த | इदं | இப்பொழுது |
| चन्दनेन | சந்தனத்தால் | मलेन | அழுக்கால் |
| उपसेवितं | பூசப்பட்டதோ | कथं | எவ்வாறு |
| तस्य | அந்த | सेव्यते | பூசப்படுகிறது ? |

मन्निमित्तमिदं दुःखं प्राप्तो रामः सुखोचितः । धिग्जीवितं नृशंसस्य मम लोकविगर्हितम् ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------------|--------------|--------------------|
| सुखोचितः | “சுகத்தையேயெப் பொழுதுமனுபவித்த | प्राप्तः | அனுபவிக்கின்றார். |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | नृशंसस्य | அற்பனாகிய |
| मन्निमित्तं | என்காரணமாய் | मम | எனது |
| इदं | இந்த | लोकविगर्हितं | உலகத்தாரால் பழி |
| दुःखं | கஷ்டத்தை | जीवितं | உயிர் [க்கப்படும்] |
| | | धिक् | கொளுத்தப்பட்டும்” |

इत्येवं विलपन् दीनः प्रस्विन्नमुखपङ्कजः । पादावप्राप्य रामस्य पपात भरतो रुदन् ॥३७॥

| | | | |
|---------------------|------------------------------|----------|--------------------------------|
| प्रस्विन्नमुखपङ्कजः | முககமலத்தில் வியர் வைவடிய | रुदन् | அழுதுகொண்டு |
| दीनः | மனம்நொந்துகிடந்த | रामस्य | ஸ்ரீராமரது |
| भरतः | பரதர் | पादौ | திருவடிகளை |
| इति एवं | மேற்கண்டவாறு | अप्राप्य | கிட்டாமலே |
| विलपन् | புலம்பிக்கொண்டே | पपात | பூமியில் விழுந்து விட்டனர். |

दुःखाभितप्तो भरतो राजपुत्रो महाबलः । उत्तवार्येति सकृद्दीनं पुनर्नोवाच किञ्चन ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|--------|-----------------------------|
| महाबलः | மகா சக்திமானும், | आर्य | ‘அண்ணா’ |
| राजपुत्रः | சக்கிரவர்த்திகுமார | इति | என்று |
| भरतः | பரதர் [னுமாகிய | उत्तवा | சொல்லி, |
| दुःखाभितप्तः | துக்கத்தால் தபிக்கின் றவராய் | पुनः | அதன்மேல் |
| सकृत् | ஒருமுறை | किञ्चन | எதொன்றையும் |
| दीनं | பரிதாபமாய் | उवाच न | சொல்லமுடியா திருந் தனர். |

बाष्पापिहितकण्ठश्च प्रेक्ष्य रामं यशस्विनम् । आर्येत्येवाथ संक्रुश्य व्याहृतं नाशकत्ततः ॥

| | | | |
|-------------------------|---|-----------|--------------------|
| बाष्पापिहित- } कण्ठः | கண்ணீராலடைக்கப் பட்ட கண்டத்தை யுடைய அவர், புகழ்பெற்றவராகிய | आर्य | ‘அண்ணா’ |
| यशस्विनं | ஸ்ரீராமரை | इति एव | என்று மட்டுமே |
| रामं | கட்டியும், | संक्रुश्य | அழுதுகூறி, |
| प्रेक्ष्य च | அப்பொழுதும் | ततः | அதன்மேல் |
| अथ | | व्याहृतं | பேச |
| | | अशक्त न | முடியா திருந்தனர். |

शत्रुघ्नश्चापि रामस्य ववन्दे चरणौ रुदन् । तावुभौ स समालिङ्ग्य रामोऽप्यश्रूण्यवर्तयत् ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|------------|-------------------|
| शत्रुघ्नः च | சத்ருக்னரும் | सः | அந்த |
| रुदन् अपि | அழுதுகொண்டே | रामः | ஸ்ரீராமர் |
| रामस्य | ஸ்ரீராமரது | तौ उभौ अपि | அவ்விருவர்களையும் |
| चरणौ | திருவடிகளில் | समालिङ्ग्य | கட்டியணைத்து |
| ववन्दे | விழுந்து சேவித்தனர். | अश्रूणि | கண்ணீரை |
| | | अवर्तयत् | வடித்தார். |



ततः सुमन्त्रेण गुहेन चैव समीयतू राजसुतावरण्ये ।
दिवाकरश्चैव निशाकरश्च यथाम्वरे शुक्रवृहस्पतिभ्याम्

॥ ४१ ॥

| | | | |
|--------------------|----------------------------------|--------------|--|
| ततः | அனந்தரம், | अरण्ये | அரண்யத்தில் |
| अम्बरे | ஆகாயத்தில் | राजसुतौ | { சக்கிரவர்த்திகுமாரர் களாகிய ராமலக்ஷ்ம ணர்கள் |
| दिवाकरः च | சூரியனும் | सुमन्त्रेण च | சுமந்திரராலும் |
| निशाकरः च | சந்திரனும், | गुहेन एव | சுகராலும் |
| शुक्रवृहस्पतिभ्यां | சுக்ரன், பிருகஸ்பதி இவர்களால் | समीयतुः | வந்துகாணப்பட்டனர். |
| यथा एव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே | | |

तान्पार्थिवान्वारणयूथपाभान्समागतांस्तत्र महत्यरण्ये ।
वनौकसस्तेऽभिसमीक्ष्य सर्वे त्वश्रूण्यमुञ्चन्प्रविहाय हर्षम्

॥ ४२ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|---------------|---------------------|
| तत्र | அப்பொழுது, | वारणयूथपाभान् | யானையரசுகளை ஒத்த |
| महति | பெரிய | पार्थिवान् | ராஜகுமாரர்களை |
| अरण्ये | அரண்யத்தில் | अभिसमीक्ष्य | கவனித்து |
| ते वनौकसः | அந்த மஹர்ஷிகள் | हर्षं तु | சாதாரணமாயுள்ள |
| सर्वे | எல்லோரும் | प्रविहाय | விட்டு [மனநிம்மதியை |
| तान् | அந்த | अश्रूणि | கண்ணீரை |
| समागतान् | ஒன்றுகூடியிருக்கும் | अमुञ्चन् | வடித்தார்கள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे एकोनशततमः सर्गः ॥

भादितः श्लोकाः 6043

अयोध्याकाण्डे भादितः श्लोकाः 3688



शततमः सर्गः—நூறாவது ஸர்க்கம் ॥ १०० ॥

श्रीरामकृतः कुशलप्रश्नः—ஸ்ரீராமர் குசலம் கேட்பது.

जटिलं चीरवसनं प्राञ्जलिं पतितं भुवि । ददर्श रामो दुर्दर्शं युगान्ते भास्करं यथा ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|----------------|-------------|------------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர், | पतितं | விழுந்துகிடக்கும் |
| जटिलं | ஜடைதரித்து | भास्करं यथा | சூரியனைப்போன்ற வரை |
| चीरवसनं | மரவுரியடுத்து | दुर्दर्शं | இன்னொருனக்கண்டு |
| प्राञ्जलिं | அஞ்சலிஹஸ்தராய் | ददर्श | கொள்ள முடியாதபடி கண்டார். |
| युगान्ते | பிரளயகாலத்தில் | | |
| भुवि | பூமியில் | | |

कथञ्चिदभिविज्ञाय विवर्णवदनं कुशम् । भ्रातरं भरतं रामः परिजग्राह पाणिना ॥ २ ॥

| | | | |
|------------|--------------|------------|---------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | कथञ्चित् | கஷ்டப்பட்டு |
| विवर्णवदनं | முகம்மாறி | अभिविज्ञाय | கண்டுகொண்டு |
| कुशं | இளைத்திருந்த | पाणिना | திருக்கையால் |
| भ्रातरं | தம்பியாகும் | परिजग्राह | ஆலிங்கனம் செய்தார். |
| भरतं | பரதனை | | |

आघ्राय रामस्तं मूर्ध्नि परिव्वज्य च राघवः । अङ्गे भरतमारोप्य पर्यपृच्छत्समाहितः ॥

| | | | |
|----------|--------------------|-----------------|------------------------|
| राघवः | ராகுலத்தில் பிறந்த | परिव्वज्य | கட்டியணைத்துக் கொண்டு, |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | मूर्ध्नि आघ्राय | உச்சிமுகர்ந்து |
| तं | அந்த | समाहितः | சாந்தமாக |
| भरतं | பரதரை | पर्यपृच्छत् | பின்வருமாறு |
| अङ्गे | மடியில் | | வினாவினார் : |
| आरोप्य च | வைத்துக்கொண்டு, | | |

क नु तेऽभूत्पिता तात यदरण्यं त्वमागतः । न हि त्वं जीवतस्तस्य वनमागन्तुमर्हसि ॥

| | | | |
|--------|-------------------|------------|-----------------|
| तात | “குழந்தாய்! | क नु अभूत् | எங்குற்றனர்? |
| त्वं | நீ | हि | ஏனெனில் |
| अरण्यं | காட்டிற்கு | तस्य जीवतः | அவருயிருடனிருக் |
| आगतः | வந்திருக்கின்றாய் | त्वं | நீ [கையில்] |
| यत् | என்பதால் | वनं | காட்டிற்கு |
| ते | உனது | आगन्तुं | வருவதற்கு |
| पिता | தந்தையார் | अर्हसि न | தக்கவனாகாய். |

चिरस्य बत पश्यामि दूराद्भरतमागतम् । दुष्प्रतीकमरण्येऽस्मिन्किं तात वनमागतः ॥ ५ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|---------|----------------------|
| तात | “குழந்தாய்! | अस्मिन् | இந்த |
| चिरस्य | வெகுநேரத்திற்குப் பின்பு | अरण्ये | அரண்யத்தில் |
| दूरात् | வெகுதூரத்திலிருந்து | पश्यामि | நான் பார்க்கின்றேன். |
| आगतं | வந்திருக்கும் உன்னை | बत | ஏனிந்தக் கஷ்டம்? |
| भरतं | பரதரை | वनं | காட்டிற்கு |
| दुष्प्रतीकं | கைகாலோய்ந்தவனாய் | किं | ஏன் |
| | | आगतः | வந்தாய்? |

कञ्चिद्धारयते तात राजा यन्वमिहागतः । कञ्चिन्न दीनः सहसा राजा लोकान्तरं गतः ॥

| | | | |
|----------|-------------------------------|-----------|-----------------------|
| तात | “குழந்தாய்! | राजा | சக்கிரவர்த்தியார் |
| त्वं | நீ | सहसा | கஷ்டத்தால் |
| इह | இங்கு | दीनः | மனோதேரரியத்தையி ழந்து |
| आगतः यत् | வந்திருக்கிறபடியால் | लोकान्तरं | லோகாந்தரத்தை |
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | गतः न | அடையாதிருக்கிறு ரென |
| धारयते | தேரரியம் முற்றிருக்கி ன்ருரென | कञ्चित् | நான் எண்ணுகிறேன். |
| कञ्चित् | நான் நம்புகின்றேன். | | |

कच्चित्सौम्य न ते राज्यं भ्रष्टं बालस्य शाश्वतम् । कच्चिल्लुश्रूपसे तात पितुस्सत्यपराक्रम ॥

சௌம்ய “ஸௌம்யனே !
 तात குழந்தாய் !
 सत्यपराक्रम வீண்போகாத பராக்
 கிரமம்படைத்தவனே !
 बालस्य ते சிறுவனாகிய உனது
 शाश्वतं பரம்பரையாய் வந்த

राज्यं ராஜ்யத்தை
 भ्रष्टं न कच्चित् கைசோரவிடாமலிருக்
 कित्तिन्नையா ?
 पितुः திருத்தந்தையாருக்கு
 लुश्रूपसे कच्चित् சுசூருவைச் செய்கின்ற
 नैयா ?

कच्चिदशरथो राजा कुशली सत्यसङ्गरः । राजसूयाश्वमेधानामाहर्ता धर्मनिश्चयः ॥ ८ ॥

राजसूयाश्वमेधानां ராஜஸூயம் அச்வ
 மேதம் இவைகளை
 आहर्ता செய்துமுடித்தவரும்
 धर्मनिश्चयः தர்மத்தில் பற்றுடை
 யவரும்

सत्यसङ्गरः ஸத்யஸந்தருமான
 दशरथः தசரத
 राजा சக்கிரவர்த்தியார்
 कुशली कच्चित् கேதமமாயிருக்கின்
 नृपरा ?

स कच्चिद्ब्राह्मणो विद्वान् धर्मनित्यो महाद्युतिः । इक्ष्वाकूणामुपाध्यायो यथावत्तात पूज्यते॥

तात “குழந்தாய் !
 इक्ष्वाकूणां இக்ஷ்வாகுவம்சத்
 தவர்களது
 उपाध्यायः உபாத்தியாயரும்
 महाद्युतिः மகாதேஜோவானும்
 धर्मनित्यः தருமத்தில் பற்றுடை
 யவரும்

विद्वान् பிரும்மஞானியும்
 ब्राह्मणः வேதவித்துமாகிய
 सः அவர், (வஸிஷ்டர்)
 यथावत् முறைப்படி
 पूज्यते कच्चित् கௌரவிக்கப்படுகின்
 नृपरा ?

तात कच्चिच्च कौसल्या सुमित्रा सुप्रजावती । सुखिनी कच्चिदार्या च देवी नन्दति कैकयी॥

तात “குழந்தாய் !
 कौसल्या च கோஸலாதேவியாரும்
 सुमित्रा च சுமித்ராதேவியாரும்
 सुखिनी कच्चित् சுகந்தானா ?
 सुप्रजावती உத்தமப்புதல்வனைப்
 பெற்று

आर्या பூஜையையா விளங்கும்
 कैकयी கைகேயி
 देवी தேவியார்
 नन्दति कच्चित् களிப்புற்றுவருகின்ற
 नरा ?

कच्चिद्विनयसम्पन्नः कुलपुत्रो बहुश्रुतः । अनसूयुरनुद्रष्टा सत्कृतस्ते पुरोहितः ॥ ११ ॥

विनयसम्पन्नः “பரிபூர்ணவணக்க
 முற்றவராய்
 कुलपुत्रः நல்வம்சத்திற் பிறந்து
 बहुश्रुतः பல சாஸ்திரங்களைக்
 கற்று
 अनसूयुः பொறுமையற்று

अनुद्रष्टा ஏற்ற ஞானதிருவ்டி
 யுடையவருமாகிய
 ते உனது
 पुरोहितः குரு, (சுயக்ஞனர்)
 सत्कृतः कच्चित् ஸத்கரிக்கப்படுகின்ற
 नरा ?

कच्चिदग्निषु ते युक्तो विधिज्ञो मतिमानृजुः । हुतं च होष्यमाणं च काले वेदयते सदा ॥

| | | | |
|----------|--|----------------|-------------------------|
| अग्निषु | { “கார்ஹபத்ய, ஆஹ வனீய தக்ஷிணக்னி களில் | தே | உனக்கு |
| युक्तः | நிபுணரும் | हुतं च | ஹோமம்செய்ததையும் |
| विधिज्ञः | சாஸ்திரவிதிகளை அறிந்தவரும் | होष्यमाणं च | ஹோமம்செய்யவேண்டியதையும் |
| मतिमान् | புத்திமானும் | सदा | எப்பொழுதும் |
| ऋजुः | இதத்தில் பற்றுடைய வருமாகிய அவர் | काले | சரியான காலங்களில் |
| | | वेदयते कच्चित् | தெரிவிக்கின்றனரா? |

कच्चिदेवान्पितृन्मातृगुरुन्पितृसमानपि । वृद्धांश्च तात वैद्यांश्च ब्राह्मणांश्चाभिमन्यसे ॥ १३ ॥

| | | | |
|----------|--------------------|-------------------|-------------------------|
| तात | “குழந்தாய்! | वृद्धान् | நூனவிருத்தர்களாகிய |
| देवान् | தேவர்களையும், | गुरुन् अपि | பெரியோர்களையும், |
| पितृन् | பிதிருக்களையும், | वैद्यान् | வேதவித்துக்களாகிய |
| मातृः च | தாய்மார்களையும், | ब्राह्मणान् च | பிராம்மணர்களையும் |
| पितृसमान | பிதாவுக்குச் சமமான | अभिमन्यसे कच्चित् | கௌரவித்திருக்கின்றனையா? |

इष्वस्त्रवरसम्पन्नमर्थशास्त्रविशारदम् । सुधन्वानमुपाध्यायं कच्चित्वं तात मन्यसे ॥ १४ ॥

| | | | |
|---------------------|--|----------------|-------------------------|
| तात | “குழந்தாய்! | सुधन्वानं | ஸுதன்வாவென்ற |
| इष्वस्त्रवरसम्पन्नं | { அம்பு, பாணம் இவை களின் வித்தைகளில் நிபுணரும் | उपाध्यायं | குருவை |
| अर्थशास्त्रविशारदं | நீதிசாஸ்திரத்தில் நிபுணருமாகிய | त्वं | நீ |
| | | मन्यसे कच्चित् | கௌரவித்து வருகின்றனையா? |

कच्चिदात्मसमाः शूराः श्रुतवन्तो जितेन्द्रियाः । कुलीनाश्चेद्भितज्ञाश्च कृतास्ते तात मन्त्रिणः॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|---------------|----------------------------------|
| तात | “குழந்தாய்! | कुलीनाः च | நற்குலத்திற் பிறந்த வர்களும், |
| आत्मसमाः | தன்னை யொத்த | द्भितज्ञाः च | மனமறிந்து நடப்பவரு |
| शूराः | வீரர்களும், | ते | உனது [மானவர்கள், |
| श्रुतवन्तः | தர்மசாஸ்திரநிபுணர் களும், | मन्त्रिणः | மந்திரிகளாய் |
| जितेन्द्रियाः | ஜிதேந்திரியர்களும், | कृताः कच्चित् | நியமிக்கப்பட்டிருக்கின்றனரா? |

मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव । सुसंवृतो मन्त्रधरैरमात्यैः शास्त्रकोविदैः ॥ १५ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------------|------------|---------------------------------|
| राघव | “பரத! | सुसंवृतः | ரகசியமாய் அடக்கி வைக்கப்பட்ட |
| मन्त्रधरैः | ஆலோசனைகளில் நிபுணர்களும் | मन्त्रः हि | ஆலோசனை தான் |
| शास्त्रकोविदैः | சாஸ்திரங்களை நன்கு ணர்ந்தவர்களுமான | राज्ञां | மன்னர்களுக்கு |
| अमात्यैः | மந்திரிகளால் | विजयमूलं | வெற்றிக்குக் காரண |
| | | भवति | ஆகிறது. [மாய் |

कच्चिन्निद्रावशं नैषीः कच्चित्काले प्रबुध्यसे । कच्चिच्चापररात्रेषु चिन्तयस्यर्थनैपुणम् ॥१७॥

निद्रावशं “தூக்கத்தில் பொழுதுபோக்குவதை
ऐषीः न अडையவில்லையென
कच्चित् நம்புகிறேன்!
காலே உசிதகாலத்தில்
प्रबुध्यसे कच्चित् கண்ணிழித்துக்கொள்
ஞகின்றனையா?

अपररात्रेषु பின்னிரவுகளில்
अर्थनैपुणं च { ஒவ்வொரு காரியத்திலும் (நடைபெற்றது, தற்காலநிலைமை, வரவேண்டியது என்ற மூன்றையும்)
चिन्तयसि कच्चित् தீர்க்காலோசனை செய்கின்றனையா?

कच्चिन्मन्त्रयसे नैकः कच्चिन्न बहुभिः सह । कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति ॥

एकः “தனியாய்
मन्त्रयसे न कच्चित् ஆலோசியாமல் இருக்கின்றாயா?
बहुभिः सह பலபேரோடுகூடியும்
न कच्चित् ஆலோசியாமல் இரு
ते உனது [க்கின்றாயா?

मन्त्रितः मन्त्रः { ஆலோசித்து தீர்மானிக்கப்பட்ட ராஜ
राष्ट्रं நாட்டில்
परिधावति न कच्चित् பரவாமல் இருக்கின்றதா?

कच्चिदर्थं विनिश्चित्य लघुमूलं महोदयम् । क्षिप्रमारभसे कर्तुं न दीर्घयसि राघव ॥ १९ ॥

राघव “பரத!
लघुमूलं பரிசுத்தமெனுமஸ்தி
महोदयं புண்ணியப்பயனை அ
अर्थं எரிக்கவல்லதுமாகிய
विनिश्चित्य காரியத்தை
தீர்க்காலோசனை செய்ய துணிந்து

क्षिप्रं விரைவில்
कर्तुं செய்துமுடிக்க
आरभसे ஜாக்கிரதையுடன்
இருக்கின்றாயா?
दीर्घयसि न விளம்பாதிருக்கின்றனையென
कच्चित् நான் நம்புகிறேன்.

कच्चित्सुकृतान्येव कृतरूपाणि वा पुनः । विदुस्ते सर्वकार्याणि न कर्तव्यानि पार्थिवाः ॥

पार्थिवाः மன்னர்கள்
ते உனது
सर्वकार्याणि எல்லாக்காரியங்களிலும்
सुकृतानि एव முற்றிலும் முடிவு
பெற்றவைகளேமட்டும்
विदुः तु அறிகிறார்கள் என்றும்

पुनः அங்ஙனமன்றி
कृतरूपाणि वा நிச்சயிக்கப்பட்டவைகளாய்
कर्तव्यानि செய்யவேண்டியவைகளே
न அறியவில்லையென
कच्चित् நம்புகிறேன்.

कच्चिन्न तर्कैर्युक्त्या वा ये चाप्यपरिकीर्तिताः । त्वया वा तव वाऽमात्यैर्बुध्यते तात मन्त्रितम् ॥

तात “குழந்தாய்!
त्वया वा உன்னாலும்
तव உனது
अमात्यैः वा மந்திரிமார்களாலும்
मन्त्रितं யோசித்து முடிவுக்
தீர்மானமானது
तर्कैः ஊகங்களாலாவது

युक्त्या वा அனுமானத்தினாலாவது
अपरिकीर्तिताः { குறிப்பிட்டுச்சொல்லாதவைகள் (முகக் குறிமுதலியவைகள்)
अपि { எவைகளோ அவைகளாலும்
ये च வெளிப்படாமலிருக்கிறதா?

कच्चित्सहस्रान्मूर्खाणामेकमिच्छसि पण्डितम् । पण्डितो ह्यर्थकृच्छ्रेषु कुर्यान्निःश्रेयसं महत् ॥

மூர்வாணா “மூடர்களின்
 सहस्रात् பலரைக்காட்டிலும்
 एकं ஒரு
 पण्डितं பண்டிதனை
 इच्छसि कच्चित् பெரிதாய் பாராட்டு
 கின்றனையா ?

हि ஏனெனில்
 पण्डितः பண்டிதன் தான்
 अर्थकृच्छ्रेषु காரியங்களின்
 இடுக்கங்களில்
 महत् விசேஷமான
 निःश्रेयसं உதவியை
 कुर्यात् புரிவான்.

सहस्राण्यपि मूर्खाणां यद्युपास्ते महीपतिः । अथवाऽप्ययुतान्येव नास्ति तेषु सहायता ॥

மஹீபதி: “அரசனொருவன்
 मूर्खाणां மூடர்களின்
 सहस्राणि अपि ஆயிரவர்களைத்தானா
 अथवा அல்லது [கட்டும்,
 अयुतानि अपि एव பதினாயிரவர்களைத்
 தானாகட்டும்

उपास्ते यदि ஒரு காரியத்தில் நிய
 மிக்கின்றனானில்
 तेषु அவர்களிடம்
 सहायता உதவி
 अस्ति न கிடைக்கமாட்டாது.

एकोऽप्यमात्यो मेधावी शूरो दक्षो विचक्षणः । राजानं राजपुत्रं वा प्रापयेन्महतीं श्रियम् ॥

மேधाவி “மேதாவியும்
 शूरः சூரனும்
 दक्षः பரிசுத்தனும்
 विचक्षणः தந்திரசாமர்த்தியமு
 ள்ளவனுமான

अमात्यः மந்திரி
 एकः अपि ஒருவன் தான்
 राजानं மன்னருக்கும்
 राजपुत्रं वा இளவரசுக்கும்
 महतीं श्रियं பெரும்கீர்த்தியை
 प्रापयेत् விளைவிப்பான்.

कचिन्मुख्या महत्स्वेव मध्यमेषु च मध्यमाः । जघन्यास्तु जघन्येषु भृत्यास्ते तात योजिताः ॥

तात “குழந்தாய்!
 ते உனது
 मुख्या: பிரசித்திபெற்ற
 भृत्या: மனிதர்கள்
 महत्सु एव பெரிய காரியங்களி
 லும்,
 मध्यमा: நடுத்தரமானவர்கள்

मध्यमेषु च நடுத்தரமான காரியங்
 களிலும்,
 जघन्या: சாதாரணமனிதர்கள்
 जघन्येषु च சாதாரணவேலைகளி
 லும்,
 योजिता: कच्चित् நியமிக்கப்படுகின்
 றார்களா ?

अमात्यानुपधातीतान्पितृपैतामहाञ्छुचीन् । श्रेष्ठाञ्छ्रेष्ठेषु कच्चित्वं नियोजयसि कर्मसु ॥

பிதৃபைதாமஹாந் “குலமுறையாய்
 வந்தவர்களும்,
 शुचीन् பரிசுத்தர்களும்,
 उपधातीतान् பரிசோதித்துக்கண்ட
 நியப்பட்ட

श्रेष्ठान् மகாத்மாக்களாகிய
 अमात्यान् மந்திரிகளை
 श्रेष्ठेषु பெரிய
 कर्मसु காரியங்களில்
 त्वं நீ
 नियोजयसि कच्चित् ஏவுகின்றனையா ?

कच्चिनोप्रेण दण्डेन भृशमुद्वेजिताः प्रजाः । राष्ट्रं तवानुजानन्ति मन्त्रिणः कैकयीसुतः॥२७॥

| | | | |
|-----------|--------------------|--------------|--------------------|
| कैकयीसुत | “கைகேயீசுமாரா ! | उद्वेजिताः | மனம்நோசும்படி |
| मन्त्रिणः | மந்திரிகள் [பரதா ! | उप्रेण | குற்றத்திற்கு அதிக |
| राष्ट्रं | ராஜ்யத்தில் | दण्डेन | சிகைசூயால் [மான |
| प्रजाः | பிரஜைகள் விஷயத் | तव | உனக்கு |
| भृशं | மிகவும் [தில் | अनुजानन्ति } | அனுமதிக்கொடாமல் |
| | | न कच्चित् } | இருக்கின்றனரா ? |

कच्चित्वां नावजानन्ति याजकाः पतितं यथा । उग्रप्रतिग्रहीतारं कामयानमिव स्त्रियः ॥

| | | | |
|--------------------|-------------------------------|-------------|-----------------------------------|
| त्वां | “உன்னே | स्त्रियः | குலஸ்தீர்கள் |
| उग्रप्रतिग्रहीतारं | அநியாயவரி வாங்கு கிறவனாய், | कामयानं | (பிறர்மனைவிகளை) வீரும்புகிறவனை |
| याजकाः | ருத்விக்குகள் | इव | எவ்வண்ணமோ |
| पतितं | பதிதனை | | அவ்வண்ணமேயும் |
| यथा | எவ்வண்ணமோ | अवजानन्ति } | அவமதியாமல் இருக் |
| | அவ்வண்ணமேயும், | न कच्चित् } | கின்றார்களா ? |

उपायकुशलं वैद्यं भृत्यसंदूषणे रतम् । शूरमैश्वर्यकामं च यो न हन्ति स वध्यते ॥ २९ ॥

| | | | |
|--------------|---|-----------|---|
| यः | “எவன் | रतं | ஆஸக்தியுடையவ |
| ऐश्वर्यकामं | { ஐசுவரியத்தையே சர்வமுமாய்க்கொண் டவனாய் | वैद्यं | ஆயுமுள்ள |
| भृत्यसंदूषणे | பிரஜைகளைக் கெடுப்ப [தில் | शूरं च | அற்பகுலத்தில்பிறந்த நெஞ்சமுத்தப்பாவி |
| उपायकुशलं | துன்மார்க்கத்தந்திரங் களில் ரிபுணனாய் | हन्ति न | கொல்லவில்லையோ |
| | | सः वध्यते | அவன் கொல்லப்படு கிறான். |

कच्चिदृष्टश्च शूरश्च मतिमान् धृतिमाञ्छुचिः । कुलीनश्चानुरक्तश्च दक्षः सेनापतिः कृतः॥३०॥

| | | | |
|----------|-------------------------------|--------------|--------------------------------------|
| मतिमान् | “புத்திமானும் | अनुरक्तः च | ராஜபக்தியுடைய |
| शूरः | சூரனும் | | வனும், |
| धृतिमान् | விடாமுயற்சியுடைய வனும், | हृष्टः च | மனத்திருப்தியுடைய வனுமாகிய ஒருவன் |
| दक्षः | ஊக்கமுடையவனும், | सेनापतिः | ஸேனாதிபதியாக |
| शुचिः | பரிசுத்தனும், | कृतः कच्चित् | நியமிக்கப்பட்டிருக் கின்றானா ? |
| कुलीनः च | நற்குலத்தில் பிறந்த வனும், | | |

बलवन्तश्च कच्चित्ते मुख्या युद्धविशारदाः । दृष्टापदाना विक्रान्तास्त्वया सत्कृत्य मानिताः॥

| | | | |
|---------------|--|-----------------|----------------------------|
| ते | “உனது | दृष्टापदानाः च | கண்டறிந்த பரிசுத்தர் |
| मुख्याः | சேனாநாயகர்கள் | | களாயும் |
| युद्धविशारदाः | யுத்தங்களில் சமர்த் தர்களாயும், | त्वया | உன்னால் |
| बलवन्तः | பலவான்களாயும், | सत्कृत्य | நியமிக்கப்பட்டு |
| विक्रान्ताः | { எப்பொழுதும் ஜயத் தைப்பெறுகின்ற வர்களாயும், | मानिताः कच्चित् | கௌரவிக்கப்பட்டார் களா ? |

कच्चिद्वलस्य भक्तं च वेतनं च यथोचितम् । संप्राप्तकालं दातव्यं ददासि न विलम्बसे ॥

वलस्य "சைனியத்தினது
दातव्यं கொடுக்கவேண்டிய
தாயுள்ளதும்,
भक्तं च { அவனவனுக்கு சேர
வேண்டியதாயுள்ள
தமாய்கிய

वेतनं சம்பளத்தை
यथोचितं முறைப்படி
संप्राप्तकालं சரியானகாலத்தில்
ददासि च கொடுக்கிறாயா ?
विलम्बसे } விளம்பியாமலிருக்கி
न कश्चित् } றுயா ?

कालातिक्रमणाच्चैव भक्तवेतनयोर्भृताः । भर्तुः कुप्यन्ति दुष्यन्ति सोऽनर्थः सुमहान्स्मृतः ॥

भक्तवेतनयोः "உணவாலும், சம்ப
ளத்தாலும்
भृताः பார்க்கப்பட்டவர்கள்
कालातिक्रमणात् காலங்கடப்பதால்
भर्तुः एव எஜமானனிடத்தில்
कुप्यन्ति சினங்கொள்ளுகின்
றனர்.

दुष्यन्ति च பகைகொள்ளுகின்ற
னர்.
सः அந்த
अनर्थः கேடானது
सुमहान् அஸஹ்யமானதென
स्मृतः கூறப்படுகிறது.

कच्चित्सर्वेऽनुरक्तास्त्वां कुलपुत्राः प्रधानतः । कच्चित्प्राणांस्तवार्थेषु संत्यजन्ति समाहिताः ॥

कुलपुत्राः सर्वे நற்குடிப்பிறப்பாளர்
எல்லோரும்,
त्वां உன்னிடத்தில்
प्रधानतः விசேஷமாய்
अनुरक्ताः कश्चित् பற்றுடையவராயிருக்
கின்றார்களா ?

तव உனது
अर्थेषु காரியங்களில்
समाहिताः பத்திமையுடையவர்
களாய்
प्राणान् உயிரையும்
संत्यजन्ति कश्चित् விடுகிறார்களா ?

कच्चिज्ज्ञानपदो विद्वान्दक्षिणः प्रतिभानवान् । यथोक्तवादी दूतस्ते कृतो भरत पण्डितः ॥

भरत "பரத
ते दूतः உனக்கு தூதனாய்
ज्ञानपदः உள்ளொரானும்,
दक्षिणः சாமர்த்தியசாலியும்
पण्डितः பாண்டித்யம் பெற்று
विद्वान् சாஸ்திரங்களையுள்ள
படியறிந்து

प्रतिभानवान् { (தக்கபதிலைச்சொல்ல)
மேல்மேல் விளங்கப்
பெற்றவனும்,
यथोक्तवादी உள்ளபடி சொல்லுகி
றவனுமாகிய ஒருவன்
कृतः कश्चित् நியமிக்கப்பட்டிருக்
கின்றானா ?

कच्चिदष्टादशान्येषु स्वपक्षे दश पञ्च च । त्रिभिस्त्रिभिरविज्ञातैर्वेत्सि तीर्थानि चारकैः ॥

अन्येषु பிறர்களிடத்தில்
अष्टादश பதினெட்டும்*
स्वपक्षे தன்பக்கலில்
दश पञ्च च { பதினைந்தும் (அதாவ
து மேல்சொல்லிய ப
தினெட்டில், மந்திரி,
புரோஹிதர், இளவ
ரசு இல்லாது)

तीर्थानि ராஜ்யாதிகாரிகளை
अविज्ञातैः ஒருவரையொருவரறி
யாத
त्रिभिः त्रिभिः ஒவ்வொருவருக்கும்
மூன்றுமூன்றுக
चारकैः வேவுகாரர்களைக்
कोண்டு
वेत्सि कश्चित् அறிந்துவருகின்ற
னையா ?

[* 1. மந்திரி 2. குலகுரு 3. இளவரசு 4. சேனாதிபதி 5. வாயில் காப்போன் 6. அந்தப்புர காரிய நிர்வாஹகன் 7. சிறைச்சாலையின் அதிகாரி 8. பணத்திற்கு அதிகாரி 9. அரசனாக்னையை வெளியிடுவோன் 10. வியவகாரத்தைக் கேட்போன் 11. சேனைகளுக்கு சம்பளம் முதலியவைகளைக் கொடுப்பவன் 12. நகரத்தைச் சோதித்தல், நகரத்தின் பிராகாரத்தைக் காத்தல் முதலிய தொழில்களைப் புரிபவன் 13. சேனாதவிர மற்றெல்லோருக்கும் கொடுக்கவேண்டிய சம்பளத்தைக் கஜானாவிலிருந்து ஒரேமொத்தமாய்த்தான் வாங்கிக்கொண்டு அதைத்தனித்தனிகொடுப்போன், 14. அரசன் மந்திரி முதலியவர்களுக்குத் தக்க ஆசனமளித்தல், சபாசதர்களை வரவழைத்தல், சபைக்குவர அதிகாரமற்றவர்களைத் தடுத்தல், சபையில் சத்தமில்லாதபடி செய்தல், சபையைக்காத்தல் முதலியவற்றை புரியும் ஜனங்களுக்குத் தலைவன் 15. தாயாதிதளின் பாகவிஷயத்தில் நேரும் வழக்கைத் தருமசாஸ்திரவழிப்படி தீர்ப்போன் 16. அரசனாணைப்படி தண்டனைகளை ஏவுபவன் 17. மலையரண், நீரரண், காட்டரண் முதலியவைகளைக்காப்பதின் நிர்வாஹகன் 18. ராஜ்யத்தினெல்லை காப்போன்.]

कश्चिद्व्यपास्तानहिताप्रतियातांश्च सर्वदा । दुर्वलाननवज्ञाय वर्तसे रिपुसूदन ॥ ३७ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|----------------|-------------------------------|
| रिपुसूदन | “சத்ருஸம்ஹாரக ! | दुर्वलान् | வலியற்றவர்களாய் |
| अहितान् | சத்ருக்களாயிருந்த | अनवज्ञाय | உபேகைச் செய்யாது |
| व्यपास्तान् | ஊரைவிட்டு ஓட்டப் பட்டு | सर्वदा च | எக்காலத்திலும் |
| प्रतियातान् | திரும்பிவந்தவர்களை | वर्तसे कश्चित् | ஜாக்கிரதையுடனிருக்கின்றனையா ? |

कश्चिन्न लोकायतिकान्ब्राह्मणांस्तात सेवसे । अनर्थकुशला ह्येते बालाः पण्डितमानिनः ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|--------------|-----------------------------------|
| तात | “குழந்தாய் ! | एते | இந்த |
| लोकायतिकान् | நாஸ்திக | पण्डितमानिनः | எல்லாம் தெரிந்ததாய் கருதும் |
| ब्राह्मणान् | பிராம்மணர்களை | बालाः | மூடாத்மாக்கள் |
| सेवसे न कश्चित् | சேராமலிருக்கறியா ? | अनर्थकुशलाः | தீங்கு விளைவிப்பதில் ஈடுபடார்கள். |
| हि | ஏனெனில், | | |

धर्मशास्त्रेषु मुख्येषु विद्यमानेषु दुर्बुधाः । बुद्धिमान्वीक्षिकीं प्राप्य निरर्थं प्रवदन्ति ते ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------|--------------|----------------|
| मुख्येषु | சிறந்த | आन्वीक्षिकीं | தர்க்க |
| धर्मशास्त्रेषु | தருமசாஸ்திரங்கள் | बुद्धिं | மதியை |
| विद्यमानेषु | இருக்கும்பொழுது | प्राप्य | அவலம்பித்து |
| ते | அந்த | निरर्थं | வெட்டியாக |
| दुर्बुधाः | அற்ப பாண்டித்யம் பெற்றவர்கள், | प्रवदन्ति | பேசுகிறார்கள். |

वीरैरध्युषितां पूर्वमस्माकं तात पूर्वकैः । सत्यनामां दृढद्वारां हस्त्यश्वरथसंकुलाम् ॥४०॥
 ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः स्वकर्मनिरतैः सदा । जितेन्द्रियैर्महोत्साहैर्वृतामायैः सहस्रशः ॥४१॥
 प्रासादैर्विविधाकारैर्वृतां वैद्यजनाकुलाम् । कच्चित्सुमुदितां स्फीतामयोध्यां परिरक्षसि ॥

तात "குழந்தாய்!
 पूर्वं இகற்குமுன்
 अस्माकं நமது
 पूर्वकैः முன்னோர்களாகிய
 वीरैः தருமவீரர்களால்
 अध्युषितां வசிக்கப்பட்டதும்,
 सत्यनामां யதார்த்தப்பெயரு
 டையதும்,
 दृढद्वारां { உறுதியான தோரண
 வாயில்களையுடைய
 தும்,
 हस्त्यश्वरथ- } யானை, குதிரை, ரதம்
 संकुलं } இவைகள் நிறைந்த
 தும்,
 सदा எக்காலத்திலும்
 स्वकर्मनिरतैः தம் தம் காரியங்களி
 லாஸக்தியுடைய
 जितेन्द्रियैः ஜிதேந்திரியர்களாய்
 महोत्साहैः அதி உத்ஸாகமுற்ற

आयैः உத்தம
 ब्राह्मणैः பிராம்மணர்களாலும்,
 क्षत्रियैः க்ஷத்திரியர்களாலும்,
 वैश्यैः வைசியர்களாலும்
 सहस्रशः ஆயிரக்கணக்காய்
 वृतां விளங்குகிறதும்,
 विविधाकारैः பலவகை
 प्रासादैः கோவில்களால்
 वृतां விளங்குகிறதும்,
 वैद्यजनाकुलं வித்வான்களால்
 நிறைந்ததும்,
 सुमुदितां மிக்க மனத்திருப்தி
 கொண்டதும்,
 स्फीतां வளமுள்ளதுவுமான
 अयोध्यां அயோத்தியையை
 परिरक्षसि } ஜாக்கிரதையாய்க்
 कच्चित् } காப்பாற்றிவருகின்
 றனையா?

कच्चिच्चैत्यशतैर्जुष्टः सुनिविष्टजनाकुलः । देवस्थानैः प्रपाभिश्च तटाकैश्चोपशोभितः ॥ ४३ ॥

सुनिविष्ट- } "அடக்கமுள்ள ஜனங்
 जनाकुलः } களால் நிறைந்துள்ள
 அது
 चैत्यशतैः அனேக யாகசாலைக
 ளாலும்,
 देवस्थानैः கோயில்களாலும்,

प्रपाभिः च தண்ணீர்ப்பந்தல்க
 ளாலும்,
 तटाकैः च குளங்களாலும்
 जुष्टः மனத்திருப்திகொண்
 டதாய்
 उपशोभितः कच्चित् செழித்து விளங்கு
 கிறதா?

प्रहृष्टनरनारीकः समाजोत्सवशोभितः । सुकृष्टसीमा पशुमान्द्विसाभिरभिवर्जितः ॥ ४४ ॥
 अदेवमातृको रम्यः श्वापदैः परिवर्जितः । परित्यक्तो भयैः सर्वैः खनिभिश्चोपशोभितः ॥
 विवर्जितो नरैः पापैर्मम पूर्वैः सुरक्षितः । कच्चिज्जनपदः स्फीतः सुखं वसति राघवः ॥

प्रहृष्टनरनारीकः { "மனத்திருப்திகொ
 ண்ட ஆண்பெண்க
 ளையுடையதும்,

समाजोत्सव- } கூட்டங்கூட்டமாய் கூ
 शोभितः } டும் திருவிழாக்களால்
 விளங்குகிறதும்,

कच्चिन्नागवनं गुप्तं कच्चित्ते सन्ति धेनुकाः । कच्चिन्न गणिकाश्वानां कुञ्जराणां च तृप्यसि ॥

नागवनं “याணைகளகப்படும்
வனமானது
गुप्तं कच्चित् நன்குபாதுகாக்கப்
படுகிறதா?
ते உனக்கு
धेनुकाः பெண்யாணைகள்
सन्ति कच्चित् வேண்டியவரைக்கு
மிருக்கின்றனவா?

गणिकाश्वानां { பெண்யாணைகள், குதி
ரைகளிவைகள் விஷயத்திலும்
कुञ्जराणां च ஆண்யாணைகள் விஷயத்திலும்,
तृप्यसि न कच्चित् { போதுமென திருப்தியடைந்து விடாமலிருக்கின்றனையா?

कच्चिदर्शयसे नित्यं मनुष्याणां विभूषितम् । उत्थायोत्थाय पूर्वाह्णे राजपुत्र महापथे ॥५१॥

राजपुत्र “சக்கிரவர்த்திகுமாரா!
नित्यं பிரதிதினமும்
पूर्वाह्णे காலவேளையில்
महापथे ராஜவீதியில்

उत्थाय उत्थाय அங்கங்கிருந்து
विभूषितं கட்புலனாகின்றவனாய் உன்னை
मनुष्याणां மனிதர்களுக்கு
दर्शयसे कच्चित् காட்சிதருகின்றனையா?

कच्चिन्न सर्वे कर्मान्ताः प्रत्यक्षास्तेऽविशङ्कया । सर्वे वा पुनस्तृष्टा मध्यमेवात्र कारणम् ॥

कर्मान्ताः பணியாளர்கள்
सर्वे எல்லோரும்
अविशङ्कया பயமற்றவர்களாய்
ते உன்னை
प्रत्यक्षाः न कच्चित् காணாமலிருக்கின்றார்களா?

सर्वे எல்லோரும்
पुनः उत्सृष्टाः वा எதிரில் வருவதை விடாமலிருக்கின்றனரா?
अत्र இவ்விஷயத்தில்
मध्य एव நடுத்தரம்தான்
कारणम् உசிதமானது.

कच्चित्सर्वाणि दुर्गाणि धनधान्यायुधोदकैः । यन्त्रैश्च परिपूर्णानि तथा शिल्पिधनुर्धरैः ॥

दुर्गाणि கோட்டைகள்
सर्वाणि च எல்லாமும்,
धनधान्यायुधोदकैः தனம், தானயம், ஆயுதம், ஜலமிவைகளாலும்

यन्त्रैः தாழ்ப்பாள்களாலும்,
शिल्पिधनुर्धरैः तथा சில்பிகளாலும், வில்லாளிகளாலும்,
परिपूर्णानि कच्चित् நிறைந்திருக்கின்றனவா?

आयस्ते विपुलः कच्चित्कच्चिदल्पतरो व्ययः । अपात्रेषु न ते कच्चित्कोशो गच्छति राघवा ॥

राघव “பரத!
ते உனது
भायः வரவு
विपुलः कच्चित् அதிகமாயிருக்கிறதா?
व्ययः செலவு

अल्पतरः कच्चित् அதற்குக்குறைந்திருக்கிறதா?
ते உனது
कोशः பொக்கிஷமானது
अपात्रेषु தகுதியற்றவர் விஷயத்தில்
गच्छति न कच्चित् சேராதிருக்கிறதா?

देवतार्थे च पित्रर्थे ब्राह्मणेष्वगातेषु च । योधेषु मित्रवर्गेषु कच्चिदृच्छति ते व्ययः ॥

देवதार्थே “தெய்வங்கள் விஷயத்
திலும்,
பிதிர்தேவதைகள்
விஷயத்திலும்,
அகாத்தே
விருந்தினராய் வந்த
பிராம்மணர்கள்
விஷயத்திலும்,

யோதேயு யுத்தவீரர்கள்
மித்ரவர்க்கு
நட்பினர்கள் விஷயத்
திலும்,
தே வ்யய: உனது செலவு
கச்சித கச்சித நடந்துவருகிறதா ?

कच्चिदायौ विशुद्धात्मा क्षारितश्चोरकर्मणा । अपृष्टः शास्त्रकुशलैर्न लोभाद्ध्यते शुचिः ॥

சோர்கர்மணா “பொய்சாக்ஷிசொல்ப
லோபாத் பேராசையால் [வனால்
க்ஷாரித: குற்றம்சாட்டப்பட்ட
விசுத்தாత్மா நற்குணமுடைய
சுசி: பரிசுத்தனாகிய

அர்ய: உத்தமன்,
शास्त्रकुशलै: சாஸ்திரநிபுணர்களால்
अपृष्ट: விசாரிக்கப்படாமலே
वध्यते न कच्चित् சித்திக்கப்படாமலிருக்கின்றனா?

गृहीतश्चैव पृष्टश्च काले दृष्टः सकारणः । कच्चिन्न मुच्यते चोरो धनलोभान्नरर्षभ ॥ ५७ ॥

नरर्षभ “புருஷோத்தம!
काले சரியானகாலத்தில்
गृहीत: च கண்டுபிடிக்கப்பட்ட
வனும்,
सकारण: சரியான ருஜுவுடன்
पृष्ट: च விசாரிக்கப்பட்டு

दृष्ट: एव குற்றவாளியாயேற்
பட்ட
चोर: ஓர் திருடன்,
धनलोभान् பொருளாசையால்
मुच्यते न कच्चित् விட்டுவிடப்படாமலிருக்கின்றனா?

व्यसने कच्चिदाढ्यस्य दुर्गतस्य च राघव । अर्थं विरागाः पश्यन्ति तवामात्या बहुश्रुताः ॥

राघव “பரத!
आढ्यस्य செல்வவாறொருவனுக்கு
दुर्गतस्य च ஏழையொருவனுக்கும்
व्यसने விவாதம் நேருகையில்
बहुश्रुता: மகாபாண்டித்யம்
பெற்ற

अमात्या: மத்திமர்கள்
तव உனது
अर्थं சேஷமத்திற்காக
विरागा: பக்தபரதமற்றவர்
कलायं
पश्यन्ति कच्चित् ஆராய்ந்தறிக்கின்றார்
कला ?

यानि मिथ्याभिज्ञस्तानां पतन्त्यस्त्राणि राघव । तानि पुत्रपशून्गन्ति प्रीत्यर्थमनुशासतः ॥

राघव “பரத!
मिथ्याभिज्ञस्तानां தப்பாய்த் தண்டிக்கப்
பட்டவர்களுடைய
यानि अस्त्राणि எந்தக் கண்ணீர்கள்
पतन्ति விழுகின்றனவோ
तानि அவைகள்

प्रीत्यर्थं ப்ரிதிக்காக
अनुशासत: ஆளுபவனுடைய
(மன்னனுடைய)
पुत्रपशून् புத்திரர்களையும்,
பசுக்களையும்,
गन्ति அழித்துவிடுகின்றன.

कच्चिद्वृद्धांश्च बालांश्च वैद्यमुख्यांश्च राघव । दानेन मनसा वाचा त्रिभिरेतैर्बुभूषसे ॥ ६० ॥

| | | | |
|-----------------|---|-----------------|--------------------|
| राघव | “பா.த ! | दानेन | ரக்ஷணையா லும், |
| वृद्धान् च | மூப்பினர்களையும், | मनसा | கொஞ்சிக்குலாவது |
| बालान् च | சிறு குழந்தைகளையும், | | லா லும், |
| वैद्यमुख्यान् च | புலவர்களையும், | वाचा | இனிய சொல்லா லும், |
| एतैः | பின்கண்ட | बुभूषसे कच्चित् | நீ உத்ஸாஹப்படுத்து |
| त्रिभिः | { மூன்றால் (வரிசைக்கி ரமமாய் ஒவ்வொரு வருக்கொவ்வொன் றாய்) | | கின்றனையா ? |

कच्चिदुरुंश्च वृद्धांश्च तापसान् देवतातिथीन् । चैत्यांश्च सर्वान्सिद्धार्थान् ब्राह्मणांश्च नमस्यसि ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-----------------|--------------------|
| गुरुन् च | “ஆசிரியர்களையும், | देवतातिथीन् | தேவதைகளையும் |
| वृद्धान् च | பெரியோர்களையும், | | அதிதிகளையும், |
| सिद्धार्थान् | ஆமுஷ்மிகபலனைக் | चैत्यान् च | அரசமுதலிய புண்ணரி |
| तापसान् | தவசிகளான [கண்ட | | யவிருக்ஷங்களையும், |
| ब्राह्मणान् | பிராம்மணர்கள் | नमस्यसि कच्चित् | வணங்கிவருகின்ற |
| सर्वान् च | எல்லோரையும், | | னையா ? |

कच्चिदर्थेन वा धर्ममर्थं धर्मेण वा पुनः । उभौ वा प्रीतिलोभेन कामेन न विवाधसे ॥

| | | | |
|----------|--|-------------------|--|
| धर्मेण | “தருமமொன்றால் | प्रीतिलोभेन | கொண்டாடத்தகாத |
| धर्मं वा | தருமத்தைத்தானு | | தாகிய |
| पुनः | மீளவும், [கட்டும் | कामेन वा | காமத்தாலோ |
| अर्थं वा | { (புருஷார்த்தங்களி லிரண்டாவதாகிய) | उभौ | { (தருமம், அர்த்த மென்ற) இவ்விரண் டையும் |
| अर्थेन | { அர்த்தத்தைத்தானு கட்டும், பொருளாலோ | विवाधसे न कच्चित् | அழிக்காமலிருக்கின் றனையா ? |

कच्चिदर्थं च धर्मं च कामं च जयतां वर । विभज्य काले कालज्ञ सर्वान् भरत सेवसे ॥

| | | | |
|----------|-------------------------------------|---------------|--------------------------|
| जयतां वर | “வெற்றிபெற்றவர்க ளுட்சிறந்தவனே ! | कामं च | காமத்தையும் |
| कालज्ञ | உசிதகாலத்தையறிந் தவனே ! | काले | அததனது காலத்தில் |
| भरत | பா.த ! | विभज्य | பங்கிட்டு |
| धर्मं च | தருமத்தையும் | सर्वान् | எல்லாவற்றையும் |
| अर्थं च | அர்த்தத்தையும் | सेवसे कच्चित् | அனுஷ்டிக்கின்றனே யா ? |

कचित्ते ब्राह्मणाः शर्म सर्वशास्त्रार्थकोविदाः । आशंसन्ते महाप्राज्ञ पौरजानपदैः सह॥६४॥

மகாபாஜ் “மகாபுத்திமானே!
புரஜானபடை: நாடுநகரவாஸிகளோடு
சஹ கூட
சர்வசாஸ்திரங்களின்
நுட்பங்களையறிந்த

பாஹ்மணா: அந்தணர்கள்
தே உணக்கு
சர்ம சிரேயஸை
ஆசம்சந்தே கசிந் கோருகின்றார்களா?

नास्तिवयमनृतं क्रोधं प्रमादं दीर्घसूत्रताम् । अदर्शनं ज्ञानवतापालस्यं पञ्चवृत्तिताम् ॥
एकचिन्तनमर्थानामनर्थज्ञैश्च मन्त्रणम् । निश्चितानामनारम्भं मन्त्रस्यापरिरक्षणम् ॥ ६६ ॥
मङ्गलस्याप्रयोगं च प्रत्युत्थानं च सर्वतः । कच्चित्त्वं वर्जयस्येतात्राजदोषांश्चतुर्दश ॥ ६७ ॥

நாஸ்திவயம் நான்ஸ்திகம்
அநுதம் பொய்,
கோபம், கோபம்,
அஜாக்ஈரதை,
தீர்ஈஸூதாந் ஒரு காரியத்தில்
வீண்காலங்கழித்தல்,
ஜானவதாந் புத்திமான்களை
அதர்ஸந் தரிசியாதிருத்தல்,
ஆலஸ்யம் சோம்பல்,
பஞ்ஈவ்ருத்திதாந் பஞ்சேந்திரியபரவச
னயிருத்தல்,
அர்தாநாந் ராஜ்யகாரியங்களை
ஈகசிந்தநம் தனியாயாலோசித்தல்,
அநர்த்ஜை: மூடர்களோடு
மந்நரணம் ஆலோசித்தல்,

நிஸ்திதாந் தீர்மானிக்கப்பட்ட
வைகளை
அநாரம்ஈம் ஆரம்பியாதிருத்தல்,
மந்நஸ்ய ரகஸ்யத்தை
அபரிரக்சணம் ரக்சியாமை,
மங்கலஸ்ய நன்மையை
அபரயோகம் புரியாமை
சர்வத: எல்லாப்பக்கங்களி
லும்
ப்ரத்யுத்யாநம் போருக்கெழுதலாகிய
ஈதாந் இந்த
சதுர்தச பதினாந்ரு
ராஜதோஷாந் ராஜதோஷங்களையும்
த்வந்
வரஜயஸி கசிந் அகற்றியிருக்கிறாயா?

दश पञ्च चतुर्वर्गान्सप्तवर्गान्श्च तत्त्वतः । अष्टवर्गं त्रिवर्गं च विद्यास्तिस्रश्च राघव ॥ ६८ ॥
इन्द्रियाणां जयं बुद्ध्या षाड्गुण्यं दैवमानुषम् । कृत्यं विंशतिवर्गं च तथा प्रकृतिमण्डलम् ॥
यात्रादण्डविधानं च द्वियोनी सन्धिविग्रहौ । कच्चिदेतान्महाप्राज्ञ यथावदनुमन्यसे ॥७०॥

மகாபாஜ் “மகாபுத்திமானாகிய
ராஈவ பரத!

தச (1. வேட்டையாடுதல், 2. சூதாடல், 3. பகலில் துயில்கை,
4. வீண்பேச்சு, 5. ஸ்த்ரீசகவாஸம், 6. குடி, 7. நர்த்தனம்,
8. பாட்டு, 9. வாத்தியம், 10. தேசாடனம் ஆகிற) பத்து
வர்க்கங்களையும்,

பஞ் (1. பகைவராலுண்டாகிய பகை, 2. பொருளாலுண்டாகிய பகை,
3. பெண்ணினாலுண்டாகிய பகை, 4. சோல்லாலுண்டாகிய
பகை, 5. குற்றத்தாலுண்டாகிய பகை என்னும்) ஐந்து வர்க்க
ங்களையும்,

चतुर्वर्गान्
सप्तवर्गान् च

(சாம, தான, பேத, தண்டம் என்னும்) நான்கு வர்க்கங்களையும்,
(1. அரசன், 2. அமைச்சர், 3. நாடு, 4. கோட்டை, 5. பொருள்,
6. சேனை, 7. நட்பினர் என்ற) எழு வர்க்கங்களையும்,

अष्टवर्गं

(1. கோளுரைத்தல், 2. சாகசம் செய்தல், 3. வஞ்சனை, 4. பிரணய
கோபம், 5. பொறுமை, 6. பொருளையிகழ்தல், 7. வன்மொழி
கூறல். 8. கடுந்தண்டனை செய்தல் ஆகிய) எட்டுவர்க்கங்களையும்,

विश्वं च

(1. செய்யத்தகாத செயலில் முயலுதல், 2. செய்யவேண்டிய செயல்
களைச்செய்யாதிருத்தல், 3. செய்யவேண்டிய காரியங்களைக் கால
மில்லாக் காலத்தில் செய்தல் ஆகிய) மூன்று வர்க்கங்களையும்,

तिस्रः विद्याः च

(1. சுருதி, 2. பயிர்செய்தல், வியாபாரம், 3. நீதிசாஸ்திரம் என்ற)
மூன்று வித்தைகளையும்,

इन्द्रियाणां जयं

ஐம்புலன்களை அடக்குதலையும்,

षाड्गुण्यं

(1. ஸந்தி, 2. விக்ரகம், 3. போர்செல்லல், 4. போர்செல்லாதி
ருத்தல், 5. பகைவரை ஒருவர்க்கொருவர் பேதித்தல், 6. பகை
வரை ஆச்ரயித்தல், ஆகிய) ஆறு குணத்தையும்,

दैवमानुषं

(தீ, நீர், பிணி, ஸூதாமம், இறப்பு எனும்) ஐவகை தெய்வதுன்பங்க
ளையும், (அதிகாரிகள், கள்ளர், அன்னியர், அரசனுக்கிஷ்டர், அ
ரசனது லோபகுணம் என்ற) மனுஷ்யரால் தோன்றும் ஐந்து
வியசனங்களையும்,

कृत्यं

பகைவரிடம் விசுவாசமற்றவர்களைத் தன்வசமாக்கிக்கொள்ளலே
யும்,

विंशतिवर्गं च

(1. ராஜ்யம், 2. பெண், 3. ஸ்தானம், 4. தேசம், 5. இனத்தார்,
6. பொருள் இவைகளைப் பறித்துக்கொள்ளுதல், 7. மதம்,
8. மானம், 9. விஷயபீடை, 10. மதியின்மை, 11. சக்தியின்மை,
12. குணமின்மை, 13. தெய்வத்தையிகழ்தல், 14. நேசரை
யிகழ்தல், 15. பொருளையிகழ்தல், 16. சுற்றத்தாரைக் கொலை
செய்தல், 17. கருணையின்மை, 18. தேசத்தையிகழ்தல்,
19. பொருளொன்றிலேயே விருப்புறுதல், 20. தான் கோரிய
விஷயத்திலேயே ஆசையுற்றிருத்தல் எனும்) இருபதுவர்க்கங்க
ளையும்,

तथा

அவ்வண்ணமே

प्रकृतिमण्डलं

(1. மந்திரி, 2. தேசம், 3. கோட்டை, 4. கோசம், 5. தண்டம் எனும்
ஐந்து) பிரக்ருதிகளையும், (நடுவிலரசன், முன்னரசனுக்கு சத்ரு,
தன் மித்திரன், சத்ருவின் மித்திரன், தன் மித்திரனுக்கு மித்
ரன், சத்ருவின் மித்திரனுக்கு மித்திரன், என்னுமைவர்கள்,
பின்னர் பார்ஷ்ணிக்ராஹன், ஆக்ரந்தன், பார்ஷ்ணிக்ராஹாஸா
ரன், ஆக்ரந்தாஸாரன் என்னும் நால்வர்கள், பக்கத்திலிருப்ப
வன், மத்தியமன், புறத்திலிருப்பவன், உதாசீனனென்னும்
பன்னிரண்டு) மண்டலங்களையும்,

याज्ञादण्डविधानं च (பகைவரைப் பதைத்துச்செல்லுதல், நேசித்துச்செல்லுதல், பல
ருடன் கூடிச்செல்லுதல், வஞ்சனைசெய்து செல்லுதல், அலகி
யம்செய்து செல்லுதல் எனும்) ஐந்துவித யானங்களையும்,

द्वियोनी இரண்டுவகையாயுள்ள
सन्धिविग्रहौ ஸந்திவிக்ரஹங்களாகிற
एतान् மேற்கண்டவைகளை
तस्वतः बुद्ध्वा உள்ளபடி நன்கு ஆராய்ந்து
यथावत् அதற்கேற்றவாறு
अनुमन्यसे कश्चित् நடந்துவருகின்றனையா?

मन्त्रिभिस्त्वं यथोद्दिष्टैश्चतुर्भिस्त्रिभिरेव वा । कश्चित्समस्तैर्व्यस्तैश्च मन्त्रं मन्त्रयसे मिथः ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------|-------------------|---------------------------|
| त्वं | “நீ | समस्तैः | ஒன்றுகூடியும், |
| यथोद्दिष्टैः | சாஸ்திரமுறைகளிற் கூறியவண்ணம் | मिथः | ஒருவர்பின்னொருவ ராய் |
| त्रिभिः | மூன்று | व्यस्तैः च | தனித்தனியாகவும் |
| वा | அல்லது | मन्त्रं | ராஜ்யகாரியத்தை |
| चतुर्भिः | நான்கு | मन्त्रयसे कश्चित् | ஆலோசனை செய்கின் றனையா? |
| मन्त्रिभिः एव | மந்திரிகளுடன் | | |

कश्चित्ते सफला वेदाः कश्चित्ते सफलाः क्रियाः । कश्चित्ते सफला दाराः कश्चित्ते सफलं श्रुतम् ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------|---------------|--------------------------|
| ते | “உனக்கு | ते | உனது |
| वेदाः | வேதங்கள் | दाराः | மனைவி |
| सफलाः कश्चित् | பயனளிக்கின்றனவா? | सफलाः कश्चित् | அனுசலமாயிருக்கின் |
| ते | உனது | ते | உனது [நனளா? |
| क्रियाः | செய்கைகளெல்லாம் | श्रुतं | சாஸ்திரவித்தை |
| सफलाः कश्चित् | நற்பயனை விளைவிக்க கின்றனவா? | सफलं कश्चित् | நற்படனையளிக்கின்ற தா? |

कश्चिदैषैव ते बुद्धिर्यथोक्ता मम राघव । आयुष्या च यशस्या च धर्मकामार्थसंहिता ॥७३॥

| | | | |
|---------|-----------------|----------------|---------------------------------|
| राघव | “பரதா! | आयुष्या | திக்காயுஸைத் தருகிறதாயும், |
| ते | உனது | यशस्या च | யசஸைத்தருகிற தாயும், |
| बुद्धिः | அறிவு | धर्मकामार्थ-) | தர்மம், காமம், அர்த் |
| मम | என்னால் | संहिता च) | தமிழைகளையளிக்க த்தக்கதாயும், |
| यथोक्ता | கூறப்பட்டவண்ணமே | कश्चित् | இருக்கிறதா? |
| एषा एव | மேற்கண்டவாறே | | |

यां वृत्तिं वर्तते तातो यां च नः प्रपितामहाः । तां वृत्तिं वर्तसे कच्चिद्या च सत्पथगा शुभा॥

या " எது
 सत्पथगा நல்வழியையடைவிக்
 சுற்றதோ,
 शुभा च ஏற்றதோ,
 यां எனத
 नः நமது
 प्रपितामहाः च முன்னோர்களனுஷ்டித்
 தார்கனோ,

यां எந்த
 वृत्तिं அனுஷ்டானத்தை
 तातः திருத்தாதை
 वर्तते அனுஷ்டித்தனரோ,
 तां அதே
 वृत्तिं அனுஷ்டானத்தை
 वर्तसे कच्चिद् நீ அனுஷ்டிக்கின்ற
 னையா ?

कच्चित्स्वादुकृतं भोज्यमेको नाश्नासि राघव । कच्चिदाशंसमानेभ्यो मित्रेभ्यः संप्रयच्छसि॥

राघव " பரத !
 स्वादुकृतं மதுரமாகிய
 भोज्यं உணவை
 एकः நியொருவனே

अश्नासि न कच्चिद् புசியாமலிருக்கின்ற
 னையா ?
 आशंसमानेभ्यः அதிலாசைப்படும்
 मित्रेभ्यः இனத்தார்களுக்கு
 संप्रयच्छसि कच्चिद् கொடுக்கின்றனையா ?

राजा तु धर्मेण हि पालयित्वा महामतिर्दण्डधरः प्रजानाम् ।

अवाप्य कृत्स्नां वसुधां यथावदितश्च्युतः स्वर्गमुपैति विद्वान् ॥ ७६ ॥

राजा " ஓர் மன்னன்,
 वसुधां कृत्स्नां உலகுமுழுவதையும்
 अवाप्य அடைந்து
 हि அதனால்
 प्रजानां ஜனங்களுடைய
 दण्डधरः வியவகாரங்களைத்தீர்ப்
 பவனாய்,
 महामतिः புத்திமானாய்,

विद्वान् வித்வானாய்,
 धर्मेण तु தருமநெறிவழுவாது
 पालयित्वा காப்பாற்றி
 इतः இவ்விடத்திலிருந்து
 च्युतः விடுபட்டு,
 यथावत् உரிமையாய்
 स्वर्गம் ஸ்வர்க்கத்தை
 उपैति அடைகிறான்."

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे शततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 6119



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3764

एकोत्तरशततमः सर्गः—நூற்றொன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ १०१ ॥

दशरथस्वर्गमनकथनम्—தசரதர் மரணத்தைச் சொல்லுவது.

रामस्य वचनं श्रुत्वा भरतः प्रत्युवाच ह । किं मे धर्माद्विहीनस्य राजधर्मः करिष्यति ॥ १ ॥

भरतः பரதன்
 रामस्य ஸ்ரீராமாது
 वचनं திருவாக்கை
 श्रुत्वा கேட்டு
 प्रत्युवाच பின்வருமாறு திரு
 வாய்மலர்ந்தருளினார்.
 ह காண் !

धर्मात् " எல்லா தருமத்தினி
 ன்றும்
 विहीनस्य அப்புறப்பட்டிருக்
 கும்
 मे எனக்கு
 राजधर्मः ராஜதருமமொன்று
 किं करिष्यति என்ன செய்யவல்லது?

शाश्वतोऽयं सदा धर्मः स्थितोऽस्मासु नरर्षभ । ज्येष्ठपुत्रे स्थिते राजन्न कनीयान्नृपो भवेत् ॥

நரர்ஷப "புருஷோத்தமா!
 राजन् சக்கிரவர்த்தியே!
 ज्येष्ठपुत्रे முத்தகுமாரன்
 स्थिते இருக்கையில்
 कनीयान् இளையவன்
 नृपः மன்னனாக

भवेत् न ஆவதில்லை.
 अयं இந்த
 धर्मः தர்மமானது
 अस्मासु நமது விஷயத்தில்
 सदा எக்காலத்திலும்,
 शाश्वतः स्थितः மாறாமலிருந்தது.

स समृद्धां मया सार्धमयोध्यां गच्छ राघव । अभिषेचय चात्मानं कुलस्यास्य भवाय नः॥

राघव "ஸ்ரீராம!
 सः அந்த தேவரீர்
 समृद्धां பாக்கியம்பெற்ற
 अयोध्यां அயோத்திக்கு
 मया सार्धं அடியேனுடன்கூடவே
 गच्छ எழுந்தருளவேண்
 अस्य இந்த [டும்;

कुलस्य உத்தமகுலத்தினுடையவும்
 नः च எங்களுடையவும்
 भवाय கேஷமத்தின்பொ
 आत्मानं தேவரீரை [ருட்டு
 अभिषेचय திருவபிஷேகம் செய்
 துகொள்ளும்.

राजानं मानुषं प्राहुर्देवत्वे स मतो मम । यस्य धर्मार्थसहितं वृत्तमाहुरमानुषम् ॥ ४ ॥

यस्य "எவனது
 वृत्तं ஒழுக்கத்தை
 धर्मार्थसहितं தர்மார்த்தங்களோடு
 கூடியதாயும்
 अमानुषं அமானுஷமாகவும்
 आहुः சொல்லுகிறார்களோ
 राजानं அந்த மன்னனை

मानुषं மனிதனெனவும்
 प्राहुः சொல்லுகிறார்கள்.
 मम என்னால்
 सः அவன்
 देवत्वे தெய்வத்தன்மையில்
 मतः கொண்டாடப்பட்ட
 வன்.

केकयस्थे तु च मयि त्वयि चारण्यमाश्रिते । दिवमार्यो गतो राजा यायजूकः सतां मतः ॥

मयि "அடியேனும்
 केकयस्थे तु கேகயநாட்டிலிருக்
 கையில்,
 त्वयि च தேவரீரும்
 अरण्यं காட்டிற்கு
 आश्रिते च எழுந்தருளிட
 வளவில்,

सतां ஸத்துக்கள் மத்தியில்
 आर्यः பூஜ்யரெனவும்
 यायजूकः யாகசீலரெனவும்
 मतः கொண்டாடப்பட்ட
 राजा சக்கிரவர்த்தியார்
 दिवं गतः ஸ்வர்க்கத்தையடைந்
 தார்.

निष्क्रान्तमात्रे भवति सहसीते सलक्ष्मणे । दुःखशोकाभिभूतस्तु राजा त्रिदिवमभ्यगात् ॥

राजा "சக்கிரவர்த்தியார்,
 सहसीते சீதாபிராட்டியாரோ
 सलक्ष्मणे லக்ஷ்மணனோடும் [டும்
 भवति தேவரீர்
 निष्क्रान्तमात्रे வெளிப்புறப்பட்ட
 மாத்திரத்தில்

तु இவ்விஷயத்தில்
 दुःख- } மனவேதனையின் கடு
 शोकाभिभूतः } மையில் அறிவிழந்த
 वराय வராய்
 त्रिदिवं ஸ்வர்க்கத்திற்கு
 अभ्यगात् எழுந்தருளிடனார்.

उत्तिष्ठ पुरुषव्याघ्र क्रियतामुदकं पितुः । अहं चायं च शत्रुघ्नः पूर्वमेव कृतोदकौ ॥ ७ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|-----------------|-------------------------------|
| புருஷவ்யாघ்ர | “ புருஷோத்தமரே ! | அஃ ச | அடியேனும் |
| उत्तिष्ठ | எழுந்திரும் ; | अयं शत्रुघ्नः च | இந்த சத்ருக்ஷ்ணனும் |
| पितुः | திருத்தந்தையாருக்கு | पूर्व एव | முன்னமேயே |
| उदकं | தர்ப்பணமானது | कृतोदकौ | தர்ப்பணதிகளைச்செய்துவிட்டோம். |
| क्रियतां | செய்யப்பட்டும் ; | | |

प्रियेण किल दत्तं हि पितृलोकेषु राघव । अक्षय्यं भवतीत्याहुर्भवांश्चैव पितुः प्रियः ॥ ८ ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|------------|-----------------------------------|
| राघव | “ ஸ்ரீராம ! | भवति | ஆகிறது |
| पितृलोकेषु | பித்ருக்கள் விஷயத் தில் | इति आहुः | என்று பெரியோர் சொல்லுகின்றார்கள். |
| प्रियेण | இஷ்டனால் | पितुः | திருத்தந்தைக்கு |
| दत्तं | கொடுக்கப்பட்டது | भवान् एव च | தேவரீரோருவர்தான் |
| किल | மாத்திரமே | प्रियः हि | அருமையானவான் |
| अक्षय्यं | அக்ஷயமாய் | | றே ? |

त्वामेव शोचंस्तव दर्शनेप्सुस्त्वय्येव सक्तामनिवर्त्य बुद्धिम् ।

त्वया विहीनस्तव शोकरुणस्त्वां संस्मरन्नस्तमितः पिता ते ॥ ९ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------|----------------|----------------------|
| ते | “ தேவரீரது | त्वया | தேவரீரால் |
| पिता | திருத்தந்தை, | विहीनः | கைவிடப்பட்டவராய், |
| त्वां | தேவரீரையே | त्वयि एव | தேவரீரிடத்திலேயே |
| संस्मरन् | நினைந்துநினைந்து | सक्तां बुद्धिं | பதிந்துவிட்ட மனதை |
| त्वां एव | தேவரீரைப்பற்றியே | अनिवर्त्य | திருப்பிக்கொள்ளாமலே, |
| शोचन् | மனவேதனைப்படுகின் | तव | தேவரீரைப்பற்றிய |
| तव | தேவரீரை [றவராய், | शोकरुणः | சோகமே பிணியாக |
| दर्शनेप्सुः | பார்ப்பதிலவாக்கொண்டவராய், | अस्तमितः | பிராணனை விட்டார்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे एकोत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 6128



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3773

द्युत्तरशततमः सर्गः—நூற்றிரண்டாவது ஸர்க்கம். ॥ १०२ ॥

निवापाञ्जलिदानम्—தர்ப்பணம் செய்வது.

तां श्रुत्वा करुणां वाचं पितुर्मरणसंहिताम् । राघवो भरतेनोक्तां बभूव गतचेतनः ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|--------------|-------------------------|
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | तां | அந்த |
| भरतेन | பரதனால் | करुणां | மகா துக்ககரமாயுள்ளதுமான |
| उक्तां | சொல்லப்பட்டதும், | वाचं | சொல்லை |
| पितुः | தகப்பனாரின் | श्रुत्वा | கேட்டு |
| मरणसंहितां | மரணத்ததைப்பற்றியதும், | गतचेतनः बभूव | அறிவிழந்தார். |

த் து வஜ்ரமீவோத்யஸ்டமாஹவீ டானவாரிணா । வாக்வஜ்ரம் டரதேனோக்தமமனோஜ் டரந்தப: ॥ 2 ॥
 ட்ரஹ் ராமோ வாஹூ வீ டுஷ்பிதாட்ரோ யதா ட்ரும: । வனே டர்ஸுனா க்ருதஸ்ததா ட்ருவி டபாத ஹ ॥ 3 ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------------|---------------|-------------------------------------|
| டரந்தப: | டகைவரை த்ரபிக்ட்ச் செய்யும் | வாக்வஜ்ரம் து | வாக்ட்காகும் வஜ்ராயுத மாய் எண்ணி |
| ராம: | ஸ்ரீராமர் | வாஹூ வீ | இரு கைகளையும் |
| டரதேன | டரதனால் | ட்ரஹ் | டிசைந்துக்கொண்டு, |
| உக்தம் | சொல்லப்பட்டதை | வனே | காட்டில் |
| டமனோஜ் | காதுகொடுத்துக் கேட்கமுடியாததாயும் | டர்ஸுனா | கோடாரியால் |
| டானவாரிணா | இந்திரனால் | க்ருத: | வெட்டி வீழ்த்தப் பட்ட |
| ஹாவே | டோரில் | டுஷ்பிதாட்ர: | பூத்தகிளைகளையுடைய |
| உத்யஸ்டம் | ஏவப்பட்ட | ட்ரும: | ஓர் வீருகூடம் |
| வஜ்ரம் இவ் | வஜ்ராயுதத்தைப் டோலவே | யதா ததா | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| த் | அதை | ட்ருவி | தரையில் [வண்ணமே, |
| | | டபாத ஹ | வீழ்ந்து தவித்தார். |

ததா நிடதிதம் ராமம் ஜகத்யாம் ஜகதீடதிதம் । க்ரூடதாதடரிஸ்ரான்தம் ட்ரஸுட்ரமீவ க்ருஜ்ரம் ॥ 4 ॥
 ட்ராதர்ஸ்தே மஹேவாஸம் சர்வத: ஷோககர்ஸிதம் । ருதந்த: சஹ வீதேஹா சிடிசு: சலிலேன வீ ॥ 5 ॥

| | | | |
|----------------------|-----------------------------|--------------------------|----------------------------|
| க்ரூடதாதடரிஸ்ரான்தம் | கரையையிடித்துக் கத்தளைது | மஹேவாஸம் | டெரும் வில்லாளியும், |
| ட்ரஸுட் | தூங்கும் | ஜகதீடதிதம் | லோகநாதருமான |
| க்ருஜ்ரம் | யானையை | ராமம் | ஸ்ரீராமரை |
| இவ் | டோன்றவரும், | தே | அந்த |
| ஷோககர்ஸிதம் | சோகத்தால் மெய் மறந்து | ட்ராதர்: | தம்பிகள் |
| ஜகத்யாம் | தரையில் | வீதேஹா சஹ | வைதேகியாரோடுகூட |
| ததா | மேற்கண்டவாறு | சர்வத: | எல்லோரும் |
| நிடதிதம் | வீழ்ந்துகிடந்தவரும், | ருதந்த: | அழுதுகொண்டே |
| | | சலிலேன } சிடிசு: வீ } | ஐலத்தை தெளித்த னார்கள். |

ச து சஜ்ஜாம் டுநர்லஹ்வா நேத்ராட்யாமாஸ்ரமுத்யஜந் । டபாக்ராமத காடுத்ய: க்ருடணம் வஹு டாஸிதம் ॥

| | | | |
|--------------|----------------|------------|--------------------------|
| ச: | அந்த | உத்யஜந் து | டெருகிவிட்டுக் கொண்டு |
| காடுத்ய: | ஸ்ரீராமர், | க்ருடணம் | டரிதாடமாய் |
| டுந: | மீளவும் | வஹு | டலவிதமாய் |
| சஜ்ஜாம் | அறிவை | டாஸிதம் | டுலம்ப |
| லஹ்வா | அடைந்து | டபாக்ராமத | தலைப்பட்டார் |
| நேத்ராட்யாம் | இரு கண்களினின் | | (ஆர்ஷம்). |
| ஹாஸம் | கண்ணீரை [றும் | | |

स रामः स्वर्गतं श्रुत्वा पितरं पृथिवीपतिम् । उवाच भरतं वाक्यं धर्मात्मा धर्मसंहितम् ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|------------|---------------------------------|
| सः | அந்த | श्रुत्वा | சுந்தித்து |
| धर्मात्मा | தர்மா த்மாவாகும் | भरतं | பரதரைப்பார்த்து |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | धर्मसंहितं | தர்மத்தை நன்கு விளங்கக்காட்டும் |
| पृथिवीपतिं | சக்கிரவர்த்தியாராகும் | वाक्यं | பின்வரும் சொல்லை |
| पितरं | திருத்தந்தையாரை | उवाच | சொன்னார் : |
| स्वर्गतं | ஸ்வர்க்கமடைந்து விட்டவராய் | | |

किं करिष्याम्ययोध्यायां ताते दिष्टां गतिं गते ॥ ८ ॥

| | | | |
|---------|--------------------|------------|------------------|
| ताते | “ திருத்தந்தை | अयोध्यायां | அயோத்தியில் |
| दिष्टां | தெய்வத்தால் விதிக் | किं | என்ன |
| गतिं | கதியை [கப்பட்ட | करिष्यामि | நான் செய்யப்போகி |
| गते | அடைந்தபின்னர் | | மேன் ? |

कस्तां राजवराद्धीनामयोध्यां पालयिष्यति ॥ ९ ॥

| | | | |
|----------|----------------|------------|----------------------|
| राजवराद् | “ அரசோத்தமரால் | अयोध्यां | அயோத்தியை |
| हीनां | கைவிடப்பட்ட | कः | எவன் |
| तां | அந்த | पालयिष्यति | பரிபாலனம்பண்ணுவான் ? |

किं नु तस्य मया कार्यं दुर्जातेन महात्मनः । यो मृतो मम शोकेन मया चापि न संस्कृतः ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------------|----------------|-----------------------|
| यः | “ எவர் | तस्य | அந்த |
| मम अपि | என்னையே நினைந்து | महात्मनः | மஹாத்மாவுக்கு |
| शोकेन | சோகத்திலேயே | दुर्जातेन | உபயோகமற்ற புதல்வனாகிய |
| मृतः | மரணமடைந்து | | |
| मया | என்னால் | मया | என்னால் |
| संस्कृतः च न | ஸம்ஸ்காரம்கூடச்செய்யப்படவில்லையோ | किं नु कार्यम् | என்ன பயன் ? |

अहो भरत सिद्धार्थो येन राजा त्वयाऽनघ । शत्रुघ्नेन च सर्वेषु प्रेतकृत्येषु संस्कृतः ॥ ११ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|---------------|-------------------|
| अनघ | “ தோஷரஹிதனே ! | शत्रुघ्नेन च | சத்ருக்னனாலும் |
| भरत | பரத ! | राजा | சக்கிரவர்த்தியார் |
| अहो | ஐயே பாக்யசாலி ! | सर्वेषु | எல்லா |
| सिद्धार्थः | கொடுத்துவைத்தவன் ! | प्रेतकृत्येषु | பிரேதகாரியங்களில் |
| येन | எனென்றால் | संस्कृतः | ஸம்ஸ்கரிக்கப்பட்ட |
| त्वया | உன்னாலும் | | னர். |

நிஷ்ப்நாநாநேகாபா நரேந்ரேண விநாகூதா஢ு | நிவூதவநவாஸௌபி நாயௌத்யாந் ஢ந்஢ு஢ுதஸஹே ||

| | | | |
|--------------|-------------------------|-----------------|------------------|
| நரேந்ரேண | “ சக்கிரவர்த்தியாரால் | அயௌத்யாந் | அயௌத்திக்கு |
| விநாகூதாந் | கைவிடப்பட்டதும் | நிவூதவநவாஸ: அபி | வநவாசத்தை ஢ுற்றி |
| நிஷ்ப்நாநாந் | பிரதாநபுருஷரையிழந்ததாய் | | ஁ம் ஢ுடித்தும் |
| அநேகாபாந் | ஌ரு பிரதாநபுருஷரு | ஢ந்஢ு | திரும்பிவர |
| | ஢ற்றது஢ாகிய | உதஹே ந | நாந் ஢ௌறேந். |

ஸ஢ாஸவநவாஸம் ஢ா஢யௌத்யாபாந் ஢ரந்஢ப | கோ நு ஸாஸிஷ்யதி ஢ுநஸ்தாதி லௌகாந்ரம் ஢தி ||

| | | | |
|-------------|---------------------------------------|-------------|---------------------------------|
| ஢ரந்஢ப | “ சத்ருக்களை தபிக்கச் செய்பவளை ! ஢ரத! | ஢ாந் | எந்னை |
| தாதி | தந்தையார் | ஢ுந: | இனி |
| லௌகாந்ரம் | ஢ரலௌகத்தை | அயௌத்யாபாந் | அயௌத்தியில் |
| ஢தி | அடைந்தபின்னர் | க: நு | எவர்தான் |
| ஸ஢ாஸவநவாஸம் | வநவாசத்தை஢ுடித்த | ஸாஸிஷ்யதி | நல்வழியுபதேசிக்கப் ஢ௌகின்ரார் ? |

஢ுரா ஢்ரேஷ்ய ஸுவூதம் ஢ாந் ஢ிதா யாந்யாஹ ஸாந்஢வயந் |

வாக்யாநி தாநி ஸ்ரௌஷ்யாமி கூத: ஸ்ரௌத்ரஸுஸ்வாந்யஹ஢ு

|| 18 ||

| | | | |
|--------------|--------------------|--------------|-----------------|
| ஢ுரா | “ இதற்கு஢ுன் | ஸாந்஢வயந் | தேனௌ஢ுதும்வண்ண |
| ஸுவூதம் | சுக஢ே கால஢்கழித்து | | ஢ாய் |
| | க்கௌண்டிருந்த | அஹ | அருளிச்செய்தனரௌ |
| ஢ாந் ஢்ரேஷ்ய | எந்னைப் ஢ார்த்து | ஸ்ரௌஸுஸ்வாநி | காதிந்கினிய |
| ஢ிதா | தந்தையார் | தாநி | அவைகளை |
| யாநி | எந்த | அஹ் | நாந் |
| வாக்யாநி | உபதேசங்களை | கூத: | எவரிடமிருந்து |
| | | ஸ்ரௌஷ்யாமி | கேட்டு஢ன் ? ” |

஁஢ு஢ுத்தவா ஸ ஢ரதம் ஢ார்யா஢்஢்யேத்ய ரா஘வ: | உவாச ஸௌகஸந்஢ஸ: ஢ூர்ந்஢்ரநி஢ாநா஢ு||19||

| | | | |
|-------------------|-------------------|-----------|-----------------|
| ஸ: ரா஘வ: | அந்த ஢ூரீராமர் | ஢ார்யா | ஢னினியை |
| ஢ரதம் | ஢ரதரைப் ஢ார்த்து | அ஢்யேத்ய | ஢ார்த்து, |
| ஁஢் | ஢ேற்கண்டவாறு | ஸௌகஸந்஢ஸ: | துயரத்தால் வாடி |
| உத்தவா | சௌல்லிவிட்டு | உவாச | பின்வரு஢ாறு |
| ஢ூர்ந்஢்ரநி஢ாநாந் | ஢ூர்ணசந்திரன்஢ௌன் | | சௌன்ரார்: |
| | ற ஢ுக஢ுடைய | | |

ஸிதி ஢ுதஸ்தே ஸ்வஸுர: ஢ித்ரா ஹிநௌஸி லக்ஷ஢ | ஢ரதௌ து:ஸவாசுதே ஸ்ரீர்தம் ஢ுதிவீ஢தி஢ு ||

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|--------------|
| ஢ரத: | “ ஢ரதன் | ஸிதி | லீதே ! |
| ஢ுதிவீ஢தி | சக்கிரவர்த்தியாரை | தே ஸ்வஸுர: | உனது ஢ா஢ரார் |
| ஸ்ரீர்தம் | ஸ்வர்க்க஢டைந்தவர் | ஢ுத: | ஢ாண்டார். |
| | என | லக்ஷ஢ | லக்ஷ்஢னா ! |
| து:ஸ் | கஷ்டச்செய்தியை | ஢ித்ரா | தந்தையை |
| அாசுதே | சௌல்லுகுந். | ஹிந: | இழந்தவனாக |
| | | அஸி | ஆகின்றனை. ” |

ततो बहुगुणं तेषां बाष्पं नेत्रेष्वजायत । तथा ब्रुवति काकुत्स्थे कुमारानां यशस्विनाम् ॥

| | | | |
|------------|--------------|-----------|------------------|
| ततः | அப்பொழுது | कुमाराणां | ராஜகுமாரர்களாகிய |
| काकुत्स्थे | ஸ்ரீராமர் | तेषां | அவர்களது |
| तथा | மேற்கண்டவாறு | नेत्रेषु | கண்களில் |
| ब्रुवति | சொல்லுகையில் | बहुगुणं | அளவுகடந்த |
| यशस्विनां | புகழ்பெற்ற | बाष्पं | கண்ணீர் |
| | | अजायत | உண்டாயிற்று. |

ततस्ते भ्रातरः सर्वे भृशमाश्वास्य राघवम् । अब्रुवज्जगतीभर्तुः क्रियतामुदकं पितुः ॥१८॥

| | | | |
|---------|--------------|------------|--------------------|
| ततः | அப்பொழுது | आश्वास्य | தேற்றி, |
| ते | அந்த | जगतीभर्तुः | ‘லோகநாதராகிய |
| भ्रातरः | தம்பிமார்கள் | पितुः | தந்தைக்கு |
| सर्वे | எல்லோரும் | उदकं | தர்ப்பணம் |
| राघवं | ஸ்ரீராமரை | क्रियतां | செய்யப்படட்டும்’ |
| भृशं | பலவாறாய் | अब्रुवन् | சொன்னார்கள்.[என்று |

सा सीता श्वशुरं श्रुत्वा स्वर्गलोकगतं नृपम् । नेत्राभ्यामश्रुपूर्णाभ्यामशक्नेक्षितुं पतिम् ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|------------------|-------------------|
| सा | அந்த | श्रुत्वा | கேட்டு, |
| सीता | வீதாப்பிராட்டியார் | अश्रुपूर्णाभ्यां | கண்ணீர் நிறைந்த |
| श्वशुरं | மாமனாகிய | नेत्राभ्यां | கண்களால் |
| नृपं | சக்கிரவர்த்தியாரை | पतिं | கணவரை |
| स्वर्गलोकगतं | ஸ்வர்க்கமடைந்த | ईक्षितुं | பார்க்க |
| | வராய் | अशक्नु न | முடியாதிருந்தனள். |

सान्त्वयित्वा तु तां रामो रुदन्तीं जनकात्मजाम् । उवाच लक्ष्मणं तत्र दुःखितो दुःखितं वचः॥

| | | | |
|---------------|------------------|----------|------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | दुःखितः | மனவேதனையுற்றவ |
| रुदन्तीं | அழுதுகொண்டிருப் | | ராகவே |
| | பவளும் | दुःखितं | துக்கப்படும் |
| जनकात्मजां | ஜனகர் திருமகளும் | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரை(ப் |
| तां | அவளை [ஆகிய] | | பார்த்து) |
| सान्त्वयित्वा | தேற்றி, | वचः | பின்வரும் சொல்லை |
| तत्र तु | அங்ஙனமே | उवाच | சொன்னார் : |

आनयेद्बुद्धिपिण्याकं चीरमाहर चोत्तरम् । जलक्रियार्थं तातस्य गमिष्यामि महात्मनः ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|---------------------|------------------|
| महात्मनः | “ மஹாத்மாவாகிய | उत्तरं चीरं | உத்தரீயமரவுரியை |
| तातस्य | தந்தைக்கு | आहर | எடுத்துவா. |
| जलक्रियार्थं | தர்ப்பணம் செய்வதற் | इद्बुद्धिपिण्याकं च | இங்குணப்பிண்ணாக் |
| | காக | | கையும் |
| गमिष्यामि | போகிறேன். | आनय | கொண்டுவா. |

सीता पुरस्ताद्ब्रजतु त्वमेनामभितो व्रज । अहं पश्चाद्गमिष्यामि गतिर्हेषा सुदारुणा ॥२२॥

| | | | |
|-----------|--------------|---------------|-----------------|
| सीता | “வீதை | व्रज | நட. |
| पुरस्ताद् | முந்தி | अहं | நான் |
| ब्रजतु | நடக்கட்டும். | पश्चात् | கடைசியாய் |
| त्वं | நீ | गमिष्यामि | வருகிறேன் ; |
| एनां | இவளை | एषा हि | இதுதான் |
| अभितः | பின்பற்றி | सुदारुणा गतिः | அபரக்ரியாவிதி.” |

ततो नित्यानुगस्तेषां विदितात्मा महामतिः । मृदुर्दान्तश्च शान्तश्च रामे च दृढभक्तिमान् ॥
सुमन्त्रस्तैर्नृपसुतैः सार्धमाश्वस्य राघवम् । अवातारयदालम्ब्य नदीं मन्दाकिनीं शिवाम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|----------------|-----------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | दृढभक्तिमान् च | திடமான பக்தியுள் ளவருமான |
| तेषां | அவர்களுடைய | सुमन्त्रः | சுமந்திரர் |
| नित्यानुगः | குலமுறையாய் தொ ண்டுபூண்டவரும், | तैः | அந்த |
| विदितात्मा | ஆத்மஸ்வரூபத்தை அறிந்தவரும், | नृपसुतैः | சக்கிரவர்த்திகுமாரர் |
| महामतिः | மகா புத்திமானும், | सार्धं | கூட [களோடு |
| मृदुः | இணக்கமானவரும், | राघवं | ஸ்ரீராமரை |
| दान्तः च | ஐம்புலன்களையும் அடக்கியவரும், | आश्वस्य | தேற்றி, |
| शान्तः च | மனத்திருப்திகொண் டவரும், | आलम्ब्य | பிடித்துக்கொண்டு, |
| रामे | ஸ்ரீராமரிடத்தில் | शिवां | புண்ணியமாகிய |
| | | मन्दाकिनीं | மந்தாகினி |
| | | नदीं | நதியில் |
| | | अवातारयत् | இறங்கச்செய்தார். |

ते सुतीर्थी ततः कृच्छ्रादुपागम्य यशस्विनः । नदीं मन्दाकिनीं रम्यां सदा पुष्पितकाननाम् ॥
शीघ्रस्रोतसमासाद्य तीर्थं शिवमकर्दमम् । सिषिचुस्तूदकं राज्ञे तत एतद्भवत्विति ॥ २६ ॥

| | | | |
|---------------|---|--------------|---------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | कृच्छ्रात् | மனவேதனையால் மிகக் |
| यशस्विनः | புகழ்பெற்ற | उपागम्य | கிடை [கட்டப்பட்ட |
| ते | அவர்கள் | शिवं | புண்ணியமானதும், |
| सदा | எக்காலத்திலும் | अकर्दमं | சிம்லமானதுமான |
| सुतीर्थी | குளிர்ந்த தீர்த்தத்தை | तीर्थं | தீர்த்தத்தை |
| रम्यां | அழகிய [யுடையதும், | ततः | அதிலிருந்து |
| पुष्पितकाननां | நன்குபூத்த வனங்களை யுடையதும், | आसाद्य | எடுத்துவந்து |
| शीघ्रस्रोतसं | { விரைந்தோடும் ஜலப் பிரவாகத்தையுடை யதுமான | राज्ञे | சக்கிரவர்த்தியாரின் பொருட்டு |
| मन्दाकिनीं | மந்தாகினி | एतत् भवतु | இது ஆகட்டும் |
| नदीं | நதியில் | इति तु | என்று சொல்லி |
| | | उदकं सिषिचुः | தர்ப்பணம் செய்தார்கள் |

प्रगृह्य च महीपालो जलपूरितमञ्जलिम् । दिशं याम्यामभिमुखो रुदन्वचनमब्रवीत् ॥२७॥

| | | | |
|----------|----------------|--------------|------------------|
| महीपालः | லோகநாதராகுமவர் | याम्यां | தென் |
| जलपूरितं | நீர் நிரம்பிய | दिशं अभिमुखः | திசைநோக்கி |
| अञ्जलिं | அஞ்சலியை | रुदन् च | அழுதுகொண்டே |
| प्रगृह्य | உயர்த்தி | वचनं | பின்வரும் சொல்லை |
| | | अब्रवीत् | சொன்னார் : |

एतत्ते राजशार्दूल विमलं तोयमक्षयम् । पितृलोकगतस्याद्य मद्दत्तमुपतिष्ठतु ॥ २८ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-----------|---------------|
| राजशार्दूल | “அரசோத்தமரே ! | विमलं | பரிசுத்தமானது |
| पितृलोकगतस्य | பிதருலோகத்திலிருக் | | மாகிய |
| ते | தேவரீருக்கு [கும் | एतत् | இந்த |
| अद्य | இப்பொழுது | तोयं | ஜலம் |
| मद्दत्तं | என்னால் கொடுக்கப் | अक्षयं | அக்ஷயமாய் |
| | பட்டதும், | उपतिष्ठतु | பயன்பட்டும்.” |

ततो मन्दाकिनीतीरात्प्रत्युत्तीर्य स राघवः । पितृश्वकार तेजस्वी निवापं भ्रातृभिः सह ॥

| | | | |
|--------------------|-----------------|-----------|----------------|
| सः | அந்த | भ्रातृभिः | தம்பிமார்களோடு |
| तेजस्वी | தேஜஸ்வியாகும் | सह | கூடவே |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | पितुः | தந்தைக்கு |
| मन्दाकिनीतीरात् | மந்தாகினீஜலத்தி | निवापं | பிண்டப்பிரதா |
| | னின்று | | னத்தை |
| प्रत्युत्तीर्य ततः | கரையேறியபின்னர் | चकार | பின்வருமாறு |
| | | | செய்தருளினார். |

ऐङ्गुदं बदरीमिश्रं पिण्याकं दर्भसंस्तरे । न्यस्य रामः सुदुःखार्तो रुदन्वचनमब्रवीत् ॥३०॥

| | | | |
|-------------|------------------|-------------|------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | सुदुःखार्तः | மிக மனவேதனைப் |
| बदरीमिश्रं | இலந்தையுடன்கூடிய | | படுகின்றவராய் |
| ऐङ्गुदं | இங்குண | रुदन् | அழுதுகொண்டே |
| पिण्याकं | பிண்ணாக்கை | वचनं | பின்வரும் சொல்லை |
| दर्भसंस्तरे | தருப்பாஸனத்தில் | अब्रवीत् | சொன்னார் : |
| न्यस्य | வைத்து, | | |

इदं भुङ्क्ष्व महाराज प्रीतो यदशना वयम् । यदन्नं पुरुषोऽश्नाति तदन्नास्तस्य देवताः ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|-----------|------------------|
| महाराज | “சக்கிரவர்த்தியாரே ! | वयं | நாங்கள் |
| पुरुषः | ஓர் மனிதன் | यदशनाः | எதைப் புசிக்கிறோ |
| यत् अन्नं | எந்த உணவை | | மோ அந்த |
| अश्नाति | புசிக்கிறதோ, | इदं | இதை |
| तस्य | அவனது | प्रीतः | மனத்ருப்திகொண்ட |
| देवताः | தெய்வங்கள் | | வராய் |
| तदन्नाः | அதையே உணவாய்க் | भुङ्क्ष्व | புசியும்.” |
| | கொண்டவை. | | |

ततस्तेनैव मार्गेण प्रत्युत्तीर्य नदीतटात् । आरुरोह नरव्याघ्रो रम्यसानुं महीधरम् ॥३२॥

| | | | |
|----------------|--------------------------|----------------|--------------------------|
| नरव्याघ्रः | புருஷோத்தமராகும் அவர் | प्रत्युत्तीर्य | வெளிவந்து, |
| ततः | அதன்மேல் | रम्यसानुं | அழகிய தாழ்வரை யையுடைய |
| तेन मार्गेण एव | அதே வழியாய், | महीधरं | மலையில் |
| नदीतटात् | நதிக்கரைவிருந்து, | आरुरोह | ஏறினர். |

ततः पर्णकुटीद्वारमासाद्य जगतीपतिः । परिजग्राह बाहुभ्यामुभौ भरतलक्ष्मणौ ॥ ३३ ॥

| | | | |
|----------------|----------------|-------------|-----------------------------|
| जगतीपतिः | லோகநாதராகுமவர் | भरतलक्ष्मणौ | பரதர் லக்ஷ்மணராகிய |
| पर्णकुटीद्वारं | பர்ணசாலைவாயிலை | उभौ | இருவர்களையும் |
| आसाद्य ततः | அடைந்தபின்னர் | परिजग्राह | கட்டியணைத்துக் கொண்டார். |
| बाहुभ्यां | இருகைகளாலும் | | |

तेषां तु रुदतां शब्दात्प्रतिश्रुत्कोऽभवद्विरौ । भ्रातृणां सह वैदेह्या सिंहानां नर्दतामिव ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|----------------|---------------------------------|
| वैदेह्या सह | வைதேகியாரோடுகூட | गिरौ | மலையில் |
| रुदतां | அழுதுகொண்டிருக் கும் | प्रतिश्रुत्कोऽ | எதிரொலி, |
| तेषां | அந்த | नर्दतां | கர்ஜிக்கும் |
| भ्रातृणां | ஸஹோதரர்களுடைய | सिंहानां इव | சிங்கங்களதுபோன்ற |
| शब्दात् | ஒலியால், | तु | இப்பொழுது [தாய் உண்டாயிற்று. |
| | | अभवत् | |

महाबलानां रुदतां कुर्वतामुदकं पितुः । विज्ञाय तुमुलं शब्दं त्रस्ता भरतसैनिकाः ॥३५॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|---------------|----------------------------------|
| भरतसैनिकाः | பரதரின் சைனியத் திலுள்ளவர்கள் | उदकं कुर्वतां | தர்ப்பணம்செய்து |
| तुमुलं | பலத்த | रुदतां | அழுகின்ற |
| शब्दं | ஒலியை | महाबलानां | மகா பவிஷ்டர்களான அவர்களதென்று |
| पितुः | தந்தைக்கு | विज्ञाय | உணர்ந்து |
| | | तस्ताः | வருத்தினர்கள். |

अब्रुवंश्चापि रामेण भरतः सङ्गतो ध्रुवम् । तेषामेव महाञ्छब्दः शोचतां पितरं मृतम् ॥

| | | | |
|-------------|--|----------|------------------------|
| अपि च | மேலும் | शोचतां | துன்புறம் |
| अब्रुवन् | { ஒருவரோடொருவர் பின்வருமாறு பேசிக் கொண்டனர். | तेषां एव | அவர்களுடையதே. |
| महान् शब्दः | “பெரிய ஒலியானது, | भरतः | பரதர் |
| मृतं | இறந்துபோன | रामेण | ஸ்ரீராமரை |
| पितरं | தந்தையைப்பற்றி | सङ्गतः | கண்டுவிட்டாரென் பது |
| | | ध्रुवम् | திண்ணம்.” |

तेन विवासिता नागाः करेणुपरिवारिताः । आवासयन्तो गन्धेन जग्मुर्न्यद्वनं ततः ॥ ४२ ॥

| | | | |
|-----------------|----------------------|------------|----------------------------|
| तेन | அந்த | अन्यत् वनं | வேறு வனத்தை |
| गन्धेन | சம்பவத்தால் | आवासयन्तः | இருப்பிடமாக்கிக் கொண்டு |
| विवासिताः | பயமுற்ற | | |
| नागाः | யானைகள் | ततः | அவ்விடத்திலிருந்து |
| करेणुपरिवारिताः | பெண்யானைகளோடு கூட | जग्मुः | சென்றுவிட்டன. |

वराहमृगसङ्घाश्च महिषाः सर्पवानराः । व्याघ्रगोकर्णगवया विलेसुः पृषतैः सह ॥ ४३ ॥

| | | | |
|---------------|--|-------------------------|---|
| वराहमृगसङ्घाः | பன்றிக்கூட்டங்களும், மான் கூட்டங்களும், | व्याघ्रगोकर्ण- गवयाः | புலிகளும், கோவேறு கழுதைகளும், 'கவய' மென்ற எருதுகளும், புள்ளிமான்களோடு கூட |
| महिषाः च | எருமைகளும், | पृषतैः | புள்ளிமான்களோடு |
| सर्पवानराः | ஸர்ப்பங்களும், குரங்குகளும், | सह | கூட |
| | | विलेसुः | பயந்தோடின. |

रथाङ्गसाह्या न्यूहा हंसाः कारण्डवाः पुवाः । तथा पुंस्कोकिलाः क्रौञ्चा विसंज्ञा भेजिरे दिशः ॥

| | | | |
|---------------|------------------|-----------|------------------------|
| रथाङ्गसाह्याः | சக்ரவாகங்களும், | क्रौञ्चाः | க்ரௌஞ்சப்பகுக ளும், |
| न्यूहाः | நீர்க்கோழிகளும், | विसंज्ञाः | அச்சமுற்றவைகளாய் |
| हंसाः | அன்னங்களும், | दिशः | எல்லாத்திசைகளிலும் |
| कारण्डवाः | நீர்க்காகைகளும், | भेजिरे | பறந்தோடின. |
| पुवाः तथा | கொக்குகளும், | | |
| पुंस्कोकिलाः | ஆண்குயில்களும், | | |

तेन शब्देन विवस्त्रैराकाशं पक्षिभिर्वृतम् । मनुष्यैरावृता भूमिरुभयं प्रवभौ तदा ॥ ४५ ॥

| | | | |
|------------|---------------|----------|--|
| तेन | அந்த | मनुष्यैः | மனிதர்களால் |
| शब्देन | ஒலியால் | आवृता | நிரம்பிற்று. |
| विवस्त्रैः | பறந்தோடிய | तदा | இப்படி இருந்தமை |
| पक्षिभिः | பகுகளால் | उभयं | இரண்டும் [யால் |
| आकाशं | ஆகாசமானது | प्रवभौ | ஒன்றுக்கொன்று சுடு பெற்றதாய் விளங் கிற்று. |
| वृतं | நிரம்பிற்று. | | |
| भूमिः | பூமிரதேசமானது | | |

ततस्तं पुरुषव्याघ्रं यशस्विनमकल्मषम् । आसीनं स्थण्डिले रामं ददर्श सहसा जनः ॥

| | | | |
|---------------|------------------|-----------|--------------------|
| ततः | அப்பொழுது | तं | அந்த |
| जनः | ஜனங்கள் | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| पुरुषव्याघ्रं | புருஷோத்தமரும், | स्थण्डिले | தரையில் |
| यशस्विनं | புகழ்பெற்றவரும், | आसीनं | விற்றிருக்கிறவராய் |
| अकल्मषं | தோஷரஹிதருமாகிய | सहसा | மனவேதனையுடன் |
| | | ददर्श | கண்டார்கள். |

विगर्हमाणः कैकेयीं सहितो मन्थरामपि । अभिगम्य जनो रामं बाष्पपूर्णमुखोऽभवत् ॥

| | | | |
|------------|---------------------|----------------|------------------|
| सहितः | கூடிவந்த | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| जनः | ஜனங்கள், | अभिगम्य | கிட்டி |
| कैकेयीं | கைகேயிதேவியாரை | बाष्पपूर्णमुखः | கண்ணீர் நிரம்பிய |
| मन्थरा अपि | மந்தரையையும் [யும்] | | முகமுடையவர்களாக |
| विगर्हमाणः | பழித்துக்கொண்டு | अभवत् | ஆயினர். |

तान्नरान्बाष्पपूर्णाक्षान्समीक्ष्याथ सुदुःखितान् । पर्यष्वजत धर्मज्ञः पितृवन्मातृवच्च सः ॥

| | | | |
|-------------------|---------------------------------|----------------|-----------------------------------|
| अथ | அப்பொழுது | तान् | அந்த |
| धर्मज्ञः | தர்மஜ்ஞராகும் | नरान् समीक्ष्य | ஜனங்களைப் பார்த்து |
| सः | அவர் | पितृवत् | தந்தைபோலவும், |
| सुदुःखितान् | மிக்கமனவேதனைப் பட்டுக்கொண்டு | मातृवत् च | தாய்போலவும் |
| बाष्पपूर्णाक्षान् | கண்ணீர் நிறைந்த கண்களுடைய | पर्यष्वजत | தட்டிக்கொடுத்து மகிழ்வித்தனர். |

स तत्र कांश्चित्परिष्वजे नरान्नराश्च केचित्तु तमभ्यवादयन् ।

चकार सर्वान्सवयस्यबान्धवान्यथार्हमासाद्य तदा नृपात्मजः ॥ ४९ ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------------------|-----------------|--|
| सः | அந்த | अभ्यवादयन् | நமஸ்காரம் செய்தார் கள். |
| नृपात्मजः | சக்கிரவர்த்தியின் திருக்குமாரர், | सवयस्यबान्धवान् | சினேகிதர்களோடும் பந்துக்களோடும் கூடிய |
| तत्र | அவ்விடத்தில் | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| तदा | அப்பொழுது, | आसाद्य | கிட்டி |
| कांश्चित् नरान् | சில மனிதர்களை | यथाहं | அவரவர்க்குத் தக்க மரியாதையை |
| परिष्वजे | ஆலிங்கனம் செய்த | चकार | செய்தனர். |
| केचित् नराः च | சில மனிதர்கள் [னர். | | |
| तं तु | இவருக்கு | | |

ततः स तेषां रुदतां महात्मनां भुवं च खं चानुनिनादयन्स्वनः ।

गुहा गिरीणां च दिशश्च सन्ततं मृदङ्गघोषप्रतिमो विशुश्रुवे ॥ ५० ॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------------|-------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | अनुनिनादयन् | எதிரொலியுண்டாக கிக்கொண்டு |
| रुदतां | அழுதுகொண்டிருந்த | गिरीणां | மலைகளுடைய |
| तेषां | அந்த | गुहाः च | குகைகளிலும், |
| महात्मनां | மகாத்மாக்களுடைய | दिशः च | திக்குகளிலும் |
| सः | அந்த | सन्ततं | இடைவிடாது |
| स्वनः | சத்தமானது | मृदङ्गघोषप्रतिमः | மிருதங்கமுழக்கம் போன்றதாய் |
| भुवं च | பூமியிலும், | विशुश्रुवे | கேட்கப்பட்டது. |
| खं च | ஆகாயத்திலும், | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे द्र्युत्तरशततमः सर्गः ॥

अुत्तरशततमः सर्गः—நூற்றுமூன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ १०३ ॥

मातृदर्शनम्—தாய்மார்களை தரிசிப்பது.

वसिष्ठः पुरतः कृत्वा दारान्दशरथस्य च । अभिचक्राम तं देशं रामदर्शनहर्षितः ॥ १ ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------|--------------|--------------------|
| रामदर्शनहर्षितः | ஸ்ரீராமரைக் காண | दारान् च | மனைவிமார்களை |
| | அவாவற்ற | पुरतः कृत्वा | முன்னிட்டுக்கொண்டு |
| | | तं | அந்த |
| वसिष्ठः | வவலிஷ்டபகவான், | देशं | இடத்தை |
| दशरथस्य | தசரதரது | अभिचक्राम | நாடி நடந்தார். |

राजपत्न्यस्तु गच्छन्त्यो मन्दं मन्दाकिनीं प्रति । ददृशुस्तत्र तत्तीर्थं रामलक्ष्मणसेवितम् ॥

| | | | |
|------------------|------------------|------------------|-------------------|
| मन्दाकिनीं प्रति | மந்தாகினியை நாடி | रामलक्ष्मणसेवितं | ராமலக்ஷ்மணர்களால் |
| मन्दं | மெள்ள | | வைக்கப்பட்டிருந்த |
| गच्छन्त्यः | நடக்கும் | तत् | அந்த |
| राजपत्न्यः तु | ராஜஸ்திரீகள், | तीर्थं | பித்ருபிண்டத்தை |
| तत्र | அவ்விடத்தில் | ददृशुः | பார்த்தார்கள். |

कौसल्या बाष्पपूर्णेन मुखेन परिशुष्यता । सुमित्रामब्रवीदीनां याश्चान्या राजयोषितः ॥३॥

| | | | |
|------------------|-------------------|-----------|--------------------------|
| कौसल्या | கோசலாதேவியார் | अन्याः | மற்றுமுள்ள |
| बाष्पपूर्णेन | கண்ணீர் நிறைந்த | राजयोषितः | ராஜஸ்திரீகள் |
| परिशुष्यता मुखेन | வாடிய முகத்தோடு | याः च | எவர்களோ அவர்களை |
| दीनां | துயருற்றிருக்கும் | | யும் (பார்த்து) |
| सुमित्रां | சுமித்ரா தேவியாரை | अब्रवीत् | பின்வருமாறு மொழிந்தாள் : |

इदं तेषामनाथानां क्लिष्टमक्लिष्टकर्मणाम् । वने प्राक्केवलं तीर्थं ये ते निर्विषयीकृताः ॥ ४ ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|----------|---------------------|
| ये ते | “எந்த அவர்கள் | तेषां | அவர்களுக்கு |
| प्राक् | ஏற்கனவே | वने | காட்டில் |
| निर्विषयीकृताः | நாடுகடத்தப்பட்டன | तीर्थं | ஸ்தானம் செய்யும் |
| | ரோ, | इदं | இது [துறை. |
| अक्लिष्टकर्मणां | எதையும் எளிதில் | | { ஏற இறக்கவேண்டிய |
| | முடிக்கவல்லவர்களும் | क्लिष्टं | செனகரியம்செய்யப் |
| अनाथानां | நாதனற்றவர்களு | | பெற்றுவிளங்குகிறது. |
| | மான | केवलम् | இதனினும். |

इतः सुमित्रे पुत्रस्ते सदा जलमतन्द्रितः । स्वयं हरति सौमित्रिर्मम पुत्रस्य कारणात् ॥५॥

| | | | |
|-----------|--------------------|------------------|-----------------|
| सुमित्रे | “ஸுமித்திரையே ! | पुत्रस्य कारणात् | புதல்வனுக்காக |
| ते | உனது | सदा | எக்காலத்திலும் |
| पुत्रः | புதல்வனாகிய | अतन्द्रितः | பத்திமைகொண்டு |
| सौमित्रिः | ஸௌத்ரிமணன் | जलं | ஜலத்தை |
| इतः | இவ்விடத்திலிருந்து | स्वयं | தானே |
| मम | எனது | हरति | கொண்டுபோகிறான். |

जघन्यमपि ते पुत्रः कृतवान्न तु गर्हितः । भ्रातुर्यदर्थसहितं सर्वं तद्विहितं गुणैः ॥ ६ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|------------|--------------------|
| ते | “உனது | அর্থசहितம் | ப்ராயோஜனத்தை |
| पुत्रः | புதல்வன் | | அளிக்கும் |
| जघन्यं | இழிவான காரியத்தை | तत् | அது |
| कृतवान् अपि | செய்தபோதிலும், | सर्वं तु | எல்லாமும் |
| गर्हितः न | பழிக்கப்படமாட் | गुणैः | நற்பயன்களோடு |
| यत् | எனென்றால் [டான். | विहितम् | விதிக்கப்பட்டிருக் |
| भ्रातुः | ஜ்யேஷ்டப்ராதாவுக்கு | | கிறது. |

अद्यायमपि ते पुत्रः क्लेशानामतथोचितः । नीचानर्थसमाचारं सज्जं कर्म प्रमुञ्चतु ॥ ७ ॥

| | | |
|-----------|-------------------|---------------------------------|
| ते | “உனது, | नीचानर्थ- } இழிவும் துர்பாக்கிய |
| क्लेशानां | காயக்லேசங்களுக்கு | समाचारं } முமான அனுஷ்டா |
| अतथोचितः | அனுபவப்பட்டிராத, | नमुடன் |
| पुत्रः | புதல்வனாகும் | सज्जं செய்துவரும் |
| अयं | இவன் | कर्म தொழிலை |
| | | अद्य अपि இப்பொழுதாவது |
| | | प्रमुञ्चतु விடுவானா? ” |

दक्षिणाग्रेषु दर्भेषु सा ददर्श महीतले । पितुरिङ्गुदिपिण्याकं न्यस्तमायतलोचना ॥ ८ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|-----------------|--------------------|
| आयतलोचना | அகன்ற கண்களையு | दर्भेषु | தர்ப்பைகளில் |
| सा | அவள், [டைய | न्यस्तं | வைக்கப்பட்டிருந்த |
| महीतले | தரையில் | इङ्गुदिपिण्याकं | இங்குணப்பிண்ணாக்கை |
| पितुः | தந்தைக்கு | | |
| दक्षिणाग्रेषु | தெற்குப்பார்த்த | ददर्श | கவனித்தனள். |
| | துணியையுடைய | | |

तं भूमौ पितुरातेन न्यस्तं रामेण वीक्ष्य सा । उवाच देवी कौसल्या सर्वा दशरथस्त्रियः ॥

| | | | |
|---------|--------------------|--------------|------------------|
| आतेन | துக்கசமாசாரம் தெ | कौसल्या | கோசலா |
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் [ரிந்த | देवी | தேவியார் |
| भूमौ | தரையில் | वीक्ष्य | பார்த்து |
| पितुः | தந்தைக்கு | दशरथस्त्रियः | தசரதமனைவிமார்கள் |
| न्यस्तं | வைக்கப்பட்டிருந்த | सर्वाः | எல்லோரிடமும் |
| तं | அதை | उवाच | (பின்வருமாறு) |
| सा | அந்த | | சொன்னாள் : |

इदमिक्ष्वाकुनाथस्य राघवस्य महात्मनः । राघवेण पितुर्दत्तं पश्यतैतद्यथाविधि ॥ १० ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|---------|-----------------|
| राघवेण | “ஸ்ரீராமனால் | यथाविधि | முறைப்படி |
| महात्मनः | மஹாத்மாவும் | दत्तं | கொடுக்கப்பட்டது |
| इक्ष्वाकुनाथस्य | இக்ஷ்வாகுவம்சநாத | इदं | இது. |
| | ரும் | एतत् | இதை |
| पितुः | திருத்தந்தையுமாகிய | पश्यत | பாருங்கள். |
| राघवस्य | தசரதசக்கிரவர்த்தி | | |
| | யாருக்கு | | |

तस्य देवसमानस्य पार्थिवस्य महात्मनः । नैतदौपयिकं मन्ये भुक्तभोगस्य भोजनम्॥११॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------|------------|----------------------------|
| देवसमानस्य | “தேவருக்கொப் பானவரும் | पार्थिवस्य | சக்கிரவர்த்தியாருக்கு |
| भुक्तभोगस्य | போகங்களை அனு பவித்தவரும் | एतत् | இது |
| महात्मनः | மஹாத்மாவுமாகிய | औपयिकं | தகுந்த |
| तस्य | அந்த | भोजनं न | உணவில்லை என |
| | | मन्ये | நான் சிந்தையுறு கிறேன். |

चतुरन्तां महीं भुक्त्वा महेन्द्रसदृशो भुवि । कथमिद्भुदिपिण्याकं स भुङ्क्ते वसुधाधिपः ॥

| | | | |
|---------------|--|-----------------|------------------------|
| भुवि | “உலகில் | महीं | பூமியை |
| महेन्द्रसदृशः | இந்திரனுக்கொப்பான | भुक्त्वा | ஆண்டுவிட்டு, |
| वसुधाधिपः | சக்கிரவர்த்தியாராகிற | इद्भुदिपिण्याकं | இங்குணப்பிண் ணைக்கை |
| सः | அவர், | | |
| चतुरन्तां | { நான்கு சமுத்திரங்க ளையும் எல்லையாகவு டைய | कथं | எப்படி |
| | | भुङ्क्ते | புசிப்பார்? |

अतो दुःखतरं लोके न किञ्चित्प्रतिभाति मे । यत्र रामः पितुर्दद्यादिद्भुदीक्षोदमृद्धिमान् ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------|-------------|------------------|
| ऋद्धिमान् | “அமா னுஷ்சக்தி படைக்கப்பெற்ற | यत् दद्यात् | கொடுக்கின்றான் |
| रामः | ஸ்ரீராமன் | लोके | உலகில், [என்றால் |
| पितुः | தந்தையாருக்கு | अतः | இதையிட |
| इद्भुदीक्षोदं | இங்குணப்பிண் ணைக்கை | दुःखतरं | துக்கரமானது |
| | | किञ्चित् न | வேறென்றும் இல்லை |
| | | मे | எனக்கு [என |
| | | प्रतिभाति | தோன்றுகிறது. |

रामेणैद्भुदिपिण्याकं पितुर्दत्तं समीक्ष्य मे । कथं दुःखेन हृदयं न स्फोटति सहस्रधा॥१४॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------|-----------|-------------------|
| रामेण | “ஸ்ரீராமனால் | मे | எனது |
| पितुः | தந்தையாருக்கு | हृदयं | மார்பானது |
| इद्भुदिपिण्याकं | இங்குணப்பிண் ணைக்கை | दुःखेन | துயரத்தால் |
| दत्तं | இடப்பெட்டிருப்ப தாய் | सहस्रधा | ஆயிரம் துண்டுகளாக |
| समीक्ष्य | கண்முன் பார்த்த | कथं | ஏனோ |
| | | स्फोटति न | பிளவாதிருக்கிறது? |

श्रुतिस्तु खल्वियं सत्या लौकिकी प्रतिभाति मे । यदन्नं पुरुषोऽश्नाति तदन्नास्तस्य देवताः ॥

| | | | |
|---------|--------------------------------|----------------|---------------------------------------|
| पुरुषः | “ஓர் மனிதன் | इयं | இந்த |
| यत् | எந்த | लौकिकी श्रुतिः | லோகோத்தியானது |
| अन्नं | உணவை | तु | இப்பொழுது |
| अश्नाति | புசிக்கிறதோ | खलु | நிச்சயமாய் |
| तस्य | அவனது | सत्या | ப்ரத்தியக்ஷத்தில் விளங்குகிறதென்று |
| देवताः | தேவதைகள் | मे | எனக்கு |
| तदन्नाः | அதேயுணவைக்கொ ண்டவர்கள் என்ற | प्रतिभाति | தோன்றுகிறது.” |

एवमार्तां सपन्नयस्ता जग्मुराश्वास्य तां तदा । ददृशुश्चाश्रमे रामं स्वर्गच्युतमिवामरम् ॥

ताः अन्त
सपन्नयः சக்களத்திமார்கள்
एवं மேற்கண்டவாறு
आर्ता புலம்பும்
तां அவளை
आश्वास्य தேற்றிக்கொண்டே
जग्मुः நடந்தார்கள்.

तदा அப்பொழுது
स्वर्गच्युतं ஸ்வர்க்கத்தினின்று
இறங்கிய
अमरं इव தேவரைப்போலிருக்
रामं च ஸ்ரீராமரை [கும்
आश्रमे ஆசிரமத்தில்
ददृशुः கண்டார்கள்.

तं भोगैः संपरित्यक्तं रामं संप्रेक्ष्य मातरः । आर्ता मुमुचुरश्रूणि सस्वरं शोककशिताः ॥

मातरः தாய்மார்கள்
भोगैः போகங்களை
संपरित्यक्तं துறந்துவிட்ட
तं அந்த
रामं ஸ்ரீராமரை

सम्प्रेक्ष्य பார்த்து
शोककशिताः சோகம்மேலிட்டு
आर्ताः வருத்தமுற்று
सस्वरं கூக்குரலிட்டு
अश्रूणि मुमुचुः அழுதார்கள்.

तासां रामः समुत्थाय जग्राह चरणाञ्छुभान् । मातृणां मनुजव्याघ्रः सर्वासां सत्यसङ्गरः ॥

सत्यसङ्गरः உள்ளும் புறமும் ஒரே
மாதிரியாயுள்ள
मनुजव्याघ्रः புருஷோத்தமராகும்
रामः ஸ்ரீராமர்
समुत्थाय எழுந்திருந்து

तासां அந்த
मातृणां தாய்மார்கள்
सर्वासां எல்லோருடைய
शुभान् புண்ணியமான
चरणान् திருவடிகளில்
जग्राह விழுந்து சேவித்தனர்.

ताः पाणिभिः सुखस्पर्शैर्मृद्वङ्गुलितलैः शुभैः । प्रममार्जु रजःपृष्ठाद्रामस्यायतलोचनाः ॥१९॥

आयतलोचनाः அகன்ற கண்களை
ताः அவர்கள் [யுடைய
मृद्वङ्गुलितलैः { மிருதுவான விரல்க
ளையும் உள்ளங்கைக
ளையுமுடையவைக
ளும்,
सुखस्पर्शैः இனிய ஸ்பர்சத்தை
யளிப்பவைகளும்,

शुभैः அழகாயிருக்கின்ற
पाणिभिः திருக்கரங்களால்
रामस्य ஸ்ரீராமரது
रजः पृष्ठात् முதுகில் தசைப்பற்று
ள்ளதடத்தில்
प्रममार्जुः தட்டிக்கொடுத்தார்
கள்.

सौमित्रिरपि ताः सर्वा मातृः संप्रेक्ष्य दुःखितः । अभ्यवादयतासक्तं शनैः रामादनन्तरम् ॥

सौमित्रिः अपि லக்ஷ்மணரும்,
ताः அந்த
मातृः தாய்மார்கள்
सर्वाः எல்லோரையும்
सम्प्रेक्ष्य கண்டு
दुःखितः துயரமுற்றவராய்;

रामात् ராமருக்கு
अनन्तरं அப்பால்
शनैः வரிசைப்பிரகாரமாய்
आसक्तं பத்திமையுடன்
अभ्यवादयत நமஸ்காரம்பண்ணி
னார்.

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------|------------------|
| வீரேहि | “ சீதே ! | பரிக்ஷித் | கசக்கப்பட்ட |
| தே | உனது | உத்பலம் | நீலோற்பலத்தையும் |
| முகம் | திருமுகமண்டலத்தை | இவ | போன்றதாயும், |
| ஆதபஸந்தம் | வெய்யிலில் கருகிய | ரஜசா | அழுக்கால் |
| பவம் | தாமரைப்பூவையும், | ஃவஸ்த் | படியப்பெற்ற |

काञ्चनं பொன்னையும்
 अम्बुदैः மேகங்களால்
 क्लिष्टं மறைக்கப்பட்ட
 चन्द्रं சந்திரனையும்
 इव போன்றதாயும்,
 प्रेक्ष्य பார்த்த
 मां என்னை
 अग्निः நெருப்பு
 आश्रयं இருப்பிடத்தை

इव எவ்வண்ணமோ அவ்
 வண்ணமே
 व्यसनारणि- விசனமாகிற ஆரணிக்
 सम्भवः கட்டையினின்று
 தோன்றுகிற
 शोकः சோகாக்கினியானது
 मनसि உள்ளத்தில்
 भृशं மிகவும்
 दहति எரிக்கிறது.”

ब्रुवन्त्यामेवमार्तायां जनन्यां भरताग्रजः । पादावासाद्य जग्राह वसिष्ठस्य च राघवः ॥२७॥

जनन्यां மாதா
 एवं மேற்கண்டவாறு
 आर्तायां மனவேதனையுற்று
 ब्रुवन्त्यां च பேசிக்கொண்டிருக்
 கையிலேயே
 भरताग्रजः பரதர் தமையனாராகும்

राघवः ஸ்ரீராமர்
 वसिष्ठस्य வலிஷ்டபகவானு
 டைய
 पादौ திருவடிகளை
 आसाद्य தொட்டு
 जग्राह விழுந்து சேவித்த
 னர்.

पुरोहितस्याग्निसमस्य वै तदा बृहस्पतेरिन्द्र इवामराधिपः ।

प्रगृह्य पादौ सुसमृद्धतेजसः सहैव तेनोपविवेश राघवः

॥ २८ ॥

अमराधिपः தேவர்வேந்தனாகும்
 इन्द्रः இந்திரன்
 बृहस्पतेः ப்ரஹஸ்பதிக்கு
 इव எவ்வண்ணமோ அவ்
 வண்ணமே
 राघवः ஸ்ரீராமர்
 अग्निसमस्य அக்னிக்கொப்பான

सुसमृद्धतेजसः மகாதேஜோமயராகிய
 पुरोहितस्य புரோகிதருடைய
 पादौ திருவடிகளில்
 प्रगृह्य வணங்கிவிட்டு
 तेन सह एव அவரோடுகூடவே
 तदा அப்பொழுது
 उपविवेश वै வீற்றிருந்தார்.

ततो जघन्यं सहितैः समन्त्रिभिः पुरप्रधानैश्च सहैव सैनिकैः ।

जनेन धर्मज्ञतमेन धर्मवानुपोपविष्टो भरतस्तदाग्रजम्

॥ २९ ॥

ततः அதன்பிறகு
 सहितैः அங்கு வந்திருந்த
 समन्त्रिभिः மந்திரிமார்களோடு
 கூடிய
 पुरप्रधानैः च நகரத்துப்பிரதானர்க
 ளோடும்,
 सैनिकैः ஸையன்யத்தைச்சேர்ந்
 தவர்களோடும்,
 धर्मज्ञतमेन தர்மமறிந்தவர்களி
 லுத்தம

जनेन ஜனங்களோடும்
 सह एव கூடவே
 धर्मवान् தர்மவீடராகிய
 भरतः பரதர்
 तदा அப்பொழுது
 अग्रजं தமையனருக்கு
 जघन्यं பின்பாக
 उपोपविष्टः அருகிலுட்கார்ந்தனர்.

उपोपविष्टस्तु तदा स वीर्यवांस्तपस्विषेण समीक्ष्य राघवम् ।

श्रिया ज्वलन्तं भरतः कृताञ्जलिर्यथा महेन्द्रः प्रयतः प्रजापतिम् ॥ ३० ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|------------|------------------|
| सः | அந்த | समीक्ष्य | பார்த்துக்கொண்டு |
| वीर्यवान् | பராக்கிரமசாலியும், | प्रजापतिं | பிரம்மதேவரிடம் |
| प्रयतः तु | பக்திமானுமாகிய | महेन्द्रः | இந்திரன் |
| भरतः | பரதர் | यथा | எவ்வண்ணமோ |
| तदा | அப்பொழுது | | அவ்வண்ணமே |
| तपस्विषेण | தவவேஷத்துடன் | कृताञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராய் |
| श्रिया | காந்தியால் | उपोपविष्टः | (சமயம்பார்த்து) |
| ज्वलन्तं | ஜ்வலிக்கும் | | காத்திருந்தனர். |
| राघवं | ஸ்ரீராமரை | | |

किमेष वाक्यं भरतोऽद्य राघवं प्रणम्य सत्कृत्य च साधु वक्ष्यति ।

इतीव तस्यार्यजनस्य तत्त्वतो बभूव कौतूहलमुत्तमं तदा ॥ ३१ ॥

| | | | |
|------------|------------------|-----------|------------------|
| तदा | அச்சமயத்தில் | साधु | எற்ற |
| तस्य | அந்த | किं | எந்த |
| आर्यजनस्य | மகாத்மாக்களுக்கு | वाक्यं इव | சொல்லைத்தான் |
| एषः | ‘இந்த | वक्ष्यति | சொல்லப்போகிறார்’ |
| भरतः | பரதர் | इति | என்றதாய் |
| राघवं | ஸ்ரீராமரை | तत्त्वतो | உண்மையில் |
| प्रणम्य | நமஸ்கரித்து | उत्तमं | அதிக |
| सत्कृत्य च | பூஜித்து | कौतूहलं | அவா |
| अद्य | இப்பொழுது | बभूव | உண்டாயிற்று. |

स राघवः सत्यधृतिश्च लक्ष्मणो महानुभावो भरतश्च धार्मिकः ।

वृताः सुहृद्भिस्तु विरेजुरध्वरे यथा सदस्यैः सहितास्त्रयोऽग्नयः ॥ ३२ ॥

| | | | |
|------------|--|------------|---|
| सः | அந்த | वृताः | சூழப்பட்டவர்களாய், |
| राघवः | ஸ்ரீராமரும், | अध्वरे | யாகத்தில் |
| सत्यधृतिः | { புணயக்ருத்யத்தில் அசஞ்சலாப்பற்று டையவராகிய | सदस्यैः | சபையோர்களால் |
| लक्ष्मणः च | லக்ஷ்மணரும், | सहिताः | விளங்கும் |
| महानुभावः | மகானுபாவரும், | तयः तु | { (1. காஹபத்ய, 2. ஆ ஹவனீய, 3. தகதி ணமென்ற) மூன்று |
| धार्मिकः | தார்மிகருமான | अग्नयः यथा | அக்கனிகளபோல், |
| भरतः च | பரதரும், | विरेजुः | விளங்கினார்கள். |
| सुहृद्भिः | நண்பர்களால் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे अनुत्तरशततमः सर्गः ॥



चतुस्तरशततमः सर्गः—நூற்றாநான்காவது ஸர்க்கம். ॥ १०४ ॥

श्रीरामभरतसंवादः—ஸ்ரீராமபரத ஸம்வாதம்.

तं तु रामः समाश्वस्य भ्रातरं गुरुवत्सलम् । लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा प्रष्टुं समुपचक्रमे ॥१॥

| | | | |
|------------|------------------------------------|---------------------|-----------------------------|
| भ्रात्रा | தம்பியாகிய | तं | அந்த |
| लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணரோடு | भ्रातरं | தம்பியை (பரதரை), |
| सह | கூடவிருந்த | तु | இப்பொழுது |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | समाश्वस्य | உற்சாகப்படுத்தி |
| गुरुवत्सलं | பெரியோர்களிடத்தில் பத்திமைபூண்ட | प्रष्टुं समुपचक्रमे | பின்வருமாறு வினாவினார் : |

किमेतदिच्छेयमहं श्रोतुं प्रव्याहृतं त्वया । यस्मात्त्वमागतो देशमिमं चीरजटाजिनी ॥ २ ॥

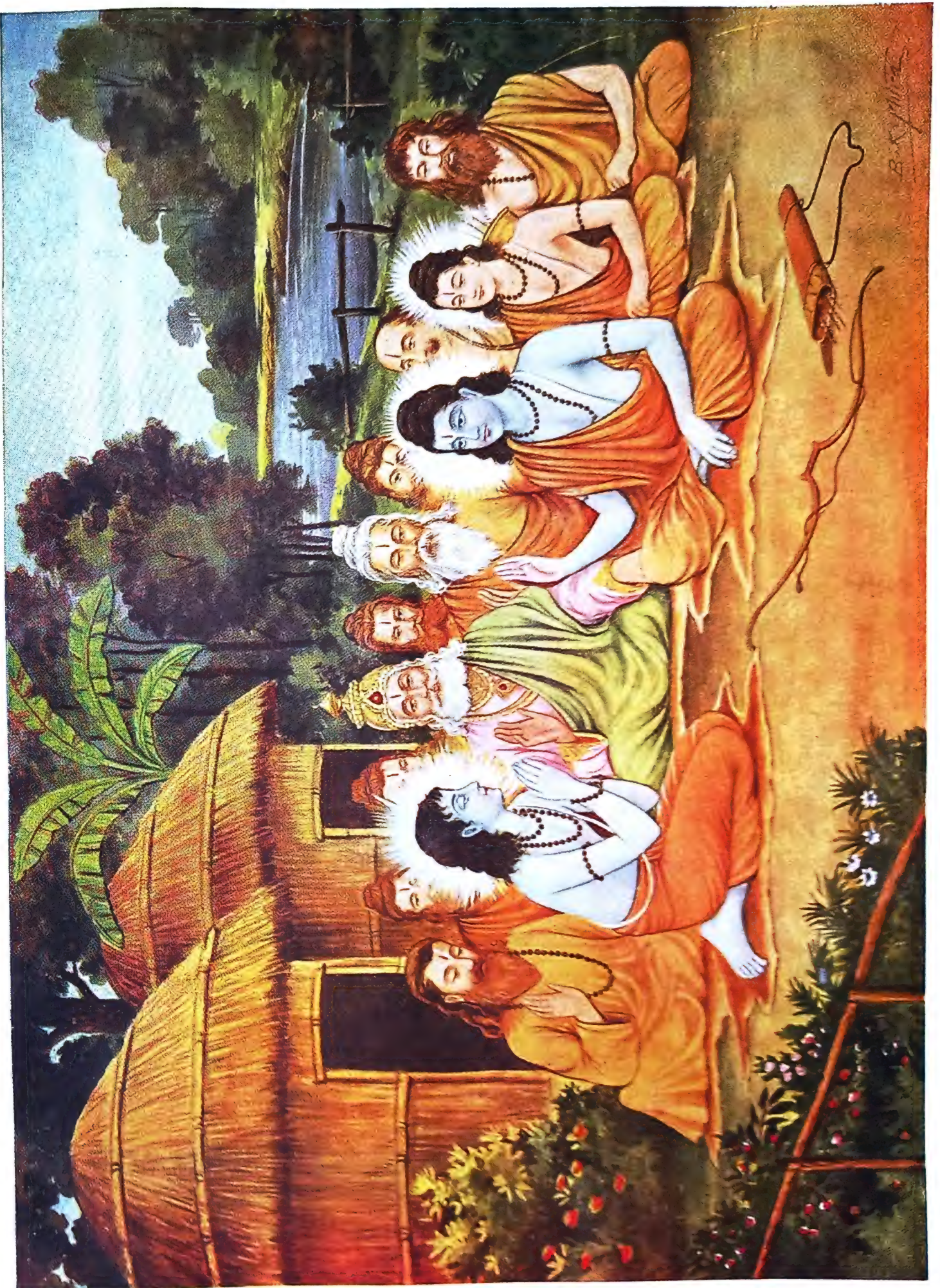
| | | | |
|------------|--|-------------|-----------------|
| त्वं | “ நீ | एतत् | இது |
| यस्मात् | எதற்காக | किं | என்னவென |
| चीरजटाजिनी | { மரவுரி, ஜடை, மான் தோல் இவைகளை தரித்தவனாய், | त्वया | உன்னால் |
| इमं | இந்த | प्रव्याहृतं | சொல்லப்பட்டு |
| देशं | இடத்திற்கு | अहं | நான் |
| आगतः | வந்தனையோ, | श्रोतुं | கேட்டுணர |
| | | इच्छेयम् | விரும்புகிறேன். |

यन्निमित्तमिमं देशं कृष्णाजिनजटाधरः । हित्वा राज्यं प्रविष्टस्त्वं तत्सर्वं वक्तुमर्हसि ॥ ३ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|---------------|--------------------|
| त्वं | “ நீ | देशं | தேசத்திற்கு |
| कृष्णाजिन-} | மான்தோல், ஜடை, | यन्निमित्तं | எதற்காக |
| जटाधरः } | இவைகளை தரித்தவ | प्रविष्टः | வந்தனையோ, |
| राज्यं | ராஜ்யத்தை [னாய், | तत् | அது |
| हित्वा | விட்டுவிட்டு, | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| इमं | இந்த | वक्तुं अर्हसि | நீ சொல்லவேண்டும்.” |

इत्युक्तः कैकयीपुत्रः काकुत्स्थेन महात्मना । प्रगृह्य बलवद्भूयः प्राञ्जलिर्वाक्यमब्रवीत् ॥४॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------|------------|-------------------|
| इति | மேற்கண்டவாறு | प्राञ्जलिः | அஞ்ஜலிஹஸ்தராகி |
| महात्मना | மகாத்மாவான | भूयः | மீளவும் |
| काकुत्स्थेन | ஸ்ரீராமரால் | बलवत् | விசேஷமாய் |
| उक्तः | வினாவப்பட்ட | प्रगृह्य | விழுந்துசேவித்து, |
| कैकयीपुत्रः | கைகேயியின் புதல்வர் (பரதர்) | वाक्यं | பின்வரும் சொல்லை |
| | | अब्रवीत् | சொன்னார் : |



आर्यं तातः परित्यज्य कृत्वा कर्म सुदुष्करम् । गतः स्वर्गं महाबाहुः पुत्रशोकाभिपीडितः ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-------------------|--------------------|
| “महाबाहुः | “மஹாபாகுவாகும் | आर्यं | பெரியவராகிய தேவ |
| तातः | திருத்தந்தையார், | परित्यज्य | கைவிட்டு, [ரீரை |
| सुदुष्करं | மிகவும் செய்யத்தகாத | पुत्रशोकाभिपीडितः | புத்ரசோகத்தால் |
| कर्म | காரியத்தை | | அறிவிழந்தவராய் |
| कृत्वा | செய்துவிட்டு | स्वर्गं गतः | ஸ்வர்க்கமடைந்தார். |

स्त्रिया नियुक्तः कैकेय्या मम मात्रा परन्तप । चकार सुमहत्पापमिदमात्मयशोहरम् ॥ ६ ॥

| | | | |
|----------|-----------------------------------|------------|---|
| परन्तप | “சத்ருக்களை தபிக்கச் செய்பவரே! | आत्मयशोहरं | தனது புகழை முற்றி லும் அழிக்கிறதாகிற |
| मम | அடியேனது | सुमहत् | மிகப்பெரிய |
| मात्रा | தாயாகிய | इदं | இந்த |
| कैकेय्या | கைகேயியென்ற | पापं | பாபத்தை |
| स्त्रिया | பெண்ணால் | चकार | செய்துவிட்டார். |
| नियुक्तः | கட்டுப்படுத்தப்பட்ட வராய் அவர் | | |

सा राज्यफलमप्राप्य विधवा शोककशिता । पतिष्यति महाघोरे निरये जननी मम ॥ ७ ॥

| | | | |
|----------|------------------|----------|----------------------------|
| सा | “அந்த | विधवा | கைம்பெண்ணாய் |
| मम | எனது | शोककशिता | சோகத்தால் தபிக்கி றாள். |
| जननी | தாய் | महाघोरे | மகாஹோரமான |
| राज्यफलं | ராஜ்யத்தின் பயனை | निरये | நரகத்தில் |
| अप्राप्य | அடையாமல் | पतिष्यति | விழுப்போகிறாள். |

तस्य मे दासभूतस्य प्रसादं कर्तुमर्हसि । अभिषिञ्चस्व चाद्यैव राज्येन मघवानिव ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------------|-------------|-----------------------------------|
| दासभूतस्य | “தொண்டனாகிய | अद्य एव | இப்பொழுதே |
| तस्य | அந்த | मघवान् इव | இந்திரன்போன்ற தேவரீர் |
| मे | அடியேன்மீது | राज्येन च | ராஜ்யத்தில் |
| प्रसादं | அனுக்ரஹத்தை | अभिषिञ्चस्व | திருவபிஷேகம் செய் துகொள்வீராக. |
| कर्तुं | செய்ய | | |
| अर्हसि | தேவரீர் திருவுளம் பற்றவேண்டும். | | |

इमाः प्रकृतयः सर्वा विधवा मातरश्च याः । त्वत्सकाशमनुप्राप्ताः प्रसादं कर्तुमर्हसि ॥ ९ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------|----------------|----------------------------------|
| इमाः | “இந்த | मातरः | தாய்மார்களாகிய |
| प्रकृतयः सर्वाः | ஜனங்களெல்லோ ருக்கும், | विधवाः | நாதனை இழந்தவர்கள் |
| • त्वत्सकाशं | தேவரீர் சந்நிதிக்கு | याः च | எவர்களோ அவர்க |
| अनुप्राप्ताः | வந்திருக்கும் | प्रसादं कर्तुं | அருள்புரிய [ருக்கும், உரியர். |
| | | अर्हसि | |

तदानुपूर्व्या युक्तं च युक्तं चात्मनि मानद । राज्यं प्राप्नुहि धर्मेण सकामान्सुहृदः कुरु ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------------|------------|---------------------------------|
| मानद | “பிரார்த்திப்பவர்களை கௌரவிப்பவரே ! | राज्यं | ராஜ்யத்தை |
| तत् | ஆகையால் | धर्मेण | தருமநெறிவழுவாது |
| आनुपूर्व्या | பரம்பரையாய் முறைப்படி- | प्राप्नुहि | அடைய திருவுளம் பற்றும் ; |
| युक्तं च | அடைந்த தும், | सुहृदः | ஸுஹ்ருத்துக்களை |
| आत्मनि | தேவரீரிடத்தில் | सकामान् | மனோரதம் கைகூடப் பெற்றவர்களாக |
| युक्तं च | பத்திமைகொண்டு விளங்குகிற துமாகிய | कुरु | தேவரீர் செய்ய வேண்டும். |

भवत्वविधवा भूमिः समग्रा पतिना त्वया । शशिना विमलेनेव शारदी रजनी यथा ॥

| | | | |
|--------|------------------------|--------|--------------------------------|
| विमलेन | “நிர்மலமான | पतिना | நாதராகிய |
| शशिना | சந்திரனால் | त्वया | தேவரீரால் |
| शारदी | சரத்கால | भूमिः | உலகானது |
| रजनी | ராத்திரி | समग्रा | யாதொருகுறையு மற்றதாகவும், |
| यथा | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே | अविधवा | நாதனுடன் விளங்கு கிறதாகவும் |
| इव | ஸர்வப்பிரகாரத்திலும் | भवतु | ஆகட்டும். |

एभिश्च सचिवैः सार्धं शिरसा याचितो मया । भ्रातुः शिष्यस्य दासस्य प्रसादं कर्तुमर्हसि॥

| | | | |
|----------|---------------------|---------------|------------------------------|
| एभिः | “ இந்த | दासस्य | தொண்டனும், |
| सचिवैः | மந்திரிமார்களோடு | शिष्यस्य | சீடனும், |
| सार्धं | கூட | भ्रातुः | தம்பியுமாகிய அடியே னுக்கு |
| मया | அடியேனால் | प्रसादं | அனுக்கிரகம் |
| शिरसा | முடிதாழ்த்தி | कर्तुं अर्हसि | செய்தருள்க. |
| याचितः च | இரக்கப்பட்ட தேவரீர் | | |

तदिदं शाश्वतं पित्र्यं सर्वं सचिवमण्डलम् । पूजितं पुरुषव्याघ्र नातिक्रमितुमर्हसि ॥१३॥

| | | | |
|--------------|---------------------------|-------------|--|
| पुरुषव्याघ्र | “ புருஷோத்தமரே ! | इदं | இந்த |
| तत् | ஆனபடியால் | सचिवमण्डलं | மந்திரிமார்களையும் நாடுநகரத்தவர்கள் |
| शाश्वतं | குலமுறையாய் வந்த தும், | सर्वं | எல்லோரையும், |
| पित्र्यं | பிதாவைச்சேர்ந்ததும், | अतिक्रमितुं | உல்லங்கனம்செய்ய |
| पूजितं | கௌரவிக்கத்தக்கது மான | अर्हसि न | தேவரீர் உரியரல்லீர்.” |

एवमुक्त्वा महाबाहुः सबाष्पः कैकयीसुतः । रामस्य शिरसा पादौ जग्राह भरतः पुनः ॥

கைகயீசுத: கைகேயிபுதல்வரும்,
மஹாபாஹுமான்
மரத: பரதர்,
சவாஷ: கண்ணும் கண்ணீரு
மாய்,
எவ் மேற்கண்டவாறு

उक्त्वा பிரார்த்தித்து,
रामस्य ஸ்ரீராமருடைய
पादौ திருவடிகளில்
पुनः மறுபடியும்
शिरसा முடிதாழ்த்தி
जग्राह நமஸ்கரித்தனர்.

तं मत्तमिव मातङ्गं निश्वसन्तं पुनः पुनः । भ्रातरं भरतं रामः परिष्वज्येदमब्रवीत् ॥ १५ ॥

ராம: ஸ்ரீராமர்
மத்தம் மதித்த
மாதங் இவ யானையைப்போன்ற
புன: புன: இடைவிடாது
निश्वसन्तं பெருமூச்செறிந்து
வருந்தும்,

तं அந்த
भ्रातरं தம்பியாகிய
भरतं பரதரை
परिष्वज्य கட்டியணைத்து
इदं பின்வரும்திருவாக்கை
अब्रवीत् திருவாய்மலர்ந்தரு
ளினார்:

कुलीनः सत्त्वसंपन्नस्तेजस्वी चरितव्रतः । राज्यहेतोः कथं पापमाचरेच्चद्विधो जनः ॥ १६ ॥

குலீன: “நற்குலத்தில் பிறந்த
வனும்,
सत्त्वसम्पन्न: தெய்வீககுணம்படை
க்கப்பெற்றவனும்,
तेजस्वी தேஜஸ்வியும்,
चरितव्रत: தர்மநெறிவழுவாத
வனுமான்

त्वद्विध: உண்ணைப்போன்ற
जन: ஒருவன்,
राज्यहेतो: ராஜ்யத்திற்காக
कथं எப்படி
पापं அதம்வழியில்
आचरेत् தூண்டுவான்.

न दोषं त्वयि पश्यामि सूक्ष्ममप्यरिसूदन । न चापि जननीं बाल्याचं विगर्हितुमर्हसि ॥

அரிசூदन “ஐம்புலன்களையும்
வென்றவனே!
त्वयि உன்னிடத்தில்
दोषं अपि குற்றமென்பதையே
सूक्ष्मं अपि எள்ளளவேனும்
पश्यामि न அறிந்திலேன்.

त्वं च நீயும்
बाल्यात् கார்யத்தின் துட்பத்
தை உள்ளபடியறி
जननीं தாயை [யாமையால்
विगर्हितुं இகழ்
अर्हसि न உடாத.

कामकारो महाप्राज्ञ गुरुणां सर्वदाऽनघ । उपपन्नेषु दारेषु पुत्रेषु च विधीयते ॥ १८ ॥

மஹாபாஜ் “மஹாபுத்திமானே!
अनघ தோஷரஹிதனே!
उपपन्नेषु சொந்த
दारेषु மனைவிமார் விஷயத்
திலும்
पुत्रेषु च புதல்வர் விஷயத்
திலும்

गुरुणां பிரகாக்களுக்கு
सर्वदा எக்காலத்திலும்
कामकार: மனோபீஷ்டப்படி
எவுமதிகாரம்
विधीयते விதிக்கப்பட்டிருக்கி
றது.

वयमस्य यथा लोके संख्याताः सौम्य साधुभिः । भार्याः पुत्राश्च शिष्याश्च त्वमनुज्ञातुमर्हसि॥

| | | | |
|---------|--------------------------|------------|-------------------|
| सौम्य | “ புண்ணியா த்மாவே ! | संख्याताः | கௌரவிக்கப்பட்டவர் |
| लोके | உலகில் | | களாகும்; |
| भार्याः | மனைவிமார்களும், | यथा | அவ்வண்ணமே, |
| शिष्याः | சீடர்களுமாகிய | त्वं च | நீயும் |
| पुत्राः | புதல்வர்களான | अस्य | இவரை |
| वयं च | நாமெல்லோரும், | अनुज्ञातुं | பெருமைப்படுத்த |
| साधुभिः | புண்ணியா த்மாக்க ளால் | अर्हसि | வேண்டும். |

वने वा चीरवसनं सौम्य कृष्णाजिनाम्बरम् । राज्ये वाऽपि महाराजो मां वासयितुमीश्वरः॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-----------------|------------------|
| सौम्य | “ புண்ணியா த்மாவே ! | वने वा | காட்டிலும், |
| महाराजः | சக்கிரவர்த்தியார் | कृष्णाजिनाम्बरं | மான்டோலுடுத்து |
| राज्ये वा | ராஜ்யத்தில் | चीरवसनं | மரவுரியடுத்தவனாக |
| मां | என்னை | अपि | செய்யவும் அதிகார |
| वासयितुं | வசிக்கச்செய்ய | | முற்றவர். |
| ईश्वरः | அதிகாரமுற்றவர். | | |

यावत्पितरि धर्मज्ञे गौरवं लोकसत्कृते । तावद्धर्मभृतां श्रेष्ठ जनन्यामपि गौरवम् ॥ २१ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|-------------|----------------|
| श्रेष्ठ | “ உத்தமனே ! | पितरि | தந்தையிடத்தில் |
| धर्मभृतां | தர்மத்தில் பற்றுடை யவர்களுக்கு | गौरवं | கௌரவம் |
| लोकसत्कृते | உலகத்தாரால் கொண்டாடப்பட்ட | यावत् तावत् | ஏதோ, அதே |
| धर्मज्ञे | தர்மிஷ்டரான | गौरवं | கௌரவம் |
| | | जनन्यां | தாயிடத்தும் |
| | | अपि | வேண்டும். |

एताभ्यां धर्मशीलाभ्यां वनं गच्छेति राघव । मातापितृभ्यामुक्तोऽहं कथमन्यत्समाचरे ॥

| | | | |
|---------------|------------------|---------------|-----------------------|
| राघव | “ பரத ! | वनं गच्छ | ‘ காட்டிற்குச் செல் ’ |
| धर्मशीलाभ्यां | தர்மசிலர்களும், | इति उक्तः | என நியமனம்பெற்ற |
| मातापितृभ्यां | தாய் தந்தையருமான | अहं | நான் |
| एताभ्यां | இவ்விருவராலும், | कथं | எவ்வாறு |
| | | अन्यत् समाचरे | மாறாய் நடப்பேன் ? |

त्वया राज्यमयोध्यायां प्राप्तव्यं लोकसत्कृतम् । वस्तव्यं दण्डकारण्ये मया वल्कलवाससा ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------------|-------------|-------------------|
| त्वया | “ உன்னால் | दण्डकारण्ये | தண்டகாரணத்தில் |
| अयोध्यायां | அயோத்யையில் | मया | என்னால் |
| लोकसत्कृतं | உலகத்தாரால் நன்கு மதிக்கப்பட்ட | वल्कलवाससा | மரவுரியடுத்தவனாய் |
| राज्यं | ராஜ்யமானது | वस्तव्यम् | காலம்கழிக்கப்பட |
| प्राप्तव्यं | அனுபவிக்கப்பட வேண்டியது. | | வேண்டியது. |

एवं कृत्वा महाराजो विभागं लोकसन्निधौ । व्यादिश्य च महातेजा दिवं दशरथो गतः ॥

| | | | |
|------------|------------------------|-------------|--------------------|
| महातेजा: | “ மஹா புண்யவானு கிய | एवं | மேற்கண்டவாறு |
| | | विभागं | உரிமையை |
| दशरथः | தசரத | कृत्वा | செய்து, |
| महाराजः | சக்கிரவர் த்தியார் | व्यादिश्य च | கட்டளையிட்டு |
| लोकसन्निधौ | ஜனசபையில் | दिवं गतः | ஸ்வர்க்கமடைந்தனர். |

स च प्रमाणं धर्मात्मा राजा लोकगुरुस्तव । पित्रा दत्तं यथा भागमुपभोक्तुं त्वमर्हसि ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------|------------------|
| सः | “ அந்த | दत्तं | அளிக்கப்பட்ட |
| धर्मात्मा | தர்மா த்மாவும் | भागं | பாகத்தை |
| लोकगुरुः | லோகநாதருமான | यथा | மாறாது |
| राजा च | சக்கிரவர் த்திதான் | उपभोक्तुं | அனுபவிக்க |
| तव | உனக்கு | त्वं | நீ |
| प्रमाणं | முடிவான அதிகாரி. | अर्हसि | கடமைப்பட்டிருக்க |
| पित्रा | திருத்தந்தையால் | | றாய். |

चतुर्दश समाः सौम्य दण्डकारण्यमाश्रितः । उपभोक्ष्ये त्वहं दत्तं भागं पित्रा महात्मना ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|------------|----------------|
| सौम्य | “ புண்யா த்மாவே ! | आश्रितः तु | ஆசிரித்தவனாகவே |
| महात्मना | மஹா த்மாவான | अहं | நான் |
| पित्रा | திருத்தந்தையால் | चतुर्दश | பதினான்கு |
| दत्तं | அளிக்கப்பட்ட | समाः | வருஷங்கள் |
| भागं | உரிமையாகிய | उपभोक्ष्ये | அனுபவிப்பேன். |
| दण्डकारण्यं | தண்டகாரண்யத்தை | | |

यदब्रवीन्मां नरलोकसत्कृतः पिता महात्मा विबुधाधिपोपमः ।

तदेव मन्ये परमात्मनो हितं न सर्वलोकेश्वरभावमप्यहम्

॥ २७ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------------|----------------------|-----------------------------|
| नरलोकसत्कृतः | “ மானிடர்களால் கொ ண்டாடப்பட்டவரும் | आत्मनः | எனக்கு |
| विबुधाधिपोपमः | இந்திரனையொத்த | परं | சர்வோ த்க்ருஷ்டமா கிய |
| महात्मा | மகாத்மாவுமான | हितं | நன்மையாக |
| पिता | திருத்தந்தையார் | अहं | நான் |
| यत् | எதை | मन्ये | பாராட்டுவேன். |
| मां | எனக்கு | सर्वलोकेश्वरभावं अपि | தர்லோகசாம்ராஜ்யத் தையும் |
| अब्रवीत् | நியமித்தனரோ, | न | மதியேன்.” |
| तत् एव | அதைத்தான் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे चतुर्त्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 6237



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3882

पञ्चोत्तरशततमः सर्गः—நாற்றைந்தாவது ஸர்க்கம் ॥ १०५ ॥

पितृनिर्देशपरिपालनकथनम्—ஸ்ரீராமர் பித்ருவாக்யபரிபாலனத்தைச் சொல்வது.

ततः पुरुषसिंहानां वृतानां तैः सुहृदणैः । शोचतामेव रजनी दुःखेन व्यत्यवर्तत ॥ १ ॥

| | | | |
|----------|----------------------|---------------|-----------------|
| ततः | அப்பொழுது | पुरुषसिंहानां | புருஷோத்தமர்களு |
| तैः | அந்த | | க்ஞ |
| सुहृदणैः | நண்பர்களோடு | रजनी एव | இரவெல்லாமும் |
| वृतानां | கூடியிருந்தவர்களும், | दुःखेन | நீண்டதாய் |
| शोचतां | துன்பப்பட்டுக்கொண் | व्यत्यवर्तत | கழிந்தது. |
| | டிருந்தவர்களுமாகிய | | |

रजन्यां सुप्रभातायां भ्रातरस्ते सुहृदृताः । मन्दाकिन्यां हुतं जप्यं कृत्वा राममुपागमन् ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-----------|----------------|
| रजन्यां | இரவு கழிந்து | जप्यं | ஐபத்தையும் |
| सुप्रभातायां | பொழுதுபுலர்ந்ததும் | कृत्वा | செய்துமுடித்து |
| ते | அந்த | सुहृदृताः | அன்பர்களோடுகூட |
| भ्रातरः | தம்பிமார்கள் | | வே |
| मन्दाकिन्यां | மந்தாகினிநதியில் | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| हुतं | ஹோமத்தையும் | उपागमन् | அடைந்தார்கள். |

तूष्णीं ते समुपासीना न कश्चित्किञ्चिदब्रवीत् । भरतस्तु सुहृन्मध्ये रामं वचनमब्रवीत् ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-------------|----------------------|
| तु | இச்சமயத்தில், | समुपासीनाः | உட்கார்ந்திருந்தனர் |
| कश्चित् | எவனேனுமொருவ | भरतः | பரதர் [கள்; |
| | னும், | सुहृन्मध्ये | அன்பர்களின் |
| | | | மத்தியில் |
| किञ्चित् | ஏதேனுமொன்றையும் | रामं | ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து |
| अब्रवीत् न | பேசவில்லை; | वचनं | திருவாக்கை |
| ते | அவர்கள் | अब्रवीत् | பின்வருமாறு திரு |
| तूष्णीं | மௌனமாய் | | வாய்மலர்ந்தருளினார்: |

सान्त्विता मामिका माता दत्तं राज्यमिदं मम । तद्दामि तवैवाहं भुङ्क्ष्व राज्यमकण्टकम् ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-----------|---------------------|
| मामिका | “ அடியேனது | अहं एवः | அடியேனே |
| माता | தாய் | तत् | அதை |
| सान्त्विता | தருமப்படி திருப்தி | तव | தேவரீருக்கு |
| | செய்விக்கப்பட்டனள்; | ददामि | சமர்ப்பிக்கின்றேன். |
| इदं | இந்த | राज्यं | ராஜ்யத்தை |
| राज्यं | ராஜ்யமானது | अकण्टकं | இடையூறற்றதாய் |
| मम | அடியேனுக்கு | भुङ्क्ष्व | சொந்தமாக்கிக் |
| दत्तं | கொடுக்கப்பட்டது. | | கொள்ளும். |

महतेवाम्बुवेगेन भिन्नः सेतुर्जलागमे । दुरावारं त्वदन्येन राज्यखण्डपिदं महत् ॥ ५ ॥

| | | | |
|------------|----------------|------------|--|
| जलागमे | “கார்காலத்தில் | राज्यखण्डं | சின்னபின்னமாகி |
| महता | பெரும் | | விட்ட ராஜ்யத்தை |
| अम्बुवेगेन | ஜலப்ரவாகத்தால் | त्वदन्येन | தேவரீரின் றி வேறொருவனால் |
| भिन्नः | உடைந்துபோன | | |
| सेतुः इव | அணைபோலவே | दुरावारम् | { பூர்வநிலைமைக்குக் கொண்டு வரமுடியாது. |
| इदं | இந்த | | |
| महत् | பெரிய | | |

गतिं खर इवाश्वस्य ताक्ष्यस्येव पतत्रिणः । अनुगन्तुं न शक्तिर्मे गतिं तव महीपते ॥ ६ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|-----------|-----------------|
| महीपते | “சக்கிரவர்த்தியாரே! | पतत्रिणः | சாதாரணப்பறவைகள் |
| अश्वस्य | குதிரையினுடைய | इव | எவ்வண்ணமோ |
| गतिं | கதியை | | அவ்வண்ணமேயும், |
| खरः इव | { கழுதை எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமேயும், | तव | தேவரீருக்கு |
| ताक्ष्यस्य | கருடனுடைய | अनुगन्तुं | சுடாவதற்கு |
| गतिं | கதியை | मे | எனக்கு |
| | | शक्तिः न | சக்தியில்லை. |

सुजीवं नित्यशस्तस्य यः परैरुपजीव्यते । राम तस्य तु दुर्जीवं यः परानुपजीवति ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------------|-----------|-------------------------|
| राम | “ஸ்ரீராம! | सुजीवं | சுகமே. |
| यः | எவனொருவன் | यः | எவனொருவன் |
| परैः | பெரியோர்களால் | परान् | மற்றவர்களை |
| उपजीव्यते | ஆதரித்துக் காப்பாற்றப்படுகிறானே, | उपजीवति | ஆதரித்துப்போஷிக்கின்றனே |
| तस्य | அவனுக்கு | तस्य तु | அவனுடையதோவெ |
| नित्यशः | எப்பொழுதும் | दुर्जीवम् | கல்டமானது. [னில் |

यथा चारोपितो वृक्षः पुरुषेण विवर्धितः । ह्रस्वकेन दुरारोहो रुढस्कन्धो महाद्रुमः ॥ ८ ॥
स यथा पुष्पितो भूत्वा फलानि न विदर्शयेत् । स तां नानुभवेत्प्रीतिं यस्य हेतोः प्ररोपितः ॥
एषोपमा महाबाहो तमर्थं वेत्तुमर्हसि । यदि त्वमस्मान्वृषभो भर्ता भृत्यान् शाधि हि ॥

| | | | |
|------------|------------------------|-----------------|--------------------------|
| पुरुषेण | “ஓர் மனிதனால் | ह्रस्वकेन | வாமனனால் |
| आरोपितः | வைக்கப்பட்ட | दुरारोहः | ஏறமுடியாததாகிறது |
| वृक्षः | ஓர் மரமானது | यथा | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமேயும், |
| विवर्धितः | வளர்ந்து | सः | அது |
| रुढस्कन्धः | செழித்த கிளைகளுடையதாகி | पुष्पितः भूत्वा | நன்கு பூத்து; |
| महाद्रुमः | பெருமரமாகி | फलानि | பழங்களை |

| | |
|--------------|----------------------------------|
| न विदर्शयेत् | உண்டுபண்ணாதிருக்கிறதும், |
| यस्य हेतोः | எதையுத்தேசித்து |
| सः | அது |
| प्ररोपितः | சுரத்தையுடன் வளர் க்கப்பட்டதோ |
| तां | அந்த |
| प्रीतिं | மனோபீஷ்டத்தை |
| अनुभवेत् न | பூர்ணமாய் கொடா திருக்கிறதும், |
| यथा च | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமேயும், |
| एषा | தேவரீரது இச் செய்கை |

| | |
|----------------|-----------------------------|
| उपमा | ஒத்திருக்கிறது. |
| महाबाहो | மஹாபாகுவே! |
| वृषभः | உத்தமராகிய |
| त्वं हि | தேவரீரும், |
| भृत्यान् | தொண்டர்களாகிய |
| अस्मान् | எங்களை |
| भर्ता | ரக்ஷிப்பவராக |
| श धि न यदि | தீர்மானிக்கவில்லை யெனில் |
| तं | அதனால் |
| अर्थ | வினையும் பயனை |
| वेत्तुं अर्हसि | உள்ளபடி அறிய வேண்டும். |

श्रेणयस्त्वां महाराज पश्यन्त्वग्याश्च सर्वशः । प्रतपन्तमिवादित्यं राज्यस्थितमरिन्दमम् ॥

| | | | |
|----------|---------------------|-------------|--|
| महाराज | “சக்கிரவர்த்தியாரே! | प्रतपन्तं | ஜ்வலிக்கும் |
| अग्याः | உத்தமர்களான | आदित्यं इव | சூரியபகவானைப்போல |
| श्रेणयः | நகரவாசிகள் | अरिन्दमं | ஜயசாலியாய் |
| सर्वशः च | எல்லோருமே | राज्यस्थितं | ராஜ்யத்தில் எழுந்த ருளியிருப்பவராய் |
| त्वां | தேவரீரை | पश्यन्तु | கண்டுகளிக்கட்டும். |

तवानुयाने काकुत्स्थ मत्ता नर्दन्तु कुञ्जराः । अन्तःपुरगता नायौ नन्दन्तु सुसमाहिताः ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|--------------|---------------------|
| काकुत्स्थ | “ஸ்ரீராமரே! | अन्तःपुरगताः | அந்தப்புரத்திலிருக் |
| मत्ताः | கொழுத்த | नायः | பெண்கள், [கும் |
| कुञ्जराः | யானைகள் | सुसमाहिताः | மனோரதம் முற்றிலும் |
| तव | தேவரீரது | | கைகூடப்பெற்றவர் |
| अनुयाने | பவனியில் | | களாய் |
| नर्दन्तु | சப்திக்கட்டும்; | नन्दन्तु | களிக்கட்டும்.” |

तस्य साधित्यमन्यन्त नागरा विविधा जनाः । भरतस्य वचः श्रुत्वा रामं प्रत्यनुयाचतः॥

| | | | |
|---------------|--|----------|------------------------------|
| विविधाः | பலவகை | भरतस्य | பரதருடைய |
| नागराः | பட்டணத்து | वचः | வார்த்தையை |
| जनाः | ஜனங்கள் | श्रुत्वा | கேட்டு |
| रामं | ஸ்ரீராமரை | साधु | ‘மஹா புண்யமாயிருக் கிறது’ |
| प्रत्यनुयाचतः | நிர்ப்பந்தித்து மன்றாடி பிரார்த்திக்கின்ற | इति | என்று |
| तस्य | அந்த | अमन्यन्त | மனமகிழ்ந்தார்கள். |

अत्येति रजनी या तु सा न प्रतिनिवर्तते । यात्येव यमुना पूर्णा समुद्रमुदकाकुलम् ॥ १९ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|----------|--|
| या | “எந்த | पूर्णा | ப்ரவாகமெடுத்தோ |
| रजनी | இரவு | यमुना | யமுனாதிடும் [டும் |
| अत्येति | கழிந்துவிடுகிறதோ, | उदकाकुलं | { ஜலங்களுக்கெல்லாம் சாச்வத வாஸஸ்தல மாகிய |
| सा | அது | समुद्रं | சமுத்திரத்திற்கு |
| तु | எப்படியும் | याति एव | சென்றேவிடுகிறது. |
| प्रतिनिवर्तते न | திரும்புகிறதில்லை. | | |

अहोरात्राणि गच्छन्ति सर्वेषां प्राणिनामिह । आयूंषि क्षपयन्त्याशु ग्रीष्मे जलमिवांशवः ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|-----------|-----------------|
| इह | “இவ்வுலகில் | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| अहोरात्राणि | அஹோராத்திரிகள் | | வண்ணமே |
| गच्छन्ति | செல்லுகின்றவை | सर्वेषां | சமஸ்தமான |
| | களாய் | प्राणिनां | உயிர்களுடையவும் |
| अंशवः | சூரியகிரணங்கள் | आयूंषि | ஆயுள் களை |
| ग्रीष्मे | கோடைக்காலத்தில் | आशु | விரைவில் |
| जलं | ஜலத்தை | क्षपयन्ति | குறைக்கின்றன. |

आत्मानमनुशोच त्वं किमन्यमनुशोचसि । आयुस्ते हीयते यस्य स्थितस्य च गतस्य च ॥

| | | | |
|------------|-------------------|----------|--------------------|
| ते आयुः | “உனது ஆயுள் | गतस्य च | பரலோகமடைந்தவ |
| हीयते | கழிந்துகொண்டே | | னுடையவும் |
| त्वं | நீ [யிருக்கிறது. | यस्य | எவனேனுமொருவ |
| आत्मानं | பரமாத்மாவைப்பற்றி | | னுடைய |
| अनुशोच | சிந்தையுறு. | अन्यं | வேறான ஜீவனைப்பற்றி |
| स्थितस्य च | உயிருடனிருப்பவ | किं | ஏன் |
| | னுடையவும் | अनुशोचसि | சிந்திக்கின்றாய் ? |

सहैव मृत्युर्व्रजति सह मृत्युर्निषीदति । गत्वा सुदीर्घमध्वानं सह मृत्युर्निवर्तते ॥ २२ ॥

| | | | |
|---------|------------------|----------|----------------|
| मृत्युः | “யமன் | मृत्युः | யமன் |
| सह एव | கூடவே | सुदीर्घं | மிகநீண்ட |
| व्रजति | நடக்கிறது. | अध्वानं | வழியில் |
| मृत्युः | யமன் | गत्वा | சென்று |
| सह | கூடவே | सह | கூடவே |
| निषीदति | வஸித்துவருகிறது. | निवर्तते | திரும்புகிறது. |

गात्रेषु वलयः प्राप्ताः श्वेताश्चैव शिरोरुहाः । जरया पुरुषो जीर्णः किं हि कृत्वा प्रभावयेत् ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|------------|-------------------|
| गात्रेषु | “அவயவங்களில் | जीर्णः | கிலமடைந்த |
| वलयः | திரைகள் | पुरुषः | ஓர் மனிதன் |
| प्राप्ताः | உண்டாகிவிட்டன. | किं हि | எதைத்தான் |
| शिरोरुहाः च | தலைமயிர்களும் | कृत्वा | செய்து |
| श्वेताः | வெளுத்துவிட்டன; | प्रभावयेत् | சமாளித்துக்கொள்ளு |
| एव | இப்படியாய் | | வான் ? |
| जरया | கிழத்தனத்தால் | | |

नन्दन्त्युदित आदित्ये नन्दन्त्यस्तमिते रवौ । आत्मनो नावबुध्यन्ते मनुष्या जीवितक्षयम् ॥

| | | | |
|----------|--------------------|---------------|--------------------------|
| மனுஷ்யா: | “மானிடர்கள் | नन्दन्ति | மகிழ்கின்றார்கள் |
| आदित्ये | சூர்யபகவான் | आत्मनः | தங்களது |
| उदिते | உதிக்கையில் | जीवितक्षयं | வாணாளின் கழிவை |
| नन्दन्ति | மகிழ்கின்றார்கள் ; | अवबुध्यन्ते न | கவனியாதிருக்கின்றார்கள். |
| रवौ | சூர்யன் | | |
| अस्तमिते | அஸ்தமிக்கையிலும் | | |

हृष्यन्त्यृतुमुखं दृष्ट्वा नवं नवमिहागतम् । ऋतूनां परिवर्तेन प्राणिनां प्राणसंक्षयः ॥ २५ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|--------------|------------------|
| इह | “இவ்வுலகில் | हृष्यन्ति | களிக்கின்றனர். |
| नवं नवं | புதிதுபுதிதாய் | ऋतूनां | ருதுக்களின் |
| आगतं | தோன்றும் | परिवर्तेन | ஆவர்த்தனத்தால் |
| ऋतुमुखं | ருதுக்களினாரம்பத் | प्राणिनां | ப்ரானிகளுக்கு |
| | தை | प्राणसंक्षयः | ஆயுளின் குறைவுண் |
| दृष्ट्वा | கண்டு | | டாகிறது. |

यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महार्णवे । समेत्य च व्यपेयातां कालमासाद्य कंचन ॥
एवं भार्याश्च पुत्राश्च ज्ञातयश्च वसूनि च । समेत्य व्यवधावन्ति ध्रुवो ह्येषां विनाभवः ॥

| | | | |
|-------------------|-----------------|-------------|----------------|
| महार्णवे | “சமுத்திரத்தில் | पुत्राः च | புதல்வர்களும், |
| काष्ठं च काष्ठं च | இரண்டு கட்டைகள் | ज्ञातयः च | ஞாதிகளும், |
| समेयातां | சேருகின்றன. | वसूनि च | பொருள்களும் |
| कञ्चन कालं | சிறிதுகாலம் | समेत्य | சேர்த்திருந்து |
| समेत्य | கூடி | व्यवधावन्ति | பிரிகின்றன. |
| आसाद्य च | இருந்துவிட்டு | एषां | இவர்களுடைய |
| व्यपेयातां | பிரிகின்றன. | विनाभवः | பிரிவு |
| यथा एवं | அவ்வண்ணமே | ध्रुवः हि | நிச்சயமே. |
| भार्याः च | மனைவிமார்களும்த | | |

नात्र कश्चिद्यथाभावं प्राणी समभिवर्तते । तेन तस्मिन् सामर्थ्यं प्रेतस्यास्त्यनुशोचतः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------|-----------|-----------------------|
| अत्र | “இவ்வுலகில் | तेन | அக்காரணத்தால் |
| कश्चित् | ஒரு | प्रेतस्य | மாண்டவனுக்காக |
| प्राणी | ப்ரானியும், | अनुशोचतः | வருத்துபவனுக்கு |
| यथाभावं | பூர்வஜன்மவினைப் | तस्मिन् | அது விஷயத்தில் |
| | பயனை | सामर्थ्यं | ப்ரதிப்ரயோஜன |
| समभिवर्तते न | எள்ளளவும் மாற்ற முடியாது. | अस्ति न | மானது உண்டாகிறதில்லை. |

यथा हि सार्थं गच्छन्तं ब्रूयात्कश्चित्पथि स्थितः । अहमप्यागमिष्यामि पृष्ठतो भवतामिति॥
एवं पूर्वैर्गतो मार्गः पितृपैतामहो ध्रुवः । तमापन्नः कथं शोचेद्यस्य नास्ति व्यतिक्रमः ॥

पथि “ வழியில்
स्थितः நின்றுகொண்டிருக்க
कश्चित् ஒருவன் [கும்
गच्छन्तं வழிநடந்துகொண்டிருக்கும்
सार्थं ஒரு கூட்டத்தைப்
अहं अपि ‘நானும் [பார்த்து,
भवतां உங்களுடைய
पृष्ठतः हि பக்கவிலேயே
आगमिष्यामि इति வருகிறேன்’ என்று
यथा எவ்வண்ணம்
ब्रूयात् சொல்வானோ
एवं இவ்வண்ணமே
पूर्वैः முன்னோர்களால்

पितृपैतामहः தந்தை, பாட்டன்
गतः முறையாய்
मार्गः அனுஷ்டிக்கப்பட்டு வந்த
ध्रुवः தர்மநெறியானது,
यस्य சாச்வதமானது.
व्यतिक्रमः எதற்கு
अस्ति न மீறிநடத்தலானது
तं தகாதோ,
आपन्नः அதை
कथं அனுஷ்டிப்பவன்
शोचेत् எவ்வாறு
மனதாலும் பின் வாங்குவான்.

वयसः पतमानस्य स्रोतसो वाऽनिवर्तिनः । आत्मा सुखे नियोक्तव्यः सुखभाजः प्रजाः स्मृताः॥

अनिवर्तिनः “ பின் திரும்பாத
स्रोतसः वा வெள்ளத்தைப்போல்
वयसः ஆயுள்
पतमानस्य கழிந்துகொண்டிருக்க
கையில்

नियोक्तव्यः பற்றுடையதாக்க வே
प्रजाः ஜனங்கள் [ண்டியது.
सुखभाजः { மோக்ஷஸுககாரணத்
தில் கடமைப்பட்ட
வர்களாய்
स्मृताः கூறப்பட்டிருக்கின்
றார்கள்.

आत्मा ஆத்மாவானது
सुखे மோக்ஷஸுகத்தில்

धर्मात्मा स शुभैः कृत्स्नैः क्रतुभिश्चासदक्षिणैः । धृतपापो गतः स्वर्गं पिता नः पृथिवीपतिः॥

धर्मात्मा “ தர்மா த்மாவும்,
पृथिवीपतिः சக்ரவர்த்தியும்,
नः நமது
पिता தந்தையாருமாகிய
सः அவர்
आसदक्षिणैः ஏராளமான தானங்க
ளோடுகூடிய

कृत्स्नैः எல்லா
शुभैः புண்ணிய
क्रतुभिः च யாகங்களால்
धृतपापः பாபங்களையுதறினவ
ராய்
स्वर्गं गतः ஸ்வர்க்கத்தையடைந்
தனர்.

भृत्यानां भरणात्मम्यक्प्रजानां परिपालनात् ।

नः “ நமது
पिता தந்தையார்,
भृत्यानां பணியர்களை
सम्यक् நன்கு
भरणात् போஷித்தலாலும்
प्रजानां பிரைஜகளை

अर्थदानाच्च धर्मेण पिता नन्विदिवं गतः ॥

परिपालनात् பரிபாலித்தலாலும்,
अर्थदानात् च பொருளை தானம்
செய்தமையாலும்,
धर्मेण தருமவிதிப்படி
विदिवं गतः ஸ்வர்க்கமடைந்தனர்.

कर्मभिस्सुशुभैरिष्टैः क्रतुभिश्चाप्तदक्षिणैः । स्वर्गं दशरथः प्राप्तः पिता नः पृथिवीपतिः ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-----------------|--------------------|
| नः | “ நமது | क्रतुभिः च | யாகங்களாலும், |
| पिता | தந்தையான | इष्टैः | லோகோபகாரமாகி |
| दशरथः | தசரத | | ன்ற |
| पृथिवीपतिः | சக்கிரவர்த்தியார், | सुशुभैः | பலபுண்ணிய |
| आप्तदक्षिणैः | ஏராளமான தானங்க | कर्मभिः | காரியங்களாலும் |
| | ளோடுகூடிய | स्वर्ग प्राप्तः | ஸ்வர்க்கமடைந்தனர். |

इष्ट्वा बहुविधैर्यज्ञैर्भोगांश्चावाप्य पुष्कलान् । उत्तमं चायुरासाद्य स्वर्गतः पृथिवीपतिः॥३५॥

| | | | |
|----------------|---------------------|----------|--------------------|
| पृथिवीपतिः | “ சக்கிரவர்த்தியார் | अवाप्य च | அடைந்தும் |
| बहुविधैः | பல | उत्तमं | தீர்க்கமான |
| यज्ञैः इष्ट्वा | யாகங்களைச் செய்து | आयुः | ஆயுளையும் |
| पुष्कलान् | வேண்டிய அளவு | आसाद्य च | அடைந்தும் |
| भोगान् | போகங்களை | स्वर्गतः | ஸ்வர்க்கமடைந்தனர். |

आयुरुत्तममासाद्य भोगानपि च राघवः । स न शोच्यः पिता तात स्वर्गतः सत्कृतः सताम्॥

| | | | |
|-------------|------------------------|----------|-----------------------|
| तात | “ குழந்தாய் ! | आसाद्य | அடைந்து |
| पिता | தந்தையான | स्वर्गतः | ஸ்வர்க்கவாஸியாய் |
| सः | அந்த | सतां | ஸத்துக்களால் |
| राघवः | தசரதசக்கிரவர்த்தி | सत्कृतः | பூஜிக்கப்படுகின்றார். |
| उत्तमं आयुः | தீர்க்கஆயுளையும் [யார் | च | ஆகையால் |
| भोगान् अपि | லோகானுபவங்களை | शोच्यः न | சோதிக்கத்தக்கவராய் |
| | யும் | | கார். |

स जीर्णं मानुषं देहं परित्यज्य पिता हि नः । दैवीं वृत्तिमनुप्राप्तो ब्रह्मलोकविहारिणीम् ॥

| | | | |
|-------------|----------------|--------------------|---------------------|
| नः | “ நமது | ब्रह्मलोकविहारिणीं | பிரம்மலோகத்தில் |
| पिता | திருத்தந்தையான | | காலங்கழிக்கும் |
| सः | அவர் | दैवीं वृत्तिं | தேவப்பதவியை |
| जीर्णं | மூப்படைந்த | अनुप्राप्तः | அடைந்திருக்கிறார் ; |
| मानुषं देहं | மானிடதேகத்தை | हि | இது திண்ணம். |
| परित्यज्य | விட்டு, | | |

तं तु नैवंविधः कश्चित्प्राज्ञः शोचितुमर्हति । त्वद्विधो मद्विधश्चापि श्रुतवान्बुद्धिमत्तरः ॥३८॥

| | | | |
|--------------|----------------|-------------|-----------------|
| एवंविधः | “ இந்தக்கொள்கை | प्राज्ञः | மேதாவியாகிய |
| | யுள்ள | वद्विधः | உன்போன்ற |
| मद्विधः च | என்போன்றவனும் | कश्चित् अपि | ஒருவனும் |
| श्रुतवान् | கற்று | तं तु | அவர் விஷயத்தில் |
| बुद्धिमत्तरः | நற்புத்தியுடைய | शोचितुं | சுயருற |
| | | अर्हति न | கூடாது. |

एते बहुविधाः शोका विलापरुदिते तथा । वर्जनीया हि धीरेण सर्वावस्थासु धीमता ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|--------------|--------------------|
| धीरेण | “தேரரியசா லியாகிய | एते | இவைகள் |
| धीमता | புத்திமா னொருவனால் | सर्वावस्थासु | எல்லா நிலமைகளிலும் |
| बहुविधाः | பல | वर्जनीयाः हि | ஒழிக்கவேண்டியவை |
| शोकाः तथा | சோகங்களும், | | களே! |
| विलापरुदिते | புலம்பல், கண்ணீர் | | |
| | விடுதலுமாகிய | | |

स स्वस्थो भव मा शोको यात्वा चावस तां पुरीम् ।

तथा पित्रा नियुक्तोऽसि वशिना वदतां वर

॥ ४० ॥

| | | | |
|----------|---|--------------|-----------------------------------|
| वदतां वर | { “தர்மானுஷ்டானத் தை நிலைநிறுத்துபவ ரில் உத்தமனே! | वशिना | லோகநாதராகிய |
| तां | அந்த | पित्रा | திருத்தந்தையால் |
| पुरीं च | நகருக்கே | नियुक्तः असि | ஆக்ஞாபிக்கப்பட்டிரு க்கின்றனே. |
| यात्वा | சென்று | मा शोकः | துயரம் வேண்டாம். |
| आवस | நீ வலிக்கவேண்டும். | सः | அந்த நீ |
| तथा | அங்ஙனந்தான் | स्वस्थः | மனவமைதிபெற்றவ |
| | | भव | இரு. [னய்] |

यत्राहमपि तेनैव नियुक्तः पुण्यकर्मणा । तत्रैवाहं करिष्यामि पितुरार्यस्य शासनम् ॥४१॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------|-----------|----------------------------|
| अहं अपि | “நானும் | आर्यस्य | பூஜ்யராகிய |
| पुण्यकर्मणा | புண்யானுஷ்டானமு | पितुः | திருத்தந்தையாரின் |
| तेन एव | அவராலேயே [டைய | शासनं | நியமனத்தை |
| यत्र नियुक्तः | எப்படியாக்ஞாபிக்கப் பட்டேனோ, | अहं | நான் |
| तत्र एव | அப்படியே | करिष्यामि | சிரமேற்கொண்டு செய்வேன். |

न मया शासनं तस्य त्यक्तुं न्याय्यमरिंदम । तत्त्वयाऽपि सदा मान्यः स वै बन्धुः स नः पिता॥

| | | | |
|--------------|-----------------|------------|-----------------|
| अरिन्दम | “ஜிதேந்திரியனே! | तस्य | அவரது |
| सः | அவர் | शासनं | ஆக்ஞை |
| नः | நமக்கு | सदा | எக்காலத்திலும், |
| मान्यः | பூஜாஹ்ராகிய | मया | என்னாலும், |
| पिता | திருத்தந்தை; | त्वया अपि | உன்னாலும் |
| सः वै बन्धुः | அவர்தான் தாய். | त्यक्तुं | மீறிவதற்கு |
| तत् | ஆனபடியால் | न्याय्यं न | தர்மமாகாது. |

तद्वचः पितुरेवाहं सम्मतं धर्मचारिणः । कर्मणा पालयिष्यामि वनवासेन राघव ॥ ४३ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|-------------|-----------------|
| राघव | “பரத! | तत् वचः एव | அந்த நியமனத்தனத |
| धर्मचारिणः | தர்மானுஷ்டான முடைய | अहं | நான் [யே] |
| पितुः | தந்தையாருக்கு | वनवासेन | வனவாஸமாகிற |
| सम्मतं | இஷ்டமான | कर्मणा | கார்யத்தால் |
| | | पालयिष्यामि | பரிபாலிப்பேன். |

| | | | |
|---------------|---------------------|------------|-----------------------|
| தத: | அதனமேல் | விரதே து | ஒப்பந்தவளவில் |
| தாமிரிக: | தார்மிகரான | தருதிவரஸல் | திரக்குதிதளித்தத்தில் |
| தரத: | தரதர் | | வாத்தஸல்யமுதையவ |
| தந்தாதிநிதிர் | தந்தாகிநீதித்தில் | தாமிரிக | தார்மிகருதாகிய [ருத, |
| ராதே | ரூதிராதர் | ராத் | ரூதிராதரைத் தார்த்து |
| ஏவ் | மேற்கண்டவாறு | திவ் | ஒப்புயர்வில்லாத |
| அர்த்தவத் | தொருநோடுகூடிய | | தாகிய |
| வதிந் | திருவாக்கை | வதி: | திவ்வருத சொல்லை |
| உத்தவா | அருளிச்செய்துவிட்டு | உதவ | சொன்னர் : |

को हि स्यादीदृशो लोके यादृशस्त्वमरिंदम । न त्वां प्रव्यथयेदुःखं प्रीतिर्वा न प्रहर्षयेत् ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------|---------------|----------------|
| अरिन्दम | “ஜிதேந்திரியரே! | त्वां | தேவரீரை |
| त्वं | தேவரீர் | दुःखं | கஷ்டம் |
| यादृशः | எப்படிப்பட்டவரோ, | प्रव्यथयेत् न | வருத்தாது. |
| ईदृशः | இப்படிப்பட்டவர் | प्रीतिः वा | சந்தோஷமும் |
| लोके | உலகில் | प्रहर्षयेत् न | மகிழ்விக்காது. |
| कः हि स्यात् | யார்தான் இருக்க முடியும்? | | |

सम्मतश्चासि वृद्धानां तांश्च पृच्छसि संशयान् ॥ ३ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|---------|--------------------------|
| वृद्धानां | “பெரியோர்களுக்கு | तान् च | அவர்களிடத்தும் |
| सम्मतः च | ஸ்வக்ஞராய் | संशयान् | சந்தேகங்களை |
| असि | விளங்குகிறீர். | पृच्छसि | கேட்டறிந்துகொள்ளுகிறீர். |

यथा मृतस्तथा जीवन्यथाऽसति तथा सति । यस्यैष बुद्धिलाभः स्यात्परितप्येत केन सः॥

| | | | |
|---------|----------------------------|------------|----------------------|
| मृतः | “இறந்தவன் | सति | இருக்கையிலுமென்ற |
| यथा | எவ்வண்ணமோ | एषः | இந்த [துமான |
| तथा | அவ்வண்ணமே | बुद्धिलाभः | நிர்ணயமடைந்திருப்பது |
| जीवन् | பிழைத்திருப்பவன் என்றதும், | यस्य | எவனுக்கு [பது |
| असति | இல்லாதிருக்கையில் | स्यात् | ஏற்பட்டுள்ளதோ |
| यथा तथा | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே | सः | அவன் |
| | | केन | எதனால் |
| | | परितप्येत | துயருறுவான்? |

परावरज्ञो यश्च स्याद्यथा त्वं मनुजाधिप । स एवं व्यसनं प्राप्य न विषीदितुमर्हति ॥५॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------|-------------|
| मनुजाधिप | “சக்கிரவர்த்தியே! | त्वं यथा | தேவரீர்போல் |
| एवं | இவ்வண்ணமாய் | यः | எவன் |
| व्यसनं | கஷ்டத்தை | स्यात् | இருப்பானோ, |
| प्राप्य च | அடைந்தும், | सः | அவன் |
| परावरज्ञः | ஸ்வ ஞானியாக | विषीदितुं | வருத்தப்பட |
| | | अर्हति न | மாட்டான். |

अमरोपमसत्त्वस्त्वं महात्मा सत्यसङ्गरः । सर्वज्ञः सर्वदर्शी च बुद्धिमांश्चासि राघव ॥ ६ ॥

| | | | |
|---------------|---|--------------|--------------------------------|
| राघव | “ஸ்ரீராம! | सत्यसङ्गरः | ஸத்யஸந்தராகவும் |
| त्वं | தேவரீர் | सर्वज्ञः | ஸ்ர்வக்ஞராகவும், |
| | தேவர்களையொத்த திருக்கல்யாணகுணங்களை யுடையவராகவும், | सर्वदर्शी च | ஸதா தர்மானுஷ்டானமுடையவராகவும், |
| अमरोपमसत्त्वः | | बुद्धिमान् च | மேதாவியாகவும் |
| महात्मा | மஹாத்மாவாகவும், | असि | விளங்குகிறீர். |

न त्वामेवं गुणैर्युक्तं प्रभवाभवकोविदम् । अविषह्यतमं दुःखमासादयितुमर्हति ॥ ७ ॥

| | | | |
|-------------------------|---|------------|------------------|
| एवं | “இப்படிப்பட்ட | त्वां | தேவரீரை |
| गुणैः | திருக்கல்யாணகுணங் களோடு | अविषह्यतमं | அஸஹ்யமாயிருக்கிற |
| युक्तं | விளங்குகிறவரும், | दुःखं | கஷ்டம் |
| प्रभवाभव- } कोविदं } | உற்பத்தி வினாசங் களின் நுட்பத்தை அறிந்தவருமான | आसादयितुं | அடைவது |
| | | अर्हति न | நியாயமன்று.” |

एवमुक्त्वा तु भरतो रामं पुनरथाब्रवीत् ॥ ८ ॥

| | | | |
|------|--------------|------------|----------------|
| भरतः | பரதர் | उक्त्वा तु | கூதித்துவிட்டு |
| रामं | ஸ்ரீராமரை, | पुनः | அதன்மேல் |
| एवं | மேற்கண்டவாறு | अथ | பின்வருமாறு |
| | | अब्रवीत् | மொழிந்தார் : |

प्रोषिते मयि यत्पापं मात्रा मत्कारणात्कृतम् । क्षुद्रया तदनिष्टं मे प्रसीदतु भवान्मम ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------|----------|-----------------------------|
| मयि | “அடியேன் | अनिष्टं | மனதாலும் நினைக்கக் கூடாத |
| प्रोषिते | வெளியூரிலிருக்கை | पापं | தீச்செயலானது |
| मत्कारणात् | எனக்காக [யில், | कृतं | செய்யப்பட்டதோ |
| मम | எனது | तत् | அதை |
| क्षुद्रया | பாபத்திற்கு துணிக் துவிட்ட | मे | என்பொருட்டு |
| मात्रा | தாயால் | भवान् | தேவரீர் |
| यत् | எந்தவொரு | प्रसीदतु | தருமமாக்கவேண்டும். |

धर्मबन्धेन बद्धोऽस्मि तेनेमां नेह मातरम् । हन्मि तीव्रेण दण्डेन दण्डाहां पापकारिणीम् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------|---------------------------|
| धर्मबन्धेन | “தர்மபாசத்தால் | मातरं | தாயாகும் |
| बद्धः अस्मि | நான்கட்டப்பட்டேன். | इमां | இவளை |
| तेन | அதனால் | तीव्रेण | கொடிய |
| इह | இப்பொழுது | दण्डेन | தண்டனையால் |
| दण्डाहां | தண்டனைக்குரிய | हन्मि न | ஹிம்ஸிப்பதிருக்க தேன். |
| पापकारिणीं | பாபத்தைச்செய்த | | |

कथं दशरथाज्जातः शुद्धाभिजनकर्मणः । जानन्धर्ममधर्मिष्ठं कुर्यां कर्म जुगुप्सितम् ॥ ११ ॥

| | | | |
|---------------------------|--|-------------|--|
| शुद्धाभिजन- } कर्मणः } | “சர்வோ தக்ருஷ்ட மான முன்னோர்களை யும் அவர்களனுஷ் டானங்களையும் பின்பற்றும் தசரதரிடமிருந்து பிறந்தவனான அடி யேன், | धर्मं जानन् | தருமத்தைபுணர்ந் தும், |
| | | अधर्मिष्ठं | தருமவிருத்தமான தும் |
| | | जुगुप्सितं | உலகத்தாரால் நிந்திக் கப்படுவதுமாகிய |
| दशरथात् | | कर्म | ஓர் செயலை |
| जातः | | कथं | எவ்வாறு |
| | | कुर्याम् | புரிவேன் ? |

गुरुः क्रियावान्बुद्धश्च राजा प्रेतः पितेति च । तातं न परिगर्ह्यं दैवतं चेति संसदि ॥

| | | | |
|------------|----------------------|--------------|----------------------|
| पिता | “ தந்தையான | इति च | என்கிற காரணங்க |
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | | ளாலும், |
| गुरुः | பிரம்மோபதேசம் | दैवतं इति च | { தெய்வமாய் விட்ட |
| क्रियावान् | செய்தவர், | | னர் என்கிற கார |
| बुद्धः च | தருமநெறி வழுவாது | संसदि | ணத்தாலும், |
| प्रेतः | யாகங்களைச் செய்தவர், | तातं | சபையில் |
| | மிகவும் ஞானியுமான | परिगर्ह्यं न | தந்தையை |
| | அவர் | | நிந்திக்க இயலாதிருக் |
| | இறந்தும் விட்டார், | | கிறேன். |

को हि धर्मार्थयोर्हीनमीदृशं कर्म किल्बिषम् । स्त्रियाः प्रियं चिकीर्षुः सन् कुर्याद्धर्मज्ञ धर्मवित् ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|---------------|--------------------|
| धर्मज्ञ | “ தருமத்தை நன்கு | चिकीर्षुः सन् | செய்யக்கருதி |
| | ணர்ந்தவரே ! | धर्मार्थयोः } | தருமம், அர்த்தம் இ |
| धर्मवित् | தருமம் தெரிந்த | हीनं } | வை இரண்டிற்கும் |
| कः हि | எவன் தான் | ईदृशं | விலகின |
| स्त्रियाः | ஓர் பெண்பிள்ளைக்கு | किल्बिषं कर्म | இப்படிப்பட்ட |
| प्रियं | இஷ்டத்தை | कुर्यात् | தீயகார்யத்தை |
| | | | செய்வான் ? |

अन्तकाले हि भूतानि मुह्यन्तीति पुराश्रुतिः । राज्ञैव कुर्वता लोके प्रत्यक्षं सा श्रुतिः कृता ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-----------------|---------------------|
| अन्तकाले | “ வினாசகாலத்தில் | सा श्रुतिः | அப்பழமொழி |
| भूतानि | ப்ராணிவர்க்கங்கள் | एवं कुर्वता | இங்ஙனம் செய்த |
| मुह्यन्ति | புத்தியை இழக்கின் | राज्ञा | சக்கிரவர்த்தியாரால் |
| | றன | लोके | உலகில் |
| इति | என்பது | प्रत्यक्षं कृता | கட்புலனாக்கப்பட்ட |
| पुराश्रुतिः हि | பழமொழியே. | | டது. |

साध्वर्थमभिसन्धाय क्रोधान्मोहाच्च साहसात् । तातस्य यदतिक्रान्तं प्रत्याहरतु तद्भवान् ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|-------------|-------------------|
| क्रोधात् | “ கோபத்தாலோ, | भवान् | தேவரீர் |
| मोहात् | புத்திக்குறைவாலோ, | अर्थं च | அதனால் விளையும் |
| साहसात् | முன் பின் ஆராயா | | பயனையும், |
| | மையாலோ, | साधु | நன்கு |
| तातस्य | தந்தையினது | अभिसन्धाय | தீர்க்காலோசனை |
| यत् अतिक्रान्तं | முடிவுசெய்யப்பட்டி | | செய்து |
| | ருக்கிறது எதுவோ | प्रत्याहरतु | தர்மவழிக்குக்கொண் |
| तत् | அதையும் | | டுவரக்கடவீர். |

पितुर्हि समतिक्रान्तं पुत्रो यः साधु मन्यते । तदपत्यं मतं लोके विपरीतमतोऽन्यथा ॥

பிது: “தந்தையாரின்
சமதிக்ரந்த் தர்மநெறிவழுவுதலை
ய: புத்ர: எந்தவொரு புதல்வன்
சாது நேராக்க
மன்யதே கருதுகின்றானே,
தத் தி அப்பொழுதுதான்

लोके உலகில்
अपत्यं சற்புத்திரனென
मतं கொண்டாடப்படுவது.
अत: இதற்கு
अन्यथा வேறுபடி
विपरीतम् தர்மவிருத்தமே.

तदपत्यं भवानस्तु मा भवान्दुष्कृतं पितुः । अभिपत्ता कृतं कर्म लोके धीर विगर्हितम् ॥

தத் “ஆகையால்
भवान् தேவரீர்
अपत्यं சற்புத்திரனாய்
अस्तु இருக்கவேண்டும்.
धीर எதற்கும் சலியா மன
த்தினரே!

विगर्हितं நிந்திக்கப்படுகிறதும்,
दुष्कृतं தர்மவிருத்தமாகிற
தும்,
कृतं செய்யப்பட்டுவிட்ட
कर्म செயலை [துமாகிய
भवान् தேவரீர்
मा अभिपत्ता பெருமைப்படுத்தக்
கூடாது.

कैकेयी मां च तातं च सुहृदो बान्धवांश्च नः । पौरजानपदानेतांस्त्रातु सर्वमिदं भवान् ॥

ஐதாந் “இந்த
पौरजानपदान् நகரத்தார்களையும்
நாட்டார்களையும்,
नः நமது
सुहृदः நண்பர்களையும்
बान्धवान् च பந்துக்களையும்
तातं च தந்தையாரையும்

मां அடியேனையும்
कैकेयी च கைகேயிதேவியாரை
யும்
इदं सर्वं இவையெல்லாவற்றை
भवान् தேவரீர் [யும்
त्रातु காத்தருளவேண்டும்
(ஆர்வம்.)

क चारण्यं क च क्षात्रं क जटाः क च पालनम् । ईदृशं व्याहतं कर्म न भवान्कर्तुमर्हति ॥

अरण्यं “காடு
क च எங்கே?
क्षात्रं கூத்தரியதர்மம்
क च எங்கே?
जटाः சடைகள்
क எங்கே?
पालनं லோகபரிபாலனம்

क च எங்கே?
ईदृशं இப்படி
व्याहतं தாறுமாறாகிருக்கிற
कर्म கார்யத்தை
भवान् தேவரீர்
कर्तुं செய்ய
अर्हति न கூடாது.

एष हि प्रथमो धर्मः क्षत्रियस्याभिषेचनम् । येन शक्यं महाप्राज्ञ प्रजानां परिपालनम् ॥

महाप्राज्ञ “மகா மேதாவியே!
अभिषेचनं பட்டாபிஷேகமானது
शक्यं இப்பொழுதே செய்
துகொள்ளத்தக்கது.
येन எனெனில்

प्रजानां ப்ராஜைகளை
परिपालनं பரிபாலித்தல் என்கிற
एषः हि இதுதான்
क्षत्रियस्य கூத்தரியனுக்கு
प्रथमः धर्मः முதல் தர்மம்.

कश्च प्रत्यक्षमुत्सृज्य संशयस्थमलक्षणम् । आयतिस्थं चरेद्धर्मं क्षत्रवन्धुरनिश्चितम् ॥२१॥

| | | | |
|------------|------------------------------|-----------|--|
| प्रत्यक्षं | “ப்ரத்யக்ஷமாயிருக் கிற | आयतिस्थं | { எப்போதோ ஒரு கா லத்தில் பயனளிக்க வல்லதும், निश्चयमायं विதிक्कप् படாததை |
| धर्मं | தர்மத்தை | अनिश्चितं | எந்தவொரு क्षत्रवन्धुः க்ஷத்ரியஜாதியில் पिहन्तवन् பிறந்தவன் चरेत् அனுஷ்டிப்பான் ? |
| उत्सृज्य | கைவிட்டு, | | |
| संशयस्थं | ஆபத்துகளுடனிருக் கிறதும், | | |
| अलक्षणं | தற்கால அவசியமில் லாததும், | | |

अथ क्लेशजमेव त्वं धर्मं चरितुमिच्छसि । धर्मेण चतुरो वर्णान्पालयन्क्लेशमामुहि ॥ २२ ॥

| | | | |
|----------|-----------------------------|---------|-------------------------|
| अथ | “ஒருக்கால் | चतुरः | நான்கு |
| क्लेशं | காயக்லேசத்தா லுண் டாகும் | वर्णान् | வர்ணங்களையும், |
| धर्मं एव | தர்மமொன்றையே | धर्मेण | முறைப்படி |
| चरितुं | அனுஷ்டிக்க | पालयन् | பரிபாலித்துக் கொண்டு |
| त्वं | தேவரீர் | | |
| इच्छसि | திருவுளம்பற்றுவி ராகில் | क्लेशं | மெய்வருத்தத்தை |
| | | आमुहि | அடையும். |

चतुर्णामाश्रमाणां हि गार्हस्थ्यं श्रेष्ठमाश्रमम् । प्राहुर्यमज्ञास्तं कथं त्यक्तुमर्हसि ॥२३॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|----------|------------------------|
| धर्मज्ञः | “தர்மத்தையறிந்த வரே! | श्रेष्ठं | முதன்மையென |
| धर्मज्ञाः | தர்மமுணர்ந்தவர்கள் | प्राहुः | விதித்திருக்கிறார்கள். |
| चतुर्णां | நான்கு | हि | ஆனபடியால் |
| आश्रमाणां | ஆசிராமங்களில் | तं | அதை |
| गार्हस्थ्यं | கிருஹஸ்த | त्यक्तुं | உல்லங்கனம்செய்ய |
| आश्रमं | ஆசிராமத்தை | कथं | எங்ஙனம் |
| | | अर्हसि | தேவரீருடன்படுவீர் ? |

श्रुतेन बालः स्थानेन जन्मना भवतो ब्रह्मम् । स कथं पालयिष्यामि भूमिं भवति तिष्ठति ॥

| | | | |
|----------|---------------------|-------------|----------------|
| श्रुतेन | “கல்வியினாலும், | भवति | தேவரீர் |
| जन्मना | பிறவி | तिष्ठति | இருக்கையில் |
| स्थानेन | காமத்தாலும், | भूमिं | பூமியை |
| भवतः | தேவரீரைக்காட்டிலும் | सः | அந்த நான் |
| अहं बालः | அடியேன் சிறியவன். | कथं | எங்ஙனம் |
| हि | ஆனபடியால் | पालयिष्यामि | பாதுகாப்பேன் ? |

हीनबुद्धिगुणो बालो हीनः स्थानेन चाप्यहम् । भवता च विनाभूतो न वर्तयितुमुत्सहे ॥

| | | | |
|---------------|---|---------------|--------------------|
| हीनबुद्धिगुणः | { “தாழ்ந்த புத்தியை யும் குணங்களையும் முடையவனும், | बालः च | சிறுவனுமாகிய |
| स्थानेन | பதவியால் | अहं अपि | நானோவெனில் |
| हीनः | பின்பட்ட | भवता विनाभूतः | தேவரீரைப் பிரிந்து |
| | | वर्तयितुं च | உயிருடனிருக்கவும் |
| | | उत्सहे न | பொறேன். |

इदं निखिलमव्यग्रं पित्र्यं राज्यमकण्टकम् । अनुशाधि स्वधर्मेण धर्मज्ञ सह बान्धवैः ॥

धर्मज्ञ “தர்மமறிந்தவரே!
पित्र्यं தந்தையாருடையதும்,
अव्यग्रं தன்னிலமையையிழந்
திருக்கிறதாமாகிய

इदं இந்த
राज्यं ராஜ்யம்

निखिलं எல்லாவற்றையும்
अकण्टकं இடையூற்றற்றதாய்
बान्धवैः सह ப்ராதாக்களோடுகூட
स्वधर्मेण குலமுறைப்படி
अनुशाधि பரிபாலித்தருளக்
கடவீர்.

इहैव त्वाऽभिषिञ्चन्तु सर्वाः प्रकृतयः सह । ऋत्विजः सवसिष्ठाश्च मन्त्रवन्मन्त्रकोविदाः ॥

प्रकृतयः “மந்திரிமார்கள்
सर्वाः எல்லோரும்
मन्त्रकोविदाः மந்திரங்களில்
நிபுணர்களான

सवसिष्ठाः வஸிஷ்டரையுள்ளிட்
ऋत्विजः च ருத்விக்குகளும் [ட

अभिषिक्तस्त्वमस्माभिरयोध्यां पालने व्रज । विजित्य तरसा लोकान्मरुद्भिरिव वासवः ॥

वासवः, “தேவேந்திரன்
मरुद्भिः தேவகணங்களால்
इव எவ்வண்ணமோ
அவ்வண்ணமே

अस्माभिः எங்களால்
अभिषिक्तः அபிஷேகம்பண்ணப்
பெற்ற

सह ஒன்றுகூடி
मन्त्रवत् முறைப்படி
त्वा தேவரீரை
इह एव இங்கேயே,
अभिषिञ्चन्तु இப்பொழுதே,
திருவபிஷேகம்
செய்யட்டும்.

ऋणानि त्रीण्यपाकुर्वन् दुर्हदः साधु निर्दहन् । सुहृदस्तर्पयन्कापैस्त्वमेवात्रानुशाधि माम् ॥

लीणि ऋणानि { “தேவ, ரிஷி, பித்ருக்
களுக்காகிய மூன்று
ருணங்களையும்
अपाकुर्वन् போக்கிக்கொண்டும்,
दुर्हदः துஷ்டர்களை
निर्दहन् எரித்துக்கொண்டும்,
सुहृदः நல்லோர்களை

अचार्य मुदिताः सन्तु सुहृदस्तेऽभिषेचने । अद्य भीताः पलायन्तां दुर्हदस्ते दिशो दश ॥

आर्य “பூஜ்யரே!
अद्य இப்பொழுது
ते தேவரீரது
अभिषेचने பட்டாபிஷேகத்தில்
सुहृदः நல்லோர்கள்
मुदिताः மனத்ருப்தி கொண்ட
வர்களாக

कामैः மனோதப்படி
साधु நன்கு
तर्पयन् திருப்தி செய்துக்கொ
अल இவ்விடத்தில் [ண்டும்,
त्वं தேவரீர்
मां एव அடியேனையே
अनुशाधि கட்டளையிடும்.

सन्तु ஆகட்டும்.
अद्य இப்பொழுதே
दुर्हदः துஷ்டாத்மாக்கள்
ते தேவரீருக்கு
भीताः பயந்தவர்களாய்
दश दिशः பத்துத்திக்குகளிலும்
पलायन्ताम् ஓடியொளியட்டும்.

आक्रोशं मम मातुश्च प्रमृज्य पुरुषर्षभ । अद्य तत्रभवन्तं च पितरं रक्ष किल्बिषात् ॥३१॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|----------------------|
| புருஷர்ஷம் | “புருஷேஷா த்தமா ! | தத்பவந்தம் | மகாபூஜ்யராகிய |
| மம | எனது | பிதரம் | திருத்தந்தையாரை |
| மாது: | தாயினது | கில்பிஷா | பாபத்தினின்று [யும், |
| ஆக்ரோசம் | அதர்மகார்யத்தையும் | அத்ய | இப்பொழுதாவது |
| ப்ரமூஜ்ய | புனிதமாக்கி | ரக்ஷ | விடுவித்தருளும். |

शिरसा त्वाऽभियाचेऽहं कुरुष्व करुणां मयि । बान्धवेषु च सर्वेषु भूतेष्विव महेश्वरः ॥

| | | | |
|-----------|--------------|-------------|------------------|
| அஹ் | “அடியேன் | பூதேஷு | தொண்டர்கள் |
| த்வா | தேவரீரை | சர்வேஷு | எல்லோரிடத்திலும் |
| சிரசா | முடிதாழ்த்தி | இவ் | எவ்வண்ணமோ, அவ் |
| அபியாசே | இரக்கிறேன். | | வண்ணமே, |
| மஹேஸ்வர்: | சர்வேச்வரன் | மயி | அடியேனிடத்தில் |
| பாந்தவேஷு | பக்தியுடைய | கருணா கருஷ் | அருள் புரியும். |

अथवा पृष्ठतः कृत्वा वनमेव भवानितः । गमिष्यति गमिष्यामि भवता सार्धमप्यहम् ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|-------------|----------------|
| பூஸ்த: க்ருத்வா | “மறுத்துவிட்டு | இத: | இக்காரணத்தால்” |
| பவான் | தேவரீர் | பவதா சார்க் | தேவரீரோடுகூடவே |
| வன் எவ் | வனத்திலேயே | அஹ் அபி | அடியேனும் |
| அதவா கமிஷ்யதி | எழுந்தருளியிருக்கப் | கமிஷ்யாமி | இருப்பேன்.” |
| | போகின்றீரென்றால் | | |

तथा हि रामो भरतेन ताम्यता प्रमाद्यमानः शिरसा महीपतिः ।

न चैव चक्रे गमनाय सत्त्वान्मतिं पितुस्तद्वचने व्यवस्थितः ॥ ३४ ॥

| | | | |
|---------|------------------|----------------|---------------------|
| மஹிபதி: | லோகநாதரும் | ப்ரஸாத்மான: ஹி | இரக்கப்பட்டவராயி |
| சத்வான் | ஸத்வகுணமுடையவ | | ருந்தும், |
| ராம: | ஸ்ரீராமர் [ருமான | பிது: | திருத்தந்தையின் |
| தாம்யதா | துயரமுற்ற | தத்வநே | அந்த ஆக்ஷேபத்தில் |
| பரதேன | பரதரால், | வ்யவஸ்தித: எவ் | நிலையாய் நின்றவராய் |
| சிரசா | முடிதாழ்த்தி | கமநாய | திரும்புவதற்கு |
| ததா | மேற்கண்டவாறு | மதி சக்ரே ந | திருவுளம்பற்றிலர். |

तदद्भुतं स्थैर्यमवेक्ष्य राघवे समं जनो हर्षमवाप दुःखितः ।

न यात्ययोध्यामिति दुःखितोऽभवत्स्थिरप्रतिज्ञत्वमवेक्ष्य हर्षितः ॥ ३५ ॥

| | | | |
|-------|---------------|---------|---------------------|
| जन: | ஜனங்கள் | து:ஸித: | வருந் துகிறவர்களாய் |
| ராஃவே | ராகவரிடத்தில் | ஹ் அவாப | சந்தோஷத்தையு |
| தத் | அப்பொழுது | | மடைந்தார்கள். |
| சமம் | ஒரே காலத்தில் | அயோத்யா | அயோத்யைக்கு |

| | | | |
|----------|----------------------|-------------------|--------------------|
| याति न | வரப்போகிறதில்லை | स्थैर्यं | எதற்கும் சலியாத |
| इति | என்பதை | स्थिरप्रतिज्ञत्वं | வாக்குறுதி மாளுமை |
| अवेक्ष्य | நினைத்து | अवेक्ष्य | கண்டு [யை |
| दुःखितः | துக்கித்தவர்களாயும், | हर्षितः | மகிழ்சியடைந்தவர் |
| अद्भुतं | ஒப்புயர்வற்ற | अभवन् | ஆனார்கள். [களாயும் |

तमृत्विजो नैगमयूथवल्लभास्तथा विसंज्ञाश्रुकलाश्च मातरः ।

तथा ब्रुवाणं भरतं च तुष्टुबुः प्रणम्य रामं च ययाचिरे सह ॥ ३६ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------|-----------|-----------------|
| ऋत्विजः | ருத்விக்குகளும், | ब्रुवाणं | மொழிந்த |
| नैगमयूथवल्लभाः | நகரஜனப்ரதானர் களும், | तं | அந்த |
| मातरः च | தாய்மார்களும், | भरतं | பரதனை |
| विसंज्ञः | அறிவிழந்து | तुष्टुबुः | புகழ்ந்தார்கள். |
| अश्रुकलाः | கண்ணீர் பெருக்கினார் | तथा | அப்படியே |
| प्रणम्य | முடிதாழ்த்தி [கள். | सह च | கூடவே |
| तथा | அவ்வாறு | रामं च | ஸ்ரீராமரையும் |
| | | ययाचिरे | வேண்டினார்கள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे षडुत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 6319



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 3964

सप्तोत्तरशततमः सर्गः—நூற்றேழாவது ஸர்க்கம் ॥ ३०७ ॥

श्रीरामेण राज्यरक्षाप्रचोदना—ஸ்ரீராமர் ராஜ்யத்தை ரட்சிக்கக் கட்டளையிடுவது.

पुनरेवं ब्रुवाणं तु भरतं लक्ष्मणाग्रजः । प्रत्युवाच ततः श्रीमान् ज्ञातिमध्येऽभिसत्कृतः ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------------|------------|------------------|
| ततः | அப்பொழுது | एवं | மேற்கண்டவாறு |
| ज्ञातिमध्ये | இனத்தார்கள் மத்தி யில் | पुनः | மீளவும் |
| अभिसत्कृतः | பெருமைப்படுத்தப் | ब्रुवाणं | வேண்டும் |
| श्रीमान् | சீமானை [பட்ட | भरतं | பரதரைப் பார்த்து |
| लक्ष्मणाग्रजः | லக்ஷ்மணருக்குத் தமையனருமாகுமவர் | तु | இப்படி |
| | | प्रत्युवाच | பதிலுரைத்தார்: |

उपपन्नमिदं वाक्यं यत्त्वमेवमभाषथाः । जातः पुत्रो दशरथात्कैकेय्यां राजसत्तमात् ॥ २ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------------|------------|----------------|
| राजसत्तमात् | “ராஜோத்தமராகிய | पुतः त्वं | புதல்வனாகிய நீ |
| दशरथात् | தசரதசக்கிரவர்க்கி யாரிடமிருந்து | यत् | எதை |
| कैकेय्यां | கைகேயிதேவியா ரிடத்தில் | एवं | இப்படி |
| जातः | பிறந்த | अभाषथाः | மொழிந்தனையோ |
| | | इदं वाक्यं | இந்தப்பேச்சு |
| | | उपपन्नम् | யுத்தமானதே. |

पुरा भ्रातः पिता नः स मातरं ते समुद्रहन् । मातामहे समाश्रौषीद्राज्यशुल्कमनुत्तमम् ॥

| | | | |
|--------|-------------------|-------------|--|
| भ्रातः | “தம்பி ! | समुद्रहन् | மணம்புரிந்து |
| नः | நமது | मातामहे | பாட்டனாரிடத்தில் |
| पिता | தந்தையாகிய | राज्यशुल्कं | { ராஜ்ய அதிகாரத்தால் வினையும் ப்ரயோஜ னத்தை |
| सः | அவர் | अनुत्तमं | ஒப்புயர்வற்றதென |
| पुरा | முன்னொருகாலத்தில் | समाश्रौषीत् | சொல்லக்கேட்டிருக் கின்றார். |
| ते | உனது | | |
| मातरं | திருத்தாயை | | |

दैवासुरे च संग्रामे जनन्यै तव पार्थिवः । संप्रहृष्टो ददौ राजा वरमाराधितः प्रभुः ॥ ४ ॥

| | | | |
|------------|--|-------------|--|
| प्रभुः | “ப்ரபுவான | भाराधितः | பேருதவிபுரியப்பட்ட |
| पार्थिवः | லோகநாதராகிய | तव | உனது [வராய்] |
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | जनन्यै | தாயிடத்தில் |
| दैवासुरे | தேவர்களுக்கும் அசு ரர்களுக்கும் நடந்த | संप्रहृष्टः | மனமுவந்து |
| संग्रामे च | போரினும் | वरं ददौ | வரம்கேட்கும் அதிகா ரத்தை அளித்தார். |

ततः सा संप्रतिश्राव्य तव माता यशस्विनी । अयाचत नरव्याघ्रं द्वौ वरौ वरवर्णिनी ॥
तव राज्यं नरव्याघ्र मम प्रवाजनं तथा । तौ च राजा तथा तस्यै नियुक्तः प्रददौ वरौ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|--------------|-------------------------|
| नरव्याघ्र | “புருஷோத்தம ! | प्रवाजनं | நாடுகடத்தலையும் |
| तव | உனது | द्वौ वरौ तथा | இரு வரங்களாக |
| माता | மாதா | नरव्याघ्रं | புருஷோத்தமரை |
| यशस्विनी | புகழ்பெற்ற | अयाचत | இப்பொழுது கேட்ட னள். |
| वरवर्णिनी | ஸ்தீர தன்முமாகும் | | |
| सा | அவள் | ततः | அதனால் |
| संप्रतिश्राव्य | வாக்குறுதிபெற்று | नियुक्तः | கட்டுண்ட |
| तव | உனக்கு | राजा | சக்கிரவர்த்தியார் |
| राज्यं | ராஜ்யத்தையும் | तौ च वरौ | அதே இருவரங்களை |
| तथा | அவ்வண்ணமே | तस्यै | இவளுக்கு [யும்] |
| मम | எனக்கு | प्रददौ | கொடுத்தார். |

तेन पित्राऽहमप्यत्र नियुक्तः पुरुषर्षभ । चतुर्दश वने वासं वर्षाणि वरदानिकम् ॥ ७ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------|----------|--------------------------|
| पुरुषर्षभ | “புருஷோத்தம ! | वने | காட்டில் |
| अहं | நான் | वासं | வசித்தலை, |
| अत्र | இந்த | तेन | அந்த |
| वरदानिकं | வரதானத்தின் பய னம் | पिता अपि | திருத்தந்தையாராலே யே |
| चतुर्दश | பதினான்கு | नियुक्तः | கட்டளையிடப்பெற் றேன். |
| वर्षाणि | வருஷகாலம் | | |

सोऽहं वनमिदं प्राप्तो निर्जनं लक्ष्मणान्वितः । सीतया चाप्रतिद्वन्द्वस्तस्य वाक्ये स्थितः पितुः॥

| | | | |
|--------|----------------|-----------------|-------------------------------|
| सः | “அந்த | अप्रतिद्वन्द्वः | பிறர் மொழிகளை செவியேற்காது |
| अहं | நான் | लक्ष्मणान्वितः | லக்ஷ்மணனோடு கூட |
| तस्य | அந்த | सीतया च | சீதையோடும் [வும் |
| पितुः | தந்தையின் | निर्जनं | மனிதசஞ்சாரமற்ற |
| वाक्ये | ஆக்ஷேபத்தில் | इदं | இந்த |
| स्थितः | பத்திமை கொண்டவ | वनं | காட்டை |
| | றைய், | प्राप्तः | அடைந்தேன். |

भवानपि तथेत्येव पितरं सत्यवादिनम् । कर्तुमर्हति राजेन्द्रं क्षिप्रमेवाभिषेचनात् ॥ ९ ॥

| | | | |
|------------|----------------|---------------|-----------------|
| भवान् अपि | “நீயும் | क्षिप्रं एव | விரைவிலேயே |
| पितरं | தந்தையாகிய | अभिषेचनात् एव | அபிஷேகம் செய்து |
| राजेन्द्रं | ராஜேந்திரமரை | | கொள்வதனால்தான், |
| तथा | அப்படியே | सत्यवादिनं | சத்தியவாதியாக |
| इति | செய்கிறேனென்று | कर्तुं अर्हति | செய்யமுடியும். |

ऋणान्मोचय राजानं मत्कृते भरत प्रभुम् ॥ १० ॥

| | | | |
|--------|-------------------|---------|--------------|
| भरत | “பரத! | ऋणात् | கடனிலிருந்து |
| प्रभुं | ப்ரபுவாகிய | मत्कृते | எனக்காக |
| राजानं | சக்கிரவர்த்தியாரை | मोचय | நீக்கிவை. |

पितरं चापि धर्मज्ञं मातरं चाभिनन्दय ॥ ११ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|---------------|
| धर्मज्ञं | “தர்மத்தையுணர்ந்த | मातरं च | தாயையும் |
| पितरं अपि | தந்தையையும் | अभिनन्दय च | களிக்கச்செய். |

श्रूयते हि पुरा तात श्रुतिर्गीता यशस्विना । गयेन यजमानेन गयेष्वेव पितृन्पति॥ १२ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------|------------|---------------------|
| तात | “குழந்தாய்! | गयेन एव | கயென்பவராலேயே |
| पुरा | முன்னொருகாலத்தில் | गीता | கூறப்பட்டதாகிய |
| गयेषु | கயாகேஷத்திரங்களில் | श्रुतिः | பின்னடை |
| पितृन् प्रति | பித்ருக்களையுத்தேசிக் | | லோகோக்தி |
| यजमानेन | ச்ராதத்தம் செய்த [து | श्रूयते हि | பாசிட்டியாய் வழங்கு |
| यशस्विना | புகழ்பெற்ற | | கிறதன்றோ. |

पुंनान्नो नरकाद्यस्मात्पितरं त्रायते सुतः । तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः पितृन्यत्पाति वा सुतः॥

| | | | |
|--------------------|-----------------|------------|-----------------|
| सुतः | “ஓர் புதல்வன் | सुतः | ஓர் புதல்வன் |
| पुत्रास्त्रः | ‘புத்’ என்னும் | पाति | பாதுகாக்கிறான். |
| नरकात् | நரகத்தினின்று | यत् | இக்காரணத்தால் |
| पितरं | தந்தையை | | தான் |
| त्रायते | விடுவிக்கிறான், | पुत्रः इति | ‘புத்திர’னென |
| यस्मात् तस्मात् वा | என்பதால்தான் | प्रोक्तः | அழைக்கப்படுகின் |
| पितृन् | பிதாக்களை | | றான். |

एष्टव्या बहवः पुत्रा गुणवन्तो बहुश्रुताः । तेषां वै समवेतानामपि कश्चिद्गयां व्रजेत् ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|-------------|----------------|
| गुणवन्तः | “ குணவான்களான | समवेतानां | உரிமைகண்ட |
| बहुश्रुताः | நற்கல்வியுடைய | तेषां | அவர்களில் |
| बहवः | பல | कश्चित् अपि | ஒருவனேனும் |
| पुत्राः | புதல்வர்கள் | गयां | கயைக்கு |
| एष्टव्याः | ப்ரார்த்திக்கத்தக்க வர்கள். | व्रजेत् वै | செல்லவேண்டும். |

एवं राजर्षयः सर्वे प्रतीता राजनन्दन । तस्मात्ताहि नरश्रेष्ठ पितरं नरकात्प्रभो ॥ १५ ॥

| | | | |
|----------|----------------------|-----------|-----------------------------|
| प्रभो | “ சாமர்த்தியமுடைய | प्रतीताः | ஒப்புக்கொண்டிருக்கிறார்கள். |
| राजनन्दन | சக்கிரவர்த்திபுதல்வ! | नरश्रेष्ठ | புருஷோத்தம! |
| एवं | இப்படியாய் | तस्मात् | ஆனபடியால் |
| राजर्षयः | ராஜரிஷிகள் | पितरं | தந்தையை |
| सर्वे | எல்லோரும் | नरकात् | நரகத்தினின்று |
| | | ताहि | காப்பாற்று. |

अयोध्यां गच्छ भरत प्रकृतीरनुरञ्जय । शत्रुघ्नसहितो वीर सह सर्वैर्द्विजातिभिः ॥ १६ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|---------------|-----------------|
| वीर | “ தர்மவீர! | अयोध्यां | அயோத்திக்கு |
| भरत | பரத! | गच्छ | செல். |
| द्विजातिभिः | பிராம்மண, சூத்திரிய, வைசியர்கள், | शत्रुघ्नसहितः | சத்ருக்னனோடுகூட |
| सर्वैः सह | எல்லோருடன்கூட | प्रकृतीः | குடிகளை |
| | | अनुरञ्जय | மகிழ்வி. |

प्रवेक्ष्ये दण्डकारण्यमहमप्यविलम्बयन् । आभ्यां तु सहितो राजन्वैदेह्या लक्ष्मणेन च ॥

| | | | |
|-------------|---------------|-------------|-----------------|
| राजन् | “ அரசே! | अहं अपि | நானும், |
| आभ्यां | இதோவிருக்கும் | अविलम्बयन् | தாமதமின்றி |
| वैदेह्या तु | சுதையோடும் | दण्डकारण्यं | தண்டகாரணயத்தில் |
| लक्ष्मणेन च | லக்ஷ்மணனோடும் | प्रवेक्ष्ये | புகுவேன். |
| सहितः | கூடவே | | |

त्वं राजा भव भरत स्वयं नराणां वन्यानामहमपि राजराष्ट्रमृगाणाम् ।

गच्छ त्वं पुरवरमद्य संहृष्टः संहृष्टस्त्वहमपि दण्डकान्प्रवेक्ष्ये ॥ १८ ॥

| | | | |
|------------|---|-------------|----------------------------|
| भरत | “ பரத! | अहं अपि | நானும் |
| त्वं | நீ | संहृष्टः तु | மனக்குறையில்லாத வனாகவே |
| संहृष्टः | { (ஸ்ர்வப்ரகாரத்திலும்) மனத்திருப்திகொண்டவனாய், இப்பொழுது | दण्डकान् | தண்டகையில் |
| अद्य | இப்பொழுது | प्रवेक्ष्ये | புகுவேன். |
| पुरवरं | சிறந்த நகரத்திற்கு | अहं अपि | நானும் |
| गच्छ | போய்ச்சேர். | वन्यानां | அரண்ய |
| त्वं स्वयं | நீயே | मृगाणां | மிருகங்களுக்கு |
| नराणां | ஜனங்களுக்கு | राजराट् | சக்கிரவர்த்தியாகு வேன். |
| राजा भव | மன்னனாக இரு. | | |

साधु राघव मा भूते बुद्धिरेवं निरर्थिका । प्राकृतस्य नरस्येव ह्यार्यबुद्धेस्तपस्विनः ॥ २ ॥

| | | | |
|-------------|---|------------------|------------------|
| राघव | “ஸ்ரீராம! | प्राकृतस्य नरस्य | பாமரமனிதனுக்கு |
| आर्यबुद्धे: | { தனது தேசத்தின் ஒழுக்கங்களில் பற்றுடையவனும், | इव | ஏற்ற |
| तपस्विनः | குலதர்மானுஷ்டான முடையவனுமாகிய | एवं | இந்த |
| ते | உனக்கு | निरर्थिका | சமயத்திற்கொவ்வாத |
| | | बुद्धिः | நிச்சயமானது |
| | | साधु हि | முற்றிலும் |
| | | मा भूत् | கூடாது. |

कः कस्य पुरुषो बन्धुः किमाप्यं कस्य केनचित् । यदेको जायते जन्तुरेक एव विनश्यति ॥

| | | | |
|-----------|-------------|----------|------------------|
| कस्य | “யாருக்கு | आप्यं | ஆகவேண்டியிருக்கி |
| कः पुरुषः | எந்த மனிதன் | यत् | ஏனெனில் [றது ? |
| बन्धुः | பந்து ? | जन्तुः | ஜீவனானது |
| केनचित् | யாரால் | एकः | தனியாகவே |
| कस्य | யாருக்கு | जायते | பிறக்கிறது. |
| किं | என்ன | एकः एव | தனியாகவே |
| | | विनश्यति | இறக்கிறது. |

तस्मान्माता पिता चेति राम सज्जेत यो नरः । उन्मत्त इव स ज्ञेयो नास्ति कश्चिद्धि कस्यचित् ॥

| | | | |
|---------|---------------------------|--------------|-----------------|
| तस्मात् | “ஆகையால் | सः | அவன் |
| राम | ராம! | इव | முழு |
| यः | எவனேனும் | उन्मत्तः इति | பித்தனென |
| नरः | ஒரு மனிதன், | ज्ञेयः | அறியத்தக்கவன். |
| माता | தாயெனவும், | हि | ஏனெனில், |
| पिता च | தந்தையெனவும், | कस्यचित् | எவனுக்கும் |
| सज्जेत | பாசம்வைக்கின்ற னெனில், | कश्चित् | எவனும் |
| | | अस्ति न | ஒருறவும் இல்லை. |

यथा ग्रामान्तरं गच्छन्नरः कश्चित्कचिद्वसेत् । उत्सृज्य च तपावासं प्रतिष्ठेतापरेऽहनि ॥

एवमेव मनुष्याणां पिता माता गृहं वसु । आवासमात्रं काकुत्स्थ सज्जन्ते नात्र सज्जनाः ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-------------|--------------------|
| काकुत्स्थ | “ராம! | प्रतिष्ठेत् | புறப்பட்டுவிடுவது |
| कश्चिन् नरः | ஒர் மனிதன் | यथा | எவ்வண்ணமோ |
| ग्रामान्तरं | கிராமந்தரத்திற்கு | एवं एव | இவ்வண்ணமே, |
| गच्छन् | போகையில் | मनुष्याणां | மானிடர்களுக்கு |
| कचित् | ஒரிடத்தில் | पिता माता | தந்தையும், தாயும், |
| वसेत् | இரவுகழிக்கின்றான்; | गृहं | வீடும், |
| अपरे अहनि च | மறுதினமே | वसु | பொருளும் |
| तं | அந்த | आवासमात्रं | தங்குமிடமே. |
| आवासं | இரவுகழித்தவிடத்தை | अत्र | இவ்விஷயத்தில் |
| उत्सृज्य | விட்டு | सज्जनाः | புத்திமான்கள் |
| | | सज्जन्ते न | பாசம்வையார்கள். |

पिड्यं राज्यं परित्यज्य स नर्हसि नरोत्तम । आस्थातुं कापथं दुःखं विषमं बहुकण्टकम् ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|----------|---|
| नरोत्तम | “புருஷோத்தம! | விபசம் | (இதுவரை முன்னோர் களிலொருவராலும்) அனுஷ்டிக்கப்படாத துமாகிய |
| ச: | அந்த நீ | காபத்யம் | வக்கிரவழியை |
| பிடியம் | பிதாவினிடமிருந்து | ஆஸ்தாது | அனுஷ்டிக்க |
| राज्यं | ராஜ்யத்தை [வந்த | अर्हसि न | கூடாது. |
| परित्यज्य | துறந்து | | |
| दुःखं | துன்பத்தருவதும், | | |
| बहुकण्टकं | பல பீடைகளையுடையதும், | | |

समृद्धायामयोध्यायामात्मानमभिषेचय । एकवेणीधरा हि त्वां नगरीं सम्प्रतीक्षते ॥ ८ ॥

| | | | |
|---------------|--|------------|-----------------------|
| नगरी | நகரதேவதை | आत्मानं | உன்னை |
| एकवेणीधरा | (விரஹசின்னமாகிய) ஒற்றைப்பின்னலுடையவளாய், | समृद्धायां | பாக்கியம் பெற்ற |
| त्वां हि | உன்னையே | अयोध्यायां | அயோத்தியில் |
| सम्प्रतीक्षते | எதிர்பார்த்துக்காத்திருக்கின்றனள். | अभिषेचय | அபிஷேகம் செய்து கொள். |

राजभोगाननुभवन्महार्हान्पार्थिवात्मज । विहर त्वमयोध्यायां यथा शक्रस्त्रिविष्टपे ॥ ९ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|------------|--------------------|
| पार्थिवात्मज | “சக்கிரவர்த்திகுமார! | अयोध्यायां | அயோத்தியில் |
| त्रिविष्टपे | தேவலோகத்தில் | महार्हान् | மகச்சிறந்த |
| शक्रः | இந்திரன் | राजभोगान् | ராஜபோகங்களை |
| यथा | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே | अनुभवन् | அனுபவித்துக்கொண்டு |
| त्वं | நீ | विहर | வஸிப்பாயாக. |

न ते कश्चिदशरथस्त्वं च तस्य न कश्चन । अन्यो राजा त्वमन्यश्च तस्मात्कुरु यदुच्यते ॥

| | | | |
|-----------|---------------|-----------------|-------------------|
| दशरथः | “தசரதர் | राजा | சக்கிரவர்த்தியாகு |
| ते | உனக்கு | अन्यः | வேறு. [மவர், |
| कश्चित् न | ஒருறவுமல்லர். | त्वं च | நீயும் |
| त्वं च | நீயும் | अन्यः | வேறு. |
| तस्य | அவருக்கு | तस्मात् | ஆனபடியால் |
| कश्चन न | ஒருறவுமல்லன். | यत् उच्यते कुरु | சொல்வதைச்செய். |

बीजमात्रं पिता जन्तोः शुक्लं रुधिरमेव च । संयुक्तमृतुमन्मात्रा पुरुषस्येह जन्म तत् ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|--------------|----------------------|
| इह | “இவ்வுலகில் | ऋतुमन्मात्रा | ருதுகாலமுள்ளதா |
| जन्तोः | ஓர் ஜந்துவிற்கு | संयुक्तं | சேகரிக்கப்பட்ட [யால் |
| पिता | தந்தை | शुक्लं | சுக்கிலமும் |
| बीजमात्रं | நிமித்தமாகத்திரமே. | रुधिरं च | சோணிதமென்ற |
| पुरुषस्य | ஒருவனுக்கு | तत् एव | இதுவே |
| | | जन्म | முதற்காரணம். |

गतः स नृपतिस्तत्र गन्तव्यं यत्र तेन वै। प्रवृत्तिरेषा मर्त्यानां त्वं तु मिथ्या विहन्यसे ॥

| | | | |
|----------|--------------------|------------|------------------------|
| सः | “அந்த | एषा वै | இதுவே |
| नृपतिः | சக்கிரவர்த்தியார், | मर्त्यानां | மனிதர்களுக்கு |
| तेन | அவரால் | प्रवृत्तिः | இயல்பு. |
| गन्तव्यं | போய்ச்சேரவேண் | त्वं तु | நீயோவெனில் |
| | டிய இடம் | मिथ्या | பொய்யான சம்பந்தத் |
| यत्र | எங்கோ | | தால் |
| तत्र | அதற்கு | विहन्यसे | வருந்திக்கெடுகின்றாய். |
| गतः | சென்றுவிட்டார். | | |

अर्थधर्मपरा ये ये तांस्ताञ्छोचामि नेतरान्। ते हि दुःखमिह प्राप्य विनाशं प्रेत्य भेजिरे॥

| | | | |
|--------------|--|---------|------------|
| अर्थधर्मपराः | { “(வந்ததை) விட்டு தர்மமொன்றிலேயே பற்றுள்ளவர்கள் | हि | ஏனெனில் |
| ये ये | எவரெவர்களோ | ते | அவர்கள் |
| तान् तान् | அவரவர்களைப்பற்றி | इह | இவ்வுலகில் |
| शोचामि | நான் வருந்துகின் | दुःखं | கஷ்டத்தை |
| | றேன். | प्राप्य | அடைந்து |
| इतरान् | மற்றவர்களைப்பற்றி | प्रेत्य | செத்து |
| न | வருந்தவில்லை. | विनाशं | அதர்சனத்தை |
| | | भेजिरे | அடைந்தனர். |

अष्टकापितृदैवत्यमित्ययं प्रसृतो जनः। अन्नस्योपद्रवं पश्य मृतो हि किमशिष्यति ॥ १४ ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------|--------------|------------|
| अयं | “இந்த | अन्नस्य | உணவினது |
| जनः | ஜனம் | उपद्रवं | வீண்செலவை |
| अष्टकापितृदैवत्यं | அஷ்டகாச் சராத்தம், | पश्य | நீயே கவனி. |
| | பித்ருச்சராத்தம் | हि | ஏனெனில் |
| इति | என்கிறதை | मृतः | இறந்தவன் |
| प्रसृतः | அனுஷ்டிக்கிறது. | किं अशिष्यति | உண்பானா? |

यदि भुक्तमिहान्येन देहमन्यस्य गच्छति। दद्यात्प्रवसतः श्राद्धं न तत्पथ्यशनं भवेत् ॥

| | | | |
|------------|--------------------|----------|----------------|
| अन्येन | “ஒருவனால் | इह | இவ்விடத்திலேயே |
| भुक्तं | புசிக்கப்பட்டது | श्राद्धं | சராத்தத்தை |
| अन्यस्य | வேறொருவனது | दद्यात् | செய்யவேண்டும். |
| देहं | தேகத்தில் | तत् | அப்பொழுது |
| गच्छति यदि | போய்ச்சேருமாகில் | पथि | வழியில் |
| प्रवसतः | தேசாந்திரம் செல்பவ | अशनं | கட்டுச்சாதம் |
| | னுக்கு | भवेत् न | வேண்டாம். |

दानसंवनना ह्येते ग्रन्था मेधाविभिः कृताः। यजस्व देहि दीक्षस्व तपस्तप्यस्व संत्यज ॥

यजस्व “யாகம் செய்,
 देहि தானங்கொடு,
 दीक्षस्व தீக்ஷபெறு,
 तपः तप्यस्व தவம்புரி,
 संत्यज எல்லாவற்றையும்
 एते இந்,த

ग्रन्था: நூல்கள்
 दानसंवनना: { தானங்களிலாசை
 मेधाविभिः { உண்டுபண்ணுகிற து
 कृताः हि { களாக
 புத்திமான்களால்
 செய்யப்பட்டவை
 களே.

स नास्ति परमित्येव कुरु बुद्धिं महामते । प्रत्यक्षं यत्तदातिष्ठ परोक्षं पृष्ठतः कुरु ॥ १७ ॥

महामते “மேதாவியே!
 सः அந்த நீ
 परं பரலோகம்
 अस्ति न இல்லை
 इति एव என்றே
 बुद्धिं कुरु தீர்மானி.

यत् யாதொன்று
 प्रत्यक्षं கட்புலனையிருக்கிற
 तत् அதை [தே
 आतिष्ठ கைக்கொள்ளு.
 परोक्षं கட்புலனல்லாததை
 पृष्ठतः कुरु தள்ளிவிடு.

स तां बुद्धिं पुरस्कृत्य सर्वलोकनिदर्शिनीम् । राज्यं त्वं प्रतिगृहीष्व भरतेन प्रसादितः ॥

भरतेन “பரதனால்
 प्रसादितः இரக்கப்பட்ட
 सः அந்த
 त्वं நீ
 सर्वलोक- } உலகத்தாரெல்லாரா
 निदर्शिनी } லும் ஒத்துக்கொள்
 எப்பட்ட

तां அந்த
 बुद्धिं நிச்சயத்தை
 पुरस्कृत्य ஏற்று,
 राज्यं ராஜ்யத்தை
 प्रतिगृहीष्व கைப்பற்று.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे अष्टोत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 6357

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 4002



नवोत्तरशततमः सर्गः—நாற்றொன்பதாவது ஸர்க்கம் ॥ १०९ ॥

श्रीरामेण नास्तिकमतनिराकरणम्—ஸ்ரீராமர் நாஸ்திகமதத்தைத் தாஷிப்பது.

जाबालेस्तु वचः श्रुत्वा रामः सत्यात्मनां वरः। उवाच परया भक्त्या स्वबुद्ध्या चाविपन्नया॥

सत्यात्मनां சக்தியத்திற்பற்றுடை
 वरः. சிறந்த [யவர்களுள்
 रामः ஸ்ரீராமர்
 जाबाले: ஜாபாலையின்
 वचः வாய்க்தையை
 श्रुत्वा கேட்டு

परया சிறந்த
 भक्त्या பக்தியோடு
 अविपन्नया கூடிய
 स्वबुद्ध्या च பிறனிப்புத்தியாலேயே
 तु இப்படி
 उवाच மொழிந்தார் :

भवान्मे प्रियकार्मार्थं वचनं यदिहोक्तवान् । अकार्यं कार्यसङ्काशमपथ्यं पथ्यसंमितम् ॥

| | | | |
|-----------------|-----------------------|--------------|-----------------------|
| भवान् | “தேவரீர் | उक्तवान् | சொன்னீரோ அது |
| मे | எனக்கு | कार्यसङ्काशं | செய்யத்தக்கதுபோல் |
| प्रियकार्मार्थं | பிரியமுண்டாக்குவதற்கு | अकार्यं | தோன்றுவதாயும், |
| इहं | இப்பொழுது | पथ्यसंमितं | செய்யத்தகாதது. |
| यत् | எந்த | | இதமளிப்பதுபோன்றதாயும் |
| वचनं | வாங்குதையை | अपथ्यम् | இதமளிக்காததே. |

निर्मर्यादस्तु पुरुषः पापाचारसमन्वितः । मानं न लभते सत्सु भिन्नचारित्रदर्शनः ॥ ३ ॥

| | | | |
|--------------------|--|-----------|--------------------------|
| निर्मर्यादः | “மரியாதையற்று | पुरुषः | ஓர் மனிதன் |
| पापाचारसमन्वितः | பாபானுஷ்டானமுடையவனாய் | सत्सु | புண்ணியாத்மாக்களிடத்தில் |
| भिन्नचारित्रदर्शनः | { தரும்விருத்த அனுஷ்டானங்களை உபதேசிச்சுகின்றவனுமாகிய | मानं | மதிப்பை |
| | | लभते तु न | அடையவேமாட்டான். |

कुलीनमकुलीनं वा वीरं पुरुषमानिनम् । चारित्रमेव व्याख्याति शुचिं वा यदि वाऽशुचिम् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------------|-------------|--|
| कुलीनं वा | “உயர்குலத்திற் பிறந்தவனென்பதையும் | पुरुषमानिनं | { பரமாத்மாவினிடத்து மரியாதையுள்ளவனென்பதையும் |
| यदि | அல்லது | शुचिं वा | சுசியென்பதையும் |
| अकुलीनं | தாழ்குலத்திற் பிறந்தவனென்பதையும் | अशुचिं वा | அசுசியென்பதையும் |
| वीरं | வீரனென்பதையும் | चारित्रं एव | ஒழுக்கமொன்றே |
| | | व्याख्याति | உரைக்கின்றது. |

अनार्यस्त्वार्यसङ्काशः शौचाद्वीनस्तथा शुचिः । लक्षण्यवदलक्षण्यो दुःशीलः शीलवानिव ॥

| | | | |
|----------------|---|------------|---------------------------------|
| अनार्यः | “துஷ்டன் | अलक्षण्यः | ஸத்புருஷானுஷ்டானமற்றவன் |
| आर्यसङ्काशः तु | நல்லவன்போல் விளங்குவான். | लक्षण्यवत् | ஸத்புருஷன்போல் விளங்குவான். |
| शौचात् हीनः | அந்தக்கரணசத்தியில்லாதவன் | दुःशीलः | கூடாவொழுக்கமுடையவன் |
| शुचिः तथा | { அந்தக்கரணசத்தியுள்ளவன்போல் விளங்குவான். | शीलवान् इव | நல்லொழுக்கமுடையவன்போலிருப்பான். |

अधर्मं धर्मवेषेण यदीमं लोकसङ्करम् । अभिपत्स्ये शुभं हित्वा क्रियाविधिविवर्जितम् ॥
कश्चेतयानः पुरुषः कार्याकार्यविचक्षणः । बहुमंस्यति मां लोके दुर्वृत्तं लोकदूषणम् ॥

| | |
|--------------------------|---|
| शुभं | உசிதமானதை |
| हिंवा | துறந்து |
| क्रियाविधि- विवर्जितं | அனுஷ்டானம், விதி இவைகளுக்கப்புறப் பட்டதாய், |
| लोकसङ्करं | உலகிற்கே கேடுவினா |
| इमं | இந்த [விக்கிறதாகிய |
| अधर्म | அதர்மத்தை |
| धर्मवेषेण | தர்மமென்று |
| अभिपत्ये यदि | நான் கைக்கொள்வே னாகில் |

| | |
|---------------------|-----------------------------|
| लोके | உலகில் |
| कार्याकार्यविचक्षणः | கார்யாகார்யங்களை யறியும் |
| चेत्थानः | அறிவுள்ள |
| कः | எந்த |
| पुरुषः | மானிடன் |
| लोकदूषणं | உலகைக்கெடுத்த |
| दुर्वृत्तं | பாபியாகிய |
| मां | என்னை |
| बहुमंस्यति | மதிப்பான் ? |

कस्य यास्याम्यहं वृत्तं केन वा स्वर्गमाप्नुयाम् । अनया वर्तमानोऽहं वृत्त्या हीनप्रतिज्ञया ॥

| | |
|---------------|-----------------------|
| अहं | “ நான் |
| अनया | இந்த |
| हीनप्रतिज्ञया | சொன்ன சொல் தவ றும் |
| वृत्त्या | அனுஷ்டானத்தோடு |
| वर्तमानः | உடன்படுகின்றவனாய் |
| कस्य | யாருடைய |

| | |
|-----------|------------------------------|
| वृत्तं वा | பூர்வீகானுஷ்டான மென்பதாய் |
| यास्यामि | பின்பற்றுவேன் ? |
| केन | எந்த வகையால் |
| स्वर्गं | ஸ்வர்க்கத்தை |
| अहं | நான் |
| आप्नुयाम् | அடைவேன் ? |

कामवृत्तस्त्वयं लोकः कृत्स्नः समुपवर्तते

| | |
|----------|-----------|
| अयं | “ இந்த |
| लोकः | உலகு |
| कृत्स्नः | எல்லாமும் |

॥ ९ ॥

| | |
|--------------|---------------------------------|
| कामवृत्तः तु | மனோபிஷ்டப்படி நட க்கின்றதாய் |
| समुपवर्तते | ஆகிவிடும். |

यद्वृत्ताः सन्ति राजानस्तद्वृत्तास्सन्ति हि प्रजाः ॥ १० ॥

| | |
|------------|------------------------------|
| राजानः | “ மன்னர்கள் |
| यद्वृत्ताः | எவ்வனுஷ்டானமு டையவர்களாய் |
| सन्ति | இருக்கின்றார்களோ |

| | |
|------------|-------------------------------|
| प्रजाः हि | பிரஜைகளும் |
| तद्वृत्ताः | அவ்வனுஷ்டான முடையவர்களாகவே |
| सन्ति | இருக்கின்றனர். |

सत्यमेवानृशंसं च राजवृत्तं सनातनम् । तस्मात्सत्यात्मकं राज्यं सत्ये लोकः प्रतिष्ठितः ॥

| | |
|-----------|---|
| अनृशंसं | “ தர்மவழி வழுவாத தாய் |
| सनातनं च | { முன்னோர்களெல்லோ ராலுமனுஷ்டிக்கப் பட்ட |
| राजवृत्तं | ராஜானுஷ்டான மென்பது |
| सत्यं एव | ஸத்யமென்பதே. |

| | |
|-------------|-------------------|
| लोकः | உலகம் |
| सत्ये | ஸத்தியத்தில் |
| प्रतिष्ठितः | நினைக்கின்றது. |
| तस्मात् | ஆகையால் |
| राज्यं | ராஜ்யபரிபாலனம் |
| सत्यात्मकम् | ஸத்தியமொன்றாலே |
| | தான்சாத்தியமானது. |

ऋषयश्चैव देवाश्च सत्यमेव हि मेनिरे । सत्यवादी हि लोकेऽस्मिन्परमं गच्छति क्षयम् ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-------------|----------------|
| ऋषयः च | “ முனிவர்களும், | अस्मिन् | இந்த |
| देवाः च | தேவர்களும், | लोके | உலகில் |
| सत्यं एव | ஸத்தியமொன்றையே | सत्यवादी एव | ஸத்தியவாதிதான் |
| मेनिरे | ஸ்ர்வமுமாய் எண்ணு | परमं क्षयं | உத்தமபதவியை |
| | கிறார்கள். | गच्छति | அடைவான். |
| हि | ஆகையால் | हि | இது திண்ணம். |

उद्विजन्ते यथा सर्पान्नरादनृतवादिनः । धर्मः सत्यं परो लोके मूलं स्वर्गस्य चोच्यते ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-----------|----------------------|
| लोके | “ உலகில் | स्वर्गस्य | ஸ்வர்க்கத்திற்கு |
| अनृतवादिनः | பொய் பேசுகிற | मूलं | முதலாதாரமாகிய |
| नरात् | மனிதனிடத்தி | | தாய், |
| | லிருந்து | परः | எதற்கும் மேம்பட்ட |
| सर्पात् | பாம்பினிடத்தி | | தாய், |
| | லிருந்து | सत्यं | ஸத்யமெனும் |
| यथा | எவ்வண்ணமோ | धर्मः च | தருமமொன்றுதா |
| | அவ்வண்ணமே | | னென்று |
| उद्विजन्ते | எல்லோரும் நடுங்கு | उच्यते | விதிக்கப்பட்டிருக்கி |
| | கின்றார்கள். | | றது. |

सत्यमेवेश्वरो लोके सत्यं पद्मा समाश्रिता । सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------|------------|-----------------|
| लोके | “ உலகில் | सर्वाणि | எல்லாமும் |
| ईश्वरः | ஸ்ர்வேச்வரனென் | सत्यमूलानि | ஸத்யத்தையே ஆதார |
| | பது | | மாகவுடையன. |
| सत्यं एव | சத்தியம்தான். | सत्यात् | ஸத்யலோகத்தைக் |
| पद्मा | லக்ஷ்மி | | காட்டிலும் |
| सत्यं | ஸத்தியத்தில்தான் | परं | கிறந்த |
| समाश्रिता | சூழுகொண்டிருக் | पदं | இடம் |
| | கின்றாள். | अस्ति न | இல்லை. |

दत्तमिष्टं हुतं चैव तप्तानि च तपांसि च । वेदाः सत्यप्रतिष्ठानास्तस्मात्सत्यपरो भवेत् ॥

| | | | |
|----------|-------------|------------------|-------------------|
| दत्तं | “ தானமும், | सत्यप्रतिष्ठानाः | ஸத்யத்தையே ஆதார |
| इष्टं | யாகமும், | | மாகக்கொண்டவை. |
| हुतं च | ஹோமமும், | तप्स्रात् | ஆகையால் |
| तप्तानि | புரியப்பட்ட | सत्यपरः | { ஸத்யத்தை ஸர்வமு |
| तपांसि च | தவங்களும், | | மாய்க்கொண்டவ |
| वेदाः एव | வேதங்களும், | भवेत् च | { னாய் |
| | | | எவனுமிருக்கக்கட |
| | | | வன். |

एकः पालयते लोकमेकः पालयते कुलम् । मज्जत्येको हि निरय एकः स्वर्गे महीयते ॥

| | | | |
|--------|-----------------|------------|---------------------|
| एकः | “ஒருவன் | एकः | ஒருவன் |
| लोकं | உலகத்தை | निरये | நாகத்தில் |
| पालयते | ரகஷிக்கின்றனன். | मज्जति | விழுந்துகிடக்கின் |
| एकः | ஒருவன் | एकः | ஒருவன் [ரான். |
| कुलं | தன் வீட்டை | स्वर्गे हि | ஸ்வர்க்கத்திலும் |
| पालयते | ரகஷிக்கின்றனன். | महीयते | பூஜிக்கப்படுகிறான். |

सोऽहं पितुर्नियोगं तु किमर्थं नानुपालये । सत्यप्रतिश्रवः सत्यं सत्येन समयीकृतः ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------|------------|----------------------------|
| सत्यप्रतिश्रवः | “சத்யமாய்ச் சபதம் செய்த | पितुः | திருத்தந்தையின் |
| सः | அந்த | नियोगं | கட்டளையை |
| अहं | நான் | तु | இப்பொழுது |
| सत्यं | சபதத்தில் | किमर्थं | ஏன் |
| समयीकृतः | ஒப்பந்தம்கொண்டவ னாய் | सत्येन | வாக்குறுதிப்படி |
| | | अनुपालये न | பரிபாலியா திருப் பேன் ? |

नैव लोभान्न मोहाद्वा न ह्यज्ञानात्तमोऽन्वितः । सेतुं सत्यस्य भेतस्यामि गुरोः सत्यप्रतिश्रवः ॥

| | | | |
|-------------------|---|--------------|-----------------------|
| गुरोः | “ திருத்தந்தையா ருக்கு | लोभात् | பொருளாசையாலும் |
| सत्यप्रतिश्रवः एव | ஸத்யமாய் வாக்க ளித்த நானே | भेतस्यामि न | வழுவேன். |
| तमोऽन्वितः हि | பாபத்திற்கு ஈடுபட்ட வனாகி | मोहात् | தற்காலத்துன்பத்தாலும் |
| सत्यस्य | ஸத்யத்தினுடைய | न | வழுவேன். |
| सेतुं | { பெரியோர்களாகிய முன்னோர்களினனு ஷ்டானத்தை | अज्ञानात् वा | அவித்தையாலும் |
| | | न | வழுவேன். |

असत्यसन्धस्य सतश्चलस्यास्थिरचेतसः । नैव देवा न पितरः प्रतीच्छन्तीति नः श्रुतम् ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|----------------|------------------------------------|
| नः | “எங்களுக்கு | चलस्य | (அனுஷ்டான) தடுமா ற்றமுடையவனாய், |
| श्रुतं | உபதேசிக்கப்பட்ட வித்தை | सतः | இருக்குமொருவனை |
| इति | இவ்விஷயத்திலிப்படி: | प्रतीच्छन्ति न | கண்ணெடுத்தும் பார்ப்பதில்லை. |
| देवाः | ‘தேவர்கள் | पितरः एव | பித்ருதேவதைகளும் |
| असत्यसन्धस्य | சொன்னசொல் மீறிய வனாய், | न | கண்ணெடுத்துப்பார்ப் பதில்லை. |
| अस्थिरचेतसः | நம்பக்கூடா தமனமு டையவனாய், | | |

प्रत्यगात्ममिमं धर्मं सत्यं पश्याम्यहं स्वयम् । भारः सत्पुरुषाचीर्णस्तदर्थमभिनन्द्यते ॥२०॥

| | | | |
|--------------|----------------|-----------------|----------------------|
| अहं | “நான் | पश्यामि | நன்கு அறிகிறேன். |
| इमं | இந்த | सत्पुरुषाचीर्णः | ஸத்திருஷர்களாலனு |
| सत्यं | ஸத்யமெனும் | | ஷ்டிக்கப்படுகிறதாகிய |
| धर्मं | தருமத்தை | भारः | காயக்கிலேசமெல்லா |
| स्वयं | தானே | | மும் |
| प्रत्यगात्मं | அந்தராத்மாவையவ | तदर्थं | அதொன்றுக்காகத் |
| | லம்பித்ததாய் | अभिनन्द्यते | தான் |
| | | | பாராட்டப்படுகிறது. |

क्षात्रं धर्ममहं त्यक्ष्ये ह्यधर्मं धर्मसंहितम् । क्षुद्रैर्नृशंसैर्लुब्धैश्च सेवितं पापकर्मभिः ॥ २१ ॥

| | | | |
|------------|------------------|------------|------------------|
| क्षुद्रैः | “அற்பர்களும், | धर्मसंहितं | அற்பதருமத்தோடு |
| नृशंसैः | கொடியவர்களும், | | கலந்ததாய் |
| लुब्धैः च | பொருளாசையுடைய | अधर्मं | அதர்மமாயிருக்கிற |
| | வர்களுமான | क्षात्रं | கூத்திரிய |
| पापकर्मभिः | பாபானுஷ்டான | धर्मं | அனுஷ்டானத்தை |
| | முடையவர்களால் | अहं | நான் |
| सेवितं | கைக்கொள்ளப்படுகி | त्यक्ष्ये | துறப்பேன். |
| | றதும், | हि | இதுதிண்ணம். |

कायेन कुरुते पापं मनसा संप्रधारयन् । अनृतं जिह्वया चाह त्रिविधं कर्म पातकम् ॥२२॥

| | | | |
|--------------|--------------|--------------|-------------------|
| पापं | “பாபத்தை | अनृतं | பொய்யை |
| मनसा | மனதினால் | आह | பேசுகிறான். |
| सम्प्रधारयन् | பற்றுகிறான். | कर्म पातकं च | ஓர் செயலின் பாபம் |
| कायेन | தேகத்தால் | | மேற்கண்டவாறு |
| कुरुते | செய்கிறான். | लिविधम् | மூன்றுவிதம். |
| जिह्वया | நாக்கினால் | | |

भूमिः कीर्तिर्यशो लक्ष्मीः पुरुषं प्रार्थयन्ति हि । स्वर्गस्थं चानुपश्यन्ति सत्यमेव भजेत तत् ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|-------------|--------------------|
| भूमिः | “பூமியும் | अनुपश्यन्ति | ஏற்றுக்கொள்ளுகின் |
| कीर्तिः | இகலோகப்புகழும் | | றன. |
| यशः | பரலோகப்புகழும் | तत् | ஆகையால் |
| लक्ष्मीः | லக்ஷ்மியும் | सत्यं एव | ஸத்யமொன்றைத் |
| पुरुषं हि | தீரிகரணசத்தியுள்ள | | தான் |
| | ஒருவனைத்தான் | भजेत | (ஓவ்வொருவனும்) சர் |
| प्रार्थयन्ति | விரும்புகின்றன. | | வழுமாய்க்கொள்ள |
| स्वर्गस्थं च | ஸ்வர்க்கத்திற்குரிமை | | வேண்டும். |
| | பெற்றவனாகவும் | | |

श्रेष्ठं ह्यनार्यमेव स्याद्यद्भवानवधार्य माम् । आह युक्तिकरैर्वाक्यैरिदं भद्रं कुरुष्व ह ॥२४॥

| | | | |
|------------|---------------------|-----------|--------------------|
| भवान् | “தேவரீர் | इदं | இதை |
| மா | அடியேனுக்கு | कुरुष्व | நீ செய்வாயாக' என்ற |
| श्रेष्ठं | நல்லதென | यत् हि | எதொன்றை |
| अवधार्य | திருவுளத்தில் பற்றி | आह | அருளிச்செய்தீரோ |
| युक्तिकरैः | அதற்கேற்ற | | அது |
| वाक्यैः | சொற்கொண்டு | अनार्य एव | சின்தையிலும் ஆராய |
| भद्रं | ‘நல்லதாகிய | स्यात् ह | உரிமையற்றதாய் |
| | | | அகிறதே! |

कथं ह्यहं प्रतिज्ञाय वनवासमिमं गुरोः । भरतस्य करिष्यामि वचो हित्वा गुरोर्वचः॥२५॥

| | | | |
|------------|-------------------|-----------|--------------|
| अहं | “நான் | वचः | ஆக்கினையை |
| गुरोः | தந்தைக்கு | हिंवा | உபேக்ஷித்து, |
| इमं | இந்த | भरतस्य | பரதனுடைய |
| वनवासं | வனவாஸத்தை | वचः | விண்ணப்பத்தை |
| प्रतिज्ञाय | வாக்களித்துவிட்டு | कथं हि | எங்ஙனம்தான் |
| गुरोः | தந்தையினது | करिष्यामि | செய்வேன்? |

स्थिरा मया प्रतिज्ञाता प्रतिज्ञा गुरुसंनिधौ । प्रहृष्टमानसा देवी कैकेयी चाभवत्तदा ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|---------------|-------------------|
| गुरुसंनिधौ | “தந்தையின் முன்னி | तदा | அதுகாரணமாக |
| मया | என்னால் [லையில் | कैकेयी | கைகேயி |
| प्रतिज्ञा | சபதமானது | देवी च | தேவியாரும் |
| स्थिरा | உறுதியாக | प्रहृष्टमानसा | உள்ளம்பூரித்தவளாக |
| प्रतिज्ञाता | வாக்களிக்கப்பட்டது. | अभवत् | ஆயினள். |

वनवासं वसन्नेवं शुचिर्नियतभोजनः । मूलपुष्पफलैः पुण्यैः पितृन्देवांश्च तर्पयन् ॥ २७ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|--------------|------------------------|
| शुचिः | “பரிசுத்தனாய் | मूलपुष्पफलैः | { கிழங்குகளாலும் புஷ்ப |
| नियतभोजनः | நியமத்தோடு புஜிப்ப | | பங்களாலும் பழங்க |
| एवं | இப்படி [வனாய் | | ளாலும் |
| वनवासं | வனவாஸத்தை | पितृन् | பித்ருக்களையும் |
| वसन् | அனுஷ்டிப்பவனாய் | देवान् च | தேவர்களையும் |
| पुण्यैः | புண்ய | तर्पयन् | நான் த்ருப்திசெய் |
| | | | வேன். |

संतुष्टपञ्चवर्गोऽहं लोकयात्रां प्रवर्तये । अकुहः श्रद्धानः सन्कार्याकार्यविचक्षणः ॥ २८ ॥

| | | | |
|---------------------|---------------------|------------|----------------|
| अहं | “நான் | श्रद्धानः | பரலோகநம்பிக்கை |
| अकुहः | உள்ளும் புறமும் | | கொண்டவனாய் |
| | ஒரே வகையாய் | सन् | இருந்துகொண்டு |
| कार्याकार्यविचक्षणः | கார்யாகார்யங்களை | लोकयात्रां | உலகவாழ்வை |
| | நன்கறிந்தவனாய் | प्रवर्तये | நடத்திவருவேன். |
| सन्तुष्टपञ्चवर्गः | { திருப்திகொண்ட பஞ் | | |
| | சேந்திரியங்களையு | | |
| | டையவனாய் | | |

कर्मभूमिमिमां प्राप्य कर्तव्यं कर्म यच्छुभम् । अग्निर्वायुश्च सोमश्च कर्मणां फलभागिनः ॥

इमां
कर्मभूमिं
प्राप्य
शुभं
कर्म
यत् च
कर्तव्यं
“ இந்த
கர்மபூமியை
அடைந்து
புண்ணியமாயிருக்கிற
கர்மமானது
எதுவோ அதொன்றே
அனுஷ்டிக்கத்தக்கது.

अग्निः
वायुः
सोमः च
कर्मणां
फलभागिनः
அக்னி:
வாயு:
சந்திரபகவானும்
கர்மங்களுடைய
பலனைத்தானனுபவிக்கின்றன.

शतं क्रतूनामाहत्य देवराट् विदिवं गतः । तपांस्युग्राणि चास्थाय दिवं याता महर्षयः ॥

देवराट्
क्रतूनां शतं
आहत्य
विदिवं
गतः
“ தேவேந்திரன்
நூறுயாகங்களை
இயற்றி
இந்திரலோகத்தை
அடைந்தான்.

महर्षयः
उग्राणि
तपांसि
आस्थाय च
दिवं याताः
மகரிவதிகள்
கடும்
தவங்களை
புரிந்தே
ஸ்வர்க்கமடைந்தார்கள்.

अमृष्यमाणः पुनरुग्रतेजा निशम्य तन्नास्तिकवाक्यहेतुम् ।

अथाब्रवीत् नृपतेस्तनूजो विगर्हमाणो वचनानि तस्य

॥ ३१ ॥

अथ
नृपतेः
तनूजः
नास्तिकवाक्यहेतुं
निशम्य
तत्
उग्रतेजाः
இப்பொழுது
சக்கிரவர்த்தியாரது
சுமாரராகுமவர்
நாஸ்திகவாதம்
சொன்னவரை
நினைத்து
அதனால்
கடுஞ்சினம்கொண்ட
வராய்

अमृष्यमाणः
तस्य
वचनानि
विगर्हमाणः
तं
पुनः
अब्रवीत्
மன்னிக்க மனம்வரா
தவராகி
அவரது
சொற்களை
கண்டிக்கின்றவராய்
அவரைப்பார்த்து
மீண்டுமிப்படி
மொழிந்தார் :

सत्यं च धर्मं च पराक्रमं च भूतानुकम्पां प्रियवादितां च ।

द्विजातिदेवातिथिपूजनं च पन्थानमाहुस्त्रिदिवस्य सन्तः

॥ ३२ ॥

सन्तः
सत्यं च
धर्मं च
पराक्रमं च
भूतानुकम्पां
प्रियवादितां च
“ பெரியோர்கள்
ஸத்யத்தையும்,
தர்மத்தையும்,
போரில் பின்வாங்காத
சூரத்தனத்தையும்,
எல்லாப்பிராணிகளிட
த்திலுமிரக்கத்தையும்,
இனிய சொல் கூறு
வதையும்,

द्विजातिदेवातिथि-
पूजनं च
त्रिदिवस्य
पन्थानं
आहुः
அந்தணர்களையும், தே
வர்களையும், அத்திக
ளையும், ஆராதித்த
லையும்,
ஸ்வர்க்கத்திற்கு
உரிமைவினைவிக்கும்
சாதனங்களாக
சொல்லியிருக்கிறார்
கள்.

तेनैवमाज्ञाय यथावदर्थमेकोदयं संप्रतिपद्य विप्राः ।

धर्मं चरन्तः सकलं यथावत्काङ्क्षन्ति लोकागममप्रमत्ताः

॥ ३३ ॥

| | | | |
|---------|------------------------|--------------|-------------------------|
| तेन | “அக்காரணத்தால் தான் | सम्प्रतिपद्य | அடைந்து |
| विप्राः | அந்தணர்கள் | सकलं | எல்லாவற்றையும் |
| एवं | இப்படியாய் | यथावत् | முறைப்படி |
| धर्मं | தர்மமாகிற | अप्रमत्ताः | தடுமாறுதவர்களாய் |
| अर्थं | பயனை | चरन्तः | அனுஷ்டித்துக்கொண்டு |
| यथावत् | உள்ளபடி | लोकागमं | புண்ணியலோகப்பரப்பினை |
| आज्ञाय | அறிந்து | काङ्क्षन्ति | எதிர்பார்க்கின்றார்கள். |
| एकोदयं | ஒற்றுமையை | | |

निन्दाभ्यहं कर्म पितुः कृतं तद्यस्त्वामगृह्णाद्विषमस्थबुद्धिम् ।

बुद्ध्याऽनयैवविधया चरन्तं सुनास्तिकं धर्मपथादपेतम्

॥ ३४ ॥

| | | | |
|----------------|---|-----------|-----------------------------|
| एवंविधया | “இப்படிப்பட்ட | त्वां | தேவரீரை |
| अनया | இந்த | यः | எவரொருவர் |
| बुद्ध्या | அறிவுகொண்டு | अगृह्णात् | ஏற்றுக்கொண்டிருந்தனரோ அந்த |
| धर्मपथात् | தருமவழியினின்று | पितुः | தந்தையாரால் |
| अपेतं | உப்புறப்பட்டவராய் | कृतं | செய்யப்பட்ட |
| विषमस्थबुद्धिं | { அபாயத்தை விளைவிக்கும் தீர்மானமுடையவராய் | तत् | அந்த |
| सुनास्तिकं | முழுநாஸ்திக ஸம்பிரதாயத்தை | कर्म | காரியத்தை |
| चरन्तं | அனுஷ்டிக்கும் | अहं | நான் |
| | | निन्दामि | இப்பொழுது தப்பென கண்கிறேன். |

यथा हि चोरः स तथा हि बुद्धस्तथागतं नास्तिकमत्र विद्धि ।

तस्माद्धि यः शङ्क्यतमः प्रजानां न नास्तिकेनाभिमुखो बुधः स्यात् ॥ ३५ ॥

| | | | |
|----------|--------------------------|------------------|---------------------|
| सः | “அந்த | विद्धि | தன்கு அறிவதாக. |
| बुद्धः | புத்தர் | तस्मात् हि | ஆகையால்தான் |
| चोरः | திருடன் | बुधः | புத்தியான் |
| यथा हि | எப்படியோ | प्रजानां | ஐனங்களுக்கு |
| तथा हि | அப்படியே | नास्तिकेन | நாஸ்திகவாதத்தால் |
| अत्र | இவ்வுலகில் | शङ्क्यतमः | சந்தேகிக்கத்தக்கவன் |
| तथागतं | புத்தமதமும் | यः | எவனோ அவனுக்கு |
| नास्तिकं | வேதத்திற்கப்புறப்பட்டதென | अभिमुखः स्यात् न | முகம் கொடான். |

त्वत्तो जनाः पूर्वतरे वराश्च शुभानि कर्माणि बहूनि चक्रुः ।

जित्वा सदेमं च परं च लोकं तस्माद्विजाः स्वस्ति हुतं कृतं च ॥ ३६ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|-----------|-------------------|
| तस्मात् | “ ஆகையால் | जित्वा | மேன்மைபெற்று |
| त्वत्तः | தேவரீரைக்காட்டிலும் | सदा | எக்காலத்திலும் |
| पूर्वतरे | பெரியோர்களும் | हुतं | யாகாதிகளையும் |
| वराः च | சிறந்தவர்களுமான | कृतं | தானாதிகளையும் |
| द्विजाः जनाः | ஆந்தணர்கள் | बहूनि | பல |
| इमं च | இவ்வுலகிலும் | शुभानि | வைதிக |
| परं च लोकं | பரலோகத்திலும் | कर्माणि च | கர்மங்களையும் |
| स्वस्ति | சுகமே | चक्रुः | அனுஷ்டித்தார்கள். |

धर्मे रताः सत्पुरुषैस्समेतास्तेजस्विनो दानगुणप्रधानाः ।

अहिंसका वीतमलाश्च लोके भवन्ति पूज्या मुनयः प्रधानाः ॥ ३७ ॥

| | | | |
|----------------|----------------------|----------|---------------------|
| तेजस्विनः | “ பெருந்தன்மை | अहिंसकाः | { எவருக்கும் ஹிம்ஸை |
| प्रधानाः | யுடையவர்களும் | | வினோவிக்காதவர்க |
| धर्मे | மிகப்பிரசித்தபெற்ற | | ளும், |
| रताः | தர்மத்தில் [வர்களும் | वीतमलाः | ஆந்தக்கரணசுத்தி |
| सत्पुरुषैः | பற்றுடையவர்களும், | | யுள்ளவர்களுமான |
| समेताः | ஸக்புருஷர்களோடு | मुनयः च | முனிவர்கள்தான் |
| | சேர்ந்திருப்பவர்க | लोके | உலகில் |
| | ளும், | पूज्याः | பூஜைக்குரியவர்களாய் |
| दानगुणप्रधानाः | { ஈகைக்குணமே பிர | भवन्ति | ஆகின்றார்கள்.” |
| | தானமாகவுடைய | | |
| | வர்களும், | | |

इति ब्रुवन्तं वचनं सरोषं रामं महात्मानमदीनसत्त्वं

उवाच तथ्यं पुनरास्तिकं च सत्यं वचः सानुनयं च विप्रः ॥ ३८ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|-----------|------------------|
| विप्रः | அந்தணர் | पुनः | மீளவும் |
| इति | மேற்கண்ட | आस्तिकं | ஆஸ்திகமதத்தைத் |
| तथ्यं | உண்மையான | | தழுவியதும், |
| वचनं | வார்த்தையை | सत्यं च | உண்மையுமான |
| सरोषं | கோபத்துடன் | वचः | பின்வரும் மொழியை |
| ब्रुवन्तं | பேசின | सानुनयं च | தணிந்து |
| अदीनसत्त्वं | எதற்கும் சலியாத | उवाच | கூறினார் : |
| महात्मानं | மகாத்மாவாகிய | | |
| रामं | ஸ்ரீராமரைப்பார்த்து | | |

न नास्तिकानां वचनं ब्रवीम्यहं न नास्तिकोऽहं न च नास्ति किञ्चन ।
समीक्ष्य कालं पुनरास्तिकोऽभवं भवेय काले पुनरेव नास्तिकः ॥ ३९ ॥

அஹ்
நாஸ்திகானா
வசனம்
வ்ரவீமி ந
அஹ்
நாஸ்திக: ச
ந
கிஞ்ஞ
ந அஸ்தி
ந

“நான்
நாஸ்திகர்களுடைய
வார்த்தையை
சொல்லவில்லை.
நான்
நாஸ்திகனும்
அல்லேன்.
எதுவும்
இல்லையென்பதும்
இல்லை.

காலம்
சமீக்ய
புன:
ஆஸ்திக:
பவேய
காலே
புன: ஂவ
நாஸ்திக:
அபவம்

சமயத்தை
கருதி
அதற்கேற்றபடி
ஆஸ்திகனாய்
இருப்பேன்.
இச்சமயத்தில்
அதற்கேற்றபடி
நாஸ்திகனாய்
இருந்தேன்.

स चापि कालोऽयमुपागतः शनैर्यथा मया नास्तिकवागुदीरिता ।
निर्वर्तनार्थं तव राम कारणात्प्रसादनार्थं तु मयैतदीरितम् ॥ ४० ॥

ராம
ச:
அயம்
கால: அபி
சனै:
காரணாத்
உபாஸத:
யதா
மயா

“ஸ்ரீராம!
அந்த காலமும்
இந்த
காலமும்,
ஒன்றின் பின்னொன்று
நடைபெற்ற காரியத்
வந்தது [தால்
ஆகையால்
என்னால்

நாஸ்திகவாதமானது
மொழியப்பட்டது;
என்னால்
இது
இப்பொழுது
தேவரீரை
அருள்புரிந்து
திரும்பிவழைத்துப்
போவதென்பொருட்டு
சொல்லப்பட்டது.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे नवोत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 6397

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 4042



दशोत्तरशततमः सर्गः—நாற்றுப்பத்தாவது ஸர்க்கம் ॥ २२० ॥

मनुवंशकीर्तनम्—மனுவம்சத்தைச் சொல்வது.

क्रुद्धमाज्ञाय रामं तु वसिष्ठः प्रत्युवाच ह । जाबालिरपि जानीते लोकस्यास्य गतागतिम्॥

வஸிஷ்டபகவான்
ராமம்
து
க்ருத்
ஆஜாய

ஸ்ரீராமரை
இன்னும்
சினங்கொண்டிருப்ப
கண்டு [வராய்

புதுவாச
ஜாபாலி: அபி
அஸ்ய லோகஸ்ய
கதாஸதி ஂ
ஜானிதே

பின்வருமாறு பேசி
“ஜாபாலியும் [ஞர்:
இந்த உலகினது
பிறப்பிறப்பையும்
நன்கறிவார்.

निवर्तयितुकामस्तु त्वामेतद्वाक्यमुक्तवान् । इमां लोकसमुत्पत्तिं लोकनाथ निबोध मे ॥

लोकनाथ “लோகநாதா !
 त्वां உன்னை
 निवर्तयितुकामः திரும்பியழைத்துப்
 போக ஆசையுற்றவ
 एतत् இந்த [ராய்
 वाक्यं சொல்லை

उक्तवान् சொன்னார்.
 तु இப்பொழுது
 इमां இந்த
 लोकसमुत्पत्तिं உலகப்பிறப்பையும்
 मे என்னிடமிருந்து
 निबोध நீயறிவாயாக.

सर्वं सलिलमेवासीत्पृथिवी यत्र निर्मिता । ततः समभवद्ब्रह्मा स्वयंभूदैवतैः सह ॥ ३ ॥

सलिलं एव “ஜலமயமாகவே
 सर्वं எல்லாமும்
 आसीत् இருந்தது.
 यत्र அதில்
 पृथिवी பூமி
 निर्मिता இயற்றப்பட்டது.

ततः அதன்மேல்
 स्वयंभूः சுயம்புவான
 ब्रह्मा பிரம்மதேவர்
 दैवतैः सह தேவர்களோடுகூட
 समभवत् தோன்றினார்.

स वराहस्ततो भूत्वा प्रोज्जहार वसुन्धराम् । असृजच्च जगत्सर्वं सह पुत्रैः कृतात्मभिः ॥

ततः “அதன்மேல்
 वराहः வராஹமூர்த்தி
 भूत्वा தோன்றி
 वसुन्धरां பூமியை
 प्रोज्जहार மேலிழுத்தார்.
 च அதன்மேல்

सः அவர் (பிரம்மதேவர்)
 कृतात्मभिः நற்குணசாலிகளான
 पुत्रैः सह புதல்வர்களுடன்கூட
 जगत् सर्वं ஜகம் எல்லாவற்றை
 असृजत् சிருஷ்டித்தார்.

आकाशप्रभवो ब्रह्मा शाश्वतो नित्य अव्ययः । तस्मान्मरीचिः संज्ञे मरीचेः कश्यपः सुतः॥

आकाशप्रभवः “அந்தரிக்ஷத்தில்
 தோன்றியவர்
 ब्रह्मा பிரம்மதேவர் ;
 शाश्वतः சாச்வதமாயிருப்பவர் ;
 नित्यः ஒரேமாதிரியாயிருப்ப
 வர் ;
 अव्ययः காலதேசங்களுக்கப்
 புறப்பட்டவர்.

तस्मात् அவரிடமிருந்து
 मरीचिः { பத்து பிரஜாபதிகளி
 லொருவராகிய மர்சி
 येनपवर्
 संज्ञे உண்டானார்.
 मरीचेः மர்சியினது
 सुतः புதல்வர்
 कश्यपः கச்யபர்.

विवस्वान्कश्यपाज्ज्ञे मनुर्वैवस्वतः स्मृतः । स तु प्रजापतिः पूर्वमिक्ष्वाकुस्तु मनोः सुतः ॥

कश्यपात् “கச்யபரிடமிருந்து
 विवस्वान् சூர்யபகவான்
 ज्ञे உண்டானார்.
 मनुः மனுவென்பவர்
 वैवस्वतः சூர்யபகவானின்
 स्मृतः புதல்வனென
 கூறப்பட்டிருக்கிறது.

सः तु அவர்தான்
 पूर्व प्रजापतिः உனது வம்சத்து
 முதற்புருஷர்.
 मनोः மனுவின்
 सुतः तु புதல்வர்தான்
 इक्ष्वाकुः இக்ஷ்வாகுவென்பவர்.

यस्येयं प्रथमं दत्ता समृद्धा मनुना मही । तमिक्ष्वाकुमयोध्यायां राजानं विद्धि पूर्वकम् ॥

மனுநா “மனுவினால்
இய் இந்த
சமृद्धா வளமுள்ள
மஹி பூமியானது
யச்ய எவருக்கு
प्रथमं முதல்முதல்
दत्ता கொடுக்கப்பட்டதோ

तं அந்த
इक्ष्वाकुं இக்ஷ்வாகுவை
अयोध्यायां அயோத்தியில்
पूर्वकं முதல்
राजानं அரசராய்
विद्धि நியறி.

इक्ष्वाकोस्तु सुतः श्रीमान्कुक्षिरेवेति विश्रुतः । कुक्षेरथात्मजो वीरो विकुक्षिरुदपद्यत ॥८॥

इक्ष्वाको: “இக்ஷ்வாகுவினு
டைய
सुतः तु மகன்தான்
श्रीमान् ஸ்ரீமானும்
विश्रुतः एव புகழ்பெற்றவனுமான
कुक्षिः इति குக்சி என்பவன்.

अथ அனந்தரம்,
वीरः வீரனை
विकुक्षिः விகுக்சி என்பவன்
कुक्षे: குக்சியினது
आत्मजः புதல்வனாக
उदपद्यत உண்டானான்.

विकुक्षेस्तु महातेजा बाणः पुत्रः प्रतापवान् । बाणस्य तु महाबाहुरनरण्यो महायशः ॥

विकुक्षे: “விகுக்சியினுடைய
पुत्रः तु மகன்தான்
महातेजा: மகாதேஜஸ்வியும்
प्रतापवान् ப்ரதாபசாலியுமான
बाणः பாணனென்பவன்.
महाबाहु: மகாபாகுவும்

महायशः மகா புகழ் படைக்கப்
பெற்றவனுமான
अनरण्यः அனரண்யனென்
பவன்
बाणस्य तु பாணனுடைய புத்தி
ரன்.

नानावृष्टिर्बभूवास्मिन्न दुर्भिक्षं सतां वरे । अनरण्ये महाराजे तस्करो नापि कश्चन ॥१०॥

सतां “புண்ணியா த்மாக்க
ளான
वरे உத்தமரான
अस्मिन् இந்த
अनरण्ये அனரண்யர்
महाराजे சக்கிரவர்த்தியாயிருக்
கையில்

अनावृष्टिः மழைமீட்டிப்பென்பது
बभूव न இல்லை;
दुर्भिक्षं பஞ்சமென்பது
न இல்லை;
कश्चन ஒரு
तस्करः अपि திருடனும்
न இல்லை.

अनरण्यान्महाबाहुः पृथू राजा बभूव ह । तस्मात्पृथोर्महाराजस्त्रिशङ्कुरुदपद्यत ॥ ११ ॥

अनरण्यात् “அனரண்யரிட
மிருந்து
महाबाहु: மகாபாகுவும்
राजा சக்கிரவர்த்தியுமான
पृथु: பிருதுவென்பவர்
बभूव பிறந்தார்.

तस्मात् அந்த
पृथो: ह பிருதுவிடமிருந்து
தான்
त्रिशङ्कः த்ரிசங்குவென்னும்
महाराजः சக்கிரவர்த்தியார்
उदपद्यत பிறந்தார்.

स सत्यवचनाद्वीरः सशरीरो दिवं गतः

॥ १२ ॥

वीरः “தர்மவீரராகும்

सत्यवचनात्

ஸத்யவசனத்தால்

सः अवर्

सशरीरः

தனதுடலுடனே

दिवं गतः

ஸ்வர்க்கமடைந்தார்.

त्रिशङ्कोस्त्वभवत्सूनुर्धुन्धुमारो महायशः । धुन्धुमारान्महातेजा युवनाश्वो व्यजायत ॥ १३ ॥

त्रिशङ्कोः “த்ரிசங்குவிற்கு

अभवत्

பிறந்தார்.

महायशः மகாயசஸ்வியான

महातेजाः

மகாதேஜஸ்வியான

धुन्धुमारः तु तून्तुमारரென்பவர்

युवनाश्वः

யுவனாச்வரென்பவர்

தான்

धुन्धुमारात्

தூந்துமாரரிடமிருந்து

सूनुः புதல்வனாய்

व्यजायत

பிறந்தார்.

युवनाश्वसुतः श्रीमान्मान्धाता समपद्यत । मान्धातुस्तु महातेजाः सुसन्धिरुदपद्यत ॥ १४ ॥

श्रीमान् “ஸ்ரீமானான

मान्धातुः

மாந்தாதாவிற்கு

मान्धाता மாந்தாதாவென்பவர்

महातेजाः

மகாதேஜஸ்வியான

युवनाश्वसुतः யுவனாச்வருக்குப் பு

सुसन्धिः तु

ஸ்ஸந்திதான்

समपद्यत பிறந்தார். [தல்வராய்

उदपद्यत

பிள்ளையாய் பிறந்தார்.

सुसन्धेरपि पुत्रौ द्वौ ध्रुवसन्धिः प्रसेनजित् । यशस्वी ध्रुवसन्धेस्तु भरतो रिपुसूदनः ॥

ध्रुवसन्धिः “த்ருவசந்தியென்ப

पुत्रौ

குமாரர்கள்.

வனும்

रिपुसूदनः

சத்ருஸம்ஹாரக

प्रसेनजित् பிரஸேனஜித் என்ப

यशस्वी

புகழ்பெற்ற [னென

வனுமாகிய

भरतः

பரதனென்பவன்

द्वौ अपि இவ்விருவர்கள் தான்

ध्रुवसन्धेः तु

த்ருவசந்தியின்

सुसन्धेः சுசந்தியினது

புதல்வன்.

भरतात्तु महाबाहोरसितो नामतोऽभवत् । यस्यैते प्रतिराजान उदपद्यन्त शत्रवः ॥

॥ १६ ॥

हैहयास्तालजङ्घाश्च शूराश्च शशिविन्दवः

महाबाहोः “மகாபாகுவான

तालजङ्घाः च

தாலஜங்கார்களென்ப

भरतात् பரதனிடமிருந்து

வர்களும்,

असितः नामतः तु अवलितனென்பவன்

शशिविन्दवः च

சசிபிந்துக்களென்

अभवत् பிறந்தான். [தான்

பவர்களும்

यस्य அவனுக்கு

शत्रवः

எதிரிகளாய்

एते शूराः இந்த சூரர்களாகிய

प्रतिराजानः

பகைமன்னர்களாய்

हैहयाः ஹேஹயரென்பவர்

उदपद्यन्त

ஏற்பட்டார்கள்.

களும்,

तांस्तु सर्वान्प्रतिव्यूह युद्धे राजा प्रवासितः । स च शैलवरे रम्ये बभूवाभिरतो मुनिः ॥

राजा सः “அரசரான அவர்

रम्ये

அழகிய

तान् அந்த

शैलवरे

இமயமலையில்

सर्वान् तु எல்லோரையும்

अभिरतः

மனத்ருப்திகொண்ட

प्रतिव्यूह எதிர்த்து [பட்டு

मुनिः च

தவசியாய் [வராய்

युद्धे प्रवासितः போரில்விரட்டப்-

बभूव

காலங்கழித்தார்.

द्वे चास्य भार्ये गर्भिण्यौ बभूवतुरिति श्रुतिः ॥ १८ ॥

| | | | |
|--------|--------------|-----------|--------------|
| अस्य | “இவருடைய | गर्भिण्यौ | கர்பிணிகளாய் |
| भार्ये | மனைவிமார்கள் | बभूवतुः | இருந்தனர் |
| द्वे च | இருவர்களும் | इति | என்று |
| | | श्रुतिः | கேள்வி. |

एका गर्भविनाशाय सपत्न्यै तु गरं ददौ ॥ १९ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|----------|---------------|
| एका तु | “இவர்களிலொருத்தி | सपत्न्यै | சக்களத்திக்கு |
| गर्भविनाशाय | கருவையழிப்பதற்காக | गरं | விஷத்தை |
| | | ददौ | கொடுத்தாள். |

भार्गवश्च्यवनो नाम हिमवन्तमुपाश्रितः । तमृषिं साऽभ्युपागम्य कालिन्दी चाभ्यवादयत्॥

| | | | |
|------------|--------------------|--------------|--------------------|
| भार्गवः | “பிடுகுவின் புதல்வ | सा | அவள் |
| | ராகிய | तं | அந்த |
| च्यवनः नाम | சயவனரென்பவர் | ऋषिं | புனிவரை |
| हिमवन्तं | ஹிமவத்பர்வதத்தில் | अभ्युपागम्य | அணுகி |
| उपाश्रितः | இருந்தார். | अभ्यवादयत् च | விஷயத்தைத்தொரிவித் |
| कालिन्दी | காளிந்தியெனப்பெயர் | | தனள். |
| | பூண்ட | | |

स तामभ्यवदद्विप्रो वरेप्सुं पुत्रजन्मनि । पुत्रस्ते भविता देवि महात्मा लोकविश्रुतः ॥

धार्मिकश्च सुशीलश्च वंशकर्ताऽरिसूदनः ॥ २१ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-------------|---------------------|
| सः | “அந்த | महात्मा | மகாத்மாவும் |
| विप्रः | அந்தணர் | लोकविश्रुतः | உலகப்பிரசித்திபெற்ற |
| पुत्रजन्मनि | புத்திரனைப்பெறும் | | வனும் |
| | விஷயத்தில் | धार्मिकः च | தார்ப்களும் |
| वरेप्सुं | வரம்கோரும் | सुशीलः | சீலவானும் |
| तां | அவளைப்பார்த்து | वंशकर्ता | வம்சத்தை விளங்கச் |
| अभ्यवदत् | பின்வருமாறு சொன் | | செப்பவனும் |
| | னார் : | अरिसूदनः च | சத்ருஸம்ஹாரகனு |
| देवि | ‘தேவி! | पुत्रः | ஓர் புதல்வன் [மாகிய |
| ते | உனக்கு | भविता | பிரப்பான்.] |

कृत्वा प्रदक्षिणं हृष्टा मुनिं तमभिवाच च । पद्मपत्रविशालाक्षी पद्मगर्भसमप्रभम् ॥

ततः सा गृहपागम्य देवी पुत्रं व्यजायत ॥ २२ ॥

| | | | |
|--------------------|-------------------|-----------------|------------------------|
| सा | “அந்த | ततः | அவ்விடத்திலிருந்து |
| पद्मपत्रविशालाक्षी | தாமரையிதழ்போன்ற | गृहं | வீட்டிற்கு |
| | கண்களையுடைய | आगम्य च | வந்துசேர்ந்து |
| देवी | தேவி, | | |
| हृष्टा | மனம்பூரித்தவளாய், | पद्मगर्भसमप्रभं | { தாமரைப்பூவின் நடுத்த |
| तं मुनिं | அந்த ரிஷியை | | தளத்தையொத்த |
| प्रदक्षिणं कृत्वा | பிரதக்ஷணம் செய்து | पुत्रं | ஓர் புதல்வனை |
| अभिवाच | நமஸ்கரித்து | व्यजायत | பெற்றாள். |

सपत्न्या तु गरस्तस्यै दत्तो गर्भजिघांसया । गरेण सह तेनैव जातः स सगरोऽभवत् ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|--------|------------------|
| सपत्न्या | “சக்களத்தியால் | जातः | பிறந்தான்: |
| गर्भजिघांसया | கருவழிக்க ஆசையால் | तेन एव | அக்காரணத்தினாலே |
| तस्यै | அவளுக்கு | | யே |
| गरः | விஷமானது | सः तु | அவனும் |
| दत्तः | கொடுக்கப்பட்டது. | सगरः | ஸகரனென |
| गरेण सह | விஷத்தோடுகூட | अभवत् | அழைக்கப்பட்டான். |

स राजा सगरो नाम यः समुद्रमखानयत् । इष्ट्वा पर्वणि वेगेन त्रासयन्तामिमाः प्रजाः ॥

| | | | |
|---------|-----------------|----------|-----------------|
| यः | “எவரொருவர் | वासयन्तं | அஞ்சச்செய்யும் |
| इष्ट्वा | யாகம்செய்து | समुद्रं | சமுத்திரத்தை |
| पर्वणि | பருவகாலங்களில் | अखानयत् | தோண்டுவித்தாரோ, |
| वेगेन | ஜலமுழுக்கத்தால் | सः | அவர்தான் |
| इमाः | இந்த | सगरः नाम | ஸகரனென்ற |
| प्रजाः | பிரஜைகளை | राजा | சக்கிரவர்த்தி. |

असमञ्जस्तु पुत्रोऽभूत्सगरस्येति नः श्रुतम् । जीवन्नेव स पित्रा तु निरस्तः पापकर्मकृत् ॥

| | | | |
|-----------|--------------|-------------|----------------------|
| सगरस्य | “ஸகரனுக்கு | सः | அவன் |
| असमञ्जः | அஸமஞ்சனென்று | पापकर्मकृत् | தீச்செயல் புரிபவனாய் |
| पुत्रः तु | ஒரு புதல்வன் | तु | இருந்தமையால் |
| अभूत् | இருந்தான் | पित्रा | தந்தையால் |
| इति | என்று | जीवन् एव | உயிரோடிருக்கையி |
| नः | எங்களுக்கு | | லேயே |
| श्रुतं | கேள்வி. | निरस्तः | தூத்தப்பட்டான். |

अंशुमानिति पुत्रोऽभूदसमञ्जस्य वीर्यवान् । दिलीपोऽंशुमतः पुत्रो दिलीपस्य भगीरथः ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|----------|---------------|
| असमञ्जस्य | “அஸமஞ்சனுக்கு | अंशुमतः | அம்சுமானின் |
| वीर्यवान् | வீர்யவானான | पुत्रः | புதல்வன். |
| अंशुमान् इति | அம்சுமானென்றவன் | भगीरथः | பகீரதனென்பவன் |
| अभूत् | பிறந்தான். | दिलीपस्य | திலீபனின் |
| दिलीपः | திலீபனென்பவன் | पुत्रः | புதல்வன். |

भगीरथात्ककुत्स्थस्तु काकुत्स्था येन विश्रुताः । ककुत्स्थस्य च पुत्रोऽभूद्रघुयेन तु राघवाः ॥

| | | | |
|--------------|------------------------|-----------|------------------|
| भगीरथात् | “பகீரதனிடத்திலி | पुत्रः च | புத்திரராக |
| | ருந்து | रघुः | ரகுவென்பவர் |
| ककुत्स्थः तु | ககுத்தஸ்தர் பிறந்தார். | अभूत् | பிறந்தார். |
| येन | இவரால் | येन | இவரால் |
| काकुत्स्थाः | காகுத்தஸ்தர்களென | राघवाः तु | ராகவர்களென விளங் |
| विश्रुताः | விளங்குகின்றீர்கள். | | குகிறீர்கள். |
| ककुत्स्थस्य | ககுத்தருடைய | | |

रघोस्तु पुत्रस्तेजस्वी प्रवृद्धः पुरुषादकः । कल्माषपादः सौदास इत्येवं प्रथितो भुवि ॥

ரஃ: “ரகுவினது
புல: து புதல்வன் தான்
தேஜஸ்வி பாகிய
சௌடாச: ஸௌதாஸனென்
பவன்.
பவ்ருத்தனெனவும்

புரூபாதகனெனவும்
கல்மாஷபாதனெ
னவும்
இதி எங் இந்த இப்பெயர்
புவி உலகில் [கனோடும்
புரித: விளங்கினான்.

कल्माषपादपुत्रोऽभूच्छङ्खणस्त्विति विश्रुतः । यस्तु तद्वीर्यमासाद्य सहसेनो व्यनीनशत् ॥

கல்மாஷபாது: “கல்மாஷபாதனின்
புதல்வன்
சங்கண: இதி சங்கணனென
விசுருத: பிரசித்திபெற்றவனாக
அபூத் இருந்தான்.

ய: அவன்
சகசென: து சௌனியத்துடன்
தவீர்ய அவனது (கல்மாஷபா
தனது) பலத்தை
அசாடிய அடைந்து
வயினிநசத் அழிந்தான்.

शङ्खणस्य च पुत्रोऽभूच्छूरः श्रीमान्सुदर्शनः । सुदर्शनस्याग्निवर्ण अग्निवर्णस्य शीघ्रगः ॥

சங்கணசு “சங்கணனுக்கு
சூர: சூரனும்
சுரீமான் ஸுரீமானாகிய
சுதர்சன: சுதர்சனனென்பவன்
அபூத் பிறந்தான்.
சுதர்சனசு சுதர்சனனுக்கு

அகிவரண: அக்னிவர்ணனென்ப
வனும்
அகிவரணசு அக்னிவர்ணனென்ப
வனுக்கு
சீகிர: சீகிரனென்பவனும்
புரு: புதல்வன்.

शीघ्रगस्य मरुः पुत्रो मरोः पुत्रः प्रशुश्रुकः । प्रशुश्रुकस्य पुत्रोऽभूदम्बरीषो महाद्युतिः ॥

சீகிரசு “சீகிரனுடைய
புல: புத்திரன்
மரு: மரு.
மரோ: மருவினது
புல: புதல்வன்
புருசுசுருக: பிரசுசுருகன்.

புருசுசுருகனுக்கு
மகாதுதி: மகாதேஜோவானாகிய
அம்பரீஷ: அம்பரீஷனென்பவன்
புல: பிள்ளையாய்
அபூத் பிறந்தான்.

अम्बरीषस्य पुत्रोऽभून्नहुषः सत्यविक्रमः । नहुषस्य च नाभागः पुत्रः परमधार्मिकः ॥

அம்பரீஷசு “அம்பரீஷனுக்கு
சத்யவிக்ரம: வீணாகாத பராக்கிர
மமுடைய
நஹுஷ: நகுஷன்
புல: புத்திரனாய்

அபூத் பிறந்தான்.
நஹுஷ: நகுஷனுக்கு
பரமதர்மிக: மிக தார்மிகனான
நாபாக: நாபாகன்
புல: அருமையான பேரன்.

अजश्च सुव्रतश्चैव नाभागस्य सुताबुभौ । अजस्य चैव धर्मात्मा राजा दशरथः सुतः ॥३३॥

| | | | |
|-----------|----------------|-----------|------------------|
| अजः च | “அஜனென்பவனும் | धर्मात्मा | தர்மா த்மாவாகும் |
| सुव्रतः च | ஸுவ்ரதனென்பவனு | दशरथः | தசரத |
| | மான | राजा | சக்கிரவர்த்தி |
| उभौ एव | இருவர்களும் | अजस्य | அஜனுடைய |
| नाभागस्य | நாபாகனது | सुतः एव च | புதல்வர்தான். |
| सुतौ | புதல்வர்கள். | | |

तस्य ज्येष्ठोऽसि दायदो राम इत्यभिविश्रुतः । तद्रूपाण स्वकं राज्यमवेक्षस्व जनं नृप ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-----------|---------------------|
| तस्य | “அவருடைய | असि | இருக்கின்றனை. |
| दायादः | அரசாளுகைக்குரிமை | तत् | ஆனபடியால் |
| | யுற்ற | स्वकं | உனது |
| ज्येष्ठः | மூத்தகுமாரன் நீ. | राज्यं | ராஜ்யத்தை |
| रामः | ராமன் | गृहाण | ஏற்றுக்கொள். |
| इति | என்று | नृप | சக்கிரவர்த்திகுமார! |
| अभिविश्रुतः | தீரிலோகப்பிரசித்தி | जनं | உலகை |
| | பெற்றவனாகவும் | अवेक्षस्व | பரிபாலனம் பண்ணு. |

इक्ष्वाकूणां हि सर्वेषां राजा भवति पूर्वजः । पूर्वजे नावरः पुत्रो ज्येष्ठो राज्येऽभिषिच्यते ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|--------------|------------------|
| हि | “ஏனெனில் | भवति | ஆகிறது. |
| इक्ष्वाकूणां | இக்ஷ்வாகுவம்சத்த | पूर्वजे | ஜ்யேஷ்டனிருக்கை |
| | வர்கள் | अवरः | பின்பிறந்த [யில் |
| सर्वेषां | எல்லோருக்குமே | पुत्रः | புதல்வன் |
| ज्येष्ठः | ஜ்யேஷ்ட | राज्ये | ராஜ்யத்தில் |
| पूर्वजः | தமையன் | अभिषिच्यते न | அபிஷேகம் பண்ணப் |
| राजा | சக்கிரவர்த்தியாய் | | படுவதில்லை. |

स राघवाणां कुलधर्ममात्मनः सनातनं नाद्य विहातुमर्हसि ।

प्रभूतरत्नामनुशाधि मेदिनीं प्रभूतराष्ट्रां पितृवन्महायशः

॥ ३६ ॥

| | | | |
|----------|-----------------|-----------------|-----------------|
| महायशः | “மகாபுகழ்பெற்ற | अर्हसि न | கூடாது. |
| सः | அந்த நீ [வனே ! | पितृवत् | தந்தையாரைப்போ |
| राघवाणां | ராகவர்களுடைய | | லவே |
| सनातनं | முன்னோர்களாலனுப | प्रभूतराष्ट्रां | ஏராளமான ராஜ்யங் |
| | விக்கப்பட்ட | | ளையுடையதும் |
| आत्मनः | உனது | प्रभूतरत्नां | ஏராளமான ரத்தங் |
| कुलधर्मं | குலதருமத்தை | | களையுடையதுமான |
| अद्य | இப்பொழுது | मेदिनीं | உலகை |
| विहातुं | கைவிட | अनुशाधि | ஆண்டுவருவாயாக. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे दशोत्तरशततमः सर्गः ॥



एकादशोत्तरशततमः सर्गः—நூற்றுப்பத்திரௌராவது ஸர்க்கம் ॥ १११ ॥

भरतपरिसान्त्वनम्—பரதனைச் சமாதானம் செய்வது.

वसिष्ठस्तु तदा राममुक्त्वा राजपुरोहितः । अब्रवीद्धर्मसंयुक्तं पुनरेवापरं वचः ॥ १ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------|--------------|---------------------|
| राजपुरोहितः | राजपुரோஹிதரா கிய | पुनः | மீளவும் |
| वसिष्ठः | வவஸிஷ்டபகவான் | रामं | ஸ்ரீராமரைப்பார்த்து |
| तु | இது விஷயத்தில் மேற் கண்டவாறு | धर्मसंयुक्तं | தருமத்தோடுகூடிய |
| उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு | अपरं एव | மற்றும்சில |
| तदा | அதன்மேல் | वचः | வார்த்தையை |
| | | अब्रवीत् | பின்வருமாறு |
| | | | மொழிந்தனர் : |

पुरुषस्येह जातस्य भवन्ति गुरवस्त्रयः । आचार्यश्चैव काकुत्स्थ पिता माता च राघव ॥

| | | | |
|-----------|---------------|------------|---------------|
| काकुत्स्थ | “காகுதஸ்த ! | पिता च | பிதாவும் |
| राघव | ஸ்ரீராம ! | माता च | மாதாவும் |
| इह | இவ்வுலகத்தில் | आचार्यः एव | ஆசிரியருமாகிய |
| जातस्य | பிறந்த | तयः | மூன்று |
| पुरुषस्य | புருஷனுக்கு | गुरवः | குரவர்கள் |
| | | भवन्ति | உண்டு. |

पिता ह्येनं जनयति पुरुषं पुरुषर्षभ । प्रज्ञां ददाति चाचार्यस्तस्मात्स गुरुरुच्यते ॥ ३ ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|-----------|--------------------|
| पुरुषर्षभ | “புருஷோத்தம ! | ददाति | புகட்டுகின்றார். |
| एनं | இந்த | तस्मात् च | ஆனதால்தான் |
| पुरुषं | புருஷனை | सः | அவர் |
| पिता | தந்தை | गुरुः | எல்லோரினும் மேம் |
| जनयति | உண்டுபண்ணுகின் றான். | | பட்டவரென |
| आचार्यः हि | ஆசார்யரோவெனில் | उच्यते | விதிக்கப்பட்டிருக் |
| प्रज्ञां | அறிவை | | கிறது. |

सोऽहं ते पितुराचार्यस्तव चैव परन्तप । मम त्वं वचनं कुर्वन्नातिवर्तेः सतां गतिम् ॥४॥

| | | | |
|---------|-------------------------------------|-------------|-----------------------------|
| परन्तप | “பகைவர்களைத் தபிக் கச்செய்பவனே ! | आचार्यः | ஆசிரியன். |
| सः | அந்த | त्वं | நீ |
| अहं | நான் | मम | எனது |
| ते | உனது | वचनं | ஆக்கினையை |
| पितुः च | தந்தைக்கும் | कुर्वन् | செய்பவனாய் |
| तव एव | உனக்கும் | सतां गतिं | முன்னோர்களினனுஷ் டானத்தை |
| | | अतिवर्तेः न | கடந்தவனாகாய். |

इमा हि ते परिषदः श्रेणयश्च द्विजास्तथा । एषु तात चरन्धर्म नातिवर्तेः सतां गतिम् ॥

| | | | |
|---------|---------------------|-------------|-------------------|
| इमाः | “இதோ விருக்கும் | धर्म | முன்னோர்களினனுஷ்ட |
| परिषदः | சபையோர்களாகிய | | டான த்தை |
| द्विजाः | பிராம்மண, க்ஷத்ரிய, | चरन् | புரிந்து |
| ते | உனது [வைசியர்கள் | तथा च | அதுகாரணமாய் |
| श्रेणयः | பரிவாரங்கள் | सतां | புண்ணியா த்மாக்க |
| हि | ஆனபடியால் | | ளுடைய |
| तात | குழந்தாய் | गतिं | அனுஷ்டான த்தை |
| एषु | இவர்கள் விஷயத்தில் | अतिवर्तेः न | கடந்தவனாகாய். |

वृद्धाया धर्मशीलाया मातुर्नाहिस्यवर्तितुम् । अस्यास्तु वचनं कुर्वन्नातिवर्तेः सतां गतिम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------|-------------|------------------|
| वृद्धायाः | “மூப்படைந்த | अस्याः | இவளது |
| धर्मशीलायाः | தர்மானுஷ்டான | वचनं | ஆக்கினையை |
| | முடைய | कुर्वन् तु | செய்வதாலும் |
| मातुः | தாய்க்கு | सतां | புண்ணியா த்மாக்க |
| अवर्तितुं | பணிவிடைசெய்யா | | ளுடைய |
| | திருக்க | गतिं | அனுஷ்டான த்தை |
| अहं न | கூடாது; | अतिवर्तेः न | கடந்தவனாகாய். |

भरतस्य वचः कुर्वन्याचमानस्य राघव । आत्मानं नातिवर्तेस्त्वं सत्यधर्मपराक्रम ॥ ७ ॥

| | | | |
|-----------------|--|-------------|------------------|
| सत्यधर्मपराक्रम | { “ஸத்யம், தருமம், ப ராக்கிரமம் மூன்று முடைய | वचः | விண்ணப்பத்திற்கு |
| राघव | ஸ்ரீராம! | कुर्वन् | உடன்பட்டவனாய் |
| याचमानस्य | இரக்கின்ற | त्वं | நீ |
| भरतस्य | பரதனுடைய | आत्मानं | பிறவிக்குண த்தை |
| | | अतिवर्तेः न | மீறியவனாகாய்”. |

एवं मधुरमुक्तः सन् गुरुणा राघवः स्वयम् । प्रत्युवाच समासीनं वसिष्ठं पुरुषर्षभः ॥ ८ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|------------|---------------------|
| पुरुषर्षभः | புருஷோத்தமராகிய | स्वयं | சின்தையின் நிலை எள் |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | | ளளவும் குலையாமல் |
| एवं | இவ்வாறு | समासीनं | பக்கலில் வீற்றிருக் |
| मधुरं | மதுரமாக | | கும் |
| गुरुणा | ஆசிரியரால் | वसिष्ठं | வலிஷ்டபகவானைப் |
| उक्तः सन् | நியமனம்பெற்றவ | | பார்த்து |
| | ராகியும் | प्रत्युवाच | திருவாய்மலர்ந் |
| | | | தருளிணர்: |

यन्मातापितरौ वृत्तं तनये कुरुतः सदा । न सुप्रतिकरं तत्तु मात्रा पित्रा च यत्कृतम् ॥
यथाशक्तिप्रदानेन स्नापनाच्छादनेन च । नित्यं च प्रियवादेन तथा संवर्धनेन च ॥१०॥

| | | | |
|---|--|---------------------------------------|---|
| मातापितरौ तनये | “மாதாபிதாக்கள் புத்தரோ தபத்தி விஷயத்தில் | स्नापनाच्छादनेन च | { ஸ்நானம்செய்வித்து ஆடையாபரணங்களை யணிவிப்பதாலும், |
| यत् वृत्तं कुरुतः | எந்த ஒழுக்கத்தை மேற்கொண்டார்கள் ளோ | प्रियवादेन च | அன்பாய் பேசுவ தாலும், |
| तत् तु मात्रा पित्रा च नित्यं यथाशक्ति- } प्रदानेन } | அதற்குத்தானாகட்டும் மாதாவாலும், பிதாவாலும், எப்பொழுதும் இயன்றவளவு கேட்ட வகைகளையளிப்பதா லும், | तथा संवर्धनेन च | அவ்வண்ணமே சிரத்தையாய் வளர்ப்பதாலும், |
| | | कृतं यत् सदा सुप्रतिकरं न | புரியப்பட்ட பேருதவி எதுவோ அதற்கும் எக்காலத்திலும் ஏற்ற கைம்மாறு அசாத்தியம். |

स हि राजा जनयिता पिता दशरथो मम । आज्ञातं यन्मया तस्य न तन्मिथ्या भविष्यति ॥

| | | | |
|--------|-------------------|------------|--------------------|
| सः | “அந்த | तस्य | அவரால் |
| दशरथः | தசரத | आज्ञातं | ஆஞ்ஞாபிக்கப்பட்டது |
| राजा | சக்கிரவர்த்தியார் | यत् | எதுவோ |
| मम | என்னை | तत् | அது |
| जनयिता | பெற்ற | मया | என்னால் |
| पिता | தந்தை; | मिथ्या | வீணாக |
| हि | ஆகையால் | भविष्यति न | ஆகக்கூடாது.” |

एवमुक्ते तु रामेण भरतः प्रत्यनन्तरम् । उवाच परमोदारः सूतं परमदुर्मनाः ॥ १२ ॥

| | | | |
|----------|--------------------------------|--------------|----------------------------------|
| एवं | இவ்வாறு | परमदुर्मनाः | வருந்திய மனத்தின ராய், |
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் | प्रत्यनन्तरं | பக்கவிளிந்த |
| उक्ते | சொல்லப்பட்டதும், | सूतं | சாரதியை (சுமந்தி ரை) பார்த்து |
| परमोदारः | ஸர்வோத்திருஷ்ட மஹாத்மாவாகிய | उवाच | பின்வருமாறு சொன் னார்: |
| भरतः | பரதர் | | |
| तु | இவ்விஷயத்தில் | | |

इह मे स्थण्डिले शीघ्रं कुशानास्तर सारथे । आर्यं प्रत्युपवेक्ष्यामि यावन्मे न प्रसीदति ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------|--------------------|-----------------------------------|
| सारथे | “ஸாரதியே! (சுமந்தி ரரே!) | मे | எனக்கு |
| इह | இப்பொழுதே | प्रसीदति न | அனுக்கிரகம் புரியாதி ருக்கிறது |
| स्थण्डिले | தரையில் | यावत् | எதுவரைக்குமோ |
| में | எனக்காக | | அதுவரைக்கும் |
| कुशान् | தருப்பைகளை | आर्यं | ஸ்ரீராமரை |
| शीघ्रं | உடனே | प्रत्युपवेक्ष्यामि | நான் தகைவேன். |
| आस्तर | பரப்பும். | | |

अनाहारो निरालोको धनहीनो यथा द्विजः । शेष्ये पुरस्ताच्छालाया यावन्न प्रतियास्यति॥

प्रतियास्यति न

“இவர் திரும்பியெழு
ந்தருளா திருக்கிறது
எதுவரையிலுமோ
இப்பொழுது முகல
துவரை
காரியம் கைகூடப்
பெறாது

द्विजः

शालायाः

पुरस्तात्

अनाहारः

निरालोकः

शेष्ये

கூத்திரியனாகும் நான்
பர்ணசாலையினது
வாயிலில்
பட்டினிகிடப்பவனாய்
கண்களை மூடித்
கொண்டு
படுத்துக்கிடப்பேன்.”

स तु राममवेक्षन्तं सुमन्त्रं प्रेक्ष्य दुर्मनाः । कुशोत्तरमुपस्थाप्य भूमावेवास्तरत्स्वयम् ॥१५॥

दुर्मनाः

सः

सुमन्त्रं

तु

रामं

अवेक्षन्तं

மிக மனவேதனைப்
அவர் [படும்
சுமந்திரரை
இவ்விஷயத்தில்
ஸ்ரீராமரை
உத்திரவிற்கு எதிர்
பார்த்து நிற்பவராய்

प्रेक्ष्य

स्वयं एव

कुशोत्तरं

उपस्थाप्य

भूमौ

आस्तरत्

கவனித்து
தானே
தர்ப்பைப்படுக்கையை
கொணர்ந்து
தறையில்
பரப்பினார்.

तमुवाच महातेजा रामो राजर्षिसत्तमः । किं मां भरत कुर्वाणं तात प्रत्युपवेक्ष्यसि ॥१६॥

महातेजाः

राजर्षिसत्तमः

रामः

तं

उवाच

மகாதேஜஸ்வியும்
ராஜரிஷிகளிலுத்தம
ருமாகிய
ஸ்ரீராமர்
அவரைப்பார்த்து
பின்வருமாறு
மொழிந்தார் :

तात

भरत

मां

किं

कुर्वाणं

प्रत्युपवेक्ष्यसि

“குழந்தாய்!
பரத!
என்னை
எதை
பிறருக்கு ஹிதத்தைச்
செய்தவனாய்
நீ நிர்ப்பந்திக்கின்றனை?

ब्राह्मणो ह्येकपार्श्वेन नरान्रोद्धुमिहार्हति । न तु मूर्धाभिषिक्तानां विधिः प्रत्युपवेशने ॥

इह

ब्राह्मणः हि

नरान्

एकपार्श्वेन

शेकुं

“இவ்வுலகில்,
பிராம்மணன் மாத்தி
மனிதர்களை [ரமே
ஒரே மறுங்காய்
படுத்து
ஆணையிட்டுத்தடுக்க

अर्हति

मूर्धाभिषिक्तानां

प्रत्युपवेशने तु

विधिः

न

உரிமையுற்றவன்.
பட்டாபிஷேகத்திற்கு
ரிய மன்னர்களுக்கு
தகையும் விஷயத்தில்
அதிகாரம்
கிடையாது.

उत्तिष्ठ नरशार्दूल हित्वैतदारुणं व्रतम् । पुरवर्यामितः क्षिप्रमयोध्यां याहि राघव ॥ १८ ॥

नरशार्दूल

एतत्

दारुणं

व्रतं

हित्वा

उत्तिष्ठ

“புருஷோத்தம!
இந்த
கொடிய
நோன்பை
விட்டு
எழுந்திரு;

राघव

इतः

पुरवर्यां

अयोध्यां

क्षिप्रं

याहि

பரத!
இவ்விடமிருந்து
சிறந்த பட்டணமாகிய
அயோத்திக்கு
உடனே
போய்ச்சேர்.”

आसीनस्त्वैव भरतः पौरजानपदं जनम् । उवाच सर्वतः प्रेक्ष्य किमार्यं नानुशासथ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-----------|--------------------|
| भरतः | பரதர் | प्रेक्ष्य | பார்த்து |
| आसीनः एव | படுத்தவாறே | आर्यं | “பெரியவரை |
| पौरजानपदं | நாட்டார் நகரத்தாரா | किं तु | ஏனோ |
| | கிய | अनुशासथ न | வருந்திவேண்டா திரு |
| जनं | ஜனங்கள் | | க்கிறீர்கள்” என்று |
| सर्वतः | எல்லோரையும் | उवाच | சொன்னார். |

ते तमूर्चुर्महात्मानं पौरजानपदा जनाः । काकुत्स्थमभिजानीमः सम्यग्बदति राघवः ॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|----------------------|
| ते | அந்த | ऊचुः | பின்வருமாறு சொன் |
| पौरजानपदाः | நாட்டாரும் நகரத்தா | काकुत्स्थं | “ஸ்ரீராமரை [னார்கள்; |
| | ருமாகிய | अभिजानीमः | நாங்களுள்ளபடியறி |
| जनाः | ஜனங்கள் | राघवः | ஸ்ரீராமர் [வோம்; |
| महात्मानं | மகாத்மாவாகிய | सम्यक् | தர்மவீதியையொத்து |
| तं | அவரைப்பார்த்து | बदति | சொல்லுகிறார். |

एषोऽपि हि महाबाहुः पितुर्वचसि तिष्ठति । अत एव न शक्ताः स्मो व्यावर्तयितुमञ्जसा ॥

| | | | |
|----------|---------------------|---------------|---------------------|
| महाबाहुः | “மகாபாகுவாகும் | हि | ஆனபடியால் |
| एषः | இவர் | अतः | இவ்விடத்திலிருந்து |
| पितुः | பிதாவினது | अञ्जसा अपि | தருமவீருத்தமில்லாத |
| वचसि एव | ஆக்கினையிலேயே | व्यावर्तयितुं | திருப்புவதற்கு [படி |
| तिष्ठति | பக்திகொண்டிருக்கின் | शक्ताः स्मः न | முடியாதிருக்கின் |
| | றார் ; | | றோம்.” |

तेषामाज्ञाय वचनं रामो वचनमब्रवीत् । एवं निबोध वचनं सुहृदां धर्मचक्षुषाम् ॥ २२ ॥

| | | | |
|--------|------------|--------------|-----------------|
| तेषां | அவர்களுடைய | अब्रवीत् | மொழிந்தனர் ; |
| वचनं | வார்த்தையை | धर्मचक्षुषां | “தர்மத்தையே கண் |
| आज्ञाय | கவனித்து | | னாகவுடைய |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | सुहृदां | நண்பர்களுடைய |
| एवं | பின்வரும் | वचनं | உபதேசத்தை |
| वचनं | சொல்லை | निबोध | நீ சரமேற்கொள்வா |
| | | | யாக. |

एतच्चैवोभयं श्रुत्वा सम्यक्संपश्य राघव । उत्तिष्ठ त्वं महाबाहो मां च स्पृश तथोदकम् ॥

| | | | |
|----------|-------------|----------|------------|
| राघव | “பரத ! | त्वं | நீ |
| एतत् | இந்த | उत्तिष्ठ | எழுந்திரு. |
| उभयं च | இரண்டையும் | मां च | என்னையும் |
| श्रुत्वा | கேட்டு, | तथा | அவ்வண்ணமே |
| सम्यक् | நன்கு | उदकं एव | ஜலத்தையும் |
| संपश्य | ஆராய்ந்தறி. | स्पृश | தொடு.” |
| महाबाहो | மகாபாகுவே! | | |

अथोत्थाय जलं स्पृष्ट्वा भरतो वाक्यमब्रवीत् । शृण्वन्तु मे परिषदो मन्त्रिणः श्रेणयस्तथा॥

अथ अ.தன்மேல்
 भरतः பரதர்
 उत्थाय எழுந்திருந்து
 जलं ஜலத்தை
 स्पृष्ट्वा தொட்டு
 वाक्यं பின்வரும் சாற்றுகலை
 अब्रवीत् அருளிச்செய்தார் :

मन्त्रिणः “மந்திரிமார்களும்
 तथा அவ்வாறே
 परिषदः சபையோர்களாகிய
 श्रेणयः ஜனங்களும்
 मे எனக்கு
 शृण्वन्तु செவிகொடுக்கட்டும்.

न याचे पितरं राज्यं नानुशासामि मातरम् । आर्यं परमधर्मज्ञं नानुजानामि राघवम् ॥

पितरं “தந்தையாரிடத்தில்
 राज्यं ராஜ்யத்தைப்பற்றி
 याचे न நான் பேசவில்லை.
 मातरं தாயாரை
 अनुशासामि न நான் தூண்டவில்லை.

परमधर्मज्ञं பரமதார்மிகரும்
 आर्यं பூஜ்யருமாகிய
 राघवं ஸ்ரீராமருக்கு
 अनुजानामि न நான் விடைகொ
 டேன்.

यदि त्ववश्यं वस्तव्यं कर्तव्यं च पितुर्वचः । अहमेव निवत्स्यामि चतुर्दश समा वने ॥

पितुः “தந்தையாரது
 वचः நியமனமாய்
 वस्तव्यं வனவாஸமானது
 अवश्यं அவசியமாய்
 कर्तव्यं நடைபெறவேண்டி
 யது

यदि என்றால்
 अहं एव அடியேன் தான்
 तु அவருக்கு பதிலாய்
 चतुर्दश समा: च பதினான்குவருஷங்
 वने காட்டில் [களும்,
 निवत्स्यामि வலிப்பேன்.”

धर्मात्मा तस्य तथ्येन भ्रातुर्वाक्येन विस्मितः । उवाच रामः संप्रेक्ष्य पौरजानपदं जनम् ॥

धर्मात्मा தர்மா த்மாவான
 रामः ஸ்ரீராமர்
 तस्य அந்த
 भ्रातुः தம்பியினது
 तथ्येन மனப்பூர்வமான
 वाक्येन வார்த்தையினால்

विस्मितः ஆச்சரியமடைந்தவ
 पौरजानपदं நாடுநகர [ராய்
 जनं ஜனங்களை
 संप्रेक्ष्य பார்த்து
 उवाच பின்வருமாறு
 சொன்னார்:

विक्रीतमाहितं क्रीतं यत्पित्रा जीवता मम । न तल्लोपयितुं शक्यं मया वा भरतेन वा ॥२८॥

मम “எனது
 जीवता பிழைத்திருந்த
 पित्रा தந்தையால்
 आहितं முடிவாய்
 विक्रीतं விற்கப்பட்டதும்
 क्रीतं வாங்கப்பட்டதும்

यत् எதுவோ,
 तत् அந்தச்செய்கையை
 मया वा என்னாலாவது
 भरतेन वा பரதனாலாவது
 लोपयितुं மாற்ற
 शक्यं न விதியில்லை.

उपधिर्न मया कार्यो वनवासे जुगुप्सितः । युक्तमुक्तं च कैकेय्या पित्रा मे सुकृतं कृतम् ॥

| | | |
|------------|----------------------------------|-------------------|
| वनवासे | “வனவாஸவிஷயத் | கைகேயிதேவியால் |
| மயா | என்னால் [தில் | உரைக்கப்பட்டது |
| जुगुप्सितः | லோகத்தாரால் நிந்திக் கப்படும் | நியாயமே: |
| उपधिः | தருமவிருத்தமாகிய தீச்செய்கை | எனது |
| कार्यः न | செய்யத்தக்கதென்று | தந்தையால்; |
| | | விதிக்கப்பட்டதும் |
| | | தர்மமே. |

जानामि भरतं क्षान्तं गुरुसत्कारकारिणम् । सर्वमेवात्र कल्याणं सत्यसन्धे महात्मनि ॥

| | | |
|------------------|---|---------------------------|
| भरतं | “பா.தனை | சத்தியசந்தனும் |
| गुरुसत्कारकारिणं | { பெரியோர்களை பூஜிக் குந்தன்மையென்ன பதையும் | மகாத்மாவுமான |
| क्षान्तं | அபிமானதுங்கென்ன பதையும் | இவன் விஷயத்தில் |
| जानामि | நான் நன்கு அறிவேன் | எல்லாமும் |
| | | கல்யாணமாகக் கைகூ டும். |

अनेन धर्मशीलेन वनात्प्रत्यागतः पुनः । भ्रात्रा सह भविष्यामि पृथिव्याः पतिरुत्तमः ॥

| | | |
|------------|----------------------------|--------------|
| वनात् | “வனவாஸம் தீர்ந்த பின்பு | தருமசீலனாகிய |
| पुनः | மீண்டும் | தம்பியுடன் |
| प्रत्यागतः | திரும்பிவந்த நான், | பூமிக்கு |
| अनेन | இந்த | தலைமை |
| | | நாதனாக |
| | | ஆகுவேன். |

वृत्तो राजा हि कैकेय्या मया तद्वचनं कृतम् । अनृतान्मोचयानेन पितरं तं महीपतिम् ॥

| | | |
|----------|---------------------|--------------------------------------|
| राजा | “சக்கிரவர்த்தியார் | மஹிபதி |
| कैकेय्या | கைகேயிதேவியாரால் | பிதர் |
| वृत्तः | கட்டுப்படுத்தப்பட்ட | अनेन हि |
| मया | என்னால் [டார். | இதனாலேயே (இப்படி செய்வதாலேயே) |
| तत् | அந்த | { (சொன்னசொல்தவறு தலாலேற்படும்) பா |
| वचनं | ஒப்பந்தம் | பத்திலிருந்து |
| कृतं | கைக்கொள்ளப்பட்ட | நீயும் விடுவி.” |
| तं | அந்த [து. | मोचय |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे एकादशोत्तरशततमः सर्गः ॥



द्वादशोत्तरशततमः सर्गः—நூற்றுப்பனிரண்டாவது ஸர்க்கம் || ११२ ||

पादुकाप्रदानम्—பாதுகைகளைக் கொடுப்பது.

तमप्रतिमतेजोभ्यां भ्रातृभ्यां रोमहर्षणम् । विस्मिताः सङ्गं प्रेक्ष्य समवेता महर्षयः ॥

| | | | |
|------------------|----------------------------|-----------|---------------------------------|
| महर्षयः | மகர்ஷிகள் | तं | அந்த |
| समवेताः | பலருமொன்றுகூடி | सङ्गं | சல்லாபத்தை |
| अप्रतिमतेजोभ्यां | ஒப்பற்ற தேஜோ வான்களாகிய | रोमहर्षणं | மயிரைச் சிலர்ப்பிக்கி |
| भ्रातृभ्यां | சகோதரர் இருவர்க ளின் | प्रेक्ष्य | கவனித்து [றதாய் |
| | | विस्मिताः | ஆச்சரியமடைந்தவர் களானார்கள்: |

अन्तर्हितास्तृषिगणाः सिद्धाश्च परमर्षयः । तौ भ्रातरौ महात्मानौ काकुत्स्थौ प्रशंससिरे ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|------------|--|
| ऋषिगणाः | ரிஷிகணங்களும், | तौ | இவ்விரு |
| अन्तर्हिताः | கட்புலனாகாமலிருந்த | भ्रातरौ | ப்ராதாக்களைப்பற்றி |
| सिद्धाः | சித்தர்களும், | तु | இவ்விஷயத்தில் பின்வருமாறு |
| परमर्षयः च | தேவர்ஷிகளும், | | |
| महात्मानौ | மகாத்மாக்களாகிய | प्रशंससिरे | { புகழ்ந்து ஒருவரோ டொருவர் பேசிக் கொண்டார்கள். |
| काकुत्स्थौ | கூராமரும் பரதரு மாகிய | | |

स धन्यो यस्य पुत्रौ द्वौ धर्मज्ञौ धर्मविक्रमौ । श्रुत्वा वयं हि संभाषामुभयोः स्पृहयामहे ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------|------------|--|
| धर्मज्ञौ | “தருமஞானிகளும், | धन्यः | பாக்கியசாலி |
| धर्मविक्रमौ | தர்மானுஷ்டானமு டையவர்களுமான | वयं | நாங்கள் |
| द्वौ | இவ்விருவர்களும், | उभयोः | இவ்விருவர்களுடைய |
| यस्य | யாருடைய | संभाषां | சல்லாபத்தை |
| पुत्रौ | புத்திரர்களோ | श्रुत्वा | கேட்டு |
| सः हि | அவர்தான் | स्पृहयामहे | { நினைத்து நினைத்து உள்ளம் பூரிக்கின் றோம்.” |

ततस्तृषिगणाः क्षिप्रं दशग्रीववधैषिणः । भरतं राजशार्दूलमित्यूचुः सङ्गता वचः ॥ ४ ॥

| | | | |
|----------------|------------------------------|---------|---------------|
| दशग्रीववधैषिणः | இராவணனுடைய வதத்தைக்கருதிய | भरतं | பரதருக்கு |
| ऋषिगणाः तु | ரிஷிகணங்களும் | सङ्गताः | கட்புலனாகி |
| ततः | அப்பொழுது | इति | பின்வரும் |
| क्षिप्रं | விரைவில் | वचः | சொல்லை |
| राजशार्दूलं | அரசோத்தமராகிய | उचुः | சொன்னார்கள் : |

कुलेजात महाप्राज्ञ महावृत्त महायशः । ग्राह्यं रामस्य वाक्यं ते पितरं यद्यवेक्षसे ॥ ५ ॥

| | | | |
|------------|--|--------------|--|
| कुलेजात | “உத்தமகுலத்திற் பிறந்தவனே ! | ते | உனது |
| महाप्राज्ञ | மகாஞானியே ! | पितरं | திருத்தந்தையாரை |
| महावृत्त | { ஸர்வோத்க்ருஷ்டமா ன அனுஷ்டானமு டையவனே ! | अवेक्षसे यदि | { பெருமைப்படுத்த வேண்டுமென நீ கரு துவாயாகில் |
| महायशः | மிக்க புகழ் படைத்த வனே ! | रामस्य | ஸ்ரீராமரது |
| | | वाक्यं | வார்த்தையானது |
| | | ग्राह्यम् | அங்கீகரிக்கத்தக்கது. |

सदाऽनृणमिमं रामं वयमिच्छामहे पितुः । अनृणत्वाच्च कैकेय्याः स्वर्गं दशरथो गतः ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------|----------|------------------------------------|
| दशरथः | “தசரதசக்கிரவர்த்தி யார் | इमं | இந்த |
| कैकेय्याः | கைகேயியின் | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| अनृणत्वात् च | கடனைத்தீர்த்தமை யாலேதான் | पितुः | தந்தையின் |
| स्वर्गं गतः | சுவர்க்கமடைந்தார். | अनृणं | கடனைத் தீர்த்து மீள வேண்டியவராக |
| वयं | நாங்கள் | सदा | எப்பொழுதும் |
| | | इच्छामहे | கருதுகின்றோம்.” |

एतावदुक्त्वा वचनं गन्धर्वाः समहर्षयः । राजर्षयश्चैव तथा सर्वे स्वां स्वां गतिं गताः ॥ ७ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|-------------|---------------|
| गन्धर्वाः च | கந்தர்வர்களும் | सर्वे | எல்லோரும் |
| समहर्षयः | தேவரஷிகளோடு | तथा | வந்தபடியே |
| राजर्षयः एव | ராஜர்ஷிகளும் [கூடிய | स्वां स्वां | தம் தம் |
| एतावत् वचनं | இந்தச் சொல்லை | गतिं | இருப்பிடத்தை |
| उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு | गताः | அடைந்தார்கள். |

ह्लादितस्तेन वाक्येन शुभेन शुभदर्शनः । रामः संहृष्टवदनस्तानृषीनभ्यपूजयत् ॥ ८ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-------------|---|
| शुभदर्शनः | அதிநுணுக்கமுடைய | संहृष्टवदनः | { மகிழ்ச்சியால் மலர்ந்த திருமுகமண்டலமு டையவராகி |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | तान् ऋषीन् | அந்த ரிஷிகளை |
| तेन | அந்த | अभ्यपूजयत् | (சிற்தையினுள்) புகழ்ந் து கொண்டாடினார். |
| शुभेन | புனிதமான | | |
| वाक्येन | வார்த்தையால் | | |
| ह्लादितः | உள்ளம் பூரித்து, | | |

सस्तगात्रस्तु भरतः स वाचा सज्जमानया । कृताञ्जलिरिदं वाक्यं राघवं पुनरब्रवीत् ॥ ९ ॥

| | | | |
|------------|---|-----------|--------------------------|
| पुनः | விஷயமிப்படியிருக் | सज्जमानया | வாய் சமுதழுத்து வரும் |
| सः | அந்த [கையிலும் | वाचा | சொற்கொண்டு |
| भरतः तु | பரதரோவெனில் | राघवं | ஸ்ரீராமரைப்பார்த்து |
| कृताञ्जलिः | அஞ்ஜலிஹஸ்தராகி | इदं | பின்வரும் |
| सस्तगालः | { अवयवங்கள் (அதன தன் தொழிலைச்செய் யமுடியாதபடி) துவ ட்சியடைந்து | वाक्यं | சொல்லை |
| | | अब्रवीत् | சொன்னார் : |

राजधर्ममनुपेक्ष्य कुलधर्मानुसन्ततिम् । कर्तुमर्हसि काकुत्स्थ मम मातुश्च याचनाम् ॥१०॥

| | | | |
|------------------|-------------------------------|----------|-----------------------------|
| काकुत्स्थ | “ஸ்ரீராம! | मम | எனது |
| राजधर्म | ராஜநீதியையும் | मातुः | மாதாவின் |
| कुलधर्मानुसन्तति | குலதர்மத்தின் தொடர்பையும் | याचनां च | தற்காலமனோரதத் |
| अनुपेक्ष्य | திருவுளத்தில் நன்கு ஆராய்ந்து | कर्तु | அளிக்க [தையே] |
| | | अर्हसि | திருவுளம் பற்றியருள் வீராக. |

रक्षितुं सुमहद्राज्यमहमेकस्तु नोत्सहे । पौरजानपदांश्चापि रक्तात्रञ्जयितुं तथा ॥ ११ ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|---------------|-------------------|
| सुमहत् | “ மிகப்பெரிய | पौरजानपदान् | நகரத்தார்களையும், |
| राज्यं | இராஜ்யத்தை | | நாட்டார்களையும் |
| रक्षितुं च | இரட்சிக்கவும் | रञ्जयितुं अपि | மகிழ்விக்கவும் |
| तथा तु | அப்படி (தேவரீரிடத் தில்) | अहं | நான் |
| रक्तान् | ஆதாரங்கொண்டிருக்கின்ற | एकः | தனியாய் |
| | | उत्सहे न | துணியேன். |

ज्ञातयश्च हि योधाश्च मित्राणि सुहृदश्च नः । त्वामेव प्रतिकाङ्क्षन्ते पर्जन्यमिव कर्षकाः ॥

| | | | |
|----------|-----------|------------------|--------------------|
| हि | “ ஏனெனில் | नः | நமது |
| कर्षकाः | உழவர்கள் | ज्ञातयः च | சுற்றத்தார்களும், |
| पर्जन्यं | மழையை | योधाः च | போர்வீரர்களும், |
| इव | எவ்வண்ணமோ | मित्राणि | நேசர்களும், |
| | அவ்வண்ணமே | सुहृदः च | அன்பர்களும் |
| त्वां एव | தேவரீரையே | प्रतिकाङ्क्षन्ते | வேண்டுகின்றார்கள். |

इदं राज्यं महाप्राज्ञ स्थापय प्रतिपद्य हि । शक्तिमानसि काकुत्स्थ लोकस्य परिपालने ॥

| | | | |
|---------------|---|-----------|---------------------|
| महाप्राज्ञ | “ மகாமேதாவியாகிய | हि | ஆகையால் |
| काकुत्स्थ | ஸ்ரீராம! | इदं | இந்த |
| लोकस्य | உலகத்தை | राज्यं | ராஜ்யத்தை |
| परिपालने | பரிபாலிப்பதில் | प्रतिपद्य | அங்கீகரித்து |
| शक्तिमान् असि | தேவரீர் திறமையுற்ற வராய் விளங்குகிறீர். | स्थापय | நிலைநிறுத்துவீராக.” |

इत्युक्त्वा न्यपतद्भ्रातुः पादयोर्भरतस्तदा । भृशं संप्रार्थयामास राममेव प्रियंवदः ॥ १४ ॥

| | | | |
|-----------|------------------------|----------------|----------------------|
| प्रियंवदः | இனிமையாய் நன்கு பேசும் | पादयोः | திருவடிகளில் |
| | | न्यपतत् | விழுந்து ஸேவித்தார். |
| भरतः | பரதர் | तदा | அப்படியே |
| इति | மேற்கண்டவாறு | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு | भृशं एव | பலவாராய் இன்னும் |
| भ्रातुः | தமையனாரின் | संप्रार्थयामास | வேண்டினார். |

तमङ्के भरतं कृत्वा रामो वचनमब्रवीत् । श्यामं नलिनपत्राक्षं मत्तहंसस्वरं स्वयम् ॥ १५ ॥

| | | | |
|---------------|---|--------------|---|
| ராம: | ஸ்ரீராமர் | | |
| श्यामं | கறுத்திருப்பவரும், | | |
| नलिनपत्राक्षं | { தாமரையிதழ்போன் ற கண்களையுடைய வருமான | मत्तहंसस्वरं | { உற்சாகத்துடன் பற்ற ற்றிருக்கும் தன்மை யை நன்குவிளங்கக் காட்டும் தொனி கொண்டு |
| तं भरतं | அந்த பரதரை | वचनं | (பின்வரும்) திரு வாக்கை |
| अङ्के | மடியில் | | |
| कृत्वा | வைத்துக்கொண்டு | अब्रवीत् | திருவாய்மலர்ந்தரு ளிநார் : |
| स्वयं | சுயேச்சையாய் | | |

आगता त्वामियं बुद्धिः स्वजा वैनयिकी च या । भृशमुत्सहसे तात रक्षितुं पृथिवीमपि ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|--------------|-------------------|
| तात | “குழந்தாய்! | स्वजा | இயல்பாய் வந்ததாய் |
| या | எந்த ஒரு | आगता | இருக்கிறது. |
| बुद्धिः | ஞானமானது | पृथिवीं अपि | உலகத்தையே |
| वैनयिकी च | தர்மசிற்தையாயிருக்கி | रक्षितुं | பாதுகாக்க |
| इयं | இது [றதோ | भृशं उत्सहसे | மிக்கதிறமையுடையவ |
| त्वां | உன்னிடத்தில் | | னாயிருக்கின்றனை. |

अमात्यैश्च सुहृद्भिश्च बुद्धिमद्भिश्च मन्त्रिभिः । सर्वकार्याणि संमन्य सुमहान्त्यपि कारय ॥

| | | | |
|------------------|--------------------|----------------|------------------|
| सुमहान्ति | “மிகப்பெரிய | बुद्धिमद्भिः च | புத்திமான்களும், |
| सर्वकार्याणि अपि | எல்லாக்காரியங்களை | सुहृद्भिः च | நண்பர்களுமான |
| | யும் | अमात्यैः | மந்திரிமார்களோடு |
| मन्त्रिभिः च | தர்மசாஸ்திரங்களில் | संमन्य | நன்கு ஆராய்ந்து |
| | நிபுணர்களும், | कारय | செய்வி. |

लक्ष्मीश्चन्द्रापेयाद्वा हिमवान्वा हिमं त्यजेत् । अतीयात्सागरो वेलं न प्रतिज्ञामहं पितुः ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|------------|--------------------|
| लक्ष्मीः | “நிலவு | सागरः | சமுத்திரம் |
| चन्द्रात् | சந்திரனைவிட்டு | वेलं | கரையை |
| अपेयात् वा | நீங்கினும் நீங்கும் ; | अतीयात् वा | கடந்தாலும் கடக்க |
| हिमवान् | இமயமலை | अहं | நான் [லாம். |
| हिमं | பனியை | पितुः | தந்தைக்கு |
| त्यजेत् | காட்டாமலிருந்தாலு | प्रतिज्ञां | அளித்த வாக்கை |
| | மிருக்கலாம் ; | न | ஒருக்காலும்கடவேண். |

कामाद्वा तात लोभाद्वा मात्रा तुभ्यमिदं कृतम् । न तन्मनसि कर्तव्यं वर्तितव्यं च मातृवत् ॥

| | | | |
|-----------|---------------|--------------|-------------------|
| तात | “ குழந்தாய் ! | तत् इदं | அந்த இது |
| कामात् वा | அன்பினாலோ | मनसि | மனதிலும் |
| लोभात् वा | பேராசையாலோ | कर्तव्यं न | பற்றத்தக்கதன்று ; |
| मात्रा | மாதாவினால் | मातृवत् | உயிரெனவே |
| तुभ्यं | உன்பொருட்டு | वर्तितव्यं च | பாதுகாக்கவேண்டி |
| कृतं | செய்யப்பட்ட | | யது.” |

एवं ब्रुवाणं भरतः कौसल्यासुतमब्रवीत् । तेजसाऽऽदित्यसङ्काशं प्रतिपच्चन्द्रदर्शनम् ॥२०॥

| | | | |
|----------------------|---|-------------|--|
| भरतः | பரதர் | एवं | இப்படி |
| तेजसा | ஒளியால் | ब्रुवाणं | மொழிபவருமாகிய |
| आदित्यसङ्काशं | சூரியனை போன்றவ | कौसल्यासुतं | கோஸலாதேவியாரின் |
| | ரும் | | திருமகனைப்பார்த்து |
| प्रतिपच्चन्द्रदर्शनं | { பிரதமசந்திரனைப் போல் விரும்பத்தக் கவரும், | अब्रवीत् | பின்வருமாறு திரு வாய்மலர்ந்தருளினார்: |

अधिरोहार्थं पादाभ्यां पादुके हेमभूषिते । एते हि सर्वलोकस्य योगक्षेमं विधास्यतः ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------|------------|--------------------|
| आर्यं | “ ஸ்வாமியே ! | हि | ஏனெனில் |
| हेमभूषिते | பொன்னுலலங்கரிக் கப்பெற்ற | एते | இவைகள் |
| पादुके | பாதுகைகளில் | सर्वलोकस्य | எல்லாவுலகத்தின் |
| पादाभ्यां | திருவடிகளால் | योगक्षेमं | யோகக்ஷேமத்தை |
| अधिरोह | ஏறியருள்வீராக ; | विधास्यतः | வகிக்கப்போகின்றன”. |

सोऽधिरुह्य नरव्याघ्रः पादुके ह्यवस्थ च । प्रायच्छत्सुमहातेजा भरताय महात्मने ॥२१॥

| | | | |
|------------|------------------|------------|---------------|
| सुमहातेजाः | மிக்கதேஜஸ்வியான | अवस्थ च | இறங்கி |
| नरव्याघ्रः | புருஷோத்தமராகும் | महात्मने | மகாத்மாவாகிய |
| सः | அவர் | भरताय हि | பரதருக்கு |
| पादुके | பாதுகைகளில் | प्रायच्छत् | தந்தருளினார். |
| अधिरुह्य | ஏறி | | |

स पादुके संप्रणम्य रामं वचनमब्रवीत् । चतुर्दश हि वर्षाणि जटाचीरधरो ह्यहम् ॥२३॥

| | | | |
|-----------|---------------------|--------------|----------------------------------|
| सः | அவர் | अब्रवीत् | திருவாய்மலர்ந்தருளி |
| पादुके | பாதுகைகளை | अहं हि | “அடியேனும் [நான்] |
| संप्रणम्य | சேவித்து | चतुर्दश | பதினான்கு |
| रामं | ஸ்ரீராமரைப்பார்த்து | वर्षाणि | வருஷங்கள் |
| वचनं | பின்வரும் சொல்லை | जटाचीरधरः हि | ஜடையும் மரவுரியும் தரித்தவனே. |



फलमूलाशनो वीर भवेयं रघुनन्दन । तवागमनमाकाङ्क्षन्वसन्वै नगराद्बहिः ॥ २४ ॥

வீர “தனிவீரனாகும்
ர஘ுநந்தன ஸ்ரீராம!
தவ தேவரீரது
ஆகமனம் வருகையை
ஆகாங்க்ஷந் வேண்டுகின்றவனாய்
நகராட் நகரத்திற்கு

बहिः வெளியில்
वसन् वै வலித்துக்கொண்டு
फलमूलाशनः { பழங்கலையும் கிழங்கு
கலையுமே உணவாய்க்
கொண்டு
भवेयम् இருப்பேன்.

तव पादुकयोर्न्यस्य राज्यतन्त्रं परंतप । चतुर्दशे हि संपूर्णे वर्षेऽहनि रघूत्तम ॥
न द्रक्ष्यामि यदि त्वां तु प्रवेक्ष्यामि हुताशनम् ॥ २५ ॥

பரந்தப “சத்ருக்களை தபிக்கச்
ர஘ுத்தம ஸ்ரீராம! [செய்யும்
ராஜ்யதந்த்ரம் ராஜ்யபரிபாலனத்தை
தவ தேவரீரது
பாதுகயோ: திருவடிகளிடத்து
ந்யச்ய ஒப்படைத்துவிட்டு
த்வா் தேவரீரை

चतुर्दशे பதினான்கு
वर्षे हि வருஷமும்
सम्पूर्णे तु முடிந்ததும்
अहनि மறுதினத்தில்
द्रक्ष्यामि न यदि காணாவிடின்
हुताशनं அக்னியில்
प्रवेक्ष्यामि புருவேன்.”

तथेति च प्रतिज्ञाय संपरिष्वज्य सादरम् । शत्रुघ्नं च परिष्वज्य भरतं चेदमब्रवीत् ॥ २६ ॥

ததா ‘அப்படியே ஆகட்டும்’
ஐதி என்று
புதிஞாய வாக்களித்து
சாடர் அன்புடன்
சம்பரிஷ்வஜ்ய தழுவினேத்து

शत्रुघ्नं च சத்ருக்னரையும்
परिष्वज्य च தழுவி
भरतं பரதரைப்பார்த்து
इदं च பின்வருமாறு
अब्रवीत् திருவாய்மலர்ந்தருளி
ரை :

मातरं रक्ष कैकेयीं मा रोषं कुरु तां प्रति । मया च सीतया चैव शप्तोऽसि रघुनन्दन ॥

ர஘ுநந்தன “பரத!
மாதர் தாயான
கைகேயிதேவியாரை
ரக்ஷ பெருமையாய் வைத்
துக்கொள்.
தா் புதி அவளிடத்தில்

रोषं एव சினமென்பதையே
मा कुरु வைக்காதே.
मया च என்பேரிலும்
सीतया च லீதையின்பேரிலும்
शप्तः असि ஆணையிடப்பட்டிருக்
கின்றனே.”

इत्युक्त्वाऽश्रुपरीताक्षो भ्रातरं विससर्ज ह

॥ २८ ॥

ஐதி மேற்கண்டவாறு
उक्त्वा அருளிவிட்டு
अश्रुपरीताक्षः கண்ணீரால் கலங்கிய
கண்களையுடைய அவர்

भ्रातरं தம்பியை
विससर्ज விடைகொடுத்தனுப்
பிஞர்.
ह காண்!

स पादुके ते भरतः प्रतापवान्स्वलंकृते संपरिगृह्य धर्मवित् ।
प्रदक्षिणं चैव चकार राघवं चकार चैवोत्तमनागमूर्धनि

॥ २९ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-----------------|-------------------|
| प्रतापवान् | பிரதாபவானும் | संपरिगृह्य | கையேந்தி வாங்கிக் |
| धर्मवित् एव | தர்மவானுமாகிய | | கொண்டு |
| सः | அந்த | उत्तमनागमूर्धनि | உத்தமருக்கெல்லாம் |
| भरतः | பரதர் | | உத்தமரின் சிரஸில் |
| ते | அந்த | चकार | வைத்துக்கொண்டார். |
| स्वलंकृते | நன்கு அலங்கரிக்கப் | एव च | அப்படியே |
| पादुके | பாதுகைகளை [பட்ட | राघवं च | ராகவரையும் |
| | | प्रदक्षिणं चकार | வலம்வந்தார். |

अथानुपूर्व्यात्प्रतिनन्द्य तं जनं गुरुंश्च मन्त्रीन्प्रकृतीस्तथाऽनुजौ ।

व्यसर्जयद्राघववंशवर्धनः स्थितः स्वधर्मे हिमवानिवाचलः

॥ ३० ॥

| | | | |
|---------------|--|---------------|----------------------------|
| अथ | அதன்மேல் | मन्त्रीन् | மந்திரிமார்களையும் |
| हिमवान् इव | இமயமலைபோலவே | तथा | அவ்வண்ணமே |
| स्वधर्मे | தனது தர்மத்தில் | प्रकृतीः | மற்றுமுள்ள அதிகாரி |
| अचलः | சலியாது | | களையும் |
| स्थितः | நின்றவரும் | अनुजौ | இருதம்பிமார்களையும் |
| राघववंशवर्धनः | { ராகுலத்தைப்பெரு மைப்படுத்துபவரு மாகுமவர் | आनुपूर्व्यात् | முறைப்படி |
| तं | அந்த | प्रतिनन्द्य | ஒவ்வொருவருக்கு |
| जनं | ஜனத்தையும் | | மினியசொற்கூறி |
| गुरुं च | குருக்களையும் | व्यसर्जयत् | விடைகொடுத்தனுப் பினார். |

तं मातरो बाष्पगृहीतकण्ठयो दुःखेन नामन्त्रयितुं हि शेकुः ।

स त्वेव मातृरभिवाद्य सर्वा रुदन्कुटीं स्वां प्रविवेश रामः

॥ ३१ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-----------|---------------|
| मातरः | தாய்மார்கள் | रामः तु | ஸ்ரீராமர்தான் |
| दुःखेन | மனத்துயரால் | मातृः | தாய்மார்கள் |
| बाष्पगृहीत- } | கண்ணீராலடைபட்ட | सर्वाः एव | எல்லோரையுமே |
| कण्ठ्यः } | கண்டமுடையவர் | अभिवाद्य | ஸேவித்து |
| तं | அவரிடம் [களாய் | रुदन् हि | அழுதுகொண்டே |
| आमन्त्रयितुं | விடைகொள்ள | स्वां | தனது |
| शेकुः न | முடியாதிருந்தனர். | कुटीं | பர்ணசாலையில் |
| सः | அந்த | प्रविवेश | புகுந்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे द्वादशोत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 6496

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 4141



तयोदशोत्तरशततमः सर्गः—நூற்றுப்பதின்முன்றாவது ஸர்க்கம் || ११३ ||

भरतप्रतिनिवृत्तिः—பரதர் திரும்பிவருவது.

ततः शिरसि कृत्वा तु पादुके भरतस्तदा । आरूरोह रथं हृष्टः शत्रुघ्नेन समन्वितः ॥ १ ॥

| | | | |
|--------|--------------------|------------|--------------------------|
| तदा | அப்பொழுது | हृष्टः तु | மனத்ருப்திகொண்ட வராய் |
| भरतः | பரதர் | | |
| ततः | அவ்விடத்திலிருந்து | शत्रुघ्नेन | சத்ருக்னருடன் |
| पादुके | பாதுகைகளை | समन्वितः | கூடவே |
| शिरसि | தலையின்மேல் | रथं | ரதத்தில் |
| कृत्वा | வைத்துக்கொண்டு | आरूरोह | ஏறிக்கொண்டார். |

वसिष्ठो वामदेवश्च जाबालिश्च दृढव्रतः । अग्रतः प्रययुः सर्वे मन्त्रिणो मन्त्रपूजिताः ॥ २ ॥

| | | | |
|-----------|------------------------|---------------|------------------------|
| वसिष्ठः | வஸிஷ்டபகவானும், | मन्त्रपूजिताः | ஆலோசனைகளிற் |
| वामदेवः च | வாமதேவரும் | मन्त्रिणः | மந்திரிமார்கள் [சிறந்த |
| दृढव्रतः | உறுதியான விரத முடைய | सर्वे | எல்லோரும் |
| | | अग्रतः | முன்னதாக |
| जाबालिः च | ஜாபாலியும் | प्रययुः | நடந்தார்கள். |

मन्दाकिनीं नदीं रम्यां प्राङ्मुखास्ते ययुस्तदा । प्रदक्षिणं च कुर्वाणाश्चित्रकूटं महागिरिम् ॥

| | | | |
|------------|------------------|----------------------|-----------------------------|
| ते | அவர்கள் | महागिरिं च | பெருமலையையும், |
| रम्यां | அழகிய | तदा | அப்பொழுது |
| मन्दाकिनीं | மந்தாகினி | प्रदक्षिणं कुर्वाणाः | பிரதக்ஷணம் செய்து கொண்டு |
| नदीं | நதியையும், | | |
| चित्रकूटं | சித்திரகூடமெனும் | प्राङ्मुखाः | கிழக்குநோக்கி |
| | | ययुः | சென்றார்கள். |

पश्यन्सानुसहस्राणि रम्याणि विविधानि च । प्रययौ तस्य पार्श्वेन ससैन्यो भरतस्तदा ॥

| | | | |
|----------|------------|----------------|------------------|
| तदा | அப்பொழுது | सानुसहस्राणि | ஆயிரக்கணக்கான |
| भरतः | பரதர் | | மலைத்தாழ்வரைகளை |
| ससैन्यः | ஸையத்துடன் | पश्यन् च | பார்த்துக்கொண்டே |
| रम्याणि | அழகிய | तस्य पार्श्वेन | அதன் பக்கலில் |
| विविधानि | பல | प्रययौ | சென்றார். |

अदूराच्चित्रकूटस्य ददर्श भरतस्तदा । आश्रमं यत्र स मुनिर्भरद्वाजः कृतालयः ॥ ५ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-------------|---------------------------|
| भरतः | பரதர் | मुनिः | முனிவர் |
| तदा | அப்பொழுது | कृतालयः | எழுந்தருளியிருக்கி றது |
| चित्रकूटस्य | சித்ரகூடமலையினது | | |
| अदूरात् | சமீபத்திலேயே | यत्र आश्रमं | எந்த ஆசிரமமோ |
| सः भरद्वाजः | அந்த பாத்துவாஜ | ददर्श | கண்டார். [அதை |

स तमाश्रममासाद्य भरद्वाजस्य बुद्धिमान् । अवतीर्य रथात्पादौ ववन्दे भरतस्तदा ॥ ६ ॥

ததா அப்பொழுது
ச: அந்த
புத்திமானுக்கிய புத்திமானாகிய
பரதர் பரதர்
பரதவாஜமுனிவருடைய
தம் அந்த

आश्रमं ஆசிரமத்தை
आसाद्य அடைந்து
रथात् ரதத்தினின்று
अवतीर्य இறங்கி
पादौ திருவடிகளில்
ववन्दे விழுந்து ஸேவித்த
னர்.

ततो हृष्टो भरद्वाजो भरतं वाक्यमब्रवीत् । अपि कृत्यं कृतं तात रामेण च समागतः ॥

தத: அப்பொழுது
பரதவாஜமுனிவர் பரதவாஜமுனிவர்
பரதம் பரதரைப்பார்த்து
ஹ்ஸ்த: மனமகிழ்ந்து
வாக்யம் பின்வரும் சொல்லை
அவ்ரவீத் சொன்னார் :

तात “குழந்தாய்!
रामेण ராமனால்
अपि समागतः வரவேற்கப்பட்ட
कृत्यं காரியம்
कृतं च கைகூடிற்று ?”
னையா ?

एवमुक्तः स तु ततो भरद्वाजेन धीमता । प्रत्युवाच भरद्वाजं भरतो भ्रातृवत्सलः ॥ ८ ॥

புத்திமானான புத்திமானான
பரதவாஜமுனிவரால் பரதவாஜமுனிவரால்
एवं மேற்கண்டவாறு
उक्तः வினாவப்பட்டவரும்
आतृवत्सलः तु தமையனாரின் தொண்டருமான

स: அந்த
भरतः பரதர்
भरद्वाजं பரதவாஜமுனிவ
ततः அதற்கு [ருக்கு
प्रत्युवाच பின்வருமாறு
பதிலுரைத்தார் :

स याच्यमानो गुरुणा मया च दृढविक्रमः । राघवः परमप्रीतो वसिष्ठं वाक्यमब्रवीत् ॥

गुरुणा “குருவாலும்,
मया च அடியேனாலும்,
याच्यमानः வேண்டப்பட்டவரும்,
दृढविक्रमः உறுதியான நடை
யுடையவருமான

स: அந்த
राघवः ஸ்ரீராமர்
परमप्रीतः மிக மனதருந்தியுடன்
वसिष्ठं வஸிஷ்டரைப்பார்த்து
वाक्यं பின்வரும் சொல்லை
अब्रवीत् சொன்னார் :

पितुः प्रतिज्ञां नामेव पालयिष्यामि तत्त्वतः । चतुर्दश हि वर्षाणि या प्रतिज्ञा पितुर्मम ॥

மம “எனது
पितुः தந்தையின்
प्रतिज्ञा ஆக்கினை
या எதுவோ
तां அதே
पितुः தந்தையாரது

प्रतिज्ञां एव கட்டளையையே
तत्त्वतः உள்ளபடியே
चतुर्दश பதினான்கு
वर्षाणि हि வருஷங்களிலும்
पालयिष्यामि பரிபாலனம்
செய்வேன்.

एवमुक्तो महाप्राज्ञो वसिष्ठः प्रत्युवाच ह । वाक्यज्ञो वाक्यकुशलं राघवं वचनं महत् ॥११॥

| | | | |
|-------------|------------------|--------------|----------------------|
| एवं | “இங்ஙனம் | वाक्यकुशलं | பேசுவதில் நிபுணராகிய |
| उक्तः | சொல்லப்பட்டவரும் | | |
| महाप्राज्ञः | மகாப்ராக்ஞரும் | राघवं | ஸ்ரீராமரைப்பார்த்து |
| वाक्यज्ञः | சொல் துட்பமறிந்த | महत् | சிறந்த |
| | வருமாகிய | वचनं | பின்வரும் திருவாக்கை |
| वसिष्ठः | வஸிஷ்டபகவான் | प्रत्युवाच ह | பதிலாய்ச் சொன்னார் : |

एते प्रयच्छ संहृष्टः पादुके हेमभूषिते । अयोध्यायां महाप्राज्ञ योगक्षेमकरे तव ॥ १२ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|------------------|
| महाप्राज्ञ | “‘மகாப்ராக்ஞ ! | अयोध्यायां | அயோத்தியில் |
| तव | உனது | योगक्षेमकरे | யோகக்ஷேமம் நடத் |
| एते | இந்த | | துபவைகளாக |
| हेमभूषिते | பொன்னுலலங்கரிக்க | संहृष्टः | மனமகிழ்ச்சியுடன் |
| पादुके | பாதுகைகளை [ப்பட்ட | प्रयच्छ | அளி.’ |

एवमुक्तो वसिष्ठेन राघवः प्राङ्मुखः स्थितः । पादुके अधिस्थिते मम राज्याय वै ददौ ॥

| | | | |
|------------|----------------|------------|------------------|
| वसिष्ठेन | “வஸிஷ்டரால் | पादुके | பாதுகைகளில் |
| एवं | இங்ஙனம் | अधिस्थिते | ஏறி |
| उक्तः | நியமனம்பெற்ற | एते | இவைகளை |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | राज्याय वै | ராஜ்ய ஆளுகைக்காக |
| प्राङ्मुखः | கிழக்குமுகமாய் | मम | அடியேனுக்கு |
| स्थितः | நின்றகொண்டு | ददौ | தந்தருளினார். |

निवृत्तोऽहमनुज्ञातो रामेण सुमहात्मना । अयोध्यामेव गच्छामि गृहीत्वा पादुके शुभे ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|----------------|
| अहं | “அடியேன் | पादुके | பாதுகைகளை |
| सुमहात्मना | மகாத்மாவாகிய | गृहीत्वा | பெற்றுக்கொண்டு |
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் | निवृत्तः | திரும்பியவனாய் |
| अनुज्ञातः | விடைகொடுக்கப்பட்ட | अयोध्यां एव | அயோத்திக்கே |
| | டவனாய் | गच्छामि | செல்லுகிறேன்.” |
| शुभे | புண்ணியமான | | |

एतच्छ्रुत्वा शुभं वाक्यं भरतस्य महात्मनः । भरद्वाजः शुभतरं मुनिर्वाक्यमुवाच ह ॥१५॥

| | | | |
|----------|--------------|----------|------------------|
| महात्मनः | மகாத்மாவாகிய | भरद्वाजः | பரத் துவாஜ |
| भरतस्य | பரதரது | मुनिः | முனிவர் |
| एतत् | இந்த | शुभतरं | அதிலும் சிறந்த |
| शुभं | புண்ணிய | वाक्यं ह | பின்வரும் சொல்லை |
| वाक्यं | சொல்லை | उवाच | சொன்னார் : |
| श्रुत्वा | கேட்ட | | |

नैतच्चित्रं नरव्याघ्र शीलवृत्तवतां वर । यदार्थं त्वयि तिष्ठेत्तु निम्ने सृष्टमिवोदकम् ॥ १६ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|----------|------------------------|
| नरव्याघ्र | “ புருஷோத்தம ! | त्वयि | உன்னிடத்தில் |
| शीलवृत्तवतां वर | சீலவான்களிலுத்தம ! | आर्य | நற்குணமானது |
| निम्ने | அகாதமடுவில் | तिष्ठेत् | குடிக்கொண்டிருக்கிறது. |
| सृष्टं | ஏராளமாகிய | | |
| उदकं | ஜலம் | यत् तु | ஆனதுபற்றி |
| इव | எவ்வண்ணமோ | एतत् | இது |
| | அவ்வண்ணமே | चित्रं न | ஆச்சரியமன்று. |

अमृतः स महाबाहुः पिता दशरथस्तव । यस्य त्वमीदृशः पुत्रो धर्मज्ञो धर्मवत्सलः ॥ १७ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|----------|-------------------|
| धर्मज्ञः | “ தர்மத்தையறிந்து | सः | அந்த |
| धर्मवत्सलः | தர்மத்தை பற்றுடன் | तव | உனது |
| | அனுஷ்டிக்கும் | पिता | தகப்பனாகிய |
| ईदृशः | இப்படிப்பட்ட | महाबाहुः | மகாபாகுவான |
| त्वं | நீ | दशरथः | தசரதசக்கிரவர்த்தி |
| यस्य | யாருடைய | | யார் |
| पुत्रः | புதல்வனோ | अमृतः | சாகாதவரே.” |

तमृषिं तु महात्मानमुक्तवाक्यं कृताञ्जलिः । आमन्त्रयितुमारेभे चरणानुपगृह्य च ॥ १८ ॥

| | | | |
|------------|---------------|--------------|-------------------|
| उक्तवाक्यं | இவ்வாறு கூறிய | उपगृह्य च | விழுந்து ஸேவித்து |
| महात्मानं | மகாத்மாவாகிய | कृताञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராகி |
| तं | அந்த | आमन्त्रयितुं | போக விடைகொடுக்க |
| ऋषिं | ரிஷியை | आरेभे | செய்தார். |
| चरणौ तु | திருவடிகளில் | | |

ततः प्रदक्षिणं कृत्वा भरद्वाजं पुनः पुनः । भरतस्तु ययौ श्रीमानयोध्यां सह मन्त्रिभिः ॥

| | | | |
|-------------------|----------------|-------------|--------------------|
| श्रीमाम् | ஸ்ரீமானான | ततः | அவ்விடத்திலிருந்து |
| भरतः | பரதர் | मन्त्रिभिः | மந்திரிமார்களோடு |
| भरद्वाजं | பரத்வாஜமுனிவரை | सह | கூட |
| पुनः पुनः | பலமுறை | अयोध्यां तु | அயோத்திக்கே |
| प्रदक्षिणं कृत्वा | வலம்வந்து | ययौ | பிரயாணமானார். |

यानैश्च शकटैश्चैव हयैर्नागैश्च सा चमूः । पुनर्निवृत्ता विस्तीर्णा भरतस्यानुयायिनी ॥ २० ॥

| | | | |
|------------|-------------|-----------|---------------------|
| शकटैः च | வண்டிகள் | भरतस्य | பரதரது |
| हयैः एव | குதிரைகள் | चमूः | சேன |
| नागैः च | யானைகளாகிய | अनुयायिनी | தொடர்ந்துவருகிறதாய் |
| यानैः च | வாகனங்களால் | | |
| विस्तीर्णा | நிரம்பியதான | पुनः | மீண்டும் |
| सा | அந்த | निवृत्ता | திரும்பிற்று. |

ततस्ते यमुनां दिव्यां नदीं तीर्थोर्मिमालिनीम् । ददृशुस्तां पुनः सर्वे गङ्गां शुभजलां नदीम्॥

| | | | |
|--------------|-----------------|----------|--------------------|
| ततः | அனந்தரம் | तीर्त्वा | கடந்து |
| ते सर्वे | அவர்களெல்லோரும் | शुभजलां | புண்ணியதீர்த்தத்தை |
| ऊर्मिमालिनीं | அலைவரிசைகளை | तां | அந்த [யுடைய |
| | யுடைய | गङ्गां | கங்கா |
| यमुनां | யமுனையெனும் | नदीं | நதியை |
| दिव्यां | புண்ணிய | पुनः | மறுபடியும் |
| नदीं | நதியை | ददृशुः | கண்டார்கள். |

तां पुण्यजलसंपूर्णां संतीर्य सहबान्धवः । शृङ्गिवेरपुरं रम्यं प्रविवेश ससैनिकः ॥ २२ ॥

| | | | |
|-------------------|-----------------|---------------|-----------------------|
| ससैनिकः | சைனியங்களோடும் | तां | அதை |
| सहबान्धवः | பந்துக்களோடும் | संतीर्य | தாண்டி |
| | கூடின அவர் | रम्यं | அழகிய |
| पुण्यजलसम्पूर्णां | புண்ணியஜலத்தால் | शृङ्गिवेरपुरं | சுரங்கிபேரபுரத்திற்கு |
| | நிறைந்த | प्रविवेश | வந்துசேர்ந்தார். |

शृङ्गिवेरपुराद्भूयस्त्वयोध्यां संददर्श ह ॥ २३ ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------|------------|------------------|
| शृङ्गिवेरपुरात् | சுரங்கிபேரபுரத்தி | भूयः तु | மீண்டும் |
| | லிருந்து | अयोध्यां | அயோத்தியை |
| | | सन्ददर्श ह | கண்முன் கண்டார். |

अयोध्यां च ततो दृष्ट्वा पित्रा भ्रात्रा विनाकृताम् । भरतो दुःखसंतप्तः सारथिं वाक्यमब्रवीत्॥

| | | | |
|------------|-----------------------|-------------|-----------------------|
| भरतः | பரதர் | ततः | அதனால் |
| अयोध्यां | அயோத்தியை | दुःखसंतप्तः | துக்கத்தால் தபிக்கின் |
| पित्रा | தந்தையாலும், | | றவராய் |
| भ्रात्रा च | தமையனராலும் | सारथिं | சாரதியைப்பார்த்து |
| विनाकृतां | இல்லாமலிருக்கப் | वाक्यं | பின்வரும் சொல்லை |
| दृष्ट्वा | கிந்தித்து [பெற்றதாய் | अब्रवीत् | சொன்னார் : |

सारथे पश्य विध्वस्ता साऽयोध्या न प्रकाशते । निराकारा निरानन्दा दीना प्रतिहतस्वना॥

| | | | |
|-----------|-----------------|--------------|---------------------|
| सारथे | “சாரதியே ! | दीना | தீனமுற்று |
| सा | அந்த | प्रतिहतस्वना | ஒலியொடுங்கி |
| अयोध्या | அயோத்தி | विध्वस्ता | பாழடைந்து |
| निराकारा | உருமாறி | प्रकाशते न | விளங்காதிருக்கிறது; |
| निरानन्दा | மகிழ்ச்சியின்றி | पश्य | நீரே பாடும்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे त्रयोदशोत्तरशततमः सर्गः ॥



चतुर्दशोत्तरशततमः सर्गः—நூற்றுப்பதிநாலாவது ஸர்க்கம். ॥ ११४ ॥

अयोध्याप्रवेशः—அயோத்தியிற் பிரவேசிப்பது.

स्निग्धगम्भीरघोषेण स्यन्दनेनोपयान्प्रभुः । अयोध्यां भरतः क्षिप्रं प्रविवेश महायशाः ॥
 बिडालोलूकचरितामालीननरवारणाम् । तिमिरेणाहतां कालीमप्रकाशां निशामिव ॥ २ ॥
 राहुशत्रोः प्रियां पत्नीं श्रिया प्रज्वलितप्रभाम् । ग्रहेणाभ्युत्थितेनैकां रोहिणीमिव पीडिताम् ॥
 अल्पोष्णक्षुब्धसलिलां घर्मोत्तप्तविहंगमाम् । लीनमीनज्ञपग्राहां कृशां गिरिनदीमिव ॥ ४ ॥
 विधूमामिव हेमाभामध्वराग्रेः समुत्थिताम् । हविरभ्युक्षितां पश्चाच्छिखां विप्रलयं गताम् ॥
 विध्वस्तकवचां रुग्णगजवाजिरथध्वजाम् । हतप्रवीरामापन्नां चमूमिव महाहवे ॥ ६ ॥
 सफेनां सस्वनां भूत्वा सागरस्य समुत्थिताम् । प्रशान्तमारुतोद्धतां जलोर्मिमिव निःस्वनाम् ॥
 त्यक्तां यज्ञायुधैः सर्वैरभिरूपैश्च याजकैः । सुत्याकाले विनिर्वृत्तै वेदिं गतरवामिव ॥ ८ ॥
 गोष्ठमध्ये स्थितामार्तामचरन्तीं नवं तृणम् । गोवृषेण परित्यक्तां गवां पत्नीमिवोत्सुकाम् ॥
 प्रभाकराद्यैः सुस्निग्धैः प्रज्वलद्भिरिवोत्तमैः । वियुक्तां मणिभिर्जात्यैर्नवां मुक्तावलीमिव ॥
 सहसा चलितां स्थानान्महीं पुण्यक्षयाद्गताम् । संहतद्युतिविस्तारां तारामिव दिवश्च्युताम् ॥
 पुष्पनद्धां वसन्तान्ते मत्तभ्रमरनादिताम् । द्रुतदावाग्निविप्लुष्टां क्लान्तां वनलतामिव ॥ १२ ॥

स्निग्धगम्भीரघोषेण மனோகரமாயும் கம்பீரமாயுமிருக்கின்ற
 ச்யந்தனேன தேர்மீது
 உபயான் வந்துகொண்டிருந்த
 மஹாயசா: பெரும்புகழ்பெற்ற
 ப்ரபு: भरत: பிரபுவாகிய பரதர்
 बिडालोलूक- } பூனைகளும் கோட்டா
 चरितां } ன்களும் நடையாடப்
 பெற்றதும்,
 आलीननरवारणां மனிதவாசமற்றதும்,
 तिमिरेण இருளால்
 अप्रकाशां ஒளியற்று
 आहतां கவர்ந்துகொள்ளப்
 பட்ட
 कालीं காரிய
 निशां इव ராத்திரிபோலிருக்கிற
 தும்,
 राहुशत्रो: சந்திரனது
 प्रियां மனதிற்குகந்த
 पत्नीं மனைவியும்
 श्रिया கார்தியால்

प्रज्वलितप्रभां ஒளிகொண்டுவிளங்
 अभ्युत्थितेन உதயமான [கும்
 ग्रहेण கிரஹத்தால்
 पीडितां உபத்திரவிக்கப்பட்டு
 एकां தனியாயிருக்கும்
 रोहिणीं इव ரோஹிணியைப்போ
 லிருக்கிறதும்,
 अल्पोष्णक्षुब्ध- } கொஞ்சமுஷ்ணத்தை
 सलिलां } யும் கலக்கத்தையு
 முடைய ஜலங்கொ
 ண்டதும்,
 घर्मोत्तप्तविहंगमां வெயிலால் வாடிய
 பசுதிகளையுடையதும்,
 लीनमीनज्ञपग्राहां பெருமீன் சிறுமீன் மு
 தலையிவைகளற்ற
 कृशां கஷ்ணித்துமிருக்கும்
 गिरिनदीं इव மலையாறுபோலிருக்கி
 றதும்,
 अध्वराग्रे: யாகத்தீயிலிருந்து
 समुत्थितां கிளம்பியதும்

विधूमां
हेमाभां
हविरभ्युक्षितां

புகையற்று
பொன்னிறமான தும்
ஹவிஸ்ஸால் ஹோ
மம்செய்யப்பட்ட தும்

पश्चात्
विप्रलयं गतां
शिखां इव

பின்பு
நாசமடைந்த துமான
ஜ்வாலையைப்போலி
ருப்பதும்,

महाहवे
विध्वस्तकवचां

பெரும்போரில்
சிதறிய கவசங்களை
யுடையதும்

रुणगजवाजि-
रथध्वजां }

முறிபட்ட யானைகள்,
குதிரைகள், ரதங்க
ளிரைகளையுடைய
தும்

हतप्रवीरां

போர்வீரரையிழந்து

आपन्नां

தவிக்கும்

चमूं इव

சேனையைப்போலிருப்

समुथितां

மேற்கிளம்பி [பதும்

सफेनां

துரையோடும்

सखनां

சத்தத்தோடும்

भूत्वा

விளங்கியிருந்து

प्रशान्तमारुतोद्धूतां

காற்றலைப்பினின்று
ஒழிவடைந்து

निःस्वनां

ஒலியடங்கிய

सागरस्य

சமுத்திரத்தினது

जलोर्मिं इव

அலைபோலிருக்
கிறதும்,

सुत्यकाले

யாகம் செய்யும்
காலமானது

विनिर्वृत्ते

முடிவுற்றதும்,

अभिरूपैः

தகுந்த

याजकैः

யாஜகர்களாலும்

यज्ञायुधैः

யாககருவிகள்

सर्वैः च

எல்லாவற்றாலும்

त्यक्तां

விடப்பட்டு

गतरवां

ஒலியடங்கிய

वेदिं इव

வேதியைப்போலிருக்
கிறதும்,

गोवृषेण

எருதினால்

परित्यक्तां

கைவிடப்பட்டு

उत्सुकां

அதையே நினைந்து

आर्तां

வருந்தி.

नवं

பசும்

तृणं

புல்லை

अचरन्तीं

தின்னாது

गोष्ठमध्ये

கோட்டத்தின் நடுவில்

स्थितां

நின்றனுகொண்டி-

ருக்கும்

गवां पत्नीं इव

பசவைப்போலிருக்
கிறதும்,

प्रज्वलद्भिः इव

சுடர்விடுவனபோல்

सुस्निग्धैः

ஜவலிக்கும்

उत्तमैः

சிறந்த

जाल्यैः

ஜாதி

प्रभाकराद्यैः

பத்மராகம் முதலிய

मणिभिः वियुक्तां

இரத்தினங்கள் நீங்கிய

नवां

புதிய

सुक्तावलीं इव

முக்தாஹாரம்போன்
றதும்,

पुण्यश्रयात्

புண்யம் கழிந்துவிட்

सहसा

உடனே [டமையால்

स्थानात्

இடத்தைவிட்டு

चलितां

பெயர்ந்து

संहतद्युतिविस्तारां

ஒளிவிஸ்தாரமழிந்து

दिवः

ஆகாயத்தினின்று

च्युतां

நழுவி

महीं

பூமியில்

गतां

விழுந்த

तारां इव

நக்சத்திரத்தைப்
போன்றதும்

वसन्तान्ते

கோடைகாலத்தில்

पुष्पनद्धां

நன்குபூத்து

मत्तभ्रसरनादितां

கொழுத்தவண்டுகளா
ல் சப்திக்கப்பெற்று

द्रुतदावाग्निविप्लुष्टां

பரவிய காட்டுத்தீயா

क्लान्तां

கருகிய [லழிவுற்ற

वनलतां इव

காட்டுக்கொடியைப்
போலிருக்கிறதும்

संमूढनिगमां स्तब्धां संक्षिप्तविपणापणाम् । प्रच्छन्नशशिनक्षत्रां द्यामिवाम्बुधरैर्वृताम् ॥ १३ ॥
 क्षीणपानोत्तमैर्भिन्नैः शरावैरभिसंवृताम् । हतशौण्डामिवाकाशे पानभूमिमसंस्कृताम् ॥ १४ ॥
 वृक्णभूमितलां निम्नां वृक्णपात्रैः समावृताम् । उपयुक्तोदकां भग्नां प्रपां निपतितामिव ॥
 विपुलां विततां चैव युक्तपाशां तरस्विनाम् । भूमौ बाणैर्विनिष्कृत्तां पतितां ज्यामिवायुधात् ॥
 सहसा युद्धशौण्डेन हयारोहेण वाहिताम् । निक्षिप्तभाण्डामुत्सृष्टां किशोरीमिव दुर्वलाम् ॥
 शुष्कतोयां महामत्स्यैः कूर्पैश्च बहुभिवृताम् । प्रभिन्नतटविस्तीर्णां वापीमिव हतोत्पलाम् ॥
 पुरुषस्याप्रहृष्टस्य प्रतिषिद्धानुलेपनाम् । सन्तप्तामिव शोकेन गात्रयष्टिमभूषणाम् ॥ १९ ॥
 प्रावृषि प्रविगाढायां प्रविष्टस्याभ्रमण्डलम् । प्रच्छन्नां नीलजीमूतैर्भास्करस्य प्रभामिव ॥

अम्बुधरैः மேகங்களால்
 वृतां மறைக்கப்பட்டு
 प्रच्छन्न- மறைந்த சந்திரனையும்
 शशिनक्षत्रां } நக்சத் திரங்களையுமு
 द्यां इव ஆகாயம்போல் [டைய
 संमूढनिगमां ஜனஸஞ்சாரமற்று
 संक्षिप्तविपणापणां நிறுத்தப்பட்ட வாணி
 பமுடையதாய்
 स्तब्धां நிச்சப்தமாயிருக்
 கிறதும்,
 क्षीणपानोत्तमैः உத்தம குடிவகை
 भिन्नैः சிதறிய [களற்று
 शरावैः अभिसंवृतां பான்பாத்திரங்களால்
 हतशौण्डां குடியரற்று [நிரம்பிய
 असंस्कृतां சீர்குலைந்திருக்கும்
 आकाशे வெட்டவெளியிலுள்ள
 पानभूमि इव பான்பூமியைப்போலி
 ருக்கிறதும்,
 उपयुक्तोदकां தண்ணீருபயோகித்து
 वृक्णभूमितलां இடிந்துபோன தளவ
 ரிசையையுடையதும்
 निम्नां பள்ளங்களையுடை
 யதும்
 वृक्णपात्रैः உடைந்த பாத்திரங்
 समावृतां நிரம்பியதாய் [களால்
 भग्नां உருவழிந்து
 निपतितां பாழுடைந்த
 प्रपां इव தண்ணீர்ப்பந்தலைப்
 போலிருக்கிறதும்
 विततां அகன்று
 विपुलां நீண்டு

युक्तपाशां கட்டப்பட்டிருந்து
 तरस्विनां வீரர்களது
 बाणैः विनिष्कृत्तां பாணங்களாலறுக்கப்
 आयुधात् வில்லினின்று [பட்டு
 भूमौ தரையில்
 पतितां एव च விழுந்துகிடக்கும்
 ज्यां इव நாண்கயிறைப்போலி
 ருப்பதும்
 युद्धशौण्डेन போரில் வல்ல
 हयारोहेण குதிரைவீரனால்
 निक्षिप्तभाण्डां சேணமிட்டு
 सहसा वाहितां தீவரமாய் நடத்தப்பட்ட
 उत्सृष्टां பின்பு விடப்பட்ட [டு
 दुर्वलां வலியற்ற
 किशोरी इव பெண்குதிரையைப்
 போலிருக்கிறதும்,
 बहुभिः महामत्स्यैः பல பெருமீன்களா
 कूर्पैः च ஆமைகளாலும் [லும்
 वृतां விளங்கப்பெற்றிருந்து
 शुष्कतोयां நீர்வற்றி
 हतोत्पलां நீலோத்பலங்களற்று
 प्रभिन्नतटविस्तीर्णां இடிந்துபோன கரை
 களையுடைய
 वापी इव வாவியைப்போலிருக்
 கிறதும்,
 अप्रहृष्टस्य சந்தோஷமற்ற
 पुरुषस्य ஓர் மனிதனது
 शोकेन சோகத்தால்
 सन्तप्तां வாட்டமுற்று

| | | | |
|---------------------|--------------------|-------------------|----------------------|
| प्रतिषिद्धानुलेपनां | சந்தனப்பூச்சின் றி | भास्करस्य | சூரியபகவானுடைய |
| अभूषणां | அலங்கரிக்கப்படாத | नीलजीमूतैः | நீலமேகங்களால் |
| गात्रयष्टि इव | உடம்பைப்போலிருக் | प्रच्छन्नां | மறைக்கப்பட்ட |
| प्रविगाढायां | தீவிர [கிறதும் | प्रभां इव | காந்தியைப்போலிருக் |
| प्रावृषि | கார்காலத்தில் | | கிறதுமான |
| अभ्रमण्डलं | மேகமண்டலத்தினுள் | अयोध्यां | அயோத்திநகருள் |
| प्रविष्टस्य | புகுந்த | क्षिप्रं प्रविवेश | விரைவில் புகுந்தார். |

भरतस्तु रथस्थः सञ्श्रीमान्दशरथात्मजः । वाहयन्तं रथश्रेष्ठं सारथिं वाक्यमब्रवीत् ॥२१॥

| | | | |
|---------------|--------------------|------------|-------------------|
| श्रीमान् | சீமானும் | रथश्रेष्ठं | சிறேஷ்டமான ரதத் |
| दशरथात्मजः तु | தசரதகுமாரருமான | वाहयन्तं | செலுத்தும் [தை |
| भरतः | பரதர் | सारथिं | சாரதியைப்பார்த்து |
| रथस्थः सन् | ரதத்திலிருந்தபடியே | वाक्यं | பின்வரும் சொல்லை |
| | | अब्रवीत् | சொன்னார்: |

किं नु खल्वद्य गम्भीरो मूर्च्छितो न निश्म्यते । यथापुरमयोध्यायां गीतवादित्रनिःस्वनः॥

| | | | |
|------------|----------------|--------------------|------------------|
| अद्य | “இப்பொழுது | गीतवादित्रनिःस्वनः | பாட்டுவாத்யமிவைக |
| अयोध्यायां | அயோத்தியில் | यथापुरं | முன்போல் [ளிநொலி |
| गम्भीरः | கம்பீரமாய் | निश्म्यते न | கேட்கப்படவில்லை. |
| मूर्च्छितः | மேன்மேல்வளரும் | किं नु खलु | இதென்ன கஷ்டம்! |

वारुणीमदगन्धश्च माल्यगन्धश्च मूर्च्छितः । धूपितागरुगन्धश्च न प्रवाति समन्ततः ॥ २३ ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------|------------------|------------------|
| समन्ततः | “எங்கும் | माल्यगन्धः च | புஷ்பவாசனையும் |
| मूर्च्छितः | விளங்கிய | धूपितागरुगन्धः च | தூபமிடப்பட்ட அகி |
| वारुणीमदगन्धः च | மதுவின் வாசனையும் | प्रवाति न | வீசவில்லை. |

यानप्रवरघोषश्च स्निग्धश्च ह्यनिःस्वनः । प्रमत्तगजनादश्च महान्श्च रथनिःस्वनः ॥

नेदानीं श्रूयते पुर्यामस्यां रामे विवासिते

| | |
|----------------|----------------------|
| रामे | “ஸ்ரீராமர் |
| विवासिते | நாடுகடத்தப்பட்டிருக் |
| इदानीं | இப்பொழுது [கையில் |
| अस्यां पुर्यां | இந்த நகரில் |
| यानप्रवरघोषः च | கிறந்த வண்டிகளின் |
| | சத்தமும் |

स्निग्धः मञ्जेकरमयिरुक्कुम्

चन्दनागरुगन्धांश्च महार्हाश्च नवस्रजः । गते हि रामे तरुणाः सन्तप्ता नोपभुञ्जते ॥२५॥

| | |
|-----------|------------------|
| रामे | “ஸ்ரீராமர் |
| गते | சென்றவளவில் |
| तरुणाः | உதஸாஹமாய்க் கால |
| | ங்கழிப்பவர்கள் |
| सन्तप्ताः | மனவேதனைப்படுகின் |
| | றவர்களாய் |

॥ २४ ॥

| | |
|-----------------|-------------------|
| ह्यनिःस्वनः च | குதிரைகளின் கனைப் |
| | பும் |
| प्रमत्तगजनादः च | மதமடைந்த யானைக |
| | ளின் பிளறலும் |
| महान् | பெருந்த |
| रथनिःस्वनः च | ரதங்களினொலியும் |
| श्रूयते न | கேட்கப்படவில்லை. |

| | |
|----------------|--------------------|
| महार्हाः | சிறந்த |
| नवस्रजः च | புதுமாலைகளையும் |
| चन्दनागरु-} | சந்தனம், அகிலிவை |
| गन्धान् च } | களின் வாசனைகளையும் |
| उपभुञ्जते न हि | அணியா திருக்கிறார் |
| | களே ! |

बहिर्यात्रां न गच्छन्ति चित्रमाल्यधरा नराः । नोत्सवाः संप्रवर्तन्ते रामशोकार्दिते पुरे ॥

| | | | |
|----------------|------------------------------------|-----------------|------------------------------|
| रामशोकार्दिते | “ஸ்ரீராமசோகத்தால் பிடிக்கப்பட்ட | बहिर्यात्रां | வெளியிற்செல்ல |
| पुरे | நகரில் | गच्छन्ति न | புறப்படா திருக்கின் றனர். |
| नराः | மனிதர்கள் | उत्सवाः | திருவிழாக்கள் |
| चित्रमाल्यधराः | அழகுமாலையுடைய அணிந்து | संप्रवर्तन्ते न | நடக்கவில்லை. |

सा हि नूनं मम भ्रात्रा पुरस्यास्य द्युतिर्गता । न हि राजत्ययोध्येयं सासारेवार्जुनी क्षपा ॥

| | | | |
|-------------|-------------|----------|-----------------------------|
| मम | “எனது | हि | எனனில் |
| भ्रात्रा हि | தமையனாரோடே | इयं | இந்த |
| अस्य | இந்த | अर्जुनी | தேஜோமயமாய் |
| पुरस्य | நகரத்தில் | अयोध्या | அயோத்யா [விளங்கிய] |
| सा | அந்த | सासारा | இடிமின்னல் மழை ளோடுகூடிய |
| द्युतिः | சோபை | क्षपा इव | இரவுபோல் |
| गता | போய்விட்டது | राजति न | விளங்கா திருக்கிறது. |
| नूनं | திண்ணம். | | |

कदा नु खलु मे भ्राता महोत्सव इवागतः । जनयिष्यत्ययोध्यायां हर्षं ग्रीष्म इवाम्बुदः ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|-------------------------|
| मे | “எனது | महोत्सवः इव | திருவிழாப்போல் |
| भ्राता | தமையனார் | हर्षं | மகிழ்ச்சியை |
| ग्रीष्मे | கோடைகாலத்தில் | कदा नु खलु | எப்பொழுதுதான் |
| अम्बुदः इव | மேகம்போல் | जनयिष्यति | உண்டாக்கப்போகி றார். |
| आगतः | திரும்பிவந்தவராய் | | |
| अयोध्यायां | அயோத்யையில் | | |

तरुणैश्चारुवेषैश्च नरैरुन्नतगामिभिः । संपतद्भिरयोध्यायां नातिभान्ति महापथाः ॥ २९ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|--------------|-------------------|
| अयोध्यायां | “அயோத்யையில் | उन्नतगामिभिः | அழகாய் நடந்து |
| महापथाः | ராஜவீதிகள் | संपतद्भिः च | சஞ்சரிக்கும் |
| चारुवेषैः | அழகிய ஆடை ஆபரணங்கள் தரித்து | तरुणैः | உதஸாஹமுடைய |
| | | नरैः | மனிதர்களால் |
| | | अतिभान्ति न | விளக்கமுறவில்லை.” |

एवं बहुविधं जल्पन्विवेश वसतिं पितुः । तेन हीनां नरेन्द्रेण सिंहहीनां गुहामिव ॥ ३० ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-----------|------------------------------|
| एवं | இவ்வாறு | सिंहहीनां | ஸிம்மமில்லாத |
| बहुविधं | பலவாறாய் | गुहां इव | குகையைப்போலிருக் கிறதுமான |
| जल्पन् | புலம்பிக்கொண்டு | पितुः | தந்தையினது |
| तेन | அந்த | वसतिं | மாளிகையினுள் |
| नरेन्द्रेण | புருஷோத்தமரால் | विवेश | புகுந்தார். |
| हीनां | கைவிடப்பட்டதும் | | |

तदा तदन्तःपुरमुज्झितप्रभं सुरैरिवोत्सृष्टमभास्करं दिनम् ।

निरीक्ष्य सर्वत्र विभक्तमात्मवान्मुमोच बाष्पं भरतः सुदुःखितः

॥ ३१ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|-------------|----------------------------|
| तदा | அப்பொழுது | उत्सृष्टं | சாபமிடப்பட்ட |
| आत्मवान् | தையியவானான | अभास्करं | சூரியனில்லாத |
| भरतः | பரதர் | दिनं इव | தினத்தைப்போல் |
| तदन्तःपुरं | அவரது அந்தப்புரத் தை | उज्झितप्रभं | ஒளியிழந்திருப்ப தாயும், |
| सर्वत्र | எம்மருங்கினும் | निरीक्ष्य | கவனித்து |
| विभक्तं | மனிதசஞ்சாரமற்றி ருப்பதாயும், | सुदुःखितः | மிகத்துக்கமடைந்த |
| सुरैः | தேவர்களால் | बाष्पं | கண்ணீரை [வராய் |
| | | मुमोच | பெருக்கினார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे चतुर्दशोत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 6553

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 4198



पञ्चदशोत्तरशततमः सर्गः—நூற்றுப்பதினைந்தாவது ஸர்க்கம். ॥ ३१५ ॥

पादुकापट्टाभिषेकः—பாதுகா பட்டாபிஷேகம்.

ततो निक्षिप्य मातृः स अयोध्यायां दृढव्रतः । भरतः शोकसन्तप्तो गुरुनिदमथाब्रवीत् ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|-------------|--------------------------------|
| ततः | அனந்தரம் | गुरुन् | பெரியோர்களைப் பார்த்து |
| दृढव्रतः | உறுதியான நல்லொ | शोकसन्तप्तः | மனவேதனையால் தடிக்கின்றவராய் |
| सः | அந்த [மூக்கமுடைய | अथ | இப்பொழுது |
| भरतः | பரதர் | इदं | பின்வருமாறு |
| अयोध्यायां | அயோத்தியில் | अब्रवीत् | மொழிந்தார்: |
| मातृः | தாய்மார்களை | | |
| निक्षिप्य | வணிக்கச்செய்து விட்டு | | |

नन्दिग्रामं गमिष्यामि सर्वानामन्त्रयेऽद्य वः । तत्र दुःखमिदं सर्वं सहिष्ये राघवं विना ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|---------|-------------------------------|
| अद्य | “இப்பொழுது | राघवं | ராமரை |
| नन्दिग्रामं | நந்திக்கிராமத்திற்கு | विना | பிரிந்ததா லுண்டாகிய |
| गमिष्यामि | செல்லப்போகின் றேன். | इदं | இந்த |
| वः | உங்கள் | दुःखं | கஷ்டம் |
| सर्वान् | எல்லோரிடமும் | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| आमन्त्रये | விடைபெற்றுக்கொள் ளுகிறேன். | तत्र | அங்கு. |
| | | सहिष्ये | பொறுத்துக்காத்தி ருப்பேன். |

गतश्च हि दिवं राजा वनस्थश्च गुरुर्मम । रामं प्रतीक्षे राज्याय स हि राजा महायशः ॥

| | | | |
|---------|----------------------|-----------|---------------------|
| राजा हि | “சக்கிரவர்த்தியாரோ | महायशः | பெரும் புகழ்பெற்ற |
| दिवं | ஸ்வர்க்கம் | सः हि | அவர்தான் |
| गतः | சென்றுவிட்டனர். | राजा | சக்கிரவர்த்தி. |
| मम | எனது | राज्याय | ராஜ்ய ஆளுகைக்காக |
| गुरुः च | தமையனாரோ | रामं च | ஸ்ரீராமரையே |
| वनस्थः | காட்டி லிருக்கிறார். | प्रतीक्षे | எதிர்பார்க்கிறேன்.” |

एतच्छ्रुत्वा शुभं वाक्यं भरतस्य महात्मनः । अब्रुवन्मन्त्रिणः सर्वे वसिष्ठश्च पुरोहितः ॥

| | | | |
|-----------|----------------|----------|--------------------|
| पुरोहितः | புரோஹிதராகிய | एतत् | இந்த |
| वसिष्ठः | வஸிஷ்டபகவானும் | शुभं | அழகிய |
| मन्त्रिणः | மந்திரிமார்கள் | वाक्यं | சொல்லை |
| सर्वे च | எல்லோரும் | श्रुत्वा | கேட்டு |
| महात्मनः | மகாத்மாவாகிய | अब्रुवन् | பின்வருமாறு |
| भरतस्य | பரதருடைய | | பதிலுரைத்தார்கள் : |

सुभृशं श्लाघनीयं च यदुक्तं भरत त्वया । वचनं भ्रातृवात्सल्यादनु रूपं तवैव तत् ॥ ५ ॥

| | | | |
|-------------------|---|-----------|------------------|
| भरत | “பரத! | यत् च | எதுவோ அது |
| भ्रातृवात्सल्यात् | { தமையனாரிடத்திலுள் ள பத்திமையின் அதிசயத்தால் | सुभृशं | மிகவும் |
| त्वया | உன்னால் | श्लाघनीयं | கொண்டாடத்தக்கது. |
| उक्तं | சொல்லப்பட்ட | तत् | அது |
| वचनं | வார்த்தை | तव एव | உனக்கே |
| | | अनुरूपम् | ஏற்றது. |

नित्यं ते बन्धुलुब्धस्य तिष्ठतो भ्रातृसौहृदे । आर्यमार्गं प्रपन्नस्य नानुमन्येत कः पुमान् ॥

| | | | |
|--------------|------------------------|---------------|---------------------|
| भ्रातृसौहृदे | “தமையனாரின் நன்மை யில் | बन्धुलुब्धस्य | தமையனாரை |
| नित्यं | எப்பொழுதும் | | எதிர்பார்க்கும் |
| तिष्ठतः | பத்திமைகொண்டு | ते | உனக்கு |
| आर्यमार्गं | தர்ம அனுஷ்டானத்தை | कः | எந்த |
| प्रपन्नस्य | கைப்பிடித்த | पुमान् | மனிதன் |
| | | अनुमन्येत न | இணங்கா திருப்பான்?” |

मन्त्रिणां वचनं श्रुत्वा यथाभिलषितं प्रियम् । अब्रवीत्सारथिं वाक्यं रथो मे युज्यतामिति ॥

| | | | |
|------------|--------------------|----------|------------------|
| मन्त्रिणां | மந்திரிமார்களுடைய | मे | ‘எனது |
| प्रियं | இனிய | रथः | ரதம் |
| यथाभिलषितं | கருத்தின்படியே | युज्यतां | தயாராய்க்கொண்டு |
| | இருக்கிற | | வாப்பட்டும்தம்’. |
| वचनं | பதிலை | इति | என்கிற |
| श्रुत्वा | கேட்டு, (அவர்) | वाक्यं | ஆக்கினையை |
| सारथिं | சாரதியைப் பார்த்து | अब्रवीत् | அளித்தார். |

प्रहृष्टवदनः सर्वा मातुः समभिवाद्य सः । आरुरोह रथं श्रीमाञ्छत्रुघ्नेन समन्वितः ॥८॥

| | | | |
|--------------|--------------------|------------|--------------|
| श्रीमान् | சீமானான | समभिवाद्य | ஸேவித்து |
| सः | அவர் | शत्रुघ्नेन | சத்ருக்னனோடு |
| प्रहृष्टवदनः | மலர்ந்த முகத்துடன் | समन्वितः | கூடவே |
| मातुः | தாய்மார்கள் | रथं | ரதத்தை |
| सर्वाः | எல்லோரையும் | आरुरोह | அடைந்தார். |

आरुह्य च रथं शीघ्रं शत्रुघ्नभरतावुभौ । ययतुः परमप्रीतौ वृतौ मन्त्रिपुरोहितैः ॥ ९ ॥

| | | | |
|------------------|--|-----------|-----------------------------|
| मन्त्रिपुरोहितैः | மந்திரிமார்களாலும் புரோஹிதர்களாலும் | परमप्रीतौ | அதிசந்தோஷமடைந் தவர்களாய் |
| वृतौ | சூழப்பட்டவர்களாய் | रथं | ரதத்தில் |
| शत्रुघ्नभरतौ | சத்ருக்னனும் பரதரு மாகிய | आरुह्य च | ஏறிக்கொண்டு |
| उभौ | இருவர்களும் | शीघ्रं | விரைவாக |
| | | ययतुः | சென்றார்கள். |

अग्रतो गुरवस्तस्य वसिष्ठप्रमुखा द्विजाः । प्रययुः प्राङ्मुखाः सर्वे नन्दिग्रामो यतोऽभवत् ॥

| | | | |
|----------------|-----------------|-------------|--------------------------------|
| वसिष्ठप्रमुखाः | வஸிஷ்டர் முதலான | तस्य | அவருக்கு |
| द्विजाः | அந்தண | अग्रतः | முன்பாக |
| गुरवः | பெரியோர்கள் | नन्दिग्रामः | நந்திக்கிராமம் |
| सर्वे | எல்லோரும் | यतः अभवत् | எங்கிருந்ததோ அவ்விடத்திற்கு |
| प्राङ्मुखाः | கிழக்குநோக்கி | प्रययुः | பிரயாணமானார்கள். |

बलं च तदनाहूतं रथाश्वगजसंकुलम् । प्रययौ भरते याते सर्वे च पुरवासिनः ॥ ११ ॥

| | | | |
|--------------------------|---|-----------|-----------------------|
| रथाश्वगज- } सङ्कुलं } | ரதம், குதிரை, யானை இவைகளால் நிரம்பிய | याते | சென்றதும் |
| तत् | அந்த | प्रययौ | பின்பற்றிச்சென்றது. |
| बलं | சைனியம் | पुरवासिनः | நகரத்தார்கள் |
| अनाहूतं च | அழைக்கப்படாமலே | सर्वे | எல்லோரும் |
| भरते | பரதர் | च | அவ்வளமே சென் றனர். |

रथस्थः स तु धर्मात्मा भरतो भ्रातृवत्सलः । नन्दिग्रामं ययौ तूर्णं शिरस्याधाय पादुके ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|-------------|------------------|
| धर्मात्मा | தர்மாத்மாவும் | शिरसि | தலையில் |
| भ्रातृवत्सलः | தமையனாடம் பற்று டையவருமான | पादुके | பாதுகைகளை |
| सः | அந்த | आधाय | வைத்துக்கொண்டு |
| भरतः | பரதர் | तूर्णं | விரைவில் |
| रथस्थः तु | ரதத்தில் இருந்து கொண்டே | नन्दिग्रामं | நந்திக்கிராமத்தை |
| | | ययौ | அடைந்தார். |

ततस्तु भरतः क्षिप्रं नन्दिग्रामं प्रविश्य सः । अवतीर्य रथात्तूर्णं गुरुनिदमुवाच ह ॥१३॥

| | | | |
|-------------|--------------------|------------|------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | तूर्णं | விரைவில் |
| सः | அந்த | अवतीर्य तु | இறங்கியதும் |
| भरतः | பரதர் | गुरुन् | பெரியோர்களைப் பார்த்து |
| नन्दिग्रामं | நந்திக்கிராமத்தில் | | |
| क्षिप्रं | விரைவில் | इदं | பின்வருமாறு |
| प्रविश्य | புகுந்து | उवाच | திருவாய்மலர்ந்தருளி |
| रथात् | ரதத்தினின்றும் | ह | காண்! [ஓர். |

एतद्राज्यं मम भ्रात्रा दत्तं संन्यासवत्स्वयम् । योगक्षेमवहे चेमे पादुके हेमभूषिते ॥ १४ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|-------------|---------------------------|
| मम | “எனக்கு | दत्तं | அளிக்கப்பட்டது. |
| भ्रात्रा | தமையனரால் | हेमभूषिते | பொன்னுலலங்கரிக்கப்பட்ட |
| एतत् | இந்த | | |
| राज्यं | ராஜ்யமானது | इमे | இந்த |
| स्वयं | தானாக | पादुके च | இருபாதுகைகளும் |
| संन्यासवत् | தர்மகர்த்தாவெனும் தன்மையுடையதாய் | योगक्षेमवहे | யோகக்ஷேமங்களை கவனிப்பவை.” |

भरतः शिरसा कृत्वा संन्यासं पादुके ततः । अब्रवीदुःखसन्तप्तः सर्वं प्रकृतिमण्डलम् ॥

| | | | |
|----------|---------------|---------------|------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | दुःखसन्तप्तः | துக்கத்தால் தபித்துக் கொண்டு |
| भरतः | பரதர் | प्रकृतिमण्डलं | ஜனசமுஹம் |
| संन्यासं | பிரதிநிதிகளான | सर्वं | எல்லோரையும் பார்த்து |
| पादुके | பாதுகைகளை, | | |
| शिरसा | முடிதாழ்த்தி | अब्रवीत् | (பின்வருமாறு) |
| कृत्वा | வணங்கி, | | மொழிந்தார்: |

छत्रं धारयत क्षिप्रमार्यपादाविमौ मतौ । आभ्यां राज्ये स्थितो धर्मः पादुकाभ्यां गुरोर्मम॥

| | | | |
|----------|-------------------------|-------------|------------------|
| आर्यपादौ | “பெரியவரின் திருவடிகளாக | मम | எனது |
| मतौ | கருதவேண்டிய | गुरोः | தமையனரது |
| इमौ | இவைகளுக்கு | आभ्यां | இந்த |
| क्षिप्रं | விரைவில் | पादुकाभ्यां | பாதுகைகளால் |
| छत्रं | வெண்குடையை | राज्ये | ராஜ்யத்தில் |
| धारयत | பிடியுங்கள். | धर्मः | தருமம் |
| | | स्थितः | வழுவாதிருக்கும். |

भ्रात्रा तु मयि संन्यासो निक्षिप्तः सौहृदादयम् । तमिमं पालयिष्यामि राघवागमनं प्रति॥

| | | | |
|------------|------------------|-------------|--------------------------------|
| भ्रात्रा | “தமையனால் | राघवागमनं | ஸ்ரீராமருடைய வர |
| सौहृदात् | தண்ணளியால் | प्रति | வையெதிர்பார்த்துக் கொண்டு நான் |
| मयि | என்னிடத்தில் | | |
| निक्षिप्तः | பொறுப்பாயளிக்கப் | तं | அந்த |
| संन्यासः | பிரதிநிதி [பட்ட | इमं | இதை |
| अयं तु | இதுதான். | पालयिष्यामि | பாதுகாப்பேன். |

क्षिप्रं संयोजयित्वा तु राघवस्य पुनः स्वयम् । चरणौ तौ तु रामस्य द्रक्ष्यामि सहपादुकौ॥

| | | | |
|-------------|--------------|-------------|-----------------------------------|
| புன: து | “மீளவும் | தौ து | ஆவ்விரண்டையும் |
| राघवस्य | ஸ்ரீராமருடைய | सहपादुकौ | பாதுகைகளுடனிருக் கின்றவைகளாய். |
| चरणौ | திருவடிகளில் | क्षिप्रं तु | சீக்கிரமே |
| संयोजयित्वा | சேர்த்திட்டு | स्वयं | நான் |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய | द्रक्ष्यामि | கண்டுகளிப்பேன். |

ततौ निक्षिप्तभारोऽहं राघवेण समागतः । निवेद्य गुरवे राज्यं भजिष्ये गुरुवृत्तिताम् ॥

| | | | |
|---------|-----------------|---------------|---------------------------------|
| अहं | “நான் | ततः | அதனால் |
| राघवेण | ஸ்ரீராமரோடு | निक्षिप्तभारः | பொறுப்பற்று |
| समागतः | கூடி | गुरुवृत्तितां | பெரியவருக்குத் திருத்தொண்டை. |
| गुरवे | தமையனாரிடத்தில் | भजिष्ये | செய்யப்போகிறேன். |
| राज्यं | ராஜ்யத்தை | | |
| निवेद्य | ஒப்பித்துவிட்டு | | |

राघवाय च संन्यासं दत्त्वेमे वरपादुके । राज्यं चेदमयोध्यां च धूतपापो भवामि च॥२०॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|---------|-------------------------|
| संन्यासं | “பிரதிரிதித்திரவிய | इदं च | இவையெல்லாவற்றை யும், |
| इमे | இந்த [மாகிய | राघवाय | ஸ்ரீராமரிடத்தில் |
| वरपादुके च | பூஜ்யார்ஹமாகிய பாதுகைகளையும், | दत्त्वा | சமர்ப்பித்துவிட்டு |
| राज्यं च | பரிபாலனத்தையும், | धूतपापः | பழிநீங்கினவனாக |
| अयोध्यां च | அயோத்யையும், | भवामि | நானாகவேன். |

अभिषिक्ते तु काकुत्स्थे प्रहृष्टे मुदिते जने । प्रीतिर्मम यशश्चैव भवेद्राज्याच्चतुर्गुणम् ॥२१॥

| | | | |
|--------------|-----------------------|------------|----------------------------------|
| काकुत्स्थे | “ஸ்ரீராமர் | राज्यात् | ராஜ்யபரிபாலனத் தைக்காட்டிலும் |
| प्रहृष्टे | திருவுளமுவந்து | यशः च | புகழும், |
| अभिषिक्ते तु | அபிஷேகம்பெற்றப் | प्रीतिः एव | மனத்திருப்தியும் |
| जने | உலகம் [பின்னர் | चतुर्गुणं | நான்மடங்கதிகமாய் |
| मुदिते | களிப்புற்றிருக்கையில் | भवेत् | ஏற்படும்.” |
| मम | எனக்கு | | |

एवं तु विलपन्दीनो भरतः स महायशः । नन्दिग्रामेऽकरोद्राज्यं दुःखितो मन्त्रिभिः सह॥

| | | | |
|---------|------------------|---------------|--------------------|
| सः | அந்த | विलपन् तु | மொழிந்துவிட்டு |
| महायशः | பெரும்புகழ்பெற்ற | नन्दिग्रामे | நந்திக்கிராமத்தில் |
| भरतः | பரதர் | मन्त्रिभिः | மந்திரிமார்களோடு |
| दीनः | மனம்நொந்து | सह | கூட |
| दुःखितः | வருந்தி | राज्यं अकरोत् | அரசுசெய்தார். |
| एवं | இவ்வாறு | | |

स वल्कलजटाधारी मुनिवेषधरः प्रभुः । नन्दिग्रामेऽवसत्तदा ॥२३॥

| | | |
|--------------|--------------------|--------------------|
| ச: | அந்த | முனிவேஷம் பூண்டு |
| பு: | பிரபுவும் | அப்பொழுது |
| வீ: | தர்மவீரனுமாகிய | நந்திக்கிராமத்தில் |
| பர: | பரதர் | சைனியத்துடன் |
| வல்கலஜடாடாரி | மரவுரி ஜடை தரித்து | அவசத் |
| | | வஸித்தார். |

रामागमनमाकाङ्क्षन्भरतो भ्रातृवत्सलः । भ्रातुर्वचनकारी च प्रतिज्ञापारगस्तथा ॥ २४ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|----------------------|
| ராமா஑மனம் | ஸ்ரீராமரது வரவை | ததா | அதனால் |
| அகாங்க்ஷந் | எதிர்பார்க்கும் | அது: | தமையனானது |
| பர: | பரதர் | வசனகாரி | நியமனப்படி நடப்பவர்; |
| அரூவத்ஸல: | தமையனாரிடம் பத்தி | புதிஜாபாரக: | வாக்குறுதி கடவாத |
| | மைகொண்டவர்; | | வர். |

पादुके त्वभिषिच्याथ नन्दिग्रामेऽवसत्तदा । भरतः शासनं सर्वं पादुकाभ्यां न्यवेदयत् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|------------|---------------------|
| பர: | பரதர் | அவசத் | வஸித்தார். |
| ததா | அப்பொழுது | அத: | அதன்மேல் |
| பாடுகே து | பாதுகைகளுக்கு | சாசனம் | லோகபரிபாலனம் |
| அபிஷிச்ய | திருவபிஷேகம் | சர்வம் | எல்லாவற்றையும் |
| | செய்து | பாடுகாப்யா | பாதுகைகளிடத்தில் |
| நந்நி஑்ராமே | நந்திக்கிராமத்தில் | ந்யவேதயத் | விண்ணப்பம்செய்தார். |

ततस्तु भरतः श्रीमानभिषिचार्यपादुके । तदधीनस्तदा राज्यं कारयामास सर्वदा ॥२६॥

| | | | |
|------------|-------------------|----------|------------------|
| ததா | அப்பொழுது | தத: | அதுமுதற்கொண்டு |
| ஸ்ரீமானு | சீமானான | ததநீன: | அவைகளினடிமை |
| பர: | பரதர் | | யாகவே |
| அர்யபாடுகே | பெரியவரின் பாதுகை | சர்வதா | எப்பொழுதும் |
| | களுக்கு | ராஜ்யம் | ராஜ்யபரிபாலனத்தை |
| அபிஷிச்ய | அபிஷேகத்தைநடத்தி | காரயாமாச | நடத்திவந்தார். |

तदा हि यत्कार्यमुपैति किञ्चिदुपायनं चोपहृतं महार्हम् ।

स पादुकाभ्यां प्रथमं निवेद्य चकार पश्चाद्भरतो यथावत् ॥ २७ ॥

| | | | |
|-----------|------------------|--------------|------------------|
| ச: | அந்த | அபஹத் ச | கொண்டுவரப்பட்ட |
| பர: | பரதர் | புதம் | முதலில் [டாலும்] |
| கிச்யித் | ஏதாவதொரு சிறிய | பாடுகாப்யா | பாதுகைகளிடத்தில் |
| கார்யம் | காரியம் | நிவேத்ய | தெரிவித்து |
| அபேதி யத் | நேர்ந்தாலும் | ததா பசூத் ஹி | அதற்குமேல்தான் |
| மஹர்ஹ் | மிக விலையுயர்ந்த | யதாவத் | முறைப்படி |
| அபாயனம் | காணிக்கைப்பொருள் | சகார | செய்துவந்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे पञ्चदशोत्तरशततमः सर्गः॥

आदितः श्लोकाः 6580



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 4225



षोडशोत्तरशततमः सर्गः—நூற்றுப்பதினாவது ஸர்க்கம். || ११६ ||

मुनिभिः खरादिविप्रकारकथनम्—முனிவர்கள் கரன் முதலியவர்களுடைய
உபத்திரவத்தைச் சொல்வது.

प्रतिप्रयाते भरते वसत्रामस्तपोवने । लक्षयामास सोद्वेगमथौत्सुक्यं तपस्विनाम् ॥ १ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------|-----------|---------------|
| भरते | பரதர் | रामः | ஸ்ரீராமர் |
| प्रतिप्रयाते अथ | திரும்பிய பின்பு | तपस्विनां | முனிவர்களுடைய |
| तपोवने | தபோவனத்தில் | सोद्वेगं | மனம் தொந்த |
| वसन् | வஸிக்கும் | औत्सुक्यं | சஞ்சலத்தை |
| | | लक्षयामास | கவனித்தார். |

ये तत्र चित्रकूटस्य पुरस्तात्तापसाश्रमे । राममाश्रित्य निरतास्तानलक्षयदुत्सुकान् ॥ २ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|-------------------|
| चित्रकूटस्य | சித்திரகூடத்தினது | ये | எவர்களோ |
| तापसाश्रमे | தபஸ்விகளிஞ்ச்ரமத் | तान् | அவர்களை |
| रामं | ஸ்ரீராமரை [தில் | तत्र | அப்பொழுது |
| पुरस्तात् | இதற்குமுன் | उत्सुकान् | மனக்கவலையுடனிருக் |
| अश्रित्य | ஆச்ரயித்து | | கின்றவர்களாய் |
| निरताः | பத்திமையுடையவர் | अलक्षयत् | அறிந்தார். |
| | களாயிருந்தவர்கள் | | |

नयनैर्भ्रुकुटीभिश्च राममुद्दिश्य शङ्किताः । अन्योन्यमुपजल्पन्तः शनैश्चकुर्मिथः कथाः ॥ ३ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|------------|-------------------|
| रामं | ஸ்ரீராமரை | मिथः | ரகஸியமாய் |
| उद्दिश्य | நினைத்து | उपजल्पन्तः | பேசுகின்றவர்களாய் |
| शङ्किताः | கவலைகொண்டவர்க | शनैः | மெதுவாய் |
| नयनैः | கண்களாலும், [ளாய் | कथाः | சமசாரங்களை |
| भ्रुकुटीभिः च | புருவங்களாலும், | चक्रुः | சொல்லிக்கொண்டி |
| अन्योन्यं | ஒருவருக்கொருவர் | | குந்தார்கள். |

तेषामौत्सुक्यमालक्ष्य रामस्वात्मनि शङ्कितः । कृताञ्जलिस्वाचेदमृषिं कुलपतिं तदा ॥४॥

| | | | |
|-----------|--------------------|------------|------------------|
| तदा | அப்பொழுது | शङ्कितः | ஐயமுற்ற |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | कृताञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராய் |
| तेषां | அவர்களுடைய | कुलपतिं | குலபதியென்ற |
| औत्सुक्यं | எக்கத்தை | ऋषिं | ரிஷியைப்பார்த்து |
| आलक्ष्य | கவனித்து | इदं | பின்வருமாறு |
| आत्मनि तु | தன்னிடத்தில் இவ்வி | उवाच | வினாவினார் : |
| | ஷயத்தில் | | |

न कच्चिद्भगवन्किञ्चित्पूर्ववृत्तमिदं मयि । दृश्यते विकृतं येन विक्रियन्ते तपस्विनः ॥ ५ ॥

भगवन् "பகவானே!
तपस्विनः தவசிகள்
विक्रियन्ते மாறுபட்டிருக்கின்றார்கள்.

किञ्चित् ஏதேனுமொரு
पूर्ववृत्त முந்திய அனுஷ்டா
विकृतं வேறுபட்டதாய்
दृश्यते न காணப்படவில்லை
कच्चित् நான் நம்புகிறேன்.

येन இதனால்
इदं இப்பொழுது
मयि என்னிடத்தில்

प्रमादाच्चरितं किञ्चित्किञ्चनावरजस्य मे । लक्ष्मणस्यर्षिभिर्दृष्टं नानुरूपमिवात्मनः ॥ ६ ॥

मे "எனது
अवरजस्य தம்பியாகிய
लक्ष्मणस्य லக்ஷ்மணனுடைய
चरितं நடத்தை
आत्मनः தனக்கு
किञ्चित् इव சற்றேனும்

प्रमादात् அஜாக்கிரதையால்
नानुरूपं தகாததாய்
ऋषिभिः முனிவர்களால்
दृष्टं न காணப்படவில்லை
कच्चित् நான் நம்புகிறேன்.

कच्चिच्छुश्रूषमाणा वः शुश्रूषणपरा मयि । प्रमादाभ्युचितां वृत्तिं सीता युक्तां न वर्तते ॥

मयि "என் விஷயத்தில்
शुश्रूषणपरा சுச்ருஷை செய்வதிலா
सीता சீதை [ஸக்தியுடைய
वः உங்களுக்கு
शुश्रूषमाणा பணிவிடை புரிகிறவ
ளாய்

प्रमादाभ्युचितां அஜாக்கிரதையால்
युक्तां நோக்கக்கூடிய
वृत्तिं ஒரு காரியத்தை
वर्तते न செய்யவில்லையென
कच्चित् நம்புகிறேன்."

अथर्षिर्जरया वृद्धस्तपसा च जरां गतः । वेपमान इवोवाच रामं भूतदयापरम् ॥ ८ ॥

जरया பிராயத்தால்
वृद्धः மூப்புற்றவரும்
तपसा च தவத்தாலும்
जरां गतः மூப்புற்றவருமாகிய
ऋषिः முனிவர்
वेपमानः इव உடல்நடுக்கமுற்றவ
ராகி

भूतदयापरं எல்லா ப்ராணிகளுக்கும்
रामं ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து
अथ பின்வருமாறு
उवाच பதிலுரைத்தார் :

कुतः कल्याणसत्त्वायाः कल्याणाभिरतेस्तथा । चलनं तात वैदेह्यास्तपस्विषु विशेषतः ॥ ९ ॥

तात "குழந்தாய்!
कल्याण- } நல்ல தன்மையையே
सत्त्वायाः } பிறவிக்குணமாய்
तथा } படைத்தவரும்
अव्वண்ணமே
कल्याणाभिरते: } நல்ல காரியங்களிலே
யே பற்றுடையவளு
மாகிய

वैदेह्या: வைதேஹிக்கு
चलनं பிழை
विशेषतः அதிலும் விசேஷமாய்
तपस्विषु தபஸ்விகள் விஷயத்
தினென்பது
कुतः ஏது?

त्वन्निमित्तमिदं तात तापसान्प्रति वर्तते । रक्षोभ्यस्तेन संविद्या: कथयन्ति मिथ: कथा: ॥

தாத
ரக்ஷோப்ய:
தாபஸாந் ப்ரதி
இதம்
தவ்நிமித்தம்
வர்ததே

“குழந்தாய்!
ராக்ஷஸர்களிட
மிருந்து
தபசிகளுக்கு
பின் சொல்லப்போகி
உன்காரணமாய் [றது
ஏற்பட்டிருக்கிறது.

தேந
சர்வியா:
மித:
கதா:
கதயந்தி

அதனால்
பயமடைந்தவர்களாய்
ரகஸியமாய்
விஷயங்களை
ஒருவரோடொருவர்
பேசிக்கொள்ளுகி
றார்கள்.

रावणावरज: कश्चित्खरो नामेह राक्षस: । उत्पाद्य तापसान्सर्वाञ्जनस्थाननिकेतनान् ॥

ராவணாவரஜ:
खर: नाम
कश्चित् राक्षस:
जनस्थान-
निकेतनान् }

“ராவணன் தம்பியான
கரனெனும்
ஓர் அரக்கன்
ஜனஸ்தானத்தில்
வாஸம்செய்யும்

तापसान्
सर्वान्
उत्पाद्य
इह

தபசிகள்
எல்லோரையும்,
நிர்மூலமாக்கிக்
கொண்டு
இங்குள்ளான்.

धृष्टश्च जितकाशी च नृशंसः पुरुषादकः । अवलिप्तश्च पापश्च त्वां च तात न मृष्यते ॥

தாத
धृष्ट: च
पुरुषादकः
नृशंसः च
अवलिप्तः
पापः च

“குழந்தாய்!
வெட்கமற்றவன்;
மனிதரைத்தின்னும்
கொடியன்;
(தலை) கொழுத்த
பாவி;

जितकाशी च
त्वां च
मृष्यते न

தோல்விபெறுததால்
கருவம்கொண்டவன்.
உன்மீது
பொறுமையுற்றி
ருக்கிறான்.

त्वं यदाप्रभृति हस्मिन्नाश्रमे तात वर्तसे । तदाप्रभृति रक्षांसि विप्रकुर्वन्ति तापमान्॥१३॥

தாத
अस्मिन्
आश्रमे
त्वं
यदाप्रभृति

“குழந்தாய்!
இந்த
ஆசிரமத்தில்
நீ
எதுமுதற்கொண்டு

वर्तसे
तदाप्रभृति हि
रक्षांसि
तापसान्
विप्रकुर्वन्ति

வஸிக்கின்றாயோ
அதுமுதற்கொண்டு
அரக்கர்கள் [தான்
தபசிகளை
இச்சிக்கின்றார்கள்.

दर्शयन्ति हि वीभत्सैः क्रूरैर्भीषणकैरपि । नानारूपैर्विरूपैश्च रूपैरसुखदर्शनैः ॥ १४ ॥

वीभत्सैः
भीषणकैः अपि
असुखदर्शनैः

வெறுப்பையுண்டாக்
குபவையும்,
பார்க்க பயங்கரமான
வையும்,
கஷ்டப்பட்டுப் பார்க்க
த்தக்கவையும்,

विरूपैः च
नानारूपैः
क्रूरैः
रूपैः
दर्शयन्ति हि

விகாரமானவையு
மான
பலவகை
கொடிய
வடிவங்கள் கொண்டு
தோற்றுகின்றார்கள்.

अप्रशस्तैरशुचिभिः संप्रयोज्य च तापसान् । प्रतिघ्नन्त्यपराक्षिप्रमनार्याः पुरतः स्थिताः ॥

| | | | |
|----------|--------------------------|--------------|----------------------------|
| अनार्याः | “துஷ்டர்களாகு மவர்கள் | अप्रशस्तैः | அமங்கள மா னவைக ளா லும், |
| अपरान् | தங்களின த்தவரல் லாத | अशुचिभिः | அசுத்தமா னவைக ளா லும் |
| तापसान् | தவஸிகளுக்கு | संप्रयोज्य च | தாக்கி |
| पुरतः | முன் | क्षिप्रं | உடனே |
| स्थिताः | நின்று | प्रतिघ्नन्ति | ஹிம்சிக்கின்றார்கள். |

तेषु तेष्वश्रमस्थानेष्वबुद्धमवलीय च । रमन्ते तापसांस्तत्र नाशयन्तोऽल्पचेतसः ॥ १६ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|----------|-------------------|
| अल्पचेतसः | “அற்பபுத்திபடைத்த அவர்கள் | अवलीय | மறைந்திருந்து |
| तेषु तेषु | அந்தந்த | तापसान् | தவஸிகளை |
| आश्रमस्थानेषु | ஆசிரமங்களில் | तत्र च | அவ்விடத்திலேயே |
| अबुद्धं | கட்புலனாகாமல் | नाशयन्तः | அழித்து |
| | | रमन्ते | மகிழ்கின்றார்கள். |

अपक्षिपन्ति सुग्भाण्डानग्नीन्सिञ्चन्ति वारिणा । कलशांश्च प्रमृद्दन्ति हवने समुपस्थिते ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|--------------|--------------------------------|
| हवने | “ஹோமம் | वारिणा | ஐலத்தால் |
| समुपस्थिते | நடைபெறுகையில் | सिञ्चन्ति | நனைக்கின்றார்கள். |
| सुग्भाण्डान् | யாகக்கருவிகளை | कलशान् च | கலசங்களையும் |
| अपक्षिपन्ति | எடுத்தெறிகின்றனர். | प्रमृद्दन्ति | உடைத்துத்தள்ளு கின்றார்கள். |
| अग्नीन् | யாகாக்களிகளை | | |

तैर्दुरात्मभिरामृष्टानाश्रमान्प्रजिहासवः । गमनायान्यदेशस्य चोदयन्त्यृषयोऽद्य माम् ॥ १८ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|------------|------------------------------|
| अद्य | “இப்பொழுது | प्रजिहासवः | முற்றிலும் துறக்கக் கருதி |
| ऋषयः | முனிவர்கள் | अन्यदेशस्य | வேறிடத்திற்கு |
| तैः | அந்த | गमनाय | செல்வதற்கு |
| दुरात्मभिः | துராத்மாக்களால் | मां | என்னை |
| आमृष्टान् | தீண்டப்பட்ட | चोदयन्ति | தூண்டுகின்றார்கள். |
| आश्रमान् | ஆசிரமங்களை | | |

तत्पुरा राम शरीरीमुपहिंसां तपस्विषु । दर्शयन्ति हि दुष्टास्ते त्यक्ष्याम इममाश्रमम् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-------------|--------------------------------|
| राम | “ஸ்ரீராம! | तत् | ஆகையால் |
| ते | அந்த | पुरा | அதற்குள் |
| दुष्टाः | துஷ்டர்கள் | इमं | இந்த |
| तपस्विषु | தபஸிகள் விஷயத்தில் | आश्रमं | ஆசிரமத்தை |
| शरीरीं | சரீர | त्यक्ष्यामः | விட்டுச்செல்லப் போகின்றோம். |
| उपहिंसां हि | பாதைதையையும் | | |
| दर्शयन्ति | செய்வார்கள். | | |

बहुमूलफलं चित्रमविदूरादितो वनम् । कण्वस्याश्रममेवाहं श्रयिष्ये सगणः पुनः ॥ २० ॥

| | | | |
|-----------|--|-----------|------------------------------|
| इतः | “இவ்விடத்திலிருந்து | आश्रमं | இருப்பிடமாகி |
| अविदूरात् | அருகாமையில் | वनं एव | வனத்திற்கே |
| चित्रं | அழகியதும் | अहं | நான் |
| बहुमूलफलं | { பலவகை மூலங்களும், பழங்களும் நிறைந் துள்ள துமான | सगणः | கூட்டத்தாரோடு |
| कण्वस्य | கண்வரது | पुनः | இதைவிட்டு |
| | | श्रयिष्ये | சென்று வசிக்கப் போகிறேன். |

खरस्त्वय्यपि चायुक्तं पुरा तात प्रवर्तते । सहास्माभिरितो गच्छ यदि बुद्धिः प्रवर्तते ॥

| | | | |
|-----------|------------------|---------------|---------------|
| तात | “குழந்தாய், | बुद्धिः | இஷ்டம் |
| खरः | கரன் | प्रवर्तते यदि | இருக்குமாகில் |
| त्वयि अपि | உன் விஷயத்திலும் | अस्माभिः | எங்களை |
| अयुक्तं च | அக்கிரமத்தையே | सह | கூட |
| प्रवर्तते | செய்வான். | इतः | இங்கிருந்து |
| पुरा | அதற்குள் | गच्छ | நீ புறப்படு. |

सकलत्रस्य संदेहो नित्यं यत्तस्य राघव । समर्थस्यापि हि सतो वासो दुःखमिहाद्य ते ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|--------------|
| राघव | “ஸ்ரீராம! | अद्य | இப்பொழுது |
| यत्तस्य | சன்னத்தனாய் | इह | இவ்விடத்தில் |
| समर्थस्य | சமர்த்தனாய் | वासः | வாஸமென்பது |
| सतः अपि | இருக்கையிலுங்கூட | दुःखं | கஷ்டமே. |
| सकलत्रस्य | மனைவியுடனிருக்கிற | नित्यं | எப்பொழுதும் |
| ते | உனக்கு | सन्देहः हि | அபாயமே.” |

इत्युक्तवन्तं रामस्तं राजपुत्रस्तपस्विनम् । न शशाकोत्तरैर्वायैरवरोद्धं समुत्सुकम् ॥ २३ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|----------|----------------------------|
| राजपुत्रः | சக்கிரவர்த்தியாரின் | तं | அந்த |
| | திருக்குமாரரான | तपस्विनं | தபஸ்வியை |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | उत्तरैः | மறு |
| इति | மேற்கண்டவாறு | वाक्यैः | மொழிகொண்டு |
| समुत्सुकं | அதையிரியமடைந்து | अवरोद्धं | தடுக்க |
| उक्तवन्तं | பேசிய | शशाक न | திருவுளம் கொள்ள வில்லை. |

अभिनन्द्य समापृच्छ्य समाधाय च राघवम् । स जगामाश्रमं त्यक्त्वा कुलैः कुलपतिः सह ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|-----------|-------------------|
| सः | அந்த | समाधाय च | இருக்க அனுமதித்து |
| कुलपतिः | குலபதியெனும் முனிவர் | कुलैः | பரிணங்களை |
| राघवं | ஸ்ரீராமரை | सह | கூட |
| अभिनन्द्य | புகழ்ந்து | आश्रमं | ஆசிரமத்தை |
| समापृच्छ्य | விடைபெற்று | त्यक्त्वा | விட்டு |
| | | जगाम | சென்றுவிட்டனர். |

रामः संसाध्य तृषिगणमनुगमनादेशात्तस्मात्कुलपतिमभिवाद्य ऋषिम् ।

सम्यक्प्रीतैस्तैरनुमत उपदिष्टार्थः पुण्यं वासाय स्वनिलयमुपसंपेदे ॥ २५ ॥

रामः ஸ்ரீராமர்
 ऋषिगणं ரிஷிகணத்தை
 तस्मात् அந்த
 देशात् இடத்திலிருந்து
 अनुगमनात् च பின்தொடர்ந்து பிர
 யாணப்படுத்தியதால்
 संसाध्य விசுவஸித்து
 कुलपतिं குலபதி
 ऋषिं முனிவரை
 अभिवाद्य தண்டனிட்டு
 प्रीतैः மனத்திருப்தி
 கொண்ட

तैः அவர்களால்
 सम्यक् நன்கு
 उपदिष्टार्थः விஷயங்களை சொல்ல
 ப்பெற்றவராய்
 अनुमतः கொண்டாடப்பட்ட
 வராய்
 पुण्यं புண்ணியமாகிய
 स्वनिलयं तु தனது இருப்பிடத்தி
 ற்கே
 वासाय வலிப்பதற்காக
 उपसंपेदे திரும்பிவந்துசேர்ந்
 தார்.

आश्रमं तृषिविरहितं प्रभुः क्षणमपि न विजहौ स राघवः ।

राघवं हि सततमनुगतास्तापसाश्चार्षचरितधृतगुणाः

॥ २६ ॥

आर्षचरितधृतगुणाः ரிஷி அனுஷ்டானங்
 களில் பற்றுள்ள
 तापसाः தபஸிகள்
 सततं च எப்பொழுதும்
 राघवं हि ஸ்ரீராமரையே
 अनुगताः தியானித்தார்கள்.

सः அந்த
 प्रभुः ஸர்வேச்வரனாகிய
 राघवः ஸ்ரீராமர்
 ऋषिविरहितं ரிஷிகளில்லாத
 आश्रमं तु ஆசிரமத்தை
 क्षणं अपि ஏற்றகாலம்வரைக்கும்
 विजहौ न விடவில்லை.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे षोडशोत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 6606



अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 4251

सतदशोत्तरशततमः सर्गः—நூற்றுப்பதினேழாவது ஸர்க்கம் ॥ ११७ ॥

अनसूयया पातिव्रत्यकथनम्—அனஸூயை பதிவ்ரதாதர்மத்தைச் சொல்வது.

राघवस्त्वपयातेषु तपस्विषु विचिन्तयन् । न तत्रारोचयद्वासं कारणैर्बहुभिस्तदा ॥ १ ॥

राघवः ஸ்ரீராமர்
 तपस्विषु முனிவர்கள்
 अपयातेषु புறப்பட்டுப்போன
 பின்னர்
 तु இவ்விஷயத்தில்
 विचिन्तयन् ஆலோசனைசெய்து

तदा அப்பொழுது
 बहुभिः कारणैः பலகாரணங்களைக்கொ
 तत्र அவ்விடத்தில் [ண்டு
 वासं வாஸம்செய்வதற்கு
 अरोचयत् न இஷ்டப்படாதவராயி
 னார்.

पत्नीं च समनुप्राप्तां वृद्धामामन्त्र्य सत्कृताम् । सान्त्वयामास धर्मज्ञः सर्वभूतहिते रतः ॥

| | | | |
|---------------|--|--------------|--------------------------------------|
| सर्वभूतहिते | எல்லாப்பிராணிகளுக் குமிதம்செய்வதில் | सकृतां | புஜார்ஹையும், |
| रतः | பற்றுடைய | वृद्धां | முதியவருமான |
| धर्मज्ञः | புண்யாத்மாவாகுமவர் | पत्नीं च | மனைவியை |
| समनुप्राप्तां | அப்பொழுதங்குவந் து சேர்ந்தவளும், | आमन्त्र्य | பார்த்து |
| | | सान्त्वयामास | பின்வருமாறு உற்சா கப்படுத்தினார். |

अनसूयां महाभागां तापसीं धर्मचारिणीम् । प्रतिगृहीष्व वैदेहीमब्रवीद्विषसत्तमः ॥ ८ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|--------------|------------------|
| ऋषिसत्तमः | முனிவர்பெருமான் | महाभागां | ‘மகா பாக்யவதியான |
| धर्मचारिणीं | தர்மபத்தனியும் | वैदेहीं | வைதேகியை |
| तापसीं | தபஸ்வினியுமாகிய | प्रतिगृहीष्व | ஏற்றுபசரி’ என்று |
| अनसूयां | அனஸூயையிடம் | अब्रवीत् | சொன்னார். |

रामाय चाचक्षे तां तापसीं धर्मचारिणीम् ॥ ९ ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|--------|-----------------|
| रामाय च | ராமரிடமும் | तापसीं | தபஸ்வினியென |
| तां | அவளைப்பற்றி | आचक्षे | பின்வருமாறு அறி |
| धर्मचारिणीं | தனது மனைவியாகிய | | முகம்செய்தார்: |

दश वर्षाण्यनावृष्ट्या दग्धे लोके निरन्तरम् । यया मूलफले सृष्टे जाह्नवी च प्रवर्तिता ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------|------------|----------------------------|
| लोके | “ உலகம் | यया | இவளால் |
| निरन्तरं | இடைவெளியின்றி | मूलफले | கிழங்குகளும், கனி களும் |
| अनावृष्ट्या | மழையின்மையால் | सृष्टे | சிருஷ்டிக்கப்பட்டன. |
| दश वर्षाणि | பத்துவருஷம் | जाह्नवी च | கங்காநதியும் |
| दग्धे | எரிக்கப்பட்டிருக்கை யில் | प्रवर्तिता | பெருகச்செய்யப்பட்ட டது. |

उद्रेण तपसा युक्ता नियमैश्चाप्यलङ्कृता । दश वर्षसहस्राणि यया तप्तं महत्तपः ॥ ११ ॥

| | | | |
|----------------|----------------|-----------------|-----------------------|
| यया | “இவளால் | उद्रेण तपसा अपि | கடுந்தவத்தாலும் |
| दशवर्षसहस्राणि | பதினாயிரவருஷம் | युक्ता | கொண்டாடப்பட்ட வள். |
| महत् | கடும் | नियमैः च | விரதங்களாலும் |
| तपः | தவம் | अलङ्कृता | நிறைந்தவள். |
| तप्तं | இயற்றப்பட்டது. | | |

अनसूया व्रतैः स्नाता प्रत्यूहाश्च निवर्हिताः । देवकार्यनिमित्तं च यया संत्वरमाणया ॥ १३ ॥

| | |
|------------------|---------------------------------|
| अनसूया | “அனஸூயை |
| व्रतैः | விரதங்களை |
| स्नाता | பூர்ணமாய் செய்து முடித்தவள். |
| यया | எவளால் |
| सन्त्वरमाणया | சிரத்தைகொண்டவ ளாய் |
| देवकार्यनिमित्तं | தேவகாரியமாக |
| प्रयूहाः च | இடையூறுகள் |

| | |
|--------------|-------------------|
| निवर्हिताः च | போக்கடிக்கப்பட்டன |
| दशरात्रं | பத்து இரவு [வோ, |
| रात्रिः | ஒரிரவாக |
| कृता | செய்யப்பட்டதோ, |
| सा | அவள்தான் |
| इयं | இவள். |
| अनघ | புண்ணியாத்மாவே! |
| ते | உனக்கு |
| माता इव | தாய்போன்றவள். |

तामिमां सर्वभूतानां नमस्कार्यां यशस्विनीम् । अभिगच्छतु वैदेही वृद्धामक्रोधनां सदा ॥

| | |
|-------------|---------------------------|
| वैदेही | “சீதை |
| तां | அந்த |
| सर्वभूतानां | எல்லாப்பிராணிகளா லும் |
| नमस्कार्यां | வணங்கத்தக்கவளும் |
| यशस्विनीं | பெரும்புகழ்பெற்ற வளும் |

| | |
|-----------|------------------------------|
| सदा | எப்பொழுதும் |
| अक्रोधनां | கோபத்திற்கிடம் கொடாதவளும் |
| वृद्धां | முதியவளுமான |
| इमां | இவளிடம் |
| अभिगच्छतु | போய்ச்சேரட்டும்.” |

एवं ब्रुवाणं तमृषिं तथेत्युक्त्वा स राघवः । सीतामुवाच धर्मज्ञामिदं वचनमुत्तमम् ॥ १५ ॥

| | |
|----------|-----------------|
| सः | அந்த |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் |
| एवं | மேற்கண்டவாறு |
| ब्रुवाणं | கூறும் |
| तं | அந்த |
| ऋषिं | முனிவரிடம் |
| तथा इति | ‘அங்ஙனமே’ என்று |

| | |
|-----------|------------------|
| उक्त्वा | சொல்லி |
| धर्मज्ञां | தருமமறிந்த |
| सीतां | வீதையைப்பார்த்து |
| इदं | பின்வரும் |
| उत्तमं | சிறந்த |
| वचनं | மொழியை |
| उवाच | சொன்னார்: |

राजपुत्रि श्रुतं त्वेतन्मुनेरस्य समीरितम् । श्रेयोऽर्थमात्मनः श्रीघ्नमभिगच्छ तपस्विनीम् ॥

| | |
|-----------|------------|
| राजपुत्रि | “ராஜபுத்ரி |
| अस्य | இந்த |
| मुनेः | முனிவருடைய |
| समीरितं | சொல்லாகிற |
| एतत् | இது |

| | |
|-------------|-------------------|
| श्रुतं तु | உன்னாலும் கேட்கப் |
| आत्मनः | தனது [பட்டதே. |
| श्रेयोऽर्थं | நன்மைபின்பொருட்டு |
| तपस्विनीं | தபஸ்வினியை |
| श्रीघ्नं | உடனே |
| अभिगच्छ | போயடைவாயாக. |

अनसूयेति या लोके कर्मभिः ख्यातिमागता । तां श्रीघ्नमभिगच्छ त्वमभिगम्यां तपस्विनीम् ॥

| | |
|------------|------------------|
| या | “எவள் |
| लोके | உலகில் |
| कर्मभिः | புண்யகர்மங்களால் |
| अनसूया इति | அனஸூயையென |
| ख्यातिं | புகழை |
| आगता | அடைந்தனளோ |

| | |
|-----------|--------------|
| तां | அந்த |
| अभिगम्यां | போயடையத்தக்க |
| तपस्विनीं | தபஸ்வினியை |
| त्वं | நீ |
| श्रीघ्नं | விரைவில் |
| अभिगच्छ | போயடைவாய்.” |

सीता त्वेतद्वचः श्रुत्वा राघवस्य हितैषिणः । तामत्रिपत्नीं धर्मज्ञामभिचक्राम मैथिली ॥१८॥

| | | | |
|----------|------------------------------|-------------|---------------------------|
| மேதிலி | மிதிலைமன்னன் திரு மகளாகிய | श्रुत्वा | சிரமேற்கொண்டு |
| सीता | வீதாப்பிராட்டியார் | तु | உடனே |
| हितैषिणः | நன்மையையேகோரும் | धर्मज्ञां | தர்மமறிந்த |
| राघवस्य | ஸ்ரீராமரது | तां | அந்த |
| एतत् | இந்த | अत्रिपत्नीं | அத்ரிமுனிவரின் மனையியை |
| वचः | ஆக்கினையை | अभिचक्राम | சென்றடைந்தாள். |

शिथिलां वलितां वृद्धां जरापाण्डुरमूर्धजाम् । सततं वेपमानङ्गीं प्रवाते कदलीं यथा ॥१९॥
तां तु सीता महाभागामनसूयां पतिव्रताम् । अभ्यवादयदव्यग्रा स्वनाम समुदाहरत् ॥

| | | | |
|-----------------------------|--|--------------|---------------------------------|
| सीता | சீதாப்பிராட்டியார் | वेपमानङ्गीं | நடுக்கமுற்ற சரீர முடையவளும், |
| शिथिलां | உடல்தளர்ந்து | महाभागां | மகா பாக்கியவதியும், |
| वलितां | சுருங்கி | पतिव्रतां तु | பதிவ்ரதையுமான |
| जरापाण्डुर- } मूर्धजां } | நரையால் வெளுத்த தலைமயிரையுடைய வளும், | तां | அந்த |
| वृद्धां | மூப்படைந்தவளும், | अनसूयां | அனஸூயையை |
| प्रवाते | பெருங்காற்றில் | अव्यग्रा | சிரத்தையுடன் |
| कदलीं यथा | வாழைமரத்தைப் | अभ्यवादयत् | நமஸ்கரித்தாள். |
| सततं | எப்பொழுதும் [போல] | स्वनाम | தன் பெயரையும் |
| | | समुदाहरत् | சொன்னாள். |

अभिवाद्य च वैदेही तापसीं तामनिन्दिताम् । बद्धाञ्जलिपुटा हृष्टा पर्यपृच्छदनामयम् ॥

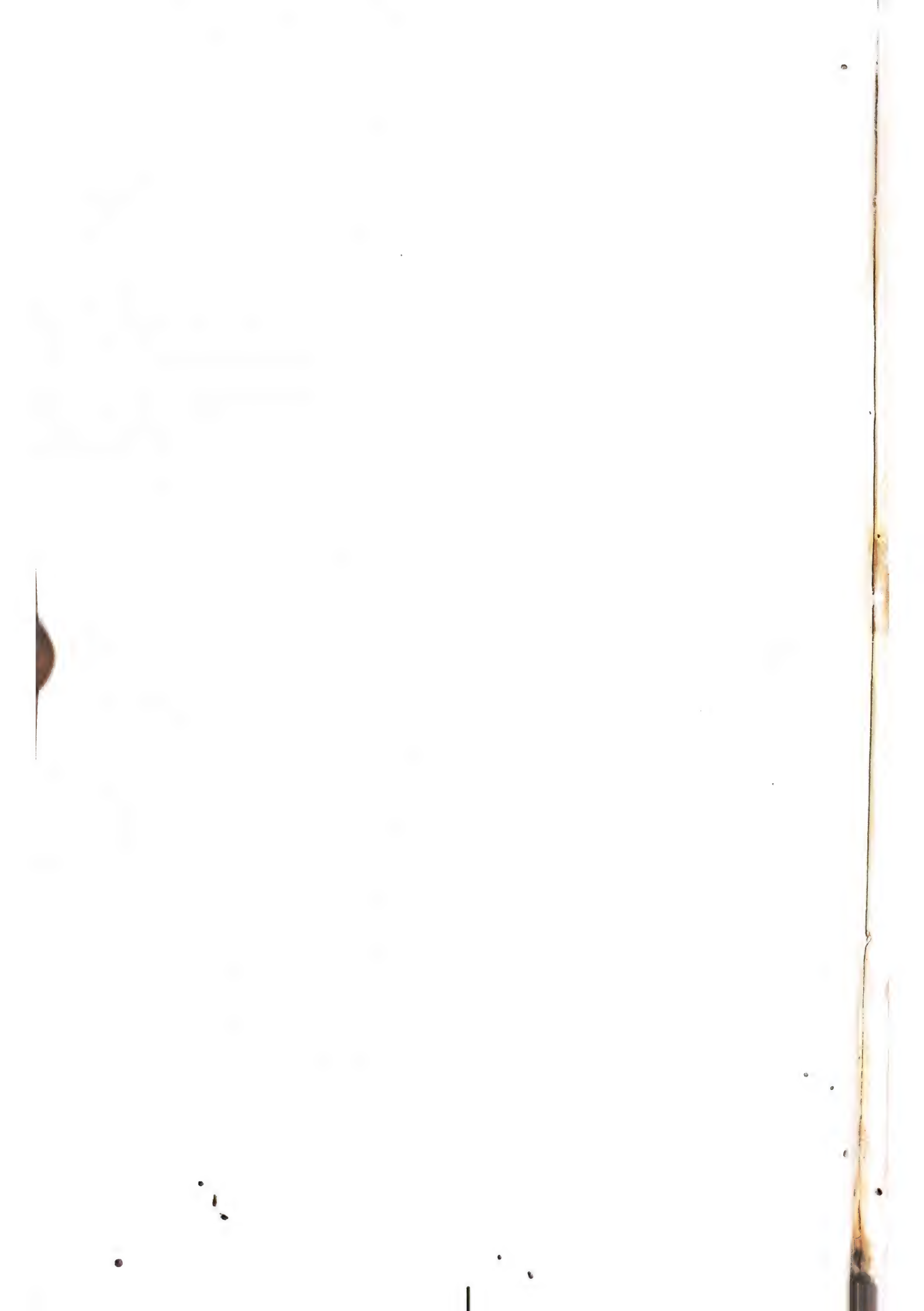
| | | | |
|------------|----------------|----------------|---------------------|
| अनिन्दितां | தோஷர ஹிதையாகிய | हृष्टा | திருவுள முவந்து |
| तां | அந்த | बद्धाञ्जलिपुटा | அஞ்சலிஹஸ்தை யாகி |
| तापसीं | தாபஸியை | अनामयं | ஆரோக்கியத்தை |
| अभिवाद्य | நமஸ்கரித்து | पर्यपृच्छत् | வினாவினாள். |
| च | அதன் பின்னர் | | |
| वैदेही | வைதேகியார் | | |

ततः सीतां महाभागां दृष्ट्वा तां धर्मचारिणी । सान्त्वयन्त्यब्रवीदृष्ट्वा दिष्ट्या धर्मवैक्षसे ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|--------------|---------------------------------|
| धर्मचारिणी | தர்மானுஷ்டான முடைய அவள் | सान्त्वयन्ती | உற்சாகப்படுத்து கின்றவளாகி |
| महाभागां | மகா பாக்கியசாவி யாகிய | अब्रवीत् | பின்வருமாறு மொழிந்தனள்: |
| तां | அந்த | धर्मं | “தர்மத்தை |
| सीतां | வீதையை | अवैक्षसे | நீ பெருமைப்படுத்து கொடுப்பது |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | दिष्ट्या | பகவதஸங்கல்பமே. |
| हृष्टा | உள்ளம் பூரித்து | | |



अनुसूयाके पद गहि सीता । मिली बहोरि सुशील विनीता ॥



त्यक्त्वा ज्ञातिजनं सीते मानमृद्धिं च भामिनि । अवरुद्धं वने रामं दिष्ट्या त्वमनुगच्छसि ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-----------|---------------------------------|
| भामिनि | “ஸந்தாரியாகிய | अवरुद्धं | வஸிக்கச்செய்யப் |
| सीते | வலீதே! | | பட்ட |
| ज्ञातिजनं | சுற்றத்தாரையும் | रामं | ராமனை |
| मानं | பெருமையையும் | त्वं | நீ |
| ऋद्धिं च | சம்பத்தையும் | अनुगच्छसि | பின்பற்றிவந்திருக்கிறாயென்பதும் |
| त्यक्त्वा | துறந்து | | |
| वने | வனத்தில் | दिष्ट्या | தெய்வசங்கல்பமே. |

नगरस्थो वनस्थो वा पापो वा यदि वा शुभः । यासां स्त्रीणां प्रियो भर्ता तासां लोका महोदयाः ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|-------------|-----------------------|
| यासां | “எந்த | शुभः यदि वा | புண்யவானாயிருப்பினும் |
| स्त्रीणां | பெண்களுக்கு | | |
| भर्ता | கணவன் | प्रियः | இஷ்டனாகிருளை |
| नगरस्थः | நாட்டிலிருப்பினும் | तासां | அவர்களுக்கு |
| वनस्थः वा | காட்டிலிருப்பினும் | महोदयाः | மேலான |
| पापः वा | பாவியாயிருப்பினும் | लोकाः | உலகங்களுண்டு. |

दुःशीलः कामवृत्तो वा धनैर्वा परिवर्जितः । स्त्रीणामार्यस्वभावानां परमं दैवतं पतिः ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------|--------------------|--------------------|
| आर्यस्वभावानां | “புண்ணியமான இயற்கைக்குணம்படைத்த | कामवृत्तः वा | தூர்த்தனாயினும், |
| स्त्रीणां | ஸ்த்ரீகளுக்கு | धनैः परिवर्जितः वा | பொருளற்றவனாயினும், |
| पतिः | கணவனொருவனே | | |
| दुःशीलः | கெட்ட நடத்தையுள்ளவனாயினும், | परमं | சிறந்த |
| | | दैवतम् | தெய்வம். |

नातो विशिष्टं पश्यामि बान्धवं विमृशन्त्यहम् । सर्वत्र योग्यं वैदेहि तपः कृतमिवाव्ययम् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------|-----------|-----------------------|
| वैदेहि | “வைதேஹி! | सर्वत्र | எல்லாவற்றிற்கும் |
| विमृशन्ती | நன்கு ஆலோசனை செய்யும் | योग्यं | ஏற்ற |
| | | अतः | இவரினும் (கணவரினும்), |
| अहं | நான் | विशिष्टं | மேம்பட்ட |
| अव्ययं | அழிவற்றதாக | बान्धवं | பந்துவை |
| कृतं | செய்யப்பட்ட | पश्यामि न | உணர்த்திலேன். |
| तपः इव | தவம்போல் | | |

न त्वेनमवगच्छन्ति गुणदोषमसत्स्त्रियः । कामवक्तव्यहृदया भर्तृनाथाश्चरन्ति याः ॥२७॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|--------------|---------------------|
| याः | “எவர்கள் | असत्स्त्रियः | கெட்ட பெண்கள் |
| कामवक्तव्य-} | காமத்தலீடுபட்ட- | तु | இவ்விஷயத்தில் |
| हृदयाः } | மனமுடையவர்களாய் | एनं | இத்த |
| भर्तृनाथाः | கணவனையடக்கியாளுபவர்களாய் | गुणदोषं | குணதோஷங்களை |
| चरन्ति | இருக்கின்றனரோ | अवगच्छन्ति न | உணராதிருக்கின்றனர். |

प्राप्नुवन्त्ययशश्चैव धर्मभ्रंशं च मैथिलि । अकार्यवशमापन्नाः स्त्रियो याः खलु तद्विधाः ॥

மேதிலி "மேதிலி!
தவ்விதா: அப்படிப்பட்டவர்கள்
யா: எந்த
ஸ்திரிய: எவ பெண்களோ அவர்
அகார்யவஸ் செய்யத்தகாத காரி
யத்தில்

आपन्नाः ஈடுபட்டவர்களாய்
धर्मभ्रंशं च தருமத்தினழிவையும்
अयशः च அபகீர்த்தியையும்
प्राप्नुवन्ति அடைகின்றார்கள்.
खलु இது திண்ணம்.

त्वद्विधास्तु गुणैर्युक्ता दृष्टलोकपरावराः । स्त्रियः स्वर्गे चरिष्यन्ति यथा पुण्यकृतस्तथा ॥

குணै: "உத்தமகுணங்க
ளோடு

யுக்தா: விளங்கும்
தவ்விதா: உன்னைப்போன்ற
ஸ்திரிய: ஸ்த்ரீகள்

दृष्टलोकपरावरा: { உலகில் பூர்வீக அனு
வ்டானங்களைக்கைப்
பற்றியவர்களாய்
पुण्यकृत: தருமம்செய்தவர்கள்
यथा तथा போலவே
स्वर्गे तु சுவர்க்கத்திலேயே
चरिष्यन्ति வஸிக்கின்றார்கள்.

तदेवमेनं त्वमनुव्रता सती पतिव्रतानां समयानुवर्तिनी ।

भव स्वभर्तुः सहधर्मचारिणी यशश्च धर्मं च ततः समाप्स्यसि ॥ ३० ॥

तत् "ஆகையால்
त्वं நீ
एवं இப்படியே
एनं இவரை
अनुव्रता அனுசரிப்பவளாய்
पतिव्रतानां பதிவிரதைகளின்
समयानुवर्तिनी சம்பிரதாயத்தைப்
பின்பற்றி

सती இருந்துகொண்டு
स्वभर्तुः உன் கணவனது
सहधर्मचारिणी தர்மங்களையே அனுஷ்
भव இரு. [டிப்பவளாய்
ततः அதனால்
यशः च புகழையும்
धर्मं च தருமத்தையும்
समाप्स्यसि நீ பெறுவாய்."

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

अयोध्याकाण्डे सप्तदशोत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 6636

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 4381

अष्टादशोत्तरशततमः सर्गः—நூற்றுப்பதினேட்டாவது ஸர்க்கம். ॥ ११८ ॥

सीतायै आभरणादिदानम्—ஸீதைக்கு ஆபரணம் முதலியவற்றைக் கொடுப்பது.

सा त्वेवमुक्ता वैदेही ह्यनसूयाऽनसूयया । प्रतिपूज्य वचो मन्दं प्रवक्तुमुपचक्रमे ॥ १ ॥

அனசூயா அனஸூயையால்
एवं இவ்வண்ணம்
उक्ता உரைசெய்யப்பட்ட
सा அந்த
वैदेही வைதேஹியார்
अनसूया हि அனசூயையற்றவ
ளாகவே

प्रतिपूज्य तु ஏற்றவாறுபசரித்துக்
கொண்டாடி
मन्दं மெதுவாய்
वचः பதில்
प्रवक्तुं சொல்லை
उपचक्रमे தயார்பண்ணினோள்.

नैतदाश्चर्यमार्याया यन्मां त्वमभिभाषसे । विदितं तु ममाप्येतद्यथा नार्याः पतिर्गुरुः ॥२॥

நாரியா: "பெண்டிற்சு
பதி: து கணவனே
புரு: தெய்வமென்கிற
஁தத் இது
மம ஁னக்கு
விதितம் தெரிந்தவிஷயம்
யதா அபி ஁ன்றபோதிலும்
மா அடியாளுக்கு

தவ் தேவரீர்
அபிமாபசே தெரியவுரைத்தது
யத் ஁துவோ
஁தத் இது
அரியா: பூஜையாகிய தேவரீ
அசுரயீ ந ரது விஷயத்தில்
வியப்பிற்கிடமான தாக ஆகாது.

यद्यप्येष भवेद्भर्ता ममार्ये वृत्तवर्जितः । अद्वैयमुपचर्तव्यस्तथाऽप्येष मया भवेत् ॥ ३ ॥

அரீ "ஆர்யே!
மம ஁னது
மர்தா பர்த்தாவாகிய
஁ப: இவர்
வூத்தவர்தி: நற்குணநன்னடக்கை
யற்றவராய்
மவேத் இருக்கிறார்
யதி அபி ஁ன்றாலும்

ததா அபி அப்பொழுதும்
஁ப: இவர்
மயா ஁ன்னால்
அத்வீயம் மனத்தில் வேறுபா
உபசரிக்கவேண்டிய டின்றி
மவேத் வராக
ஆகிறது.

किं पुनर्यो गुणश्लाघ्यः सानुक्रोशो जितेन्द्रियः । स्थिरानुरागो धर्मात्मा मातृवर्ती पितृप्रियः॥

ய: "஁வரோ இவர்
புணசுளாப்ய: சிறந்த குணங்கள்
நிறைந்தவர்;
சானுகுரூ: பூததையுடையவர்;
பிதேந்திரிய: ஁ம்புலன்களையுமடக்
கினவர்;

ஸ்திரானுராப: மாறூப்திவைத்தவர்;
தர்மாத்தமா;
மாதுவர்தி: மாதாமனம்கோணுது
நடப்பவர்;
பிதூபிரிய: பிதாவின்னிடர்.
கி புன: இவரைப்பற்றிச்சொல்
லவேண்டுமோ?

यां वृत्तिं वर्तते रामः कौसल्यायां महायशः । तामेव नृपनारीणामन्यासामपि वर्तते ॥

ம஁யசா: "பெரும் புகழ்படை
ராம: ஸ்ரீராமர் [த்த
கௌசுலயா: கோஸலாதேவியாரி
டத்தில்
யா ஁ந்த
வூத்தி உபசரணைய

வர்ததே பூரிகுரோ,
தா ஁வ அதையே
அந்யாசா: மற்ற
நூபனாரிணா அபி ராஜபத்தினிகளிடத்
திலும்
வர்ததே பூரிகுரார்.

सकृद्दृष्टास्वपि स्त्रीषु नृपेण नृपवत्सलः । मातृवद्वर्तते वीरो मानमुत्सृज्य धर्मवित् ॥ ६ ॥

| | | | |
|----------|-----------------------|----------------------|--|
| नृपेण | “சக்கிரவர்த்தியாரால் | नृपवत्सलः } अपि } | சக்கிரவர்த்தியாரிடம் வா த்ஸல்யமுடைய வராகவே |
| सकृत् | ஒருதரம் | मानं | மாதாவின் சக்களத்தி களென்கிற பொரு |
| दृष्टासु | பார்க்கப்பட்ட | उत्सृज्य | விட்டு [மையை |
| स्त्रीषु | ஸ்த்ரீகள் விஷயத்தில், | मातृवत् | பெற்ற தாயிடத்தில் போல் |
| धर्मवित् | தர்மவித்தும் | वर्तते | நடந்துவருகிறார். |
| वीरः | குமாரனுமாகுமிவர் | | |

आगच्छन्त्याश्च विजनं वनमेवं भयावहम् । समाहितं मे श्वश्वा च हृदयेऽवस्थितं महत् ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|-----------|----------------------------|
| विजनं | “ஜனமற்றதும் | समाहितं च | ஆக்ஞாபிக்கப்பட்ட டதும் |
| भयावहं च | அச்சமுறுத்துவது மாகிய | हृदये | மனத்தில் |
| वनं | காட்டிற்கு | एवं | இப்படியே |
| आगच्छन्त्याः | பிரயாணமான | महत् | கௌரவமாய் |
| मे | எனக்கு | अवस्थितम् | தாங்கப்பட்டிருக் கிறது. |
| श्वश्वा | மாமியாரால் | | |

पाणिप्रदानकाले च यत्पुरा त्वग्निसन्निधौ । अनुशिष्टा जनन्याऽस्मि वाक्यं तदपि मे धृतम् ॥

| | | | |
|------------------|---------------------------|------------|---|
| पुरा | “முன்பு | अस्मि | இருக்கிறேன். |
| जनन्या | மாதாவினால் | यत् | எந்த |
| पाणिप्रदानकाले च | விவாஹகாலத்திலும் | तत् | அந்த |
| अग्निसन्निधौ तु | அக்னிக்கு முன்பாக வும் | वाक्यं अपि | தர்மநியமனமும் |
| अनुशिष्टा | உபதேசிக்கப்பட்ட வளாக | मे | எனக்கு |
| | | धृतम् | { மாறுது அனுஷ்டிக்க வேண்டிய கடமையா கிறது. |

नवीकृतं च तत्सर्वं वाक्यैस्ते धर्मचारिणि । पतिशुश्रूषणान्नार्यास्तपो नान्यद्विधीयते ॥९॥

| | | | |
|----------------|--|------------|----------------------------------|
| नार्याः | “பெண்டிற்கு | तत् | அது |
| पतिशुश्रूषणात् | { பர்த்தாவுக்கு சுச்சு ஷை செய்வதைக்கா ட்டிலும் | सर्वं च | எல்லாமும் |
| अन्यत् | வேறு | धर्मचारिणि | தருமானுஷ்டானமு டையவரே! |
| तपः | தவம் | ते | தேவரீரது |
| विधीयते न | விதிக்கப்படவில்லை யென்கிற | वाक्यैः | மொழிகளால் |
| | | नवीकृतम् | இப்பொழுது ஞாபக மூட்டப்பட்டது. |

सावित्री पतिशुश्रूषां कृत्वा स्वर्गे महीयते । तथावृत्तिश्च याता त्वं पतिशुश्रूषया दिवम् ॥

सावित्री “ஸாவித்ரீதேவி
பதிசுச்ஞுஷைய
கூர்வா செய்து
स्वर्गे ஸ்வர்கலோகத்தில்
மஹீயதே சிறப்புற்றுக்கொண்
டாடப்படுகிறாள்.

तथावृत्तिः அதேயனுஷ்டான
त्वं தேவரீர் [முள்ள
பதிசுச்ஞுஷைய ச பதிக்கு சுச்ஞுஷை
செய்வதாலேயே
दिवं ஸ்வர்கலோகத்தை
याता அடையப்போகிறீர்.

वरिष्ठा सर्वनारीणामेषा च दिवि देवता । रोहिणी न विना चन्द्रं मुहूर्तमपि दृश्यते ॥

सर्वनारीणां “எல்லா பெண்களிடிலும்
वरिष्ठा சிறந்தவளும் [லும்
देवता च தெய்வப்பெண்ணுமாவா
एषा இந்த [கிய
रोहिणी ரோகினியென்பவள்

दिवि ஆகாயத்தில்
चन्द्रं சந்திரபகவானை
विना விட்டு
मुहूर्तं अपि ஒருநிமிஷமாவது
दृश्यते न காணப்படுகிறாள்லை.

एवंविधाश्च प्रवराः स्त्रियो भर्तृदृढवताः । देवलोकं महीयन्ते पुण्येन स्वेन कर्मणा ॥१२॥

देवलोकं “தேவலோகத்தில்
भर्तृदृढवताः { பர்த்தாவினிடத்தில்
மாறுது சுச்ஞுஷை
புரியும்
एवंविधाः இப்படிப்பட்ட
प्रवराः உத்தம

स्त्रियः च மாதர்கள் மாத்திரம்
स्वेन தங்கள்
पुण्येन புண்ய
कर्मणा செயலால்
महीयन्ते நன்கு மதிக்கப்படு
கின்றனர்.”

ततोऽनसूया संहृष्टा श्रुत्वोक्तं सीतया वचः । शिरस्याघ्राय चोवाच मैथिलीं हर्षयन्त्युत ॥

अनसूया அனஸூயை
सीतया ஸீதையினால்
उक्तं சொல்லப்பட்ட
वचः பேச்சை
श्रुत्वा கேட்டு
ततः அதனால்
संहृष्टा வெகு ஸந்தோஷ
மடைந்தவளாய்

मैथिलीं மைதிலியை
उत च இன்னுமதிகமாய்
हर्षयन्ती உற்சாகப்படுத்துகிற
வளாய்
शिरसि आघ्राय உச்சி முகத்து
उवाच பேசினாள் :

नियमैर्विविधैराप्तं तपो हि महदस्ति मे । तत्संश्रित्य बलं सीते छन्दये त्वां शुचिस्मिते ॥

सीते “ஸீதே !
विविधैः எத்தனையோ விதங்க
नियमैः நியமங்களால் [ளான
आप्तं கிடைத்த
महत् மஹத்தான
तपः தவமஹிமை
मे எனக்கு
अस्ति இருக்கிறது.

शुचिस्मिते கபடற்ற புன்னகை
கொண்ட பெண்ம
तत् அந்த [ணியே !
बलं தவத்திறத்தை
संश्रित्य हि கைப்பற்றியிருப்ப
त्वां உன்னை [தால்
छन्दये ‘வேண்டியதைக் கேள்’
என்கிறேன்.

उपपन्नं च युक्तं च वचनं तव मैथिलि । प्रीता चास्म्युचितं किं ते करवाणि ब्रवीहि मे ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|---------|--------------|
| மேதிலி | “மைதிலி! | அஸ்மி | இருக்கிறேன். |
| तव | உனது | ते | உனக்கு |
| वचनं | சொல் | उचितं | இஷ்டமாகிறது |
| उपपन्नं च | ஏற்றதாயும் | किं | யாதோ அதை |
| युक्तं च | சரியானதாகவுமிருக் | करवाणि | செய்வேன். |
| च | ஆனதால் [கிறது. | मे | எனக்கு |
| प्रीता | மனமகிழ்ந்தவளாக | ब्रवीहि | உரைசெய்க. |

तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा विस्मिता मन्दविस्मया । कृतमित्यब्रवीत्सीता तपोबलसमन्विताम् ॥

| | | | |
|-------------|------------------|----------------|------------------|
| तस्याः | அவளுடைய | तपोबलसमन्वितां | தவமஹிமையையுடைய |
| तत् | அந்த | | யவளைப்பார்த்து |
| वचनं | மொழியை | कृतं | { ‘மனோதங்களெல் |
| श्रुत्वा | கேட்டு | | லாம் நிறைவேறப்பெ |
| विस्मिता | ஆச்சர்யமடைந்த | | ற்று அபேகையாயு |
| सीता | சீதை | | ளது ஒன்றுமில்லை |
| मन्दविस्मया | மெதுவாய்ப் புன்ன | इति | என்று |
| | கைசெய்துகொண்டு | अब्रवीत् | பதிலுரைத்தாள். |

सा त्वेवमुक्ता धर्मज्ञा तया प्रीततराऽभवत् । सफलं च प्रहर्षं ते हन्त सीते करोम्यहम् ॥

| | | | |
|----------|------------------|----------|--------------------|
| तया | அவளால் | सीते | “லீதே, |
| एवं | இவ்வாறு | ते | உனக்கு |
| उक्ता | சொல்லப்பட்ட | हन्त | ஸர்வ மங்களங்களும் |
| धर्मज्ञा | தர்மஞானியாகிய | | உண்டாகுக. |
| सा | அவள் | अहं | நான் |
| तु | இப்பொழுது | प्रहर्षं | அத்யந்தமனஸந்துஷ்டி |
| | | | யை |
| प्रीततरा | { முன்னேவிட அதிக | सफलं च | பயன்பட்டதாகவே |
| | மாய் ப்ரீதிகொண்ட | करोमि | செய்துகொள்ளு |
| | வளாய் | | கிறேன். |
| अभवत् | ஆனால். | | |

इदं दिव्यं वरं माल्यं वस्त्रमाभरणानि च । अङ्गरागं च वैदेहि महार्हं चानुलेपनम् ॥१८॥
मया दत्तमिदं सीते तव गात्राणि शोभयेत् । अनुरूपमसंक्लिष्टं नित्यमेव भविष्यति ॥१९॥

| | | | |
|--------|------------------|------------|-------------------|
| வீதேஹி | “விதேஹமன்னர் புத | माल्यं | மாலையும் |
| | ல்லியாகிய | वस्त्रं | வஸ்திரமும் |
| सीते | லீதே, | आभरणानि | ஆபரணங்களும் |
| इदं | இந்த | अङ्गरागं च | வாஸனைத்திரவியமும் |
| दिव्यं | திவ்யமானதும் | महार्हं | வெள்ளைச்சந்தனமும் |
| वरं च | சிறந்ததுமாகிய | अनुलेपनं | பன்னீரும் |

| | | | |
|--------|---------------|--------------|--------------------|
| மயா | எண்ணல் | சுசுசுசு | அழகுபெறச்செய்யும். |
| தத் | கொடுக்கப்பட்ட | நித்யம் | எப்பொழுதும் |
| இதம் ச | இவை யாவும் | அநுரூபம் | ஏற்றதாகவும் |
| தவ | உனது | அசங்கிதம் எவ | கொஞ்சவும் வாடாத |
| காணாதி | அவயவங்களை | மவிய்யதி | விளங்கும். [தாகவே |

அங்ராகேண திவ்யேன லிஸாங்ரி ஜனகாத்தஜே । சுசுசுசுசுசுசு சுசுசுசு யதா ச்ரிவிஷ்ணுமவ்யயம் ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------|----------------|------------------------------|
| ஜனகாத்தஜே | “ ஜனகரின் திருமகளை ! | திவ்யேன | திவ்யமான |
| ச்ரி: | லகத்மீதேவியார் | அங்ராகேண | வாஸனைத் திரவியத் தால் |
| அவ்யயம் | என்றும் அழியாத | லிஸாங்ரி | பூசப்பட்ட மேனி யுடையவளாய் |
| விஷ்ணு | விஷ்ணுபகவானை | மதாரி | கணவரை |
| யதா | எப்படியோ அப்படி | சுசுசுசுசுசுசு | விளங்கப்பண்ணுவாய்.” |

சா வஸ்துமங்ராகம் ச மூஷணாதி சஜஸ்ததா । மைதிலி தரிதஜராஹ த்ரிதிதானமநுத்தமம் ॥ 21 ॥

| | | | |
|----------|-----------------------------|-------------|--------------------------------|
| சா | அந்த | சஜ: ச | மாலையையும் |
| மைதிலி | மைதிலியார் | அநுத்தம் | ஈடல்லாத |
| வஸ்து | ஆடையையும், | த்ரிதிதானம் | ப்ரிதியால் கொடுக்கப் பட்டதை |
| அங்ராகம் | வாஸனைத் திரவியத் தையும், | ததா | அப்படியே |
| மூஷணாதி | ஆபரணங்களையும், | தரிதஜராஹ | ஸ்வீகரித்தாள். |

தரிதகுஹ ச தத்சிதா த்ரிதிதானம் யசஸ்வினி । ச்ரிஷ்டாஜ்ஜலிபுடா த்ரிதா சமுதாஸ்தே ததாதிதா ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------|-------------------|--------------------------------|
| யசஸ்வினி | பெரும்புகழ்படைத்த | ச்ரிஷ்டாஜ்ஜலிபுடா | அஞ்ஜலிபந்தம் பண் ணினவளாயும் |
| சிதா | சீதை | த்ரிதா ச | கம்பிரமாயும் |
| த்ரிதிதானம் | ப்ரிதியால் கொடுக்கப் பட்ட | ததாதிதா | ததாதிதையின் |
| தந் | அதை | சமுதாஸ்தே | ஸமீபத்தில் உட்கார்ந் தாள். |
| தரிதகுஹ | அங்கீகரித்து | | |

ததா சிதாசுதாசிதாநமநுசூயா ததவதா । வசநம் த்ரிதாஸ்தே கதா காந்திதநுதரிதா ॥ 22 ॥

| | | | |
|----------|----------------------------|----------|-----------------------------|
| ததவதா | உறுதியான விரதத் தையுடைய | அநுதரிதா | எப்போதும் இனிதா கதை [கிய |
| நமநுசூயா | அநஸூயை | கதா | ஒன்றை |
| ததா | அவ்வண்ணமே | காந்தி | கேட்க |
| தாசிதா | வீற்றிருந்த | த்ரிதா | ஒரு வார்த்தையை |
| சிதா | வலியை | ஸ்தே | சொல்லத்தொடங்கி கிணள். |

स्वयंवरे किल प्राप्ता त्वमनेन यशस्विना । राघवेणेति मे सीते कथा श्रुतिमुपागता ॥२४॥

सीते “ वल्लोके !
त्वं நீ
अनेन இந்த
यशस्विना புகழ்பெற்ற
राघवेण ஸ்ரீராகவரால்
स्वयंवरे किल ஸ்வயம்வரத்திலேயே

प्राप्ता அடையப்பட்டாய்
इति என்ற
कथा விருத்தாந்தம்
मे என்
श्रुति காசில்
उपागता பட்டிருக்கிறது.

तां कथां श्रोतुमिच्छामि विस्तरेण च मैथिलि । यथाऽनुभूतं कात्स्न्येन तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि ॥

मैथिलि “ मैथिली !
तां அந்த
कथां விருத்தாந்தத்தை
विस्तरेण விரிவாய்
श्रोतुं கேட்க
इच्छामि விருப்புகிறேன்.
अनुभूतं நிகழ்ந்தது

यथा எப்படியோ
तत् அதை [அப்படியே
कात्स्न्येन முழுவதையும்
मे எனக்கு
त्वं च நீயே
वक्तुं சொல்ல
अर्हसि இசைந்தருள
வேண்டும்.”

एवमुक्ता तु सा सीता तां ततो धर्मचारिणीम् । श्रूयतामिति चोत्त्वाऽथ कथयामास तां कथाम् ॥

एवं இவ்வாறு
उक्ता வினாவப்பட்ட
सा அந்த
सीता வலிதை
ततः அதன்மேல்
धर्मचारिणी தர்மானுவட்டான
முடைய
तां அவளைப்பார்த்து

श्रूयतां ‘ செவ்சாய்க்கப்பட்ட
इति என்று [மும்’
तु இப்பொழுது
उत्त्वा சொல்லிவிட்டு
तां அந்த
कथां च விருத்தாந்தத்தையே
अथ அடியிற்கண்டவாறு
कथयामास விரித்துரைத்தாள்.

मिथिलाधिपतिर्वीरो जनको नाम धर्मवित् । क्षत्रधर्मे ह्यभिरतो न्यायतः शास्ति मेदिनीम् ॥

धर्मवित् “ தர்மவீத்தும்
क्षत्रधर्मे க்ஷத்திரியர்களின்
தர்மத்தில்
अभिरतः குறையற்ற பற்றுள்ள
वीरः வீரருமாகிய [வரும்

जनकः नाम ஜனகரென்பவார்
मिथिलाधिपतिः மிதிலைக்கு தலைவராய்
मेदिनी பூமியை
न्यायतः हि முறைப்படியே
शास्ति ஆண்டுவருகிறார்.

तस्य लाङ्गलहस्तस्य कर्पतः क्षेत्रमण्डलम् । अहं किलोत्थिता भिक्षा जगतीं नृपतेः सुता ॥

तस्य नृपतेः “ அந்த மன்னர்
क्षेत्रमण्डलं யாகபூமியை
लाङ्गलहस्तस्य கலப்பையை கையிற்
கொண்டு
कर्पतः உழும்பொழுது
जगती பூமியை

भिक्षा பிளந்துகொண்டு
अहं நான்
उत्थिता எழுந்த
सुता பெண்
किल என்று இப்படி லோக
வதந்தி.

स मां दृष्ट्वा नरपतिर्मुष्टिविक्षेपतत्परः । पांसुकुण्डितसर्वाङ्गीं जनको विस्मितोऽभवत् ॥२९॥

| | | | |
|--------------------------|---|------------------------|-------------------------------------|
| मुष्टिविक्षेप- तत्परः | “ பிடிப்பிடியாய் பிடு ங்கி எறிவதில் ஆஸக் தியுடனிருந்த | पांसुकुण्डितसर्वाङ्गीं | உடம்புமுழுவதும் புழுதிபடிந்துள்ள |
| सः | அந்த | मां | என்னை |
| जनकः | ஜனக | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| नरपतिः | மன்னர் | विस्मितः | ஆச்சர்யமடைந்தவ |
| | | अभवत् | ஆனார். [ராக |

अनपत्येन च स्नेहादङ्गमारोप्य च स्वयम् । ममेयं तनयेत्युत्त्वा स्नेहो मयि निपातितः ॥

| | | | |
|----------|-----------------------------|----------|----------------|
| अनपत्येन | “ மக்கட்பேறில்லாத அவரால் | इयं च | இவள் தான் |
| स्वयं च | தானே | तनया | மகள் |
| स्नेहात् | அன்பால் | इति | என்று |
| अङ्गं | மடியில் | उत्त्वा | சொல்லிவிட்டு |
| आरोप्य | எடுத்துவைத்துக் | मयि | என்னிடத்தில் |
| मम | ‘எனக்கு [கொண்டு | स्नेहः | பரிதி |
| | | निपातितः | வைக்கப்பட்டது. |

अन्तरिक्षे च वागुक्ता प्रति माऽमानुषी किल । एवमेतन्नरपते धर्मेण तनया तव ॥ ३१ ॥

| | | | |
|------------|----------------|--------|-----------------|
| मा प्रति | “ என்னைப்பற்றி | धर्मेण | தர்மத்தால் |
| अन्तरिक्षे | ஆகாயத்தில் | तव | உனக்கு |
| अमानुषी | அசுரீரி : | तनया च | மகள் தான்’ என்ற |
| नरपते | ‘மன்னவனே ! | वाक् | வாக்கானது |
| एतत् | இது | उक्ता | சொல்லப்பட்டதாய் |
| एवं | இப்படித்தான் | किल | லோகவதந்தி. |

ततः प्रहृष्टो धर्मात्मा पिता मे मिथिलाधिपः । अवाप्तो विपुलामृद्धिं मामवाप्य नराधिपः ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------------|---------|-----------------|
| ततः | “ அதனால் | अवाप्य | எடுத்துக்கொண்டு |
| धर्मात्मा | தர்மா த்மாவும் | मे | எனக்கு |
| मिथिलाधिपः | மிதிலாதிபருமாகிய | पिता | பிதாவாகி |
| नराधिपः | மன்னவர் | विपुलं | ஏராளமான |
| प्रहृष्टः | மிகவும் மனச்சந்துஷ் டிகொண்டவராய் | ऋद्धिं | பெருமையை |
| मां | என்னை | अवाप्तः | அடைந்தார். |

दत्ता चास्मीष्ट्वदेव्यै ज्येष्ठायै पुण्यकर्मणा । तया संभाविता चास्मि स्निग्धया मातृसौहृदात् ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------|----------------|--------------------------------|
| पुण्यकर्मणा | “ நற்றொழிலையே புரி யுமவரால் | स्निग्धया | வெகு அன்புள்ள |
| ज्येष्ठायै | மூத்த | तया | அவளால் |
| इष्ट्वदेव्यै | பிரியமான தேவியிட | मातृसौहृदात् च | பெற்ற தாய்போன்ற அன்பினாலும் |
| अस्मि | நான் [த்தில் | संभाविता च | கொண்டாடப்பட்ட |
| दत्ता | கொடுக்கப்பட்டேன். | अस्मि | ஆனேன். [வளாகவும் |

पतिसंयोगसुलभं वयो दृष्ट्वा तु मे पिता । चिन्तामभ्यगमदीनो वित्तनाशादिवाधनः॥३४॥

| | | | |
|---------------|-----------------|-------------|--------------------|
| मे | “என் | वित्तनाशात् | உள்ள ஆஸ்தியையி |
| पिता | தந்தை | | முந்ததால் |
| पतिसंयोगसुलभं | கணவனை சேருவதற் | इव | எப்படியோ அப்படியே, |
| वयः | பருவத்தை [குரிய | दीनः तु | தீனராகவே |
| दृष्ट्वा | அறிந்து, | चिन्तां | மனக்கவலையை |
| अधनः | வறியவன் | अभ्यगमत् | அடைந்தார். |

सदृशाच्चापकृष्टाच्च लोके कन्यापिता जनात् । प्रधर्षणामवाप्नोति शक्रेणापि समो भुवि ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|--------------|-----------------|
| लोके | “உலகில் | भुवि | உலகில் |
| शक्रेण | இந்திரனோடு | सदृशात् | ஸமானமானவும் |
| समः | ஸமானனாக | अपकृष्टात् च | தா முந்தவுமான |
| अपि | இருப்பினும் | जनात् | ஜனத்தினின்று |
| कन्यापिता च | கன்னிகைக்கு தந்தை | प्रधर्षणां | அவமானத்தை |
| | யென்றால் | अवाप्नोति | அனுபவிக்கிறான். |

तां धर्षणामदूरस्थां दृष्ट्वा चात्मनि पार्थिवः । चिन्तार्णवगतः पारं नाससादाप्नुवो यथा ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|---------------|---------------------|
| पार्थिवः | “மன்னர் | चिन्तार्णवगतः | சிந்தையாகிற கடலில் |
| आत्मनि च | தன்விஷயத்திலும் | | மூழ்கியவராய் |
| तां | அப்படிப்பட்ட | आप्नुवः | ஜலத்தில் முற்றிலும் |
| धर्षणां | அவமானத்தை | | முழுகியவன் |
| अदूरस्थां | ஸமீபத்திலேயிருப்ப | यथा | எப்படியோ அப்படியே |
| | தாய் | पारं | விசாரநிவர்த்தியை |
| दृष्ट्वा | மனதில் நினைத்து | आससाद न | காணாதிருந்தார். |

अयोनिजां हि मां ज्ञात्वा नाध्यगच्छद्विचिन्तयन् । सदृशं चानुरूपं च महीपालः पतिं मम॥

| | | | |
|----------|-----------------|---------------|--------------------|
| महीपालः | “மன்னவர் | अनुरूपं च | அழகில் ஸதிருசமான |
| मां | என்னை | पतिं | கணவரை [வருமாகிய |
| अयोनिजां | அயோநிஜயாக | विचिन्तयन् हि | கண்டுபிடிக்க பிரயா |
| ज्ञात्वा | மனதில் வைத்துக் | | சைப்படுபவராயிருந் |
| मम | எனக்கு [கொண்டு | | தும் |
| सदृशं च | குணத்தில் ஸமான | अध्यगच्छत् न | காணமுடியாதிருந் |
| | மானவரும் | | தார். |

तस्य बुद्धिरियं जाता चिन्तयानस्य सन्ततम् । स्वयंवरं तनूजायाः करिष्यामीति धीमतः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|--------------|
| सन्ततं | “ஒச்சலெ ழிவின் றி | स्वयंवरं | ஸ்வயம்வரத்தை |
| चिन्तयानस्य | கவலைப்பட்டுக்கொண் | करिष्यामि | கொடிப்பேன் |
| | டிருக்கும் | इति | என்ற |
| तस्य | அந்த | इयं | இந்த |
| धीमतः | புத்திமானுக்கு | बुद्धिः | தீர்மானம் |
| तनूजायाः | பெண்ணுக்கு | जाता | உண்டாயிற்று. |

महायज्ञे तदा तस्य वरुणेन महात्मना । दत्तं धनुर्वरं प्रीत्या तूणी चाक्षयसायकौ ॥३९॥

| | | | |
|----------|----------------------------|------------|----------------------------------|
| महायज्ञे | “மஹாயாகம் | அக்சயசாயகௌ | அக்ஷயமான அம்பு |
| ததா | எப்போது நடைபெற்றதோ அப்போது | தூணி | களமைந்த இரண்டு அம்புராத் தூணிகள் |
| तस्य | அவருக்கு | च | அவைகளோடு |
| महात्मना | மஹாத்மாவாகிய | धनुर्वरं | சிறந்த வில்லும் |
| वरुणेन | வருணதேவனால் | दत्तम् | பரிசாக அளிக்கப் பட்டது. |
| प्रीत्या | ப்ரீதிகாரணமாய் | | |

असञ्चाल्यं मनुष्यैश्च यत्नेनापि च गौरवात् । तन्न शक्ता नमयितुं स्वमेध्वपि नराधिपाः ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-------------|------------------------------------|
| यत्नेन अपि | “என்ன பாடுபட்டாலும் | तत् | அதை |
| गौरवात् | மஹிமையால் | नराधिपाः | மன்னவர்கள் |
| मनुष्यैः | மானிடர்களால் | स्वमेधु अपि | கனவி லும்கூட |
| असञ्चाल्यं | அசைக்க முடியாதது, | नमयितुं च | எடுத்துவளைக்க |
| च | ஆனதால் | शक्ताः न | வல்லமை மற்றவர் களாய் இருந்தார்கள். |

तद्धनुः प्राप्य मे पित्रा व्याहृतं सत्यवादिना । समवाये नरेन्द्राणां पूर्वमामन्त्र्य पार्थिवान् ॥

| | | | |
|------------|------------|--------------|----------------------------|
| पूर्व | “முன்னே | नरेन्द्राणां | மன்னவர்களின் |
| तत् | அந்த | समवाये | ஸபையில் |
| धनुः | தனுஸை | मे | என் |
| प्राप्य | பெற்று | सत्यवादिना | ஸத்யவாதியான |
| पार्थिवान् | மன்னவர்களை | पित्रा | தந்தையால் |
| आमन्त्र्य | வரவழைத்து | व्याहृतम् | பின்கண்டபடி மொழியப்பட்டது. |

इदं च धनुरुद्यम्य सज्यं यः कुरुते नरः । तस्य मे दुहिता भार्या भविष्यति न संशयः ॥

| | | | |
|------------------|---------------------------------------|----------|--------------------|
| यः नरः | “எந்த புருஷன் | दुहिता | பெண் |
| इदं धनुः उद्यम्य | இந்த வில்லை எடுத்து நாணைற்றப்பட்டதாய் | भार्या | மனைவியாக |
| सज्यं | செய்கிறானே | भविष्यति | ஆகுவாள். |
| कुरुते | அவனுக்கே | संशयः | சொன்ன சொல் தவறுதல் |
| तस्य च | என் | न | என்பது கிடையாது. |

तच्च दृष्ट्वा धनुः श्रेष्ठं गौरवाद्गिरिसन्निभम् । अभिवाद्य नृपा जग्मुश्शक्तास्तस्य तोलने ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|----------|----------------------------|
| नृपाः | “மன்னவர்கள் | तोलने च | எடுப்பதிலும் |
| गिरिसन्निभं | பர்வதத்திற்கு நிக | अशक्ताः | சக்திலில்லாதவர் |
| तत् | அந்த [ரான | तस्य | அதற்கு [களாய் |
| श्रेष्ठं धनुः | சிறந்த வில்லை | अभिवाद्य | ஒரு நமஸ்காரம் பண்ணிவிட்டு |
| दृष्ट्वा | (நோரில்) பார்த்து | जग्मुः | திரும்பிப்போய்விட்டார்கள். |
| गौरवात् | மஹத்வத்தால் | | |

सुदीर्घस्य तु कालस्य राघवोऽयं महाद्युतिः । विश्वामित्रेण सहितो यज्ञं द्रष्टुं समागतः ॥
लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा रामः सत्यपराक्रमः ॥ ४४ ॥

सुदीर्घस्य “वेகு
कालस्य तु காலம்சென்ற வளவில்
राघवः राकुகுலத்திலவதரித்த
வரும்
महाद्युतिः மஹாப்ரதாபசாலியும்
உண்மையான பராக்கி
சத்யபராक्रमः { ரமம் படைத்தவரு
மாகிய

अयं रामः இந்த ஸ்ரீராமர்
विश्वामित्रेण விச்வாமித்திரரோடு
सहितः கூடியவராயும்
भ्रात्रा தம்பியாகிய
लक्ष्मणेन सह லக்ஷ்மணனுடனும்
यज्ञं யாகத்தை
द्रष्टुं பார்க்க
समागतः எழுந்தருளினார்.

विश्वामित्रस्तु धर्मात्मा मम पित्रा सुपूजितः । प्रोवाच पितरं तत्र राघवौ रामलक्ष्मणौ ॥

धर्मात्मा “தர்மா த்மாவாகிய
विश्वामित्रः விச்வாமித்திரர்
मम எனது
पित्रा தகப்பனாரால்
सुपूजितः { நன்கு பூஜிக்கப்பட்டு
வேண்டப்பட்டவ
ராய்

तत्र அப்பொழுது
पितरं தந்தைக்கு
राघवौ राकुகுலத்தவர்களா
கிய
रामलक्ष्मणौ तु ஸ்ரீராமலக்ஷ்மணர்
களைப்பற்றி
प्रोवाच இங்கணமுரைத்தார் :

सुतौ दशरथस्येमौ धनुर्दर्शनकाङ्क्षिणौ । धनुर्दर्शय रामाय राजपुत्राय दैविकम् ॥ ४५ ॥

इमौ “இவ்விருவர்கள்
दशरथस्य தசரதரின்
सुतौ மைந்தர்கள்.
धनुर्दर्शनकाङ्क्षिणौ வில்லைப்பார்க்க ஆசை
ப்படுகிறார்கள்.

दैविकं தேவஸம்பந்தமான
धनुः வில்லை
राजपुत्राय இளவரசாகிய
रामाय ஸ்ரீராமருக்கு
दर्शय காண்பியும்.

इत्युक्तस्तेन विप्रेण तद्धनुः समुपानयत् । ॥ ४७ ॥

इति “இவ்விதமாய்
तेन அந்த
विप्रेण முனிவரால்

उक्तः ஆக்குபிக்கப்பட்ட
तत् அந்த [அவர்
धनुः வில்லை
समुपानयत् எடுத்துவரச்செய்தார்.

निमेषान्तरमात्रेण तदानम्य स वीर्यवान् । ज्यां समारोप्य झटिति पूरयामास वीर्यवत् ॥

वीर्यवान् “வீர்யவானாகிய
सः அவர்
निमेषान्तरमात्रेण ஒருகணப்பொழுதி
னுள்ளே

वीर्यवत् கார்யஸித்தி பெறுகிற
வண்ணமாய்
ज्यां நாளை
समारोप्य ஏற்றி
झटिति சடக்கென
पूरयामास டங்காரம்பண்ணினார்.

तत् அதை
आनम्य வளைத்து

तेन पूरयता वेगान्मध्ये भग्नं द्विधा धनुः । तस्य शब्दोऽभवद्भीमः पतितस्याशनेरिव ॥४९॥

मध्ये “மத்தியத்தில்
வேகாத் வேண்டிய வலுக்களை
பூரயதா தொடுத்த
தென அவரால்
धनुः வில்
द्विधा இருதுண்டாக
भग्नं முறிந்தது.

पतितस्य முறிந்துவிழுந்த
तस्य அதன்
शब्दः ஒலி
अशनेः இடியினது
इव எப்படியோ அப்படி
भीमः பயங்கரமாய்
अभवत् நிகழ்ந்தது.

ततोऽहं तत्र रामाय पित्रा सत्याभिसन्धिना । निश्चिता दातुमुद्यम्य जलभाजनमुत्तमम् ॥

ततः “அப்பொழுது
तत्र அவ்விடத்திலேயே
सत्याभिसन्धिना ஸத்தியஸந்தராகிய
पित्रा தந்தையால்
उत्तमं சிறந்த
जलभाजनं தீர்த்தபாத்திரத்தை

उद्यम्य கையிலெடுத்துக் கொண்டு
रामाय ஸ்ரீராமருக்கு
दातुं பாணிக்கிரகணம்செய்து கொடுப்பதற்கு
अहं நான்
निश्चिता நிச்சயிக்கப்பட்டேன்.

दीयमानां न तु तदा प्रतिजग्राह राघवः । अविज्ञाय पितुश्छन्दमयोध्याधिपतेः प्रभोः ॥

राघवः “ஸ்ரீராமர்
तदा तु அப்பொழுதே
दीयमानां { (பாணிக்கிரஹணம்
செய்து) கொடுக்கப்
படும் என்னை
प्रभोः பிரபுவும்

अयोध्याधिपतेः அயோத்திமன்னருமாகிய
पितुः தந்தையின்
छन्दं திருவுளத்தை
अविज्ञाय அறிந்துகொள்ளாமல்
प्रतिजग्राह न அங்கீகரிக்கவில்லை.

ततः श्वशुरमामन्य वृद्धं दशरथं नृपम् । मम पित्रा त्वहं दत्ता रामाय विदितात्मने ॥५२॥

वृद्धं “பெரியவரும்
श्वशुरं तु மாமனானுமாகிய
दशरथं தசரத
नृपं சக்கிரவர்த்தியாரை
आमन्य வரவழைத்து
ततः அதன்பின்னர்
मम எனது

पित्रा தந்தையால்
विदितात्मने பெரும்புகழ்பெற்றவ
रामाय ஸ்ரீராமருக்கு [ராகிய
अहं நான்
दत्ता { (பாணிக்கிரகணம்
செய்து) கொடுக்கப்
பட்டேன்.

मम चैवानुजा साध्वी ऊर्मिला प्रियदर्शना । भार्यायै लक्ष्मणस्यापि पित्रा दत्ता मम स्वयम् ॥

मम “எனது
अनुजा अपि தங்கையும்
साध्वी एव புண்ணியாத்மாவும்
प्रियदर्शना च கட்டழகியுமான
ऊर्मिला ஊர்மிளையென்பவள்
मम पित्रा எனது தந்தையால்

लक्ष्मणस्य லக்ஷ்மணருக்கு
स्वयं தானே
भार्यायै தர்மபத்தினியாக
दत्ता { (பாணிக்கிரகணம்
செய்து) கொடுக்கப்
பட்டாள்.

एवं दत्ताऽस्मि रामाय तदा तत्र स्वयंवरे । अनुरक्तास्मि धर्मेण पतिं वीर्यवतां वरम् ॥

| | | | |
|---------------|---|-----------|--------------------------------|
| एवं | “இப்படியாய் | वीर्यवतां | வீரர்களுள் |
| तत्र स्वयंवरे | அந்தஸ்வயம்வரத் | वरं | உத்தமரான |
| तदा | அப்பொழுது [தில் | पतिं | கணவரிடத்தில் |
| अस्मि | நான் | धर्मेण | தர்மப்படி |
| रामाय | ஸ்ரீராமருக்கு | अस्मि | நான் |
| दत्ता | { (பாணிக்கிரகணம் செய்து) கொடுக்கப் பட்டேன். | अनुरक्ता | அனுகமுடையவ ளாயிருக்கிறேன்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
अयोध्याकाण्डे अष्टादशोत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 6690

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 4335



एकोनविंशत्युत्तरशततमः सर्गः—நூற்றப்பத்தோன்பதாவது ஸர்க்கம். ॥ ११९ ॥

श्रीरामस्य दण्डकारण्यप्रवेशः—ஸ்ரீராமர் தண்டகாரண்யம் போவது.

अनसूया तु धर्मज्ञा श्रुत्वा तां महतीं कथाम् । पर्यष्वजत बाहुभ्यां शिरस्याघ्राय मैथिलीम् ॥

| | | | |
|----------|----------------|--------------|-----------------------------|
| धर्मज्ञा | தர்மத்தையறிந்த | मैथिलीं | மீதையை |
| अनसूया | அனஸூயை | शिरसि आघ्राय | உச்சிமுகர்ந்து |
| तु | இப்பொழுது | बाहुभ्यां | இரு திருக்கரங்களா லும் |
| तां | அந்த | पर्यष्वजत | கட்டியணைத்துக் கொண்டனள். |
| महतीं | புண்ணிய | | |
| कथां | கதையை | | |
| श्रुत्वा | கேட்டு | | |

व्यक्ताक्षरपदं चित्रं भाषितं मधुरं त्वया । यथा स्वयंवरं वृत्तं तत्सर्वं च श्रुतं मया ॥ २ ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------------|---------|----------------|
| स्वयंवरं | “ஸ்வயம்வர | मधुरं | இனிமையாய் |
| वृत्तं | விருத்தாந்தம் | चित्रं | சமத்காரமாய் |
| यथा | நடைபெற்றவண் ணமே | भाषितं | சொல்லப்பட்ட |
| त्वया | உன்னால் | तत् | அந்த |
| व्यक्ताक्षरपदं | ஸ்பஷ்டமாகிய வர்ண பதங்களையுடையதாய் | सर्वं च | எல்லாமும் |
| | | मया | என்னால் |
| | | श्रुतम् | கேட்கப்பட்டது. |

रमेऽहं कथया ते तु दृढं मधुरभाषिणि

॥ ३ ॥

मधुरभाषिणि “மதுரமாய்ப் பேசு
பவளே!

कथया कतयால்

दृढं மிகவும்

अहं நான்

तु இப்பொழுது

ते உனது

रमे மகிழ்கின்றேன்.

रविरस्तं गतः श्रीमानुपोह्य रजनीं शिवाम् । दिवसं प्रतिकीर्णानामाहारार्थं पत्रिणाम् ॥
सन्ध्याकाले निलीनानां निद्रार्थं श्रूयते ध्वनिः ॥ ४ ॥

சிவா
ரஜனீ
உபோஹ்ய
श्रीमान्
रविः
अस्तं गतः
आहारार्थं
दिवसं
“ புண்ணிய
இரவை
இருக்கச்செய்து
தேஜோவானான
சூரியபகவான்
அஸ்தமயமாநார்.
இரைக்காக
பகலில்

प्रतिकीर्णानां
सन्ध्याकाले
निद्रार्थं
निलीनानां
पत्रिणां
ध्वनिः
श्रूयते
அங்கங்கு திரிந்தவை
களும்
மாலைப்பொழுதில்
உறங்குவதின்பொரு
ட்டு
கூட்டில்வந்து மறைந்
துகொண்ட
பகழிகளுடைய
தொனி
கேட்கப்படுகிறது.

एते चाप्यभिषेकार्द्रा मुनयः कलशोद्यताः । सहिता उपवर्तन्ते सलिलापुतवल्कलाः ॥ ५ ॥

एते
मुनयः अपि
सहिताः
अभिषेकार्द्राः
“ இதோ
முனிவர்களும்
ஒன்றுகூடி
ஸ்னானம் செய்தவர்
களாய்

सलिलापुतवल्कलाः
कलशोद्यताः च
उपवर्तन्ते
சலிலாபுதவல்கலா
சுரமரவுரியணிந்தவர்
களாய்
கையில் கலசமேந்தி
வருகின்றார்கள்.

ऋषीणामग्निहोत्रेषु हुतेषु विधिपूर्वकम् । कपोताङ्गारुणो धूमो दृश्यते पवनोद्धतः ॥ ६ ॥

ऋषीणां
विधिपूर्वकं
अग्निहोत्रेषु
हुतेषु
“ ரிஷிகளுடைய
விதிப்படி
அக்னிஹோத்திர
ங்கள்
ஹோமம் செய்யப்படு
கையில்

धूमः
पवनोद्धतः
कपोताङ्गारुणः
दृश्यते
புகையானது
காற்றினால் கிளப்பப்
பட்டு
புருவின்வயிறுபோல்
சிவந்து
காணப்படுகிறது.

अल्पपर्णा हि तरवो घनीभूताः समन्ततः । विप्रकृष्टेऽपि देशेऽस्मिन्न प्रकाशन्ति वै दिशः ॥

विप्रकृष्टे
अस्मिन्
देशे अपि
दिशः वै
प्रकाशन्ति न
“ அடர்ந்தபிரதேசங்க
ளுக்கெட்டாக்கையி
இந்த [விருக்கும்
பிரதேசத்திலும்
திக்குகள்
விளங்காதிருக்கின்
றன.

अल्पपर्णाः
तरवः हि
समन्ततः
घनीभूताः
கொஞ்சம்கைகையு
டைய
மாங்களும்
எங்கும்
அடர்ந்தவைபோலிரு
க்கின்றன.

रजनीचरसत्त्वानि प्रचरन्ति समन्ततः । तपोवनमृगा ह्येते वेदितीयेषु शेरते ॥ ८ ॥

रजनीचरसत्त्वानि
समन्ततः
प्रचरन्ति
एते
“ இரவில் திரியும்
எங்கும் [இந் துக்கள்
திரிகின்றன.
இந்த

तपोवनमृगाः हि
वेदितीयेषु
शेरते
தபோவனமிருகங்க
ளும்
வேதிதியே
ளில்
படுத்திருக்கின்றன.

संप्रवृत्ता निशा सीते नक्षत्रसमलङ्कृता । ज्योत्स्नाप्रावरणश्चन्द्रो दृश्यतेऽभ्युदितोऽम्बरे ॥

| | | | |
|------------------|----------------------------------|--------------------|----------------|
| सीते | “வீதே, | அம்பரே | ஆகாயத்தில் |
| नक्षत्रसमलङ्कृता | நக்சத் திரங்களாலழகுற்றுவிளங்கும் | चन्द्रः | சந்திரன் |
| निशा | இரவு | अभ्युदितः | உதித்து |
| संप्रवृत्ता | வந்தது. | ज्योत्स्नाप्रावरणः | நிலவுபோர்த்து |
| | | दृश्यते | விளங்குகிறான். |

गम्यतामनुजानामि रामस्यानुचरी भव । कथयन्त्या हि मधुरं त्वयाऽहं परितोषिता॥१०॥

| | | | |
|-----------|----------------------|-----------|------------------------|
| मधुरं | “இனிமையாய் | अनुचरी हि | திருவுளம்கோணாது |
| कथयन्त्या | வார்த்தை சொல்லிய | | நடப்பவளாகவே |
| त्वया | உன்னால் | भव | இருப்பாயாக. |
| अहं | நான் | गम्यतां | நீ செல்லலாம். |
| परितोषिता | மகிழ்விக்கப்பட்டேன். | अनुजानामि | நான் விடைகொடுக்கிறேன். |
| रामस्य | ஸ்ரீராமரது | | |

अलङ्कुरु च तावत्त्वं प्रत्यक्षं मम मैथिलि । प्रीतिं जनय मे वत्से दिव्यालङ्कारशोभिनी ॥

| | | | |
|------------|--------------------|----------------|-------------------|
| मैथिलि | “வீதே! | वत्से | குழந்தாய்! |
| मम | எனது | दिव्यालङ्कार-} | திவ்யாலங்காரம் |
| प्रत्यक्षं | முன்னிலையில் | शोभिनी } | பெற்று விளங்குகிற |
| त्वं | நீ | मे | எனக்கு [வளாய் |
| तावत् च | இப்பொழுதே | प्रीतिं | மனச்சந்துஷ்டியை |
| अलङ्कुरु | அலங்கரித்துக்கொள். | जनय | விளைவி.” |

सा तदा समलङ्कृत्य सीता सुरसुतोपमा । प्रणम्य शिरसा तस्यै रामं त्वभिमुखी ययौ ॥

| | | | |
|------------|----------------------|---------------|---------------------|
| सुरसुतोपमा | தெய்வப்பெண்ணை | तस्यै | அவளுக்கு |
| सा | அந்த [நிகர்த்த | शिरसा प्रणम्य | முடிதாழ்த்தி வணங்கி |
| सीता | வீதை | तु | அதன் பின்னர் |
| तदा | அப்பொழுது | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| समलङ्कृत्य | அலங்கரித்துக் கொண்டு | अभिमुखी | நோக்கி |
| | | ययौ | சென்றனள். |

तथा तु भूषितां सीतां ददर्श वदतां वरः । राघवः प्रीतिदानेन तपस्विन्या जहर्ष च ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------|---------------|---------------------|
| वदतां वरः | பேச்சில் வல்ல | ददर्श | கவனித்தார். |
| राघवः | ஸ்ரீராமர் | तपस्विन्या | தாபசியால் |
| सीतां | வீதையை | प्रीतिदानेन च | { அன்பாலளிக்கப்பட்ட |
| तथा तु | அப்படியெல்லாம் | | தெனும்காரணத்தா |
| भूषितां | அலங்கரிக்கப்பெற்றி ருப்பவளாய் | जहर्ष | லேயே |
| | | | உள்ளம்பூரித்தார். |

न्यवेदयत्ततः सर्वं सीता रामाय मैथिली । प्रीतिदानं तपस्विन्या वसनाभरणस्रजाम् ॥

| | | | |
|------------|--------------------|---------------|-------------------|
| ततः | அப்பொழுது | वसनाभरणस्रजां | ஆடையாபரணம், |
| मैथिली | மிதிலைமன்னரின் | प्रीतिदानं | மாலையிவைகளை |
| | திருமகளான | | அன்பாலளிக்கப்பட்ட |
| सीता | சீதாப்பிராட்டியார் | सर्वं | வெகுமதியாக |
| तपस्विन्या | தாபசியால் | रामाय | எல்லாவற்றையும் |
| | | न्यवेदयत् | ஸ்ரீராமருக்கு |
| | | | தெரிவித்தாள். |

प्रहृष्टस्त्वभवद्रामो लक्ष्मणश्च महारथः । मैथिल्याः सत्क्रियां दृष्ट्वा मानुषेष्वतिदुर्लभाम् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|-----------------|
| महारथः | பெரும் போர்வீர | दृष्ट्वा | கவனித்து |
| रामः | ஸ்ரீராமர் [ராகிய | तु | அதனால் |
| मैथिल्याः | வலைதக்கு | प्रहृष्टः | மகிழ்ச்சிகொண்டவ |
| सत्क्रियां | செய்யப்பட்டுள்ள | | ராக |
| | உபசாரத்தை | अभवत् | ஆயினர். |
| मानुषेषु | மானிடர்கள் விஷயத் | लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் |
| | தில் | च | அங்ஙனமே |
| अतिदुर्लभां | அடையமுடியாததாய் | | மகிழ்ந்தார். |

ततस्तां शर्वरीं प्रीतः पुण्यां शशिनिभाननः । अर्चितस्तापसैः सिद्धैस्वास रघुनन्दनः ॥

| | | | |
|------------|--------------------|---------|-----------------|
| शशिनिभाननः | சந்திரனையொத்த திரு | अर्चितः | கொண்டாடப்பட்டு |
| | முகமண்டலமுடைய | प्रीतः | மனத்ருப்திகொண்ட |
| रघुनन्दनः | ஸ்ரீராமர் | तां | அந்த [வராய் |
| ततः | பிறகு | पुण्यां | புண்ணிய |
| तापसैः | தபசிகளாலும், | शर्वरीं | இரவை |
| सिद्धैः | சித்தர்களாலும் | उवास | கழித்தார். |

तस्यां रात्र्यां व्यतीतायामभिषिच्य हुताग्निकान् । आपृच्छेतां नरव्याघ्रौ तापसान्वनगोचरान् ॥

| | | | |
|------------|------------------|--------------|------------------|
| नरव्याघ्रौ | புருஷோத்தமர்கள் | हुताग्निकान् | ஹோமம்செய்து |
| तस्यां | அந்த [ருவர்களும் | | முடித்த |
| रात्र्यां | இரவு | वनगोचरान् | வனவாலிகளாகிய |
| व्यतीतायां | கழிந்ததும் | तापसान् | தபஸ்விகளை |
| अभिषिच्य | ஸ்னானம்செய்து | आपृच्छेताम् | போகவிடை கேட்டார் |
| | | | கள். |

तावूचुस्ते वनचरास्तापसा धर्मचारिणः । वनस्य तस्य सञ्चारं राक्षसैः समभिप्लुतम् ॥१८॥

| | | | |
|------------|---------------------|------------|--------------------|
| ते | அந்த | वनस्य | வனத்திலுடைய |
| धर्मचारिणः | தர்மானுஷ்டான | राक्षसैः | ராக்ஷஸர்களால் |
| | முடைய | समभिप्लुतं | எங்குபார்த்தாலு |
| वनचराः | வனவாலிகளாகிய | | மேற்படும் |
| तापसाः | தபஸிகள் | सञ्चारं | ஆபத்தை |
| तौ | அவ்விருவரிடத்திலும் | उचुः | பின்வருமாறு தெரிவி |
| तस्य | அந்த | | த்தார்கள்: |

रक्षांसि पुरुषादानि नानारूपाणि राघव । वसन्त्यस्मिन्महारण्ये व्यालाश्च रुधिराशनाः ॥

राघव "ஸ்ரீராம!
अस्मिन् இந்த
महारण्ये பெருங்காணகத்தில்
पुरुषादानि மனிதர்களைத்தின்னும்
नानारूपाणि பலவகை

रक्षांसि அரக்கர்களும்
रुधिराशनाः இரத்தத்தையறுஞ்
வ்யாலா: च துஷ்டர்களும்
वसन्ति வலிக்கின்றோர்கள்.

उच्छिष्टं वा प्रमत्तं वा तापसं धर्मचारिणम् । अदन्त्यस्मिन्महारण्ये तान्निवारय राघव ॥

राघव "ஸ்ரீராம!
अस्मिन् இந்த
महारण्ये பெருங்காணகத்தில்
उच्छिष्टं वा அசுசியாகவோ
प्रमत्तं वा அஜாக்கிரதையாக
வோ இருக்கும்

धर्मचारिणं தர்மா னுஷ்டானமு
तापसं தபஸியை [டைய
अदन्ति தின்கின்றோர்கள்.
तान् அவர்களை
निवारय விலக்கியருளவேண்
டும்

एष पन्था महर्षीणां फलान्याहरतां वने । अनेन तु वनं दुर्गं गन्तुं राघव ते क्षमम् ॥ २१ ॥

राघव "ஸ்ரீராம!
एष: இதோவிருக்கும்
पन्था: तु பாதைதான்
वने வனத்தில்
फलानि பழங்களை
आहरतां கொண்டுவரும்

महर्षीणां மகரிஷிகளுடையது.
दुर्गं वनं அடர்ந்த காணகத்தில்
अनेन இவ்வழியாகவே
गन्तुं போவதற்கு
ते உனக்கு
क्षमम् ஏற்றதாகும்."

इतीव तैः प्राञ्जलिभिस्तपस्विभिर्द्विजैः कृतस्वस्त्ययनः परन्तपः ।

वनं सभार्यः प्रविवेश राघवः सलक्ष्मणः सूर्य इवाभ्रमण्डलम् ॥ २२ ॥

परन्तपः சத்ருக்களைத்தபிக்
राघवः ஸ்ரீராமர் [கச்செய்யும்
सलक्ष्मणः லக்ஷ்மணரோடும்
सभार्यः மனைவியோடும்
तैः அவர்களால்
इति इव இவ்வண்ணம் கூறி
प्राञ्जलिभिः அஞ்சலிசெய்த

तपस्विभिः தபஸிகளான
द्विजैः அந்தணர்களால்
कृतस्वस्त्ययनः ஆசீர்வதிக்கப்பெற்ற
वनं காணகத்துள், [வராய்
अभ्रमण्डलं மேகமண்டலத்தில்
सूर्यः इव சூர்யபகவான்போல்,
प्रविवेश புகுந்தார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अयोध्याकाण्डे एकोनविंशत्युत्तरशततमः सर्गः॥

आदितः श्लोकाः 6712

अयोध्याकाण्डे आदितः श्लोकाः 4357

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे नवमेऽह्नि वर्तमानकथाप्रसङ्गः ॥

इति श्रीमद्रामायणे अयोध्याकाण्डं समाप्तम् ॥

अस्यानन्तरं आरण्यकाण्डं भविष्यति । तस्यायमाद्यः श्लोकः

प्रविश्य तु महारण्यं दण्डकारण्यमात्मवान् । ददर्श रामो दुर्धर्षस्तापसाश्रममण्डलम् ॥



॥ शुद्धिपत्रम् ॥

i) श्लोकेषु

| पृष्ठम् | सर्गम् | श्लोकम् | पादम् | अवद्धम् | सुवद्धम् |
|---------|--------|---------|-------|------------|------------|
| 76 | 59 | 4 | 2 | रघुनन्दनम् | रघुनन्दनः |
| 208 | 75 | 38 | 2 | विभृया | विभृया |
| 209 | 75 | 46 | 1 | पितृणां | पितृणां |
| 272 | 87 | 22 | 1 | पृष्टे | पृष्टे |
| 327 | 95 | 12 | 2 | अतिरोहन्ति | अधिरोहन्ति |

ii) अन्वयार्थेषु

| पृष्ठम् | सर्गम् | श्लोकम् | पङ्क्तिः | अवद्धम् | सुवद्धम् |
|---------|--------|---------|----------|---------------|---------------|
| 147 | 67 | 36 | 2 | किञ्चनः | किञ्चन |
| 154. | 69 | 10 | 1 | अवःशिराः | अवःशिराः |
| 251 | 83 | 16 | 1 | केनोर्विक्रमः | केनोर्विक्रमः |
| 310 | 92 | 25 | 1 | स्वर्गं | स्वर्गं गतः |
| 334 | 96 | 26 | 1 | सङ्ख्ये | सङ्ख्ये |
| 458 | 113 | 19 | 1 | श्रीमाम् | श्रीमान् |



